1

ऋग्वेदीय विष्णु सर्वाहुत शान्ति यज्ञ

योग मूर्ति | ज्ञान मूर्ति | आचार्य मूर्ति

श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य्यपदवाक्यप्रमाणपारावारपारीणयमनियमासनप्राणायामप्रत्याहारधारणाध्यानसमाध्यष्टाङ्गयोगानुष्ठाननिष्ठतपश्चर्य्याचरण-चक्रवर्त्यनादिगुरुपरम्पराप्राप्तवैदिकदर्शनमतस्थापनाचार्य्यसकलनिगमागमसारहृदयवैदिकमार्गप्रवर्तकसर्वतन्त्रस्वतन्त्र-चातुर्वर्ण्यशिक्षक-श्रीमन्महाराजाधिराजगुरुभूमण्डलाचार्य्यजगद्गुर्वनन्तश्रीविभूषित श्रीमदादिशङ्कराचार्य्याः भगवत्पादपद्मभ्राजमाना: श्रीमदनेकशासनतिरस्कृतान्तेवासि-जनमनस्तमस्स्तोमा:शश्वत्सार्वभौमविश्वजनीनसनातनधर्मसंरक्षणबद्धपरिकरा:परापरविद्याविद्योतितान्तःकरणाः समस्तसम्प्रदायसमन्वयसाधनदत्त-चित्ताविविधविरुदावलिविराजमानमानोन्नता: अलकनन्दागङ्गातीरनिवास्युत्तराम्नाय श्रीमज्ज्योतिष्पीठाधीश्वरा: विश्वप्रशासनस्य संविधानरूपे नित्यापौरुषेय-वैदिकवाङ् मयप्रतिष्ठापका:, प्रत्येकव्यक्तीनामात्मचेतनासु नित्यापौरुषेयवैदिकवाङ्मयम् जागृतकर्तार:, आत्मैवेदं सर्वम्-सर्वं खल्विदं ब्रह्म-अहं ब्रह्मास्मीतिविकासस्यचरमसीमाया: सुगममार्गप्रकाशका:, भावातीतध्यानप्रकाशका:, समस्तऋषिमहर्षिज्ञानीविज्ञानीनांचाराध्यचरणा:, अखिलविश्व-ब्रह्माण्डप्रशासनस्यसंविधानस्वरूपेनित्यापौरुषेयवैदिकवाङ्मयम् इति प्रमाणितकर्तार:, बाल्यकालेस्वनामधन्या:, राजारामेति नामका:, विश्वव्यापीराम-राज्यस्यप्रेरणाप्रदायका:, परमगुरुदेवा:, श्रीमद्ब्रह्मानन्दसरस्वतीस्वामिवर्या: विजयन्तेतराम्।

ऋग्वेदीय विष्णु सर्वाद्भुत शान्ति यज्ञ

शान्ति का नाम	फल	मन्त्र	विधान			पंडितों की संख्या	सामग्री	उद्धरण
			जप संख्या	आहुति संख्या	समय			
विष्णु सर्वाद्भुत शान्ति	दुर्भिक्ष, भूकंपन एवं तस्करभय निवारण	ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदं। समूह्ळमस्य पांसुरे ।। (ऋग्वेद १.२२.१७) आ. गृह्य सूत्रम् गृ. प.	कुल जप ८००० प्रतिदिन १६००	८००	५घंटे प्रतिदिन (६ दिन)	५+२	आज्य एवं चरु	आश्वलायन गृह्य सूत्रम् गृह्य परिशिष्टम् (ऋग्वेद १.२२.१७)

ऋग्वेदीय विष्णु सर्वाद्भुत शान्ति यज्ञ

अनुक्रमणिका

ऋग्वेदीय विष्णु सर्वाद्भुत शान्ति यज्ञ

ऋग्वेदीय विष्णु सर्वाहुत शान्ति यज्ञ

याज्ञिकों के लिए अनिवार्य कुछ विचार

प्रयोग सीखने के उपयोग—सभी यज्ञ कार्यों का प्रयोजन, देवताओं को प्रसन्नकर उनसे विश्व, राष्ट्र, प्रदेश, परिवार या स्वयं के लिए अपेक्षित फल प्राप्ति है। सामान्य पूजनादियों से सीमित फलप्राप्ति होती है। परन्तु यज्ञ सामूहिक, गहन एकाग्र विधान होने के कारण इसका फल भी अनन्त है। एक सफल शस्त्रचिकित्सक जिस प्रकार लगन से कठिन शारीरिक कष्ट को दूर करता है, उसी प्रकार एक सफल प्रयोगकर्ता अपने शास्त्रोक्त अनुभव सिद्ध (ऋषियों से) प्रयोग द्वारा वांछित फल दिलाने में समर्थ होता है। इसके अतिरिक्त प्रयोग सीखने का एक और भी उपयोग है, वह है देवताओं के क्रोध से अपने को बचाना। शास्त्रातिक्रमण कर यज्ञ कराने वाला आचार्य ''यज्ञकर्ता विनश्यति'' विनाश को प्राप्त होता है। अतः प्रयोग की शुद्धता अत्यन्त अपेक्षित है।

प्रयोग सीखने के लिए अर्हता—प्रयोग में जिन वैदिक मन्त्रों का उपयोग होता है उन सभी मन्त्रों का गुरुमुख से उच्चारण अनिवार्य है। प्रयोग कर्ता निष्पाप हो इसलिए त्रिकाल सन्ध्यावन्दन करने वाला हो। आडम्बर की ओर महत्व न देकर शास्त्राधारित सामग्रियों के प्रयोग में निष्ठा रखने वाला हो अधिक समय तक बैठने एवं समय-समय पर स्नानादि कर्म करने की क्षमता हो। प्रयोग कर्ता निरन्तर त्रिकालसन्ध्यादि से शुद्ध हो एवं जिस देवता सम्बन्धी यज्ञ करते है, उस देवता विषयक मन्त्र, जप आदियों से उस देवता के निकट हो एवं शक्तिमान भी हो।

प्रयोगकर्ता की दिनचर्या—दिनचर्या का अत्यधिक महत्व है। दिनचर्या शुद्ध होने से प्रयोगकर्ता निष्पाप एवं शक्तिसंपन्न होता है। सुबह उठते ही प्रातः स्मरण स्वपरम्परानुसार करना चाहिये।

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती। करमूले स्थिता गौरी प्रभाते करदर्शनम्॥
समुद्रवसने देवि पर्वतस्तन मण्डले। विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे॥ *(पौराणिक, संग्रह स्मृति)*

प्रातः स्मरण के बाद शौच, दन्त धावनादि से निवृत्त होकर स्नान के लिए चलना चाहिये। शौच के समय यज्ञोपवीत दक्षिण कर्ण में लपेटना चाहिये, कारण दक्षिण कर्ण में गङ्गादि सभी तीर्थ वास करते हैं। उसके संसर्ग से यज्ञोपवीत पवित्र रहता है।

स्नान विधि—वारुणेनैव विप्रस्तु स्नातस्सर्वत्र शस्यते। अशिरस्कं भवेत् स्नानं स्नानाशक्तौ विधीयते॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

नदी जल में ब्राह्मणों को स्नान करना श्रेष्ठ है। यदि शरीर स्नान में आरोग्य न रहे तो कण्ड तक के भाग का स्नान करना चाहिये।

स्नानं तु द्विविधं प्रोक्तं गौणं मुख्य प्रभेदतः। तयोस्तु वारूणं मुख्यं तत् पुनः षड्विधं स्मृतम्॥ *(स्मृतिमुक्तावली शंखः)*

स्नान के दो भेद हैं, एक गौण और दूसरा मुख्य। इसमें नदी स्नान मुख्य है। उसके छः भेद है।

नित्यं नैमित्तिकं काम्यं क्रियाङ्गं मलकर्षणम्। क्रियास्नानं तथा षष्ठं षोढाः स्नानं प्रकीर्तितम्॥ *(स्मृतिमुक्तावली शंखः)*

१. नित्य स्नान — प्रतिदिन करने वाला स्नान।
२. नैमित्तिक — विशेष पूजन आदि से पूर्व करने वाला स्नान।
३. काम्यं — इच्छापूर्ति के लिए तीर्थ स्नान।
४. क्रियाङ्ग स्नानं — विशेष कार्य के अङ्गभूत दुबारा स्नान।
५. मलकर्षणम् — शरीर अशुद्धि निवारण के लिए।
६. क्रिया स्नानं — अवभृथ स्नान आदि।

शीतमुष्णोदकात् पुण्यं अपारक्यं परोदकात्। भूमिष्ठमुधृतात् पुण्यं ततः प्रस्त्रवणोदकम्॥ *(निर्णय सिन्धौ मार्कण्डेयः)*

गरम पानी से ठण्डा पानी श्रेष्ठ है। दूसरे के कुओं आदि के जल से अपने घर का जल श्रेष्ठ है। कुऐं से खींचे गये पानी से भूमि पर स्थित जल में स्नान श्रेष्ठ हैं।

ततोऽपि सारसं पुण्यं ततः पुण्यं नदी जलम्। तीर्थतोयं ततः पुण्यं महानद्यम्बु पावनम्॥ *(निर्णय सिन्धौ मार्कण्डेयः)*

उससे सरोवर का जल पुण्यकर है, उससे नदी जल पुण्य है, उससे तीर्थ जल (पुष्करादि) पवित्र है, उससे भी श्रेष्ठ महानदियों का जल है। (जो नदियाँ समुद्रो में जाती हैं वे महानदियाँ हैं। उदाहरण—गङ्गा-कावेरी आदि।) सिर डुबोकर किया स्नान श्रेष्ठ हैं, अनिवार्य में कण्ठ तक का स्नान कर सकते हैं। स्नान के समय अघमर्षण मन्त्रों का पाठ कर सकते हैं।

वस्त्र धारण विधिः—याज्ञिकों के लिए, प्रयोग कर्त्ताओं के लिए वस्त्र के नियम भी हैं।

वस्त्र विधिः—स्वयं धौतेन कर्तव्याः क्रियाधर्म्याः विपश्चिता। न तु नेजक धौतेन नाहतेन न कुत्रचित्॥ *(स्मृतिमुक्तावल्यां पुलस्त्यः)*

अपने धुले वस्त्र क्रियाओं में श्रेष्ठ माना गया है। धोबी द्वारा धुला वस्त्र एवं नाहत वस्त्र का प्रयोग नहीं करना चाहिये। (नाहत वस्त्र का विवरण आगे है)

क्षौमं वासः प्रशंसन्ति तर्पणे सदृशं तथा। काषाय धौतवस्त्रं च नोल्बणं तत्र कर्हिचित्॥ *(स्मृति संग्रह)*

पूजन एवं तर्पण कार्यों में रेशम के मडी वस्त्र, एवं आँचल युक्त गेरुए रंग के धुले वस्त्र, नीले वस्त्र श्रेष्ठ है, आँखों को चुंधियाने वाले रंग के वस्त्र निषिद्ध हैं।

आहतं वस्त्रम्—ईषाद् धौतं नवं श्वेतं सदृशं यन्न धारितम्। आहतं तद् विजानीयात् सर्व कर्मसुपावनम्॥ *(याजुष प्रयोगरत्ने कपर्दि)*
एक बार धुला हुआ नया सफेद वस्त्र, आँचल वाला, जो कभी न पहना हो ऐसे वस्त्र आहत वस्त्र कहलाता है सभी कर्मों में यह वस्त्र श्रेष्ठ हैं।

अलाभे धौतवस्त्रस्य शाणक्षौमाविकानि च। *(स्मृति मुक्तावल्यां वस्त्र धारण प्रकरण)*

धुले वस्त्र के प्राप्ति न होने पर बोरे के धागों से बना वस्त्र, रेशम का वस्त्र अथवा ऊनी वस्त्र पहन सकते हैं।

होम देवार्चनाद्यासु क्रियासु पठने तथा। नैक वस्त्रः प्रवर्तेत द्विजो नाचमने जपे॥ *(स्मृति मुक्तावल्यां वस्त्र धारण प्रकरण)*

होम, देवतापूजन, यज्ञादि, अध्ययन में, आचमन करते समय एवं जप करते समय पण्डित को दो वस्त्र धारण करना चाहिये एक अधोवस्त्र एक उत्तरीय, शीतप्रदेश में उत्तरीय, के ऊपर ऊनी वस्त्र ओढ़ सकते हैं।

आचमन विधिः—आचमन किसी भी क्रिया से पूर्व आत्म शुद्धि के लिए किया जाता है। १. श्रौताचमन, २. स्मार्त्ताचमन, ३. पौराणिकाचमन। स्मार्ताचमन एवं पौराणिकाचमन अधिक प्रचलित है।

विप्रस्य दक्षिणे पाणौ मूलेङ्गुष्ठस्य नित्यदा। स्याद् ब्रह्मतीर्थ मध्ये च आग्नेय मघनाशनम्॥ *(अश्वलायन स्मृति)*

ब्राह्मणों के दाहिने हाथ के अङ्गुष्ठ के नीचे मणि बन्ध के ऊपर सर्वदा ब्रह्मतीर्थ रहता है। दाहिने हाथ के बीच में पापों को नाश करने वाला आग्नेय तीर्थ है। (अग्निका)

मध्ये चाङ्गुष्ठ तर्जन्योः पैत्रं तीर्थं द्विजस्य तु। आर्षं कनिष्ठिकामूले दैवमग्राङ्गुलीषु वै॥ *(अश्वलायन स्मृति)*

दाहिने हाथ के अङ्गुठे एवं तर्जनी के बीच में पितृ तीर्थ है। पितरों को जल यहाँ से देते हैं। कनिष्ठिका के नीचे ऋषि तीर्थ है। ऋषियों को गुरुओं को जल इसी से दिया जाता है। सभी अङ्गुलियों के अग्र भाग से देवताओं को जल देते हैं। वहाँ देव तीर्थ है।

प्रपिबेत् ब्रह्मतीर्थेन जलेनाचमनं चरन्। पीत्वान्येन जलं पाप्मा तीर्थेनेति मतिर्मम॥ *(अश्वलायन स्मृति)*

आचमन करने वाले पण्डित को ब्रह्मतीर्थ से ही आचमन करना चाहिये, दूसरे तीर्थ से आचमन करने पर पण्डित पापभाजन होता है। कुछ लोग आचमन

करते समय अग्नि तीर्थ का जल पीते हैं। यह सर्वथा उचित नहीं है। आचमन का जल हृदय तक पहुँचे इतना होना चाहिये। आचमन में स्वाहा से अन्त होने वाले मन्त्रों से जल पीया जाता है। नमः शब्द से अन्त होने वाले मन्त्रों से जल छोड़ा जाता है।

आसनम्—आस्यते यस्मिन् इति आसनम्।

सन्ध्यादि नित्य कर्मों के लिये, पूजन, यज्ञादि कर्मों के लिए प्रयोगकर्ता के बैठने का आसन का भी शास्त्रोक्त महत्व है।

श्रेष्ठ आसन—चैलाजिन कुशोत्तरम्।

पहले कुशासन, उसके ऊपर कृष्णाजिन (काले हिरण का चर्म), उसके ऊपर वस्त्र। अगर ये आसन उपलब्ध न हो तो—

कौशेयं कंबलं वापि अजिनं पट्टमेव च। दारुजं तालपत्रं च आसनं षड्विधं स्मृतम्॥ *(ब्रह्मकर्मसमुच्चय)*

१. कुश से बना दर्भासन, २. कम्बल, ३. हिरण का चर्म, ४. रेशम का वस्त्र,
५. लकड़ी का आसन, ६. ताडपत्र का आसन इनमें किसी का भी उपयोग कर सकते हैं।

आसनारूढ पादस्तु प्रौढपादस्स उच्यते। प्रौढपादैः कृतं कर्म सर्वं तत् निष्फलं भवेत्॥ *(वीरमित्रोदयपरिभाषा)*

आसन के ऊपर किसी भी स्थिति में चरण स्पर्श नहीं होना चाहिये। चरण स्पर्श होने पर संपूर्ण कर्म निष्फल हो जायेगा। बैठने पर चरण आसन से बाहर होना चाहिये। पांव रखने के लिए अलग से चौकी रख सकते हैं। पूर्णाहुति आदि के समय एवं सन्ध्या में खड़े रहते समय भी आसन पर पैर नहीं रखना चाहिये। पूजन के समय, सन्ध्या के समय एवं यज्ञों में इसका विशेष रूप से पालन करना चाहिये।

प्राणायाम—यह शरीर एवं मन की शुद्धि के लिए हैं।

सव्याहृतिं सप्रणवां सावित्रीं शिरसा सह। त्रिःपठेदायत प्राणः प्राणायामस्स उच्यते॥ *(अश्वलायन स्मृति-४-८५)*

इसके दो भेद और तीन अङ्ग है।

१. समन्त्रक प्राणायामः—यह केवल सन्ध्यावन्दन करने वाले द्विजों के लिए है। इसमें सप्तव्याहृति, प्रणव, गायत्री एवं शिरस् मिलाकर प्राणायाम करते

हैं। (आगे गणेश पूजन में इसका मन्त्र है।)

२. अमन्त्रक प्राणायामः—और सभी के लिए मन्त्र रहित यह प्राणायाम है।

इसके पूरक, कुम्भक, एवं रेचक अङ्ग है। अशौच में समन्त्रक प्राणायाम पण्डित के लिए निषिद्ध है। प्राणायाम मन्त्रों की आवृत्ति एक ही स्थिति में होनी चाहिये। रेचक एवं पूरक में कठिन होने के कारण कुम्भक में (जब श्वास रुका रहता है) आवृत्ति करना उचित है। सम्भव हो तो शेष अवस्थाओं में भी कर सकते हैं। एक मन्त्र को दो अवस्थाओं की सन्धि में नहीं जपना चाहिये।

सन्ध्या वन्दनः—सन्ध्याहीनोऽशुचिर्नित्यं अनर्हः सर्वकर्मसु। *(अश्वलायन स्मृति-४-१४५)*

त्रिकाल सन्ध्या न करने वाला अशुचि है। सभी कार्यों के लिए अनर्ह है। ऐसे व्यक्ति द्वारा किये गये अश्वमेधादि यज्ञ भी निरर्थक होते हैं। स्व स्वशाखानुसार सन्ध्यावन्दन करना चाहिये। उसमें कुछ ज्ञातव्य विषय—

कृताञ्जलिर्जपेद् देवीं सावित्रीं वाग्यतः स्थितः। *(अश्वलायन स्मृति ४-१४५)*
स्नाने दाने जपे होमे विवाहे भोजने बुधः। *(अश्वलायन स्मृति ४-८६)*
विण्मूत्रोत्सर्जनेऽर्चाया मौनी स्यात् दन्तधावने॥ *(याजुष प्रयोग रत्नाकर-प्रयोग पारिजातवल्लभे)*

मौन भाव से अञ्जली बाँधकर सावित्री का स्मरण करना चाहिये, स्नान, दान, जप, होम, भोजन, शौच, पूजा एवं दन्तधावन में मौन रहना चाहिये।

निषण्णो यो जपेत् प्रातः प्रलपन् प्रह्वानपि। तत्काले नान्य मन्त्रांश्च तस्य निष्फलतामियात्॥ *(अश्वलायन स्मृति ४-१००)*

प्रातः जो पण्डित बैठकर, परस्पर बात करते हुए, झुककर, बीच-बीच में दूसरे मन्त्र जपते हुए जो गायत्री जप करते है उनका सम्पूर्ण कर्म निरर्थक हो जाता है।

आपन्नश्चाशुचिः काले तिष्ठन्नपि जपेद् दश। नक्षत्रास्तमये प्रातः सावित्रीं मनसा सकृत्॥ *(अश्वलायन स्मृति ४-१०१)*

जब कोई आपत्ति हो तब भी खड़े रहकर दस गायत्री करना चाहिये। नक्षत्र अस्त हो गये हो ऐसी स्थिति में भी कम से कम एक बार सावित्री को आपद्ग्रस्त द्वारा स्मरण अवश्य करना चाहिये।

न प्रावृतः शयानश्च नोष्णीषी न च पादुकी। शूद्राद्यैः प्रेक्षितश्चेक्षन् नान्तरिक्षं जपेन् मनुम्। *(अश्वलायन स्मृति ४-१०३)*

गायत्री जाप करते समय न तो मुँह ढकना चाहये, न हि लेटे हुए जप करना चाहिये, न पगडी बाँधकर जप करना चाहिये, शूद्रादियों को देखते हुए जप नहीं करना चाहिये।

उत्तमा तारकोपेता मध्यमाऽव्यक्त तारका। अधमा सूर्यसहिता प्रातः सन्ध्या त्रिधा मता॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-सन्ध्या प्रकरण)*

नक्षत्र युक्त समय प्रातः उत्तम है, नक्षत्र लुप्त होने पर मध्यम एवं सूर्य उदित होने पर की गयी संध्या अधम है।

उत्तमा सूर्यसहिता मध्यमाऽव्यक्ततारका। अधमा तारकोपेता सायं सन्ध्या त्रिधा मता॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-सन्ध्या प्रकरण)*

सूर्य के रहते की गयी सायं सन्ध्या उत्तम है, नक्षत्र प्रकट होने से पूर्व की गयी सन्ध्या मध्यम है। नक्षत्रों के रहने पर की गयी सन्ध्या अधम है।

सन्ध्या में जप विधान एवं जप संख्या—

जपेद् द्विजः सदा मौनी पवित्रःस्यात्तु जापकः। ऋजुर्नैश्चल्यवान् तिष्ठन् जपेत् प्रातः कृताञ्जलिः॥ *(अश्वलायन स्मृति ४-९६)*

जप करते समय हमेशा मौन रहना चाहिये। पवित्र रहना चाहिये, सीधे रहकर निश्चल स्थिति में स्थिर रहकर, हाथ जोड़कर खड़े होकर प्रातः काल में जप करना चाहिये।

सहस्त्रं वा तदर्धं वा शक्त्यात्वष्टोत्तरं शतम्। एकपादेन वा तिष्ठन् एकाङ्गुष्ठेन वा जपन्॥ *(अश्वलायन स्मृति ४-९७)*

एक हजार जप, पाँच सौ जप, शक्ति कम रहने पर १०८ जप खडे रहकर अथवा एक पैर पर खडे रहकर या अङ्गुठे के आधार पर खड़े होकर जप करना चाहिये।

भस्मादि धारणम्—

ललाटे मूर्ध्नि कण्ठे च विलिखेत् गोपिचन्दनम्। भस्मना वा त्रिपुण्ड्रं च मुद्भिश्चैवोर्ध्वपुण्ड्रकम्॥ *(अश्वलायन स्मृति ७-१५५)*

माध्व सम्प्रदाय वाले मस्तक में सिर के दाहिने ओर एवं कण्ठ में गोपि चन्दन से मुद्रा धारण करना चाहिये। यजुर्वेदियों के लिये भी ''मानस्तोके'' आदि मन्त्रों से अभिमन्त्रितकर धारण करें। स्मार्त सम्प्रदाय वाले को तिर्यक् त्रिपुण्ड्र धारण करना चाहिये। मानस्तोके आदि मन्त्रों से भस्म को अभिमन्त्रित कर

धारण करना चाहिये। श्रीवैष्णव सम्प्रदाय वाले तिरुमण (पवित्र मिट्टी) से उर्ध्व पुण्ड्र लगाना चाहिये।

अपवित्रेन यज्जप्तं अस्नातेन कृतं हुतम्। यच्च शून्य ललाटेन तदत्यल्प फलं भवेत्॥ *(अश्वलायन स्मृति १०-१२५)*

अपवित्र व्यक्ति द्वारा किया गया जप, स्नान न किये व्यक्ति द्वारा किया होम, मस्तक में स्वसम्प्रदाय चिह्न से रहित व्यक्ति द्वारा किये गये सभी पूजन अत्यल्प फल देने वाले होते हैं।

सदोपवीतिना भाव्यं सदा बद्ध शिखेन च। विशिखो व्युपवीतश्च यत्करोति न तत् कृतम्॥ *(अश्वलायन स्मृति)*

प्रयोगकर्ता को सर्वदा यज्ञोपवीत एवं शिखा धारण करना चाहिये। ऐसा न करने पर जो कर्म किया गया वह न करने के बराबर अर्थात् व्यर्थ है।

यज्ञोपवीते द्वे धार्ये श्रौते स्मार्ते च कर्मणि। तृतीयमुत्तरीयार्थे वस्त्राभावे चतुर्थकम्॥ *(स्मृतिमुक्तावल्यां पुलस्त्यः)*

श्रौत-स्मार्त कर्म करने वाले ब्रह्मचारियों को एक यज्ञोपवीत और गृहस्थों को दो यज्ञोपवीत धारण करना चाहिये। उत्तरीय के न रहने पर उत्तरीय के बदले तीसरा यज्ञोपवीत धारण करना चाहिये।

दैवकर्म उपवीति, पितृकर्म प्राचीनावीति। ऋषिकर्म मानुषे कर्म निवीतिः॥ *(वचन)*

दैवकर्म करते समय यज्ञोपवीत बायें भुजापर, पितृकर्म करने पर यज्ञोपवीत दाहिने भुजा पर एवं ऋषि मनुष्य कर्म में निवीति याने हार जैसे डालना चाहिये।

जप माला—अङ्गुलीभिः प्रजपतस्त्वेकस्यैक गुणं भवेत्। ब्रह्मैरानन्त्यमाप्नोति रौद्रैश्च मणिभिर्द्विजः॥ *(अश्वलायन स्मृति ४-९४)*

अङ्गुलियों से जप करने पर एक जप का एक फल मिलता है। ब्राह्मै एवं रुद्र मणियों से जपने पर अनन्त फल मिलता है।

ब्राह्मः कुशमयो रौद्रो रुद्राक्षः पापनाशनः। सावित्र्यास्तु जपस्ताभ्यां मेकस्त्वानन्त्यमृच्छति॥ *(अश्वलायन स्मृति ४-९५)*

कुश से बनी माला ब्राह्म कहलाता है, रुद्राक्ष से बनी माला रौद्र कहलाता है। इन दो मालाओं से किया गया गायत्री जप अनन्त फल देता है।

प्रथम दिन

पवित्र नदी, जलाशय या तीर्थ से जल भरने जाने से पहले यज्ञ मण्डप में—भू-शुद्धि,देह शुद्धि, आचमन, पवित्र धारण, प्राणायाम, क्षेत्र देवता प्रार्थना, गणपति प्रार्थना, नदी की ओर प्रस्थान नदी पर पहुँचकर: देह शुद्धि, आचमन, पवित्र धारण, प्राणायाम, शिखाबन्धन, संकल्प, गुरु प्रार्थना, गणपति प्रार्थना, नदी में पूजन, षोडशोपचार पूजन (श्रीसूक्त विधान से) ध्यान, आवाहन, आसन, पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, वस्त्र, यज्ञोपवीत, आभरण, गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल, नीराजन, मन्त्र पुष्प, नमस्कार, प्रसन्नार्घ्य, प्रार्थना, सर्वोपचार पूजा, इसके पश्चात नदी से कलश में जल भरना है। उस कलश में वरुण का आवाहन, उसके बाद शान्ति पाठ करते हुए मण्डप प्रवेश।

भू-शुद्धि—ॐ स्योना पृथिवि भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथः।' *(१५ मन्त्र-२२ सूक्त-प्रथम मण्डल)* इस मन्त्र से जल प्रोक्षण करने से भूमि शुद्ध होती है।

देह शुद्धि—येभ्यो मातेत्यस्य गयःप्लात ऋषिः। विश्वेदेवा देवताः। जगतीछन्दः। एवापित्रेत्यस्य वामदेव ऋषिः। बृहस्पतिर्देवता। त्रिष्टुप् छन्दः। मनुष्य गन्ध निवारणे विनियोगः।

ॐ येभ्यो मातामधुमत् पिन्वते पयः पीयूषं द्यौरदितिरद्रिबर्हाः।

उक्थशुष्मान् वृषभरान्त्स्वप्नसस्ताँ आदित्याँ अनुमदास्वस्तये॥ *(ऋक्वेद १०.६३.३)*

ॐ एवापित्रे विश्वदेवाय वृष्णे यज्ञैर्विधेम नमसा हविर्भिः।

बृहस्पते सुप्रजा वीरवन्तो वयं स्याम पतयो रयीणाम्॥ *(ऋक्वेद ४.५०.६)*

आचमन मन्त्र—ऋग्वेदाय स्वाहा। यजुर्वेदाय स्वाहा। सामवेदाय स्वाहा। (स्वाहा मन्त्र से जल पीना चाहिये।) अथर्ववेदाय नमः। इतिहास पुराणेभ्यो नमः। अग्नये नमः। वायवे नमः। प्राणाय नमः। सूर्याय नमः। चन्द्राय नमः। दिग्भ्यो नमः। इन्द्राय नमः। पृथिव्यै नमः। अन्तरिक्षाय नमः। दिवे नमः। ब्रह्मणे नमः। विष्णवे नमः। सदाशिवाय नमः। द्विराचम्य .. इस प्रक्रिया को दुबारा करना चाहिये।

पवित्र धारणम्—पवित्रन्त इत्यनयोः आङ्गीरसः पवित्र ऋषिः। पवमानः सोमो देवता। जगतीछन्दः। पवित्राभिमंत्रणे, धारणे विनियोगः।

ॐ पवित्रंन्ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि विश्वतः।
अतप्ततनूर्न तदामो अश्नुतेश्रृता सइद्वहन्तस्तत् समाशत॥ *(ऋग्वेद ९.८३.१)*
ॐ तपोष्पवित्रं विततं दिवस्पदे शोचन्तो अस्य तन्तवो व्यस्थिरन्।
अवन्त्यस्य पवीतारं माशवो दिवस्पृष्ठमधितिष्ठन्ति चेतसा॥ *(ऋग्वेद ९.८३.२)*

ॐ भूर्भुवः स्वः कहकर जल सिञ्चन करें॥ (इन मन्त्रों से पवित्र शुद्धिकर धारण करना चाहिये आसन के नीचे दो कुश डाल लेना चाहिये।)

प्राणायाम—प्रणवस्य परब्रह्म ऋषिः, दैवी गायत्री छन्दः, परमात्मा देवता प्राणायामे विनियोगः।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योतीरसोमृतं ब्रह्म भूर्भुवस्वरोम्। *(ऋग्वेद ३.६२.१०)*

करन्यासः ॐ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ तर्जनीभ्यां नमः। ॐ मध्यमाभ्यां नमः। ॐ अनामिकाभ्यां नमः। ॐ कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

अङ्गन्यास-हृदयादिन्यास ॐ हृदयाय नमः। ॐ शिरसे स्वाहा। ॐ शिखायै वषट्। ॐ कवचाय हुम्। ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ अस्त्राय फट्।

ॐ भूर्भुवः स्वरोमिति दिग्बन्धः।

क्षेत्र देवता पूजनम्

परिवार में या सामूहिक रूप में जो भी शुभकार्य किया जाता है, वह निर्विघ्नतया समाप्त हो उसके लिए क्षेत्र देवता पूजन सबसे पहले करना चाहिये। प्रत्येक क्षेत्र के प्रधान देवता अलग है। अतः उस क्षेत्र के जो देवता है उनका प्रथम पूजन आवश्यक है। उस क्षेत्र के अर्चक स्वतः पूजन करते हैं, अतः हमें केवल फल समर्पण कर प्रार्थना करनी चाहिये। **पूर्ण फल में**—दो नारियल, दो केले, पुष्प एवं दक्षिणा, मङ्गलद्रव्य। **अर्पण मन्त्र**—याः फलिनीरित्यस्य मन्त्रस्य आथर्वणो भिषक् ओषधयोऽनुष्टुप् फल समर्पणे विनियोगः।

ॐ याः फ॒लिनी॒र्या अ॑फ॒ला अ॑पु॒ष्पायाश्च॑ पु॒ष्पिणीः। बृह॒स्पति॑ प्रसू॒ता॒ स्तानो॑मुञ्च॒त्वं हंसः॥ *(ऋग्वेद १०.९७.१५)*

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव। तेन मे सफलावाप्तिर्भवेद् जन्मनि जन्मनि॥ *(प्रयोग संग्रह)*

ॐ स्थान देवताभ्यो नमः। पूर्णफलं समर्पयामि।

तीर्थ गमन से पहले इसे संपन्न करना चाहिये। किसी भी स्थिति में इसका निराकरण नहीं करना चाहिये।

गणेश प्रार्थना—सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः। लम्बोदरश्च विकटो विघ्नराजो विनायकः॥

धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः। द्वादशैतानि नामानि यः पठेत् श्रृणुयादपि॥

विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा। सङ्ग्रामे संकटेचैव विघ्नस्तस्य न जायते॥

शुक्लांबरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यातेत्सर्व विघ्नोपशान्तये॥ *(याजुषपूर्वप्रयोगरप्राकर)*

गणानान्त्वा इति मन्त्रस्य गृत्समदऋषिः। गणपतिर्देवता। जगती छन्दः। गणपति प्रार्थने विनियोगः।

ॐ ग॒णाना॑न्त्वा ग॒णप॑तिं हवामहे क॒विं क॑वी॒नामु॑प॒मश्र॑वस्तमं।

ज्ये॒ष्ठराजं॒ ब्रह्म॑णां ब्रह्मणस्पत॒ आनः॑ शृ॒ण्वन्नू॒तिभिः॑ सीद॒साद॑नम्॥ *(ऋग्वेद २.२३.१)*

(इन मन्त्रों से गणपति प्रार्थना कर पुष्पाक्षत छोड़ना चाहिये।)

नदी की ओर प्रस्थान, नदी पर पहुँचकर-देह शुद्धि—येभ्यो मातेत्यस्य गयःप्लात ऋषिः। विश्वेदेवा देवताः। जगतीछन्दः। एवापित्रेत्यस्य वामदेव ऋषिः। बृहस्पतिर्देवता। त्रिष्टुप् छन्दः। मनुष्य गन्ध निवारणे विनियोगः।

ॐ येभ्यो माता मधुमत् पिन्वते पयः पीयूषं द्यौरदितिरद्रिबर्हाः।
उक्थशुष्मान् वृषभरान्त्स्वप्नसस्ताँ आदित्याँ अनुमदास्वस्तये॥ (ऋग्वेद १०.६३.३)
ॐ एवापित्रे विश्वदेवाय वृष्णे यज्ञैर्विधेम नमसा हविर्भिः।
बृहस्पते सुप्रजा वीरवन्तो वयं स्याम पतयो रयीणाम्॥ (ऋग्वेद ४.५०.६)

(इन मन्त्रों से देहशुद्ध कर आगे आचमन से गणेश पूजन प्रारम्भ करें।)

आचमन मन्त्र—ऋग्वेदाय स्वाहा। यजुर्वेदाय स्वाहा। सामवेदाय स्वाहा। (स्वाहा मन्त्र से जल पीना चाहिये।) अथर्ववेदाय नमः। इतिहास पुराणेभ्यो नमः। अग्नये नमः। अग्नये नमः। वायवे नमः। प्राणाय नमः। सूर्याय नमः। चन्द्राय नमः। दिग्भ्यो नमः। दिग्भ्यो नमः। इन्द्राय नमः। इन्द्राय नमः। पृथिव्यै नमः। पृथिव्यै नमः। अन्तरिक्षाय नमः। अन्तरिक्षाय नमः। दिवे नमः। ब्रह्मणे नमः। विष्णवे नमः। सदाशिवाय नमः। द्विराचम्य .. इस प्रक्रिया को दुबारा करना चाहिये।

पवित्र धारणम्—पवित्रन्त इत्यनयोः आङ्गीरसः पवित्र ऋषिः। पवमानः सोमो देवता। जगतीछन्दः। पवित्राभिमंत्रणे, धारणे विनियोगः।

ॐ पवित्रन्ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि विश्वतः।
अतप्ततनूर्न तदामो अश्नुते शृता सइद्वहन्तस्तत् समाशत॥ (ऋग्वेद ९.८३.१)
ॐ तपोष्पवित्रं विततं दिवस्पदे शोचन्तो अस्य तन्तवो व्यस्थिरन्।
अवन्त्यस्य पवीतारं माशवो दिवस्पृष्ठमधितिष्ठन्ति चेतसा॥ (ऋग्वेद ९.८३.२)

ॐभूर्भुवः स्वः कहकर जल सिञ्चन करें॥ (इन मन्त्रों से पवित्र शुद्धिकर धारण करना चाहिये आसन के नीचे दो कुश डाल लेना चाहिये।)

प्राणायाम—प्रणवस्य परब्रह्म ऋषिः, दैवी गायत्री छन्दः, परमात्मा देवता प्राणायामे विनियोगः।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योतीरसोमृतं ब्रह्म भूर्भुवस्वरोम्। *(ऋग्वेद ३.६२.१०)*

(रेखङ्कित मन्त्र को तीन बार कुम्भक में जप करना चाहिये।)

शिखाबन्धनम्—

ऊर्ध्वकेशि विरूपाक्षि मांसशोणित भक्षणे। तिष्ठ देवि शिखाबन्धे चामुण्डे ह्यपराजिते॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

(इस मन्त्र से शिखाबन्धन करना चाहिये।)

महासंकल्प—हेमाद्रि संकल्प

ॐस्वस्ति श्री समस्तजगदुत्पत्तिस्थितिलयकारणस्य रक्षा-शिक्षा-विचक्षणस्य प्रणतपारिजातस्य अशेषपराक्रमस्य श्रीमदनन्तवीर्यस्यादि नारायणस्य अचिन्त्यापरिमितिशक्त्या ध्रियमाणानां महाजलौघमध्ये परिभ्रमताम् अनेक कोटि ब्रह्माण्डानाम् एकतमे अव्यक्त- महादहंकार - पृथिव्यप्तेजो वाय्वाकाशाद्याव रणैरावृते अस्मिन् महति ब्रह्माण्डखण्डे आधारशक्तिश्रीमदादि- वाराह-दंष्ट्राग्र- विराजिते कूर्मानन्त- वासुकि-तक्षक-कुलिक - कर्कोटक -पद्म - महापद्म - शंखाद्यष्टमहानागैर्ध्रियमाणे ऐरावत-पुण्डरीक-वामन-कुमुद-अञ्जन-पुष्पदन्त-सार्वभौम-सुप्रतीकाष्टदिग्गजोपरिप्रतिष्ठितानाम् अतल-वितल-सुतल-तलातल-रसातल-महातल-पाताल-लोकनामुपरिभागे भुवर्लोक-स्वर्लोक-महर्लोक -जनोलोक - तपोलोक - सत्यलोकाख्य षड्लोकानामधोभागे भूर्लोके चक्रवाल शैल - महावलयनागमध्यवर्तिनो महाकाल महाफणि राजशेषस्य सहस्रफणामणिमण्डल मण्डिते दिग्दन्तिशुण्डादण्डोद्दण्डितेअमरावत्यशोकवती भोगवती - सिद्धवती- गान्धर्ववती - काशी- काञ्ची - अवन्ती अलकावती यशोवतीतिपुण्यपुरीप्रतिष्ठिते लोकालोकाचलवलयिते लवणेक्षु- सुरा सर्पि - दधि

धक्षीरोदकार्णवपरिवृते जम्बू-प्लक्ष-कुश-क्रौञ्च - शाक शाल्मलिपुष्कराख्यसप्तद्वीपयुते इन्द्र-कांस्य-ताम्र-गभस्ति-नाग-सौम्य-गान्धर्व-चारणभारतेतिनव-खण्डमण्डिते सुवर्णगिरिकार्णिकोपेत महासरोरुहाकार पञ्चाशत् कोटि योजनविस्तीर्णभूमण्डले अयोध्या मथुरा-माया-काशी-काञ्ची-अवन्तिकापुरी द्वारावतीतिमोक्षदायिकसप्तपुरीप्रतिष्ठिते सुमेरु निषधत्रिकूट-रजतकूटाम्रकूट-चित्रकूट-हिमवद्विन्ध्याचलानां महापर्वत प्रतिष्ठिते हरिवर्ष किंपुरुषयोश्च दक्षिणे नवसहस्रयोजन विस्तीर्णे मलयाचल-सह्याचल विन्ध्याचलानामुत्तरे स्वर्णप्रस्थ-चण्डप्रस्थ-चान्द्र-सूक्तावान्तक-रमणक महारमणक-पाञ्चजन्य-सिंहल लंङ्केति-नवखण्डमण्डिते गंगा-भागीरथी-गोदावरी- क्षिप्रा-यमुना- सरस्वती-नर्मदा-तासी-चन्द्रभागा-कावेरी-पयोष्णी-कृष्णावेणी-भीमरथी-तुंगभद्रा-ताम्रपर्णी- विशालाक्षी- चर्मण्वती-वेत्रवती- कौशिकी-गण्डकी- विश्वामित्रीसरयूकरतोया- ब्रह्मानन्दामहीत्यनेक पुण्यनदी विराजिते भारतवर्षे भरतखण्डे जम्बूद्वीपे कूर्मभूमौ साम्बवती कुरुक्षेत्रादि समभूमौ आर्यावर्तान्तरगते ब्रह्मावर्तैकदेशे गंगायमुनयोर्मध्यभागे योजनव्यापिविस्तीर्णेक्षेत्रे,ज्ञानयुगप्रवर्तकानां महर्षि महेशयोगिवर्याणां परमाराध्यगुरुदेवै : अनन्तश्रीविभूषितैः ज्योतिष्पीठाधीश्वरैः जगद्गुरु श्री मच्छङ्कराचार्य ब्रह्मानन्दसरस्वतीमहाभागैः सम्पादितशतमखकोटि होम महायज्ञपावितायां भूमौ............................... सकलजगत्स्रष्टुः परार्धद्वय जीविनो ब्रह्मणः द्वितीये परार्धे एकपञ्चाशत्तमे वर्षे प्रथम मासे प्रथम पक्षे प्रथम दिवसे अह्नस्तृतीये यामे तृतीये मुहूर्ते रथन्तरादिद्वात्रिंशत्कल्पानांमध्ये अष्टमे श्वेतवाराहकल्पे स्वायंभुवादि मन्वन्तराणां मध्ये सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे कृत त्रेताद्वापरकलिसंज्ञकानां चतुर्णां युगानां मध्ये वर्तमाने अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमपादे प्रभवादि षष्ठि सम्वत्सराणां मध्ये.......................... ....संवत्सरे..................................अयने..............................ऋतौ ....मासे ....पक्षे .... तिथौ .... वासरे .... नक्षत्रे .... योगे .... करणे ....राशि स्थिते श्रीसूर्ये .... राशि स्थिते श्रीचन्द्रे...................... राशि स्थिते श्रीकुजे.................................. राशि स्थिते श्रीबुधे .... राशि स्थिते श्रीदेवगुरौ .... राशि स्थिते श्रीशुक्रे........................... राशि स्थिते श्रीशनौ............ राशि स्थिते श्रीराहौ................ राशि स्थिते श्रीकेतौ.............एवं गुण विशेषण विशिष्टायां पुण्यायाम् महापुण्य शुभ तिथौ..

गुरू प्रार्थना —

नमो गुरुभ्यो गुरुपादुकाभ्यो नमः परेभ्यः परपादुकाभ्यः।
आचार्य सिद्धेश्वर पादुकाभ्यो नमोऽस्तु लक्ष्मीपति पादुकाभ्यः॥ *(श्रृङ्गेरी मठीय आचार्य प्रार्थनम्)*

श्री गुरु परमगुरु परमेष्ठी गुरु सद्गुरु पादुकाभ्यो नमो नमः। हम लोग ब्रह्मानन्दं गुरु तं नमानि। गुरु परम्परा को भी बोल सकते हैं। कर सकते हैं। हरौ रुष्टे गुरुस्त्राता गुरौ रुष्टे न कश्चन॥ ईश्वर के रुष्ट होने पर गुरुजी रक्षा करते हैं एवं गुरुजी के कुपित होने पर कोई भी रक्षक नहीं है।

भूतोच्चाटन मन्त्र—

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुविसंस्थिताः। ये भूता विघ्नकर्तारः ते गच्छन्तु शिवाज्ञया॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-आसन विधि प्रकरण)*
ॐ अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम्। सर्वेषामविरोधेन ब्रह्मकर्म समारभे॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-आसन विधि प्रकरण)*
ॐ तीक्ष्णदंष्ट्रमहाकाय कल्पान्ते दहनोपम। भैरवाय नमस्तुभ्यं अनुज्ञां दातुमर्हसि॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

इति भैरवं नमस्कृत्य। (इन मन्त्रों से भूतोच्चाटन कर भैरव जी से यज्ञ रक्षा की प्रार्थना करते हैं।)

गणानान्त्वा इति मन्त्रस्य गृत्समदऋषिः। गणपतिर्देवता। जगती छन्दः। गणपति प्रार्थने विनियोगः।

ॐ गणानांन्त्वा गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमं।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आनः शृण्वन्नूतिभिः सीदसादनम्॥ *(ऋग्वेद २.२३.१)*

(इन मन्त्रों से गणपति प्रार्थना कर पुष्पाक्षत छोड़ना चाहिये।)

तदनन्तरं तीर्थपूजनम्—तत्वायामीत्यस्य शुनः शेपः ऋषिः। वरुणो देवता त्रिष्टुप् छन्दः कावेरी तीर्थे वरुणावाहने विनियोगः।

ॐ तत् त्वां यामि ब्रह्मणा वन्दमानस् तदा शास्तेयजमानो हविर्भिः।

अहेंळमानो वरुणेह बोध्युरुंशंस मा न आयुः प्र मोंषीः ॥ (ऋग्वेद १०.२४)
अस्मिन् कावेरी तीर्थे ॐ भूः वरुणमावाहयामि। ॐ भुवः वरुणमावाहयामि।
ॐ स्वः वरुणमावाहयामि। ॐ भूर्भुवस्वः वरुणमावाह यामि। श्री वरुण मूर्तये नमः।
ध्यायामि-"इमं में गङ्गे यमुने सरस्वति शुतुंद्रि स्तोमं सचता परुष्णया।
असिक्न्या मंरुद्वृधे वितस्तयाऽऽर्जीकीये शृणुह्या सुषोमंया॥ (ऋग्वेद १०.७५.५)
ध्यानं समर्पयामि। श्री वरुण मूर्तये नमः।

हिरण्यवर्णामिति पञ्चदशर्चस्य सूक्तस्य, आनन्द कर्दम चिक्लीतेन्दिरासुता ऋषयः। श्रीरग्निश्च देवते। सूक्तेस्मिन् आद्याः तिस्रोनुष्टुभः, कां सोस्मीति चतुर्थी बृहती, चन्द्रां प्रभासां, आदित्यवर्णे इति पञ्चमी षष्ठ्यौ त्रिष्टुभौ, ततोष्टावनुष्टुभः, तां म आवह जातवेद इति पञ्चदशी प्रस्तार पंक्तिश्छन्दस्का, हिरण्यवर्णामिति बीजं, कां सोस्मितामिति शक्तिः, तां म आवह जातवेद इति कीलकम् कावेरी तीर्थपूजने विनियोगः।

ॐ हिरंण्यवर्णां हरिंणीं सुवर्णरजतस्त्रंजाम्। चन्द्रां हिरण्मंयीं लक्ष्मीं जातंवेदो म आ वंह॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)
श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः आवाहयामि।

ॐ तां म आ वंह जातवेदो लक्ष्मीमनंपगामिनीम्। यस्यां हिरंण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुंषानहम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)
श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः। आसनं कल्पयामि।

ॐ अश्वपूर्वां रंथमध्यां हस्तिनांदप्रमोदिंनीम्। श्रियं देवीमुपं ह्वये श्रीर्मांदेवी जुंषताम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)
श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः। पादारविन्दयोः पाद्यं पाद्यं समर्पयामि।

ॐ कां सोस्मितां हिरंण्यप्राकारांमार्द्रां ज्वलंन्तीं तृप्तां तर्पयंन्तीम्। पद्मेस्थितां पद्मवंर्णां तामिहोपं ह्वये श्रियंम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः। हस्तयोः अर्घ्यमर्घ्यं समर्पयामि।

ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मिनीमीं शरणमहंप्रपद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः, मुखे आचमनीयं समर्पयामि।

ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथबिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः। (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

श्रीवरुणाश्रित कावेर्यै नमः, शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

श्री वरुणाश्रित कावर्यै नमः, वस्त्रं समर्पयामि।

ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वान्निर्णुद मे गृहात्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः, उपवीतं समर्पयामि। वस्त्रोपवीतान्ते आचमनीयं समर्पयामि। हिरण्य रूप इत्यस्य शौनको गृत्समद ऋषिः। अपान्नपात् देवता। त्रिष्टुप् छन्दः। आभरणार्पणे विनियोगः।

ॐ हिरण्यरुपः स हिरण्य संदृगपां नपात् सेदु हिरण्यवर्णः। हिरण्ययात् परि योनेर्निषद्या हिरण्यदाददत्यन्नमस्मै॥

(ऋग्वेद २.३५.१६)

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः, आभरणं समर्पयामि।

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः, गन्धं समर्पयामि।

हारिद्रवेव इति मन्त्रस्य आत्रेय श्यावाश्व ऋषिः। अश्विनौ देवता। त्रिष्टुप् छन्दः। हरिद्रार्पणे विनियोगः।

ॐ हारि॒ द्रवेव॑ पतत्तो॒ वने॒दुप॒ सोम॑ं सु॒तं म॑हि॒षेवाव॑ गच्छथः। स॒जोष॑सा उ॒षसा॒ सूर्ये॑ण च॒ त्रिर्व॒र्तिर्या॑त मश्विना॥

(ऋग्वेद ८.३५.७)

श्री वरुणाश्रित कावैर्यै नमः, हरिद्राचूर्णं समर्पयामि। या गुङ्गूरिति मन्त्रस्य शौनको गृत्समद ऋषिः। सिनीवाली देवता। अनुष्टुप्छन्दः। कुंकुमार्पणे विनियोगः।

ॐ या गु॒ङ्गूर्या सि॑नीवा॒ली या रा॒का या सर॑स्वती। इ॒न्द्रा॒णीम॑ह्व ऊ॒तये॑ वरुणा॒नीं स्व॒स्तये॑॥ (ऋग्वेद २.३२.८)

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः, कुंकुमचूर्णं समर्पयामि। अर्चतेति मन्त्रस्य प्रियमेधा ऋषिः। इन्द्रो देवता। अनुष्टुप् छन्दः। अक्षतार्पणे विनियोगः।

ॐ अर्च॑त॒ प्रार्च॑त॒ प्रिय॑मेधासो॒ अर्च॑त। अर्च॑न्तु पु॒त्रका उ॒त पुर॒न्न धृ॒ष्णव॑र्चत॥ (ऋग्वेद ८.६९.८)

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

ॐ मन॑सः॒ काम॒माकू॑तिं वा॒चः स॒त्यम॑शीमहि। प॒शू॒नां रू॒पम॑न्नस्य॒ मयि॒ श्री श्र॑यतां॒ यशः॑॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः, पुष्पाणि समर्पयामि। गङ्गायै नमः। यमुनायै नमः। गोदावर्यै नमः। सरस्वत्यै नमः नर्मदायै नमः। सिन्धवे नमः। कावेर्यै नमः।

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः। नामपूजां समर्पयामि।

ॐ कर्द॑मे॒न प्र॑जा भू॒ता म॒यि स॑म्भव॒ कर्द॑म। श्रिय॑ं वा॒सय॑ मे कु॒ले मा॒तर॑ं पद्म॒मालि॑नीम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः, धूपमाघ्रापयामि।

ॐ आप॒ः सृ॒जन्तु॑ स्नि॒ग्धानि॒ चिक्ली॑त॒ व॑स मे गृ॒हे। नि॒च॑दे॒वीं मा॒तर॒ं श्रिय॑ं वा॒सय॑ मे कु॒ले॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः, दीपं दर्शयामि। धूप दीपानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि। निवेदनार्थे, गाथिनो विश्वमित्र ऋषिः। सविता देवता। गायत्री छन्दः। निवेदने विनियोगः। चतुरस्र मण्डल करके उसके ऊपर नैवेद्य रखें।

ॐ भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो योनः प्रचोदयात्॥ *(ऋग्वेद ३.६२.१०)*

ॐ सत्यंत्वर्तेन परिषिञ्चामि। श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः। कदलीफल नैवेद्यं निरीक्षस्व। सुरभिमुद्रां प्रदर्श्य। अमृतोपस्तरण मसि। ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ देवेभ्यः स्वाहा।

ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः, कदलीफल नैवेद्यं निवेदयामि। अमृतापिधानमसि। उत्तरापोशनार्थे जलं समर्पयामि। हस्तप्रक्षालनार्थे जलं समर्पयामि। गण्डूषार्थे जलं समर्पयामि। शुद्धाचमनार्थे जलं समर्पयामि। करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि।

पूगीफल समायुक्तं नागवल्लीदलैर्युतम्। चूर्ण कर्पूरसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः, ताम्बूलं समर्पयामि।

मङ्गल नीराजनम्—

ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्। सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ श्रिये जातः श्रिय आनिरियाय श्रियं वयो जरितृभ्यो दधाति।
श्रियं वसाना अमृतत्वमायन् भवन्ति सत्या समिथामितद्रौ॥ *(ऋग्वेद ९.९४.४)*

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः, मङ्गल नीराजनम् समर्पयामि।

मन्त्रपुष्पम्—**जातवेदसे सुनवाम सोममरातीय तो निदहाति वेदः।**
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः॥ *(ऋग्वेद १.९९.१)*

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः मन्त्रपुष्पं समर्पयामि।

प्रदक्षिणा—**ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।**

यस्यां हिरंण्यं प्रभूंतं गावों दास्योऽश्वांन् विन्देयं पुरुंषानहम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः। प्रदक्षिणां समर्पयामि।

ॐ यः शुचिः प्रयंतो भूत्वा जुहुयांदाज्य मन्वंहम्। सूक्तंपंचदंशर्चं च श्रीकामंः सततं जंपेत्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः। नमस्कारान् समर्पयामि।

ॐ जुल बिम्बायं विद्महें, नील पुरुषायं धीमहि। तन्नंस्त्वम्बु प्रचोदयांत्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः। इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यं, प्रसन्नार्घ्यं समर्पयामि।

प्रार्थना—ॐ याः प्रवतोंनिवतं उद्वतं उदुन्वतीं रनुदकाश्च याः।

या अस्मभ्यं पयंसा पिन्वंमानाः शिवा देवी रशिपदा भंवन्तु सर्वां नद्यों अशिमिदा भंवन्तु॥ (ऋग्वेद ७.५०.४)

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः, प्रार्थनां समर्पयामि। पुनः पूजां करिष्ये। छत्रं धारयामि। चामरेण बीजयामि। गीतं नाट्यं नटामि। आन्दोलिकामारोहयामि। अश्वमारोहयामि। गजमारोहयामि। समस्तराजोपचार देवोपचार वेदोपचार पुजां समर्पयामि। अनया पूजया श्री वरुणाश्रित कावेरी प्रीयताम्। लोपदोष प्रायश्चित्तार्थं नामत्रय मन्त्रजपमहं करिष्यि। ॐअच्युताय नमः। ॐअनन्ताय नमः। ॐगोविन्दाय नमः। त्रिवारं जपित्वा। तद् विष्णोरिति मन्त्रस्य काण्वो मेधातिथिः ऋषिः। विष्णुर्देवता। गायत्री छन्दः। पूजान्ते विष्णुस्मरणे विनियोगः।

ॐ तद् विष्णोंः पुरमं पुदं सदां पश्यन्ति सूरयंः। दिवींव चक्षुरातंतम्।

तद्विप्रांसोविपन्यवों जागृवांसः समिंन्धते। विष्णोर्यत् पंरमं पुदम्॥ (ऋग्वेद १.२२.२०-२१)

ॐ स्वस्ति। यहाँ पर तीर्थ पूजन संपन्न हुआ। समयाभाव में श्री सूक्त मन्त्रों के बिना भी कर सकते हैं। कावेरी के स्थान पर गङ्गादि नदियों का नाम उन-उन प्रदेशों में जोड़ना चाहिये।

कलेशेषु तीर्थजल पूजनम्—यज्ञशाला में कलशों में भरने के लिए जितनी तीर्थ जल की आवश्यकता है, एवं पूजन के लिए जितना जल अपेक्षित है,

पण्डितों के आचमन के लिए जितना जल अपेक्षित है उतना जल कुम्भों में भरकर लाना चाहिये। तीर्थ जल पूजन के पश्चात् जल भरने की प्रक्रिया प्रारम्भ होती है। कलशों को पहले स्वच्छ कर लेना चाहिये। पहले तीर्थ की स्तुति करनी चाहिये। उदाहरण कावेरी—

कवेरकन्यकेगस्त्ये जाये देवी सरिद्वरे। ब्रह्मकुण्ड समुद्भूते लोपामुद्रे नामोस्तु ते॥
सह्यशैल समुद्भूते रंगक्षेत्र निवासिनि। त्वामहं प्रार्थये देवि कावेरि प्रणमाम्यहम्॥ *(स्मृति संग्रह)*

कावेर राज की पुत्री, महर्षि अगस्त जी की पत्नी लोपामुद्रा नाम वाली तुम लोककल्याण के लिए ब्रह्मकुण्ड से कावेरी नदी के रूप में परिवर्तित होकर रंगनाथ जी के क्षेत्र में बहती हो ऐसे तम्हें नमस्कार है। अन्य नदियों में जल भरते समय उनकी स्तुति करनी चाहिये। निम्नलिखित मन्त्रों से धीरे-धीरे शुद्ध जल भरना चाहिए। प्रसुव इति नवर्चस्य सूक्तस्य सिन्धुक्षित् प्रैयमेधो ऋषिः। नद्यो देवताः। जगती छन्दः। उदकपूरणे विनियोगः।

प्रसुवं आपो महिमानमुत्तमं कारुर्वोचाति सदने विवस्वतः।
प्रसप्तसप्त त्रेधा हि चक्रमुः प्र सृत्वरीणामति सिन्धु रोजसा॥
प्रतेऽरदद्वरुणो यातवे पथः सिन्धो यद्वाजं अभ्यद्रं वस्त्वं।
भूम्या अधिं प्रवता यासि सानुना यदेषामग्रं जगतामिरज्यसि॥
दिवि स्वनो यतते भूम्योपर्यनन्तं शुष्ममुदियर्ति भानुना।
अभ्रादिव प्रस्तनयन्ति वृष्टयः सिन्धुर्यदेति वृषभो न रोरुवत्॥
अभित्वा सिन्धो शिशुमिन्न मातरो वाश्रा अर्षन्ति पयसेव धेनवः।
राजेव युध्वा नयसि त्वमित् सिचौ यदासामग्रं प्रवतामिनक्षसि॥
इमं मे गङ्गे यमुने सरस्वति शुतुद्रि स्तोमं सचता परुष्णया।

असिक्न्या मरुद्वृधे वितस्तयाऽऽर्जीकीये शृणुह्या सुषोमया ॥
सितासिते सरिते यत्र सङ्गथे तत्राप्लुतासो दिवमुत्पतन्ति ।
येवै तन्वं विसृजन्ति धीरास्ते जनासो अमृतत्वं भजन्ते ।
तृष्टामया प्रथमं यातवे सजूः सुसर्त्वा रसया श्वेत्यात्या ।
त्वं सिन्धो कुभया गोमतीं क्रुमुं मेहत्न्वा सरथं याभिरीयसे ॥
ऋजीत्येनी रुशती महित्वा परि ज्रयांसि भरते रजांसि ।
अदब्धा सिन्धुरपसामपस्तमाऽश्वा न चित्रा वपुषीव दर्शता ॥
स्वश्वा सिन्धुः सुरथा सुवासा हिरण्ययी सुकृता वाजिनीवती ।
ऊर्णावती युवतिः सीलमावत्युताधि वस्ते सुभगा मधुवृधम् ॥
सुखं रथं युयुजे सिन्धुरश्विनं तेन वाजं सनिषदस्मिन्नाजौ ।
महान् ह्यस्य महिमा पनस्यतेऽदब्धस्य स्वयशसो विरप्शिनः ॥ *(ऋग्वेद १०.७५ सम्पूर्ण सुक्त)*

इन दस मन्त्रों से जल भरकर कलशों का संक्षेप पूजन करना चाहिये। एषु कलशेषु वरुणावाहने विनियोगः। तत्वायामीत्यस्य शुनः शेपः ऋषिः। वरुणो देवता। त्रिष्टुप् छन्दः। कलशेषु वरुणावाहने विनियोगः।

ॐ तत्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस् तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः ।
अहेळमानो वरुणेह बोध्युरुशंस मा न आयुः प्र मोषीः ॥ *(ऋग्वेद १.२४.११)*

ऐषु कलेशेषु। ॐभूः वरुणमावाहयामि। ॐभुवः वरुणमावाहयामि। ॐस्वः वरुणमावाहयामि। ॐभूर्भुवस्वः वरुणमावाहयामि। श्री वरुणमूर्तये नमः। ॐलं

पृथिव्यात्मने गन्धं कल्पयामि। ॐ हं आकाशात्मने पुष्पं कल्पयामि। ॐ यं वायव्वात्मने धूपं कल्पयामि। ॐ रं अग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि। ॐ वं अबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि। ॐ पं. परमात्मने पञ्चोपचारपूजां समर्पयामि।

यह पञ्चोपचार पूजन जहाँ भी समय कम हो वहाँ कर सकते हैं। इसके पश्चात् पण्डित जी के द्वारा सिर पर कुम्भ धारण कर यज्ञशाला तक शान्ति सूक्तों का पाठ करते हुए यात्रा के रूप में चलना चाहिये। शान्तिसूक्त ब्रह्मकर्म समुच्चय में है।

नदी से कलशों में जल शान्तिसूक्तों का पठन करते हुए पूजा स्थल में लाये। पूर्व दिशा के पवित्र जगह पर सभी कलशों को रखना चाहिये। गणपति मण्डल एवं गुरु मण्डल की रचना करनी चाहिये। जिसका विवरण तीसरे अध्याय में है। गुरुमण्डल पर गुं गुरवे नमः कहकर पुष्प माला चढ़ायें। गणेश मण्डल पर गं गणपतये नमः कहकर पुष्पाक्षत चढायें।

तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव। विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेंऽघ्रियुगं स्मरामि॥

ॐ देवीं वाचमजनयन्त देवा स्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति। सानोमन्द्रेष मूर्जं दुहाना धेनुर्वा गस्मानुपसुष्टुतैतु॥

(ऋग्वेद ८.१००.११)

ॐ ध्रुवं ते राजा वरुणो ध्रुवं देवो बृहस्पतिः। ध्रुवं त इन्द्रश्चाग्निश्च राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम्॥ *(ऋग्वेद १०.१७३.५)*

सुमुहूर्तोस्तु। सुप्रतिष्ठितमस्तु। (ऊपर के मन्त्रों से मुहूर्त में जो भी दोष हैं उनके निवारण की प्रार्थना है।)

आसन शुद्धि— ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठऋषिः सुतलं छन्दः आदि कूर्मो देवता आसन शुद्ध्यर्थे जपे विनियोगः

ॐ पृथ्वित्वया धृता लोका देवित्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥

(ब्रह्मकर्म समुच्चये-संकल्प प्रकरणे)

भूतोच्चाटन मन्त्र—

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुविसंस्थिताः। ये भूता विघ्नकर्तारः ते गच्छन्तु शिवाज्ञया॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-आसन विधि प्रकरण)*

ॐ अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम्। सर्वेषामविरोधेन ब्रह्मकर्म समारभे॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-आसन विधि प्रकरण)*

ॐ तीक्ष्णदंष्ट्रमहाकाय कल्पान्ते दहनोपम। भैरवाय नमस्तुभ्यं अनुज्ञां दातुमर्हसि॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

इति भैरवं नमस्कृत्य। (इन मन्त्रों से भूतोच्चाटन कर भैरव जी से यज्ञ रक्षा की प्रार्थना करते हैं।)

शिखाबन्धनम्—

ऊर्ध्वकेशि विरूपाक्षि मांसशोणित भक्षणे। तिष्ठ देवि शिखाबन्धे चामुण्डे ह्यपराजिते॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

(इस मन्त्र से शिखाबन्धन करना चाहिये।)

देह शुद्धि—येभ्यो मातेत्यस्य गयःप्लात ऋषिः। विश्वेदेवा देवताः। जगतीछन्दः। एवापित्रेत्यस्य वामदेव ऋषिः। बृहस्पतिर्देवता। त्रिष्टुप् छन्दः। मनुष्य गन्ध निवारणे विनियोगः।

ॐ येभ्यों मातामधुंमत् पिन्वंते पयः पीयूषं द्यौरदिंतिरद्रिंबर्हाः।
उक्थशुंष्मान् वृषभरान्त्स्वप्नंसस्ताँ आंदित्याँ अनुंमदास्वस्तयें॥ *(ऋग्वेद १०.६३.३)*
ॐ एवापित्रे विश्वदेंवाय वृष्णों यज्ञैर्विधेम नमंसा हविर्भिः।
बृहंस्पते सुप्रजा वीरवंन्तो वयं स्याम पतंयो रयीणाम्॥ *(ऋग्वेद ४.५०.६)*

(इन मन्त्रों से देहशुद्ध कर आगे आचमन से गणेश पूजन प्रारम्भ करें।)

आचमन मन्त्र—ऋग्वेदाय स्वाहा। यजुर्वेदाय स्वाहा। सामवेदाय स्वाहा। (स्वाहा मन्त्र से जल पीना चाहिये।) अथर्ववेदाय नमः। इतिहास पुराणेभ्यो नमः। अग्नये नमः। अग्नये नमः। वायवे नमः। प्राणाय नमः। सूर्याय नमः। चन्द्राय नमः। दिग्भ्यो नमः। दिग्भ्यो नमः। इन्द्राय नमः। इन्द्राय नमः। पृथिव्यै नमः। पृथिव्यै नमः। अन्तरिक्षाय नमः। अन्तरिक्षाय नमः। दिवे नमः। ब्रह्मणे नमः। विष्णवे नमः। सदाशिवाय नमः। द्विराचम्य .. इस प्रक्रिया को दुबारा करना चाहिये।

पवित्र धारणम्—पवित्रन्त इत्यनयोः आङ्गीरसः पवित्र ऋषिः। पवमानः सोमो देवता। जगतीछन्दः। पवित्राभिमंत्रणे, धारणे विनियोगः।

ॐ पवित्रंन्ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि विश्वतः।

ऋतंम्रतनूर्न तदामो ऋशनुतेश्रृता सइद्वहन्तस्तत् समाशत ॥ (ऋग्वेद ६.८३.१)

ॐ तपोष्पवित्रं विततं दिवस्पदे शोचन्तो ऋस्य तन्तवो व्यस्थिरन्।

ऋवन्त्यस्य पवीतारं माशवो दिवस्पृष्ठमधितिष्ठन्ति चेतसा ॥ (ऋग्वेद ६.८३.२)

ॐभूर्भुवः स्वः कहकर जल सिञ्चन करें॥ (इन मन्त्रों से पवित्र शुद्धिकर धारण करना चाहिये ऋासन के नीचे दो कुश डाल लेना चाहिये।)

प्राणायाम—प्रणवस्य परब्रह्म ऋषिः, दैवी गायत्री छन्दः, परमात्मा देवता प्राणायामे विनियोगः।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।

धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ ऋापो ज्योतीरसोमृतं ब्रह्म भूर्भुवस्वरोम्। (ऋग्वेद ३.६२.१०)

(रेखङ्कित मन्त्र को तीन बार कुम्भक में जप करना चाहिये।)

गणेश प्रार्थना—सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः। लम्बोदरश्च विकटो विघ्नराजो विनायकः॥

धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः। द्वादशैतानि नामानि यः पठेत् श्रृणुयादपि॥

विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा। सङ्ग्रामे संकटेचैव विघ्नस्तस्य न जायते॥

शुक्लांबरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यातेत्सर्व विघ्नोपशान्तये॥ (याजुषपूर्वप्रयोगरप्राकर)

गणानान्त्वा इति मन्त्रस्य गृत्समदऋषिः। गणपतिर्देवता। जगती छन्दः। गणपति प्रार्थने विनियोगः।

ॐ गणानांन्त्वा गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमं।

ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणास्पत ऋानः शृण्वन्नूतिभिः सीदसादनम्॥ (ऋग्वेद २.२३.१)

(इन मन्त्रों से गणपति प्रार्थना कर पुष्पाक्षत छोड़ना चाहिये।)

गुरू प्रार्थना —

नमो गुरुभ्यो गुरुपादुकाभ्यो नमः परेभ्यः परपादुकाभ्यः।
आचार्य सिद्धेश्वर पादुकाभ्यो नमोऽस्तु लक्ष्मीपति पादुकाभ्यः॥ *(श्रृङ्गेरी मठीय आचार्य प्रार्थनम्)*

श्री गुरु परमगुरु परमेष्ठी गुरु सद्‌गुरु पादुकाभ्यो नमो नमः।

कलश पूजनम्—कलश में पूर्ण जल भरकर रखना चाहिये। फिर उसमें गन्ध अक्षत पुष्प कलश के अन्दर डालना चाहिये एवं बाहर भी चारों ओर लगाना चाहिये। गायत्री मन्त्र से तीन बार कलश छूकर जप करना चाहिये।

ॐ कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रूद्रः समाश्रितः। मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥
कुक्षौ तु सागराःसर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदस्सामवेदोह्यथर्वणः॥
अङ्गैश्चसहितास्सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः। अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा॥
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः। सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः॥
गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिंकुरु॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-देवपूजा प्रकरण)*
ॐ इमं मे गङ्गे यमुने सरस्वति शुतुद्रिस्तोमं सचता परुष्णया।
असिक्न्या मरुद्वृधे वितस्तयाऽऽर्जीकीये श्रृणुह्या सुषोमया॥
सितासिते सरिते यत्र संगथे तत्राप्लुतासो दिव मुत्पतन्ति।
येवै तन्वं विसृजन्ति धीरास्ते जनासो अमृतत्वं भजन्ते॥ *(ऋग्वेद १०.७५.७)*
ॐ याः प्रवतो निवत उद्वत उदन्वती रनुदकाश्चयाः। ता अस्मभ्यं पयसा

पिन्वमाना: शिवा देवी रशिपदा भवन्तु सर्वा नद्यो अशिमिदा भवन्तु ॥ *(ऋग्वेद ७.५०.४)*

(इन मन्त्रों को कलश छूकर पाठ करना चाहिये।)

सितमकरनिषण्णां शुभ्रवर्णां त्रिनेत्रां करधृत कलशोद्यत्पंकजाभीत्यभीष्टाम्।
विधि हरिहररूपां सेन्दुकोटीरचूडां भसितसितदुकूलां जाह्नवीं तां नमामि ॥ *(स्मृति संग्रह)*

(इस मन्त्र से कलश में गङ्गाजी का ध्यान करना चाहिये।)

शङ्खपूजन—शंख को पहले धोकर, उसमें जल भरकर, शंख को गन्ध पुष्प अक्षत लगाकर पीठ के ऊपर रखना चाहिये। गायत्री मन्त्र से तीन बार शंख छूकर जप करना चाहिये।

ॐ शङ्खं चन्द्रार्कदैवत्यं वारुणञ्चाधि दैवतम्। पृष्ठे प्रजापतिं विद्यात् अग्रे गङ्गा सरस्वती ॥
त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि वासुदेवस्य चाज्ञया। शङ्खेतिष्ठन्ति विप्रेन्द्र तस्माच्छंखं प्रपूजयेत् ॥
विलयं यान्ति पापानि हिमवत् भास्करोदये। दर्शनादेव शङ्खस्य किं पुनः स्पर्शने भवेत् ॥
पाञ्चजन्यं महात्मानं पापघ्नं तु पवित्रकम्। शंखमध्यस्थितं तोयं भ्रामितं केशवोपरि ॥
अङ्गलग्नं मनुष्याणां ब्रह्महत्यायुतं दहेत्। गर्भादेवादि नारीणां विशीर्यन्ते सहस्त्रधा ॥
तव नादेन पाताले पाञ्चजन्य नमोस्तुते ॥ ॐ पाञ्चजन्याय विद्महे, पद्मगर्भाय धीमहि। तन्नः शङ्खः प्रचोदयात् ॥
(ब्रह्मकर्म समुच्चय-देवपूहा प्रकरण)

ॐ पवनायै नमः ॐ पाञ्चजन्यायै नमः। ॐ पर्जन्यायै नमः ॐ अम्बुराजायै नमः। ॐ कम्बु राजायै नमः। ॐ पद्मबान्धवायै नमः। ॐ धवलाय नमः। ॐ निस्स्वनाय नमः। ॐ दिव्य भोगदाय नमः।

ॐ शङ्खमूले परब्रह्मा शङ्खाग्रे तु सरस्वती। यः स्नापयति गोविन्दं तस्य पुण्यमनन्तकम् ॥ *(स्मृतिमुक्तावल्यां शङ्खपूजा प्रकरण)*

(इतना कहकर शंख को नमस्कार करना चाहिये।) शंख के जल को कलश में डालना चाहिये। पुनः शंख में कुछ जल लेकर भगवान् के सिर पर तीन बार प्रोक्षण करना चाहिये। यज्ञशाला या पूजास्थल का प्रोक्षण करें। पूजा की सामग्रियों का सिञ्चन करें। पूजा में प्रयुक्त सभी वस्तुओं का प्रोक्षण करें। शेष जल नीचे छोड़ दे। शंख को धोकर पुनः पानी भरकर यथा स्थान रख देना चाहिये।

आत्माराधनम्—हृदि स्थितं पंकजमष्टपत्रं सकेसरं कर्णिकमध्यनाळम्।
अङ्गुष्ठमात्रं मुनयो वदन्ति ध्यायेत् च विष्णुं पुरुषं पुराणम्।
हृदयकमल मध्ये सूर्य बिम्बासनस्थं सकल भुवन बीजं सृष्टिसंहारहेतुम्।
निरतिशयसुखात्मज्योतिषं हंसरूपं परमपुरुषमाद्यं चिन्तयेदात्ममूर्तिम्॥
आराधयामि मणि सन्निभमात्मलिङ्गं मायापुरी हृदय पंकजसन्निविष्टम्।
श्रद्धा नदी विमलचित्त जलाभिषेकै र्नित्यं समाधि कुसुमैर्न पुनर्भवाय॥
देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो हंसः सदाशिवः। त्यजेदज्ञान निर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥
स्वामिन् सर्व जगन्नाथ यावत्पूजावसानकम्। तावत् त्वं प्रीति भावेन कुम्भेऽस्मिन् सन्निधिं कुरू॥ *(देवपूजा)*

ॐ आत्मने नमः। ॐ अन्तरात्मने नमः। ॐ परमात्मने नमः। (इससे आत्मशुद्धि होती है। इन मन्त्रों को कहकर अपने सिर पर अक्षत डालना चाहिये।)

मण्डप पूजनम्—उत्तप्तोज्वल काञ्चनेन रचितं तुङ्गाङ्गरंगस्थलम्। शुद्धस्फाटिक भित्तिकाविरचितै स्तम्भैश्च हैमैः शुभैः॥
द्वारैश्चामर रत्नराजखचितैः शोभावहैर्मण्डपैः। तत्रान्यै रपिचित्र शङ्खधवलैः प्रभ्राजितं स्वस्तिकैः॥
मुक्ताजाल विलम्बिमण्डपयुतैर्वज्रैश्च सोपानकैः। नानारत्न विनिर्मितैश्च कलशैरत्यन्त शोभावहम्॥
माणिक्योज्वल दीपदीप्तिखचितं लक्ष्मीविलासास्पदम्। ध्यायेन् मण्डपमर्चनेषु सकलेष्वेवं विधं साधकः॥

(अनुष्ठान पद्धति–मण्डप संस्कारे)

नवरत्नखचित श्री सौभाग्य मण्डपाय नमः। मण्डपपूजां सर्मपयामि। (उपरोक्त चार मन्त्र कहते हुए मण्डप का पूजन करना चाहिये।)

गणपति पूजनम्

गणेश मण्डल रचना—भूमि के शुद्ध होने पर उस पवित्र भूमि पर गणेश मण्डल का निर्माण करना चाहिये। दक्षिण में भूमि पर रंगोली से रेखाओं को खींचकर उसमें रंग (निर्दिष्ठ) भरते हैं। उत्तर में पीठ (चौकी) पर सफेद वस्त्र बिछाकर हल्दी कुंकुम मिश्रित जल से रेखाओं को खींचकर चावलों को रंगकर सुखाकर भरते हैं। भूमि पर बने मण्डल प्रतिदिन विसर्जित स्वयं होता है। अगले दिन फिर से बनाना पड़ता है। चौकी पर बने मण्डल यज्ञ की समाप्ति पर्यन्त रहता है। इस मण्डल में लकीरों को निर्दिष्ट दिशा में ही खींचना चाहिये।

शक्रासुरानिलहुताशन वारुणेश। भागाश्रितं परिलिखेत् रसकोणमन्तः॥ *(प्रयोग दीपिका)*

पहले शक्र (इन्द्र) की दिशा पूर्व से, असुर (नैऋत्य) नैऋत्य दिशा की ओर वहाँ से अनिल (वायव्य) दिशा की ओर वहाँ से पूर्व मिलाना चाहिये (पहला त्रिकोण) दूसरा त्रिकोण हुताशन अर्थात् आग्रेय से प्रारम्भ कर वरुण अर्थात् पश्चिम दिशा तक एवं वहाँ से ईश (ईशान) तक खीचें। पुनः आग्नेय में मिलायें यह षट्कोण हुआ।

पाशीश पावक दिशाभ्युदितं त्रिकोणम्। विघ्नार्चनेषु रचितं नवकोण चक्रम्॥ *(प्रयोग दीपिका)*

पहले बने षट्कोण के अन्दर एक त्रिकोण बनाना चाहिये। इस प्रकार नवकोण चक्र बनता है, त्रिकोण पाशी (वरुण) पश्चिम से प्रारम्भ कर, ईश (ईशान्य) तक खीचें पुनः ईशान्य से पावक आग्नेय तक खीचें।

प्रादेश प्रमितियुतं गणेश बिम्बं। षट्कोणाकृति वर्तुलत्रिराद्वयम्॥ *(प्रयोग दीपिका)*
तद् बाह्यं चतुरस्त्रमण्डलं लिखित्वा। तन्मध्ये यजतु गणेश्वरं विपश्चित्॥ *(प्रयोग दीपिका)*

नवकोण गणेश मण्डल (पद्मयुतं)
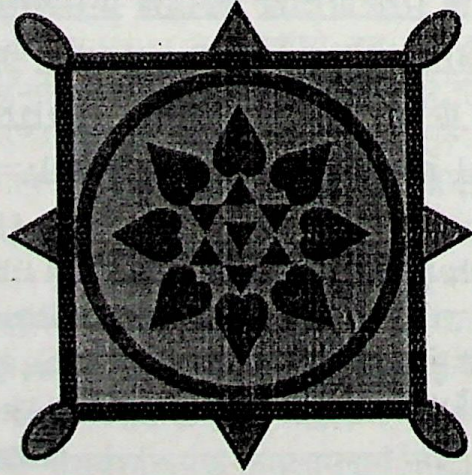
नवकोण गणेश मण्डल
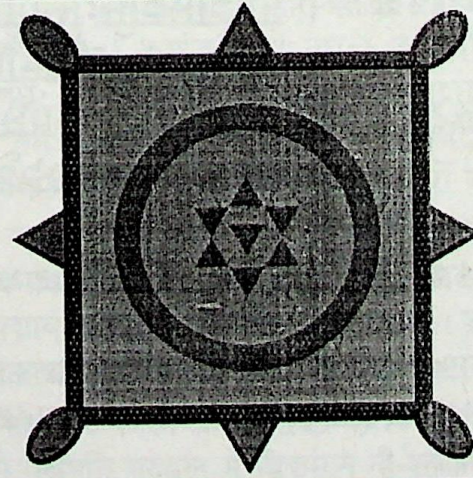
गणपति मण्डल रचना
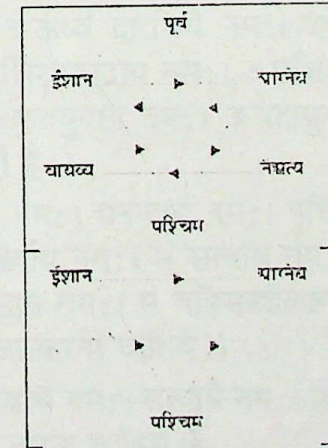
लकीर खींचते समय दक्षिण से कोई लकीर खींचना प्रारम्भ न करें।

नवकोण चक्र बनाकर तीन वर्तुल; तवनदकद्ध लगाकर उसके बाहर दो चौकाकार बनायें, पीठ बनायें, इन सबका सम्मिलित मण्डल अगले पन्ने में उल्लिखित है। उसमें भरने योग्य रंगों का निरूपण भी उसी पन्ने में है।
इस प्रकार मण्डल बनाकर उसमें गणेश जी का पूजन करना चाहिये। दो प्रकार के मण्डलों का चित्र प्रेषित है। इन दोनों में किसी एक का प्रयोग कर सकते हैं।

अङ्गन्यास-करन्यास—शरीर में गणपति का आवाहन करने से पूर्व न्यास करना चाहिये। गणकऋषिः। निचृद् गायत्री छन्दः। गणपतिर्देवता। न्यासे विनियोगः। ॐ गां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ गीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ गूं मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ गैं अनामिकाभ्यां
नमः। ॐ गौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ गः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। ॐ गां हृदयाय नमः। ॐ गीं शिरसे स्वाहा।
ॐ गूं शिखायै वषट्। ॐ गैं कवचाय हुम्। ॐ गौं नैत्रत्रयाय वौषट्। ॐ गः अस्त्राय फट्। हाथों में पुष्प लेकर अपने शरीर में विद्यमान गणेश
जी को निःश्वास द्वारा पुष्पो में कल्पित करके ध्यान मन्त्र से ध्यान कर उन फूलों को मण्डल में या मूर्ति के चरणों में अर्पण करना चाहिये।

ध्यान मन्त्र—**गजवदनमचिन्त्यं तीक्ष्णदंष्ट्रं त्रिनेत्रं, बृहदुदरमशेषं भूतिरूपं पुराणं।**
अमरवर सुपूज्यं रक्तवर्णं पुराणं। पशुपति सुतमीशं विघ्नराजं नमामि॥ *(स्मृति संग्रह)*
ॐ गणानान्त्वा गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमं।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आनः शृण्वन्नूतिभिः सीदसादनम्॥ *(ऋग्वेद २.२३.१)*

गं गणपतये नमः। ध्यायामि, ध्यानं समर्पयामि।

आवाहनम्—**ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिं विश्वतोवृत्वात्यतिष्ठिद् दशाङ्गुलम्॥** *(ऋग्वेद १०.९०)*

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्त्रजाम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

गङ्गणापतये नमः। आवाहयामि। आवाहनं समर्पयामि।

द्वारपाल पूजनम्—ॐ पूर्वद्वारे द्वारश्रियै नमः। धात्रे नमः विधात्रे नमः। ॐ दक्षिणद्वारे द्वारश्रियै नमः। जयाय नमः। विजयाय नमः। ॐ पश्चिमद्वारे द्वारश्रियै नमः। ॐ चण्डाय नमः। ॐ प्रचण्डाय नमः। ॐ उत्तरद्वारे द्वारश्रियै नमः। ॐ शंङ्खनिधये नमः। ॐ पुष्पनिधयेनमः। ॐ ऊर्ध्व द्वारश्रियै नमः। ॐ आकाशाय नमः। ॐ अन्तरिक्षाय नमः। ॐ अधोद्वारे द्वारश्रियै नमः। ॐ भूम्यै नमः। ॐ पातालाय नमः। ॐ पूर्व समुद्राय नमः। ॐ दक्षिणसमुद्राय नमः। ॐ पश्चिम समुद्राय नमः। ॐ उत्तर समुद्राय नमः। ॐ ऋग्वेदाय नमः। ॐ यजुर्वेदाय नमः। ॐ सामवेदाय नमः। ॐ अथर्ववेदाय नमः। ॐ कृतयुगाय नमः। ॐ त्रेतायुगाय नमः। ॐ द्वापरयुगाय नमः। ॐ कलियुगायनमः। इति द्वारपालपूजां समर्पयामि। (इन मन्त्रों से मण्डप के द्वारों की पूजा होती है।)

गणपति पीठ पूजनम्—गुं गुरुभ्यो नमः। गं गणपतये नमः। आधारशक्त्यै नमः। मूलप्रकृत्यै नमः। आदि कूर्माय नमः। अनन्ताय नमः। पृथिव्यै नमः। धर्माय नमः। ज्ञानाय नमः। वैराग्याय नमः। ऐश्वर्याय नमः। अधर्माय नमः। अज्ञानाय नमः। अवैराग्याय नमः। अनैश्वर्याय नमः। सं सत्वाय नमः। रं रजसे नमः। तं तमसे नमः। मं मायायै नमः। विं विद्यायै नमः। पं पद्माय नमः। अं अर्क मण्डलाय नमः। उं सोममण्डलाय नमः। मं वह्निमण्डलाय नमः। अं आत्मने नमः। उं अन्तरात्मने नमः। पं परमात्मने नमः। ॐ षीं ज्ञानात्मने नमः। (इन मन्त्रों से गणपति मण्डल की पूजा करना चाहिये।)

नवशक्ति पूजा—तीव्रायै नमः। ज्वालिन्यै नमः। नन्दायै नमः। भोगदायै नमः। कामरूपिण्यै नमः। उग्रायै नमः। तेजोवत्यै नमः। सत्यायै नमः। विघ्ननाशिन्यै नमः। ॐ षीं गं सर्वशक्तियुक्त कमलासनाय नमः। (इन मन्त्रों से गणपति मण्डल में विद्यमान नौ शक्तियों का पूजन करना चाहिये।)

स्वात्मसंस्थमजं शुद्धं त्वामद्य गणनायक। अरण्यामिव हव्याशं मूर्तौ (बिम्बे, कुम्भे) आवाहयाम्यहम्॥ *(देवपूजा)*

मण्डल में या मूर्ति में या कुम्भ में गणेश जी का आवाहन कर उसमें प्राणप्रतिष्ठा मन्त्रों से प्राणप्रतिष्ठा करनी चाहिये। उद्भव या प्रतिष्ठापित मूर्तियों में भी प्राणप्रतिष्ठा कर सकते हैं। इससे उन मूर्तियों की शक्ति बढ़ती है।

प्राणप्रतिष्ठा

अस्य श्री प्राणप्रतिष्ठा महामन्त्रस्य ब्रह्म विष्णुरुद्राऋषयः। गायत्र्युष्णिक् बृहती छन्दांसि प्राणशक्तिः परा देवता आं बीजं ह्रीं शक्ति क्रों कीलकं। श्रीमहागणेश्वर प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः।

ध्यानम्— **रक्तांबोधिस्थपोतोल्लसदरुणा सरोजाधिरूढा कराब्जैः पाशं कोदण्ड मिक्षूद्भवमथ गुणामप्यंकुशं पञ्चबाणान्॥**
बिभ्राणासृक्कपालं त्रिनयन लसिता पीनवक्षोरुहाढ्या देवी बालर्कवर्णा भवतु सुखकरी प्राणशक्ति परानः॥ *(स्मृति संग्रह)*

ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हंसः महागणेश्वर प्राणाः इह प्राणाः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हंसः महागणेश्वर जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हंसः महागणेश्वरस्य सर्वेन्द्रियाणि वाक् मनः चक्षुः श्रोत्र घ्राण प्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

ॐ असुंनीते पुनंरस्मासु चक्षुः पुनंः प्राणमिह नों धेहि भोगं। ज्योक्पंश्येम सूर्यंमुच्चरंन्त मनुंमते मृळयांनः स्वस्ति॥

(ऋग्वेद १०.५६.६)

ॐ पुनंर्नो असुं पृथिवी दंदातु पुनर्द्यौर्देवी पुनंरन्तरिंक्षम्। पुनंर्नः सोमंस्तन्वं ददातु पुनंः पूषा पथ्यां ३ंया स्वस्ति॥

(ऋग्वेद १०.५६.७)

सशक्ति साङ्ग सायुध सवाहन सपरिवार श्री महागणेश्वर भगवन् अत्रैवागछागच्छ आवाहयिष्ये। आवाहयामि। आवाहितो भव। संस्थापितो भव। सन्निहितो भव। सन्निरुद्धो भव। अव कुण्ठितो भव। अमृती कृतो भव व्याप्तो भव। सुप्रसन्नो भव। एकदुन्तायं विद्महें वक्रतुण्डायं धीमहि। तन्नों दन्तिः प्रचोदयांत्॥ गणक ऋषिः निचृद् गायत्री छन्दः गणपतिर्देवता ॐ गां हृदयाय नमः। ॐ गीं शिरसे स्वाहा। ॐ गूं शिखायै वषट्। ॐ गैं क व चा य हुं। ॐ गौं ने त्र त्र या य बौ ष ट् ॐ गः अस्त्राय फट्। भूर्भुवः स्वरोम् इति दिग्बन्धः। (इन मन्त्रों से गणपति जी को छूकर उनमें प्राणप्रतिष्ठा की कल्पना करनी चाहिये।)

ध्यान— **ॐ रक्तो रक्ताङ्गरागांशुककुसुमयुतस्तुन्दिलः चन्द्रमौळि। नेत्रैर्युक्तस्त्रिभिर्वामन करचरणो बीजपूरात्तनासः॥**
हस्ताग्राक्लृप्तपाशांकुशरद वरदो नागवक्त्रोऽहिभूषो। देवः पद्मासनो नो भवतु नतसुरो भूतये विघ्नराजः॥ *(स्मृति संग्रह)*

ॐ गं गणापनये नमः। ध्यानं सपर्मयामि। (लाल रंग वाले, लाल अङ्गरागधारण करने वाले, लाल वस्त्र वाले, लाल पुष्पवाले, मोटें पेट वाले, चन्द्र को सिर पर धरे, त्रिनेत्र वाले, सूंढ में बीजपूरफल धारण करने वाले हाथों में पाश अंकुश दान्त वरमुद्रा धारण करने वाले। हाथि मुखवाले, सर्पभूषणं पद्मासन में बैठकर देवताओं से स्तुति कराने वाले गणेश जी हमारा मङ्गल करें।) ॐ गं गणापतये नमः। (इस मूल मन्त्र को आठ बार जप करें एवं संक्षेप में पञ्च ोपचार पूजन करें।) ॐ लं पृथिव्यात्मने गन्धं कल्पयामि। ॐ हं आकाशात्मने पुष्पं कल्पयामि। ॐ यं वाय्वात्मने धूपं कल्पयामि। ॐ रं अग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि। ॐ वं अबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि। ॐ पं. परमात्मने पञ्चोपचारपूजां समर्पयामि।

आसनम्—ॐ पुरुषं एवेदं सर्वं यद् भूतं यच्च भव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेना तिरोहति॥ *(ऋग्वेद १०.९०)*

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ गं गणापतये नमः। आसनं समर्पयामि।

द्रव्याभावेतु पूजायां पुष्पैरपि समर्पयेत्। पुष्पाभावेतु तोयेन तोयाभावे तु चेतसा॥ *(तन्त्र संग्रहे)*

पूजन करते समय जब किसी द्रव्य की कमी होती है, तो उसके स्थान पर पुष्पों से पूजन कर सकते हैं, अगर पुष्प भी नहीं है तो जल से पूजन करना चाहिये। पानी भी न हो तो मन से पूजा की कल्पना करनी चाहिये। द्रव्याभावे अक्षतान् समर्पयामि यह गलत परम्परा है। इसे नहीं करना चाहिये।

उद्वाहावाहने नस्तः स्थिरायामुद्भवार्चने। अस्थिरायां विकल्पः स्यात् तण्डुलेतु भवेद् द्वयम्॥ *(लक्षण संहिता)*

प्रतिष्ठित एवं उद्भव मूर्तियों के पूजन मे आवाहन विसर्जन दोनों की आवश्यकता नहीं है। अस्थिर मूर्ति आदि में दोनों कर सकते हैं। परन्तु धरती पर बने मण्डलों में नित्य आवाहन विसर्जन करना चाहिये। ताकि वे दूषित न हो। उपरोक्त दो श्लोक पूजा के नहीं है। केवल प्रयोग विधान है। अपवृत्ते कर्मणि लौकिकः सम्पद्यते। इस सूत्र से पूजा समाप्ति के बाद स्वतः देवता विसर्जन हो जाता है।

पाद्यम्— ॐ एतावानस्य महिमाऽतो ज्यायाँश्च पूरुषः। पादोऽस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥ *(ऋग्वेद १०.९०)*

ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम्। श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ गं गणपतये नमः। पादारविन्दयोः पाद्यं पाद्यं समर्पयामि। (दो पैर होने के कारण पाद्यं-पाद्यं कहकर दो बार पाँव धोने के लिये जल दिया जाता है।) पर्वत की मिट्टी, दूर्वा, सरसो, तिल, पानी का मिश्रण पाद्य कहलाता है।

अर्घ्यं— **ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत् पुरुषः पादोऽस्येहाभवत् पुनः। ततो विष्वङ् व्यक्रामत् साशनानशने अभि॥** *(ऋग्वेद १०.९०)*

ॐ कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां। ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्। पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ गं गणपतये नमः। हस्तयोः अर्घ्यमर्घ्यं समर्पयामि। (दहि-पानी, दूध-अक्षत, गोधूम, तिल, सरसूँ एवं कुश का अग्रभाग ये अष्टाङ्ग मिलकर अर्ध्य जल होता है।)

आचमन—ॐ तस्मात् विराळजायत विराजो अधिपूरुषः। सजातो अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथोपुरः॥ *(ऋग्वेद १०.९०)*

ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टमुदाराम्।
तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मेनश्यतां त्वां वृणे॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ गं गणपतये नमः। मुखे आचमनीयं समर्पयामि। (जाफल, लौंग, तक्कोला इन्हें आचमन जल में डालना चाहिये।)

पञ्चामृत स्नान—साधन उपलब्ध हो गणेश जी प्रधान देवता हो तो इसे कर सकते हैं। (पञ्चामृत स्नान से पहले मूर्ति को शुद्ध कर लें।)

१. पयः (दूध)—ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्ण्यं। भवावाजस्य संगथे॥ *(ऋग्वेद १.९१.१६)*

ॐ गं गणपतये नमः। क्षीर स्नानं समर्पयामि। पय स्नान के बाद शुद्धोदक से स्नान।

ॐ गणानान्त्वा गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तम्।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आनःशृण्वन्नूतिभिस्सीदसादनम्॥ *(ऋग्वेद २.२३.१)* ॐ गं गणपतये नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

२. दधि (दही)—ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभिनोमुखा करत्प्रण आयूँषितारिषत्॥ *(ऋग्वेद ४.३९.६)*

ॐ गं गणपतये नमः दधि स्नानं सपर्मयामि। दधि स्नान के बाद शुद्धोदक से स्नान

ॐ निषुसींद गणपते गुणेषु त्वामांहुर्विप्रंतमं कवीनां। न ऋते त्वत् क्रियते किंचनारे महामर्कं मंघवन् चित्रमंर्च॥ (ऋग्वेद १०.११२.९)

ॐ गणपतये नमः। शुद्धोदक स्नानं सपर्पयामि।

३. घृत (घी)—ॐ घृतं मिंमिक्षे घृतमंस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्वंस्य धामं।
अनुष्वधमावंह मादयंस्व स्वाहांकृतं वृषभवक्षि हव्यम्॥ (ऋग्वेद २.३.११)

ॐ गं गणपतये नमः। घृतस्नानं समर्पयामि। घी से स्नान कराने के बाद शुद्ध जल से स्नान।

ॐ अभिख्यानों मघवन्नाधंमानान्त्सखें बोधि वंसुपते सखींनाम्।
रणं कृधि रणकृत् सत्यशुष्माऽभंक्ते चिदाभंजाराये अस्मान्॥ (ऋग्वेद १०.११२.१०) ॐ गं गणपतये नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

४. मधु (शहद)—ॐ मधुवाता ऋताय ते मधुंक्षरन्ति सिन्धंवः। माध्वींर्नः सन्त्वोषंधीः॥
मधुनक्तंमुतोषसो मधुंमत् पार्थिवं रजंः। मधु द्यौरंस्तु नः पिता॥
मधुंमान्नो वनस्पतिर्मधुंमाँ अस्तु सूर्यंः। माध्वीर्गावों भवन्तु नः॥ (ऋग्वेद १.९०.६-७-८)

ॐ गं गणपतये नमः, मधु स्नानं समर्पयामि। शहद के स्नान कराने के बाद शुद्ध जल से स्नान।

ॐ आतूनं इन्द्र क्षुमन्तं चित्रं ग्राभंसंगृंभाय। महाहस्ती दक्षिणेन॥ (ऋग्वेद ८.८१.१) ॐ गं गणपतये नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

५. शर्करा (शक्कर)—ॐ स्वादुः पंवस्व दिव्याय जन्मंने स्वादुरिन्द्रांय सुहवींतु नाम्ने।
स्वादुर्मित्राय वरुणाय वायवे बृहस्पतंये मधुंमाँ अदांभ्यः॥ (ऋग्वेद ९.८५.६)

ॐ गं गणपतये नमः शर्करा स्नानं समर्पयामि। शर्करा स्नान के पश्चात् शुद्ध जल से स्नान कराये।

ॐ विद्माहित्वां तुविकूर्मिं तुवि देष्णं तुवीमघं। तुविमात्र मवोभिः ॥ *(ऋग्वेद ८.८१.२)*

ॐ गं गणपतये नमः शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

फलम्—ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पायाश्च पुष्पिणीः। बृहस्पतिं प्रसूतास्तानोमुञ्चन्त्वं हंसः॥ *(ऋग्वेद १०.९७.१५)*

ॐ गं गणपतये नमः फल स्नानं समर्पयामि। फल स्नान के बाद शुद्ध जल से स्नान करायें।

ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवःस्तानं ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे॥
यो वः शिवतमोरसस्तस्य भाजयते हनः। उशतीरिव मातरः॥
तस्माअरङ्गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथाच नः॥ *(ऋग्वेद १०.९.१-२-३)*
ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तो अस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥ *(ऋग्वेद १०.९०)*
ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मा यान्तरा याश्च ब्राह्या अलक्ष्मीः॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

(अगर गणेश जी का ही होम या पूजा हो तो अथर्वशीर्ष एवं गणेश सूक्त के मन्त्रों से अभिषेक करना चाहिये।)

ॐ तच्छंय्योरावृणीमहे। गातुं यज्ञाय गातुं यज्ञपतये। दैवी स्वस्तिरस्तु नः स्वस्तिर्मानुषेभ्यः॥
ऊर्ध्वं जिगातु भेषजम् शंनो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे॥ *(ऋग्वेद परिशिष्ट १० मण्डल)* ॐ गं गणपतये नमः शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि॥

वस्त्रम्— ॐ युवं वस्त्राणि पीवसावसाथे युवोरच्छिद्रा मन्तवोहसर्गाः।
अवातिरतमनृतानि विश्व ऋतेन मित्रा वरुणा सचेथे॥ (ऋग्वेद १.१५२.१)

ॐ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः। तेनं देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये॥ *(ऋग्वेद १०.९०)*

ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मिं राष्ट्रेऽस्मिन्कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥ *(पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ गं गणपतये नमः वस्त्रं समर्पयामि। (रूई का वस्त प्रतिदिन बदलना चाहिये। पीताम्बर, रेशम या मडि वस्त्र पूजा में रखने पर दूसरे दिन भी उसे झाडकर पुनः गायत्री मन्त्र से प्रोक्षण कर दुबारा उस उपयोग में ला सकते हैं।)

यज्ञोपवीतम्—ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्।

आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्चशुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥ *(पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ तस्माद् यज्ञात् सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम्। पशून्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्यान् ग्राम्याश्च ये॥ *(ऋग्वेद १०.९०)*

ॐ क्षुत् पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वा निर्णुद मे गृहात्॥ *(पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ गं गणपतये नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि। दो यज्ञोपवीत। वस्त्र एवं यज्ञोपवीत। देने के बाद आचमनम्। ॐ गं गणपतये नमः आचमनं समर्पयामि।

आभरणम्—ॐ हिरण्यरूपः स हिरण्य सन्दृगपान्नपात् सेदु हिरण्य वर्णः।

हिरण्ययात् परियोनें निषद्यां हिरण्य दा ददन्यन्नमस्मै॥ *(ऋग्वेद २.३५.१०)* ॐ गं गणपतये नमः। आभरणं समर्पयामि।

गन्धम्— ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीं। ईश्वरीं सर्वभुतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ *(पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ तस्माद् यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद् यजुस्तस्मादजायत॥ *(ऋग्वेद १०.९०)*

ॐ गं गणपतये नमः गन्धं समर्पयामि।

अक्षताः—ॐ अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत। अर्चन्तु पुत्रका उतपुरन्न धृष्णवर्चत॥ *(ऋग्वेद ८.६९.८)*

ॐ गं गणपतये नमः अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पाणि—ॐ आयंने ते परायंणे दूर्वा रोहन्तु पुष्पिणीः। हृदाश्च पुण्डरींकाणि समुद्रस्यं गृहा इमे ॥ (ऋग्वेद १०.१४२.८)
ॐ तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादंतः। गावोंहजज्ञिरे तस्मात् तस्माज्जाता अंजावयंः ॥ (ऋग्वेद १०.९०)
ॐ मनंसः काममाकूंतिं वाचः सत्यमंशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रंयतां यशंः ॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐगं गणपतये नमः पुष्पाणि समर्पयामि। इसके पश्चात् गणेश मण्डल के अङ्गपूजा

प्रथमावरण पूजनम्—(पुष्प चढ़ायें)—आग्नेय में—ॐ गां हृदयाय नमः। ईशान में—ॐ गीं शिरसे स्वाहा नमः। नैर्ऋत्य में—ॐ गूं शिखायै वषट् नमः। वायव्य में— ॐगैं कवचाय हुं नमः। अग्नेय में ॐ गौं नेत्रत्रयाय वौषट् नमः। ॐ गः अस्त्राय फट् नमः। गङ्गणपतये नमः। प्रथमावरणपूजां समर्पयामि।

सूत्र—पूज्य पूजकयोर्मध्ये या सा प्राची प्रकीर्तिता। प्रतिष्ठित देवता जिस भी दिशा को देख रहे हैं। शास्त्रों के अनुसार वही पूर्व दिशा मान्य है। इसी के आधार पर शेष दिशाओं का निर्धारण करना चाहिये। जहाँ देवता पूर्वाभिमुख है वहाँ दिशाये यथावत् रहेंगे।

द्वितीयावरण पूजा—ॐगं गणंजयाय नमः—(पूर्व में)। ॐगिं विघ्नेशाय नमः—(आग्नेय में)। ॐगुं एकदंष्ट्रय नमः—(दक्षिण में)। ॐगृं वीराय नमः—(नैर्ऋत्य में)। ॐग्लृं गजवक्त्राय नमः—(पश्चिम में)। ॐगें लम्बोदराय नमः—(वायव्य में)। ॐगों वरदाय नमः—(उत्तर में)। ॐगं भक्तप्रियाय नमः—(ईशान में)। ॐगं गणपतये नमः। द्वितीयावरणपूजां समर्पयामि।

तृतीयावरण पूजा—इस पूजन के समय दिक्पाल अपनी-अपनी दिशा में ही रहते है। अतः वास्तव दिशाओं में ही इनका पूजन करना चाहिये।

तृतीयावरण पूजा—पूर्वे इन्द्रं—ॐलं इन्द्राय सुराधिपतये पीतवर्णाय शची समेनाथ वज्रहस्ताय ऐरावतवाहनाय सशक्तिकाय साङ्गाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय सर्वालंकार भूषिताय गणेश मूर्ति पार्षदाय नमः। आग्नेये अग्निं—ॐरं अग्नये तेजोधिपतये पिंङ्गल वर्णाय स्वाहा समेताय शक्तिहस्ताय मेषवाहनाय सशक्तिकाय साङ्गाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय सर्वालंकार भूषिताय गणेशमूर्ति पार्षदाय नमः। दक्षिणे यमं—ॐडं यमाय प्रेताधिपयते श्यामला समेताय, कृष्णवर्णाय, दण्डहस्ताय, महिषवाहनाय सशक्तिकाय साङ्गाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय सर्वालंकार भूषिताय गणेशमूर्ति पाषर्दाय नमः। नैर्ऋत्ये, निर्ऋतिं—ॐक्षं निर्ऋतये रक्षोधिपतये रक्षा समेताय, रक्तवर्णाय खङ्गहस्ताय नरवाहनाय सशक्तिकाय, साङ्गाय, सायुधाय, सवाहनाय, सपरिवाराय सर्वलंकार भूषिताय गणेशमूर्मि पार्षदाय नमः।

पश्चिमें वरुणम्—ॐवं वरुणाय जलाधिपतये सिद्धा समेताय, शुभ्रवर्णाय, पाशहस्ताय, मकरवाहनाय सशक्तिकाय साङ्गाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय सर्वालंकार भूषिताय गणेशमूर्ति पार्षदाय नमः। **वायव्ये वायुं**—ॐयं वायवे प्राणाधिपतये, धूम्रवर्णाय अंजना समेताय, अङ्कुशहस्तायय वाहनाय सशक्तिकाय साङ्गाय, सायुधाय, सवाहनाय, सपरिवाराय, सर्वालंकार भूषिताय गणेशमूर्ति पार्षदाय नमः। **उत्तरे सोमं**—ॐसोमाय नक्षत्राधिपतये शुक्लवर्णाय गदाहस्ताय रोहिणी समेताय अश्ववाहनाय सशक्तिकाय, साङ्गाय, सायुधाय, सवाहनाय, सपरिवाराय, सर्वालंकार भूषिताय गणेशमूर्ति पार्षदाय नमः। **ईशाने ईश्वरं**—ॐहं ईशानाय विद्याधिपतये पार्वती समेताय, स्फटिकवर्णाय, त्रिशूलहस्ताय, वृषभ वाहनाय सशक्तिकाय साङ्गाय सायुधाय स वाहनाय सपरिवाराय सर्वालंकार भुषिताय गणेशमूर्ति पार्षदाय नमः। **आकाशे ब्रह्मणं**—ॐयं ब्रह्मणे लोकाधिपतये सरस्वतीसमेताय शुभ्रवर्णाय पाशहस्ताय हंस वाहनाय सशक्तिकाय साङ्गाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय सर्वालंकार भूषिताय गणेशमूर्ति पार्षदाय नमः। **पाताले अनन्तं (विष्णुं)**—ॐऐं अनन्ताय नागाधिपतये क्षीरवर्णाय चक्रहस्ताय लक्ष्मी समेताय.गरुडवाहनाय सशक्तिकाय साङ्गाय सायुधाय स वाहनाय सपरिवाराय सर्वालंकार भूषिताय गणेशमूर्ति पार्षदाय नमः। तृतीयावरण पूजां सर्मपयामि।

चतुर्थावरण पूजनम्—ॐवज्राय नमः। ॐशक्तये नमः। ॐदण्डाय नमः। ॐखड्गाय नमः। ॐपाशाय नमः। ॐअंकुशाय नमः। ॐगदायै नमः। ॐत्रिशूलाय नमः। ॐचक्राय नमः। ॐपाषाय नमः। ईशाने ब्रह्माणं नैर्ऋत्ये अनन्तं पूजयेत्। अग्रे—कुम्भोदराय नमः। (कुम्भोदर गणेश जी के नैमलिय धारण करने के अधिकारी हैं। उत्तर ईशान के बीच इनका वास है।) *(गणेश जी के पूजन प्रधान होने पर यहाँ फूलों से या दूर्वा से सहस्रनामादि कर सकते हैं।)*

धूपम्— **वनस्पति रसोत्पन्नो गन्धाढ्यः सुमनो हरः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम्॥** *(प्रयोगरत्नाकर)*

ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्य कौ बाहू का ऊरु पादा उच्येते॥ *(ऋग्वेद ४.१०.९०)*

ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम। श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐगं गणपतये नमः धूपं आघ्रापयामि।

दीपम्— **साज्यं चिंवर्ति संयुक्तं वह्निना योजितं मया। गृहाण मङ्गलं दीपं त्रैलोक्य तिमिरापह॥** *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

ॐ ब्राह्मणोस्य मुखमासीत् बाहू राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत। *(ऋग्वेद ४.१०.९०)*

ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे। नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ गं गणपतये नमः। दीपं दर्शयामि। धूपं दीपानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि।

नैवैद्यम्—नैवेद्य रखने के स्थल पर मण्डल बनायें। **विश्वामित्र ऋषिः। देवी गायत्री छन्दः। सविता देवता। निवेदने विनियोगः।** एक बार गायत्री मन्त्र से नैवेद्य पर प्रोक्षण करें। **सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि,** इन मन्त्र से दिन में, एवं **ऋतं त्वासत्येन परिषिञ्चामि,** इन मन्त्र से रात्रि में परिषिञ्चन करें। **यथा सम्भव नैवेद्यं निरीक्षस्व,** कहकर प्रार्थना करें। **अमृतोपस्तरणमसि** मन्त्र से जल छोडें। बायें हाथ में ग्रास मुद्रा (जैसे बछड़े को घास खिलाते हैं) एवं दाहिने हाथ से निम्न मुद्राओं से देवता को नैवेद्य अर्पण करें। मन में कल्पना करें कि भगवान् को खिला रहे हैं।

प्राणाय स्वाहा—अङ्गुष्ठ एवं कनिष्ठिका मिलाकर, **अपानाय स्वाहा**—अङ्गुष्ठ एवं तर्जनी मिलाकर **व्यानाय स्वाहा**—अङ्गुष्ठ एवं मध्यमा मिलाकर, **उदानाय स्वाहा**—अङ्गुष्ठ एवं अनामिका मिलाकर, **समानाय स्वाहा**—सभी अङ्गुलियों को मिलाकर

ताम्बूल के पश्चात् नीराजन (आरती)

ॐ अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत। अर्चन्तु पुत्रका उत पुरं न धृष्ण्वर्चत॥ *(ऋग्वेद ८.६९.८)*

ॐ ध्रुवाद्यौर्ध्रुवा पृथिवीध्रुवासः पर्वता इमे। ध्रुवं विश्वमिदं जगद् ध्रुवो राजा विशामयम्॥

ॐ ध्रुवं ते राजा वरुणो ध्रुवं देवो बृहस्पतिः ध्रुवं त इन्द्रश्चाग्निश्च राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम्॥ *(ऋग्वेद १०.१७३.४-६)*

ॐ गं गणपतये नमः। मङ्गल नीराजनं दर्शयामि। कुर्यादारार्तिकं पञ्चवर्तिका मनुसंख्यया पादयोश्च चतुर्वारं द्विः कृत्वोनाभि मण्डले। एककृत्वो मुखे सप्त कृत्वः सर्वाङ्ग एव हि॥ नीराजन में पाँच बाती हो पादो को चार बार नाभि मण्डल में दो बार, मुख को एक बार एवं सम्पूर्ण शरीर को सात बार आरती करनी चाहिये।

मन्त्र पुष्पम्—ॐ गणानान्त्वा गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।

ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आनः शृण्वन्नूतिभिस्सीदसादनम् ॥ (ऋग्वेद २.२३.१)

ॐ निषुसीद गणपते गणेषुत्वामाहुर्विप्रतमं कवीनां।

न ऋते त्वत्क्रियते किंचनारे महामर्कं मघवन् चित्र मर्च ॥ (ऋग्वेद १०.११२.९)

ॐ अभिख्यानो मघवन् नाधमानान् त्सखे बोधि वसुपते सखीनाम्।

रणंकृधि रणकृत् सत्यशुष्माऽभक्ते चिदाभजा राये अस्मान् ॥ (ऋग्वेद १०.११२.१०)

ॐ विद्माहित्वा तुवि कूर्मिं तुवि देष्णं तुवीमघम्। तुविमात्र मवोभिः ॥ (ऋग्वेद ८.८१.२)

ॐ आतू न इन्द्र क्षुमन्तं चित्रं ग्राभं संगृभाय। महाहस्ती दक्षिणेन ॥ (ऋग्वेद ८.८१.१)

ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।

पद्भ्यां भुमिर्दिशः श्रोत्रात् तथा लोकाँ अकल्पयन् ॥ (ऋग्वेद १०.९०)

ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।

सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐगं गणपतये नमः। मन्त्रपुष्पं समर्पयामि। (इन मन्त्रों से गणेश जी पर फूल चढायें।)

प्रदक्षिणा नमस्कार—यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च। तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे-पदे ॥ (स्मृति संग्रह)

ॐ सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुं ॥ (ऋग्वेद १०.९०)

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ॥ (स्मृति संग्रह)

(इन मन्त्रों से प्रदक्षिणा करनी चाहिये।) ॐगं गणपतये नमः। प्रदक्षिणानमस्कारान् समर्पयामि।

प्रसन्नार्घ्य—ॐ एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्तिः प्रचोदयात्॥ *(स्मृति संग्रह)*

इदमर्घ्यम्, इदमर्घ्यम्, इदमर्घ्यम्॥ (इस पूरी प्रक्रिया को तीन बार करना चाहिये, जल छोड़ना चाहिये।)

उत्तरपूजनम्—ॐ छत्रं समर्पयामि, चामरेणवीजयामि, गीतं गायामि, नाट्यं नटामि, आन्दोळिकामारोहयामि। अश्वमारोहयामि। गजमारोहयामि। समस्तराजोपचार देवोपचार पूजां समर्पयामि।

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥ *(ऋग्वेद १०.९०)*
ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्य मन्वहम्। सूक्तं पंचदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ गं गणपतये नमः सर्वोपचार पूजां समर्पयामि।

प्रार्थना—ॐ वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्य समप्रभ। निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥ *(याजुषपूर्व प्रयोग रत्नाकर)*
कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुध्यात्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि॥ *(स्मृति संग्रह)*
ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविः ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्। ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना॥ *(भगवद्गीता)*

ॐ गं गणपतये नमः अनेन कृत पूजनेन महागणपतिः प्रीयताम्। (यहाँ पर गणेश पूजन संपन्न हुआ।)

प्रथम दिन द्वितीय प्रहर

पञ्चगव्य मण्डल (प्रथम विधान)

१-पूर्व में गोमूत्र
२-पश्चिम में दूध
३-दक्षिण में गोमय
४-उत्तर में दहि
५-आग्नेय में घी
६-वायव्य में कुशोदक
७-प्रधान पात्र मध्य में
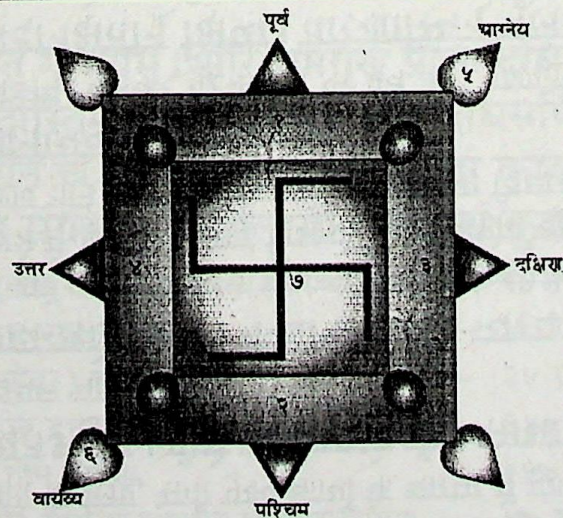
पञ्चगव्य प्राशन—

मङ्गलार्थं शुभार्थं च आरम्भे पुण्यकर्मणाम्। निर्विघ्नेन फलावाप्त्यै पुण्याहं कथ्यते बुधैः॥ *(लक्षण संहिता)*

मङ्गल के लिए, शुभ के लिए, निर्विघ्नता से फल प्राप्ति के लिए, सभी पुण्य कार्यों के आरम्भ में पुण्याह करना आवश्यक है।

पञ्चगव्य विधनस्य लक्षणं कथ्यतेऽधुना। शैवे च वैष्णवे चैव साधारणमतः परम्॥ *(लक्षण संहिता)*

शैव एवं वैष्णव सभी संप्रदायों में समान पञ्चगव्य विधान बता रहे हैं।

स्वस्तिके व्रीहिसंपूर्णे न्यस्त्वा पात्रमधोमुखम्। मन्थानं चोपरि न्यस्य सकूर्च फलपुष्पकम्॥ *(लक्षण संहिता)*

स्वस्तिक मण्डल में चालों को एक केले के पत्ते में रखें। पात्र को नीचे मूँह करके रखें। मथनी को उसके ऊपर रखें। कूर्च एवं फल पुष्प को भी उस उल्टे किये बर्तन पर रखें। स्वस्तिक मण्डल अलग पन्ने में लिखा है। चार दिशाओं में एवं आग्नेय वायव्य में छः कटोरे उल्टा कर रखें। करशुद्धिं पुराकृत्य प्राणायाम त्रयं चरेत्। पहले हाथें को धोकर उसके बाद तीन बार प्राणायाम करें। (प्राणायाम विधान गणेश पूजन में है।)

स्ववामाग्रे गुरुं पूज्य दक्षिणे गणनायकम्। *(लक्षण संहिता)*

(पहले हि गुरु गणेश पूजन हुआ है। अतः ॐगुं गुरवे नमः कहकर गुरुमण्डल पर एवं ॐगं गणपतये नमः कहकर गणेश जी पर फूल चढ़ायें।)

अस्त्रेण प्रोक्ष्य पात्रं तदुपरि विशदानक्षतान् क्षिप्य। तारेणास्मिन् मूलेन पुष्पं पृथगरिमनुना धूपदीपौ प्रदर्श्य॥
उत्तानीकृत्य पुष्पाक्षतमपि विधिना सोक्तमन्त्रैश्च गव्या।
नेकैकान् प्रोक्त संख्यान्यपि च करमनुक्षाल्य संपूजयेत् च॥ *(लक्षण संहिता)*

पहले उल्टा किये सात बरतनों पर ॐगः अस्त्राय फट् कहकर पानी छोड़े उसके ऊपर अक्षता डालें। फिर पुष्प धूप दीप का अर्पण करें। फिर एक-एक को उल्टा कर सही रूप में रखें। एवं उनका भी अक्षत पुष्प धूप दीप से पूजन करें।

गोमूत्रं स्थापयेत् पूर्वं गोमयं दक्षिणे स्मृतम्। क्षीरं तु पश्चिमे स्थाप्य उत्तरे दधि संस्मृतम्॥
आग्नेयान्तु घृतं प्रोक्तं वायव्यान्तु कुशोदकम्। *(स्मृति संग्रह)*

गोमूत्र के बरतन को पूर्व दिशा में रखें, गोमय बरतन को दक्षिण में रखें, दूध के बरतन को पश्चिम दिशा में, उत्तर में दहि के बरतन को आग्नेय दिशा में घी के बरतन एवं वायव्य दिशा में कुशोदक के बरतन को रखें।

पात्र में डालने योग्य पञ्चगव्यों का प्रमाण—

गोमूत्रमेकमानं स्यात् अर्धमानं तु गोमयम्। क्षीरं सप्तगुणं प्रोक्तं दधि त्रिगुणमुच्यते॥
सर्पिरेकगुणं तद्वत् कुशोदकमुदीरितम्। गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधिसर्पिः कुशोदकम्॥
द्रव्याणि क्रमशः प्रोक्त लक्षणानि च संग्रहेत्। रक्तगोमूत्रमुद्दिष्टं कृष्णगोर्गोमयं स्मृतम्।
पयः पल्लवयाम्रायाः श्वेतगोर्दधि संग्रहेत्॥ कपिलाया घृतं ग्राह्यं कुशाग्राभ्यां कुशोदकम्॥ *(लक्षण संहिता)*

यहाँ पर प्रत्येक गव्य संग्रह के लिए निर्दिष्ट गाय बताये गये है सम्भव न होने पर देशी गायों से संग्रह कर सकते हैं।

रक्त वर्णीय गाय से संगृहीत गोमूत्र एक प्रमाण	— ५० ग्राम
काली गाय से संग्रहीत गोमय (गोबर) अर्घ प्रमाण	— २५ ग्राम
पत्ते के साम्रवर्णीय गाय से संगृहीत दूध सात प्रमाण	— ३५० ग्राम
सफेद गाय से संगृहीत दधि का तीन प्रमाण	— १५० ग्राम
कपिला (सफेद रक्त वर्ण मिश्रित) गाय से संगृहीत घी एक प्रमाण	— ५० ग्राम
कुश के अग्रों के दो टुकड़े एक प्रमाण पानी मे	— ५० ग्राम
कुल	**— ६७५ ग्राम**

इस प्रमाण से वस्तुओं का सङ्ग्रह करें। एवं पहले पात्रों में इन द्रव्यों को भरें। प्रधान पात्र खाली रखें। एक-एक पात्र में देवताओं का आवाहन करें।

गोमूत्रे देवतादित्यः गोमये वायुरीरितः। सोमं तु क्षीरे ह्यावाह्य दध्नि शुक्रं समर्चयेत्॥
घृते त्वग्निं तु संस्थाप्य गंधर्वं तु कुशोदके। *(बोधायनीय प्रयोगमाला)*

गोमूत्र में सूर्य का आवाहन—ॐभूः गोमूत्रे आदित्याय नमः आदित्यं आवाहयामि। ॐभुवः आदित्याय नमः आदित्यं आवाहयामि। ॐस्वः आदित्याय नमः आदित्यं आवाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः आदित्याय नमः आदित्यं आवाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि।

गोमय मे वायु का आवाहन—ॐभूः वायवे नमः वायुं आवाहयामि। ॐभुवः वायवे नमः वायुं आवाहयामि। ॐस्वः वायवे नमः वायुं आवाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः वायवे नमः वायुं आवाहयामि। स्थापयामि पूजयामि।

गोदुग्ध में सोम का आवाहन—ॐभूः सोमाय नमः सोमं आवाहयामि। ॐभुवः सोमाय नमः सोमं आवाहयामि। ॐस्वः सोमाय नमः सोमं आवाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः सोमाय नमः सोमममावाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि।

दहि में शुक्र का आवाहन—ॐभूः शुक्राय नमः शुक्रमावाहयामि। ॐभुवः शुक्राय नमः शुकमावाहयामि। ॐस्वः शुक्राय नमः शुक्रमावाहयामि। ॐभूर्भुवस्वः शुक्राय नमः शुक्रमावाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि।

घी में अग्नि का आवाहन करें। ॐभूः अग्नये नमः अग्निमावाहयामि। ॐभुवः अग्नये नमः अग्निमावाहयामि। ॐस्वः अग्नये नमः अग्निमावाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः अग्नये नमः अग्निमावाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि।

कुशोदक में गन्धर्व का आवाहन करें। ॐभूः गन्धर्वाय नमः। गन्धर्वमावाहयामि। ॐभुवः गन्धर्वाय नमः। गन्धर्वमावाहयामि। ॐस्वः गन्धर्वाय नमः। गन्धर्वमावाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः गन्धर्वाय नमः। गन्धर्वमावाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि। छ कटोरियों में देवताओं का आवाहन संपन्न हुआ।

अब संक्षेप में सब का पूजन करें। ॐआवाहित देवताभ्यो नमः। ॐलं पृथिव्यात्मना गन्धं कल्पयामि। ॐहं आकाशात्मना पुष्पं कल्पयामि। ॐयं वाय्वात्मना धूपं कल्पयामि। ॐरं अग्न्यात्मना दीपं कल्पयामि। ॐवं अंबात्मना नैवेद्यं कल्पयामि। ॐपं परमात्मना पञ्चोपचारपूजां समर्पयामि। इसके पश्चात् निम्न मन्त्रों से प्रधान पात्र में पूरण करें। भरें।

गोमूत्र पूरण मन्त्र—ॐ शन्नो॑ दे॒वीर॒भिष्ट॑य॒ आपो॑ भवन्तु पी॒तये॑। शंय्यो र॒भिस्र॑वन्तुनः ॥ (ऋग्वेद १०.९.४)

गोमय पूरण मन्त्र—ॐ गन्धद्वा॒रां दु॑राध॒र्षां नि॒त्यपु॑ष्टां करी॒षिणी॑म्। ईश्वरीं सर्व॑भूता॒नां ता॒मि॒होप॑ह्वये॒ श्रियम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

दूध भरने का मन्त्र—ॐ आप्या॑यस्व॒ समे॑तुते वि॒श्वतः॒ सोम॒वृष्ण्य॑म्। भवा॒वाज॑स्य संग॒थे। (ऋग्वेद १.९१.१६)

दहि भरने का मन्त्र—ॐ द॒धि॒ क्राव्णो॑ अकारिषं जि॒ष्णोरश्व॑स्य वा॒जिनः॑ ।सु॒र॒भिनो॒ मुखा॑कर॒त्प्रण॒ आयूं॑षि तारिषत्॥ (ऋग्वेद ४.३९.६)

घी भरने का मन्त्र—ॐ शु॒क्रम॑सि ज्योति॑रसि॒ तेजो॑ऽसि दे॒वो वः॒ सवि॒तोत्पु॑ना॒ त्वच्छि॑द्रेण प॒वित्रे॑ण वसो॒ः सूर्य॑स्य र॒श्मिभिः॑।
(यजुर्वेद १-काण्ड १-प्रश्न १० अनुवाक २०-मन्त्र)

कुशोदक भरने का मन्त्र—ॐ दे॒वस्य॑त्वा सवि॒तुः प्र॑स॒वे॑ऽश्विनो॑र्बा॒हुभ्यां॑ पू॒ष्णो हस्ता॑भ्यां॥ (यजुर्वेद १-काण्ड १-प्रश्न ४ अनुवाक १०-मन्त्र)

अब मन्त्रों से प्रधान पात्र में भरने के बाद निम्नमन्त्रों से मन्थन करें। (मथनी से)

ॐ दे॒वस्य॑त्वा सवि॒तुः प्र॑स॒वे॑ऽश्विनो॑र्बा॒हुभ्यां॑ पू॒ष्णो हस्ता॑भ्यां। ॐ मन्थ॑ता नरः क॒विमद्व॑यन्तं॒ प्रचे॑तसम॒मृतं॑ सु॒प्रती॑कं।
य॒ज्ञस्य॑ के॒तुं प्र॑थ॒मं पु॒रस्ता॑दु॒ग्निं नरो॑ जनयता सु॒शेव॑म्॥ (ऋग्वेद ३.२९.५)

उपरोक्त मन्त्रों से मन्थन करना चाहिये। तदनन्तर प्रधान पात्र में आवाहन करें। इरावती वसिष्ठो विष्णुस्त्रिष्टुप्। पञ्चगव्यमध्ये विष्णवावाहने विनियोगः।

ॐ इरा॑वती धेनु॒मती॒ हि भू॒तं सू॑यव॒सिनी॒ मनु॑षे दश॒स्या।
व्य॑स्तभ्ना॒ रोद॑सी विष्णवे॒ ते दा॒धर्थ॑ पृथि॒वीम॒भितो॑ म॒यूखैः॑॥ (ऋग्वेद ७.९९.३)
ॐ इ॒दं विष्णु॒र्विच॑क्रमे त्रे॒धा निद॑धे प॒दम्। समू॑ळहमस्यपांसु॒रे॥ (ऋग्वेद १.२२.१७)

ॐ विष्णवे नमः। ॐ भूः विष्णुमावाहयामि। ॐ भुवः विष्णुमावाहयामि। ॐ स्वः विष्णुमावाहयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णुमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

ॐ मानस्तोके तनये मानं आयौ मानो गोषुमानो अश्वेषु रीरिषः।
वीरान्मानो रुद्रभामितो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे ॥ (ऋग्वेद १.११४.८)

ॐ रुद्राय नमः। ॐ भूः रुद्रमावाहयामि। ॐ भुवः रुद्रमावाहयामि। ॐ स्वः रुद्रमावाहयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः रुद्रमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

ॐ शंवतीः पारयन्त्ये ते तं पृच्छन्ति वचो युजा। अभ्यारं तं यमाकेतु य एवेदमिति ब्रवन् ॥ (ऋग्वेद ७.३५ परिशिष्ट)

ॐ विश्वेदेवेभ्यो नमः। ॐ भूः विश्वेदेवमावाहयामि। ॐ भुवः विश्वेदेवमावाहयामि। ॐ स्वः विश्वेदेवमावाहयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वेदवमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। कलश छूकर आठ बार या एक सौ आठ बार गायत्री मन्त्र का जप करें। आवाहित देवताभ्यो नमः, षोडशोपचार पूजां समर्पयामि। (यहाँ पर संक्षेप में षोडशोपचार पूजन करना चाहिये—इसका विधान गणेश पूजन में है) इसके बाद निम्न मन्त्र से प्राशन (सेवन) करें।

ॐ यत्वगस्थि गतं पापं देहे तिष्ठति मामके।
प्राशनं पञ्चगव्यस्य दहत्यग्निरिवेन्धनम्। (स्मृति संग्रह) यहाँ पर पञ्चगव्यप्राशन संपन्न हुआ।

इसके प्रमाण श्लोक—शन्नो देवीति गोमूत्रं गन्धद्वारेति गोमयम्। आप्यायस्वेति चक्षीरंदधिक्राव्णो दधि क्रमात् ॥
आज्यं शुक्रमसीत्युक्तं देवस्यत्वा कुशोदकम्। पूरणे पञ्चगव्यानामिति मन्त्राः प्रकीर्तिताः ॥
गाय त्र्यावाह्य पूजादि सर्वकर्म समाचरेत्। इरावती इदं विष्णुर्मानस्तोकेति शंवति ॥ (लक्षण संहिता)

पुरयाह प्रकरराम्

मङ्गलार्थं शुभार्थं तदारम्भे पुरयकर्मराराम्। निर्विघ्नेन फलावाप्त्यै पुरयाहः कथ्यते बुधैः ॥ *(लक्षरा संहिता)*

संपन्न किये जाने वाले कार्य मङ्गलमय हो, शुलफल देने वाला हो, एवं निर्विघ्नता से फल प्राप्ति हो इसलिए सभी कार्यो में पुरयाह वाचन अनिवार्य है।

अत्र हेमाद्रौ दानकारडे बह्वचपरिशिष्टत्वेनोक्तः

सकल साधाररा शिष्टाचार प्राप्तश्च पुरयाह वाचन प्रयोगो लिख्यते। हेमाद्रि ग्रन्थ के दानकारड में बहुत से ऋषियों के मत से कहा गया अधिक रूप से समाज में प्रचलित पुरयाहविधान बता रहे है। **कृतमङ्गलस्नानः** = पहले मङ्गल स्नान करें। **स्वलंकृतः** = मस्तक में सप्रदाय चिन्हों से अलंकृत हो। **संभृत मङ्गल संभारोः** = सभी मङ्गल द्रव्यों को एकत्र करें। **मङ्गलल रंगवल्ली मंडित शुद्ध स्थलेः** = मङ्गलमय रंगोली से सुशोभित पवित्र स्थल पर। **प्राङ्मुखो यजमानः** = यजमान पूर्व दिशा की ओर मूँह कर बैठें। **ऊर्रा वस्त्राद्याच्छादिते पीठे उपविश्यः** = ऊनी वस्त्रादि से आच्छादित पीट पर बैठकर।

यदि गृहस्थ हो तो—पत्नीं स्वदक्षिरातः प्रांङ्गमुखीमुपवेश्यत्न=दाहिनी ओर पूर्वाभिमुख पत्नी को बैठाकर। यह गृहस्थों के द्वारा करने वाले विवाहादि में—संस्कार्य च तथैवोपवेश्यः=उनका भी स्नानादि से शुद्धि हो।

तदनन्तर—बाह्मरौः = ब्राह्मरों के द्वारा ''यशस्करं बलवन्तं कनिकदज्जनुष'' आदि माङ्गल्य मन्त्रों से मङ्गल तिलक धारा करें। इसके बाद दो बार आचमन करें। एवं प्राराायाम करें। गरोश जी की प्रार्थना करें। हाथ में पवित्र को धारा करें। स्थान देवता का पूजन करें। इसके पश्चात् गरोशपूजन करें। इतना हम पहले ही कर चुके हैं। पञ्चगव्य प्राशन (पुरयाहवाचन के बाद) (पञ्चगव्यपीना चाहिये)।

ऋग्वेदीय पुरायाह मराडल
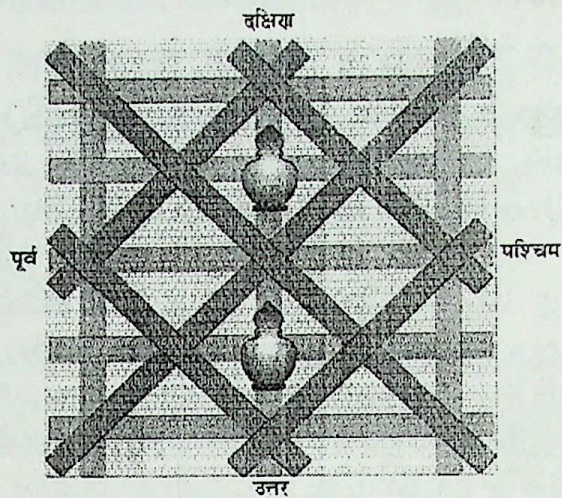
यहाँ से पुरायाहवाचन प्रारम्भ—कर्ता स्वपुरतः=पुरायाहवाचन करने वाले अपने आगे भूमि पर—

ॐ मुहीद्यौः पृथिवीचन इमंयज्ञंमिमिक्षतां। पिपृतां नोभरीमभिः॥ *(ऋग्वेद २२.१३)*

इस मन्त्र को पढकर भूमि को उत्तर एवं दक्षिण दिशा में स्पर्श करें।

ॐ ओषधयः संवदंते सोमेनसहराज्ञा। यस्मैकृणोति ब्राह्मणास्तं राजन्पारयामसि॥ (ऋग्वेद १०.९७.२२)

इस मन्त्र से पत्तल आदि बिछाकर दो चावल की राशी उत्तर एवं दक्षिण में बनाना याहिये।

ॐ आकलशेषु धावति पवित्रे परिषिच्यते। उक्थैर्यज्ञेषु वर्धते॥ (ऋग्वेद ९.१७.४)

इस मन्त्र को पढ़कर चावल पर दो कलशों को स्थापित करें।

ॐ इमं मे गङ्गेयमुने सरस्वतिशुतुद्रि स्तोमं सचतापरुष्णया।
असिक्न्या मरुद्वृधेवितस्तया र्जीकीये श्रणुह्यासुषोमया॥ (ऋग्वेद १०.९७.५)

इस मन्त्र से कलशों में तीर्थ जल भरें।

ॐ गंधद्वारांदुराधर्षांनित्यपुष्टांकरीषिणीं। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

इस मन्त्र से गंध (चन्दन) कलश में डालें।

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषः परि। एवानो दूर्वे प्रतनुसहस्रेणशतेन च॥ (यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्)

इस मन्त्र से दूर्वा (दूब) कलश में डालें।

ॐ अश्वत्थेवोनिषदनं पर्णेवोवसतिष्कृता। गोभाज इत्किलासथयत्सनवथपूरुषं॥ (ऋग्वेद १०.९७.५)

इस मन्त्र से कलश पर अश्वत्थ, बरगद, आम, जामुन, कटहल के पत्तों को रखें। (पञ्च पल्लव)

ॐ याः फलिनी र्या अफला अपुष्पायाश्चपुष्पिणीः। बृहस्पतिं प्रसूतास्तानोमुञ्चंत्वं हंसः॥ (ऋग्वेद १०.९७.१५)

इस मन्त्र से द्राक्षा आदि छोटे फलों को कलश में डालें।

ॐ सहिरत्नानिदाशुषे सुवातिसविताभगः। तं भागं चित्रमीमहे॥ (ऋग्वेद ५.८२.३)

इस मन्त्र से रत्नों को (पुष्प को) कलश में डालें।

ॐ हिरंण्यरूपः सहिरंण्यसंदृगपान्नपात्सेदुहिरंण्यवर्णः। हिरण्ययात्परियोनेर्निषद्याहिरण्यदादंदुत्यन्नंमस्मै॥ (ऋग्वेद २.३५.१०)

इस मन्त्र से हिरण्य या सिक्का कलश में डाले।

ॐ युवांसुवासाः परिवीत आगात्सउश्रेयान्भवति जायंमानः। तं धीरांसः कवय उन्नयंति स्वाध्यो३मनंसा देवयंतः॥ (ऋग्वेद ३.८.४)

इस मंत्र से वस्त्र को कलश पर लपेटें या मौली से कलश पर बांधे।

कलशों को वस्त्र बाँधने का विधान-प्रमाण श्लोक—

कलशान् वेष्टयेत् सर्वान् सूत्रेनैकेन बुद्धिमान्। वर्धिनी सूत्रयुग्मेन शिवकुम्भान् त्रिसूत्रकैः॥ (क्रियासार)

सामान्यतः सभी कलशों को मौली से एक बार लपेटना चाहिये। वर्धिनी कलश जो कि अस्त्र कलश भी कहलाता है यह यज्ञ की रक्षा के लिए रखा जाता है इसे मौली से दो बार लपेटना चाहिये। शिवकुम्भ अर्थात प्रधान कलश को तीन बार मौली से लपेटना चाहिये।

ॐ पूर्णादंर्विपरांपत सुपूंर्णा पुनरापंत। वस्नेव विक्रींणावहा इषमूर्जंशतक्रतो॥ (यजुर्वेद-१ काण्ड-८ प्रश्न-४ अनुवाक-२ मन्त्र)

इस मन्त्र से चावल से भरे पात्र को कलश के मुख पर रखना चाहिये। उत्तरकलशे वरुणावाहने विनियोगः। उत्तर दिशा में जो कलश है उसमें नीचे लिखे मन्त्र से वरुण देवता का आवाहन करें।

ॐ तत्वांयामि ब्रह्मंणावन्दंमानस्तदाशांस्ते यजंमानो हविर्भिः।
अहेंळमानो वरुणेहबोध्युरुंशंसमान आयुः प्रमोंषीः॥ (ऋग्वेद १.२४.११)

कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकं आवाहयामि। (आवाहन करें)

ॐभूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः। चन्दनं समर्पयामि। ॐभूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः। पुष्पं समर्पयामि। ॐभूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः। धूपं समर्पयामि। ॐभूर्भुवः

स्वः वरुणाय नमः। दीपं समर्पयामि। ॐभूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः। नैवेद्यं समर्पयामि। इनं पञ्चोपचारों से पूजन करें।

ॐ तत्वांयामि ब्रह्मणा वन्दंमानस्तदाशांस्ते यजंमानो हविर्भिः।
अहेळमानो वरुणेहबोध्युरुंशंसमान आयुः प्रमोंषीः॥ *(ऋग्वेद १.२४.११)*

ॐभूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः। मन्त्रपुष्पं समर्पयामि। अनेन पूजनेन वरुणः प्रीयताम्। इसके पश्चात् कलश छूकर मन्त्र पाठ करें।

कलशस्य मुखेविष्णुः कंठेरुद्रः समाश्रितः। मूले तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथयजुर्वेदः सामवेदोह्यथर्वणः॥
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः॥
अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा। आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षय कारकाः॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्च-देवपूजा प्रकरण)*

उत्तर कलश में अक्षत डालें। मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचार्य देवो भव। अतिथिदेवो भव। सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमो नमः। इसके बाद घुटने टेककर बैठें, अंजलि में उत्तर दिशा के कलश को ग्रहण करें। ब्राह्मणों से आशीर्वाद की प्रार्थना करें।

ब्राह्मण—सत्या आशिष सन्तु *(आपकी इच्छा पूर्ण हो)*। दीर्घानागानद्योगिरयस्त्रीणि विष्णुपदानि च तेनायुः प्रमाणेन पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु *(आपको दीर्घायुष्य प्राप्त हो) (यजमान ब्राह्मणे के हाथ में जल देते हैं)*। ब्राह्मणहस्ते शिवा आपः सन्तु। ब्राह्मण कहते हैं—सौमनस्यमस्तु *(आपका मन स्वस्थ हो)*। अक्षतं चारिष्टं चास्तु *(दिये गये अक्षतों से अरिष्ट निवारण हो)*। गंधाः पान्तु *(कहकर गन्ध देवे)*। सौमंगल्यं चास्तु *(आपको मङ्गल हो)*। अक्षताः पान्तु *(कहकर अक्षत देवे)*। आयुष्यमस्तु *(आपको दीर्घायुष्य हो)*। पुष्पाणि पान्तु *(कहकर फूल देवें)*। सौश्रियमस्तु *(उत्तम संपत् प्राप्त हो)*। तांबूलानि पान्तु *(कहकर ताम्बुल देवें)*। ऐश्वर्यमस्तु *(ऐश्वर्य प्राप्त हो)*। दक्षिणाः पान्तु *(कहकर दक्षिणा सिक्का दें)*। बहुदेयं चास्तु *(भगवान् आपको बहुत देने योग्य बनायें)*। दीर्घमायुः श्रेयः शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु *(आपको दीर्घायुष्य, श्रेय, शान्ति, पुष्टि एवं सन्तोष प्राप्त हो)*।

श्रीर्यशोविद्याविनयोवित्तं बहुपुत्रं चायुष्यं चास्तु।

यं कृत्वा सर्ववेद यज्ञ क्रिया करणकर्मारम्भाः शुभाः शोभनाः प्रवर्तन्ते तमहमोंकारमादिंकृत्वा ऋग्यजुः सामाशीर्वचन बह्वृषिमतं सं विज्ञातं भवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये। (ब्राह्मण यजमान से कहते हैं जिसके करने से सभी वेदों का यज्ञ कार्यों का आरम्भ शुभ होता है ऐसे ॐकार से प्रारम्भ कर बहुत से ऋषियों के द्वारा अच्छी तरह से विचार कर ऋग्वेद यजुर्वेद एवं सामवेदोक्त आशीर्वाद मन्त्रों से (हम-ब्राह्मण) आपका पुण्याह करना चाहते हैं।

यजमान कहते हैं—विप्राः ओं वाच्यतां।

ॐ भद्रं कर्णेभिःशृणुयामदेवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरंगैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेमदेवहितं यदायुः। (ऋग्वेद १.८९.८)

ॐ द्रविणोदा द्रविणसस्तुरस्य द्रविणोदाः सनरस्य प्रयंसत्।
द्रविणोदावीरवतीमिषंनोद्रविणोदारासतेदीर्घमायुः॥ (ऋग्वेद १.९६.८)

ॐ सवितापश्चातात्सवितापुरस्तात्सवितोत्तरात्तात्सविता धरात्तात्।
सवितानः सुवतु सर्वतातिं सवितानोरासतां दीर्घमायुः॥ (ऋग्वेद १०.३६.१४)

ॐ नवो नवो भवति जायमानोह्नांकेतुरुषसामेत्यग्रम्।
भागं देवेभ्यो विदधात्यायन्प्रचन्द्रमास्तिरते दीर्घमायुः॥ (ऋग्वेद १०.८५.१९)

ॐ उच्चादिवि दक्षिणावंतो अस्थुर्येअश्वदाः सहतेसूर्येण।
हिरण्यदा अमृतत्वं भंजतेवासोदाः सोमप्रतिरन्त आयुः॥ (ऋग्वेद ६.६५.६)

ॐ आपंउंदंतु जीव से दीर्घायुत्वाय वर्चसे।
यस्त्वाहृदा कीरिणामन्यमानो मर्त्यं मर्त्योजोहवीमि॥ (यजुर्वेद १ काण्ड-२ प्रश्न-१ अनुवाक-१ मन्त्र)

ॐ जातवेदोयशो अस्मासु धेहि प्रजाभिरग्ने अमृतत्वमश्याम्। यस्मैत्वं सुकृते जातवेद उलोकमग्ने कृणावस्योनम्। अश्विनं सपुत्रिणं वीरवंतं गोमंतंरयिंनशते स्वस्ति। संत्वा सिञ्चामि यजुषा प्रजामायुर्धनं च॥

(यजुर्वेद १ काण्ड-६ प्रश्न-१ अनुवाक-१ मन्त्र)

व्रतनियम तपः स्वाध्याय क्रतुदमदान विशिष्टानां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम् *(यह वाक्य यजमान कहते है कि ब्राह्मणों का मन स्थिर हो)*। विप्राः-समाहित मनसः स्मः *(हम स्वस्थ मनवाले हैं)*। यजमानः-प्रसीदन्तु भवन्तः *(आप प्रसन्न हो)*। **विप्राः**- प्रसन्नाः स्मः *(हम प्रसन्न है)*। यहाँ से प्रत्येक पंक्ति के बाद उत्तर कलश के जल को बड़े बरतन में छोड़े। शान्ति रस्तु *(शान्ति हो)*। पुष्टिरस्तु *(पुष्टि हो)*। तुष्टिरस्तु *(तुष्टि हो)*। वृद्धिरस्तु *(वृद्धि हो)*। अविघ्नमस्तु *(निर्विघ्न हो)*। आयुष्यमस्तु *(आयुष्य हो)*। आरोग्यमस्तु *(आरोग्य हो)*। शिवं कर्मास्तु *(कर्म में मङ्गल हो)*। कर्म समृद्धिरस्तु *(कर्म में समृद्धि हो)*। धर्म समृद्धिरस्तु *(धर्म में समृद्धि हो)*। वेदासमृद्धिरस्तु *(वेद समृद्ध हो)*। शास्त्रसमृद्धिरस्तु *(शास्त्रसमृद्धि हो)*। पुत्र समृद्धिरस्तु *(पुत्र समृद्धि हो)*। धनधान्य समृद्धिरस्तु *(धन एवं धान्य की समृद्धि हो)*। इष्ट संपदस्तु *(इच्छित ऐश्वर्य मिलें)*।

ऐशान्यां बहिर्देशे सर्वारिष्टनिरसन मस्तु *(बाहर देश में सभी प्रकार के अरिष्टों का निवारण हो)*। यत्पापं तत् प्रतिहतमस्तु *(जो भी पाप है वह दूर हो)*। यच्छ्रेयः तदस्तु *(जो श्रेयस्कर हो वह मिले)*। उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः संपद्यंताम् *(आगे-आगे करने वाले कार्य शुभ एवं सुन्दर हो)*। इष्टाः कामाः संपद्यंताम् *(इच्छित कामनाऐं पूर्ण हो)*। तिथिकरणमुहूर्त नक्षत्र संपदस्तु *(तिथि, करण, मुहूर्त एवं नक्षत्र संपत्ति हो—अर्थात् ये सब श्रेष्ठ हो)*।

तिथिकरणमुहूर्त नक्षत्र ग्रहलग्नाधिदेवताः प्रीयन्ताम् *(तिथिकरण मुहूर्त एवं नक्षत्र ग्रहों के सहित एवं देवताओं के सहित प्रसन्न हों)*। दुर्गा पाञ्चाल्यौ प्रीयेताम् *(दुर्गा एवं पाञ्चाली प्रसन्न हो)*। अग्निपुरोगा विश्वेदेवाः प्रीयंताम् *(अग्नि के साथ विद्यमान विश्वेदेव प्रसन्न हो)*। इन्द्र पुरोगाः मरुद्गणाः प्रीयंताम् *(इन्द्रपुरोगाः मरुद्गण प्रसन्न हो)*। ब्रह्मपुरोगाः सर्वेवेदाः प्रीयन्ताम् *(ब्रह्मा जी के साथ विद्यमान सभी वेद प्रसन्न हो)*।

विष्णुपुरोगाः सर्वेदेवाः प्रीयन्ताम् *(विष्णु के साथ विद्यमान सभी देवता प्रसन्न हो)*। माहेश्वरी पुरोगा उमामातरः प्रीयंताम् *(माहेश्वरी देवी के साथ विद्यमान उमामातर प्रसन्न हो)*। वसिष्ठपुरोगा ऋषिगणाः प्रीयंताम् *(वसिष्ठ जी के साथ विद्यमान ऋषिगण प्रसन्न हों)*। अरुंधतीपुरोगा एकपत्न्यः प्रीयंताम् *(अरुन्धती के साथ विद्यमान एकपत्नी देवियाँ प्रसन्न हो)*। ऋषयश्छंदास्याचार्यावेदादेवायज्ञाश्च प्रीयंताम् *(ऋषिगण, छन्द, आचार्य, वेद, देवता एवं यज्ञ प्रसन्न हो)*। ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम् *(ब्रह्मा एवं ब्राह्मण प्रसन्न हो)*। श्री सरस्वत्यौ प्रीयेताम् *(लक्ष्मी एवं सरस्वती प्रसन्न हो)*। श्रद्धामेधे प्रीयेताम् *(श्रद्धा एवं मेधा देवी प्रसन्न हो)*। भगवती कात्यायनी

प्रीयताम् *(भगवती कात्यायनी देवी प्रसन्न हो)*। भगवती माहेश्वरी प्रीयताम् *(भगवती माहेश्वरी प्रसन्न हो)*। भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम् **भगवती तुष्टिकरी प्रीयताम्** । भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम् *(भगवती ऐश्वर्यदेनेवाली प्रसन्न हो)*। भगवती वृद्धिकरी प्रीयताम् *(भगवती वृद्धि करने वाली प्रसन्न हो)*। भगवंतौ विघ्नविनायकौ प्रीयेताम् *(भगवान् विघ्नेश एवं विनायक प्रसन्न हो)*। भगवान् स्वामी महासेनः सपत्नीकः स सुतः सपार्षदः सर्वस्थानगतः प्रीयताम् *(भगवान् कार्तिकेय सपरिवार प्रसन्न हो)*। हरि हर हिरण्यगर्भाः प्रीयंताम् *(विष्णु, शिव, ब्रह्मा जी प्रसन्न हो)*।

सर्वाः ग्रामदेवताः प्रीयताम् *(सभी ग्राम देवता प्रसन्न हो)*। सर्वाः कुलदेवताः प्रीयताम् *(सभी कुल देवता प्रसन्न हो)*। सर्वाः वास्तुदेवताः प्रीयताम् *(सभी वास्तु देवता प्रसन्न हो)*। बहिरपः *(नैऋत्य में बड़े बरतन से बाहर कलश जल छोडें)*। हताब्रह्मद्विषः *(ब्रह्मद्वेषियों का नाश हो)*। हताः परिपन्थिनः *(शत्रुओं का नाश हो)*। हता अस्य कर्मणोविघ्नकर्तारः *(इस कर्म के विघ्न करने वाले का नाश हो)*। शत्रवः पराभवं यातु *(शत्रु पराजित हो)*।

शाम्यन्तु घोराणि *(सभी घोर शान्त हो)*। शाम्यन्तु पापानि *(सभी पाप शान्त हो)*। शांम्यंत्वीयतः *(सभी उत्पातों की शान्ती हो)*। (अंतः) शुभानिवर्धताम् *(मङ्गल अभिवृद्धि हो)*। शिवा आपः सन्तु *(जल मङ्गलमय हो)*। शिवाऋतवः सन्तु *(ऋतुऐं मङ्गलमय हो)*। शिवा अग्नयः सन्तु *(अग्नियां मङ्गलमय हो)*। शिवा आहुतयः सन्तु *(आहुतियां मङ्गलमय हो)*। शिवा ओषधयः सन्तु *(औषधियां मङ्गलमय हो)*। शिवा वनस्पतयः सन्तु *(वनस्पतियां मङ्गलमय हो)*। शिवा अतिथयः सन्तु *(आगन्तुक मङ्गलमय हो)*।

अहोरात्रे शिवेस्याताम् *(रातदिन मङ्गल हो)*। निकामेनिंकामेनः पुर्जन्यों वर्षतु *(समय पर बारीश होवे)*। फलिन्यों न ओषधयः पच्यंताम्।

योगक्षेमो नः कल्पताम् *(हमारा योगक्षेम हो)*। शुक्राङ्गारकबुधबृहस्पतिशनैश्चर राहुकेतु सोम सहिताः आदित्य पुरोगाः सर्वे ग्रहाः प्रीयंताम् *(सूर्यादि शुक्र, कुज, बुध, गुरु, शनि, राहु, केतु, चन्द्र ग्रह प्रसन्न हों)*। भगवान्नारायणः प्रीयताम् *(भगवान् नारायण प्रसन्न हो)*। भगवान् पर्जन्थः प्रीयताम् *(भगवान पर्जन्य प्रसन्न हो)*। प्रीयतां भगवान् स्वामी महासेनः *(भगवान सुब्रह्मण्य प्रसन्न हो)*। पुण्याहकालान्वाचयिष्ये। वाच्यतां इति विप्राः ब्राह्मण कहते हैं—पढें।

ॐ उद्गातेवंशकुनेसामंगायसि ब्रह्मपुत्र इंव सवंनेषु शंससि।
वृषेंव वाजीशिशुंमतीरपीत्यां सर्वतोंनः शकुनेभद्रमावंद विश्वतोंनः शकुनेपुण्य मावंद ॥ *(ऋग्वेद २.४२.२)*
याज्ययायजतिप्रत्तिर्वैयाज्यापुण्यैवलक्ष्मीः पुण्यामेवतल्लक्ष्मीं संभावयति पुण्यां लक्ष्मीं संस्कुरुते ॥

यत्पुण्यं नक्षत्रं। तद्बट्कुर्वी तोपव्युषं। यदावैसूर्य उदेति। अथ नक्षत्रंनैति। यावति तत्र सूर्यो गच्छेत्।
यत्र जघन्यं पश्येत्। तावतिकुर्वीतयत्कारीस्यात्। पुण्याह एव कुरुते। तानि वा एतानि यमनक्षत्राणि।
यान्येव देवनक्षत्राणि। तेषु कुर्वीत यत्कारीस्यात्। पुण्याह एव कुरुते। *(यजुर्वेद - ब्राह्मण)*

सर्वेषांमहाजनान्नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणायाद्यकरिष्यमाणविष्णुसर्वाद्भुतशान्त्याख्याय कर्मणः पुण्याहं भवंतो ब्रुवंत्विति त्रिर्वदेत्।
(यजमान अपने सकुटुम्ब प्रणाम करते हुए आज संपन्न होने वाले कर्म के लिए पुण्याह की याचना करते हुए तीन बार कहते हैं। जिसका प्रत्युत्तर ब्राह्मण तीन बार देते हैं।)

१. ॐ पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु। ॐ अस्तु पुण्याहम्। २. ॐ पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु। ॐ अस्तु पुण्याहम्। ३. ॐ पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु। ॐ अस्तु पुण्याहम्।

ॐ स्वस्तये वायुमुपब्रवामहै सोमं स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः।
बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तय आदित्या सो भवन्तु नः॥ *(ऋग्वेद ५.५१.१२)*

आदित्य उदयनीयः पथ्यैवेतः स्वस्त्याप्रयंतिपथ्यांस्वस्तिमभ्युद्यंतिस्वस्त्येवेतः प्रयंतिस्वस्त्युद्यंति स्वस्त्युद्यंति॥ *(स्मृति संग्रह)*

ॐ स्वस्तिन इन्द्रोवृद्धश्रवाःस्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्तिनस्ताक्ष्यो अरिष्टनेमिःस्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु।
(ऋग्वेद १.८८.६)

ॐ अष्टौ देवा वसवः सोम्यासः॥ चतस्त्रोदेवीरजराश्रविष्ठाः। ते यज्ञं पांतु रजसः पुरस्तात्। संवत्सरीणममृतँ स्वस्ति।
(यजुर्वेद - ब्राह्मण)

इसके बाद नीचे लिखा वाक्य का तीन बार यजमान कहें। एवं ब्राह्मण प्रत्युत्तर दें। सर्वेषां महाजनान्नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणायविष्णुसर्वाद्भुत शान्त्याख्याय कर्मणः स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु। (ब्राह्मण कहते हैं)—ॐ आयुष्मते स्वत्ति। इन उपरोक्त वाक्यों को तीन बार दोहराना चाहिये। इसके बाद पुनः पहले जैसे उत्तर कलश से जल नीचे रखे बड़े पात्र में थोड़ा-थोड़ा कर गिराते हुए मंत्रपाठ करें।

ॐ ऋध्यामस्तोमं सनुयामवाजमानो मंत्रं सरथे होपयांतं।
यशोनपक्कं मधुगोष्वंतराभूतांशो अश्विनोः काममप्राः ॥ (ऋग्वेद १०.१०६.११)
सर्वामृद्धिमृध्नुयामितितं वैतेजसैवपुरस्तात् पर्यभवच्छन्दोभिर्मध्यतोक्षर
रुपरिष्टाद्गायत्र्या सर्वतो द्वादशाहंपरिभूयसर्वामृद्धिमार्ध्नोत्सर्वामृद्धिमृध्नोति य एवं वेद ॥
ऋध्यास्मंहव्यैर्नमसोपसद्यं ॥ मित्रं देवं मित्रधेयंनो अस्तु ॥ अनूराधान् हविषावर्धयंतः।
शतंजीवेमशरदः सवीराः। त्रीणि-त्रीणि वै देवानामृद्धानि।
त्रीणिच्छन्दांसि त्रीणि सवनानि त्रयं इमे लोकाः। ऋध्यामेवतद्वीर्यं एषु लोकेषु प्रतितिष्ठति ॥ (यजुर्वेद - ब्राह्मण)

इसके बाद पुनः नीचे लिखे वाक्यों को तीन बार यजमान कहें। एवं ब्राह्मण प्रत्युत्तर दें। सर्वेषांमहाजनान्नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणायाद्य करिष्यमाण विष्णुसर्वाद्भुतशान्त्याख्याय कर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।
(ब्राह्मण कहते हैं)—ॐ ऋध्यतां। इन उपरोक्त वाक्यों को तीन बार दोहराना चाहिये। इसके बाद मन्त्र पाठ करते हुए उत्तरकलश से नीचे रखे पात्र में जल छोड़ना चाहिये।

ॐ श्रिये जातः श्रियऽआनिरियाय श्रियंवयोजरितृभ्योदधाति।
श्रियं वसाना अमृतत्वमायन् भवंतिसत्यासंमिथामितद्रौ ॥ (ऋग्वेद ९.९४.४)
श्रिय एवैनं तच्छ्रियामादधाति संततमृचा वषट् कृत्यं संतत्यैसंधीयते प्रजया पशुभिर्यएवं वेद।
यस्मिन्ब्रह्माभ्यजयत्सर्वमेतत् ॥ अमुञ्चलोकमिदमूचसर्वं ॥ तन्नो नक्षत्रमभिजिद्विजित्यं ॥
श्रियं दधात्वहृणीयमानं ॥ अहे बुध्निय मंत्रंमे गोपाय। यमृषयस्त्रयीविदाविदुः ॥

ऋचः सामानि यजूंषि। सा हि श्रीरमृतासतां। *(यजुर्वेद - ब्राह्मण)*

सर्वेषां महाजनान्नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणायविष्णुसर्वाद्भुतशान्त्याख्याय कर्मणः श्रीरस्त्विति भवंतो ब्रुवन्तु। (ब्राह्मण कहते हैं)—ॐ अस्तु श्रीः। इन वाक्यों को तीन बार कहना चाहियें। वर्षशतं परि पूर्णमस्तु। गोत्राभिवृद्धिरस्तु। कर्माङ्ग देवता प्रीयताम्। (ब्राह्मण आशीर्वाद देते हैं—सौ साल पूर्ण हो। आप की वंश वृद्धि हो। कर्माङ्ग देवता आप पर प्रसन्न हो।)

ॐ शुक्रेभिरंगैरज आततन्वान् क्रतुं पुनानः कविभिः पवित्रैः।
शोचिर्वसानः पर्यायुरपां श्रियोमिमीते बृहतीरनूनाः॥ *(ऋग्वेद ३.१.५)*
तदप्येषः श्लोकोभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे॥ आविक्षितस्य कामप्रे र्विश्वेदेवाः सभासद इति॥

इसके पश्चात् उत्तरकलश को दाहिने हाथ में एवं दक्षिण दिशा में रखे कलश को बायें हाथ में लेकर दोनों की धाराओं को मिलाकर नीचे रखें पात्र में मन्त्रोच्चारण करते हुए छोड़ना चाहिये। वास्तोष्पत इति चतसृणां वसिष्टो वास्तोष्पति स्त्रिष्टुबंत्यागायत्री उदकसेचने विनियोगः।

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्त्स्वावेशो अनमीवो भवानः।
यत्त्वेमहे प्रतितन्नोजुषस्वशंनोभवद्विपदेशं चतुष्पदे॥ *(ऋग्वेद ७.५४.१)*
ॐ वास्तोष्पते प्रतरणोन एधिगय स्फानोगोभिरश्वेभिरिंदो।
अजरासस्ते सख्ये स्यामपितेवं पुत्रान् प्रतिनो जुषस्व॥ *(ऋग्वेद ७.५४.२)*
ॐ वास्तोष्पते शग्मयाँ संसदातेसक्षीमहिरणवयागातुमत्या।
पाहिक्षेमंउतयोगेवरंनोयूयंपातस्वस्तिभिः सदानः॥ *(ऋग्वेद ७.५४.३)*
ॐ अमीवहा वास्तोष्पते विश्वारूपाणयाविशन्। सखासुशेवंएधिनः॥ शिवं शिवं शिवं॥ *(ऋग्वेद ७.५५.१)*

इसके पश्चात् पात्र में स्थित जल से यजमान का अभिषिञ्चन नीचे लिखे मन्त्रों से करना चाहिये।

समुद्रज्येष्ठा इति चतसृणां वसिष्ठ आपस्त्रिष्टुप्। त्रायंतामिति तिसृणां विश्वमित्र जमदग्निवसिष्ठा आपोनुष्टुप्। इमा आप इति तिसृणामैतरेय आपोनुष्टुब्जगत्यनुष्टुभः। देवस्यत्वेत्यस्यैतरेयः सविताश्विनो पूषाच यजुः। समस्त व्याहृतीनां परमष्टी प्रजापतिः प्रजापतिर्बृहती। अभिषेके विनियोगः।

ॐ समुद्रज्येष्ठाः सलिलस्य मध्यात्पुनानायंत्यनिं विशमानाः।
इन्द्रोया वज्री वृषभोरराददुता आपो देवीरिहमामवंतु॥ (ऋग्वेद ७.४६.१)
ॐ या आपो दिव्या उतवास्त्रवंति खनित्रिमा उतवायाः स्वयंजाः।
समुद्रार्थायाः शुचयः पावकास्ता आपो देवीरिहमामवंतु॥
ॐ यासां राजा वरुणो याति मध्ये सत्यानृते अवपश्यं जनानाम्।
मधुश्चुतः शुचयो याः पावकास्ता आपो देवीरिहमामवंतु॥
ॐ यासां राजा वरुणो यासु सोमो विश्वेदेवायासूर्ज मदंति।
वैश्वानरोयास्वग्निः प्रविष्टस्ता आपो देवीरिहमामवंतु॥ (ऋग्वेद ७.४६.२-३-४)
ॐ त्रायंतामिहदेवास्त्रायंतां मरुतां गणाः। त्रायंतां विश्वाभूतानि यथायमरपा असंत्॥
ॐ आप इद्वा उभेषजीरापो अमीवचातनीः। आपः सर्वस्य भेषजीस्तास्तेकृणवन्तु भेषजम्॥
ॐ हस्ताभ्यां दशशाखाभ्यां जिह्वावाचः पुरोगवी। अनामयित्नुभ्यांत्वाताभ्यांत्वोपस्पृशामसि॥ (ऋग्वेद १०.१३७.५-६-७)
ॐ इमा आपः शिवतमा इमाः सर्वस्य भेषजीः। इमा राष्ट्रस्य वर्धनीरिमाराष्ट्रभृतोमृताः॥
ॐ याभिरिन्द्रमभ्यषिंचत्प्रजापतिः सोमंराजानं वरुणं यमं मनुं।

ताभिंरद्भिरभिषिञ्चामि त्वामहं राज्ञां त्वमंधि राजो भंवेह ॥
ॐ महांतंत्वामहीनांसम्राजंचर्षणीनां देवीजनिंत्र जीजनद्भद्राजनिंत्र्यजीजनत् ॥
ॐ देवस्यं त्वा सवितुः प्रंसवेंश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णोहस्तांभ्यामग्नेस्तेजंसा
सूर्यंस्य वर्चसेंद्रस्येंद्रियेणाभिषिंचामि ॥ *(यजुर्वेद १ काण्ड-१ प्रश्न-४ अनुवाक-१० मन्त्र)*

बलायश्रियैयशसेन्नाद्याय। ॐभूर्भुवः स्वः अमृताभिषेकोअस्तु ॥ शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु। इसके बाद दो बार आचमन करें। पुण्याह वाचन पवित्रता के लिए किया जाता है। इसके चार विभाग कर सकते हैं (प्रयोग की दृष्टि से)—

१. मण्डलरचना—कलशस्थापन।
२. ब्राह्मणों को द्रव्यादि दान—खडे होकर उत्तर कलश से जल छोड़ते हुए मन्त्र पठन।
३. दोनों कलशों को दोनों हाथों मे लेकर उन्हे नीचे रखे पात्र में छोड़ते हुए करने वाले मन्त्र पठन।
४. पात्र में स्थित जल से यजमान, उपस्थित ब्राह्मण, यज्ञस्थल एवं सामग्रियों पर प्रोक्षण विशेषतः यजमान का अभिषिञ्चन।

इसके ४-५ प्रकार प्रचलित है। परन्तु उपरिलिखित विधान वैदिकों में अधिक मान्यता प्राप्त है।

पुण्याह वाचन प्रकरण समाप्त

पुण्याह बाचन में **कर्माङ्ग देवता प्रीयतां** कहना पड़ता है। विवाह में पुण्याह करने पर कर्माङ्ग देवता—**अग्निः प्रीयताम्।** औपासन होम में पुण्याह करने पर कर्माङ्ग देवता—**अग्नि सूर्य प्रजापतयः प्रीयंताम्।** स्थालीपाक होम में पुण्याह करने पर **कर्माङ्ग देवता अग्निः प्रीयताम्।** गर्भाधान संस्कार में पुण्याहकरने पर **कर्माङ्ग देवता ब्रह्मा प्रीयताम्।** पुंसवन संस्कार में पुण्याह करने पर **कर्माङ्ग देवता प्रजापतिः प्रीयताम्।** सीमांत संस्कार में पुण्याह करने पर **कर्माङ्ग देवता धाता प्रीयताम्।** जातकर्म संस्कार में पुण्याह करने पर **कर्माङ्ग देवता मृत्युः प्रीयताम्।** नामकरण, निष्क्रमण (बच्चे को घर से पहली बार बाहर लाना) अन्न प्राशन संस्कार में पुण्याह करने पर **कर्माङ्ग देवता सविता प्रीयताम्।** चौल संस्कार में पुण्याह करने पर **कर्माङ्ग देवता**

केशिनः प्रीयताम्। उपनयन संस्कार में पुण्याह करने पर **कर्माङ्ग देवता इन्द्रः श्रद्धा मेधाः प्रीयंताम्।** मेघाजनन (उपनयन के चौथे दिन) पुण्याह करने पर **कर्माङ्गदेवता सुश्रवाः प्रीयताम्।** पुनरुपनयन (प्रायश्चित) संस्कार में पुण्याह करने पर **कर्माङ्ग देवता अग्निः प्रीयताम्।** समावर्तन संस्कार में पुण्याह करने पर कर्माङ्ग देवता **इन्द्रः प्रीयताम्।** उपाकर्म, महानाम्नि, महाव्रत, उपनिषत्, गोदान इन कर्मो में पुण्याह करने पर कर्माङ्गदेवता—**सविता प्रीयताम्।** वास्तुहोम में दो बार पुण्याह होता हैं—पहले बार कर्माङ्ग देवता-**वास्तोष्पतिः प्रीयताम्।** दूसरी बार पुण्याह के कर्माङ्ग देवता-**प्रजापतिः प्रीयताम्।** आग्रयण (नूतन धान्य खाने से पूर्व करने वाला) संस्कार में कर्माङ्गदेवता-**आग्रयण देवताः प्रीयताम्।** सर्पबलि संस्कार में पुण्याह करने पर कर्माङ्गदेवता **सर्पाः प्रीयंताम्।** तडागादि (तालाब आदि निर्माण में) पुण्याह करने पर कर्माङ्ग देवता **(वरुणः प्रीयताम्।)** ग्रह यज्ञ में पुण्याह करने पर कर्माङ्ग देवता **नवग्रहाः प्रीयंताम्।** कूष्मांड होम, चान्द्रयण एवं अग्न्याधान में पुण्याह करने पर कर्माङ्ग देवता-**अग्न्यादयः प्रीयंताम्।** (दक्षिणाग्नि आर्हपत्य आहवनीय तीन अग्नियों को अग्निमन्थन से अग्नि को प्रज्वलित कर विधि पूर्वक स्थापित करने का विधान अग्न्याधान कहलाता है। अग्निष्टोम (सोमयाग) में पुण्याह करने पर कर्माङ्ग देवता **अग्निः प्रीयताम्।** शेष सभी काम्य कर्म वाले यज्ञों में पुण्याह करने पर कर्माङ्ग देवता-**प्रजापतिः प्रीयताम्।**

उदाहरण—सर्वाद्भुत शान्ति में कर्माङ्गदेवता-**प्रजापतिः प्रीयताम्।**

पुण्याह प्रकरण समाप्त

नान्दि श्राद्ध प्रकरण

देव कार्य करने से पूर्व पितृ कार्य करना आवश्यक है। अतः सभी यज्ञों में एवं सभी संस्कारों में जहाँ भी पुण्याह वाचन होता है वहाँ नान्दी श्राद्ध आवश्यक है।

कुर्याच्च कर्ता स्वयमेव तत्र नान्दीमुख श्राद्धमथोपचारैः।
उद्दिश्य देवान् पितृभिः समेतानावाह्य विप्रद्वितये यथोक्तान्॥
अर्चासनावाहन सार्घ्यतोय गन्धाक्षतैः पुष्पसपाद्यधूपैः।
दीपांजनाच्छादन नत्युपेतैः कराम्बुधारान्तरितैर्यथावत्॥ *(लक्षण संहिता)*

यजमान सभी कर्मों के प्रारम्भ में पितरों से युक्त देवताओं को लक्ष्य करके स्वयं नान्दी श्राद्ध करना चाहिये। इसमें कनिष्ट दो ब्राह्मणों को आसन, आवाहन, अर्घ्य, आचमन, गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप, अंजन, आच्छादन, नमस्कारों से पूजन करना चाहिये। बीच-बीच में जल देते हुए करना चाहिये।

पितृणां च गणाः सप्त त्रिषु लोकेषु विश्रुताः। अमूर्ताश्च समूर्ताश्च द्विधा भिन्नाः प्रकीर्तिताः॥
अग्नि ष्वात्ताबर्हिषदः आज्यपाः सोमपा इति। अमूर्तास्तेषु चत्वारः पितरश्च पितामहाः॥
प्रपितामहास्तथा प्रोक्ता समूर्तास्तेष्वितित्रयः। अमूर्ता देवकार्येषु समूर्ताः पितृकर्मसु॥
अग्निजिह्वा विप्रजिह्वा विश्वेदेवा द्विधा स्मृताः। नान्दीमुखे सत्यवसू काम्यके धुरिलोचनौ॥
क्रतुदक्षावुत्सवे तु पार्वणे च पुरूरवौ। सपिण्डीकरण श्राद्धे अष्टकायां तथैव च॥
विश्वेदेवाः कालकामौ विप्रजिह्वा दशस्मृताः। अग्निजिह्वास्त्रयः प्रोक्ता वह्निस्थास्ते त्रयः स्मृताः॥ *(लक्षण संहिता)*

इत्येते तद्विशेषज्ञैर्विश्वेदेवास्त्रयोदश। तीनों लोको में सात पितृगण (समूह) प्रसिद्ध है। उनमे दो भाग है एक-अमूर्त (शरीर हीन) दूसरा-समूर्त (आकार

युक्त)।

उनमें—**अमूर्त के चार भाग है।** १. अग्निष्वात्ता (अग्नि में वास करने वाले), २. बर्हिषद: (कुश में रहने वाले), ३. आज्यपा: (घी पीने वाले), ४. सोमपा: (सोमपान करने वाले)

पिता-पितामह एवं **प्रपितामह समूर्त** वर्ग में आते हैं। देवकार्य में (यज्ञ यागादियों में) अमूर्त पितरों का पूजन करना चाहिये। पितृकार्यों में समूर्तो को (पिता-पितामह-प्रपितामह) पूजन करना चाहिये। विश्वेदेवों का दो भाग है। ये हमेशा पितरों के साथ रहते है। उनके रक्षक देवता है। इनके दो भाग है—

१. अग्निजिह्वा—अग्नि द्वारा हविस् स्वीकार करने वाले विश्वदेव। ये तीन हैं। ये अग्नि में वास करते हैं। इनहें **अग्निजिह्वा** नाम से ही जाना जाता है।

२. विप्रजिह्वा—ब्राह्मणों के मुख (जिह्वा) द्वारा आहर स्वीकार करने वाले विश्वदेव। इनके दस देवता हैं। नान्दीमुख में सत्य एवं वसु, काम्य श्राद्ध मे धूरि एवं लोचन, रथोत्सव आदियो में क्रतु एवं दक्ष, पार्वण (विशेष समय पर-मासिक आदि) पुरु एवं रव, सपिण्डीकरण श्राद्ध में काल एवं कामयेदस विश्वेदेवता विप्रजिह्व कहलाते हैं।

दत्वा तण्डुलपूर्णपात्रयुगले संकल्प्य भुक्तिं तयोः। ताम्बूलादि सुदक्षिणान्तिकमनुज्ञातः समुद्वाहयेत्॥ *(लक्षण संहिता)*

चावल से भरे दो पात्रों मे उनके भोजन का संकल्प करके ताम्बूल दक्षिणादि सभी देकर अन्त में विसर्जन करना चाहिये। (इनमें आहार के बदले कच्चा पदार्थ अर्थात् चालव, सब्जी, दाल आदि कच्चे पदार्थ ब्राह्मणों को संकल्प करके दिया जाता है।) **प्रयोग आगे है। यह मात्र विषय की जानकारी है। नान्दि श्राद्ध के दो प्रकार है—**

१. स्वार्थ—अपने लिए जब करते हैं। तब समूर्त पितरों का श्राद्ध अर्थात् पिता-पितामह-प्रपितामह माता-पितामहि-प्रपितामहि सपत्नीक मातामह-सपत्नीक मातृपितामह, सपत्नीक मातृप्रपितामह (इन नौ पितरों को पूजना चाहिये)।

२. विश्वकल्याणार्थ या परार्थ, उत्सवादि में अमूर्त पितरों का पूजन—

१. अग्निष्वात्ता, २. बर्हिषद:, ३. आज्यपा:, ४. सोमपा इन पितरों का पूजन करना चाहिये।

संकल्प—देशकालौ संकीर्त्य (देश काल को बताकर)करिष्यमाण मंगलकार्याङ्गभूतं मातृकापूजनं नान्दीश्राद्धं च करिष्ये। (मातृका पूजन एवं नान्दी श्राद्ध करना है)। पुण्याह कलश के दक्षिण में नान्दी दो मण्डल

दो पात्रों में भोजन के लिए आवश्यक चावल, सब्जी, दाल, मेवा दक्षिणा रखें।

मातृका पूजनम्—पान सुपारी दक्षिणा के ऊपर कूर्च (कुश से बना) रखकर उसमें मातृका आवाहन करके उनमें मातृका पूजन करना चाहिये। नान्दी मण्डल के आगे मातृका पूजन करना चाहिये।

ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा। वाराही तथेन्द्राणी चामुण्डाः सप्तमातरः ॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

सात मातृकायें।

गौरीपद्मा शचीमेधासावित्रीविजयाजया। देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः

धृतिः पुष्टिस्तथातुष्टिरात्मनः कुलदेवताः (गौर्यादि षोडश मातृकायें)॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

ब्राह्म्यादि सप्त मातृः गौर्यादि षोडश मातृः आवाहयामि। विनायकं आवाहयामि। दुर्गा आवाहयामि। क्षेत्रपालं आवाहयामि। गणपतिं आवाहयामि। मातृस्वसारं आवाहयामि। पितृस्वसारं आवाहयामि। एताभ्यो देवताभ्यो नमः। ध्यायामि। ध्यानं समर्पयामि। इनका षोडशोपचार पूजन करना याहिये। **उदाहरण**—आवाहित देवताभ्यो नमः। आसनं समर्पयामि आदि। षोडशोपचार पूजन संक्षेप में करें। (गणेश पूजन में है।)

अन्त में पुष्पांजलि मन्त्र—**ॐ गौरीर्मिमाय सलिलानितक्षत्येकंपदीद्विपदी सा चतुंष्पदी।**

अष्टापंदी नवंपदीबभूवुषीं सहस्रांक्षरापरमेव्योंमन् ॥ *(ऋग्वेद १.१६४.४१)*

ॐ भूर्भुवः स्वः आवाहित देवताभ्यो नमः। मन्त्रपुष्पं समर्पयामि।

तदंस्तु मित्रावरुणा तदंग्ने शं योरस्मभ्यंमिदमंस्तुशस्तं। अशीमहिं गाधमुत प्रंतिष्ठां नंमोदिवे बृंहते सादंनाय ॥ *(ऋग्वेद ५.४७.७)*

गृहावै प्रतिष्ठासूक्तंतत्प्रतिष्ठि ततमयावाचाशंस्तव्यं तस्माद्यद्यपिदूर इव पशूँल्लभते गृहानेवैनानाजिगमिषति गृहाहिपशूनां प्रतिष्ठाप्रतिष्ठा। इन मन्त्रों को पढकर पुष्पाक्षत चढ़ायें।

मातृका पूजन समाप्तम्

**नान्दी श्राद्ध—ॐ आनो भद्राः क्रतवो यंतुविश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः।
देवानो यथासदमिद्वृधे असन्नप्रायुवोरक्षितारो दिवेदिवे॥** *(ऋग्वेद १.८९.१)*

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाविश्वेदेवाः नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। ॐभूभुर्वः स्वः इयं च वृद्धिः।
इससे दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें। सोमयाग, गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्त, आधान इन कर्मो के अङ्गभूत नान्दी श्राद्ध में क्रतु दक्ष संज्ञक विश्वेदेव अन्य सभी संस्कारों में सत्यवसु संज्ञक विश्वेदेव कहना चाहिये।

मातृपितामहीप्रपितामह्यः नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। ॐभूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ मे रखकर उस पर से जल छोडें। पितृपितामहप्रपितामहाः नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। ॐभूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोड़ें। सपत्नीक मातामह मातृपितामह मातृप्रपितामहाः नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। ॐभूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोड़ें। सपत्नीक मातामह मातृपितामह मातृप्रपितामहाः नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। ॐभूभुर्वः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोड़ें।

सत्यवसु संज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणयोः इदमासनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूभुर्वः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध, अक्षत, पुष्प, दुर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोड़ें। मातृपितामही प्रपितामह्यः नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणयोः इदमासनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। हाथ में गंध अक्षत पुष्प दूर्वा लेकर उस पर जल छोडें।

सपत्नीक माता मह मातृपितामह मातृपितामहाः नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणयोः इदमासनगंधाद्युपचार कल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। हाथ में गंध अक्षतपुष्पदूर्वा लेकर उस पर जल छोडें।

ॐभूभुर्वः स्वः सत्यं त्वर्तेनपरिषिञ्चामि कहकर मण्डल पर रखें दोनो पात्रों को परिषेचनकर दक्षिण दिशा के पात्र को ''इदं विश्वेभ्यो देवेभ्यः। उत्तर दिशा के पात्र को ''इदं नान्दीमुख पितृभ्यः। कहकर दान संकल्प कर—ब्राह्मणों को दे देवें।

सत्यवसु संज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामंसोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर

ताम्बूल दक्षिरा पर जल छोड़कर नीचे रखना चाहिये।
मातृपितामहीप्रपितामह्यः नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मरा भोजन पर्याप्तं इदमामं सोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिरााकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिरा पर जल छोड़कर नीचे रखें। पितृपितामहप्रपितामहाः नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मरा भोजन पर्याप्तं इदमामं सोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिरााकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। सपत्नीक मातामह मातृपितामह मातृप्रपितामहाः नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मरा भोजन पर्याप्तं इदमामं सोपस्करं सताम्बुलं सदक्षिरााकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिरा पर जल छोडकर नीचे रखें। आगे लिखें मन्त्रों से खड़े होकर उपस्थान करें।

ॐ उपास्मै गायतानरः पवमानायेन्दवे। अभिदेवाँऽइयंक्षते॥
ॐ अभिते मधुनापयोथर्वारो अशिश्रयुः। देवं देवाय देवयु॥
ॐ सनः पवस्व शंगवे शंजनायशमर्वते। शंराजन्नोषधीभ्यः॥
ॐ ब्भ्रवेनुस्वतवसे रुरायदिविस्पृशे। सोमाय गाथमर्चत॥ *(ऋग्वेद ९.११.सम्पूर्ण सूक्त)*
ॐ हस्तच्युतेभिरद्रिभिः सुतं सोमं पुनीतन। मधावाधावता मधु॥
ॐ अक्षन्नमीं मदन्तह्यवप्रिया अधूषत अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजान्विन्द्र ते हरी॥ *(ऋग्वेद १.८२.२)*
ॐ प्रजापतेनत्वदेतान्य न्यो विश्वाजातानि परिताबभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्यामपतयोरयीराम्॥ *(ऋग्वेद १०.१२१.१०)*

कृतस्य नान्दी श्राद्धस्य प्रतिष्ठाफलसिद्ध्यर्थं द्राक्षामलक निष्क्रयिरीं दक्षिरां दातुमहमुत्सृज्ये। कहकर हाथ में दक्षिरा लेकर उस पर जल छोड़कर नीचे रख दें।

प्रार्थना— **मातापितामही चैव तथैव प्रपितामही। पितापितामहश्चैव तथैव प्रपितामहः॥**
मातामहस्तत्पिताच प्रमातामहकादयः। एतेभवन्तु सुप्रीताः प्रयच्छन्तु च मङ्गलम्॥

कहकर जल छोड़े। अनेन नान्दीसमाराधनेन नान्दीमुखदेवताः प्रीयंतां। आचम्यमंगलाक्षतकुंकुमादि धारण करें।

विसर्जन—यज्ञ पर अन्तिम दिन में, उपनयन में व्रत समाप्ति पर विवाह में व्रतसमाप्ति पर प्रायः हर कर्म की समाप्ति पर विसर्जन निम्न मन्त्र से करना चाहिये।

ॐ इळामग्नेपुरुदसँसनिंगोः शश्वत्तमं हवमानायसाध। स्यान्नः सूनुस्तनयोविजावाग्ने सातेसुमतिर्भूत्वस्मे ॥ *(ऋग्वेद ३.१५.७)*

ॐ इळामुपह्वयतेपशवोवा इळापशूनेवतदुपह्वयते पशून्यजमानेदशातिदधाति। *(ऋग्वेद ब्राह्मण)*

यथाचारं हिरण्येन भाराडवादनं। मन्त्र कहते हुए सिक्के से थाली के निचले भाग में शब्द करना चाहिये। (घराटावादन के बदले)

ॐ उत्तिष्ठब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे। उपप्रयन्तु मरुतः सुदानव इन्द्रप्राशूर्भवासचा ॥ *(ऋग्वेद १.४०.१)*

ॐ अभ्यारमिदद्रयो निषिक्तंपुष्करे मधु। अवतस्य विसर्जने। *(ऋग्वेद ८.७२.११)*

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादायमत्कृतां। इष्टकामार्थसिद्धयर्थं पुनरागमनाय च ॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

इन मन्त्रों से आवाहित देवताओं को उठाना चाहिये।

प्रमाण (विचार)—गौर्यादि मातृकापूजनं नान्दी श्राद्धाङ्गम्।

गौर्यादि मातृकापूजन नान्दी श्राद्ध के अङ्ग है, स्वतन्त्र नहीं। **यत्र नान्दी श्राद्धं न क्रियते तत्र मातृकापूजनमपि न कार्य** जहाँ नान्दी श्राद्धं नहीं करते हैं वहाँ मातृकापूजन भी न करें।

स्वार्थ नान्दी श्राद्ध करने वालों के कुछ नियम। ये यज्ञ में आवश्यक नहीं है अतः अर्थ नहीं लिखा है।

तत्रपूर्वं मातृपार्वणां ततः पितृपार्वणं ततः सपत्नीक मातामह पार्वणं इति पार्वण त्रयात्मकं नान्दी श्राद्धं। मातृजीवने सपत्नमातृमरणेपि न मातृपार्वणं। एवं मातामहीजीवने मातामहीसपत्नीमरणेपि न मातामहादेः सपत्नीकत्वं। अत्र कर्तुजीवत्पितृकत्वे निर्णयः। जीवेन्तु यदि वर्गाद्यस्तंवर्गं तुपरित्यजेदितिन्यायेन

जीवत्पितृकः स्वापत्संस्कारेषु मातृमातामहपार्वणयुतं नान्दी श्राद्धं कुर्यात्। मातारि जीवत्यां मातामहपार्वणमेकमेव। मातामहे जीवति मातृपार्वणमेकमेव॥ केवल मातृपार्वणे विश्वेदेवा न कार्याः। वर्गत्रयाद्योषु मातृपितृ मातामहेषु जीवस्तु नान्दी श्राद्ध लोप एव सुतसंस्कारेषूचितः। द्वितीय विवाहाधानपुत्रेष्टि सोमयागादिषु स्व संस्कार कर्मसु येभ्य एव पितादद्यात्तेभ्योदद्यात्तुतस्सुतः। तथा च मृतमातृमातामह कोपिजीवत्पित्रक स्वसंस्कारे पितुर्मातृपितामही प्रपितामह्यः पितुः पितृपितामहप्रपितामहाः पितुर्मातामहमातृपितामह मातृप्रपितामहा इत्येव पार्वण त्रयुमुद्दिश्यश्राद्धं कुर्यात्। न तु स्वमातृमाता मह पार्वणोद्देशः। पिररि पितामहे च जीवति स्वसंस्कारे पितामहस्य मातृपितामहीप्रपितामह्य इत्याद्युद्देशः। एवं प्रपितामहेपियोज्यं। पितुर्मात्रादि जीवने तत्पार्वण लोप एव। तथा च येभ्य एव पितादद्यादितिपक्षस्य वर्गाद्य जीवने तत्पार्वण लोप इति द्वारलोपपक्षस्य च स्वसंस्कार स्वापत्यसंस्कार भेदेन व्यवस्था सिद्धांतितेति ज्ञेयं। केचिन्तु पक्षद्वस्यस्यैच्छिकोविकल्पो न तु व्यवस्थित इत्याहुः। एवं मृत पितृकस्य जीवन्मातृमातामहस्य पितृपार्वणेनैव नांदी श्राद्धसिद्धिर्ज्ञेया। समावर्तनस्य माणवक कर्तृत्वेपितदंगभूत नान्दी श्राद्धे पितुस्तदभावे ज्येष्ठभ्रात्रा देरधिकार इति केचित्। तत्र पितापुत्र समावर्तने स्वपितृभ्यो नान्दी श्राद्धं कुर्यात्। पिताजीवत्पितृकश्चेत्सुत संस्कारत्वात् द्वारलोप पक्षेयुक्त इतिभाति। मृत पितृक माणवक समावर्तने पितृव्य माणवकपितुः प्रवासादिना असंनिधाने भ्रात्रादिर्माणवकस्य पितुर्मातृपितामहीप्रपितामह्य इत्याद्युच्चार्यश्राद्धंकुर्यात्। भ्रात्रादेरभावे स्वयमेव पितृभ्यो दद्यात्। एवं जीवत्पितृकोपिपितुरसन्निधाने भ्रात्रादेरभावे पितुः पितृभ्यः भ्रात्रादिरस्य माणवकस्य मातृपितामहीत्याद्युच्चारयेत्। भ्रात्रादेरभावे स्वयमेव पितृभ्यो दद्यात्। एवं जीवत्पितृकोपिपितुरसन्निधाने भ्रात्रादेरभावे पितुः पितृभ्यः स्वयमेव नांदीमुखं कुर्यात्। उपनयनेनकर्माधिकारस्य जातत्वात्। एवं विवाहे पि द्रष्टव्यं। मृत पितृकस्य चौलोपनयनादिकं पितृव्यमातुलादिः कुर्वन् अस्य संस्कार्यस्य पितृपितामहेत्याद्युच्चार्य श्राद्धं कुर्यात्। जीवतः पितुरसन्निधानेन कुर्वन् मातुलादिरस्य संस्कार्यस्य पितुर्जनकादीनुद्दिश्य कुर्यान्नतु संस्कार्यस्य मृतानपि मात्रादीनिति संक्षेपः।

नान्दी श्राद्ध प्रकरण समाप्त

देवनान्दी—देवनान्दी में मातृका पूजन आवश्यक नहीं है। यज्ञ,(अतिरुद्र, सहस्त्रचण्डी) रथोत्सव आदि सार्वजनिक आचरणों में देवनान्दी ही करना चाहिये। **क्रुतुदक्षावुत्सवे तु।** इस वाक्य से क्रतु एवं दक्ष नामक विश्वेदेव देवता हैं। देवनान्दी में पितृदेवता चार है। अमूर्त्य।

१. अग्निष्वात्ता, २. बर्हिषदः, ३. आज्यपाः, ४. सोमपाः

संकल्प—देशकालौ संकीर्त्य करिष्यमाण कर्माङ्ग भूतं नान्दीसमाराधनं करिष्ये। पहले दो मण्डल बनायें।

दत्वातण्डुलपूर्णपात्रयुगले संकल्प्य भुक्तिं तयोः।
ताम्बूलादि सुदक्षिणान्तिकमनुज्ञातः समुद्वाहयेत्॥ *(लक्षण संहिता)*

दो पात्रों में चावल, काजू किशमिश, फल, दाल, आदि दो मण्डलों पर रखें।

ॐ आनो भद्राः क्रतवो यंतुविश्वतोदंब्धसो अपरीता स उद्भिदंः।
देवानो यथासदुमिद्वृधे असन्न प्रांयुवोरक्षितारों दिवे दिंवे। *(ऋग्वेद १.८९.१)*

ॐ क्रुतुदक्षसंज्ञका विश्वेदेदेवाः—नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूभुर्वस्वः इयं च वृद्धिः। इससे दुर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें। अग्निष्वात्ताः पितृगणाः नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूभुर्वः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोड़ें।

बर्हिषदः पितृगणाः—नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें। **आज्यपाः पितृगणाः**—नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दुर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें। **सोमपाः पितृगणाः** नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें।

ॐ क्रतुदक्ष संज्ञका विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणायोः इदमासनगंधाद्युपचार कल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध अक्षत पुष्प दूर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें।**ॐ अग्निष्वात्ताः पितृगणाः** नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणायोः इदं आसनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं

च वृद्धिः। गन्ध अक्षत पुष्प दूर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें। **बर्हिषदः पितृगणाः** नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणयोः इदमासनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध अक्षत पुष्प दुर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें। **आज्यपाः पितृगणाः** नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणयोः इदमासनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध, अक्षत, पुष्प, दुर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें।

सोमपाः पितृगणाः नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणयोः इदमासनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भूवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध, अक्षत, पुष्प, दुर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें। ॐभूर्भुवः स्वः सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि कहकर मण्डल पर रखे दोनों पात्रों को परिषेचन कर दक्षिणादिशा के पात्र को ''इदं विश्वेभ्यो देवेभ्यः'' उत्तरदिशा के पात्र को ''इदं नान्दीमुख पितृभ्यः'' कहकर दान संकल्प कर ब्राह्मणों को दे देवें।

क्रतुदक्षसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामं सोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणापर जल छोड़कर नीचे रखना चाहिये। **अग्निष्वात्ताः पितृगणाः** नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामंसोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणापर जल छोडकर नीचे रखना चाहिये। **बर्हिषदः पितृगणाः** नान्दीमुखाः गुग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं दमनामं सोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणापर जल छोड़कर नीचे रखना चाहिये। **आज्यपाः पितृगणाः** नान्दीमुखा युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामंसोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणापर जल छोडकर नीचे रखना चाहिये।

सोमपाः पितृगणाः नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामं सोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणा पर जल छोड़कर नीचे रखना चाहिये। आगे लिखे मन्त्रों से खड़े होकर उपस्थान करें।

ॐ उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे। अभिदेवाँऽइयक्षते। *(ऋग्वेद ९.११.१)*
ॐ अभिते मधुना पयोथर्वाणो अशिश्रयुः। देवं देवाय देवयु। *(ऋग्वेद ९.११.२)*
ॐ स नः पवस्व शंगवे शंजनायशमर्वते। शंराजन्नोषधीभ्यः। *(ऋग्वेद ९.११.३)*
ॐ बभ्रवेनु स्वतवसेरुणाय दिविस्पृशे। सोमाय गाथमर्चत॥ *(ऋग्वेद ९.११.४)*

ॐ हस्तंच्युतेभिरद्रिंभिः सुतं सोमं पुनीतन। मधावाधांवता मधुं॥ (ऋग्वेद ९.११.५)

ॐ अक्षन्नमीं मदन्तह्यवंप्रिया अंधूषत। अस्तोंषत स्वभांनवो विप्रा नविंष्ठया मती यो जान्विंन्द्र ते हरीं॥ (ऋग्वेद १.८२.२)

ॐ प्रजांपतेनत्वदेतान्यन्यो विश्वांजातानि परिता बंभूव। यत्कांमास्ते जुहुमस्तन्नों अस्तु वयं स्यांमपतंयोरयीणाम्॥ (ऋग्वेद १०.१२१.१०)

कृतस्य देवनान्दी समाराधनस्य प्रतिठाफलसिद्ध्यर्थं द्राक्षामलक निष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे। कहकर हाथ में दक्षिणा लेकर उस पर जल छोडकर नीचे रख दें।

प्रार्थना—अग्निष्वात्वा बर्हिषदः आज्यपाः सोमपास्तथा। एते भवन्तु मे प्रीताः प्रयच्छन्तु च मङ्गलम्॥ कहकर जल छोड़ें। **अनेन नान्दीसमाराधनेन नान्दीमुखदेवताः प्रीयंताम्। आचम्य**—मंगल तिलक रकें। **विसर्जन**—यज्ञ के अन्तिम दिन विसर्जन करें।

ॐ इळांमग्नेपुरुदंसंसनिंगोः शंश्वत्तमं हवंमानायसाध। स्यान्नः सूनुस्तनंयो विजावाग्ने सातेंसुमतिर्भूत्वस्मे॥ (ऋग्वेद ३.१५.७)

ॐ इळामुपह्वयते पशवो वा इळापशूनेवतदुपह्वयते। पशून्यजमानेदधाति दधाति॥ (ऋग्वेद ब्राह्मण)

यथाचारं हिरण्येन भाण्डवादनं। मन्त्र कहते हुए सिक्के से थाली के निचले भाग में शब्द करना चाहिये। (घण्टा वादन के बदले)

१. सर्वाद्भुत शान्ति याग के लिए-१—आचाय, एक कुण्ड में १-ब्रह्मा, ईशान्य में १-कलश पूजन, होमाङ्ग पूजन दक्षिण में १-इतर पूजन, पश्चिम में १-तर्पण के लिए, परिचारक (कर्मचारी) १-एक ब्राह्मण-कुल ५ पंण्डित रहने पर

१५ पण्डित से संपन्न कर्म में—२-१५ पण्डित कर्म में (एक कुण्ड में), २-१५ पण्डित से संपन्न याग में—१ आचार्य, १ ब्रह्मा, १-कलश पूजन, १-इतर पूजन, १-तर्पण पूजन, १-परिचारक ब्राह्मण, ९-ऋत्विज होम के लिए

३-५५ पण्डित से संपन्न याग में—१- आचार्य (५ कुण्ड में), १-ब्रह्मा, १-कलश पूजन, १-इतर पूजन, १-तर्पण के लिए, १-परिचारक ब्राह्मण, ४५-ऋत्विज होम के लिए, ४-अग्निमुख जानकार उप आचार्य (९×५)

४-१०० पण्डित से संपन्न या में—१-आचार्य (९ कुण्ड में), १-ब्रह्मा, १-कलश पूजन, १-इतर पूजन, १-तर्पण के लिए, ५-परिचारक ब्राह्मण, ८१-

ऋत्विज होम के लिए, ९-अग्निमुख जानकार उपआचार्य (९×९), इसी अनुपात में अधिक संख्या में कर सकते हैं।

ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे। उपप्रयन्तु मरुतः सुदानव इन्द्रप्राशूर्भवा सचा॥ *(ऋग्वेद १.४०.१)*

ॐ अभ्यारमिद द्रयो निषिक्तं पुष्करे मधु। अवतस्य विसर्जने॥ *(ऋग्वेद ८.७२.११)*

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मत्कृताम्। इष्टकामार्थसिद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

(इन मन्त्रों से आवाहित देवताओं को उठाना चाहिये।)

देवनान्दी समाप्त

ऋत्विग्वरणम् (संकल्प लेकर)—देशकालौ संकीर्त्य करिष्यमाण कर्मणि आचार्यादि ऋत्विग्वरणं करिष्ये। ब्राह्मणं संपूज्य अमुक प्रवरान्वितं अमुक गोत्रोत्पन्नं अमुक वेदान्तर्गत अमुख शाखाध्यायिनं अमुक शर्माणं ब्राह्मणं अस्मिन् यज्ञे-

आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पतिः। तथा त्वं मम यागेस्मिन् आचार्यो भव सुव्रत॥ त्वां वृणे। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

विप्रः-वृतोस्मि (मैनें स्वीकार किया है) यथाज्ञानतः कर्म करिष्यामि (यथा ज्ञान कर्म करूँगा)

ब्रह्मवरण—यथा चतुर्मुखोब्रह्मा स्वर्गे लोके पितामहः। तथा त्वं मम यज्ञेस्मिन् ब्रह्मा भव द्विजोत्तम॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

अमुकप्रवरान्वितः अमुकगोत्रः अमुकशर्माहं अमुक प्रवरान्वितं अमुकगोत्रोत्पन्नं अमुक वेदान्तर्गत अमुक शाखाध्यायिनं अमुक शर्माणं ब्रह्माणं त्वां वृणे। वृतोस्मि। यथाज्ञानतः कर्म करिष्यामि॥

सदस्य वरणम्—त्वंनो गुरुः पितामातात्वं प्रभुस्त्वं परायणं। त्वत्प्रसादाच्चविप्रर्षे सर्वं मेस्यान्मनोगतम्॥

आपद्विमोक्षणार्थायकुरुयज्ञमतन्द्रितः। ऋत्विग्भिः सहितः शुद्धैः संयतैः सुसमाहितैः॥

आचार्येण च संयुक्तः कुरु कर्म यथोदितं॥ *(ब्रह्म कर्म समुच्चय)*

अमुकप्रवरान्वितः अमुकगोत्रः अमुकशर्माहं अमुकप्रवरान्वितं अमुकगोत्रोत्पन्नं अमुकवेदान्तर्गत अमुकशाखाध्यायिनं अमुकशर्माणं सदस्यत्वेन त्वां वृणे। **वृतोऽस्मि। यथाज्ञानतः कर्म करिष्यामि।**

उपद्रष्टृवरण—**भगवन् सर्वधर्मज्ञ सर्वधर्मभृतांवर। वितते ममयज्ञेस्मिन्नुपद्रष्टाभवद्विज॥** *(ब्रह्म कर्म समुच्चय)*

अमुकप्रवरान्वितः अमुक गोत्रः शर्माहं अमुकप्रवरान्वितं अमुकगोत्रत्पन्नं अमुकवेदान्तर्गत अमुकशाखाध्यायिनं अमुकशर्माणं उपद्रष्टृत्वेन त्वां वृणे। वृतोस्मि। यथाज्ञानतः कर्म करिष्यामि।

ऋत्विग्वरणम्—**ऋत्विजश्च यथा पूर्वं शक्रादीनां मखेऽभवन्। यूयं तथा मे भवत ऋत्विजोर्हथसत्तमाः॥** *(ब्रह्म कर्म समुच्चय)*

अमुक प्रवरान्वितः अमुक गोत्रः अमुक शर्माहं अमुक प्रवरान्वितं अमुक गोत्रोत्पन्नं अमुकवेदार्न्तगत अमुकशाखाध्यायिनं अमुकशर्माणं ऋत्विक्त्वेन त्वां वृणे। वृतोस्मि। यथा ज्ञानतः कर्म करिष्यामि। ऋत्विजो वृत्वा मधुपर्कमाहरेत्। ऋत्विग् वरण के पश्चात् मधुपर्क देना चाहिये।

मधुपर्क मे देय वस्तु (संग्रह)—पाद्यार्थं, अर्ध्यार्थं मंत्रवत्त्रिराचमनीयार्थं, शुद्ध अष्ट आचमनीयार्थं च जलपात्रचतुष्टयं, मधुपर्क कांस्यपात्रं गां, विष्टरं (आसन) च संपाद्य कर्ता आचम्य, प्राणानायम्य, देशकालौ स्मृत्वा, ऋत्विग्भ्यः मधुपर्क पूजां करिष्ये। विष्टरः पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयं मधुपर्कः गौः इत्येतेषां त्रिः त्रि एकैकं वेदयन्ते। **विष्टरो विष्टरो विष्टरः**। प्रतिगृह्यतां। प्रतिगृणहामि। (आसन, आसन, आसन) स्वीकार करता हूँ।

२५ दर्भाओं से बना आसन विष्टर कहलाता है। अहंवर्ष्मेत्यस्य वामदेवो विष्टरोनुष्टुप् विष्टरोपवेशने विनियोगः।

ॐ अहं वर्ष्म सजतानां विद्युतामिव सूर्यः। इदं तमधितिष्ठामियोमाकश्चाभिदासति॥ *(आश्वलायन गृह्य सूत्र)*

इति उदगग्रे विष्टर उपविशेत्। दर्भाग्र उत्तराभिमुख हो। उस पर बैठें। **पाद्यं पाद्यं पाद्यं**। प्रतिगृह्तां। प्रतिगृणहामि। (पैरों के लिए जल) (स्वीकार करें)(

स्वीकार करता हूँ।) दाहिने पाँव धोयें।

ॐ अस्मिन्राष्ट्रे श्रिय मावेशयाम्यतो देवीः प्रतिपश्याम्यापः॥
दक्षिणं पादमवनें निजेऽस्मिन् राष्ट्र इन्द्रियं दधामि॥ *(ऋग्वेद ऐतरेय ब्राह्मण)* बायें पाँव धोये।
ॐ सव्यं पादमवनें निजेऽस्मिन् राष्ट्र इन्द्रियंवर्धयामि॥ पूर्वमन्यमपरमन्यं पादाववनेनिजे॥
ॐ देवाराष्ट्रस्य गुप्त्या अभयस्यावरुद्ध्यै॥ आपः पादावनेजनीर्द्विषंतं निर्दहन्तु मे॥ *(ऋग्वेद ऐतरेय ब्राह्मण)*

इन मन्त्रों को पढ़कर यजमान जल डालकर हाथ से ऋत्विगों का चरण धोवें।

सकृदाचम्य—एक बार आचमन करके ॐऋग्वेदाय स्वाहा। ॐयजुर्वेदाय स्वाहा। ॐसामवेदाय स्वाहा। ॐअथर्व वेदाय नमः। (हाथ धोले) पुनः अर्ध्यमर्ध्यमर्ध्यं। प्रतिगृह्यतां। प्रतिगृह्णामि। (अर्ध्यजल स्वीकार करें) स्वीकार करता हँ। अर्ध्य जल को ऋत्विक् अञ्जलि में स्वीकार करना चाहिये। आचमनीयं आचमनीयं आचमनीयं प्रतिगृह्यतां। प्रतिगृह्णामि। (आचमनीय जल पात्र देवें। स्वीकार करता हूँ।) आचमनीय पात्र को नीचे रखकर एक चमच जल **अमृतोपस्तरणमसि** कहकर पीना चाहिये। पुनः पहले वाले पात्र से एक बार आचमन करना चाहिये। **मधुपर्कमाषियमाणमीक्षयते** मधुपर्क लाते हुए देखना चाहिये। ॐमित्रस्य त्वा चक्षुषा प्रतीक्षे॥ (मधुपर्क लाते हुए देखना चाहिये।) मधुपर्को मधुपर्को मधुपर्कः। प्रतिगृह्यतां। (मधुपर्क को स्वीकार करें।)

ॐ देवस्यंत्वासवितुः प्रसवेंश्विनोर्बाहुभ्यांपूष्णो हस्ताभ्यां। प्रतिगृह्णामि। *(यजुर्वेद १ काण्ड-१ प्रश्न-४ अनुवाक-६ मन्त्र)*

(मधुपर्क स्वीकार करता हूँ कहकर दोनो हाथों की अञ्जली से मधुपर्क स्वीकार करना चाहिये।) मधुवाता इति तिसृणां राहूगणोगौतम ऋषिः। विश्वेदेवा देवताः। गायत्रीच्छन्दः। मधुपर्कावेक्षणे विनियोगः।

ॐ मधुवाता ऋताय॒ते मधु॑क्षरन्ति॒ सिन्ध॑वः। माध्वी॑र्नः स॒न्त्वोष॑धीः॥
ॐ मधु॒नक्त॑मु॒तोषसो॒ मधु॑म॒त्पार्थि॑वं॒ रजः॑। मधु॒द्यौर॑स्तु नः पि॒ता॥
ॐ मधु॑मान्नो॒ वन॒स्पति॒र्मधु॑माँ अस्तु॒ सूर्यः॑। माध्वी॒र्गावो॑ भवन्तु नः॥ (ऋग्वेद १.९०.६-७-८)

इन मन्त्रों को कहते हुए मधुपर्क देखें। उस पात्र को बाये हाथ में रखकर अङ्गुली पर लगे मधुपर्क को ''ॐवसवस्त्वा गायत्रेण छन्दसा भक्षयन्तु'' कहकर उसे पूर्व की ओर उछालना चाहिये। ॐरुद्रास्त्वा त्रैष्टुभेन छन्दसा भक्षयन्तु कहकर उसे दक्षिण की ओर उछालना चाहिये। ॐआदित्यास्त्वा जागतेन छन्दसा भक्षयन्तु कहकर उसे पश्चिम दिशा में उछालना चाहिये। ॐविश्वेत्वादेवा आनुष्टुभेन छन्दसा भक्षयन्तु कहकर उत्तर दिशा में उछालना चाहिये। (एक बार लेकर चार दिशाओं में उछालाना चाहिये।) पुनः तीन बार उसी मुद्रा में लेकर (अंगुष्ठ अनामिका मिलाकर) तीन बार ॐभूतेभ्यस्त्वा, ॐभूतेभ्यस्त्वा, ॐभूतेभ्यस्त्वा कहकर तीन बार ऊपर उछालना चाहिये। मधुपर्क पात्रं भूमौ निधाय। (मधुपर्क पात्र को भूमि पर रखना चाहिये।) मधुपर्क के एक भाग को हाथ में लेवें।

ॐ विराजोदोहोसि कहकर उसका प्राशन करें। लौकिक उदक (सामान्य पात्र के जल से एक बार आचमन करें।) पुनः एक भाग मधुपर्क (एक चमच) को हाथ में लेवें। ॐविराजो दोहमशीय कहकर उसका प्राशन करें। लौकिक उदक सामान्य पात्र के जल से एक बार आचमन करें। पुनः एक भाग मधुपर्क को हाथ में लेवें। **ॐ मयि—दोहः पद्यायै विराजः** कहकर उसका प्राशन करें। लौकिक उदक (सामान्य पात्र के जल से) एक बार आचमन करें।

मधुपर्कशेषं उदगुपविष्टायब्राह्मणाय दद्यात् लोकवि द्विष्टत्वात् अप्सु वा क्षिपेत्।

मधुपर्कशेष को उत्तर में बैठे ब्राह्मण को देना चाहिये, नहीं तो उसे जल में छोड़ना चाहिये। मधुपर्क स्वादिष्ट होता है, फिर भी अल्प ही लेना चाहिये।

ततः पूर्वनिवेदित आचमनीयैकदेशं–ॐअमृतापिधानमसि इति पीत्वा लौकिक उदकेन आचम्य आचमनीय जलशेषं सर्वं गृहीत्वा ॐसत्यं यशः श्री र्मयि श्रीः श्रयतां इति प्राश्य लौकिकेन उदकेन द्विराचमेत्।

इसमें मन्त्राचमन के लिए एक पात्र होता है, एवं लौकिक आचमन के लिए एक पात्र होता है। मन्त्राचमन तीन बार होता है। १. अमृतोपस्तरणमसि। २. अमृतापिधानमसि। ३. ॐसत्यं यशः श्री र्मयि श्रीः श्रयतां। इन तीन मन्त्रों से मन्त्राचमन होता है। आठ स्थल पर लौकिक आचमन इस प्रयोग में होता है।

अनन्तर पहले बताये गये मन्त्राचमन के भाग—**ॐ अमृतापिधानमसि** कहकर पीना चाहिये, फिर लौकिक जल से आचमन करना चाहिये। फिर मन्त्राचमन पात्र में शेष सभी जल को हाथ में लेकर ''ॐसत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां'' कहकर पी लेना चाहिये। पुनः लौकिक जल से दो बार आचमन करना चाहिये।

ततः दात्रा गौः गौः गौः इति त्रिर्निवेदितां गां निष्क्रयं वा। इसके पश्चात् यजमान तीन बार गाय का नाम लेना चाहिये। गोमूल्य दान देना चाहिये। **उस समय कहने वाले मन्त्र**—मातारुद्राणामित्यस्य भार्गवो जमदग्निर्गोस्त्रिष्टुप्। गोरुत्सर्जनेविनियोगः।

ॐ मातारुद्राणांदुहितावसूनांस्वसादित्यानाममृतस्य नाभिः।
प्रनुवोचंचिकितुषेजनायमागामनागामदितिं वधिष्ट॥ *(ऋग्वेद ८.१०१.१५)*

कहकर गो को छोड़ना चाहिये। (ॐउत्सृजत इति विसृजेत्) ततो दाता गंधमाल्यवस्त्र युगोपवीतयुगाभरणादिभिर्यथाविभवं ब्राह्मणान् पूजयेत्॥ अनन्तर दाता पं को देने वाले वस्त्रादि देकर गन्ध पुष्पों से ब्राह्मणों का पूजन करना चाहिये।

मधुपर्क बनाने का विधान—

मया संपूजितैरत्र दक्षिणाभिश्चतोषितैः। क्रियतां (इष्ट) यागो मे प्रार्थयामि प्रसीदत। *(अनुष्ठान पद्धति-क्रियासार)*

दधनिमध्वानीय सर्पिर्वा मध्वलाभे। दही में शहद मिलायें, शहद के अभाव में घी डालें दही न मिलने पर दूध एवं घी मिलाकर मधुपर्क तैयार करें। घी न मिलने पर दूध एवं गूड मिलाकर मधुपर्क तैयार करें। सभी दानों में यजमान पूर्वाभिमुख बैठें दान लेने वाले उत्तराभिमुख बैठें।

वरस्य या भवेच्छाखा तच्छाखागृह्यचोदितः। मधुपर्कः प्रदातव्यो ह्यन्यशाखेपि दातरि।। *(अनुष्ठान पद्धति-क्रियासार)*

मधुपर्कः देते समय लेने वाले ब्राह्मण के शाखनुसार ही मन्त्रोच्चारण करें उस शाखा के मंत्र न आने पर यजमान की शाखा का मंत्रोच्चारण करें। तात्पर्य आचार्य को जिस शाखा के मन्त्र आते हैं उसी का प्रयोग कर सकते हैं।

पञ्चाशता भवेद्ब्रह्मातदर्धेन तु विष्टरः। ऊर्ध्वकेशो भवेद् ब्रह्मा लम्बकेशस्तु विष्टरः।। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय टिप्पणी)*

दक्षिणावर्तको ब्रह्मा वामावर्तस्तु विष्टरः। ५० कुशाओं से ब्राह्मासन, २५ कुशाओं से विष्टर तैयार होता है। ब्रह्मासन में अग्रभाग ऊपर होना चाहिये, एवं प्रदक्षिणाकार में इसे लपेटना चाहिये। विष्टरासन में अग्रभाग नीचे होना चाहिये, एवं अप्रदक्षिणाकार में लपेटना चाहिये। ब्रह्मासन में अग्र दक्षिणाभिमुख होना चाहिये। विष्टरासन में अग्रभाग उत्तरभिमुख होना चाहिये। **यह आसन की प्राचीन परंपरा है।**

मधुपर्क प्रकरण समाप्त

प्रथम दिन द्वितीय प्रहर सम्पन्न

द्वितीय दिन प्रथम प्रहर

देह शुद्धि—येभ्यो मातेत्यस्य गयःप्लात ऋषिः। विश्वेदेवा देवताः। जगतीछन्दः। एवापित्रेत्यस्य वामदेव ऋषिः। बृहस्पतिर्देवता। त्रिष्टुप् छन्दः। मनुष्य गन्ध निवारणे विनियोगः।

ॐ येभ्यो॑ मा॒तामधु॑म॒त् पिन्व॑ते॒ पयः॑ पी॒यूषं॒ द्यौरदि॑ति॒रद्रि॑बर्हाः।

उ॒क्थशु॑ष्मान् वृषभ॒रान्त्स्वप्न॑स॒स्ताँ आ॑दि॒त्याँ अनु॑मदास्व॒स्तये॑॥ *(ऋक्वेद १०.६३.३)*

ॐ ए॒वापि॒त्रे वि॒श्वदे॑वाय॒ वृष्णे॑ य॒ज्ञैर्वि॑धेम॒ नम॑सा ह॒विर्भिः॑।

बृह॑स्पते सुप्र॒जा वी॒रव॑न्तो व॒यं स्या॑म॒ पत॑यो रयी॒णाम्॥ *(ऋक्वेद ४.५०.६)*

आचमन मन्त्र—ऋग्वेदाय स्वाहा। यजुर्वेदाय स्वाहा। सामवेदाय स्वाहा। (स्वाहा मन्त्र से जल पीना चाहिये।)

अथर्ववेदाय नमः। इतिहास पुराणेभ्यो नमः। अग्नये नमः। वायवे नमः। प्राणाय नमः। सूर्याय नमः। चन्द्राय नमः। दिग्भ्यो नमः। इन्द्राय नमः। पृथिव्यै नमः। अन्तरिक्षाय नमः। दिवे नमः। ब्रह्मणे नमः। विष्णवे नमः। सदाशिवाय नमः। द्विराचम्य .. इस प्रक्रिया को दुबारा करना चाहिये।

पवित्र धारणम्—पवित्रन्त इत्यनयोः आङ्गीरसः पवित्र ऋषिः। पवमानः सोमो देवता। जगतीछन्दः। पवित्राभिमंत्रणे, धारणे विनियोगः।

ॐ प॒वित्र॑न्ते॒ वित॑तं ब्रह्मणस्पते प्र॒भुर्गात्रा॑णि॒ पर्ये॑षि वि॒श्वतः॑।

अत॑प्तनू॒र्न तदा॒मो अ॑श्नु॒तेशृ॒ता स॒इद्वह॑न्त॒स्तत् समा॑शत॥ *(ऋग्वेद ९.८३.१)*

ॐ तपो॑ष्प॒वित्रं॒ वित॑तं दि॒वस्प॒दे शोच॑न्तो अ॒स्य॒ तन्त॑वो॒ व्य॑स्थिरन्।

अव॑न्त्यस्य पवी॒तार॑ मा॒शवो॑ दि॒वस्पृ॒ष्ठमधि॑तिष्ठन्ति॒ चेत॑सा॥ *(ऋग्वेद ९.८३.२)*

ॐ भूर्भुवः स्वः कहकर जल सिञ्चन करें॥ (इन मन्त्रों से पवित्र शुद्धिकर धारण करना चाहिये आसन के नीचे दो कुश डाल लेना चाहिये।)

प्राणायाम—प्रणवस्य परब्रह्म ऋषिः, दैवी गायत्री छन्दः, परमात्मा देवता प्राणायामे विनियोगः।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योतीरसोमृतं ब्रह्म भूर्भुवस्वरोम्। *(ऋग्वेद ३.६२.१०)*

करन्यासः ॐ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ तर्जनीभ्यां नमः। ॐ मध्यमाभ्यां नमः। ॐ अनामिकाभ्यां नमः। ॐ कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

अङ्गन्यास-हृदयादिन्यास ॐ हृदयाय नमः। ॐ शिरसे स्वाहा। ॐ शिखायै वषट्। ॐ कवचाय हुम् ।ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ अस्त्राय फट्।

ॐ भूर्भुवः स्वरोमिति दिग्बन्धः।

आसन शुद्धि—ॐ स्योना पृथिवि भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छां नः शर्म सप्रथः।' *(१५ मन्त्र-२२ सूक्त-प्रथम मण्डल)* इस मन्त्र से जल प्रोक्षण करने से भूमि शुद्ध होती है।

शिखाबन्धनम्—

ऊर्ध्वकेशि विरूपाक्षि मांसशोणित भक्षणे। तिष्ठ देवि शिखाबन्धे चामुण्डे ह्यपराजिते॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

(इस मन्त्र से शिखाबन्धन करना चाहिये।)

महासंकल्प—हेमाद्रि संकल्प

ॐस्वस्ति श्री समस्तजगदुत्पत्तिस्थितिलयकारणस्य रक्षा-शिक्षा-विचक्षणस्य प्रणतपारिजातस्य अशेषपराक्रमस्य श्रीमदनन्तवीर्यस्यादि नारायणस्य अचिन्त्यापरिमितिशक्त्या ध्रियमाणानां महाजलौघमध्ये परिभ्रमताम् अनेक कोटि ब्रह्माण्डानाम् एकतमे अव्यक्त- महादहंकार - पृथिव्यप्तेजो वाय्वाकाशाद्याव रणैरावृते अस्मिन् महति ब्रह्माण्डखण्डे आधारशक्तिश्रीमदादि- वाराह-दंष्ट्राग्र- विराजिते कूर्मानन्त- वासुकि-तक्षक-कुलिक - कर्कोटक -पद्म - महापद्म

– शंखाद्यष्टमहानागैर्ध्रियमाणे ऐरावत–पुण्डरीक–वामन–कुमुद–अञ्जन–पुष्पदन्त–सार्वभौम–सुप्रतीकाष्टदिग्गजोपरिप्रतिष्ठितानाम् अतल–वितल–सुतल–तलातल–रसातल–महातल–पाताल–लोकनामुपरिभागे भुवर्लोक–स्वर्लोक–महर्लोक –जनोलोक – तपोलोक – सत्यलोकाख्य षड्लोकानामधोभागे भूर्लोके चक्रवाल शैल – महावलयनागमध्यवर्तिनो महाकाल महाफणि राजशेषस्य सहस्रफणामणिमण्डल मण्डिते दिग्दन्तिशुण्डादण्डोद्दण्डितेअमरावत्यशोकवती भोगवती – सिद्धवती– गान्धर्ववती – काशी– काञ्ची – अवन्ती अलकावती यशोवतीतिपुण्यपुरीप्रतिष्ठिते लोकालोकाचलवलयिते लवणेक्षु– सुरा सर्पि – दधिक्षीरोदकार्णवपरिवृते जम्बू–प्लक्ष–कुश–क्रौञ्च – शाक शाल्मलिपुष्कराख्यसप्तद्वीपयुते इन्द्र–कांस्य–ताम्र–गभस्ति–नाग–सौम्य–गान्धर्व–चारणभारतेतिनव–खण्डमण्डिते सुवर्णगिरिकार्णिकोपेत महासरोरुहाकार पञ्चाशत् कोटि योजनविस्तीर्णभूमण्डले अयोध्या मथुरा–माया–काशी–काञ्ची–अवन्तिकापुरी द्वारावतीतिमोक्षदायिकसप्तपुरीप्रतिष्ठिते सुमेरु निषधत्रिकूट–रजतकूटाम्रकूट–चित्रकूट–हिमवद्विन्ध्याचलानां महापर्वत प्रतिष्ठिते हरिवर्ष किंपुरुषयोश्च दक्षिणे नवसहस्रयोजन विस्तीर्णे मलयाचल–सह्याचल विन्ध्याचलानामुत्तरे स्वर्णप्रस्थ–चण्डप्रस्थ–चान्द्र–सूक्तावान्तक–रमणक महारमणक–पाञ्चजन्य–सिंहल लंङ्केति–नवखण्डमण्डिते गंगा–भागीरथी–गोदावरी– क्षिप्रा–यमुना– सरस्वती–नर्मदा–तासी–चन्द्रभागा–कावेरी–पयोष्णी–कृष्णावेणी–भीमरथी–तुंगभद्रा–ताम्रपर्णी– विशालाक्षी– चर्मणवती–वेत्रवती– कौशिकी–गण्डकी– विश्वामित्रीसरयूकरतोया– ब्रह्मानन्दामहीत्यनेक पुण्यनदी विराजिते भारतवर्षे भरतखण्डे जम्बूद्वीपे कूर्मभूमौ साम्बवती कुरुक्षेत्रादि समभूमौ आर्यावर्तान्तरगते ब्रह्मावर्तैकदेशे गंगायमुनयोर्मध्यभागे योजनव्यापिविस्तीर्णक्षेत्रे,ज्ञानयुगप्रवर्तकानां महर्षि महेशयोगिवर्याणां परमाराध्यगुरुदेवै : अनन्तश्रीविभूषितैः ज्योतिष्पीठाधीश्वरैः जगद्गुरु श्री मच्छङ्कराचार्य ब्रह्मानन्दसरस्वतीमहाभागैः सम्पादितशतमखकोटि होम महायज्ञपावितायां भूमौ.............................. सकलजगत्स्रष्टुः परार्धद्वय जीविनो ब्रह्मणः द्वितीये परार्धे एकपञ्चाशत्तमे वर्षे प्रथम मासे प्रथम पक्षे प्रथम दिवसे अह्नस्तृतीये यामे तृतीये मुहूर्ते रथन्तरादिद्वात्रिंशत्कल्पानांमध्ये अष्टमे श्वेतवाराहकल्पे स्वायंभुवादि मन्वन्तराणां मध्ये सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे कृत त्रेताद्वापरकलिसंज्ञकानां चतुर्णां युगानां मध्ये वर्तमाने अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमपादे प्रभवादि षष्ठि सम्वत्सराणां मध्ये.........................
.................................संवत्सरे...................................अयने................................ऋतौ ....मासे ....पक्षे

.... तिथौ .... वासरे .... नक्षत्रे .... योगे .... करणे ....राशि स्थिते श्रीसूर्ये .... राशि स्थिते श्रीचन्द्रे...................... राशि स्थिते श्रीकुजे.................................. राशि स्थिते श्रीबुधे .... राशि स्थिते श्रीदेवगुरौ .... राशि स्थिते श्रीशुक्रे........................... राशि स्थिते श्रीशनौ............ राशि स्थिते श्रीराहौ................ राशि स्थिते श्रीकेतौ.............एवं गुण विशेषण विशिष्टायां पुण्यायाम् महापुण्य शुभ तिथौ..

गुरू प्रार्थना —

नमो गुरुभ्यो गुरुपादुकाभ्यो नमः परेभ्यः परपादुकाभ्यः।
आचार्य सिद्धेश्वर पादुकाभ्यो नमोऽस्तु लक्ष्मीपति पादुकाभ्यः॥ *(श्रृङ्गेरी मठीय आचार्य प्रार्थनम्)*

श्री गुरु परमगुरु परमेष्ठी गुरु सद्गुरु पादुकाभ्यो नमो नमः। हम लोग ब्रह्मानन्दं गुरु तं नमामि। गुरु परम्परा को भी बोल सकते हैं। कर सकते हैं। हरौ रुष्टे गुरुस्त्राता गुरौ रुष्टे न कश्चन॥ ईश्वर के रुष्ट होने पर गुरुजी रक्षा करते हैं एवं गुरुजी के कुपित होने पर कोई भी रक्षक नहीं है।

भूतोच्चाटन मन्त्र—

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुविसंस्थिताः। ये भूता विघ्नकर्तारः ते गच्छन्तु शिवाज्ञया॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-आसन विधि प्रकरण)*
ॐ अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम्। सर्वेषामविरोधेन ब्रह्मकर्म समारभे॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-आसन विधि प्रकरण)*
ॐ तीक्ष्णदंष्ट्रमहाकाय कल्पान्ते दहनोपम। भैरवाय नमस्तुभ्यं अनुज्ञां दातुमर्हसि॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

इति भैरवं नमस्कृत्य। (इन मन्त्रों से भूतोच्चाटन कर भैरव जी से यज्ञ रक्षा की प्रार्थना करते हैं।)

गणपति प्रार्थना—गणानान्त्वा इति मन्त्रस्य गृत्समदऋषिः। गणपतिर्देवता। जगती छन्दः। गणपति प्रार्थने विनियोगः।

ॐ गणानांत्वा गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमं।

ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आनः शृण्वन्नूतिभिः सीदसादनम् ॥ (ऋग्वेद २.२३.१)

(इन मन्त्रों से गणपति प्रार्थना कर पुष्पाक्षत छोड़ना चाहिये।)

त्रिवाक्येण पुण्याह वाचन—

ॐ भद्रं कर्णेभिःशृणुयामदेवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरंगैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेमदेवहितं यदायुः। (ऋग्वेद १.८९.८)

ॐ द्रविणोदा द्रविणसस्तुरस्य द्रविणोदाः सनरस्य प्रयंसत्।
द्रविणोदावीरवतीमिषंनोद्रविणोदारासतेदीर्घमायुः॥ (ऋग्वेद १.९६.८)

ॐ सवितापश्चातात्सवितापुरस्तात्सवितोत्तरात्तात्सविता धरात्तात्।
सवितानः सुवतु सर्वतातिं सवितानोरासतां दीर्घमायुः॥ (ऋग्वेद १०.३६.१४)

ॐ नवो नवो भवति जायमानोह्नांकेतुरुषसामेत्यग्रम्।
भागं देवेभ्यो विदधात्यायन्प्रचंन्द्रमास्तिरते दीर्घमायुः॥ (ऋग्वेद १०.८५.१९)

ॐ उच्चादिवि दक्षिणावंतो अस्थुर्येअश्वदाः सहतेसूर्येण। हिरण्यदा अमृतत्वं भजंतेवासोदाः सोमप्रतिरन्त आयुः॥
(ऋग्वेद ६.६५.६)

ॐ आपउंदंतु जीव से दीर्घायुत्वाय वर्चसे। सस्त्वांहृदा कीरिणामन्यमानो मर्त्यं मर्त्योजोहंवीमि॥
(यजुर्वेद १ काण्ड-२ प्रश्न-१ अनुवाक-१ मन्त्र)

ॐ जातवेदोयशो अस्मासु धेहि प्रजाभिरग्ने अमृतत्वमश्याम्। यस्मैत्वं सुकृते जातवेद उलोकमग्ने कृणवस्योनम्।

अश्विनं सपुत्रिणं वीरवंतं गोमंतंरयिंनंशते स्वस्ति। संत्वा सिञ्चामि यजुषा प्रजामायुर्धनं च॥
(यजुर्वेद १ काण्ड-६ प्रश्न-१ अनुवाक-१ मन्त्र)

ॐ उद्गातेवंशकुनेसामंगायसि ब्रह्मपुत्र इव सवनेषु शंससि।
वृषेव वाजीशिशुमतीरपीत्यां सर्वतोनः शकुनेभद्रमावद विश्वतोनः शकुनेपुण्य मावद॥ (ऋग्वेद २.४२.२)
याज्ययायजतिप्रत्तिर्वैयाज्यापुण्यैवलक्ष्मीः पुण्यामेवतल्लक्ष्मीं संभावयति पुण्यां लक्ष्मीं संस्कुरुते॥
यत्पुण्यं नक्षत्रं। तद्बट्कुर्वी तोपव्युषं। यदावैसूर्य उदेति। अथ नक्षत्रंनैति। यावति तत्र सूर्यो गच्छेत्।
यत्र जघन्यं पश्येत्। तावतिकुर्वीतयत्कारीस्यात्। पुण्याह एव कुरुते। तानि वा एतानि यमनक्षत्राणि।
यान्येव देवनक्षत्राणि। तेषु कुर्वीत यत्कारीस्यात्। पुण्याह एव कुरुते। (यजुर्वेद - ब्राह्मण)

सर्वेषां महाजनान्नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणायाद्यकरिष्यमाणविष्णुसर्वाद्भुतशान्त्याख्यायकर्मणः पुण्याहं भवंतो ब्रुवंत्विति त्रिर्वदेत्।
(यजमान अपने सकुटुम्ब प्रणाम करते हुए आज संपन्न होने वाले कर्म के लिए पुण्याह की याचना करते हुए तीन बार कहते हैं। जिसका प्रत्युत्तर ब्राह्मण तीन बार देते हैं।)

१. ॐ पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु। ॐ अस्तु पुण्याहम्। २. ॐ पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु। ॐ अस्तु पुण्याहम्। ३. ॐ पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु। ॐ अस्तु पुण्याहम्

ॐ स्वस्तये वायुमुपब्रवामहै सोमं स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः।
बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तय आदित्या सो भवन्तु नः॥ (ऋग्वेद ५.५१.१२)
आदित्य उदयनीयः पथ्यैवेतः स्वस्त्याप्रयंतिपथ्यांस्वस्तिमभ्युद्यंतिस्वस्त्येवेतः प्रयंतिस्वस्त्युद्यंति स्वस्त्युद्यंति॥ (स्मृति संग्रह)
ॐ स्वस्तिन इन्द्रोवृद्धश्रवाःस्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्तिनस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिःस्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु। (ऋग्वेद १.८९.६)

ॐ अ॒ष्टौ दे॒वा वस॑वः सो॒म्यास॑ः॥ चत॑स्त्रोदे॒वीर॒जरा॒श्रवि॑ष्ठाः। ते य॒ज्ञं पा॑न्तु रज॑सः पु॒रस्ता॑त्। सं॒व॒त्स॒रीणा॑म॒मृत॑ँ स्व॒स्ति। (यजुर्वेद - ब्राह्मण)

इसके बाद नीचे लिखा वाक्य का तीन बार यजमान कहें। एवं ब्राह्मण प्रत्युत्तर दें। सर्वेषां महाजनान्नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणायाद्यकरिष्यमाण विष्णु सर्वाद्भुतशान्त्याख्याय कर्मणः स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु। (ब्राह्मण कहते हैं)—ॐआयुष्मते स्वत्ति। इन उपरोक्त वाक्यों को तीन बार दोहराना चाहिये। इसके बाद पुनः पहले जैसे उत्तर कलश से जल नीचे रखे बड़े पात्र में थोड़ा-थोड़ा कर गिराते हुए मंत्रपाठ करें।

ॐ ऋ॒ध्याम॒स्तोम॑ं सनु॒याम॒वाज॒मानो॒ मंत्रं॑ स॒रथे॒ होप॑यांतं।
यशो॒नप॒क्कं मधु॒गोष्वँ॒तराभूतांशो॑ अ॒श्विनो॒ः काम॑मप्राः॥ (ऋग्वेद १०.१०६.११)
सर्वामृद्धिमृध्नुयामितितं वैतेजसैवपुरस्तात् पर्यभवच्छन्दोभिर्मध्यतोक्षरै
रुपरिष्टाद्गायत्र्या सर्वतो द्वादशाहंपरिभूयसर्वामृद्धिमार्ध्नोत्सर्वामृद्धिमृध्नोति य एवं वेद॥
ऋ॒ध्यास्म॑ह॒व्यैर्नम॑सोपसद्यं॥ मि॒त्रं दे॒वं मि॑त्र॒धेय॑ंनो अस्तु॥ अ॒नू॒रा॒धान् ह॒विषा॑व॒र्धय॑ंतः।
श॒तंजी॑वेमश॒रद॒ः सवी॑राः। त्रीणि॑-त्रीणि॒ वै दे॒वाना॑मृ॒द्धानि॑।
त्रीणि॒च्छन्दा॑ः सि॒त्रीणि॒ सव॑नानि॒ त्रयं॑ इ॒मे लो॒काः। ऋ॒ध्यामे॒वतद्वीर्य॑ं ए॒षु लो॒केषु॒ प्रति॑तिष्ठति॥ (यजुर्वेद - ब्राह्मण)

इसके बाद पुनः नीचे लिखे वाक्यों को तीन बार यजमान कहें। एवं ब्राह्मण प्रत्युत्तर दें। सर्वेषां महाजनान्नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणायाद्य करिष्य माणविष्णुसर्वाद्भुतशान्त्याख्याय अस्य कर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।
(ब्राह्मण कहते हैं)—ॐऋध्यतां। इन उपरोक्त वाक्यों को तीन बार दोहराना चाहिये। इसके बाद मन्त्र पाठ करते हुए उत्तरकलश से नीचे रखे पात्र में जल छोड़ना चाहिये।

ॐ श्रि॒ये जा॒तः श्रि॒यऽआनिरि॑याय॒ श्रि॒यं॒वयो॑जरि॒तृभ्यो॑दधाति।
श्रि॒यं॒ वसा॑ना अ॒मृत॒त्वमा॑य॒न् भव॑ंतिस॒त्यास॑मि॒थामि॒तद्रौ॑॥ (ऋग्वेद ९.९४.४)

श्रिय एवैनं तच्छ्रियामादधाति संततमृचा वषट् कृत्यं संतत्यैसंधीयते प्रजया पशुभिर्यएवं वेद।
यस्मिन्ब्रह्माभ्यजंय त्सर्वमेतत्॥ अमुञ्चंलोकमिदमूंचसर्वं॥ तन्नो नक्षत्रमभिजिद्विजित्यं॥
श्रियं दधात्वहंणीयमानं॥ अहें बुध्निय मंत्रंमे गोपाय। यमृषंयस्त्रयीविदाविदुः॥
ऋचः सामानि यजूंषि। सा हि श्रीरमृतासतां। *(यजुर्वेद - ब्राह्मण)*

इसके बाद पुनः नीचे लिखे वाक्यों को तीन बार यजमान कहें एवं ब्राह्मण प्रत्युत्तर दें। सर्वेषां महाजनान्नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणायाद्य करिष्यमाण विष्णुसर्वाद्भुतशान्त्याख्याय कर्मणः श्रीरस्त्विति भवंतो ब्रुवन्तु। (ब्राह्मण कहते हैं)—ॐअस्तु श्रीः। इन वाक्यों को तीन बार कहना चाहियें। वर्षशतं परिपूर्णमस्तु। गोत्राभिवृद्धिरस्तु। कर्माङ्ग देवता प्रीयताम्। (ब्राह्मण आशीर्वाद देते हैं—सौ साल पूर्ण हो। आप की वंश वृद्धि हो। कर्माङ्ग देवता आप पर प्रसन्न हो।)

ॐ शुक्रेभिरंगैरज आततन्वान् क्रतुं पुनानः कविभिः पवित्रैः।
शोचिर्वसानः पर्यायुरपां श्रियोमिमीते बृहतीरनूनाः॥ *(ऋग्वेद ३.१.५)*
तदप्येषः श्लोकोभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे॥ आविक्षितस्य कामप्रेः विश्वेदेवाः सभासद इति॥

पुण्याह वाचन फल समृद्धिरस्तु—पुण्याहे कर्माङ्ग देवताः प्रीयन्ताम्।

मातृका पूजनम्—पान सुपारी दक्षिणा के ऊपर कूर्च (कुश से बना) रखकर उसमें मातृका आवाहन करके उनमें मातृका पूजन करना चाहिये। नान्दी मण्डल के आगे मातृका पूजन करना चाहिये।

ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णावी तथा। वाराही तथेन्द्राणी चामुण्डाः सप्तमातरः॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

सात मातृकायें।

गौरीपद्मा शचीमेधासावित्रीविजयाजया। देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

धृतिः पुष्टिस्तथातुष्टिरात्मनः कुलदेवताः (गौर्यादि षोडश मातृकायें)। ब्राह्म्यादि सप्त मातृः गौर्यादि षोडश मातृः आवाहयामि। विनायकं आवाहयामि। दुर्गा आवाहयामि। क्षेत्रपालं आवाहयामि। गणपतिं आवाहयामि। मातृस्वसारं आवाहयामि। पितृस्वसारं आवाहयामि। एताभ्यो देवताभ्यो नमः। ध्यायामि। ध्यानं समर्पयामि। इनका षोडशोपचार पूजन करना याहिये। **उदाहरण**—आवाहित दैवताभ्यो नमः। आसनं समर्पयामि आदि। षोडशोपचार पूजन संक्षेप में करें। (गणेश पूजन में है।)

अन्त में पुष्पांजलि मन्त्र—**ॐ गौरीर्मिमाय सलिलानितक्षत्येकंपदीद्विपदी सा चतुंष्पदी।**

अष्टापंदी नवंपदीबभूवुषीं सहस्त्रांक्षरापरमेव्योंमन्॥ *(ऋग्वेद १.१६४.४१)*

ॐभूभुर्वः स्वः आवाहित देवताभ्यो नमः। मन्त्रपुष्पं समर्पयामि।

तदंस्तु मित्रावरुणा तदंग्ने शं योरस्मभ्यंमिदमंस्तुशस्तं। अशीमहिं गाधमुत प्रतिष्ठां नमोदिवे बृंहते सादंनाय॥ *(ऋग्वेद ५.४७.७)*

गृहावै प्रतिष्ठासूक्तंतत्प्रतिष्ठि ततमयावाचाशंस्तव्यं तस्माद्यद्यपिदूर इव पशूँल्लभते गृहानेवैनानाजिगमिषति गृहाहिपशूनां प्रतिष्ठाप्रतिष्ठा। इन मन्त्रों को पढकर पुष्पाक्षत चढ़ायें।

मातृका पूजन समाप्तम्

आवाहित देवनान्दी पूजन—देवनान्दी में मातृका पूजन आवश्यक नहीं है। यज्ञ,(अतिरुद्र, सहस्त्रचण्डी) रथोत्सव आदि सार्वजनिक आचरणों में देवनान्दी ही करना चाहिये। **क्रतुदक्षावुत्सवे तु।** इस वाक्य से क्रतु एवं दक्ष नामक विश्वेदेव देवता हैं। देवनान्दी में पितृदेवता चार है। अमूर्त्य।

१. अग्निष्वात्ता, २. बर्हिषदः, ३. आज्यपाः, ४. सोमपाः

संकल्प—देशकालौ संकीर्त्य करिष्यमाण कर्माङ्ग भूतं नान्दीसमाराधनं करिष्ये। पहले दो मण्डल बनायें।

दत्वातण्डुलपूर्णपात्रयुगले संकल्प्य भुक्तिं तयोः।

ताम्बूलादि सुदक्षिणान्तिकमनुज्ञातः समुद्वाहयेत्॥ *(लक्षण संहिता)*

दो पात्रों में चावल, काजू किशमिश, फल, दाल, आदि दो मण्डलों पर रखें।

ॐ आनो भद्राः क्रतवो यंतुविश्वतोदब्धसो अपरीता स उद्भिदः।
देवानो यथासदुमिद्वृधे असन्न प्रायुवोरक्षितारो दिवे दिवे। *(ऋग्वेद १.८६.१)*

ॐ क्रतुदक्षसंज्ञका विश्वेदेदेवाः—नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूभुर्वस्वः इयं च वृद्धिः। इससे दुर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें। अग्निष्वात्ताः पितृगणाः नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूभुर्वः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोड़ें।

बर्हिषदः पितृगणाः—नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें। **आज्यपाः पितृगणाः**—नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दुर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें। **सोमपाः पितृगणाः** नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें।

ॐ क्रतुदक्ष संज्ञका विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणायोः इदमासनगंधाद्युपचार कल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध अक्षत पुष्प दूर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें।**ॐ अग्निष्वात्ताः पितृगणाः** नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणायोः इदं आसनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध अक्षत पुष्प दूर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें। **बर्हिषदः पितृगणाः** नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणायोः इदमासनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध अक्षत पुष्प दुर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें। **आज्यपाः पितृगणाः** नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणायोः इदमासनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध, अक्षत, पुष्प, दुर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें।

सोमपाः पितृगणाः नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणायोः इदमासनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भूवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध, अक्षत, पुष्प, दुर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें। ॐभूर्भुवः स्वः सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि कहकर मण्डल पर रखे दोनों पात्रों को परिषेचन कर दक्षिणादिशा के पात्र को "इदं

विश्वेभ्यो देवेभ्यः'' उत्तरदिशा के पात्र को ''इदं नान्दीमुख पितृभ्यः'' कहकर दान संकल्प कर ब्राह्मणों को दे देवें।

क्रतुदक्षसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामं सोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणापर जल छोड़कर नीचे रखना चाहिये। **अग्निष्वात्ताः पितृगणाः** नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामंसोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणापर जल छोडकर नीचे रखना चाहिये। **बर्हिषदः पितृगणाः** नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं दमनामं सोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणापर जल छोड़कर नीचे रखना चाहिये। **आज्यपाः पितृगणाः** नान्दीमुखा युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामंसोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणापर जल छोडकर नीचे रखना चाहिये।

सोमपाः पितृगणाः नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामं सोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणा पर जल छोड़कर नीचे रखना चाहिये। आगे लिखे मन्त्रों से खड़े होकर उपस्थान करें।

ॐ उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे। अभिदेवाँऽइयक्षते। (ऋग्वेद ९.११.१)
ॐ अभिते मधुना पयोथर्वाणो अशिश्रयुः। देवं देवाय देवयु। (ऋग्वेद ९.११.२)
ॐ स नः पवस्व शंगवे शंजनायशमर्वते। शंराजन्नोषधीभ्यः। (ऋग्वेद ९.११.३)
ॐ बभ्रवेनु स्वतवसेरुणाय दिविस्पृशे। सोमाय गाथमर्चत॥ (ऋग्वेद ९.११.४)
ॐ हस्तच्युतेभिरद्रिभिः सुतं सोमं पुनीतन। मधावाधावता मधु॥ (ऋग्वेद ९.११.५)
ॐ अक्षन्नमीमदन्तह्यवप्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती यो जान्विन्द्र ते हरी॥ (ऋग्वेद १.८२.२)
ॐ प्रजापतेनत्वदेतान्यन्यो विश्वाजातानि परिता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्यामपतयोरयीणाम्॥
(ऋग्वेद १०.१२१.१०)

कृतस्य देवनान्दी समाराधनस्य प्रतिठाफलसिद्ध्यर्थं द्राक्षामलक निष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृये। कहकर हाथ में दक्षिणा लेकर उस पर जल छोडकर नीचे रख दें।

प्रार्थना—**अग्निष्वात्वा बर्हिषदः आज्यपाः सोमपास्तथा। एते भवन्तु मे प्रीताः प्रयच्छन्तु च मङ्गलम्॥** कहकर जल छोड़ें। **अनेन नान्दीसमाराधनेन नान्दीमुखदेवताः प्रीयंताम्। आचम्य**—मंगल तिलक रकें। **विसर्जन**—यज्ञ के अन्तिम दिन विसर्जन करें।

ॐ इळांमग्नेपुरुदंसंसनिंगोः शंश्वत्तमं हवंमानायसाध। स्यान्नंः सूनुस्तनंयो विजावाग्ने सातेंसुमतिर्भूत्वस्मे॥ *(ऋग्वेद ३.१५.७)*

ॐ इळामुपह्वयते पशवो वा इळापशूनेवतदुपह्वयतेपशून्यजमानेदधाति दधाति॥ *(ऋग्वेद ब्राह्मण)*

यथाचारं हिरण्येन भाण्डवादनं। मन्त्र कहते हुए सिक्के से थाली के निचले भाग में शब्द करना चाहिये। (घण्टा वादन के बदले)

१. सर्वाद्भुत शान्ति याग के लिए-१—आचाय, एक कुण्ड में १-ब्रह्मा, ईशान्य में १-कलश पूजन, होमाङ्ग पूजन दक्षिण में १-इतर पूजन, पश्चिम में १-तर्पण के लिए, परिचारक (कर्मचारी) १-एक ब्राह्मण-कुल ५ पंण्डित रहने पर

१५ पण्डित से संपन्न कर्म में—२-१५ पण्डित कर्म में (एक कुण्ड में), २-१५ पण्डित से संपन्न याग में—१ आचार्य, १ ब्रह्मा, १-कलश पूजन, १-इतर पूजन, १-तर्पण पूजन, १-परिचारक ब्राह्मण, ९-ऋत्विज होम के लिए

३-५५ पण्डित से संपन्न याग में—१- आचार्य (५ कुण्ड में), १-ब्रह्मा, १-कलश पूजन, १-इतर पूजन, १-तर्पण के लिए, १-परिचारक ब्राह्मण, ४५-ऋत्विज होम के लिए, ४-अग्निमुख जानकार उप आचार्य (९×५)

४-१०० पण्डित से संपन्न या में—१-आचार्य (९ कुण्ड में), १-ब्रह्मा, १-कलश पूजन, १-इतर पूजन, १-तर्पण के लिए, ५-परिचारक ब्राह्मण, ८१-ऋत्विज होम के लिए, ९-अग्निमुख जानकार उपआचार्य (९×९), इसी अनुपात में अधिक संख्या में कर सकते हैं।

ॐ उत्तिंष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तंस्त्वेमहे। उपप्रयंन्तु मरुतंः सुदानंव इन्द्रंप्राशूर्भवा सचां॥ *(ऋग्वेद १.४०.१)*

ॐ अभ्यारमिदद्रंयो निषिंक्तं पुष्कंरे मधुं। अवतस्यं विसर्जने॥ *(ऋग्वेद ८.७२.११)*

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मत्कृताम्। इष्टकामार्थसिद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

(इन मन्त्रों से आवाहित देवताओं को उठाना चाहिये।)

देवनान्दी समाप्त

ब्राह्मण वन्दन— ॐ नमो महद्भ्यो नमो अर्भकेभ्यो नमो युवभ्यो नम आशिनेभ्यः।
यजाम देवान् यदि शक्नवाममाज्यायसः शंसमा वृक्षि देवाः। सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः॥ *(ऋग्वेद २७.१३)*

इस मन्त्र से ब्राह्मण पूजा करें। "करिष्यमाण कर्मणः आरम्भमुहूर्तः सुमुहुर्तो अस्तु इति अनुगृणहन्तु"। यजमान पूछते है॥ "सुमुहूर्तमस्तु"।

सर्वतोभद्र मण्डल में—पञ्चगव्य प्रोक्षण—

ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंय्यो रभिस्त्रवन्तुनः॥ *(ऋग्वेद १०.९.४)*
ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*
ॐ आप्यायस्व समेतुते विश्वतः सोमवृष्णयं। भवावाजस्य संगथे। *(ऋग्वेद १.९१.१६)*
ॐ दधि क्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।सुरभिनो मुखाकरत्प्रण आयूंषि तारिषत्॥ *(ऋग्वेद ४.३९.६)*
ॐ शुक्रमसि ज्योतिरसि तेजोऽसि देवो वः सवितोत्पुना त्वच्छिद्रेण पवित्रेण वसोः सुर्यस्य रश्मिभिः।
(यजुर्वेद १-काण्ड १-प्रश्न १० अनुवाक २०-मन्त्र)

कुशोदक प्रोक्षण—ॐ देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यां॥ *(यजुर्वेद १-काण्ड १-प्रश्न ४ अनुवाक १०-मन्त्र)*
ॐ देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यां। ॐ मन्थता नरः कविमद्वयन्तं प्रचेतसममृतं सुप्रतीकं।
यज्ञस्य केतुं प्रथमं पुरस्तादग्निं नरो जनयता सुशेवम्॥ *(ऋग्वेद ३.२९.५)*

जल कलश पूजन—कलश में पूर्ण जल भरकर रखना चाहिये। फिर उसमें गन्ध अक्षत पुष्प कलश के अन्दर डालना चाहिये एवं बाहर भी चारों

ओर लगाना चाहिये। गायत्री मन्त्र से तीन बार कलश छूकर जप करना चाहिये।

ॐ कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रूद्रः समाश्रितः। मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः ॥
कुक्षौ तु सागरास्सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदस्सामवेदोह्यथर्वणः ॥
अङ्गैश्चसहितास्सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः। अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा ॥
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः। सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः ॥
गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिंकुरु ॥ (ब्रह्मकर्म समुच्चय-देवपूजा प्रकरण)

ॐ इमं मे गङ्गे यमुने सरस्वति शुतुद्रिस्तोमं सचता परुष्णया।
असिक्न्या मरुद्वृधे वितस्तयाऽऽर्जीकीये श्रृणुह्या सुषोमया ॥
सितासिते सरिते यत्र संगथे तत्राप्लुतासो दिव मुत्पतन्ति।
येवै तन्वंऽविसृजन्ति धीरास्ते जनासो अमृतत्वं भजन्ते ॥ (ऋग्वेद १०.७५.७)

ॐ याः प्रवतो निवत उद्वत उदन्वती रनुदकाश्चयाः। ता अस्मभ्यं पयसा
पिन्वमानाः शिवा देवी रशिपदा भवन्तु सर्वा नद्यो अशिमिदा भवन्तु ॥ (ऋग्वेद ७.५०.४)

(इन मन्त्रों को कलश छूकर पाठ करना चाहिये।)

सितमकरनिषण्णां शुभ्रवर्णां त्रिनेत्रां करधृत कलशोद्यत्पंकजाभीत्यभीष्टाम्।
विधि हरिहररूपां सेन्दुकोटीरचूडां भसितसितदुकूलां जाह्नवीं तां नमामि ॥ (स्मृति संग्रह)

(इस मन्त्र से कलश में गङ्गाजी का ध्यान करना चाहिये।)

शङ्खपूजन—शंख को पहले धोकर, उसमें जल भरकर, शंख को गन्ध पुष्प अक्षत लगाकर पीठ के ऊपर रखना चाहिये। गायत्री मन्त्र से तीन बार शंख छूकर जप करना चाहिये।

ॐ शङ्खं चन्द्रार्कदैवत्यं वारुणं चाधिदैवतम्। पृष्ठे प्रजापतिं विद्यात् अग्रे गङ्गा सरस्वती॥
त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि वासुदेवस्य चाज्ञया। शङ्खे तिष्ठन्ति विप्रेन्द्र तस्माच्छंखं प्रपूजयेत्॥
विलयं यान्ति पापानि हिमवत् भास्करोदये। दर्शनादेव शङ्खस्य किं पुनः स्पर्शने भवेत्॥
पाञ्चजन्यं महात्मानं पापघ्नं तु पवित्रकम्। शंखमध्यस्थितं तोयं भ्रामितं केशवोपरि॥
अङ्गलग्नं मनुष्याणां ब्रह्महत्यायुतं दहेत्॥ गर्भादेवारि नारीणां विशीर्यन्ते सहस्रधा।
तव नादेन पाताले पाञ्चजन्य नमोस्तुते॥ ॐ पाञ्चजन्याय विद्महे पद्मगर्भाय धीमहि। तन्नः शङ्खः प्रचोदयात्। *(देवपूजा)*

ॐ पवनायै नमः। ॐ पाञ्चजन्यायै नमः। ॐ पर्जन्यायै नमः। ॐ अम्बुराजायै नमः। ॐ कम्बुराजायै नमः। ॐ पाशबान्धवायै नमः। ॐ धवलायै नमः। ॐ निःस्वनायै नमः। ॐ धृतिकलायै नमः। शङ्खनवशक्ति पूजां समर्पयामि।

अथ नामपूजा—ॐ पवनाय नमः। ॐ पाञ्चजन्याय नमः। ॐ पषगर्भाय नमः। ॐ अम्बुराजाय नमः ॐ कम्बुराजायै नमः। ॐ धवलाय नमः। ॐ निस्सवनाय नमः। ॐ दिव्यभोगदाय नमः।

शंखमूले परब्रह्मा शङ्खाग्रे तु सरस्वती। यः स्नापयति गोविन्दं तस्य पुण्यमनन्तकम्॥ *(स्मृति मुक्तावल्यां शङ्खपूजा प्रकरणम्)*

(इतना कहकर शंख को नमस्कार करना चाहिये।)

शंख के जल को कलश में डालना चाहिये। पुनः शंख के कुछ जल लेकर तीन बार प्रोक्षण करना चाहिये। यज्ञशाला एवं पूजास्थल का प्रोक्षण करें। पूजा के सामग्रियों का प्रोक्षण करें। एवं तदनन्तर अपने को प्रोक्षण करें। एवं ब्राह्मणों का भी प्रोक्षण करें। शेष जल नीचे छोड़ देवें। शंख को धोकर पुनः पानी भरकर यथा स्थान रख देना चाहिये।

आत्माराधनम्—हृदि स्थितं पंकजमष्टपत्रं सकेसरं कर्णिक मध्यनालं ॥
अङ्गुष्ठमात्रं मुनयो वदन्ति ध्यायेत् च विष्णुं पुरुषं पुराणम् ॥
हृदयकमलमध्ये सूर्यबिम्बासनस्थं सकलभुवनबीजं सृष्टिसंहारहेतुम् ।
निरतिशयसुखात्म ज्योतिषं हंसरूपं परमपुरुषमाद्यं चिन्तयेदात्ममूर्तिम् ॥
आराधयामि मणि सन्निभमात्मलिङ्गम् । मायापुरीरहृदय पंकज सन्निविष्टम् ॥
श्रद्धा नदी विमलचित्त जलभिषेकै । नित्यं समाधि कुसुमैर्न पुनर्भवाय ॥
देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो हंसः सदाशिवः । त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत् ॥
स्वामिन् सर्व जगन्नाथ यावत्पूजावसानकम् । तावत् त्वं प्रीति भावेन बिम्बेस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥ *(देवपूजा)*

ॐ आत्मने नमः। ॐ अन्तरात्मने नमः। ॐ परमात्मने नमः। ॐ ज्ञानात्मने नमः। आत्मपूजां समर्पयामि। इससे आत्मशुद्धि होती है। (इन मन्त्रों को कहकर अपने सिर पर अक्षत डाल लेवें।)

मण्डप पूजनम्—उत्तप्तोज्वल काञ्चनेन रचितं तुङ्गाङ्ग रंगस्थलं। शुद्धस्फाटिक भित्तिका विरचितैस्तम्भैश्च हैमैः शुभैः ।
द्वारश्चामर रत्नराजखचितैः शोभावहैर्मण्ठपैः । तत्रान्यैरपि चित्र शंखधवलैः प्रभ्राजितं स्वस्तिकैः ॥
मुक्ताजाल विलम्बिमण्टपयुतैर्वज्रैश्च सोपानकैः । नानारत्नविनिर्मितैश्च कलशैरत्यन्त शोभावहम् ।
माणिक्योज्वल दीपदीप्तिखचितं लक्ष्मीविलासास्पदम् । ध्यायेत् मण्टपमर्चनेषु सकलेष्वेवं विधं साधकः ॥
(स्मृति सङ्ग्रह - अनुष्ठान पद्धति)

नवरत्न खचित श्री सौभाग्य मण्टपाय नमः मण्टपपूजां समर्पयामि। (उपरोक्त मन्त्रों से सर्वतोभद्रमण्डल एवं नवग्रह मण्डल एवं प्रधान कलश रखने वाला मण्ठप का पूजन करना चाहिये।)

अङ्गन्यास करन्यास—(शरीर में शंकर जी का आवाहन करने से पूर्व में ये न्यास करना चाहिये।) वामदेवः ऋषिः पंक्तिश्छन्दः, सदाशिव रुद्रो देवता न्यासे विनियोगः।

१. ॐ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
२. ॐ नं तर्जनीभ्यां नमः।
३. ॐ मं मध्यमाभ्यां नमः।
४. ॐ शिं अनामिकाभ्यां नमः।
५. ॐ वां कनिष्ठिकाभ्यां नमः। वौषट्।
६. ॐ यःकरतल करपृष्ठाभ्यां नमः।
७. ॐ हृदयाय नमः।
८. ॐ नं शिरसे स्वाहा।
९. ॐ मं शिखायै वषट्।
१०. ॐ शिं कवचाय हुम्।
११. ॐ वां नेत्रत्राय।
१२. ॐ यः। अस्त्राय फट्।

इतना करने के पश्चात पहले सर्वतोभद्र मराडल की पूजा करें।

***सर्वतोभद्र मराडल पूजन*—आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्य करिष्यमाण सग्रहमख सर्वाद्भुतशान्ति होमाङ्गत्वेन ऐशान्यां कलशार्चनं करिष्ये।**

आचमन कर, प्राणायाम करें। देशकाल संकीर्तनपूर्वक ग्रहसहित सर्वाद्भुत शान्ति याग के अङ्ग के रूप में ईशान्य दिशा में कलशपूजन करुंगा कहकर संकल्प लेवें।

यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वतः। स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु॥ १॥
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशं। सर्वेषां अविरोधेन यज्ञकर्म समारभे॥ २॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

इति गौरसर्षपान् विकीर्य-इतना कहकर सफेद सरसूँ को चारों ओर कलशार्चन स्थल में बिखेरना चाहिये। शुचीवो हव्येति तिसृणां मैत्रावरुणिः वसिष्ठो मरुतस्त्रिष्टुप्। अग्निः शुचिव्रततम इति द्वयोराङ्गिरसो विरूपाग्निर्गायत्री एतोन्विन्द्रमिति तिसृणां आंगिरसः तिरश्चीन्द्रोनुष्टुप् भूमि प्रोक्षण विनियोगः।

ॐ शुचीवो हव्या मरुतः शुचीनां शुचिंहिनोम्यध्वरं शुचिभ्यः।

ऋतेनं सत्यमृतसापं आयन्छुचिजन्मानः शुचंयः पावकाः ॥ (ऋग्वेद ७.५६.१२)
अग्निः शुचिंव्रततमः शुचिर्विप्रः शुचिंः कुविः । शुचींरोचत आहुंतः ॥
उदंग्ने शुचंयस्तवं शुक्रा भ्राजंन्त ईरते । तवज्ज्योतींष्यर्चयंः ॥ (ऋग्वेद ८.४४.१७)
एतोन्विद्रंस्तवाम शुद्धं शुद्धेन साम्नां । शुद्धैरुक्थैर्वावृध्वांसँ शुद्ध आशीर्वान्ममत्तु ॥
इन्द्रं शुद्धोनऽआगंहि शुद्धः शुद्धाभिंरूतिभिंः । शुद्धोरयिं निधांरयशुद्धोमंमंद्धिसोम्यंः ॥ (ऋग्वेद ८.९५.७-८)
इन्द्रंशुद्धो हिनोंरयिं शुद्धो रत्नांनि दाशुषें । शुद्धो वृत्राणिं जिघ्नसे शुद्धोवाजं सिषाससि ॥ (ऋग्वेद ८.९५.९)

इन मन्त्रों से कुशों से प्रोक्षण करें। पञ्चगव्य से भूमि प्रोक्षण निम्नलिखित मन्त्र से करें। आपोहिष्ठेति सृचस्यांबरीषः सिंधुद्वीप आपो गायत्री भूमि प्रोक्षणे विनियोगः।

ॐ आपोहिष्ठा मंयोभुवस्तानं ऊर्जे दंधातन।
महेरणांय चक्षंसोयोवंः शिवतंमोरसस्तस्यं भाजयते हनंः उशतीरिंव मातरंः ॥
तस्मा अरंगमामवो यस्य क्षयांयजिन्वंथ। आपों जनयंथाचनंः ॥ (ऋग्वेद १०.९.१-२-३)

कुशोदकेन च प्रोक्षेत्। कुश जल से प्रोक्षण करें।

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सबाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥

इतना कहकर हाथ जोड़कर खड़े हो। **इतना करने के बाद मण्डल रचना करें। दोनों मण्डल बनायें। पहले कलश पूजन करें।** (यहाँ भी कलश पूजन करना चाहिये।) कलश में पूर्ण जल भरकर रखना चाहिये। फिर उसमें गन्ध अक्षत पुष्प कलश के अन्दर डालना चाहिये। बाहर भी चारों ओर लगाना चाहिये। गायत्री मन्त्र से तीन बार कलश छूकर पज करना चाहिये।

सर्वतोभद्र मराडल में देवता पूजनम्—मध्ये ब्रह्माणं, (मध्य में ब्रह्मा का आवाहन करें।) ब्रह्मजज्ञानं वामदेवो ब्रह्मात्रिष्टुप् ब्राह्मावाहने विनियोगः।

ॐ ब्रह्मं जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेन आवः।
सबुध्नियां उपमाअस्यविष्ठाः सतश्चयोनिमसंतश्चविवः॥ *(यजुर्वेद ४ कारड-२ प्रश्न-८ अनुवाक-४ मन्त्र)*

ॐभूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः। ब्रह्माणमावाहयामि। भो ब्रह्मन् इहागच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदो भव। **उत्तरे सोमं**—(उत्तर में सोम का आवाहन करें।) आप्यायस्व गोतमः सोमोगायत्री सोमावाहने विनियोगः।

ॐ आप्यायस्व समेतुते विश्वतःसोमवृष्णयं। भवावाजस्यसङ्गथे॥ *(ऋग्वेद १.९१.१६)*

ॐभूर्भुवः स्वः सोमय नमः। सोमं आवाहयामि। भो सोम इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदो भव। **ईशान्यं ईशानं**—(ईशान्य दिशा में ईशन का आवाहन करें।) अभित्वा शुनः शेप ईशानो गायत्री ईशानावाहने विनियोगः।

ॐ अभित्वा देव सवितरीशानं वार्याणां। सदावन्भागमीमहे॥ *(ऋग्वेद १.२४.३)*

ॐभूर्भुवः स्वः ईशानाय नमः। ईशानमावाहयामि। भो ईशान इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूजा गृहाण वरदो भव। **पूर्वे इन्द्रं**—(पूर्व में इन्द्र का आवाहन करें।) इन्द्र वो मधुच्छन्दा इन्द्रो गायत्री इन्द्रावाहने विनियोगः।

ॐ इन्द्रं वो विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्यः। अस्माकमस्तु केवलः॥ *(ऋग्वेद १.७.१०)*

ॐभूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयामि। भो इन्द्र इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहाण। वरदो भव॥ **आग्नेयामग्निं**—(आग्ने दिशा में अग्नि का आवाहन करें।) अग्निं दूतं मेधातिथिरग्निर्गायत्री अग्न्यावाहने विनियोगः।

ॐ अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्व वेदसम्। अस्य य ज्ञस्य सुक्रतुं॥ *(ऋग्वेद १.१२.१)*

ॐभूर्भुवः स्वः। अग्नेय नमः। अग्निमावाहयामि। भो अग्ने इहा गच्छ इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरणो भव। **दक्षिणे यमं**—(दक्षिण दिशा में यम का आवाहन

करें।) यमाय सोमं यमोयमोनुष्टुप् यमावाहने विनियोगः।

ॐ यमाय सोमं सुनुत यमाय जुहुता हविः। यमंह यज्ञो गच्छत्यग्नि दूतो अरंकृतः॥ *(ऋग्वेद १०.१४.१३)*

ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय नमः। यममावाहयामि। भो यम इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदो भव। **नैऋत्यां निऋतिं**—(नैऋत्य दिशा में निऋति को।) मोषुणः करवो निऋतिर्गायत्री निऋत्या वाहने विनियोगः॥

ॐ मोषुणः परापरा निर्ऋतिर्दुर्हणावधीत्। पदीष्टतृष्णयासह॥ *(ऋग्वेद १.३८.६)*

ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋतये नमः। निर्ऋतिमावाहयामि। भो निऋति इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूहां गृहाण। वरदो भव। **पश्चिमे वरुणं**—(पश्चिम दिशा में वरुण का आवाहन करें।) तत्वायामि शुनःशेपो वरुणस्त्रिष्टुप् वरुणावाहने विनियोगः।

ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेळमानो वरुणेह बोध्युरुशं समान आयुः प्रमोषीः॥ *(ऋग्वेद १.२४.११)*

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः। वरुणमावाहयामि। भो वरुण इहागच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदो भव। **वायव्यां वायुं**—(वायव्य दिशा में वायु का आवाहन करें।) वायोशतं वामदेवो वायुरनुष्टुप् वाय्वावाहने विनियोगः।

ॐ वायोशतं हरीणां युवस्व पोष्याणां। उतवांते सहस्त्रिणो रथआयांतुपाजसा। *(ऋग्वेद ४.४८.५)*

ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः। वायुमावाहयामि। भो वायो इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूहां गृहाण। वरदो भव। **वायुसोममध्ये अष्टवसून्**—वायु एवं सोम के बीच में अष्ठ वसुओं को (वायव्य एवं उत्तर के बीच में) ज्मया अत्र वसिष्ठो वसवस्त्रिष्टुप् व स्वावाहने विनियोगः।

ॐ ज्मया अत्र वसवो रन्तदेवाउरावन्तरिक्षे मर्जयन्त शुभ्राः।
आर्वाक्पथ उरुज्रयः कृणुध्वं श्रोतादूतस्यंजग्मुषोंनो अस्य॥ *(ऋग्वेद ७.३९.३)*

ॐ भूर्भुवः स्वः अष्टवसुभ्यो नमः। अष्टवसून् आवाहयामि। भो अष्टवसवः इहा गच्छ। इह तिष्ठतः। पूजां गृहाण। वरदो भवत। **सोमेशानयोर्मध्ये**

एकादशमरुद्रान्—(सोमन एवं ईशान के बीच में एकादश रुद्रों का आवाहन करें।) (उत्तर एवं ईशान के बीच में) आरुद्रा सः श्यावाश्व एकादश रुद्रो जगती। एकादशरुद्रावाहने विनियोगः।

ॐ आरुद्रासइन्द्रवन्तः सजोषसो हिरण्यरथाः सुवितायगंतन।
इयं वो अस्मत्प्रतिहर्यतेमतितृष्णाजेन दिवउत्साउदन्यवे। *(ऋग्वेद ५.५७.१)*

ॐभूर्भुवः स्वः एकादशरुद्रेभ्यो नमः। एकादश रुद्रानावाहयामि। भो एकादशरुद्राः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृषीत। वरदा भवत। **ईशानेन्द्रयोर्मध्ये द्वादशादित्यान्**—(ईशान्य एवं पूर्व के बीच में द्वादशादित्यों का आवाहन करें।) त्यांनुमत्स्योमान्योवा द्वादशादित्यागायत्री द्वादशादित्या-वाहने विनियोगः।

ॐ त्यांनुक्षत्रियाँ अव आदित्यान्यांचिषामहे। सुमृळीकाँअभिष्टये॥ *(यजुर्वेद-२ काण्ड-१ प्रश्न-११ अनुवाक-१८ मन्त्र)*

ॐभूर्भुवः स्वः द्वादशादित्येभ्यो नमः। द्वादशादित्यानावाहयामि। भो द्वादशादित्याः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृह्णीत। वरदो भवत। **इन्द्राग्निमध्ये अश्विनौ**—(पूर्वा एवं आग्नेय के बीच में अश्विनी देवताओं को आवाहन करें।) अश्विनावर्तिर्गोतमोश्विनावुष्णिाक् अश्व्यावाहने विनियोगः।

ॐ अश्विनावर्तिरस्मदागोमद्दस्राहिरण्यवत्। अर्वाग्रथंसमनसानियच्छतं॥ *(ऋग्वेद १.९२.१६)*

ॐभूर्भुवः स्वः अश्विभ्यां नमः। अश्विनौ आवाहयामि। भो अश्विनौ इहा गच्छतं। इह तिष्ठतं पूजां गृषीतं। वरदौ भवतं। **अग्नियम मध्ये विश्वेदेवान् सपैतृकान्**—(आग्नेय एवं दक्षिण के बीच में पितृसाहित विश्वेदेवों का आवाहन करें।) ओमासोमधुच्छंदाविश्वेदेवा गायत्री। विश्वेदेवावाहने विनियोगः।

ॐ ओमासश्चर्षणीधृतोविश्वेदेवा स आगत। दाश्वांसोदाशुषः सुतं॥ *(ऋग्वेद १.३.७)*

ॐभूर्भुवः स्वः विश्वेभ्योदेवेभ्यो नमः विश्वान् देवान् आवाहयामि। भो विश्वेदेवाः इहा गच्छत। इह तिष्ठंत पूजां गृह्णीत। वरदा भवत। **यम निर्ऋतिमध्ये सप्तयक्षान्**—(दक्षिण एवं नैऋत्य के बीच में सप्त यक्षों का आवाहन करें।) अभित्यं वामदेवः सप्तयक्षा अष्टी। सप्तयक्षावहने विनियोगः।

ॐ अभित्यं देवं सवितारमोण्योः कविक्रतुर्चामि सत्यसवसं रत्नधामभिप्रियंमतिमूर्ध्वा
यस्यामतिर्भा अदिद्युतत्सवीमनिहिरण्यपाणिरमिमीत सुक्रतुः कृपासुवः॥ *(यजुर्वेद-१ काण्ड-२ प्रश्न-६ अनुवाक)*

ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तयक्षेभ्यो नमः सप्तयक्षान् आवाहयामि। भो सप्तयक्षाः इहा गच्छत। इह तिष्ठत पूजां गृह्णीत। वरदा भवत। **निर्ऋति वरुण मध्ये भूतनागान्**—(नैर्ऋत्य एवं पश्चिम के बीच में भुतगण एवं नागों का आवाहन करें।) आयङ्गो सार्पराज्ञी सर्पा गायत्री। सर्पावाहने विनियोगः।

आयं गौः पृश्निरक्रमीद संदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः॥ (ऋग्वेद १०.१८९.१)

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्पेभ्यो नमः। सर्पान् आवाहयामि। भो सर्पाः इहागच्छत। इह तिष्ठत पूजां गृह्णीत। वरदा भवत। **वरुणवायुमध्ये गंधर्वाप्सरसः**—(पश्चिम एवं वायव्य के बीच में गन्धर्व एवं अप्सराओं का आवाहन करें।) अप्सरसामृष्यशृङ्गोगंधर्वाप्सरसोनुष्टुप्। गन्धर्व अप्सरावाहने विनियोगः।

ॐ अप्सरसां गन्धर्वाणां मृगाणां चरणेचरन्। केशीकेतस्य विद्वान्त्सखास्वादुर्मदिन्तमः॥ (ऋग्वेद १.१६३.६)

ॐ भूर्भुवः स्वः गन्धर्वाप्सरोभ्यो नमः। गन्धर्वाप्सरस आवाहयामि। भो गन्धवाप्सरसः इहा गच्छत। इह तिष्ठत पूजां गृह्णीत। वरदा भवत।

ब्रह्म सोममध्ये स्कन्दं नन्दीश्वरं शूलं महाकालं च

(मध्ये में स्थित ब्रह्मा एवं सोम (उत्तर) के मध्य में स्कन्द नन्दीश्वर शूल एवं महाकाल का आवाहन करें।) यदक्रंदो दीर्घतमास्कंदस्त्रिष्टुप्। स्कंदावाहने विनियोगः।

ॐ यदक्रंदः प्रथमं जायमान उद्यन्त्संमुद्रादुतवा पुरीषात्।
श्येनस्यपक्षा हरिणस्यं बाहू उपस्तुत्यं महिजाततें अर्वन्॥ (ऋग्वेद १.१६३.१)

ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दाय नमः। स्कन्दमावाहयामि। भो स्कन्द इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहाण। वरदो भव। ऋषभमृषभो नन्दीश्वरोनुष्टुप्। **नन्दीश्वरावाहने विनियोगः।**

ॐ ऋषभं मांसमानानां सपत्नानां विषासहिं। हंतारं शत्रूणां कृधि विराजं गोपतिं गवां॥ (ऋग्वेद १०.१६६.१)

ॐ भूर्भुवः स्वः नन्दीश्वराय नमः नन्दीश्वरं आवाहयामि। भो नंदीश्वर इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहाण। वरदो भव। कद्रुद्राय घौरः कण्वः शूलो गायत्री शूलावाहने विनियोगः।

ॐ कद्रुद्राय प्रचेतसेमीह्ळुष्टमायतव्यंसे। वोचेमशतमंहृदे॥ (ऋग्वेद १.४३.१)

ॐ भूर्भुवः स्वः शूलायनमः शूलमावाहयामि। भो शूल इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहाण। वरदो भव। कुमारं माता कुमारी महाकालस्त्रिष्टुप्। **महाकालावाहने**

विनियोगः।

ॐ कुमारं मातायुवतिः समुब्धङ्गुहांबिभर्ति न ददातिपित्रे।
अनीकमस्य नमिनज्जनासः पुरः पश्यंति निहितमरतौ॥ *(ऋग्वेद ५.२.१)*

ॐ भूर्भुवः स्वः महाकालाय नमः। महाकालमावाहयामि। भो महाकाल इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूहां गृहाण। वरदो भव। **ब्रह्मेशानमध्ये दक्षं**—(बीच में विद्यमान ब्रह्मा एवं ईशान्य दिशा के बीच में दक्ष का आवाहन करें।) अदतिर्बृहस्पतिर्दक्षोनुष्टुप्। दक्षावाहने विनियोगः।

ॐ अदितिर्ह्यजनिष्टदक्षयादुहितातव। तां देवा अन्वजायन्त भद्रा अमृतबंधवः॥ *(ऋग्वेद १०.७२.५)*

ॐ भूर्भुवः स्वः दक्षाय नमः। दक्षमावाहयामि। भो दक्ष इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहाण। वरदो भव। ब्रह्मेन्द्रमध्ये दुर्गां विष्णुं च (ब्रह्मा एवं इन्द्र के बीच में अर्थात् बीच में स्थित ब्रह्मा एवं पूर्व के बीच में दुर्गा एवं विष्णु का आवाहन करें।) तामग्निवर्णां सौभरिदुर्गात्रिष्टुप्। दुर्गावाहने विनियोगः।

ॐ तामग्निवर्णां तपसाज्वलंतीं वैरोचनीं कर्मफलेषुजुष्टां।
दुर्गां देवीं शरणामहंप्रपद्ये सुतरसितरसे नमः॥ *(यजुर्वेद-दुर्गासूक्त)*

ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गायै नमः। दुर्गां आवाहयामि। भो दुर्गे इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदा भव। इदं विष्णुर्मेधातिथिर्विष्णुगायत्री। विष्णवावाहने विनियोगः।

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदं। समूहमस्य पांसुरे॥ *(ऋग्वेद १.२२.१७)*

ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवेनमः। विष्णुं आवाहयामि। भो विष्णो इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूहां गृहाण। वरदो भव। ग्रह्माग्नि मध्ये स्वधां (बीच में स्थित ब्रह्मा एवं आग्नेय दिशा के बीच में स्वधा को) उदीरतां शंखः स्वधा त्रिष्टुप्। स्वधावाहने विनियोगः।

ॐ उदीरता मवरउत्परासउन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः। असुंय ईयुरवृकाऽऋतज्ञास्तेनोवंतु पितरो हवेषु॥
(ऋग्वेद १०.१५.१)

ॐ भूर्भुवः वः स्वधायै नमः। स्वधामावाहयामि। भो स्वधे इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहाण। वरदा भव। **ब्रह्म यममध्ये मृत्युरोगान्**—(बीच में स्थित ब्रह्मा

एवं दक्षिण दिशा के बीच में मृत्यु एवं रोगों का आवाहन करें।) परं मृत्यो संकुसुकोमृत्युरोगास्त्रिष्टुप्। मृत्युरोगावाहने विनियोगः।

ॐ परं मृत्यो अनुपरेहिपंथांयस्तेस्व इतरोदेवयानात्। चक्षुष्मते शृणवतेते ब्रवीमिमानः प्रजारीरिषोमोत वीरान्॥

(ऋग्वेद १०.१८.१)

ॐभूर्भुवः स्वः मृत्युरोगेभ्यो नमः। मृत्यरोगान् आवाहयामि। भो मृत्युरोगाः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृषीत। वरदा भवत। ब्रह्म निर्ऋतिमध्ये गणपतिं (बीच में स्थित ब्रह्मा एवं नैऋत्य दिशा के बीच में गणपति का आवाहन करें।) गणानान्त्वा शौनकोगृत्समदो गणपतिर्जगती। गणपत्या वाहने विनियोगः।

ॐ गणानांत्वागणपंतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमं।
ज्येष्ठराजंब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आनः शृण्वन्नूतिभिः सीदुसादनं॥ *(ऋग्वेद २.२३.१)*

ॐभूर्भुवः स्वः गणपतये नमः। गणपतिमावाहयामि। भो गणपति इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदो भव। **ब्रह्मवरुणमध्ये अपः**—(बीच में स्थित ब्रह्मा एवं पश्चिम दिशा के बीच में जल का आवाहन करें।) शंनोदेवीः सिंधुद्वीप आपो गायत्री। अप् आवाहने विनियोगः।

ॐ शंनोदेवीरभिष्टय आपो भवंतु पीतये। शंयोरभिस्त्रवंतु नः॥ *(ऋग्वेद १०.९.४)*

ॐभूर्भुवः स्वः अद्भ्यो नमः। अपः आवाहयामि। भो आपः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृह्णीत। वरदा भवत। **ब्रह्मवायुमध्ये मरुतः**—(बीच में स्थित ब्रह्मा एवं वायव्य दिशा के बीच में मरुत् का आवाहन करें।) मरुतोयस्यगोतमो मरुतो गायत्री। मरुदावाहने विनियोगः

ॐ मरुतोयस्य हि क्षयेपाथा दिवोविमहसः। स सुगोपातमोजनः *(ऋग्वेद १.८६.१)*

ॐभूर्भुवः स्वः मरुद्भ्यो नमः। मरुतः आवाहयामि। भो मरुतः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृहणीत। वरदा भवत। ब्रह्मणः पादमूले कर्णिकाधः पृथिवीं (बीच में स्थित ब्रह्मा जी के नीचे पादमूल में पृथिवी का आवाहन करें।) स्योना पृथिवी मेधातिथिर्भूमिर्गायत्री। भूम्यावाहने विनियोगः।

ॐ स्योना पृथिवि भवानृक्षरानिवेशनी। यच्छानः शर्म सप्रथः॥ *(ऋग्वेद १.२२.१५)*

ॐभूर्भुवः स्वः भूम्यै नमः। भूमिं आवाहयामि। भो भूमे इहा गच्छा। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदा भव। **तत्रैव गङ्गादिसर्वनद्यः**—(उसी स्थान पर अर्थात

पृथिवी पर ही गङ्गादि सभी नदियों का आवाहन करें।) इमं मे गङ्गे सिंधुक्षित्प्रैयमेधानद्यो जगती। गङ्गादिनद्यावाहने विनियोगः।

ॐ इमं मे गङ्गेयमुनेसरस्वतिशुतुद्रिस्तोमं सचतापरुष्णया। असिक्न्यामं रुद्वृधेवितस्तया जींकीयेशृणुह्या सुषोमंया॥

(ऋग्वेद १०.७५.५)

ॐभूर्भुवः स्वः गङ्गादि नदीभ्यो नमः। गङ्गादि नदीः आवाहयामि। भो गङ्गादिनद्यः इहागच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृहणीतां। वरदा भवत। तत्रैव सप्तसागराः। (वहीं पर सात सागरों का आवाहन करें।) धाम्नो धाम्नो वामदेवः सप्तसागरा अष्टी। सप्त सागरावाहने विनियोगः।

ॐ धाम्नों धाम्नो राजन्नितो वंरुणानोमुञ्च। यदापो अघ्न्या इति वरुणेतिशपांमहेततों वरुणांनोमुञ्च।
मयिवापोमोषंधीहिं सीरतों विश्वव्यंचा भूस्त्वेतों वरुणांनो मुञ्च॥ (यजुर्वेद-१ काण्ड-३ प्रश्न-११ अनुवाक-१५ मन्त्र)

ॐभूर्भुवः स्वः सप्तसागरेभ्यो नमः। सप्तसागरान् आवाहयामि। भो सप्तसागराः इहागच्छत। इह तिष्ठतः। पूहां गृहणीत। वरदा भवत। तदुपरि मेरवे नमः। मेरुं आवाहयामि। (उसके ऊपर मेरु पर्वत का आवाहन करें।) (भूमि पर) सोमसमीपे गदायै नमः। गदां आवाहयामि। (सोम के पास (उत्तर) गदा का आवाहन करें।) ईशान समीपेत्रिशूलाय नमः। त्रिशूलं आवाहयामि।। (ईशान के पास ईशान में त्रिशूल का आवाहन करें।) इन्द्रसमीपे वज्राय नमः। वज्रं आवाहयामि। (इन्द्र के पास पूर्व में वज्र का आवाहन करें।) अग्नि समीपे शक्तये नमः। शक्तिं आवाहयामि। (अग्नि के पास आग्नेय में शक्ति का आवाहन करें।) यम समीपे दण्डाय नमः। दण्ड आवाहयामि। (यम के पास दक्षिण में दण्ड का आवाहन करें।) निर्ऋति समीपे खड्गय नमः। खड्गमावाहयामि। (निर्ऋति के पास नैऋत्य के खड्ग का आवाहन करें।) वरुण समीपे पाशाय नमः। पाशं आवाहयामि। (वरुण के पास पश्चिम में पाश का आवाहन करें।) वायु समीपे अंकुशाय नमः। अंकुशं आवाहयामि। (वायु के पास वायव्य दिशा में अंकुश का आवाहन करें।)

तद्बाहये उत्तरादि क्रमेण (मण्डल के बाहर) गौतमाय नमः। गौतमं आवाहयामि। (उत्तर में गौतम जी का आवाहन करें।) भारद्वाजाय नमः। भरद्वाजं आवाहयामि। (ईशान में भरद्वाज जी का आवाहन करें।) विश्वामित्राय नमः। विश्वामित्रं आवाहयामि। (पूर्व में विश्वामित्र जी का आवाहन करें।) कश्यपाय नमः। कश्यपं आवाहयामि। (आग्नेय में अश्यप जी का आवाहन करें।) जमदग्नये नमः। जमदग्निं आवाहयामि। (दक्षिण में जमदग्नि जी का आवाहन करें।) वसिष्ठाय नमः। वसिष्ठं आवाहयामि। (नैर्ऋत्य में वसिष्ठ जी का आवाहन करें।) अत्रये नमः। अत्रिं आवाहयामि। (पश्चिम में अत्रि जी का आवाहन

करें।) अरुंधत्यै नमः। अरुंधतीं आवाहयामि। (वायव्ये में अरुंधति जी का आवाहन करें।) ततः पूर्वादि क्रमेण मातृः। (पूर्वादि क्रम से मण्डल के बाहर मातृगणों का आवाहन करें।) ऐंद्र्यै नमः। ऐन्द्रीं आवाहयामि। (पूर्व में ऐन्द्री का आवाहन करें।) कौमार्यै नमः। कौमारीं आवाहयामि। (आग्नेय में कौमारी का आवाहन करें।) ब्राह्यै नमः। ब्राह्मीं आवाहयामि। (दक्षिण में ब्राह्मी का आवाहन करें।) वाराह्यै नमः। वाराहीं आवाहयामि। (नैर्ऋत्य में वाराही का आवाहन करें।) चामुण्डायै नमः। चामुण्डां आवाहयामि। (पश्चिम में चामुण्डा का आवाहन करें।) वैष्णव्यै नमः वैष्णावीं आवाहयामि। (वायव्य में वैष्णावी का आवाहन करें।) वैनायक्यै नमः वैनायकीं आवाहयामि। (ईशान्य में वैनायकी का आवाहन करें।) इति सर्वतो भद्र देवताः। (यहाँ पर सर्वतोभद्रमण्डल में विद्यमान सभी देवताओं का आवाहन संपन्न हुआ।)

ॐ तदस्तु मित्रावरुणातदग्नेशंयोरस्मभ्यमिदमस्तु शस्तं। अशीमहिं गाधमुतप्रतिष्ठां नमो दिवे बृहते सादनाय॥ *(ऋग्वेद ५.४७.७)*

गृहावै प्रतिष्ठासूक्तं तत् प्रतिष्ठिततमया वाचाशंस्तव्यं तस्माद्यद्यपिदूर इव पशूँलभते गृहानेवै नानाजिगमिषति गृहाहिपशूनां प्रतिष्ठा प्रतिष्ठा॥

ॐ नर्यप्रजां मे गोपाय॥ अमृतत्वाय जीव से॥ जातां जनिष्यमाणां च॥ अमृते सत्वे प्रतिष्ठितां॥ *(यजुर्वेद-ब्राह्मण)*

एताः ब्रह्मादि देवताः सुप्रतिष्ठिताः सन्तु। (इन मन्त्रों को कहकर आवाहित ब्रह्मादि देवताओं का प्रतिष्ठा करें।)

ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेन आवः। सुबुध्नियां उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्चविवः॥ *(यजुर्वेद-४ काण्ड-२ प्रश्न-८ अनुवाक-४ मन्त्र)*

अनेन मंत्रेण पूजयेत्। (इस मन्त्र से पूजन करें।) ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। ध्यायामि। ध्यानं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। आवाहयामि। आसनं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। स्वागतं समर्पयामी। पादारविन्दयोःपाद्यं पाद्यं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। मुखे आचमनीयं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवः तान ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे॥
यो वः शिवतमोरसस्तस्य भाजयते हनः। उशतीरिव मातरः॥

तस्मा अरंगमामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपोजनयथा च नः॥ (ऋग्वेद १०.९.१)
स्नानं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। स्नानाङ्ग आचमनं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ युवं वस्त्राणि पीवसा वसाथे युवोरच्छिद्रामन्तवोहसर्गाः। अवा तिरतमनृतानि विश्व ऋतेन मित्रा वरुणा यचेथे॥ (ऋग्वेद १.१५२.१)
वस्त्रयुग्मं समर्पयामि। वस्त्रान्ते आचमनं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुंच शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥ (ऋग्वेद)
यज्ञोपवीतं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ हिरण्यरूपः स हिरण्य संदृगपान्नपात् सेदु हिरण्यवर्णाः। हिरण्ययात् परियोनेर्निषद्याहिरण्य दाददुत्यन्नमस्मै॥ (ऋग्वेद २.३५.१०)
आभरणं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ गन्धं द्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीं। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)
गन्धं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत। अर्चन्तु पुत्रका उतपुरन्न धृष्णवर्चत॥ (ऋग्वेद ८.६९.८)
अक्षतान् समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ आयने ते परायणे दूर्वारोहन्तु पुष्पिणीः। ह्रदाश्च पुण्डरीकाणि समुद्रस्य गृहा इमे। पुष्पाणि समर्पयामि। (ऋग्वेद १०.१४२.८)

नाम पूजां करिष्ये—ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ सोमाय नमः। ॐ ईशानाय नमः। ॐ इन्द्राय नमः। ॐ अग्नेय नमः। ॐ यमाय नमः। ॐ निर्ऋतये नमः। ॐ वरुणाय नमः। ॐ वायवे नमः। ॐ अष्टवसुभ्यो नमः। ॐ एकादश रुद्रेभ्यो नमः। ॐ द्वादशादित्येभ्यो नमः। ॐ अश्विभ्यां नमः। ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। ॐ सप्तयक्षेभ्यो नमः। ॐ भूतनागेभ्यो नमः। ॐ गंधर्वाप्सरोभ्यो नमः। ॐ स्कन्दाय नमः। ॐ नन्दीश्वराय नमः। ॐ शूलाय नमः। ॐ महाकालाय नमः। ॐ दुर्गायै नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ स्वधायै नमः। ॐ मृत्युरोगेभ्यो नमः। ॐ गणपतये नमः। ॐ अद्भ्यो नमः। ॐ मरुद्भ्यो नमः। ॐ पृथिव्यै नमः। ॐ गङ्गादि सर्वनदीभ्यो नमः। ॐ सप्त सागरेभ्यो नमः। ॐ मेरवे नमः। ॐ गदायै नमः। ॐ त्रिशूलाय नमः। ॐ वज्राय नमः। ॐ शक्तये नमः। ॐ दण्डाय नमः। ॐ खड्गाय नमः। ॐ पाशाय नमः।

ॐ अंकुशाय नमः। ॐ गौतमाय नमः। ॐ भरद्वाजाय नमः। ॐ विश्वामित्राय नमः। ॐ कश्यपाय नमः। ॐ जमदग्नये नमः। ॐ वसिष्ठाय नमः। ॐ अत्रये नमः। ॐ अरुन्धत्यै नमः। ॐ ऐन्द्र्यै नमः। ॐ कौमार्यै नमः। ॐ ब्राह्मै नमः। ॐ वाराह्यै नमः। ॐ चामुण्डायै नमः। ॐ वैष्णव्यै नमः। ॐ माहेश्वर्यै नमः। ॐ वैनायक्यै नमः। (देवताओं के ५७ समूह।) नाम पूजां समर्पयामि। (ये सभी देवता सर्वतो भद्र मण्डल से आवाहित हैं।) ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

वनस्पति रसोत्पन्नो गन्धाढयः सुमनोहरः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम्॥ धूपं आघ्रापयामि। *(प्रयोगरत्नाकर)*

ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

आज्यं त्रिवर्ति संयुक्तं वह्निना योजितं मया। गृहाण मङ्गलं दीपं त्रैलोक्य तिमिरापह॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

दीपं दर्शयामि धूपदीपानन्तरं आचमनं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। (नैवेद्य को गायत्री मन्त्र से प्रोक्षण करें नैवेद्य मण्डल पर रखें। **सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि।** इस मन्त्र से परिषिञ्चन करें।) **अमृतोपस्तरणमसि** कहकर जल छोड़ें। ॐ प्राणाय स्वाहा (अङ्गुष्ठ एवं कनिष्ठिका मिलाकर) ॐ अपानाय स्वाहा (अङ्गुष्ठ एवं तर्जनी मिलाकर) ॐ व्यानाय स्वाहा (अङ्गुष्ठ एवं मध्यमा मिलाकर) ॐ उदानाय स्वाहा (अङ्गुष्ठ एवं अनामिका मिलाकर) ॐ समानाय स्वाहा (सभी अङ्गुलियों को मिलाकर) ॐ देवेभ्यः स्वाहा नैवेद्यं निवेदयामि। **अमृतापिधानमसि** कहकर जल छोड़ें। नैवेद्यं विसर्जयामि। हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि। गण्डूषं समर्पयामि। पुनराचमनं समर्पयामि। (कहकर जल छोड़ें) ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

पूगीफल समायुक्तं नागवल्ल्यादलैर्युतम्। चूर्ण कर्पूर संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यतां। क्रमुक ताम्बूलं समर्पयामि। *(देवपूजा)*

ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत। अर्चन्तु पुत्रका उत पुरं न धृष्ण्वर्चत। *(ऋग्वेद ८.६९.८)*

ॐ ध्रुवा द्यौर्ध्रुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वता इमे। ध्रुवं विश्वमिदं जगद् ध्रुवो राजा विशामयम्॥

ॐ ध्रुवं ते राजा वरुणो ध्रुवं देवो बृहस्पतिः। ध्रुवं त इन्द्रश्चाग्निश्च राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम्॥ *(ऋग्वेद १०.१७३.५)*

मङ्गलनीराजनं समर्पयामि। नीराजनान्ते परिमल पत्र पुष्पाणि समर्पयामि। मन्त्रपुष्पं समर्पयामि। प्रदक्षिणां समर्पयामि। नमस्कारान् समर्पयामि।

देवाराधनमण्डलं सुरगणावासं सदामङ्गलं। कुर्तुः दर्शनमात्रतः शुभकरं तत् पञ्च भूतात्मकं॥
अर्णाद्यक्षरसंयुतं भयहरं तद् याग पुण्यार्जितं। नानामन्त्रमयं समस्त फलदं ध्यायेन्मनोनन्दनं॥
अरिष्टानि बहून्यस्मिन् दुष्कृतानि शतानि च। मण्डलानि निरीक्षन्ते यथा युद्धेषु कातराः॥ *(अनुष्ठान पद्धति)*

(युद्ध भूमि में कायर जैसे देखते ही भीत हो जाते हैं, वैसे ही मण्डल को देखते ही सभी अरिष्ट दूर हो जाते हैं।) **अनया पूजया ब्रह्मादि मण्डल देवताः प्रीयन्तां** यहाँ पर सर्वतोभद्र मण्डल पूजन संपन्न हुआ।

द्वितीय दिन द्वितीय प्रहर

प्रधानदेवता विष्णु पूजनम्-

देह शुद्धि—येभ्यो मातेत्यस्य गयःप्लात ऋषिः। विश्वेदेवा देवताः। जगतीछन्दः। एवापित्रेत्यस्य वामदेव ऋषिः। बृहस्पतिर्देवता। त्रिष्टुप् छन्दः। मनुष्य गन्ध निवारणे विनियोगः।

ॐ येभ्यो॑ मा॒ताम॒धु॑म॒त् पिन्व॑ते॒ पयः॑ पी॒यूषं॒ द्यौरदि॑ति॒रद्रि॑बर्हाः।
उ॒क्थशुं॑ष्मान् वृषभ॒रान्त्स्वप्न॑स॒स्ताँ आदि॒त्याँ अनु॑मदास्व॒स्तये॑॥ *(ऋक्वेद १०.६३.३)*
ॐ ए॒वापि॒त्रे वि॒श्वदे॑वाय॒ वृष्णे॑ य॒ज्ञैर्वि॑धेम॒ नम॑सा ह॒विर्भिः।

बृहस्पते सुप्रजा वीरवन्तो वयं स्याम पतयो रयीणाम्॥ *(ऋक्वेद ४.५०.६)*

आचमन मन्त्र—ऋग्वेदाय स्वाहा। यजुर्वेदाय स्वाहा। सामवेदाय स्वाहा। (स्वाहा मन्त्र से जल पीना चाहिये।) अथर्ववेदाय नमः। इतिहास पुराणेभ्यो नमः। अग्नये नमः। वायवे नमः। प्राणाय नमः। सूर्याय नमः। चन्द्राय नमः। दिग्भ्यो नमः। इन्द्राय नमः। पृथिव्यै नमः। अन्तरिक्षाय नमः। दिवे नमः। ब्रह्मणे नमः। विष्णवे नमः। सदाशिवाय नमः। द्विराचम्य .. इस प्रक्रिया को दुबारा करना चाहिये।

पवित्र धारणम्—पवित्रन्त इत्यनयोः आङ्गीरसः पवित्र ऋषिः। पवमानः सोमो देवता। जगतीछन्दः। पवित्राभिमंत्रणे, धारणे विनियोगः।

ॐ पवित्रन्ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि विश्वतः।
अतप्ततनूर्न तदामो अश्नुतेशृता सइद्वहन्तस्तत् समाशत॥ *(ऋग्वेद ९.८३.१)*
ॐ तपोष्पवित्रं विततं दिवस्पदे शोचन्तो अस्य तन्तवो व्यस्थिरन्।
अवन्त्यस्य पवीतारं माशवो दिवस्पृष्ठमधितिष्ठन्ति चेतसा॥ *(ऋग्वेद ९.८३.२)*

ॐभूभुर्वः स्वः कहकर जल सिञ्चन करें॥ (इन मन्त्रों से पवित्र शुद्धिकर धारण करना चाहिये आसन के नीचे दो कुश डाल लेना चाहिये।)

प्राणायाम—प्रणवस्य परब्रह्म ऋषिः, दैवी गायत्री छन्दः, परमात्मा देवता प्राणायामे विनियोगः।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योतीरसोमृतं ब्रह्म भूर्भुवस्वरोम्। *(ऋग्वेद ३.६२.१०)*

आसन शुद्धि—**ॐ स्योना पृथिवि भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथः।'** *(१५ मन्त्र-२२ सूक्त-प्रथम मण्डल)* इस मन्त्र से जल प्रोक्षण करने से भूमि शुद्ध होती है।

शिखाबन्धनम्—

ऊर्ध्वकेशि विरूपाक्षि मांसशोणित भक्षणे। तिष्ठ देवि शिखाबन्धे चामुण्डे ह्यपराजिते॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

(इस मन्त्र से शिखाबन्धन करना चाहिये।)

महा संकल्प —.........

गुरू प्रार्थना —

नमो गुरुभ्यो गुरुपादुकाभ्यो नमः परेभ्यः परपादुकाभ्यः।
आचार्य सिद्धेश्वर पादुकाभ्यो नमोऽस्तु लक्ष्मीपति पादुकाभ्यः॥ *(शृङ्गेरी मठीय आचार्य प्रार्थनम्)*

श्री गुरु परमगुरु परमेष्ठी गुरु सद्गुरु पादुकाभ्यो नमो नमः। हम लोग ब्रह्मानन्दं गुरु तं नमामि। गुरु परम्परा को भी बोल सकते हैं। कर सकते हैं। हरौ रुष्टे गुरुस्त्राता गुरौ रुष्टे न कश्चन॥ ईश्वर के रुष्ट होने पर गुरुजी रक्षा करते हैं एवं गुरुजी के कुपित होने पर कोई भी रक्षक नहीं है।

भूतोच्चाटन मन्त्र—

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुविसंस्थिताः। ये भूता विघ्नकर्तारः ते गच्छन्तु शिवाज्ञया॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-आसन विधि प्रकरण)*
ॐ अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम्। सर्वेषामविरोधेन ब्रह्मकर्म समारभे॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-आसन विधि प्रकरण)*
ॐ तीक्ष्णादंष्ट्रमहाकाय कल्पान्ते दहनोपम। भैरवाय नमस्तुभ्यं अनुज्ञां दातुमर्हसि॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

इति भैरवं नमस्कृत्य। (इन मन्त्रों से भूतोच्चाटन कर भैरव जी से यज्ञ रक्षा की प्रार्थना करते हैं।)

गणपति प्रार्थना—गणानान्त्वा इति मन्त्रस्य गृत्समदऋषिः। गणपतिर्देवता। जगती छन्दः। गणपति प्रार्थने विनियोगः।

ॐ गणानांत्वा गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमं।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आनः शृण्वन्नूतिभिः सीदसादनम्॥ *(ऋग्वेद २.२३.१)*

(इन मन्त्रों से गणपति प्रार्थना कर पुष्पाक्षत छोड़ना चाहिये।)

जल कलश पूजनम्—कलश में पूर्ण जल भरकर रखना चाहिये। फिर उसमें गन्ध अक्षत पुष्प कलश के अन्दर डालना चाहिये एवं बाहर भी चारों ओर लगाना चाहिये। गायत्री मन्त्र से तीन बार कलश छूकर जप करना चाहिये।

ॐ कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रूद्रः समाश्रितः। मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥
कुक्षौ तु सागरास्सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदस्सामवेदोह्यथर्वणः॥
अङ्गैश्चसहितास्सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः। अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा॥
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः। सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानिजलदा नदाः॥
गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिंकुरु॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-देवपूजा प्रकरण)*

ॐ इमं मे गङ्गे यमुने सरस्वति शुतुद्रिस्तोमं सचता परुष्णया।
असिक्न्या मरुद्वृधे वितस्तयाऽऽर्जीकीये शृणुह्या सुषोमया॥

सितासिते सरिते यत्र संगथे तत्राप्लुतासो दिव मुत्पतन्ति।
येवै तन्वं विसृजन्ति धीरास्ते जनासो अमृतत्वं भजन्ते ॥ (ऋग्वेद १०.७५.७)
ॐ याः प्रवतो निवतं उद्वतं उदन्वती रनुदकाश्चयाः। ता अस्मभ्यं पयसा
पिन्वमानाः शिवा देवी रशिपदा भवन्तु सर्वा नद्यो अशिमिदा भवन्तु॥ (ऋग्वेद ७.५०.४)

(इन मन्त्रों को कलश छूकर पाठ करना चाहिये।)

सितमकरनिषण्णां शुभ्रवर्णां त्रिनेत्रां करधृत कलशोद्यत्पंकजाभीत्यभीष्टाम्।
विधि हरिहररूपां सेन्दुकोटीरचूडां भसितसितदुकूलां जाह्नवीं तां नमामि॥ (स्मृति संग्रह)

(इस मन्त्र से कलश में गङ्गाजी का ध्यान करना चाहिये।

आत्माराधनम्—हृदि स्थितं पंकजमष्टपत्रं सकेसरं कर्णिक मध्यनालं ।।
अङ्गुष्ठमात्रं मुनयो वदन्ति ध्यायेत् च विष्णुं पुरुषं पुराणम् ।।
हृदयकमलमध्ये सूर्यबिम्बासनस्थं सकलभुवनबीजं सृष्टिसंहारहेतुम् ।
निरतिशयसुखात्म ज्योतिषं हंसरूपं परमपुरुषमाद्यं चिन्तयेदात्ममूर्तिम् ।।
आराधयामि मणि सन्निभमात्मलिङ्गम् । मायापुरीरहृदय पंकज सन्निविष्टम् ।।
श्रद्धा नदी विमलचित्त जलाभिषेकैः । नित्यं समाधि कुसुमैर्न पुनर्भवाय ।।
देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो हंसः सदाशिवः । त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत् ।।
स्वामिन् सर्व जगन्नाथ यावत्पूजावसानकम् । तावत् त्वं प्रीति भावेन बिम्बेस्मिन् सन्निधिं कुरु ।। *(देवपूजा)*

ॐ आत्मने नमः। ॐ अन्तरात्मने नमः। ॐ परमात्मने नमः। ॐ ज्ञानात्मने नमः। आत्मपूजां समर्पयामि। इससे आत्मशुद्धि होती है। (इन मन्त्रों को कहकर अपने सिर पर अक्षत डाल लेवें।)

कलश स्थापन विधान—तत्र षोडश प्रस्थ परिमितान् शालीन् निक्षिप्य तदर्धं तण्डुलं तदर्धं तिलं तदर्धं सर्षपं इति वस्त्रान्तरितैः द्रव्यैः पीठं विरचय्य तस्मिन् कूर्च न्यस्य अन्यत्र उपकलशार्थं पीठान् विरचय्य तस्मिन् सौवर्णादि कुम्भान् अस्त्र मन्त्रेण जलैः क्षालयित्वा सूत्रवेष्टितान् आधोमुखान् न्यस्येत् ।

सर्वतोभद्रमण्डल के ऊपर एक वस्त्र बिछाना चाहिये। उस पर १६ सेर धान, पुनः उस पर वस्त्र डालें ८ सेर चावल, पुनः उस पर वस्त्र डाले। उस पर ४ से तिल, पुनः वस्त्र डालें। उस पर २ सेर सफेद सरसों (अभाव में काला सरसों) उस पर दो कुश रखें (कुर्च) सोना चान्दी कॉच ताम्र पात्र (कलश) रखें। **इसके ४ प्रकार हैं—**

१. सर्वतोभद्र मण्डल में देवताओं के ५७ आवाहन है। अतः ५७ कलश रख सकते हैं।

२. अष्टदिक्पालों के आठ एवं शेष के लिए एक प्रधान कलश-कुल ९
३. चार दिक्पालों के चार एवं शेष के लिए एक प्रधान कलश कलश कुल ५ कलश।
४. १ कलश (सभी देवताओं का एक ही पूजन।)

अस्त्र मन्त्रों से कलशो को धोना चाहिये। ॐह्रीं स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर घोर घोर तर तनूरूप चट चट प्रचट प्रचट कर कह वम वम बन्ध बन्ध घातय घातय हुं फट्॥ इस मन्त्र को कहते हुए कलशों को स्वच्छ करें। उसे सूत्रों से बॉधकर, प्रधान कलश को तीन सूत्र से शेष कलशों को एक सूत्र से पंजर बॉधना चाहिये। (पंजर का अर्थ धागों से कलश के चारों ओर लपेटने का विधान) फिर कलशो को उलटा करके रखना चाहिये। दक्षिणभागे पुष्पचन्दक्षतादीन् न्यस्य आग्नेय भागे दीपादिकं न्सस्य, वामभागे स्वस्तिके वस्त्र गालितं जलं संस्थाप्य गुरुः नववस्त्रं संवेष्ट्य आचम्य उपवीतवत् उत्तरीयं वस्त्रं धृत्वा देवं संवंद्य प्रधान द्वारे मण्टपं प्रविश्य कलश समीपे स्वासने उपविश्य पवित्रपाणिः गुरून् गणपतिं च संवंद्य अस्त्रेण करशोधनं कृत्वा ताळत्रयादिग्बन्धन आग्निप्राकारांश्च कुर्यात्।

दाहिने ओर फूल चन्दन अक्षतादिकों को रखकर, आग्नेय भाग में दीप रखें। बायें भाग में स्वस्तिक चिन्ह लिखकर उस पर धान डालकर उस पर शुद्ध पात्र रखें। पात्र का मुख वस्त्र से बन्द रखें। उसमें जल भरें। आचार्य नवीन वस्त्र को धारण करें। उत्तरीय को यज्ञोपवीत के समान पहनें (ब्रह्म वस्त्र) भगवान का स्मरण अपने आसन पर बैठें। आचमन करें। पवित्र धारण करें। गुरु गणेश को नमस्कार करें। पहले लिखित ''ॐह्ही स्फुर स्फुर-अस्त्र मन्त्र से हाथ धो लेवें। तीन बार ताल (हाथ) से हाथ मिलाने पर होन वाला)शब्द करें। फिर दिग्बन्ध अग्प्रिाकार को करें।

सूक्ष्म मध्य महाशब्दाः दक्षसव्योभ्योद्भवाः। बोधासेचनिकोद्दीप्ति करा वह्नेस्त्रितालकाः॥ *(अनुष्ठान पद्धति-टिप्पणी)*

तीन प्रकार के ताळ (ताली) शब्द पहले सूक्ष्म, फिर मध्यम, एवं फिर अधिक शब्द का होना चाहिये। सूक्ष्म ताल दाहिने हाथ नीचे रखें उस पर बायें हाथ से ताली बजायें। इससे दाहिने हाथ में अग्नि उत्पन्न हुआ। मध्यम ताल में बायें हथेली नीचे उस पर दाहिने हाथ से ताल करें। तब दाहिने हाथ की अग्नि बायें हाथ में रखकर उसमें घी की हवन की कल्पना करनी चाहिये। फिर महाताल से दोनों हाथ को मिलाने से अग्नि प्रज्वलन की कल्पना करनी चाहिये। यह अग्नि का त्रिताल कहलाता है।

इसके पश्चात् दश दिशाओं का दिग्बन्धन करें ताकि कोई असुर यज्ञ में बाधा न पहुंचा सके। जहाँ बैठे हैं हवीं पर अस्त्र मन्त्र को पढते हुए चिटकी

बजाकर दस दिशाओं का दिग्बन्धन करें। "ॐ ह्रीं स्फुर स्फुर मन्त्र को पढकर अन्त में **प्राचीं दिशं बध्नामि** कहकर चिटकी बजायें। **फिर ॐ ह्रीं स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर घोर घोर तरतनूरूप चट चट प्रचट प्रचट कह कह वम वम बन्ध बन्ध घातय घातय हुँ फट्**" आग्नेयीं दिशं बध्नामि कहकर चिटकी बजायें*(प्रपञ्चसार)*। **फिर** याम्यां दिशं बध्नामि। नैर्ऋतीं दिशं बध्नामि। वारुणीं दिशं बध्नामि। वायवीं दिशं बाध्नामि। साम्यं दिशं बध्नामि। ऐशानीं दिशं बध्नामि। ऊर्ध्वा दिशं बध्नामि। अधरां दिशं बध्नामि। प्रत्येक दिशा में इन मन्त्रों में पहले अस्त्र मन्त्र पढें एवं दिशं बध्नामि कहकर उस-उस दिशा में चिटकी बजायें। करयोः उद्दीप्त अग्निं दशदिक्षु विकिरेत्। हथ में उत्पन्न अग्नि को चारों ओर फेंकना चाहिय। (इसकी कल्पना करनी चाहिये) इससे यज्ञ एवं यज्ञशाला की रक्षा संपन्न हुआ।

अब अपने शरीर शुद्धि के लिए **नाडी शोधन करें।** इसके लिए द्वादशवारं प्रणवं संजप्य प्राणायामान् कृत्वा स्वस्य विराड्रूपं संकल्प्य अं इति त्रिवारुमुच्चार्य पिङ्गलया वायु विमुच्य षडवारेण पिङ्गलया प्रपूर्य द्वादशवारेण परिकुम्भ्य इडया तं वायुं विमुञ्चेत् पुनः उं इति त्रिवारमुच्चार्य इडया वायुं विमुच्य षड्वारेण वायुं इडया प्रपूर्य द्वादशवारेण इडां प्रकुम्भ्य तं वायुं पिङ्गलया मुञ्चेत्। पुनः तद् वायुं सुषुम्ना मुखे आकृष्य मं इति षड्वारं प्रजप्य अं उं इति षड्वारं प्रजाय पिङ्गलया इडया च प्रपूर्य पुनः सुषुम्नां आपूर्य द्वादशवारं प्रजप्य सुषुम्नां परिकुम्भ्य तद्वायुं व्यत्यस्य बहिस्त्यजेत्।

इति नाडी शुद्धि प्रकारः।

१२ बार ॐकार का जप करें। प्राणायाम (संमंत्रक) करें। यहाँ मन्त्र केवल ॐकार। अपने को विराट पुरुष की कल्पना करें। अं को तीन बार कहते हुए पिङ्गला से (नाक के दाहिने छिद्र) अन्दर के कश्मल पूरित वायु को बाहर छोडें। फिर पिङ्गला से (नाक के दाहिने छिद्र से) ६ बार अं कहते हुए वायु को अन्दर लेना चाहिये। १२ बार अं कहते हुए उस वायु का कुम्भक (स्तम्भन) करें। इडा से (बायें नाक के छिद्र से) बाहर छोडें। फिर उं का तीन बार कहते हुए इडा से (नाक के बायें छेद से) वायुं को छोडें। फिर ६ बार उं कहते हुए इडा से वायु को अन्दर लेना चाहिये। १२ बार उं कहते हुए उस वायु का कुम्भक (स्तम्भन) करें। उस वायु को पिङ्गल से (नाक के दाहिने छिद्र से)बाहर करें। फिर अं उं कहकर छः बार पिङ्गल एवं इडा दोनों नाक के छिद्रों से वायु को खीच, फिर उस वायु को ब्रह्मरन्ध्र के सुषुम्ना में खींचकर अर्थात् मस्तिष्क नाडि से वायु को भरें। १२ बार मं का जप करते हुए सुषुम्ना में कुम्भक (स्तम्भन करें) उस वायु को उलटी नाक से। दाहिने नाक से खीचे वायु को बाये छिद्र से एवं बायें छिद्र से खीचें वायु को दाहिने छिद्र से छोडें।

यहाँ पर नाडि शोधन संपन्न हुआ। इससे शरीर शुद्धि होती है। जब तक शरीर शुद्धि नहीं होती है तब तक शरीर में देवता नहीं आते हैं। कर्म सफल नहीं होता है। अतः नाडी शोधन आवश्यक हैं। अभ्यास से यह क्रिया बहुत सरल है। **प्रणवेन षोडशवारं प्राणायामं कृत्वा पिङ्गलया वायुं विमुच्य द्वात्रिंशद्वारं प्राणायामं कृत्वा इडया वायुं प्रपूर्य चतुःषष्टिवारेण सुषुम्ना नाड्यां कुम्भकं कुर्यात्॥**

इति रेचक पूरक कुम्भक प्रकारः

ॐकार से १६ बार कहते हुए पिङ्गल। (नाक से दाहिने छिद्र से) वायु को बाहर छोडे। ३२ बार ॐकार कहते हुए इडा से नाक के बायें छिद्र से ..वायु को अन्दर भर लेवें। ६४ बार ॐकार कहते हुए सुषुम्ना नाडि में (ब्रह्मरन्ध्र मस्तिष्क में) कुम्भक (स्तम्भन) करें। साधना करने से यह सम्भव है। **अनेन अत्यन्त दुरितनिवृत्तिः स्यात्।** इसके अत्यधिक पापों का निवारण होता है।

एवं रेचकादिना जीवपरमात्मनोः ऐक्यं मनसा ध्यात्वा पुनः ॐ ह्रीं हं सः इत्यनेन मूलाधारस्थं जीवं, सुषुम्ना मार्गेण द्वादशांतस्थ परमात्मनि संयोज्य लं इति पादाग्रं वं इति नाभिं रं इति हृदयं यं इति कण्ठं हं इति तालुदेशं संस्पृश्य क्रमेण पृथ्वी अप् तेज वायु आकाशानां मण्डलानि संकल्प्य ह्लां इति पञ्चविंशति संख्यं पञ्चप्राणायामान् कृत्वा ह्लां हुँ फट् इति पादागादि नाभ्यन्तं व्याप्य पृथिवीं अप्सु संहरामि। पुनः ह्वीं इति पञ्चविंशति संख्य चतुर्वारं प्राणायामान् कृत्वा ह्वीं हुं फट् इति नाभ्यादि हृदयान्तं व्याप्य अपः अग्नौ संहरामि। पुनः ह्रूं इति पञ्चविंशति संख्यं त्रिवारं प्राणायामान् कृत्वा ह्रूं हुं फट् इति हृदयादि कण्ठां व्याप्य अग्निं वायौ संहरामि। पुनः ह्यौं इति पञ्चविंशति संख्यं द्विवारं प्राणायामं कृत्वा ह्यौं हुं फट् इति कण्ठादि तात्वन्तं व्याप्य वायुं आकाशे संहरामि। पुनः हौं इति पञ्चविंशति संख्यं सकृत् प्राणायामं कृत्वा ह्यौं हुं फट् इति ताल्वादि द्वादशान्तं व्याप्य आकाशं परमात्मनि संहरामि। *(अनुष्ठान पद्धति)*

इति भूत संहारः

यह भूत संहार प्रक्रिया यह महत्व पूर्ण अङ्ग है। इसमें पञ्च महाभूतों का संहार कर उन्हें परमात्मा में लन करा देते हैं। तब शरीर में केवल परमात्मा का

शुद्ध रूप मात्र रहता है। कोई कश्मल नहीं। रेचक पूरक कुम्भकों से जीव एवं परमात्मा की एकता का चिन्तन करना चाहिये। फिर ॐ ह्रीं हं सः कहते हुए मूलाधार .. शरीर के नीचले हिस्से में विद्यमान जीव को सुषुम्ना मार्ग से ब्रह्मरन्ध्र में स्थित परमात्मा में मिलाना चाहिये। लं कहकर पैर के अग्र भाग को, वं कहकर नाभि को, रं कहकर हृदय को, यं कहकर कण्ठ को एवं हं कहकर तालु प्रदेश को स्पर्श करें। फिर मन में पृथ्वी, जल, तेज, वायु एवं आकाश मण्डलों का चिन्तन करें।

२५ बार ह्लां कहते हुए ५ प्राणायाम करते हुए ह्लां हुं फट् कहते हुए पैर से नाभि तक हाथ फिराते हुए वायु तत्व को नाभि में स्थित जल तत्व में मिलाने का संकल्प करना चाहिये। २५ बार ह्लीं करते हुए ४ प्राणायाम करते हुए ह्लीं हुं फट् कहते हुए नाभि से हृदय तक हाथ फिराते हुए जल तत्व को हृदय स्थित अग्नितत्व में मिलाने का संकल्प करना चाहिये। फिर २५ बार ह्लीं कहते हुए ३ प्राणायाम करते हुए ह्लूं हुं फट् कहते हुए हृदय से कण्ठ तक हाथ फिराते हुए अग्नितत्व को वायु तत्व में (कण्ठ में स्थित) मिलाने का संकल्प करना चाहिये। फिर २५ बार हौं कहते हुए दो प्राणायाम करते हुए हौं हुं फट् कहते हुए कण्ठ से तालु प्रदेश तक हाथ फिराते हुए वायु तत्व को तालु स्थित आकाश तत्व में मिलाने का संकल्प करना चाहिये। फिर २५ वा हौं कहते हुए एक प्राणायाम करते हुए हौं हुं फट् कहते हुए तालु प्रदेश से ब्रह्मरन्ध्र तक फिराते हुए आकाश तत्व को ब्रह्रन्ध्र स्थित परमात्म तत्व में लीन करना चाहिये। **अब मात्र निर्विकार परमात्मा शरीर में है।**

शोषण विधान—इस विधान से शरीर में विद्यमान सभी कल्मशों का शोषण होता है।

यं इति वायु बीजेन षोडशवारं प्राणायामं कृत्वा वायुं इडया विमुच्च इडामुखे नाभिपषे च षड् बिन्दु सहितं धम्रं वायुमण्डलं तस्मिन् धुम्रं यं बीजं च ध्यात्वा, तद् बीजेन द्वात्रिंशद्वारं प्राणायामं कृत्वा इडया तद् वायुमण्डलेन सह वायुमापूर्य मण्डल द्वयं एकीकृतं ध्यात्वा, चतुःषष्टि वारं प्राणायामं कृत्वा परिकुम्भ्य एकीकृत वायुमण्डलात् संजातेन वायुना देहं संशोषितं ध्यात्वा तद् वायुं पिङ्गलया मुञ्चेत। *(अनुष्ठान पद्धति)*

इति शोषणं

यं नामक वायुतत्व के बीच मन्त्र को १६ बार कहते हुए इडा (नाक के बायें छिद्र) से साँस छोड़ते हुए प्राणायाम करें। बायें नाक के छेद में एवं नाभि

के नंध्र में छः बिन्दु युक्त वायुमराडल को एवं उसमें धूम्र वर्गा के यं बीच का ध्यान करें उस बीजमन्त्र को ३२ बार कहते हुए प्राणायाम करें। इडा (बायें नाक के छेद) से वायु को भरकर दोनों मराडलों का एकीकृत मानकर इडा मराडल यानि बायें नाक के छिद्र में स्थित मराडल एवं नाभिप) यानि नाभि में स्थित मराडल) फिर ६४ बार बीज मन्त्र को जपते हुए कुम्भक (स्तम्भन) करते हुए एकीकृत वायुमराडल से उत्पन्न वायु से देह सूख गया है समझकर उस वायु को पिङ्गला (दाहिने नाक के छिद्र) से छोडना चाहिये। इससे शरीर में विद्यमान समस्त कश्मलों का शोषरा होता है।

दाहन—इस विधान से शरीर में शोषित (सुखाये गये) सभी कश्मलों का दहन हो जाता है।

पुनरग्निबीजेन षोडशवारं प्राणायामं विधाय पिङ्गलया वायुं विमुच्य पिङ्गलामुखे हृदिपषे च स्वस्तिकसहितं त्रिकोणं रक्तं अग्निमराडलं तन्मध्ये रक्तं रं इति च ध्यात्वा, तद् बीजेन द्वात्रिंशद्वारं प्राणायामं कृत्वा पिङ्गलया तद् अग्निमराडलेन सह वायुमापूर्य मराडलद्वयं एकीकृतं ध्यात्वा, चतुःषष्टिवारं प्राणायामं कृत्वा परिकुम्भ्य एकीकृत अग्निमराडलात् संजातेन अग्निना देहं दग्धं ध्यात्वा तद् वांयु इडया विमुञ्चेत्। *(अनुष्ठान पद्धति)*

इति दाहानं

पिर रं नामक अग्नि बीज मन्त्र को १६ बार जपते हुए पिङ्गला से (नाक के दाहिने छिद्र) साँस छोड़ते हुए प्राणायाम करें। नाक के दक्षिरा छिद्र में एवं हृदय प.. में स्वस्तिक सहित त्रिकोणाकार रक्तवर्णीया अग्निमराडल को एवं उसमें रक्त वर्णीय रं बीज मन्त्र का ध्यान रकें। उस बीज मन्त्र का ३२ बार जप करते हुए प्राणायाम करें। पिङ्गला से वायु को भरकर दोनों मराडलों को एकीकृत मानकर (पिङ्गला मराडल यानि दाहिने नाक के छिद्र का मराडल एवं हृदि पद्म यादि हृदय में स्थित मराडल, फिर ६४ बार बीज मन्त्र को जपते हुए, कुम्भक (स्तम्भन) करते हुए, एकीकृत अग्निमराडल से उत्पन्न अग्नि से देह जल गया है समझकर उस वायु को इडा नाक के बायें छिद्र से छोडना चाहिये। इससे शरीर में विद्यमान समस्त कल्मश जो पहले सूख गये थे अब जल गये है।

प्लावन—इस विधान में शरीर में दग्ध (जलायें गये सभी कल्मशों का) निराकरण हो गया है। साथ ही शरीर भी जल गया है। फिर से कश्मल रहित शरीर का निर्माण करने का विधान है।

वं इति अमृतबीजेन षोडशवारं प्राणायामं कृत्वा इडया वायुं विमुच्य इडामुखे द्वादशांतपद्मे च पद्म सहितं अधचन्द्रात्मकं

सितं आप्यं मण्डलं तन्मध्ये शुभ्र वं इति च ध्यात्वा, तद् बीजेन द्वात्रिंशद्वारं प्राणायामं कृत्वा इडया तद् अमृतमण्डलेन सह वायुमापूर्य मण्डलद्वयं एकीकृतं ध्यात्वा, चतुःषष्टिवारं प्राणायामं कृत्वा परिकुम्भ्य एकीकृत अमृतमण्डलात् संजातेन अमृतेन देहं द्वादशांतपद्मात् गलितैः परचैतन्यामृतजलैः प्रपञ्चैकीकृतं आप्लावितं ध्यायेत्। *(अनुष्ठान पद्धति)*

वं नामक अमृत तत्व के बीज मन्त्र को १६ बार जपते हुए इडा से साँस छोडते हुए प्राणायाम करें। इडा में एवं द्वादशान्त पद्म (ब्रह्मरन्ध्र) में पद्म सहित अर्धचन्द्रकार शुक्ल (सफेद) रंग का अमृत मण्डल को, एवं उसके बीच में शुक्ल वर्ण के वं बीज मन्त्र का ध्यान रखें। फिर उस बीज से ३२ बार जपते हुए इडा एवं अमृत मण्डल से वायु को भरकर प्राणायाम करते हुए, दोनों मण्डलों को एकीकृत मानकर (इडा मण्डल एवं पद्म सहित अर्धचन्द्रकार अमृत मण्डल) फिर ६४ बार वं बीजाक्षर को जपते हुए कुम्भक (स्तम्भन) करें। एकीकृत अमृत मण्डल से उत्पन्न अमृत से देह को, द्वादशान्त (सहस्रार) पद्म से गिर रहे परमात्म वस्तु अमृत जल से आप्लावित शरीर अमृतमय हो गया है। इस प्रकार पहले कश्मलों का विनाश होकर फिर अमृतमय शरीर की प्राप्ति हो गयी।

यहाँ पर अमृतमय शरीर प्राप्त हुआ

आगे पञ्चभूतसृष्टि—लं इति पृथ्वी बीजेन बुद्बुदाभं ब्रह्माण्डं संकल्प्य हं इति सुरीकरणंकृत्वा सोहं इति द्वादशान्तपद्मात् जीवं स्वहृदये संयोज्य, हौं इति पञ्चविंशति संख्यं सकृत प्राणायामं कृत्वा, हौं नमः इति द्वादशान्तादि ताल्वन्तं व्याप्य आत्मनः आकाशं सृजामि, पुनः ह्यैं इति पञ्चविंशति संख्यं द्विवारं प्राणायामं कृत्वा ह्यैं नमः इति ताल्वादि कण्ठान्तं व्याप्य आकाशात् वायुं सृजामि, पुनः रूं इति पञ्चविंशति संख्यं त्रिवारं प्राणायामं कृत्वा रूं इति पञ्चविंशति संख्यं चतुर्वारं प्राणायामं कृत्वा ह्वीं नमः इति हृदयामि नाभ्यन्तं व्याप्य अग्नेः अपः सृजामि, पुनः ह्लां इति पञ्चविंशति संख्यं पञ्च प्राणायामान् कृत्वा ह्लां नम इति नाभ्यादि पादान्तं व्याप्य अद्भ्यः पृथिवीं सृजामि। *(अनुष्ठान पद्धति)*

इस प्रक्रिया में नष्ट हुए शरीर की पञ्चभूत सृष्टि विधान है। लं नामक पृथ्वी बीज से बद्बुदाकार के ब्रह्माण्ड सृष्टि का चिन्तन करें। हं नामक आकाश बीज

का स्मरण करते हुए उसमें आकाश का चिन्तन करें। मैं परमात्मा हूँ मानते हुए सहस्रार से (ब्रह्मरन्ध्र) जीव को हृदय पद्म में स्थपित करें। हौं आकाश बीज का २५ बार जप करते हुए एक प्राणायाम करें। हौं नमः कहकर ब्रह्मरन्ध्र से तालु पर्यन्त हाथ फेरते हुए परमात्मा से आकाश सृष्टि की कल्पना करें। फिर ह्यैं नमः वायु बीज का २५ बार जप करते हुए दो प्राणायाम करें। ह्यैं नमः कहकर तालू से कण्ड तक हाथ फेरते हुए आकाश से वायु सृष्टि का चिन्तन करें। फिर ह्रूं अग्नि बीज का २५ बार जप करते हुए तीन प्राणायाम करें। ह्रूं नमः कहकर कण्ठ से हृदय तक हाथ फेरते हुए वायु से अग्नि सृष्टि का चिन्तन करें। फिर ह्वीं जल बीज का २५ बार जप करते हुए चार प्राणायाम करें। ह्वीं नमः कहकर हृदय से नाभितक हाथ फेरते हुए अग्नि से जल सृष्टि का चिन्तन करें। फिर ह्लां पृथ्वी बीज का २५ बार जप करते हुए पाञ्च प्राणायाम करें। ह्लां नमः कहकर नाभि से पॉव तक हाथ फेरते हुए जल से पृथ्वी सृष्टि का चिन्तन करें।

पुनः षष्ट्युत्तर त्रिशत प्रणव प्राणायामं कृत्वा, संवत्सरोषितं संकल्प्य फडन्त प्रणवेन अण्ड भेदं कृत्वा तत् शकले द्यावापृथिव्यौ ध्यात्वा तदन्तर्वर्तिनं जीवं विराड्रूपं ध्यात्वा पुनः लिपि प्राणायामं कृत्वा पीठन्यासं कृत्वा स्वहृदये लिपि आवाह्य तत्रैव सकलीकृत्य मानसपूजां विधय पुनः प्राणायामं कृत्वा लिप्या करन्यासं कृत्वा देहे व्याप्य लिपिन्यासं कृत्वा अङ्गन्यासं कृत्वा ऋषिछन्दोदेवताः न्यस्य यथाशक्ति लिपिं संजप्य व्याप्य लयाङ्गं कृत्वा गणानान्त्वेति गणपति मन्त्रं दुर्गा मन्त्रं च जप्त्वा पुनः मन्त्रोदयं कुर्यात्। *(अनुष्ठान पद्धति)*

३६० बार ॐकार का जप करते हुए प्राणायाम करें एक वर्ष बीता है समझकर (ब्रह्माण्ड सृष्टि का) ॐ फट् कहते हुए ब्रह्माण्ड भेदन की कल्पना कर उन दो टुकडो को भूमि एवं आकाश मानते हुए उसके बीच में स्थित जीव को विराट् स्वरूप मानते हुए **लिपि प्राणायाम** को करें। ''अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लं लृं एं ऐं ओं औं अं अः। कं खं गं घं ङं। चं छं ज झं ञां। टं ठं ड ढं णं। तं थं दं धं नं। पं फं ब भं मं। यं र लं वं शं षं सं हं ळं क्षं'' यह लिपि प्राणायाम मन्त्र है। फिर पीठ न्यास करें। गुं गुरवे नमः—इति मूर्धनि (मस्तक में) गं गणपतये नमः–इति मूलाधार में (मूल में) आधारशक्त्यै नमः। मूल प्रकृत्यै नमः। आदि कूर्माय नमः। अनन्ताय नमः। पृथिव्यै नमः। कहते हुए मूलाधार से नाभितक न्यास करें। धर्माय नमः–दक्षिण ऊरु (दाहिना जॉघ), ज्ञानाय नमः–दक्षिण अंसे (दाहिनी भुजा), वैराग्याय नमः–वाग अंसे (बायें भुजा), ऐश्वर्याय नमः–वाम ऊरु

(बायें जाँघ), अधर्माय मनः-नाभि मूले (नाभि के मूल में), अज्ञानाय नमः-दक्षिण पार्श्वे (दाहिने पार्श्व में), अवैराग्याय नमः-मुखे (मुख में), अनैश्वर्याय नमः-वाम पार्श्वे (बायें पार्श्व में), सं सत्वाय नमः-मध्ये सूत्ररूपेण (बीच में धागे के रूप में नाभि के पास), रं रजसे नमः-मध्ये सूत्ररूपेण (बीच में धागे के रूप में नाभि के पास), तं तमसे नमः-मध्ये सूत्ररूपेण (बीच में धागे के रूप में नाभि के पास), मां मायायै नमः-वितान रूपेण (छत के रूप मे सिर के ऊपर), विं विद्यायै नमः-वितान रूपेण (छत के रूप मे सिर के ऊपर), पं पद्माय नमः-हृदय (हृदय में), अं अर्कमण्डलाय नमः-हृदय (हृदय में), उं सोममण्डलाय नमः-हृदय (हृदय में), मं वह्निमण्डलाय नमः-हृदय (हृदय में), अं आत्मने नमः-(हृदय में), उं अन्तरात्मने नमः-(हृदय में), मं परमात्मने नमः-(हृदय में), ॐवामायै नमः। हृदय पद्म के आठ दलों में, ॐज्येष्ठायै नमः। हृदय पद्म के आठ दलों में, ॐरौद्र्यै नमः। हृदय पद्म के आठ दलों में, ॐकाल्यै नमः। हृदय पद्म के आठ दलों में, ॐकलविकलिन्यै नमः। हृदय पद्म के आठ दलों में, ॐबल विकलिन्यै नमः। हृदय पद्म के आठ दलों में, ॐबल प्रमथिन्यै नमः। हृदय पद्म के आठ दलों में, ॐसर्व भूत दमन्यै नमः। हृदय पद्म के आठ दलों में, (हृदय पद्म के बीच में।, ॐमनोन्मन्यै नमः (हृदय पद्म कर्णिकायां), ॐनमो भगवते सकल गुणात्म शक्ति युक्ताय अनन्ताय येगपीठात्मने नमः। *(अनुष्ठान पद्धति)*

पीठ न्यास पूरा हुआ

अपने हृदय में अकारादि सभी लिपियों का आवाहन करें। वहीं पर सभी का मानस पूजा करें। उससे पूर्व **सकलीकरण न्यास** कर लें। ॐहृदयाय नमः। ॐशिरसे स्वाहा। ॐशिखायै वषट्। ॐकवचाय हुम्। ॐनेत्रत्रयाय वौषट्। ॐअस्त्रायफट्। न्यास के बाद आत्मा का मानस पूजन करें। ॐलं पृथिव्यात्मने गन्धं कल्पयामि। ॐहं आकाशात्मने पुष्पं कल्पयामि। ॐयं वाय्वात्मने धूपं कल्पयामि। ॐरं अग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि। ॐवं अबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि। ॐमं परमात्मने सर्वोपचार पूजां कल्पयामि। फिर प्राणायाम करें। पिपि से करन्यास करें ॐअं कं खं गं घं ङं आं-अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐइञ्चं छं जं झं ञं ई-तर्जनीभ्यां नमः। ॐउं टं ठं डं ढं णं ऊं- मध्यमाभ्यां नमः। ॐएं तं थं दं धं नं ऐं-अनामिकाभ्यां नमः। ॐओं पं फं बं भं मं औं - कनिष्टिकाभ्यां नमः। ॐअं यं रं लं वं शं षं हं ळं क्षं अः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः। फिर पिपि को देह में व्याप्य करें।

अंनमः आं नमः इं नमः ईं नमः उं नमः ऊं नमः करतलपृष्ठपार्श्वेषु न्यासं कुर्यात्। ऋं नमः-दाहिना अङ्गुष्ठा, ॠं नमः-दाहिना तर्जनी, लृं नमः- दाहिना

मध्यमा, लृं नमः- दाहिना अनामिका, एं नमः-दाहिना कनिष्ठिका *(अनुष्ठान पद्धति)*, ऐं नमः-वाम कनिष्ठिका, ओं नमः-वाम अनामिका, औं नमः-वाम मध्यमा, अं नमः- वाम तर्जनी, आं नमः-वाम अङ्गुष्ठ, कं नः-दाहिने हाथ के तर्जनी मूल से अग्र तक (पर्व सन्धियों के अग्र में।), खं नमः-दाहिने हाथ के तर्जनी मूल से अग्र तक (पर्व सन्धियों के अग्र में।), गं नमः-दाहिने हाथ के तर्जनी मूल से अग्र तक (पर्व सन्धियों के अग्र में।), घं नमः-दाहिने हाथ के तर्जनी मूल से अग्र तक (पर्व सन्धियों के अग्र में।), ङं नमः-दाहिने हाथ के मध्यमा मूल से अग्र तक, चं नमः-दाहिने हाथ के मध्यमा मूल से अग्र तक, छं नमः-दाहिने हाथ के मध्यमा मूल से अग्र तक, जं नमः-दाहिने हाथ के मध्यमा मूल से अग्र तक, झं नमः-दाहिने हाथ के अनामिका के मूल से अग्र तक, ञां नमः-दाहिने हाथ के अनामिका के मूल से अग्र तक, टं नमः-दाहिने हाथ के अनामिका के मूल से अग्र तक, ठं नमः-दाहिने हाथ के अनामिका के मूल से अग्र तक, डं नमः-दाहिने हाथ के कनिष्ठिका मूल से अग्र तक, ढं नमः-दाहिने हाथ के कनिष्ठिका मूल से अग्र तक, णं नमः-दाहिने हाथ के कनिष्ठिका मूल से अग्र तक, तं नमः-दाहिने हाथ के कनिष्ठिका मूल से अग्र तक, थं नमः-बाये हाथ के कनिष्ठिका मूल से अग्र तक, दं नमः-बाये हाथ के कनिष्ठिका मूल से अग्र तक, धं नमः-बाये हाथ के कनिष्ठिका मूल से अग्र तक, नं नमः-बाये हाथ के कनिष्ठिका मूल से अग्र तक, पं नमः-बाये हाथ के अनामिका मूल से अग्र तक, फं नमः-बाये हाथ के अनामिका मूल से अग्र तक, बं नमः-बाये हाथ के अनामिका मूल से अग्र तक, भं नमः-बाये हाथ के अनामिका मूल से अग्र तक, मं नमः- बाये हाथ के मध्यमा के मूल से अग्र तक, यं नमः-बाये हाथ के मध्यमा के मूल से अग्र तक, रं नमः-बाये हाथ के मध्यमा के मूल से अग्र तक, लं नमः-बाये हाथ के मध्यमा के मूल से अग्र तक, वं नमः- बाये हाथ के तर्जनी के मूल से अग्र तक, शं नमः-बाये हाथ के तर्जनी के मूल से अग्र तक, षं नमः-बाये हाथ के तर्जनी के मूल से अग्र तक, सं नमः-बाये हाथ के तर्जनी के मूल से अग्र तक, हं नमः-अङ्गुष्ठ के मूल, (दोनों हाथ), ळं नमः-अङ्गुष्ठ के मध्य, (दोनों हाथ), क्षं नमः-अङ्गुष्ठ के अग्र, (दोनों हाथ)

अङ्गन्यास—ॐअं कं खं गं घं ङं आं - हृदयाय नमः, ॐइं चं छं जं झं ञां ईं-शिरसे स्वाहा, ॐउं टं ठं डं ढं णं ऊं-शिखायै वषट्, ॐऐं तं थं दं धं नं ऐं-कवचाय हुम्, ॐओं पं फं बं भं मं औं -नैत्रत्रयाय वौषट्, ॐअं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अः-अस्त्रायट्

ऋषि छन्द देवता न्यास—शब्द ब्रह्म ऋषिः गायत्री छन्दः मातृका सरस्वती देवता शिरसि ऋषिः, मुखे छन्दः, हृदये देवता का स्मरण कर लेवे। ऋषि देवता छन्द न्यास करने के बाद यथा शक्ति लिपि का पजकर उसे समस्त शरी में व्याप्तकर अङ्गन्यास का लयाङ्ग यानि उलटा करके न्यास करें।

ॐअं यं रं लं वं षं षं सं हं ळं क्षं अः - अस्त्राय फुट्, ॐओं पं फं बं भं मं औं - नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐऐं तं थं दं धं नं ऐं - कवचाय हुम्, ॐउं टं ठं डं ढं

गां ऊं - शिखायै वषट् , ॐ इं चं छं जं भं ऋां ईं - शिरसे स्वाहा, ॐ अं कं खं गं घं डं आं-हृदयाय नमः (अनुष्ठान पद्धति)

ॐ गणानांत्वा गणपतिं हवामहे कविं कवीना मुपमश्रवस्तमम्।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आनः शृणवन्नूतिभिः सीदसादनम्।। (ऋग्वेद २.२३.१)

इस मन्त्र से गणपति की प्रार्थना करें।

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममराति यतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः।।
(ऋग्वेद १.९९.१)

इस मन्त्र से दुर्गा देवी की प्रार्थना करें।

मन्त्रोदय विधान—**ह ह ह इति प्रजप्य मूलाधारस्थं पीवंपरमात्मनि लाप्य तन्मंत्रात्मकं ध्यात्वा पुनः प्रणवसहित मूलमन्त्रं उक्त्वा हृदय प.. सुयोज्य मूल मंत्रेण पञ्चविशति संख्यं प्राणायाम त्रयं कृत्वा क्रमेण पर सूक्ष्म स्थूलात्मकं ध्यात्वा तस्य विराड्रूपस्य आधारार्थं पीठन्यासं कृत्वा स्वहृदये मूर्ति संकल्प्य आवाह्य सकलीकृत्य मानस पूजां विधाय पूज्य पूजकयोः ऐक्यं संभाव्य मूलेन पञ्च विंशति संख्यं प्राणायामं कृत्वा तेजः करां पिङ्गलया अंजलो निपात्य करन्यास कृतवा ताभ्यां हस्ताभ्यां मूलेन देहे त्रिवारं व्याप्य तत्वन्यासं कुर्यात्।** (अनुष्ठान पद्धति)

ह ह ह इसका जप कर मूलाधार में स्थित जी को परमात्म में मिलाना चाहिये। अब जीव मन्त्रात्मक हो गया मानना चाहिये। फिर प्रणव सहित मूल मन्त्र का जप करें। **ॐ नमो नारायणाय** । देवता को हृदय में स्थापित करें। फिर २५ बार मूल मन्त्र का जप करते हुए तीन बार प्राणायाम करें। पहले प्राणायाम से परब्रह्म रूपी, दूसरे प्राणायाम से जीव सूक्ष्मरूप, एवं तीसरे प्राणायाम से जीव स्थूल रूप को प्राप्त करता है। उस विराट् स्वरूप के जीव के आधार के लिए पीठ न्यास करें पं पद्माय नमः कहकर पीठन्यास करें। अपने हृदय मे विष्णु मूर्ति का चिन्तन करें, आवाहन करें **ॐ नमो नारायणाय**। विष्णुं आवाहयामि।'' सकलीकरण कर ॐ हृदयाय नमः। ॐ शिरसे स्वाहा। ॐ शिखायै वषट् ॐ कवचाय हुम् ॐ नेत्रत्रयाय वौषट् ॐ अस्त्राय फट्।

मानस पूजां कृत्वा—ॐलं पृथिव्यात्मने गन्धं कल्पयामि। ॐआकाशात्मने पुष्पं कल्पयामि। ॐयं वाय्वात्मने धूपं कल्पयामि। ॐरं अग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि। ॐवं अबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि। ॐमं परमात्मने सर्वोपचार पूजां समर्पयामि। *(अनुष्ठान पद्धति)*

पूजन करने वाला एवं पूजित देवता दोनों उपरोक्त क्रियाओं से एक हुए मानकर मूल मन्त्र "ॐघृणिः सूर्यआदित्यः" इसे २५ बार जपते हुए प्राणायाम करें। तेज कणों को पिङ्गला से (नाक के दाहिने छिद्र से) अंजली में भरकर सूर्य मूल मन्त्र से करन्यास करें।

ॐ नमो नारायणाय अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ नमो नारायणाय तर्जनीभ्यां नमः। ॐ नमो नारायणाय मध्यमाभ्यां नमः। ॐ नमो नारायणाय अनामिकाभ्यां नमः। ॐ नमो नारायणाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ नमो नारायणाय करतल करपृष्ठाभ्यां नमः। दोनों हाथों से तीन बार देह पर हाथ फिराये तत्वन्यास को करें।

तत्वन्यास-कलाध्वा—ॐहौं नमः पराय शान्त्यतीत कलात्मने नमः मूर्धनि। ॐहौं नमः पराय शान्तिकलात्मने नमः मुखे। ॐहौं नमः पराय विद्या कलात्मने नमः हृदये। ॐहौं नमः पराय प्रतिष्ठा कलात्मने नमः गुह्ये। ॐह्लां नमः पराय निवृत्ति कलात्मने नमः पादयोः कहकर कला न्यास करें।

ॐमं नमः पराय जीवात्मने नमः सर्वाङ्गे, ॐभं नमः पराय प्राणात्मने नमः हृदये, ॐबं नमः पराय बुध्यात्मने नमः हृदये, ॐफं नमः पराय अहंकारात्मने नमः हृदये, ॐपं नमः पराय मन आत्मने नमः हृदये, ॐनं नमः पराय शब्दतन्मात्रात्मने नमः मूर्धनि, ॐधं नमः पराय स्पर्शतन्मात्रात्मने नमः मुखे, ॐदं नमः पराय रूप तन्मात्रात्मने नमः हृदये, ॐथं नमः पराय रस तन्मात्रात्मने नमः गुह्ये, ॐतं नमः पराय गन्ध तन्मात्रात्मने नमः पादयोः, ॐणं नमः पराय श्रोत्रात्मने नमः श्रोत्रयोः

ॐढं नमः पराय त्वगात्मने नमः त्वचि। ॐडं नमः पराय चक्षुरात्मने नमः चक्षुषि। ॐठं नमः पराय जिह्वात्मने नमः जिह्वायां। ॐटं नमः पराय घ्राणात्मने नमः नासिकायोः। ॐञां नमः पराय वागात्मने नमः वाचि। ॐझं नमः पराय पाण्यात्मने नमः हस्तयोः। ॐजं नमः पराय पादात्मने नमः पादयोः। ॐछं नमः पराय पाय्वात्मने नमः अपाने। ॐचं नमः पराय उपस्थात्मने नमः गुह्ये। ॐङ. नमः पराय आकाशात्मने नमः मूर्धनि। ॐघं नमः पराय वाय्वात्मने नमः मुखे। ॐगं नमः पाया तेज आत्मने नमः हृदये। ॐखं नमः पराय अबात्मने नमः हुह्ये। ॐकं नमः पराय पृथिव्यात्मने नमः पादयोः। ॐशं नमः पराय हृत्पुण्डरीकात्मने नमः हृदये। ॐहं नमः पराय सूर्यमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः हृदये। ॐसं नमः पराय सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः हृदये। ॐरं नमः पराय वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः हृदये। ॐहौं पराय शान्त्यतीतात्मने नमः मूर्धनि। ॐह्यौं नमः पराय शान्त्यात्मने नमः मुखे ॐहूं नमः पराय

विद्यात्मने नमः हृदये। ॐ ह्वीं नमः पराय प्रतिष्ठात्मने नमः गुह्ये। ॐ ह्वां नमः पराय निवृत्यात्मने नमः पादयोः *(अनुष्ठान पद्धति)*। इति तत्व न्यासः।

शंखपूराणम्—**अग्रतः गोमय जलेन चतुरस्त्र मराडलं कृत्वा प्रणवेन तत्र गन्धपुष्पाक्षतान् न्यस्य अस्त्रेण शंखं शंखपादमपि प्रक्षाल्य वह्नि मराडलेन शंखपादं, सूर्य मराडलेन शंखं च न्यस्य हृदय मन्त्रेण शंखे गन्धपुष्पाक्षतान् न्यस्य शिरोमन्त्रेण शुद्धजलैः शंखमापूर्य गन्धपुष्पं निक्षिप्य वह्नि मराडलेन शंखपादं सूर्यमराडलेन शंखं, सोम मराडलेन जलं संपूज्य, शिखा मन्त्रेण गालिनी मुद्रया जलस्य उत्पवनं कृत्वा आलोड्य आपूर्य गुरुड मुद्रया निर्विषीकृत्य, सुरभिमुद्रया अमृतीकृत्य, नेत्र मन्त्रेण जल निरीक्ष्य कवचमन्त्रेण हस्ताभ्यां अच्छाद्य, अस्त्र मन्त्रेण संरक्ष्य, गङ्गे इत्यादिना तीर्थमावाह्य किंचित् पीठं संपूज्य मूलेन स्वहृदयात् देवमावाह्य सकलीकृत्य निवेद्य मुद्रा प्रदर्श्य वारं मूलमन्त्रं प्रजप्य वर्धन्यां किंचित् परिषिच्य शिष्टजलेन प्रणवेन पूजा द्रव्याणि आत्मानं च त्रिः प्रोक्षेत्।** *(अनुष्ठान पद्धति)*

सामने गोमय जल से चतुरस्त्र मराडल को बनाकर **ॐ कार** जपते हुए गन्ध पुष्प अक्षतों को डालकर **ॐ अस्त्राय फट्** करते हुए शंख को एवं खंख के आसन को धोवें। **ॐ रं वह्निमराडलाय दश कलात्मने नमः** कहकर शंख पाद को मराडल पर रखें। **ॐ हं सूर्यमराडलाय द्वादश कलात्मने नमः** ''कहकर शंख को मराडल पर रखें।

ॐ हृदयाय नमः कहते हुए शंख पर गन्ध पुष्प एवं अक्षत चडाये। **ॐ शिरसे स्वाहा** कहते हुए शुद्ध जल से शंख में जल भरें। उसमें गन्ध पुष्प डालें। **ॐ रं वह्निमराडलाय नमः** कहकर शंखपाद का पूजन करें। **ॐ हं सूर्यमराडलाय नमः** कहकर शंख का पूजन करें। **ॐ सं सोममराडलाय नमः** कहकर जल का पूजन करें। **ॐ शिखायै वषट्** कहकर गालिनी मुद्रा से जल का उत्पवन (शुद्धीकरण करना) कर, हिलाकर, भरकर, गरुड मुद्रा से जल के विष का निवारण कर, सुरभिमुद्रा से अमृत बनाकर। **ॐ नेत्रायाय वौषट्** कहकर जल को देखें। **ॐ कवचाय हुम्** कहकर दोनों हाथों से उसे ढककर **ॐ अस्त्राय फट्** कहकर उसकी रक्षा की कल्पना करें। ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेस्मिन् सन्निधिं कुरु। *(अनुष्ठान पद्धति)* कहकर जल में तीर्थ का आवाहन करें। **पं पद्माय नमः** कहकर पीठ का पूजन करें।

शंख तीर्थ में अपने हृदय से सोम देवता का आवाहन कर **ॐ हृदयाय नमः। ॐ शिरसे स्वाहा। ॐ शिखाये वषट्। ॐ कवचाय हुम्। ॐ नेत्रात्रयास वौषट् ॐ अस्त्राय फट्** कहकर सकलीकरण कर नैवेद्य मुद्रा को दिखाकर **ॐ नमो नारायणाय** इस मूल मन्त्र को ८ बार जपते हुए कलश जल में किंचित् शंख जल को डालें शेष जल से तीन बार पूजा सामग्रियों को एवं अपने को ॐकार कहते हुए प्रोक्षण करें।

कलश प्रसङ्गे आत्माराधनम्—हृदये पीठं संपूज्य प्रणवाक्षरैः मूलाधार हृदय द्वादशान्त स्थित तेजांसि संपूज्य प्रणवेद तानि हृदयपद्मे नियोज्य मूलेन प्राणायामं कृत्वा व्याप्य आसनमिदं स्वागतमिदं पाद्यमिद, अर्घ्यमिदं आचमनमिदं स्नानमिदं वस्त्रमिदं आभारणमिदं इत्यादि उपहारान् दत्वा जलगन्धाभ्यां आत्मानं संपूज्य सद्योजातादि पञ्च ब्रह्मभिः ललाट कण्ठ अंसद्वय हृदय उदरेषु अष्टगंधेन तिर्यग् पुण्ड्राणि विलिप्य स्थाणु मंत्रण मूर्ध्नि पञ्चवारं पुष्पांजलि विधाय ॐ अर्कद्वयं कल्पयामि, इति पादाग्रदिनाभ्यन्तं कंलल्प्य पुष्पाजलिं कुर्यात्। ॐ करवीर द्वयं कल्पयामि इति नाभ्यादि हृदयान्तं संकल्प्य पुष्पांजलिं कुर्यात्। ॐ षट् कुसुमानि कल्पयामि इतिशिरसि। शेष कुसुमानि कल्पयामि इति सर्वाङ्गे च पुष्पांजलिं कुर्यात्। धूपं मुद्रां दीप मुद्रां प्रदर्श्य नैवेद्य काले अर्घ्यं दत्वा प्रसन्न पूजां विधाय पूजां समापयेत्। इति आत्मपूजा। *(अनुष्ठान पद्धति)*

हृदय में पी पूजा करें। **पं पद्माय नमः** इस मन्त्र से पीठ पूजा करें। प्रणवाक्षर अं उं मं इसी क्रम से मूलाधार हृदय एवं द्वादशान्त पत्र के तेज का पूजन करें। ॐकार से तीनों को मिलायें। **ॐ नमो नारायणाय** इस मूल मन्त्र से प्राणायाम करके आसनं समर्पयामि। स्वागतं समर्पयामि। अर्घ्यं समर्पयामि। पाद्यं समर्पयामि। आचमनं समर्पयामि। स्नानं समर्पयामि। वस्त्रं समर्पयामि। आचमनं समर्पयामि। आभरणं समर्पयामि। गन्धं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि। पुष्पाणि समर्पयामि। धूपं समर्पयामि। दीपं दर्शयामि। इतना कहने के बाद जल एवं गन्ध से अपना पूजन करें।

ॐ स॒द्योजा॒तं प्रप॑द्या॒मि स॒द्योजा॒ताय॒ वै नमो॒ नमः॑। भ॒वेभ॑वे॒नाति॑ भ॒वे भव॑स्व॒ मां भ॒वोद्भ॑वाय॒ नमः। *(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषद्)*

कहकर ललाट में गन्ध धारण करें।

ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः। *(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषद्)*

कहकर कण्ठ में तिर्यक् त्रिपुण्ड्र गन्ध धारण करें।

ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥ *(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषद्)*

कहकर दोनों भुजाओं पर गन्ध धारण करें।

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्। *(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषद्)*

कहकर हृदय में गन्ध धारण करें।

ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपति ब्रह्मणोधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोऽम्।

(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषद्)

कहकर उदर में अष्टगन्ध धारण करें। स्थाणु मन्त्र से **पाँच बार पुष्पांजलि सिर पर डाल लेवे।**

स्थाणुमन्त्र—नमोस्तु स्थाणु भूताय ज्योतिर्लिंगावृतात्मने चतुर्मूर्तिवपुच्छाया भासिताङ्गाय शंभवे॥ *(क्रियासार)*

ॐ अं अर्क द्रव्यं कल्पयामि कहकर पैरों के तले से नाभिपर्यन्त कल्पना कर सि पर पुष्पांजलि डाल लेवें। **ॐ उं करवीर द्रव्यं कल्पयामि** कहकर नाभि से हृदय पर्यन्त कल्पना करें सिर पर पुष्पांजलि डाल लेवें। **ॐ मं पद्मद्रव्यं कल्पयामि** कहकर हृदय से भ्रू मध्य तक कल्पना करें सिर पर पुष्पांजलि डाल लेवें। **ॐ षट् कुसुमानि कल्पयामि** कहकर पुष्पांजलि करें। **शेष कुसुमानि कल्पयामि** कहकर सिर पर एवं सभी अङ्गों पर पुष्पांजलि करें। **धूप मुद्रा**-(अङ्गुष्ठाग्र एवं अनामिकाग्र मिलाने से दीप मुद्रा) इन्हें दिखाकर। नैवेद्य के बदले अर्ध्य देवें। **प्रसन्न पूजां समर्पयामि** कहकर आत्मापूजा को संपन्न करें। इसके बाद संकल्प करें (प्रमाण श्लोक)

फलभिसंधानबुद्धिस्थिरीकरणसिद्धये। संकल्पस्तु पुराकार्यः श्रोते स्मार्ते च कर्मणि॥ *(प्रयोगरत्नाकरः)*

श्रौत स्मार्त कर्म करने से पहलें फल सिद्धि की स्थिर भावना की प्राप्ति के लिए कर्म से पहले संकल्प करना चाहिये।

संकल्प्यैव च कर्तव्यं स्नानदान व्रतादिकम्। अन्यथा पुरायकर्माणि निष्फलानि भवन्ति हि॥ *(प्रयोगरत्नाकर:)*

स्नान दान कर्मादियों को संकल्प लेकर ही करना चाहिये। नहीं तो पुरायकर्म फल रहित हो जाते हैं। मास पक्ष तिथीनां च निमित्तानां च सर्वश:। उल्लेखन कुर्वाणो न तस्य फलभाग् भवेत्॥ सभी कर्मो में महिना,पक्ष,तिथि, एवं किस लिए कर रहे हैं (निमित) इसका जो उल्लेख नहीं करते हैं वे फल को प्राप्त नहीं करते हैं।

संकल्प—देशकालौ संकीर्त्य विश्वशान्त्यर्थं सर्वाद्भुत उत्पात जनित दोष परिहारार्थं आदित्यादि नवानां ग्रहाणां शुभ एकादश स्थान फलावाप्त्यर्थं कलशस्थापनं नवग्रहाराधनं यथाशक्ति कल्पोक्त षोडशोपचार पूजां करिष्ये।

गुरु पूजन—गुं गुरुभ्यो नम:। लं पृथिव्यात्मने गन्धं कल्पयामि। हं आकाशात्मने पुष्पं कल्पयामि। यं वाय्वात्मने धूपं कल्पयामि। रं अग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि। वं अमृतात्मने नैवेद्यं कल्पयामि। पं परमात्मने सर्वोपचार पूजां समर्पयामि। गुं गुरवे नम: सुवर्ण दक्षिणां समर्पयामि।

गणेश पूजन—गं गणपतये नम:। ॐलं पृथिव्यात्मने गन्धं कल्पयामि। ॐहं आकाशात्मने पुष्पं कल्पयामि। ॐयं वाय्वात्मने धूपं कल्पयामि। ॐरं अग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि। ॐवं अमृतात्मने नैवेद्यं कल्पयामि। ॐपं परमात्मने सर्वोपचार पूजां समर्पयामि। गं गणपतये नम: सुवर्णपुष्पं समर्पयामि।

ॐ गणानांन्त्वा गणपतिं हवामहे कविं कवीना मुंपमश्रंवस्तमम्।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आनं:श्रृणवन्नूतिभिं: सीदसादंनम्। *(ऋग्वेद २.२३.१)*

वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्य समप्रभ। निर्विघ्नं करु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा गं गणपतये नम: प्रार्थयामि। नमस्करोमि।

दीपाराधनम्—ॐ अग्निंदूतं वृंणीमहे होतारं विश्ववेंदसं। अस्य यज्ञस्यं सुक्रतुंम॥ *(ऋग्वेद १.१२.१)*

ॐरं नम: इति दीपमाराधयामि। कहकर पुष्प से दीप का पूजन करें।

पीठपूजनम्—ॐआधार शक्त्यै नम:। ॐअज्ञानाय नम:। ॐमूल प्रकृत्यै नम:। ॐअवैराग्याय नम:। ॐआदिकूर्माय नम:। ॐअनैश्वर्याय नम:। ॐअनन्ताय नम:। ॐसं सत्वाय नम:। ॐपृथिव्यै नम:। ॐरं रजसे नम:। ॐधर्माय नम:। ॐतं तमसे नम:। ॐज्ञानाय नम:। ॐमं मायायै नम:। ॐवैराग्याय नम:। ॐविं

विद्यायै नमः। ॐ ऐश्वर्याय नमः। ॐ पं पद्माय नमः। ॐ अधर्माय नमः। ॐ वामायै नमः। ॐ ज्येष्ठायै नमः। ॐ अं अर्कमण्डलाय नमः। ॐ रौद्र्यै नमः। ॐ उं सोममण्लाय नमः। ॐ कालयै नमः। ॐ रं वह्निमण्डलाय नमः। ॐ बल विकलिन्यै नमः। ॐ अं आत्मने नमः। ॐ कलविकलिन्यै नमः। ॐ उं अन्तरात्मने नमः। ॐ बल प्रमथिन्यै नमः। ॐ मं परमात्मने नमः। ॐ सर्वभूतदमन्यै नमः। ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः। ॐ मनोन्मन्यै नमः।

ॐ नमो भगवते सकलगुणात्म शक्तियुक्ताय अन्तंताय योगपीठात्मने नमः। *(अनुष्ठान पद्धति)*

यहाँ पर कलश रखने वाला पीठ का पूजन पुष्पों से अक्षतों से करें।

भुवनेश्वरी पूजन (पीठ मध्ये)—ॐ ह्रां हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रूँ शिखायै वषट्। ॐ ह्रैं कवचाय हुम्। ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रः अस्त्राय फट्। ॐ लं पृथिव्यात्मने गन्धं कल्पयामि। ॐ हं आकाशात्मने पुष्पं कल्पयामि। ॐ यं वाय्वात्मने धूपं कल्पयामि। ॐ रं अग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि। ॐ वं अमृतात्मने नैवेद्यं कल्पयामि। ॐ पं परमात्मने सर्वोपचार पूजां समर्पयामि। ॐ ह्रीं भुवनेश्वर्यै नमः सुवर्णपुष्पं समर्पयामि। ॐ ह्रीं भुवनेश्वर्यै नमः प्रसन्नार्ध्यं समर्पयामि। वरांकुशौ पाशमभीतिमुद्रां करैर्वहन्तीं कमलासनस्थां। बालार्क कोटिप्रतिमां त्रिनेत्रां भजेहमाद्यां जगदीश्वरीं तां॥ पुष्पांजलि समर्पयामि। नमस्करोमि।

पद्मपुद्रां पदर्श्य, कलशं सङ्गृह्य, अस्त्रेण संक्षाल्य कवचेंन त्रिगुणीकृत सूत्रेण वेष्टयित्वा मूलमन्त्रेण अष्टागन्धेन लेपयित्वा प्रणवेन धूपयित्वा मूलेन पीठे अधोमुखं न्यसेत्। *(अनुष्ठान पद्धति)*

पद्ममुद्रा (कमलाकार) को दिखाकर, प्रधान एवं शेष कलशों को हाथ में लेवें। **ॐ अस्त्राय फट्** कहते हुए तीन धागों वाले सूत्र से उसे लपेटना चाहिये। **ॐ नमो नारायणाय** इस मूल मन्त्र से अष्टगंध से लेपन करें। ॐ कहते हुए धूप दिखायें। **ॐ नमो नारायणाय** कहते हुए उस कलश को पीठ पर उल्टा करके रखें।

शोषण दाहन प्लावन काठिंन्य सुषरीकरणानि कृत्वा—यं बीजमन्त्र को षोडश बार जपकर शोषण की कल्पना करें। **रं** बीजमन्त्र से षोषश (१६) बार जपकर दाहन की कल्पना करें। **रं** बीजमन्त्र से षोडश बार जपकर प्लावन की कल्पना करें। **लं** बीजमन्त्र से षोडश बार जपकर काठिन्य की कल्पना करें। **हं** बीजमन्त्र से षौडश बार जपकर सुषरीकरण की कल्पना करें। (सुषरीकरण यानि ब्रह्माण्ड के बीज में जगह बनाना।) इन सभी क्रियाओं को

कुशों से कलशों का छूकर करना चाहिये। **हौं नमः पराय शान्त्यतीतात्मने नमः।**

इति दर्भ विन्यासं

जहाँ प्रधान कलश रखना है वहाँ उपरोक्त मन्त्र कहकर दो कुशा बिछायें। अन्य **कलशों के पास भी कुश बिछायें। ह्यौं नमः पराय शान्त्यात्मने नमः।** इति अष्टगंध प्रोक्षरां कहकर कुशों पर अष्टगंध का प्रोक्षरा करें। ह्वं नमः पराय विद्यात्मने नमः इति अक्षतं विकीर्य कहकर कुशों पर अक्षात डालें। ॐ ह्लीं वैश्रवणाय नमः कहकर कलशों की पुष्पाक्षतों से पूजन करें। ॐ ह्रीं नमः पराय प्रतिष्ठात्मने नमः। कहकर कलशों को उठायें। **ॐ ह्लां नमः पराय निवृत्यात्मने नमः ॐ ह्रीं नमः शिवाय** कहकर कलशों को पीठ पर कुशों के ऊपर रखें। **प्रणवेन घट मुखं प्रोक्ष्य**

ॐकारसे कलशों के मुख को प्रोक्षरा करें। **कुम्भस्य मूले दश वह्निकलाः न्यस्य ऋचा च व्यापयेत्।** ॐ ह्लीं यं धूम्रार्चिषे नमः। ॐ ह्लीं रं ऊष्मायै नमः। ॐ ह्लीं लं ज्वलिन्यै नमः। ॐ ह्लीं वं ज्वालिन्यै नमः। ॐ ह्लीं शं विष्फुलिंगिन्यै नमः। ॐ ह्लीं षं सुश्रियै नमः। ॐ ह्लीं सं सुरूपायै नमः। ॐ ह्लीं हं कपिलायै नमः। ॐ ह्लीं ळं हव्यवाहायै नमः। ॐ ह्लीं क्षं कव्यवाहायै नमः। इन्हे कहते हुए कुशों से कुम के चारों ओर छूकर वह्निकलाओं की कलश के मूल में स्थापना की कल्पना करें।

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः।
स नः पर्षदति दुर्गाणिविश्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः॥ *(ऋग्वेद १.९९.१)*

कहते हुए कलश के मूल को कुशा से छूऐं। **ॐ मं वह्निमराडलाय दश धर्मप्रद कलात्मने नमः।** कहकर समष्टि व्यापन यानि कुशों से कलश के चारों ओर छूना चाहिये। कुम्भस्य मध्ये द्वादशदफं पद्मं संकल्प्य प्रागादि दलेषु सूर्यकलाः न्यस्य तत् ऋचा समष्ट्या च व्यापयेत्।

कलश के बीच में द्वादशदल पद्म की कल्पना कर पूर्व दिशा से प्रारम्भकर द्वादश दलों में १२ सूर्य कलाओं को रखने की कल्पना करें। ॐ ह्लीं कं भं तपिन्यै नमः। ॐ ह्लीं खं बं तापिन्यै नमः। ॐ ह्लीं गं फं धूम्रायै नमः। ॐ ह्लीं घं पं मरीच्यै नमः। ॐ ह्लीं ङं नं ज्वालिन्यै नमः। ॐ ह्लीं चं धं रुच्यै नमः। ॐ ह्लीं छं दं सुषुम्रायै नमः। ॐ ह्लीं जं थं भोगदायै नमः। ॐ ह्लीं झं तं विश्वायै नमः। ॐ ह्लीं ञं णं बोधिन्यै नमः। ॐ ह्लीं टं ढं धरिरायै नमः। ॐ ह्लीं ठं डं क्षमायै नमः।

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्। *(ऋग्वेद ३.६२.१०)*

कहते हुए कलशों के मध्य में कुशा से छुऐं।

ॐ अं सूर्यमण्डलाय वसुप्रद कलात्मने नमः।

कहकर समष्टि व्यापन यानि कुशों से कलश के चारों ओर छूना चाहिये।

कुम्भस्य मुखे षोडशदलं पद्म संकल्प्य प्रागादि दलेषु षोडश सोमकलाः न्यस्य तत् ऋचा समष्ट्या व्यापयेत्। *(अनुष्ठान पद्धति)*

कुम्भो के मुख में षोडशदल पद्म की कल्पना करें पूर्वादि क्रम से दलों में सोलह सोमकलाओं को रखने की कल्पना करें। फिर ऋक् एवं समष्टि से व्याप्त करें। ॐ ह्रीं अं अमृतायै नमः। ॐ ह्रीं आं मानदायै न मः। ॐ ह्रीं इं पूषायै नमः। ॐ ह्रीं ईं तुष्टयै नमः। ॐ ह्रीं ऊँ रत्यै नमः। ॐ ह्रीं ॠं धृत्यै नमः। ॐ ह्रीं ऋं शशिन्यै नमः। ॐ ह्रीं लृं चन्द्रिकायै नमः। ॐ ह्रीं लृं कान्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ऐं ज्योत्स्नायै नमः। ॐ ह्रीं ऐं श्रियै नमः। ॐ ह्रीं ओं प्रीत्यै नमः। ॐ ह्रीं औं अङ्गदायै नमः। ॐ ह्रीं अं पूर्णायै नमः। ॐ ह्रीं अः पूर्णामृतायै नमः।

ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगन्धिं पुंष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्॥ *(ऋग्वेद ७.५९.१२)*

कहते हुए कलशों के मुख में कुश से छूऐं। **ॐ उं सोममण्डलाय षोडश का मप्रद कलात्मने नमः।** कहकर समष्टि व्यापन यानि कुशों से कलश के चारों ओर छूना चाहिये। **ॐ ह्रीं हं सः इति मन्त्रेण कुम्भावाहनं कृत्वा।** इस मन्त्र से कुम्भा का आवाहन कर षडंग न्यास करें। ॐ ह्रां हृदयाय नमः ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रूँ शिखायै वषट्। ॐ ह्रैं कवचाय हुम्। ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ह्रः अस्त्राय फट्। कहकर कलश को न्यास करें। **कुम्भस्य मुखे**—कुम्भ के मुख में पाञ्च कलाओं का आवाहन करें। ॐ ह्रीं शं पीतायै नमः। ॐ ह्रीं सं श्वेतायै नमः। ॐ ह्रीं हं अरुणायै नमः। ॐ ह्रीं ळं असितायै नमः। ॐ ह्रीं क्षं नन्तायै नमः।

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्यं धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥ *(ऋग्वेद ३.६२.१०)*

कलशों के मुख में कुशों से छूकर बोलें।

कुम्भमुद्रां प्रदर्श्य कुम्भं जगदण्डं ध्यात्वा पञ्चविंशति दर्भैः कुर्च बध्वा तस्य शोषण, दाहन प्लावनानि कृत्वा अष्टगंधं विलिप्य अष्टवारं प्रणवं संजप्य कूर्च कुम्भे न्यस्य प्रणवेन संपूज्य नवरत्नादि द्रव्यं ॐ ह्रीं हं सः सोहं स्वाहा इति कुम्भे

न्यस्य संपूज्य मानस पूरणां कुर्यात्। *(अनुष्ठान पद्धति)*
कुम्भमुद्रा (पद्मपुद्रा) को दिखाकर कुम्भ को ब्रह्माराड मानें। २५ कुशाग्रों से कूर्च बनायें।
उस कूर्च को—यं बीच मन्त्र को सोलह बार जप करते हुए शोषरा की कल्पना करें। रं बीज मन्त्र से १६ बार जप करते हुए दाहन की कल्पना करें। वं बीज मन्त्र से १६ बार जपकर प्लावन की कल्पना करें। कूर्च को कुम्भ में डालें फिर ॐकार से पूजन करें। नवरत्नादियों को "ॐह्री हं सः सोहं स्वाहा" कहकर उन्हें कुम्भ में डालकर पूजा करें। फ़िर मानस पूरण करें। (मन में-कलश भरने की कल्पना करें।)

करे अमृत बीजं विलिख्य तेन करेरा कुम्भ मुखमाच्छाद्य कूर्चमूलस्थित चैतन्यं द्वादशान्त पद्म स्थित परमात्मनि विलाप्य प्रराणवं शिरोमन्त्रं च उक्त्वा द्वादशान्त पद्म स्थित परमात्मनः परचैतन्यरूपं अमृतजलं कुम्भे पातयेत्। *(अनुष्ठान पद्धति)*
दाहिने हाथ में वं बीज मन्त्र को लिखकर उसी दाहिने हाथ से कलशों के मुख को ढक देवें। कूर्च के मूल में स्थित चैतन्य को द्वादशान्त पंद्म (ब्रह्मरन्ध्र) में स्थित पामात्मा में मिलाने की कल्पना करें। ॐशिरसे स्वाहा कहकर-(प्रराव-ॐशिरोमन्त्र-शिरसे स्वाहा) द्वादशान्तपद्मस्थित परमात्मा के परचैतन्य रूप अमृत जल को कुम्भ में गिराने की कल्पना करें।

यत् किंचित् पत्रेरा कुम्भमुखमाच्छाद्य अन्यस्मिन् पात्रे स्वस्तिकोपरि गालितजलं उत्तरभगे न्यस्य जलस्य शोषरा दाहन प्लावनानि कृत्वा पीठं संपूज्य तत्र वरुरामावाह्य संपूज्य मूलेन च आवाह्य सकलीकृत्य संपूज्य नैवेद्य काले अर्घ्यं दत्वा पुष्पांजलिं कृत्वा पञ्चवारुरां प्रजप्य तज्जलं शंखे आदाय अष्टगंधं विलिप्य पद्ममूर्ति च संकल्प्य मूलेन स्वहृदयात् आवाह्य किंचित् संपूज्यतज्जलं कुम्भे निषिच्य शेष जलैः कुम्भं अर्धोत्तरं परिपूर्य लिपि पंकजं पूजयेत्। *(अनुष्ठान पद्धति)*
यज्ञीय वृक्ष के पत्ते से कलशों के मुख को ढकें ताकि कलश में विद्यमान अमृत बाहर न जा सकें। उत्तर दिशा में एक स्वस्तिक मराडल बनायें। उस पर एक ताम्र पात्र रखें। उसका मुख वस्त्र से बांधें। उसमें तीर्थ जल भरें।
ताम्र पात्र मे स्थत जल का शोषरा दाहन प्लावन करें। यं बीजमन्त्र को १६ बार जपकर शोषरा की कल्पना करें। रं बीजमन्त्र को १६ बार जप कर दाहन की कल्पना करें। वं बीज मन्त्र को १६ बार जपकर प्लावन की कल्पना करें। पं पद्माय नमः कहकर ताम्रपात्र के पीठ का पूजन करें। ॐवं वरुराय

नमः कहकर वरुण देव का ताम्रपात्र में आवाहन करें। **ॐ नमो नारायणाय** कहकर प्रधान देवता रुद्र का मूल मन्त्र से आवाहन करें। सकली करण कर ॐ हृदयाय नमः। ॐ शिरसे स्वाहा। ॐ शिखायैं वषट्। ॐ कवचाय हुम्। ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ अस्त्राय फट्। पूजन करें। लं पृथिव्यात्मने गंधं कल्पयामि। हं आकाशात्मने पुष्पं कल्पयामि। यं वाय्वात्मनो धूपं कल्पयामि। रं अग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि। वं अमृतात्मने नैवेद्य काले अर्ध्यं समर्पयामि। पं परमात्मने सर्वोपचार पूजां कल्पयामि। ॐ वं वरुणाय नमः। **ॐ नमो नारायणाय** पुष्पांजलिं समर्पयामि। कहकर पुष्पांजलि देवें। पात्र को छूकर मन्त्रों को (वारुण) पढें।

ॐ उदुत्तमं मुमुग्धि नो विपाशं मध्यमं चृत। अवाधमानिं जीवसे॥ *(ऋग्वेद १.२५.२१)*

ॐ अवते हेळोवरुणनमोभि रवं यज्ञेभिरीमहे हविर्भिः।
क्षयन्नस्मभ्यमसुर प्रचेता राजन्नेनांसि शिश्रथः कृतानि। *(ऋग्वेद १.२४.१४)*

ॐ इमं में वरुण श्रुधी हवमद्या च मृळय। त्वामवस्युराचके॥ *(ऋग्वेद १.२५.१९)*

ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेळमानो वरुणेह बोध्युरुशं समान आयुः प्रमोषीः॥ *(ऋग्वेद १.२४.११)*

ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेळोऽव यासिसीष्ठाः।
यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषांसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्॥ *(ऋग्वेद ४.१.४)*

इमा आपः शिवाः सन्तु शुभाः शुद्धाश्च निर्मलाः। पावन नाः शीलताश्चैव पूताः सूर्यस्य रश्मिमिः। इससे पात्र जल शुद्ध हुआ। उस पात्र जल को शंख में भर लेवें। अष्टगंध डालें। पं पद्माय नमः। कहकर पद्मका पूजन करें। **ॐ नमो नारायणाय**। कहकर सोम मूर्ति का पूजन करें। **ॐ नमो नारायणाय**। कहकर अपने हृदय में स्थित प्रधान देवता को जल में स्थापित करें। ॐ पं परमात्मने नमः। सर्वोपचार पूजां कल्पयामि। कहकर शंख जल को कलशों में भरें फिर कलशों में मन्त्रोंच्चार पूर्वक जल भरें।

ॐ प्रसुवं आपो महिमानंमुत्तमं कारुर्वोचाति सदंने विवस्वंतः।
प्रसप्तसंप्त त्रेधा हि चंक्रमुः प्रसृत्वंरीणा मति सिन्धु रोजंसा॥
प्रतेंऽरदुद्वरुंणो यातंवे पथः सिन्धोः यद्वाजाँ अभ्यद्रं वुस्त्वं।
भूम्या अधिं प्रवतां यासि सानुंना यदेंषामग्रं जगंतामिरज्यसिं॥
दिवि स्वनो यंतते भूम्योपर्यंनन्तं शुष्ममुदिंयर्ति भानुनां।
अभ्रादिंव प्रस्तंनयन्ति वृष्टयः सिन्धुर्यदेतिं वृषभो न रोरुंवत्॥
अभित्वां सिन्धो शिशुमिन्न मातरों वाश्रा अंर्षन्तिपयंसेव धेनवंः।
राजेंव युध्वां न यसि त्वमित् सिचौ चदांसामग्रं प्रवतामिनंक्षसि॥
इमं में गङ्गे यमुने सरस्वति शुतुंद्रि स्तोमं सचता परुष्णया।
असिक्न्या मंरुद्वृधे वितस्तयाऽऽर्जीकीये श्रुणुह्या सुषोमंया॥
सितासिते सरिते यत्रं सङ्गथे तत्राप्लुतासो दिवमुत्पंतन्ति।
एवैं तन्वंश्ं विसृंजन्ति धीरास्ते जनांसो अमृतत्वं भंजन्ते॥
तृष्टा मंया प्रथमं यातंवे सजूः सुसर्त्वां रसयां श्वेत्यात्या।
त्वं सिंन्धो कुभंया गोमतीं क्रुमुं मे हत्वा सरथं याभिरीयंसे॥

ऋजीत्येनी रुशंती महित्वा परिज्रयांसि भरते रजांसि।
अदंब्धा सिन्धुरपसामपस्तमाऽश्वान चित्रा वपुंषीव दर्शता ॥
स्वश्वा सिन्धुः सुरथां सुवासां हिरण्ययी सुकृता वाजिनींवती।
ऊर्णावती युवतिः सीलमांवत्युताधिं वस्ते सुभगां मधुवृधम् ॥
सुखं रथं युयुजे सिन्धुरश्विनं तेन वाजं सनिषदस्मिन्नाजौ।
महान ह्यस्य महिमापंनस्यतेऽदंब्धस्य स्वयंशसो विरप्शिनः ॥ *(ऋग्वेद १०.७५ सम्पूर्ण सूक्त)*

कलशों में जल भरने के बाद लिपि पंकज यानि अक्षरों से बने कमल की कल्पना कर कलश का पूजन करें। ॐ क्षं नमः पराय मूर्त्यात्मने नमः। ॐ ळं नमः पराय शिफात्मने नमः। ॐ हं नमः पराय नाळात्मने नमः। ॐ सं नमः पराय सर आत्मने नमः। ॐ षं नमः पराय कण्टकात्मने नमः। ॐ शं नमः पराय रंध्रात्मने नमः। ॐ वं नमः पराय धर्माय आग्नेय ग्रन्थ्यात्मने नमः। ॐ लं नमः पराय ज्ञानाय नैर्ऋत्य ग्रन्थ्यात्मने नमः। ॐ रं नमः पराय वैराग्याय वायव्य ग्रन्थ्यात्मने नमः। ॐ यं नमः पराय ऐश्वर्याय ऐश ग्रन्थ्यात्मने नमः। ॐ ॠं नमः पराय अज्ञानाय दक्षिण ग्रन्थ्यात्मने नमः। ॐ लृं नमः पराय अवैराग्याय वारुण ग्रन्थ्यात्मने नमः। ॐ लृं नमः पराय अनैश्वर्याय सौम्य ग्रन्थ्यात्मने नमः। ॐ कं खं गं नमः पराय पूर्वपत्रात्मने नमः। ॐ घं ङं च नमः पराय आग्नेय पत्रात्मने नमः। ॐ छं जं झं नमः पराय याम्य पत्रात्मने नमः। ॐ ञां टं ठं नमः पराय वारुण पत्रात्मने नमः। ॐ डं ढं णं नमः पराय वारुण पत्रात्मने नमः। ॐ तं थं दं नमः पराय वायव्य पत्रात्मने नमः। ॐ फं बं भं नमः पराय ऐश पत्रात्मने नमः। ॐ मं नमः पराय कतिर्णकात्मने नमः। ॐ अः आं नमः पराय पूर्वकेसरात्मने नमः। ॐ इः ईं नमः पराय आग्नेय केसरात्मने नमः। ॐ उः ऊं नमः पराय याम्य केसरात्मने नमः। ॐ ॠं नमः पराय नैर्ऋतय केसरात्मने नमः। ॐ लृः लृं नमः पराय वारुण केसरात्मने नमः। ॐ ऐः ऐं नमः पराय वायव्य केसरात्मने नमः। ॐ ओः औं नमः पराय सौम्य केसरात्मने नमः। ॐ अः अं नमः पराय ऐश केसरात्मने नमः। ॐ अं नमः पराय आत्मतत्वात्मने नमः। ॐ उं नमः पराय विद्यातत्वात्मने नमः। ॐ मं नमः पराय विद्यातत्वात्मने नमः। ॐ सं नमः पराय बिन्द्वात्मने नमः। ॐ हं नमः पराय नादात्मने नमः। ॐ ह्रीं नमः पराय शक्त्यात्मने नमः। ॐ नमः पराय शान्त्यात्मने नमः। *(अनुष्ठान पद्धति)*

इति लिपि पंकंजम्

वैदिक परम्परा में पिपियों का अत्यधिक महत्व है। लिपियों में ही सभी मन्त्र एवं सभी वेद है। उनमें सभी देवता भी विद्यमान है। कलश में लिपि पद्म की कल्पना कर उसमें सभी मन्त्रों का, सभी वेदों का एवं सभी देवताओं का पूजन होता है। लिपि का अत्यधिक महत्व होने के कारण पिपिन्यास विस्तार से किया जाता है। बड़े यज्ञों में इनका करना अनिवार्य है। पहले दिन ये सभी करते हैं। दूसरे दिन से पूजन कुछ कम होता है। बड़े यज्ञों में कलश पूजन के लिए एक पंरिडत अलग रहते हैं। अतः शेष कार्य में विलम्ब नहीं होता है। अभ्याय हो जाने पर इन सभी को करने में अधिक समय नहीं लगता है।

कलशे प्रधान देवता विष्णु आवाहन—ॐ नमो नारायणाय। श्री विष्णु मूर्तये नमः। ॐभूः विष्णु मूर्तिमावाहयामि। ॐभुवः विष्णु मूर्तिमावाहयामि। ॐस्वः विष्णु मूर्तिमावाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः विष्णु मूर्मिावाहयामि। आवाहितो भव। संस्थापितो भव। सन्निहितो भव। सन्निरुद्धो भव। अवरिठतो भव। अमृतीकृतो भव। व्याप्तो भव। सुप्रसन्नो भव। इतना कहकर विविभिन्न मुद्राओं से प्रधान देवता का आवाहन करें। **मूलाक्षराणि न्यस्य**। मूलक्षरों से न्यास करें। ॐऊं नमः। ॐन्नीं नमः। ॐवैं नमः। ॐश्रं नमः। ॐवं नमः। ॐणां नमः। ॐयं नमः। ॐनं नमः। ॐमं नमः। **ॐ नमो नारायणाय** कहकर पुष्पों से पूजन करें। **ॐ नमो नारायणाय**। इदं प्रसन्नार्घ्यं समर्पयामि। कहकर प्रसन्नार्घ्य जल छोडें। **ॐ नमो नारायणाय**। पुष्पांजलिं समर्पयामि। कहकर पुष्पांजलि देवें।

कलशे पञ्चामृत क्षेपः—कलश में पञ्चामृत डाले।

ॐ आप्यांयस्वसमेंतु ते विश्वतः सोमवृष्ण्यं। भवा वाजंस्य सङ्गथे॥ *(ऋग्वेद १.९१.१६)* कहकर कलशों में दूध डालें।

ॐ दधि क्राव्णों अकारिषं जिष्णोरश्वंस्य वाजिनः। सुरभिनो मुखांकरत्प्रण आयूंषितारिषत्॥ *(ऋग्वेद ४.३९.६)* कहकर दहि डालें।

ॐ घृतं मिंमिक्षे घृतमंस्य योनिर्घृते श्रितो घृतं वंस्य धामं।
अनुष्वधमावंह मादयंस्व स्वाहांकृतं वृषभवक्षिहव्यम्॥ *(ऋग्वेद २.३.११)* कहकर घी डालें।

ॐ मधुवातां ऋतायते मधुंक्षरन्ति सिंधवः। माध्वींर्नः संत्वोषंधीः॥
मधुनक्तं मुतोषंसो मधुंमत्पार्थिवं रजः। मधुद्यौरंस्तु नः पिता॥

मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः। माध्वी गावो भवन्तु नः॥ (ऋग्वेद १.९०.६-७-८) कहकर **शहद** डालें।

ॐ स्वादुः पवस्व दिव्याय जन्मने स्वादुरिन्द्रायसुहवीतुनाम्ने।

स्वादुर्मित्राय वरुणाय वायवे बृहस्पतये मधुमाँ अदाभ्यः॥ (ऋग्वेद ९.८२.६) कहकर शक्कर डालें।

कलशे पञ्चगव्य क्षेपण—

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥ (ऋग्वेद ३.६२.१०) कहकर कलशों में **गोमूत्र** डालें।

ॐ गंधद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।

ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्) कहकर **गोमय** डालें।

ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्ण्यं। भवा वाजस्य सङ्गथे॥ (ऋग्वेद १.९१.१६) कहकर कलशों में **दूध** डालें।

ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।

सुरभिनो मुखाकरत्प्रण आयूंषितारिषत्॥ (ऋग्वेद १४.३९.६) कहकर **दहि** डालें।

ॐ शुक्रमसि ज्योतिरसि तेजोसि देवो वः सवितोत्पुनात्वच्छिद्रेण

पवित्रेण वसोः सूर्यस्य रश्मिभिः॥ (यजुर्वेद १ काण्ड-१० अनुवाक-१ प्रश्न) कहकर **घी** डालें।

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेश्विनो पूष्णो हस्ताभ्यां॥ (यजुर्वेद १ काण्ड-४ अनुवाक-१ प्रश्न) कहकर कुशोदक डालें।

कलशे ओषध क्षेपः—ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषःपरि।

एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च॥ (यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक) कहकर – दूर्वा **तुलसी, बिल्वपत्र, आदि** डालें।

ॐ या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा।

मनैनु बभ्रूणामहंशतं धामानि सप्त च॥ *(ऋग्वेद १०.९७.१)* कहकर **दूर्वा, तुलसी, बिल्वपत्र** आदि डालें।

ॐ रुवति भीमो वृषभस्तं विश्यया शृङ्गे शिशानो हरिणी विचक्षणः।
आ योनिं सोमः सुकृतंनिषीदति गव्ययी त्वग्भवति निर्णिगव्ययी॥ *(ऋग्वेद ९.७०.७)* कहकर **दुर्वा, तुलसी, बिल्वपत्र** आदि डालें।

ॐ गंधद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ *(पञ्चम परिशिष्टम्)*
कहकर **पवित्र मृत्तिका** (मिट्टी) **गन्ध, इलायची**, लौंग, पच्चकर्पूर, केसर आदि सुगंध द्रव्य डालें।

कलशे कलावाहन—कलश में प्रधान देवता सूर्य कलावाहन करें। प्रधान देवता के ९६ कलायें हैं। इन कलाओं को शंख में आवाहन करना चाहिये। **शंख प्रक्षाल्य शंखे जलमापूर्य हृदय मन्त्रेण अष्टगंधं विलोड्य प्रणवाक्षरैः प्रणवेन च संपूज्य तत्र कलाः** पृथक् आवाहयेत्। पहले शंख को धो लेवें, शंख में जल भरें, ॐघृणिः सूर्यआदित्यः कहकर अष्टगंध को जल में मिलाकर अं नमः। उं नमः। मं नमः। ॐनमः। कहकर शंख में स्थित जल का पूजन करें। फिर उस जल में कलाओं का अलग-अलग आवाहन करें।

ॐह्रीं आं अमृतायै कलाशक्त्यै नमः। अमृतकला आवाहयामि। ॐह्रीं आं मानदायै कलाशक्त्यै नमः। मानदा कला आवाहयामि। ॐह्रीं इं पूषायै कलाशक्त्यै नमः। पूषा कला आवाहयामि। ॐह्रीं ई तुष्ट्यै कलायै कलाशक्त्यै नमः। तुष्टिकला आवाहयामि। ॐह्रीं उं पुष्टयै कलाशक्त्यै नमः। पुष्टिकला आवाहयामि। ॐह्रीं ऊं रत्यै कलाशक्त्यै नमः। रतिकला आवाहयामि। ॐह्रीं ऋं धृत्यै कलाशक्त्यै नमः। धृतिकला आवाहयामि। ॐह्रीं ॠं शशिन्यै कलाशक्त्यै नमः। शशिनी कला आवाहयामि। ॐह्रीं लृं चन्द्रिकायै कलाशक्त्यै नमः। चन्द्रिका कला आवाहयामि। ॐह्रीं लॄं कान्त्यै कलाशक्त्यै नमः। कान्तिकला आवाहयामि। ॐह्रीं ऐं ज्योत्स्नायै कलाशक्त्यै नमः। ज्योतस्ना कला आवाहयामि। ॐह्रीं ऐं श्रियै कलाशक्त्यै नमः। श्रीकला आवाहयामि। ॐह्रीं ओं प्रीत्यै कलाशक्त्यै नमः। प्रीतिकला आवाहयामि। ॐह्रीं हौं अङ्गदायै कलाशक्त्यै नमः। अङ्गदा कला आवाहयामि। ॐह्रीं अं पूर्णायै कलाशक्त्यै नमः पूर्णा कला आवाहयामि। ॐह्रीं अः पूर्णामृतायै कलाशक्त्यै नमः पूर्णामृत कला आवाहयामि *(अनुष्ठान पद्धति)*। यहाँ तक सोमकलाओं का आवाहन हुआ।

ॐ त्र्यँबकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥ *(ऋग्वेद ७.५९.१२)*

उं सोममण्डलाय षोडश कामप्रद कलात्मने नमः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हंसः सोम कलानां प्राणा इह प्राणाः। ॐआं ह्रीं क्रों य ल व श

ष स हों सं हंस: सोम कलानां जीव इह स्थित:। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सं: सोम कलानां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मन: चक्षुश्रोत्र घ्राणप्राणा: इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। इति प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा। यहाँ पर सोमकलाओं की प्राणप्रतिष्ठा हुई। ॐह्रीं कं भं तपिन्यै कलाशक्त्यै नम:। तपिनी कला आवाहयामि। ॐह्रीं खं बं तापिन्यै कलाशक्त्यै नम:। तापिनी कला आवाहयामि। ॐह्रीं गं फं धूम्रायै कलाशक्त्यैनम:। धूम्रा कला आवाहयामि। ॐह्रीं घं पं मरीच्यै कलाशक्त्यै नम:। मरीचिकला आवाहयामि। ॐह्रीं ङ. नं ज्वालिन्यै कलाशक्त्यै नम:। ज्वालिनी कला आवाहयामि। ॐह्रीं चं धं रुच्यै कलाशक्त्यै नम:। रुचि कला आवाहयामि। ॐह्रीं छं दं सुषुम्नायै कलाशक्त्यै नम:। सुषुम्ना कला आवाहयामि। ॐह्रीं जं थं भोगदायै कलाशक्त्यै नम:। भोगदा कला आवाहयामि। ॐह्रीं झं तं विश्वायै कलाशक्त्यै नम:। विश्वा कला आवाहयामि। ॐह्रीं ञां णं बोधिन्यै कलाशक्त्यै नम: बोधिनी कला आवाहयामि। ॐह्रीं टं ढं धारिण्यै कलाशक्त्यै नम:। धारिणी कला आवाहयामि। ॐह्रीं ठं डं क्षमायै कलाशक्त्यै नम:। क्षमा कला आवाहयामि। *(अनुष्ठान पद्धति)*

ॐ तत्स॑वि॒तुर्वरे॑ण्यं॒ भर्गो॑ दे॒वस्य॑ धीमहि। धियो॒ यो न॑: प्रचो॒दया॑त्॥ *(ऋग्वेद ३.६२.१०)*

ॐअं **सूर्यमण्डलाय** द्वादश वसुप्रद कलात्मने नम:। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स होसं हंस: सूर्य कलानां प्राणा इह प्राणा:। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हो सं हं स: सूर्यकलानां जीव इह स्थित:। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हंस: सूर्यकलानां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मन: चक्षुश्रोत्र घ्राणप्राणा: इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा इति प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा यहाँ पर १२ सूर्य कलाओं का आवाहन प्राणप्रतिष्ठा संपन्न हुआ।

ॐह्रीं यं धूम्रार्चिषे कलाशक्त्यै नम:। धूम्रर्चि: कला आवाहयामि। ॐह्रीं रं ऊष्मायै कलाशक्त्यै नम:। ऊष्माकला आवाहयामि। ॐह्रीं लं ज्वलिन्यै कलाशक्त्यै नम:। ज्वलिनी कला आवाहयामि। ॐह्रीं वं ज्वालिन्यै कलाशक्त्यै नम:। ज्वालिनी कला आवाहयामि। ॐह्रीं शं विष्फुलिंगिन्यै कलाशक्त्यै नम:। विष्फुलिङ्गिनी कला आवाहयामि। ॐह्रीं षं सुश्रियै कलाशक्त्यै नम:। सुश्रियै कला आवाहयामि। ॐह्रीं सं सुरूपायै कलाशक्त्यै नम: सुरूपा कला आवाहयामि। ॐह्रीं हं कपिलायै कलाशक्त्यै नम:। कपिला कला आवाहयामि। ॐह्रीं ळं हव्यवाहायै कलाशक्त्यै नम:। कव्यावाह कला आवाहयामि। *(अनुष्ठान पद्धति)*

ॐ जा॒तवे॑दसे सुनवाम॒ सोम॑मराती य॒तो नि द॑हाति॒ वेद॑:। स न॑: पर्ष॒दति॑ दु॒र्गाणि॒ विश्वा॑ ना॒वेव॒ सिन्धुं॑ दुरि॒तात्य॒ग्नि:॥

(ऋग्वेद १.९९.१)

ॐमं वह्निमण्डलाय दश धर्मप्रद कलात्मने नम:। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हंस: वह्नि कलानां प्राणा इह प्राण:। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श

ष स हों सं हं सः वह्नि कलानां जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रों च र ल व श ष स हों सं हं सः वह्निकलानां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुश्रोत्रघ्राणप्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। इति प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा।

यहाँ पर १० वह्नि कलाओं का आवाहन प्राणप्रतिष्ठा संपन्न हुआ। ॐ ह्लीं अं निवृत्यै कलाशक्त्यै नमः। निवृत्ति कला आवाहयामि। ॐ ह्लीं आं प्रतिष्ठायै कलाशक्त्यै नमः। प्रतिष्ठा कला आवाहयामि। ॐ ह्लीं इं विद्यायै कलाशक्त्यै नमः। विद्या कला आवाहयामि। ॐ ह्लीं ई शान्त्यै कलाशक्त्यै नमः। शन्ति कला आवाहयामि। ॐ ह्लीं उं इन्धिकायै कलाशक्त्यै नमः। इं धिका कला आवाहयामि। ॐ ह्लीं ऊं दीपिकायै कलाशक्त्यै नमः। दीपिका कला आवाहयामि। ॐ ह्लीं ॠं रेचिकायै कलाशक्त्यै नमः। मोचिका कला आवाहयामि। ॐ ह्लीं लृं परायै कलाशक्त्यै नमः। परा कला आवाहयामि। ॐ ह्लीं लृं सूक्ष्मायै कलाशक्त्यै नमः। सूक्ष्मा कला आवाहयामि। ॐ ह्लीं ऐं सूक्ष्मामृतायै कलाशक्त्यै नमः। सूक्ष्मामृता कला आवाहयामि। ॐ ह्लीं ऐं ज्ञानमृतायै कलाशक्त्यै नमः। ज्ञानामृता कला आवाहयामि। ॐ ह्लीं ओं आप्यायिन्यै कलाशक्त्यै नमः। आप्यायिनी कला आवाहयामि। ॐ ह्लीं औं व्यापिन्यै कलाशक्त्यै नमः। व्यापिनी कला आवाहयामि। ॐ ह्लीं अं व्योमरूपायै कलाशक्त्यै नमः। व्योमरूपा कला आवाहयामि। ॐ ह्लीं अः अनन्तायै कलाशक्त्यै नमः। अनन्ता कला आवाहयामि। *(अनुष्ठान पद्धति)*

ॐ विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टांरूपाणिं पिंशतु। आसिंञ्चतुप्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु ते॥ *(ऋग्वेद १०.१८४.१)*

ॐ सदाशिवाय नमः। ॐ आकाशात्मने नमः। ॐ शब्द तन्मात्रात्मने नमः। ॐ श्रोत्रात्मने नमः। ॐ वाग् वचनात्मने नमः। ॐ अनुग्रहात्मने नमः। ॐ शान्त्यतीतात्मने नमः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः नादकलानां प्राण इह प्राणाः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः नादकलानां जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः नादकलानां सर्वेद्रियाणि वाङ्मनः चक्षुश्रोत्रघ्राणप्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। इति प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा।

यहाँ पर **१६ नादकलाओं** का आवाहन प्राण प्रतिष्ठा (ॐकार की ध्वनि) संपन्न हुआ। ॐ ह्लीं षं पीतायै कलाशक्त्यै नमः।पीताकला आवाहयामि। ॐ ह्लीं सं श्वेतायै कलाशक्त्यै नमः। श्वेता कला आवाहयामि। ॐ ह्लीं हं अरुणायै कलाशक्त्यै नमः। अरुणा कला आवाहयामि। ॐ ह्लीं ळं असितायै कलाशक्त्यै नमः। असिता कला आवाहयामि। ॐ ह्लीं क्षं अनन्तायै कलाशक्त्यै नमः। अनंता कला आवाहयामि। *(अनुष्ठान पद्धति)*

ॐ तत्संवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्यं धीमहि। धियो यो नंः प्रचोदयांत्॥ *(ऋग्वेद ३.६२.१०)*

ॐ ईश्वराय नमः। ॐ वाय्वात्मने नमः। ॐ स्पर्शतन्मात्रात्मने नमः। ॐ त्वगात्मने नमः। ॐ पारयादानात्मने नमः। ॐ तिरोभवात्मने नमः। ॐ शान्त्यात्मने नमः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हंस बिन्दुकलानां प्राणा: इह प्राणा:। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हंस: बिन्दुकलानां जीव इह स्थित:। ॐ आं ह्रीं क्रां च र ल व श ष स हों सं हं स: बिन्दु कलानां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मन: चक्षुश्रोत्रघ्राणप्राणा: इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। *(अनुष्ठान पद्धति)*

इति प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा

यहां पर ५ विन्दुकलाओं का आवाहन प्राणप्रतिष्ठा संपन्न हुआ। ये बिन्दुकलायें ॐ कार के वर्ण (रंग) है। ॐ ह्रीं पं तीक्ष्णायै कलाशक्त्यै नमः। तीक्ष्णा कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं फं रौद्र्यै कलाशक्त्यै नमः। रौद्री कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं बं भयायै लाशक्त्यै नमः। भया कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं भं निद्रायै कलाशक्त्यै नमः। निद्रा कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं मं तन्द्रयै कलाशक्त्यै नमः। तन्द्री कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं यं क्षुधायै कलाशक्त्यै नमः। क्षुधा कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं रं क्रोधिन्यै कलाशक्त्यै नमः। क्रोधिनी कला आवाहयामि। ॐ हीं लं क्रियायै कलाशक्त्यै नमः। क्रिया कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं वं उत्कार्यै कलाशक्त्यै नमः। उत्कारी कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं शं मृत्युरूपायै कलाशक्त्यै नमः। मृत्युरूपा कला आवाहयामि। *(अनुष्ठान पद्धति)*

ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिं पुंष्टिवर्धंनम्। उर्वारुकमिंव बन्धंनान्मृत्योर्मुंक्षीय मामृतांत्॥ *(ऋग्वेद ७.५९.१२)*

ॐ सूर्याय नमः। ॐ अग्न्यात्मने नमः। ॐ रूप तन्मात्रात्मने नमः। ॐ चक्षुरात्मने नमः। ॐ पाद गमनात्मने नमः। ॐ संहारात्मने नमः। ॐ विद्यात्मने नमः। ॐ आं हीं क्रों य र ल व श ष सं हो सं हं स: मकार कलानां प्राणा इय प्राणा:। ॐ आं हीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हंस: मकार मलानां जीव इह स्थित:। ॐ आं हीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हंस: मकार कलानां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मन: चक्षुश्रोत्रघ्राणप्राणा: इहैवागत्य सुखं चिरं तिन्तु स्वाहा।

कहकर रुद्र कलाओं (मकार कला) का आवाहन प्रतिष्ठा करें। ॐ ह्रीं टं जरायै कलाशक्त्यै नमः। जरा कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं ठं पालिन्यै कलाशक्त्यै नमः। पालिनी कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं डं शान्त्यै कलाशक्त्यै नमः। शांति कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं ढं ऐश्वर्यै कलाशक्त्यै नमः। ऐश्वरी कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं णं रत्यै कलाशक्त्यै नमः। रति कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं तं कामिकायै कलाशक्त्यै नमः। वरदाकला आवाहयामि। ॐ ह्रीं थं वरदायै कलाशक्त्यै नमः वरदाकला आवाहयामि। ॐ ह्रीं दं ह्लादिन्यै कलाशक्त्यै नमः। ह्लादिनी कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं धं प्रीत्यै कलाशक्त्यै नमः। प्रीतिकला आवाहयामि। ॐ ह्रीं नं दीर्घायै कलाशक्त्यै नमः। दीर्घाकला आवाहयामि। *(अनुष्ठान पद्धति)*

ॐ प्रतद्विष्णुस्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः। यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा।। *(ऋग्वेद १.१५४.२)*

ॐ विष्णवे नमः। ॐ अबात्मने नमः। ॐ रसतन्मात्रात्मने नमः। ॐ जिह्वात्मने नमः। ॐ पायुविसर्गात्मने नमः। ॐ स्थित्यात्मने नमः। ॐ प्रतिष्ठात्मने नमः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हंसः उकार कलानां प्राणा इह प्राणाः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हंसः उकार कलानां जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हंसः उकार कलानां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुश्रोत्रघ्राण प्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। कहकर विष्णु कला (उकार कला) का आवाहन प्रतिष्ठा करें। ॐ ह्लीं कं सृष्ट्यै कलाशक्त्यै नमः। सृष्टिकला आवाहयामि। ॐ ह्लीं खं ऋध्यै कलाशक्त्यै नमः। ऋद्धिकला आवाहयामि। ॐ ह्लीं गं स्मृत्यै कलाशक्त्यै नमः। स्मृतिकला आवाहयाम। ॐ ह्लीं घं मेधायै कलाशक्त्यै नमः। मेधाकला आवाहयामि। ॐ ह्लीं ङ कान्त्यै कलाशक्त्यै नमः। कान्ति कला आवाहयामि। ॐ ह्लीं चं लक्ष्म्यै कलाशक्त्यै नमः। लक्ष्मीकला आवाहयामि। ॐ ह्लीं छं द्युत्यै कलाशक्त्यै नमः। द्युतिकला आवाहयामि। ॐ ह्लीं जं स्थिरायै कलाशक्त्यै नमः। स्थिराकला आवाहयामि। ॐ ह्लीं झं स्थित्यै कलाशक्त्यै नमः। स्थिति कला आवाहयामि। ॐ ह्लीं ञं सिद्ध्यै कलाशक्त्यै नमः। सिद्धिकला आवाहयामि। *(अनुष्ठान पद्धति)*

ॐ हंसः शुचिषद्वसुरंतरिक्ष सद्धोतावेदिषदतिथिर्दुरोणसत्।
नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतम्।। *(ऋग्वेद ४.४०.५)*

ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ पृथिव्यात्मने नमः। ॐ गंध तन्मात्रात्मने नमः। ॐ घ्राणात्मने नमः। ॐ उपस्थानन्दात्मने नमः। ॐ सृष्ट्यात्मने नमः। ॐ निवृत्यात्मने नमः। ॐ आं ह्लीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः अकार कलानां प्राणा इह प्राणाः। ॐ आं ह्लीं क्रों य र ल व श ष स हो सं हं सः अकार कलानां जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्लीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः अकारकलानां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुःश्रोत्र घ्राण प्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। कहकर ब्रह्म कला को (अकार कला) का आवाहन प्रतिष्ठा करें। ॐ ह्लीं इच्छायै कलाशक्त्यै नमः। इच्छा कला आवाहयामि। ॐ ह्लीं ज्ञानायै कलाशक्त्यै नमः। ज्ञान कला आवाहयामि। ॐ ह्लीं क्रियायै कलाशक्त्यै नमः। क्रिया कला आवाहयामि। ॐ शक्त्यात्मने नमः। ॐ आं ह्लीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः शक्ति कलानां जीव इह स्थितः।

ॐ आं ह्लीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः शक्ति कलानां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुश्रोत्रघाण प्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा कहकर **शक्ति**

कलाओं का अवाहन प्रतिष्ठा करें। ॐह्रीं चिदात्मने कलाशक्त्यै नमः। चित्कला आाहयामि। ॐह्रीं सदात्मने कलाशक्त्यै नमः। सत् कला आवाहयामि। ॐह्रीं आनंदात्मने कलाशक्त्यै नमः। आनंद कला आवाहयामि। ॐशांत्यात्मने नमः। ॐआं ह्रीं क्रो य र ल व श ष स हों सं हं सः शान्ति कलानां जीव इह स्थितः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः शान्ति कलानां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुःश्रोत्र घ्राणप्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। कहकर **शान्ति कलाओं** का आवाहन प्रतिष्ठा करें। ॐघृणिः सूर्यआदित्यः। सूर्यमावाहयामि। ॐलं पृथिव्यात्मने गन्धं कल्पयामि। ॐहं आकाशात्मने पुष्पं कल्पयामि। ॐयं वाय्वात्मने धूपं कल्पयामि। ॐरं अग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि। ॐवं अमृतात्मने नैवेद्यं कल्पयामि। ॐपं परमात्मने सर्वोपचार पूजां समर्पयामि। **कहकर शंख जल का पूजन करें**। ॐघृणिः सूर्यआदित्यः। कहते हुए शंख जल को प्रधान कलशा में डालें। यहाँ पर कला आवाहन संपन्न हुआ। *(अनुष्ठान पद्धति)*

प्रमाण—कलावाहन के तीन प्रकार है। १. सृष्टि क्रम। २. स्थिति क्रम। ३. संहार क्रम

सृष्टि क्रम—नूतन विग्रह प्रतिष्ठा में। इसमें क्रम से। १ सोम कला। २. सूर्य कला। ३. अग्निकला। ४. नाद कला। ५. बिंदु कला ६. मकार कला। ७. उकार कला। ८. अकार कला। ९. शक्ति कला। १०. शान्ति कला। इस क्रम से कलावाहन करें।

स्थिति क्रम—उत्सवादिकों में, कुम्भाभिषेक आदि निश्चत् कार्यक्रमों में (नित्य कार्यों में)। १. सूर्य कला। २. सोम कला। ३. अग्निकला। ४. बिंदु कला। ५. नाद कला। ६. मकार कला। ७. उकार कला। ८. अकार कला। ९. शक्ति कला। १०. शान्ति कला इस क्रम से कला वाहन करें।

संहार क्रम—प्रायश्चित्त, दोषपरिहारादिकों में, १. अग्निकला। २. सूर्य कला। ३. सोमकला। ४. अकार कला। ५. उकार कला। ६. मकार कला। ७. बिन्दु कला। ८. नाद कला। ९. शक्ति कला। १०. शान्ति कला इस क्रम से कलावाहन करें।

तत्वकलावाहनम्—शंखं प्रक्षाल्य पूजितं जलं शंखे आदाय अष्ट गंधं विलोड्य किंचित् संपूज्य तत्र तत्व कलावाहनं कुर्यात्। शंख को धोकर ताम्र पात्र में स्थित जल से शंख को भरें, अष्टगंध मिलाएं फिर पुष्पाक्षत डालकर शंख में तत्वावाहन करें। ॐमं नमः पराय पीवात्मने नमः। जीव तत्वमावहयामि। ॐभं नमः नमः पराय प्राणात्मने नमः। प्राणतत्वमावाहयामि। ॐबं नमः पराय बुध्यात्मने नमः। बुद्धितत्वमावाहयामि। ॐफं नमः पराय अहंकारात्मने नमः। अहंकार तत्वमावाहयामि। ॐपं नमः पराय शब्द तन्मात्रात्मने नमः। शब्दतन्मात्र तत्वं अवाहयामि। ॐधं नमः पराय स्पर्श तन्मात्रात्मने नमः। स्पर्श तन्मात्र तत्वमावाहयामि। ॐदं नमः पराय रूप तन्मात्रात्मने नमः। रूप तन्मात्र तत्वमावाहयामि। ॐथं नमः पराय रस तन्मात्रात्मने नमः। रस

तन्मात्र तत्वमावाहयामि। ॐतं नमः पराय गंध तन्मात्रात्मने नमः। गंध तन्मात्र तत्वमावाहयामि। ॐणां नमः पराय श्रोत्रात्मने नमः। श्रोत्रतत्वमावाहयामि। ॐढं नमः पराय त्वगात्मने नमः। त्वक्तत्वमावाहयामि। ॐडं नमः पराय चक्षुरात्मने नमः चक्षतत्वमावाहयामि। ॐठं नमः पराय जिह्वात्मने नमः। जिह्वातत्वमावाहयामि। ॐटं नमः पराय घ्राणात्मने नमः। घ्राणातत्वमावाहयामि। ॐञं नमः पराय वागात्मने नमः। वाक् तत्व मावाहयामि। ॐझं नमः पराय पाणयात्मने नमः। पाणि तत्वमावाहयामि। ॐजं नमः पराय पादात्मने नमः। पादतत्वमावाहयामि। ॐछं नमः पराय पाय्वात्मने नमः। पायुतत्वमावाहयामि। ॐचं नमः पराय उपस्थात्मने नमः। उपस्थतत्वमावाहयामि। ॐङं मः पराय आकाशात्मने नमः। आकाशतत्वमावाहयामि। ॐघं नमः पराय वाय्वात्मने नमः। वायु तत्व मावाहयामि। ॐगं नमः पराय तेज आत्मने नमः। तेजस्तत्वमावाहयामि। ॐखं नमः पराय अबात्मने नमः। अपृतत्वमावाहयामि। ॐकं नमः पराय पृथिव्यात्मने नमः। पृथिवी तत्वमावाहयामि। ॐहं नमः पराय सूर्यमण्डलाय द्वादश कलात्मने नमः। सूर्यमण्डलमावाहयामि। ॐसं नमः पराय सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः। सोममण्डलमावाहयामि। ॐरं नमः पराय वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः। वह्निमण्डलमावाहयामि। ॐहौं नमः पराय शान्त्यतीतात्मने नमः। शान्त्यतीततत्वमावाहयामि। ॐह्यैं नमः पराय शान्त्यात्मने नमः। शान्तित्वमावाहयामि। ॐह्रूं नमः पराय विद्यात्मने नमः। विद्यातत्वमावाहयामि। ॐह्वीं नमः पराय प्रतिष्ठात्मने नमः। प्रतिष्ठा तत्वमावाहयामि। ॐह्लां नमः पराय निवृत्यात्मने नमः। निवृत्ति कलामावाहयामि। इत्यावाह्य इतना कहकर शंख तें तत्वों का आवाहन करें। संक्षेप में पूजन करें। ॐलं पृथिव्यात्मने गंधं कल्पयामि। ॐहं आकाशात्मने पुष्पं कल्पयामि। ॐयं वाय्वात्मने धूपं कल्पयामि। ॐरं अग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि। ॐवं अबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि। ॐपं परमात्मने पञ्चोपचार पूजां समर्पयामि। शंखजलं कलशे निक्षिपेत्। **ॐ ह्रीं नमः शिवाय**। कहकर शंख जल को कलश में डालें। यहाँ पर तत्वकलावाहन संपन्न हुआ। *(अनुष्ठान पद्धति)*

कलशेन्यास विधानम्

अग्नि कला न्यास विधान—मूलाधारे दशदल पद्मं संकल्प्य अग्न्यादि दलेषु आग्नेय कलाः न्यस्य तत् स्थाने जातवेदस इति ऋचा मं वह्निमण्डलाय नमः इति समष्टिमन्त्रेण ॐआं ह्रीं क्रों इति प्राणप्रतिष्ठामन्त्रेण च व्याप्य ऊर्वोः संस्पृश्य, त्रिवारं प्रणवं संजप्य हृदि संस्पृश्य ॐह्रीं हं सः सो हं स्वाहा इति त्रिवारं जप्त्वा हृदिस्थाः देवताः **सर्वा हृदये नित्य संश्रिताः। हृदि सर्व समर्पयामि हृदि प्राणो प्रतिष्ठिताः**॥ इति जपेत्। *(अनुष्ठान पद्धति)* कलश के मूलाधार में दशदल पद्म का संकल्प कर आग्नेयादि दलों में आग्नेय कलाओं का न्यास करके उस स्थान पर "**जातवेदसे ऋक् से**" एवं **मं**

वह्निमराडलाय नमः इस समष्टि मन्त्र से ॐ आं ह्रीं क्रों प्राराप्रतिष्ठा मन्त्र से दोनों हाथों से व्यापन कर, कलश के निचले भाग को कुशाग्रों से छूकर, तीन बार प्राणव को जपकर **ॐ ह्रीं हं सः सो हं स्वाहा**, जपकर, **हृदिस्था** मन्त्र का जप करें।

अग्नि कला न्यास—ॐ ह्रीं यं धूम्रर्चिष कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं रं ऊष्मायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं लं ज्वलिन्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं वं ज्वालिन्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं शं विष्फुलिंगिन्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं षं सुश्रियै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं सं सुरूपायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं हं कपिलायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ळं हव्यवाहायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं क्षं कव्यवाहायै कलाशक्त्यै नमः।

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः॥ स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिंधुं दुरितात्यग्निः॥

(ऋग्वेद १.९९.१)

ॐ मं वह्निमराडलायदश धर्मप्रद कलात्मने नमः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः। ॐ मं वह्निकलानां प्राणा इह प्राणाः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः वह्निकलानां जीव इह स्थितः।

ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः वह्निकलानां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुश्रोत्रघ्राण प्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। कुशों से कलश के निचले भाग को छूते हुए बोले फिर ॐ ॐ ॐ कहें। हृदय को छूकर (कलश के मध्य भाग को ॐ ह्रीं हं सः सोहं स्वाहा कहें।

हृदिस्था देवताः सर्वाः हृदये नित्य संश्रिताः। हृदि सर्व समर्पयामि हृदि प्राणो प्रतिष्ठिताः। (अनुष्ठान पद्धति)

कहकर हाथ जोडकर प्रार्थना करें।

सूर्यकला न्यास विधान—हृदये द्वादशदल पभं संकल्प्य पूर्वादि दलेषु सूर्यकलाः न्यस्य तत् स्थाने गायत्री ऋचा अं सूर्य मराडलाय नमः इति समष्टिमन्त्रेण ॐ आं ह्रीं क्रों इति प्राणप्रतिष्ठा मन्त्रेण च व्याप्य ऊर्वोः संस्पृश्य त्रिवारं प्राणवं संजप्य हृदि संस्पृश्य ॐ ह्रीं हं सं: सोहं स्वाहा इति त्रिवारं जप्त्वा "हृदिस्था देवताः सर्वा हृदये नित्य संश्रिताः। हृदि सर्व समर्पयामि हृदि प्राणो प्रतिष्ठिता॥ (अनुष्ठान पद्धति) इति जपेत्।

कलश के मध्य (हृदय भाग) में द्वादश दल पद्म की संकल्प करें। पूर्वादि दलों से सूर्य कलाओं को न्यास करके, उस स्थान पर **गायत्री मन्त्र** से एवं अं सूर्यमण्डलाय नमः इस समष्टि मन्त्र से ॐ आं ह्रीं क्रों प्राणप्रतिष्ठामन्त्र से दोनों हाथों से व्यापन कर, कलश के निचले भाग को कुशाओं से छूकर तीन बार ॐकार का जपकर। ॐ ह्रीं हं सः सो हं स्वाहा तीन बार जपकर हृदिस्था मन्त्र से प्रार्थना करें।

सूर्यकला न्यास—ॐ ह्रीं कं भं तपिन्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं खं बं तापिन्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं गं फं धूम्रायै कलाशत्क्यै नमः। ॐ ह्री घं पं मरीच्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ङ. नं ज्वालिन्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं चं धं रुच्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं छं दं सुषुम्नायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं जं थं भोगदायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं झं तं विश्वायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ञां णां बोधिन्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं टं ढं धरिण्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ठं डं क्षमायै कलाशक्त्यै नमः।

ॐ ह्रीं तत्स॑वि॒तुर्वरे॑ण्यं॒ भर्गो॑ दे॒वस्य॑ धीमहि। धियो॒ यो नः॑ प्रचो॒दया॑त्। *(ऋग्वेद ३.६२.१०)*

ॐ अं सूर्यमण्डलाय द्वादश वसुप्रद कलात्मने नमः ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः सूर्यकलानां प्राण इह प्राणाः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः सूर्यकलानां जीवइहास्थितः ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः सूर्यकलानां सर्वेन्द्रियाणि वाङमनः चक्षु श्रोत्र घ्राणप्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। कुशों से कलश के निचल भाग को छूते हुए बोलें। फिर **ॐ ॐ ॐ** कहें। हृदय को छूकर (कलश के मध्य को) **ॐ ह्रीं हं सः सोहं स्वाहा तीन बार कहें।**

हृदिस्था देवताः सर्वाः हृदये नित्य संश्रिताः। हृदि सर्व समर्पयामि हृदि प्राणो प्रतिष्ठिताः॥ कहकर हाथ जोडकर प्रार्थना करें।

सोमकला न्यास विधान—द्वादशान्ते षोडश दल पद्मं संकल्प्य दलेषु सोमकलाः न्यस्य तत् स्थाने त्र्यंबक ऋचा व्याप्य उं सोममण्डलाय नमः इति समष्टि मन्त्रेण ॐ आं ह्रीं क्रों इति प्राणप्रतिष्ठामन्त्रेण च व्याप्य ऊर्वोः संम्पृश्य त्रिवारं प्रणवं संजप्य हृदि सम्पश्य ॐ ह्रीं हं सः सोहं स्वाहा इति त्रिवारं जप्त्वा

हृदिस्था देवताः सर्वाः हृदये नित्य संश्रिताः। हृदि सर्व समर्पयामि हृदि प्राणो प्रतिष्ठिताः॥ *(अनुष्ठान पद्धति) इति जपेत्।*

कलश के मुख (द्वादशान्त) में १६ दल के पद्म की संकल्प करें। उसमें सोमकलाओं का न्यास करके उस स्थान पर त्र्यंबकं यजामहे मन्त्र से एवं उं सोम मण्डलाय नमः इस समष्टि मन्त्र से एवं ॐ आं ह्रीं क्रों प्राण प्रतिष्ठा मन्त्र से दोनों हाथों से व्यापन कर कलश के निचले भाग को कुशाओं से छूकर तीन बार **ॐ कार** का जप करें। ॐ ह्रीं हं सः सोहं स्वाहा तीन बार कहकर हृदिस्था मन्त्र से प्रार्थना करें।

ॐ ह्रीं अं अमृतायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं आं मानदायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं इं पूषायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ई तुष्टयै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं उं पुष्टयै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ऊं रत्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ऋं धृत्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ॠं शशिन्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं लृं चन्द्रिकायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं लॄं कान्त्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ऐं ज्योत्स्नायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ऐं श्रियै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ओं प्रीत्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं औं अंगदाये कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं अं पूर्णायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं अः पूर्णामृतायै कलाशक्त्यै नमः।

ॐ त्र्यंबकं याजमहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिंव बन्धनान्मृत्यो मुंक्षीयमामृतांत्। *(ऋग्वेद ७.५६.१२)*

ॐ सोममण्डलाय षोडश काम प्रद कलात्मने नमः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः सोमकलानां प्राण इह प्राणः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः सोमकलानां जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः सोमकलानां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुश्रोत्रघ्राणप्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा *(अनुष्ठान पद्धति)*। कुशों से कलश के निचले भाग को छूते हुए बोलें। फिर **ॐ ॐ ॐ** कहें। कलश के मध्य भाग को छूकर तीन बार '**ॐ ह्रीं हं सः सोहं स्वाहा**' कहें।

हृदिस्थ देवता सर्वाः हृदये नित्य संश्रिताः। हृदि सर्व समर्पयामि हृदि प्राणे प्रतिष्ठिताः॥ कहकर हाथ जोडकर प्रार्थना करें।

अकार कला न्यास—पादयोः संध्यग्रेषु अकार कलान्यस्य तत् स्थाने हंसः शुचिष इत्यादि ऋचा व्याप्य ॐ ब्रह्मणे नमः इत्यादि समष्टि मन्त्रेण ॐ आं ह्रीं क्रों इति प्राण प्रतिष्ठा मन्त्रेण च व्याप्य ऊर्वोः संस्पृश्य त्रिवारं प्रणवं संजप्य हृदि संस्पृश्य ॐ ह्रीं हं सः सोहं स्वाहा इति त्रिवारं जप्त्वा 'हृदिस्था'' इति जपेत्। *(अनुष्ठान पद्धति)*

कलश के पाद में अकार कला का न्यास करें। उस स्थान पर हंसः शुचिष इति ऋक् से, ॐ ब्रह्मणे नमः इत्यादि समष्टि मन्त्रों से, एवं ॐ आं ह्रीं क्रों

प्राणप्रतिष्ठा मन्त्र से दोनों हाथों से व्यापन कर कलश के निचले भाग को कुशाग्रों से छूकर तीन बार ॐकारं का जप करें। ॐह्रीं हं सः सोहं स्वाहा तीन बार कहकर हृदिस्था मन्त्र से प्रार्थना करें।

ॐह्रीं कं सृष्ट्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्रीं खं ऋध्यै कलशशक्त्यै नमः। ॐह्रीं गं स्मृत्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्रीं घं मेधायै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्रीं ङ कान्त्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्रीं चं लक्ष्म्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्रीं छं धृत्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्रीं जं स्थिरायै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्रीं झं स्थित्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्रीं ञं सिद्ध्यै कलाशक्त्यै नमः।

ॐ हंसः शुचिषद्वसुरंत रिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्।
नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतम्॥ *(ऋग्वेद ४.४०.५)*

ॐब्रह्मणे नमः। ॐपृथिव्यात्मने नमः। ॐगंधतन्मात्रात्मने नमः। ॐसृष्ट्यात्मने नमः। ॐनिवृत्यात्मने नमः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः अकार कलानां प्राणा इह प्राणाः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः अकार कलानां जीव इह स्थितः।

ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः अकार कलानां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुश्रोत्र घ्राणप्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। कुशों से कलश के निचले भाग को छूते हुए बोलें। फिर **ॐ ॐ ॐ** कहें। कलश के मध्य भाग को छूकर तीन बार **ॐ ह्रीं हं सः सोहं स्वाहा** कहें।

हृदिस्था देवता सर्वाः हृदये नित्य संश्रिताः। हृदि सर्व समर्पयामि हृदि प्राणे प्रतिष्ठिताः॥ कहकर हाथ जोडकर प्रार्थना करें।

अकार कला न्यास—हस्तयोः संध्यग्रेषु उकार कलाः न्यस्य तत् स्थाने ॐ प्रतद्विष्णु इति ऋचा व्याप्य ॐ विष्णवे नमः इत्यादि समष्टिमन्त्रेण ॐ आं ह्रीं क्रों इति प्राणप्रतिष्ठा मन्त्रेण च व्याप्य ऊर्वोः संस्पृश्य त्रिवारं प्रणवं संजप्य ''ॐ ह्रीं हं सः सोहं स्वाहा'' इति त्रिवारं जप्त्वा हृदिस्था''। *(अनुष्ठान पद्धति) इति जपेत्*

कलश के मूल में उकार कला का न्यास करें। उस स्थान पर प्रतद्विष्णु इस ऋक् से ॐविष्णवे नमः इत्यादि समष्टि मन्त्रों से एवं ॐआं ह्रीं क्रों आदि प्राणप्रतिष्ठा मन्त्रों से व्यापन करें। कलश के निचले भाग को कुशाग्रों से छूकर तीन बार ॐकार का जप करें। ॐह्रीं हं सः सोहं स्वाहा तीन बार कहकर

हृदिस्था मन्त्र से प्रार्थना करें।

ॐ ह्रीं टं जरायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ठं पालिन्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं डं शान्त्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ढं ऐश्वर्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं णं रत्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं तं कामिकायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं थं वरदायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं दं ह्लादिन्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं धं प्रीत्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं नं दीर्घायै कलाशक्त्यै नमः।

ॐ प्रतद्विष्णुस्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः। यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा।। *(ऋग्वेद १.१५४.२)*

ॐ विष्णवे नमः। ॐ आत्मने नमः। ॐ रसतन्मात्रात्मने नमः। ॐ जिह्वात्मने नमः। ॐ पायुविसर्गात्मने नमः। ॐ प्रतिष्ठात्मने नमः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः उकार कलानां प्राण इह प्राणाः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः उकार कलानां जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः उकार कलानां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुश्रोत्र घ्राण प्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। कुशों से कलश के निचले भाग को छूते हुए **ॐ ह्रीं हं सः सोहं स्वाहा** तीन बार कहें।

हृदिस्था देवताः सर्वाः हृदये नित्य संश्रिताः। हृदि सर्व समर्पयामि हृदि प्राणो प्रतिष्ठिताः।। कहकर हाथ जोडकर प्रार्थना करें।

मकार कला न्यास—पायू वृषण अन्धुनाभि कुक्षि हृदय पार्श्वद्वय पृष्ठ ककुत्सु मकार कलाः न्यस्य तत् स्थाने त्र्यंबकं इति ऋचा ॐ सूर्याय नमः इत्यादि समष्टि मंत्रेण ॐ आं ह्रीं क्रां इति प्राणप्रतिष्ठा मन्त्रेण च व्याप्य ऊर्वोः संस्पृश्य त्रिवारं प्रणवं संजप्य हृदि संस्पृश्य 'ॐ ह्रीं हं सः सोहं स्वाहा' इति त्रिवारं जप्त्वा हृदिस्था इति जपेत्। *(अनुष्ठान पद्धति)*

कलश के मध्य में मकार कला का न्यास करें। उस स्थान पर त्र्यंबकं इस त्रकृ से ॐ सूर्याय नमः इत्यादि समष्टि मंत्रों से एवं ॐ आं ह्रीं क्रों इति प्राणप्रतिष्ठा मन्त्रों से व्यापन करें। कलश के मूल को छूकर तीन बार **ॐ ॐ ॐ** का जप करें। ॐ ह्रीं हं सः सोहं स्वाहा'' इसे तीन बार जपकर। ''हृदिस्था'' कहकर प्रार्थना करें।

ॐ ह्रीं पं तीक्ष्णायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं फं रौद्र्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं बं भयायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं भं निद्रायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं मं तन्द्र्यै

कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं यं क्षुधायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं रं क्रोधिन्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं लं क्रियायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं वं उत्कार्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं शं मृत्युरूपायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं त्र्यँबकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बंधनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥ ॐ सूर्याय नमः। ॐ ह्रीं अग्न्यात्मने नमः। ॐ रूप तन्मात्रात्मने नमः। ॐ चक्षुरात्मने नमः। ॐ पाद गमनात्मने नमः। ॐ संहारात्मने नमः। ॐ विद्यात्मने नमः। *(अनुष्ठान पद्धति)*

ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः कुमार कलानां प्राण इह प्राणाः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः मकार कलानां जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रां य र ल व श ष स हों सं हं सः मकार कलानां सर्वेन्द्रियाणि वङ्मनः चक्षुश्रोत्र घ्राण प्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। कुशों से कलश के मध्य भाग को छूते हुए बोलें। फिर **ॐ ॐ ॐ** कहें। कलश के मध्य को छूकर ''ॐ ह्रीं हं सः सोहं स्वाहा'' तीन बार कहें।

हृदिस्था देवता सर्वाः हृदये नित्य संश्रिताः। हृदि सर्व समर्पयामि हृदि प्राणे प्रतिष्ठिताः॥ कहकर हाथ जोडकर प्रार्थना करें।

कण्ठास्य भ्रूद्वय मूर्धसु बिन्दुकलाः न्यस्य तत् स्थाने तत्सवितुरिति ऋचा ॐ ईश्वराय नमः इत्यादि समष्टि मंत्रेण ॐ आं ह्रीं क्रों इति प्राणप्रतिष्ठामंत्रेण च व्याप्य ऊर्वोः संस्पृश्य त्रिवारं प्रणवं संजप्य हृदि संस्पृश्य ॐ ह्रीं हंसः सोहं स्वाहा इति त्रिवारं जप्त्वा हृदिस्था इति जपेत्।

कलश के मुख में बिंदु कला का न्यास करें। उस स्थान पर तत्सवितुः इस ऋक् से ॐ ईश्वराय नमः इत्यादि समष्टि मंत्र से ॐ आं ह्रीं क्रों इति प्राणप्रतिष्ठा मंत्र से व्यापन करें। ॐ ह्रीं हं सः सोहं स्वाहा इसे तीन बार जपकर ''हृदिस्था'' कहकर प्रार्थना करें। ॐ ह्रीं षं पीतायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं सं श्वेतायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं हं अरुणायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ळं असितायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं क्षं अनंतायै कलाशक्त्यै नमः।

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥ *(ऋग्वेद ३.६२.१०)*

ॐ ईश्वराय नमः। ॐ वाय्वात्मने नमः। ॐ स्पर्शतन्मात्रात्मने नमः। ॐ त्वगात्मने नमः। ॐ पाण्यादानात्मने नमः। ॐ तिरोभवात्मने नमः। ॐ शान्त्यात्मने नमः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः बिन्दुकलानां प्राण इह प्राणाः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः बिन्दुकलानां जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः बिन्दुकलानां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुश्रोत्रघ्राण प्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। कुशों से कलश के मुख भाग को छूते हुए बोलें फिर **ॐ ॐ ॐ** कहें। कलश के मध्य को छूकर ''**ॐ ह्रीं हं सः सोहं स्वाहा**'' तीन बार कहें।

हृदिस्था देवता सर्वाः हृदये नित्य संश्रिताः। हृदि सर्व सपर्मयामि हृदि प्राणे प्रतिष्ठिताः॥ कहकर हाथ जोडकर प्रार्थना करें।

नाद कला न्यास—प्रतिलोम स्वरस्थानेषु नादकलान्यस्य तत् स्थाने विष्णुर्यो निमिति ऋचा ॐ ह्रीं सदाशिवाय नमः इत्यादि समष्टि मंत्रेण ॐ आं ह्रीं क्रों इति प्राणप्रतिष्ठा मंत्रेण च व्याप्य ऊर्वोः संस्पृश्य त्रिवारं प्रणवं संजप्य हृदि संस्पृश्य ''ॐ ह्रीं हं सः सोहं स्वाहा इति त्रिवारं जप्त्वा हृदिस्था इति जपेत्। *(अनुष्ठान पद्धति)*

संपूर्ण कलश को कुशाग्रों से छूते हुए नाद कलाओं का न्यास करें। उस स्थान पर विष्णुर्योनीति ऋक् से ॐसदाशिवाय नमः इत्यादि समष्टिमंत्रों से ॐआं ह्रीं क्रों इति प्राणप्रतिष्ठामंत्र से व्यापन करके कलश के मूल को छूकर ॐॐॐकहें। कलश के मध्य को छूकर ''ॐह्रीं हं सः सोहं स्वाहा'' इसे तीन बार जप करें। कलश के मध्य को छूकर हृदिस्था कहकर प्रार्थना करें। ॐह्रीं अं निवृत्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्रीं आं प्रतिष्ठायै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्रीं इं विद्यायै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्रीं ई शांत्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्रीं उं इन्धिकायै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्रीं ऊं दीपिकायै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्रीं ऋं रेचिकायै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्रीं ॠं मोचिकायै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्रीं लृं परायै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्रीं लॄं सूक्ष्मायै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्रीं ऐं सूक्ष्मामृतायै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्रीं ऐं ज्ञानामृतायै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्रीं ओं आप्यायिन्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्रीं औं व्यापिन्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्रीं अं व्योमरूपायै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्रीं अः अनन्तायै कलाशक्त्यै नमः।

ॐ विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टारूपाणिपिंशतु। आसिञ्चतु प्रजापति र्धाता गर्भं दधातु ते॥ *(ऋग्वेद १०.१८४.१)*

ॐसदाशिवाय नमः। ॐआकाशात्मने नमः। ॐशब्दतन्मात्रात्मने नमः। ॐश्रोत्रात्मने नमः। ॐवाग् वचनात्मने नमः। ॐअनुग्रहात्मने नमः। ॐशान्त्यतीतात्मने नमः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हंसः नादकलानां प्राणा इह प्राणः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हंसः नादकलानां जीव इह स्थितः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हंसः नादकलानां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुश्रोत्रघ्राणप्राणाः। इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वहा। *(अनुष्ठान पद्धति)* कुशों से कलश के सर्वाङ्ग को छूकर बोलें। फिर ॐॐॐकहें। कलश के मध्य को छूकर ''ॐह्रीं हं सः सोहं स्वाहा'' तीन बार कहें

हृदिस्था देवता सर्वाः हृदये नित्य संश्रिताः। हृदि सर्व समर्पयामि हृदि प्राणे प्रतिष्ठिताः॥ कहकर हाथ जोडकर प्रार्थना करें।

शक्ति कला न्यास—मूलाधार हृदय मूर्धसु शक्तिकला न्यस्य ॐशक्त्यात्मने नमः इति समष्टि मन्त्रेण ॐआं ह्रीं क्रों इति प्राण प्रतिष्ठामंत्रेण च

व्याप्य ऊर्वो: संस्पृश्य त्रिवारं प्रणवं संजप्य हृदिसंस्पृश्य ॐ ह्रीं हं स: सोहं स्वाहा इति त्रिवारं जप्त्वा ''हृदिस्था'' इति जपेत्। कलश के सर्वाङ्ग को कुशों से छूकर न्यास करें। **ॐ शक्त्यात्मने नम:**। इस समष्टिमंत्र से ॐ आं ह्रीं क्रों इत्यादि प्राणप्रतिष्ठा मंत्र से व्यापन करें। कलश के मूल को कुशों से छूकर तीन बार ॐ ॐ ॐ का जप करें। ॐ ह्रीं हं स: सोहं स्वाहा'' इसे तीन बार जपकर

हृदिस्था देवता सर्वा: हृदये नित्य संश्रिता। हृदि सर्वं समर्पयामि हृदि प्राणो प्रतिष्ठिता: ।।

कहकर हाथ जोडकर प्रार्थना करें। ॐ ह्रीं इच्छायै कलाशक्त्यै नम:। ॐ ह्रीं ज्ञानायै कलाशक्त्यै नम:। ॐ ह्रीं क्रियायै कलाशक्त्यै नम:। ॐ शक्त्यात्मने नम:। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं स: शक्ति कलानां प्राणा इह प्राणा:। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं स: शक्ति कलानां जीव इह स्थित:। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं स: शक्ति कलानां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मन: चक्षुश्रोत्रघ्राण प्राणा:। *(अनुष्ठान पद्धति)* इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा कुशों से कलश के सर्वाङ्ग को छूकर बोलें। फिर **ॐ ॐ ॐ** कहे। कलश के मूल को छूकर ''**ॐ ह्रीं हं स: सोहं**'' स्वाहा तीन बार कहें।।

हृदिस्था देवता सर्वा: हृदये नित्य संश्रिता:। हृदि सर्व समर्पयामि हृदि प्राणो प्रतिष्ठिता: ।। कहकर हाथ जोडकर प्रार्थना करें।

शान्ति कला न्यास—हृदये शान्तकला: न्यस्य ॐ शान्त्यात्मने नम: समष्टि मन्त्रेण ॐ आं ह्रीं क्रों इति प्राणप्रतिष्ठामंत्रेण च व्याप्य ऊर्वो: संस्पृश्य त्रिवारं प्रणवं संजप्य हृदि संस्पृश्य ॐ ह्रीं हं स: सोहं स्वाहा इति त्रिवारं जप्त्वा हृदिस्था इति जपेत्। *(अनुष्ठान पद्धति)*

कलश के मध्य में कुशों से छूकर न्यास करें। ''ॐ शान्त्यात्मने नम:'' समष्टि मंत्र से ॐ ह्रीं क्रों इत्यादि प्राणप्रतिष्ठा मन्त्र से व्यापन करें। कलश के मूल को कुशों से छूकर तीन बार ॐ ॐ ॐ का जप करें। ''**ॐ ह्रीं हं स: सोहं स्वाहा**'' इसे तीन बार कहकर हृदिस्था इससे प्रार्थना करें।

ॐ ह्रीं चिदात्मने कलाशक्त्यै नम:। ॐ ह्रीं सदात्मने कलाशक्त्यै नम:। ॐ ह्रीं आनंदात्मने कलाशक्त्यै नम:। ॐ शांत्यात्मने नम:। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं स: शान्ति कलानां प्राणा इह प्राणा:। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं स: शांति कलानां जीव इह स्थित:। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं स: शान्ति कलानां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मन: चक्षु श्रोत घ्राणप्राणा: इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा। कुशों से कलश के सर्वाङ्ग को छूकर

बोलें। फिर ॐ ॐ ॐ कहें। कलश के मूल को छूकर "ॐ ह्रीं हं सः सोहं" स्वाहा तीन बार कहें।

हृदिस्था देवताः सर्वाः हृदये नित्य संश्रिताः। हृदि सर्व समर्प्यादि हृदि प्राणेः प्रतिष्ठिताः॥ *(अनुष्ठान पद्धति)*

कहकर हाथ जोडकर प्रार्थना करें।

कलशे लिपि न्यासः—ॐ अं नमः। ॐ आं नमः। ॐ इं नमः। ॐ ईं नमः। ॐ उं नमः। ॐ ऊं नमः। ॐ ऋं नमः। ॐ ॠं नमः। ॐ लृं नमः। ॐ पं नमः। ॐ पें नमः। ॐ ओं नमः। ॐ औं नमः। ॐ अं नमः। ॐ अः नमः। ॐ कं नमः। ॐ खं नमः। ॐ गं नमः। ॐ घं नमः। ॐ ङं नमः। ॐ चं नमः। ॐ छं नमः। ॐ जं नमः। ॐ झं नमः। ॐ ञं नमः। ॐ टं नमः। ॐ ठं नमः। ॐ डं नमः। ॐ ढं नमः। ॐ णं नमः। ॐ तं नमः। ॐ थं नमः। ॐ दं नमः। ॐ धं नमः। ॐ नं नमः। ॐ पं नमः। ॐ फं नमः। ॐ बं नमः। ॐ भं नमः। ॐ मं नमः। ॐ यं नमः। ॐ रं नमः। ॐ लं नमः। ॐ वं नमः। ॐ शं नमः। ॐ षं नमः। ॐ सं नमः। ॐ हं नमः। ॐ ळं नमः। ॐ क्षं नमः। कलश को कुशों से छूकर न्यास करें। *(अनुष्ठान पद्धति)*

कलशे तत्व न्यासः—ॐ मं नमः पराय जीवात्मने नमः। ॐ भं नमः पराय प्राणात्मने नमः। ॐ बं नमः पराय बुध्यात्मने नमः। ॐ फं नमः पराय अहंकारात्मने नमः। ॐ पं नमः पराय मन आत्मने नमः। ॐ नं नमः पराय शब्द तन्मात्रात्मने नमः। ॐ घं नमः पराय स्पर्श तन्मात्रात्मने नमः। ॐ दं नमः पराय रूप तन्मात्रात्मने नमः। ॐ थं नमः पराय रस तन्मात्रात्मने नमः। ॐ तं नमः पराय गंध तन्मात्रात्मने नमः। ॐ णं नमः पराय श्रोत्रात्मने नमः। ॐ ढं नमः पराय त्वगात्मने नमः। ॐ डं नमः पराय चक्षुरात्मने नमः। ॐ ठं नमः पराय जिह्वात्मने नमः। ॐ टं नमः पराय घ्राणात्मने नमः। ॐ ञं नमः परय वागात्मने नमः। ॐ झं नमः पराय पाण्यात्मने नमः। ॐ जं नमः पराय पादात्मने नमः। ॐ छं नमः पराय पाय्वात्मने नमः। ॐ चं नमः पराय उपस्थात्मने नमः। ॐ ङं नमः पराय आकाशात्मने नमः। ॐ घं नमः पराय वाय्वात्मने नमः। ॐ गं नमः पराय तेज आत्मने नमः। ॐ खं नमः पराय अपात्मने नमः। ॐ कं नमः पराय पृथिव्यात्मने नमः। ॐ शं नमः पराय हृत्पुण्डरीकात्मने नमः। ॐ हं नमः पराय सूर्यमण्डलाय द्वादश कलात्मने नमः। ॐ सं नमः पराय सोममण्डलाय षोडश कलात्मने नमः। ॐ रं नमः पराय वह्निमण्डलाय दशकालात्मने नमः। ॐ हौं नमः परात्र शान्त्यतीतात्मने नमः। ॐ ह्यैं नमः पराय शान्त्यात्मने नमः। ॐ ह्रूं नमः पराय विद्यात्मने नमः। ॐ ह्रीं नमः पराय प्रतिष्ठात्मने नमः। ॐ ह्रां नमः पराय निवृत्यात्मने नमः। *(अनुष्ठान पद्धति)* कहकर कुशों से कलश को छूकर न्यास करें।

ॐ नमो नारायणाय। विष्णुमूर्तिमावाहयामि। आवाहितो भव। संस्थापितो भव। सन्निहितो भव। सन्निरुद्धो भव। अवगुण्ठितो भव। अमृतीकृतो भव। व्यासो भव। सुप्रसन्नो भव। कहकर मुद्राओं का प्रदर्शन करें।

ॐ पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत। वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्जं शतक्रतो ॥ *(यजुर्वेद-१ काण्ड-८ प्रश्न-४ अनुवाक-२ मन्त्र)*

अनेन कलशे शेषं संपूर्य। (उपरोक्त मन्त्र को कहकर कलश में जल भरें। ॐ अस्त्राय फट् इति।)

ॐ प्रवो यज्ञेषु देवयन्तो अर्चन् द्यावा नमोभिः पृथिवी इषध्यै।
येषां ब्रह्माण्यसमानि विप्रा विष्वग्वियन्ति वनिनो न शाखाः ॥ *(ऋग्वेद ७.४३.१)*

इति पल्लवादिकं न्यस्य (कहकर कलश में पल्लव आम, पीपल, पलाश के पते रखें।) पूर्णपात्रे शुक्लतण्डुलान् प्रयूर्य कलशे स्थाप्य (पूर्णपात्र में) (बड़ी कटोरी) में सफेद चावलों को भरकर कलश के ऊपर रखें।

प्रतिमा शुद्धि विधान *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*—इसमें पूजन में रखने वाला प्रतिमा का शुद्धीकरण होता है।

देशकालौ संकीर्त्य अस्याः प्रतिमायाः अंग प्रत्यंग संधि समुत्पन्न वास्यग्नि कुद्दालाग्नि टंकाग्न्यातप निरासार्थे अग्न्युत्तारणं करिष्ये इति संकल्प्य देशकालों का स्मरण कर इस प्रतिमा के अंग प्रत्यंगों के जोड में बनाते समय लगे विभिन्न उपकरणों के चोट से एवं बनाते समय तपाने से एवं धूप में सूखाने से उत्पन्न सभी दोषों के निवारण के लिए शुद्धि करने का संकल्प लेवें।

अग्निः सप्तिमिति वर्गेण अग्निपदत्यागेन पठितेन पुनः अग्निपदसहितेन पठितेनैक मार्वतनं भवति एवं अष्टशतवारं अष्टविंशतिवारं वा पठित्वा संततं जल धारां कुर्यात्। अग्निः सप्ति इस वर्ग से (सात मंत्र) पहले अग्निपद छोडकर पढें फिर उन मन्त्रों को अग्नि पद जोडकर पढें। तब एक आवर्तन हुआ। ऐसे १०८ आवर्तन या २८ आवर्तन करें आगे मन्त्र लिखा है वह आवर्तन का है। अग्नि सप्तिमिति सप्तर्चस्य सूक्तस्य सौचिको वैश्वानर स्त्रिष्टुप्। अग्न्युत्तारणे विनियोगः।

ॐ सप्तिं वाजं भरं ददाति वीरं श्रुत्यं कर्मनिष्ठाम्। रोदसी विचरन्त्समञ्जन्नारीं वीर कुक्षिं पुरंधिं ॥
ॐ अप्रसः समिदस्तु भद्रा मही रोदसी आविवेश। एकं चोदयत्समत्सु वृत्राणि दयते पुरूणि ॥
ॐ हत्यं जरतः कर्णमावादभ्यो निरदहज्जरूथं। अत्रिं धर्मउरुष्य दंतर्नृमेधं प्रजया सृजत्सं ॥

ॐ द्वाद्रविणं वीरपेशा ऋषिं यः सहस्रां सनोति। दिविहव्यमाततान धामानिविभृता पुरुत्रा ॥
ॐ उक्थैर्ऋषयोविह्वयंते नरोयामनि बाधितासः। वयों अंतरिक्षे पततः सहस्रा परियातिगोनां ॥
ॐ विशईळते मानुषीर्यामनुषोन हुषोविजाताः। गांधर्वी पथ्यांमृतस्य गव्यूति घृत आनिषत्ता ॥
ॐ ब्रह्म ऋभवस्ततक्षुर्महामवो चामासुवृक्तिं। प्रावंजरितारय विष्ठ महिद्रविणामायजस्व ॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-अग्न्युत्तारण विधान)*

यहाँ पर अग्निपद रहित सूक्त संपन्न हुए आगे अग्नि पद सहित सूक्त—

ॐ अग्निः सप्तिं वाजं भरं ददात्यग्नि वीरं श्रुत्यं कर्मनिष्ठां। अग्नेरोदसी विचरत्समजन्नग्निर्नारीं वीर कुक्षिं पुरंधिं ॥
ॐ अग्नेरप्नस समिदस्तु भद्राग्निर्महीरोदसी आविवेश। अग्निरेकं चोदयत्समत्स्वग्नि वृत्राणिदयते पुरूणि ॥
ॐ अग्निर्हत्यं जरतः कर्णमावाग्निरद्भ्योनिरदहज्जरूथं। अग्निरत्रिं घर्म उरुष्यदंत रग्निनृमेधं प्रजयां सृजत्सं ॥
ॐ अग्निर्दा द्रविणं वीरपेशा अग्निर्ऋषिं यः सहस्रां सनोति। अग्निर्दिविहव्यमाततानाग्ने धर्मानिविभृता पुरुत्रा ॥
ॐ अग्निमुक्थैर्ऋ षयोविह्वयंतेग्निं नरोयामनिबाधितासः।अग्निं वयों अंतरिक्षे पततोऽग्निः सहस्रा परियातिगोनां ॥
ॐ अग्निंविशईळते मानुषीर्याअग्निंमनुषोन हुषोविजाताः। अग्निर्गांधर्वी पथ्यांमृतस्याग्नेर्गव्यूति घृत आनिषत्ता ॥
ॐ अग्नये ब्रह्म ऋभववस्ततक्षुरग्निं महामवोचामासुवृक्तिं।
अग्ने प्रावंजरितारंयविष्ठाग्नेमहिद्रविणामायजस्व ॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-अग्न्युत्तारण विधान)*

इन अग्न्युत्तारण सूक्तों से प्रतिमा पर सतत जल धारा करने से प्रतिमा की शुद्धि होती है। उस प्रतिमा को चावल से भरे पूर्ण पात्र में रखें।

याः फलिनीर्या अफला अपुष्पायाश्च पुष्पिणीः। बृहस्पतिं प्रसूतास्तानो मुचंत्वं हसः ॥ *(ऋग्वेद १०.९७.१५)*

कहकर चावल से भरे पात्र में प्रतिमा के ऊपर नारियल रखें। ॐअस्त्राय फट्। ॐकवचाय हुम्।

ॐ युवं वस्त्राणि पीवसावसाथे युवोरच्छिद्रामंतवोहसर्गाः। अवातिरतमनृतानि विश्व ऋतेन मित्रावरुणासचेथे॥ *(ऋग्वेद १.१५२.१)*

कहकर दो वस्त्रों से लपेटें सभी कलशों को वस्त्र लपेटें।

ॐ गंधं द्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

गंधं समर्पयामि। कहकर चन्दन चढायें।

ॐ अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत। अर्चन्तु पुत्रका उतपुरन्नघृष्णवर्चत॥ *(ऋग्वेद ८.६९.८)*

अक्षतान् समर्पयामि। कहकर अक्षत से पूजन करें।

ॐ आयंनेते परायणे दूर्वारोहंतु पुष्पिणीः। ह्रदाश्च पुण्डरीकाणि समुद्रस्य गृहा इमे॥ *(ऋग्वेद १०.१४२.८)*

पुष्पाणि समर्पयामि। **कहकर फूल चढायें।**

ॐ पवित्रं ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषिविश्वतः। अतप्ततनूर्न तदामो अश्नुते शृतास इद्वहन्तस्तत् समाशत॥ *(ऋग्वेद ९.८३.१)*

पवित्रं समर्पयामि। **कहकर दो कुशा को बाँधकर रखें।** ॐ **नमो नारायणाय।** विष्णुमूर्तिमावाहयामि। आवाहितो भव संस्थापितो भव। सन्निहितो भव। सन्निरुद्धो भव। अवगुंठितो भव। अमृतीकृतो भव। व्याप्तो भव। सुप्रसन्नो भव।

ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि। तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्॥

साध्यानारायणऋषिः। देवीगायत्री छन्दः। विष्णुर्देवता। न्यासे विनियोगः। ॐहृदयाय नमः। ॐशिरसे स्वाहा। ॐशिखायै वषट्। ॐकवचाय हुम्। ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐअस्त्राय फट्। ॐभूर्भुवः स्वरोमिति दिग्बन्धः। **कहकर न्यास करें।**

आगे ध्यान—

विष्णुं जिष्णुं महाविष्णुं प्रभविष्णुं महेश्वरम्। अनेकोत्पात शमनं नमामि पुरुषोत्तमम्॥

ॐनमो नारायणाय।। इस मूल मंत्र को आठ बार जप करें। ॐलं पृथिव्यात्मने गंधं कल्पयामि। अंगुष्ठाग्र कनिष्ठिका मूल। ॐहं आकाशात्मने पुष्पं कल्पयामि। अंगुष्ठ अग्र तर्जनी मूल मध्यमा। ॐरं अग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि। अंगुष्ठा अग्र मध्यमा ॐवं अबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि। अंगुष्ठ अग्र अनामिका मूल ॐपं परमात्मने पञ्चोपचार पूजां समर्पयामि। (जहाँ भी पञ्चोपचार पूजन आता है वहाँ इसी क्रम से अङ्गुलियों को मिलाकर दिखायें।)

प्रथमावरण पूजनम्—पूर्वादिक्रमेण ॐविमलायै नमः १। ॐ उत्कर्षिण्यै नमः २। ॐ ज्ञानायै नमः ३। ॐ क्रियायै नमः ४। ॐ योगायै नमः ५। ॐ प्रह्वयै नमः ६। ॐ सत्यायै नमः ७। ॐ ईशानायै नमः ८। मध्ये ॐ अनुग्रहायै नमः ९।

द्वितीयावरण पूजनम्—ॐब्राह्मयै नमः। पूर्वे ॐमाहेश्वर्यै नमः। आग्नेय दिशि। ॐकौमार्यै नमः। दक्षिण दिशि। ॐवैष्णव्यै नमः। नैऋत्यां दिशि। ॐवाराह्यै नमः पश्चिम दिशि। ॐइन्द्राण्यै नमः। वायव्यां दिशि। ॐचामुण्डायै नमः। उत्तरस्यां दिशि। ॐगिरिजायै नमः ऐशान्यां दिशि। *(अनुष्ठान पद्धति)*

तृतीयावरण पूजनम्—ॐइन्द्राय सुराधिपतये पीतवर्णाय वज्रहस्ताय ऐरावत वाहनाय सशक्ति काय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवारायश्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐअग्नये तेजोधिपतये पिंगलवर्णाय शाक्ति हस्ताय मेष वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय स वाहनाय स परिवाराय श्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐयमाय प्रेताधिपतये कृष्णवर्णाय दण्ड हस्ताय महिष वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐनिषतये रक्षोधिपतये रक्तवर्णाय खड्ग हस्ताय नरवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐवरुणाय जलाधितये कुंदवर्णाय पाशहस्ताय मकरवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐवायवे प्राणाधिपतये धूम्रवर्णाय अंकुश हस्ताय हरिणवाहनाय सशक्ति काय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐसोमाय नक्षत्राधिपतये शुक्लवर्णाय गदा हस्ताय अश्व वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐईशानाय विद्याधिपतये स्फटिकवर्णाय त्रिशूल हस्ताय वृषभ वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री महाविष्णुमूर्तिपार्षदाय नमः। ॐअनंताय नागाधिपतये क्षीरवर्णाय चक्रहस्ताय गरुड वाहनाय स शक्तिाकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। नैर्ऋत्यं एवं पश्चिम दिशा के बीच में अनन्त का पूजन करें। ॐब्रह्मणे लोकाधिपतये कंजवर्णाय पषहस्ताय हंसवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। पूर्व एवं ईशान दिशा के बीच में ब्रह्मा जी का पूजन करें। *(अनुष्ठान पद्धति)*

चतुर्थावरणापूजनम्—ॐवज्राय नमः। (पूर्व में) ॐशक्त्यै नमः। (आग्नेय में) ॐदण्डाय नमः। (दक्षिण में) ॐखड्गाय नमः। (नैऋत्य) ॐपाशाय नमः। (पश्चिम में) ॐअंकुशाय नमः। (वायव्य में) ॐगदायै नमः। (उत्तर में) ॐत्रिशूलाय नमः। (ईशान में) ॐचक्राय न मः। (पश्चिम नैऋत्य के बीच में) ॐपद्माय नमः। (पूर्व ईशान के बीच में) *(अनुष्ठान पद्धति)* इदं विष्णुर्मेधातिथिर्विष्णुर्गायत्री विष्णुआवाहने विनियोगः।

कलशे महाविष्णु आवाहनम्— ॐ इदं विष्णुर्वि चंक्रमे त्रेधा नि दंधे पदं। समूंह्ळमस्य पांसुरे। *(ऋग्वेद १.२२.१७) आ. गृ. सूत्रम्*
ॐभूः महाविष्णुमूर्तिमावाहयामि। ॐभुवः महाविष्णुमूर्तिमावाहयामि। ॐस्वः महाविष्णुमूर्तिमावाहयामि। ॐभुर्भुवः स्वः महाविष्णुमूर्तिमावाहयामि। (वेद मंत्र से आवाहन) ॐ नमो नारायणाय । ॐभूः महाविष्णुमूर्तिमावाहयामि। ॐभुवः महाविष्णुमूर्तिमावाहयामि। ॐस्वः महाविष्णुमूर्तिमावाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः महाविष्णुमूर्तिमावाहयामि। (नाम मंत्र से आवाहन) ॐसर्वभूतपतये नमः। ॐभूः सर्वभूतपतिमावाहयामि। ॐभुवः सर्वभूतपतिमावाहयामि। ॐभू र्भुवः स्वः सर्वभूतपतिमावाहयामि। ॐविष्णवे नमः। ॐभूः विष्णुमावाहयामि। ॐभुवः विष्णुमावाहयामि। ॐस्वः विष्णुमावाहयामि। ॐभू र्भुवः स्वः विष्णुमावाहयामि। ॐईश्वराय नमः। ॐभूः ईश्वरमावाहयामि। ॐभुवः ईश्वरमावाहयामि। ॐस्वः ईवरमावाहयामि। ॐभू र्भुवः स्वः ईश्वरमावाहयामि। ॐसर्वोत्पातशमनाय नमः। ॐभूः सर्वोत्पातशमनं आवाहयामि। ॐभुवः सर्वोत्पातशमनमावाहयामि। ॐस्वः सर्वोत्पातशमनमावाहयामि। ॐभूर्भवः स्वः सर्वोत्पापशमनमावाहयामि। **अथ कल्पोक्त षोडशोपचार पूजां करिष्ये** (यहाँ से मण्डल में एवं कलश में आवाहित देवताओं का पूजन प्रारंभ।)

नवशक्ति पूजन

ॐविमलायै नमः १। ॐ उत्कर्षिण्यै नमः २। ॐ ज्ञानायै नमः ३। ॐ क्रियायै नमः ४। ॐ योगायै नमः ५। ॐ प्रह्वयै नमः ६। ॐ सत्यायै नमः ७। ॐ ईशानायै नमः ८। मध्ये ॐ अनुग्रहायै नमः ९। ॐभगवते सकल गुणात्मशक्तियुक्ताय अनंताय योग पीठात्मने नमः। सुवर्ण पीठं कल्पयामि। स्वात्मसंस्थमजं शुद्धं त्वामद्य परमेश्वर। अरण्यामिव हव्याशं कुम्भे आवाहयाम्यहम्॥ ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः विष्णुप्राणाइह प्राणाः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः विष्णु जीवइहस्थितः ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः विष्णु सर्वेन्द्रियाणि वाडमनः चक्षुश्रोत्र घ्राण प्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा। *(अनुष्ठान पद्धति)*

ॐ असुंनीते पुनंरस्मासु चक्षुः पुनंः प्राणमिह नों धेहि भोगं। ज्योक्पंश्येम सूर्यमुच्चरंन्त मनुंमते मृळयांनः स्वस्ति।

(ऋग्वेद १०.५९.६)

ॐ पुनर्नो असुं पृथिवी ददातु पुनर्द्यौर्देवी पुनरन्तरिक्षम्। पुनर्नः सोमस्तन्वं ददातु पुनः पूषा पथ्यां या स्वस्तिः।
(ऋग्वेद १०.५९.७)

सशक्ति सांग सायुध सवाहन सपरिवार श्रीसोम भगवन् अत्रैवागच्छागच्छ आवाहयिष्ये। आवाहितो भव। संस्थापितो भव। सन्निहितो भव। सन्निरुद्धो भव। अवगुण्ठितो भवः। अमृतीकृतो भव। व्याप्तो भव। सुप्रसन्नो भव। ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि। तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्॥ साध्यानारायणऋषिः। देवीगायत्री छन्दः। विष्णुर्देवता। न्यासे विनियोगः। ॐ हृदयाय नमः। ॐ शिरसे स्वाहा। ॐ शिखायै वषट्। ॐ कवचाय हुम्। ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ अस्त्राय फट्। ॐ भूर्भुवः स्वरोमिति दिग्बन्धः। कहकर न्यास करें।

षोडशोपचार पूजनम्—

ध्यान—विष्णुं जिष्णुं महाविष्णुं प्रभविष्णुं महेश्वरम्। अनेकोत्पात शमनं नमामि पुरुषोत्तमम्॥ नमोनारायणाय।

आवाहन-ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिं विश्वतोवृत्वात्य तिष्ठद् दशांगुलम्॥ (ऋग्वेद १०.९०.१)
ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजत स्रजाम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवार श्री विष्णवे नमः। आवाहयामि। आवाहनं समर्पयामि।

आसनम्—ॐ पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेना तिरोह ति॥ (ऋग्वेद १०.९०.२)
ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। आसनं समर्पयामि।

पाद्यम्— ॐ एतावानस्य महिमाऽतो ज्यायाँश्च पुरुषः। पादोऽस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥ (ऋग्वेद १०.९०.३)
ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद प्रमोदिनीम्। श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। पादारविंदयोः पाद्यं पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यं— ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत् पुरुषः पादोऽस्येहा भवत्पुनः। ततो विश्वं व्यक्रामत् साशनानशने अभि॥ (ऋग्वेद १०.९०.४)

ॐ कां सोस्मितां हिरण्य प्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।

पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहो पह्वये श्रियम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्) सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। हस्तयोः अर्घ्यमर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनम्—ॐ तस्माद्विराळजायत विराजो अधिपूरुषः। स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथोपुरः। (ऋग्वेद १०.९०.५)

ॐ चंद्रां प्रभासां यशसा ज्वलंतीं श्रियं लोके देवजुष्टा मुदाराम्।

तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मेनश्यतां त्वां वृणे॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। मुखे आचमनीयं समर्पयामि।

पञ्चामृत स्नानम् (दूध)— ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्णियं। भवावाजस्य संगथे। (ऋग्वेद १०.९१.१६)

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। पयः स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः। भवे भवेनातिं भवे भवस्वमाम् भवोद्भवाय नमः॥

(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत् आरण्यक)

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि

दहि— ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभिनोमुखा करत्प्रण आयूंषितारिषत्॥ (ऋग्वेद ४.३९.६)

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। दधि स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमश्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमःकलविकरणाय

नमो॒बला॑य नमो॒ बल॑प्रमथनाय॒ नम॒स्सर्व॑भूतदमनाय॒ नमो॑ म॒नोन्म॑नाय॒ नम॑:। (यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। शुद्धोदक स्नानं सपर्मयामि।

घी— ॐ घृ॒तं मि॑मिक्षे घृ॒तम॑स्य॒योनि॑र्घृ॒ते श्रि॒तो घृ॒तं व॑स्य॒ धाम॑।
अ॒नुष्व॒धमाव॑ह मा॒दय॑स्व॒ स्वाहा॑कृतं वृषभवक्षि ह॒व्यम्॥ (ऋग्वेद २.३.११) सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। घृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल— ॐ अ॒घोरे॑भ्योऽथ॒ घोरे॑भ्यो॒ घोर॒घोर॑ तरेभ्यः। सर्वे॑भ्य॒: सर्व॒शर्वे॑भ्यो॒ नम॑स्ते अस्तु रु॒द्ररू॑पेभ्यः॥
(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

मधु (शहद)— ॐ मधुवाता॑ ऋतायु॒ते मधु॑क्षरंति॒ सिंध॑वः। माध्वी॑र्नः स॒न्त्वोष॑धीः॥ म॒धुनक्त॑मु॒तोषसो॒ मधु॑म॒त् पार्थि॑व॒ं रज॑:।
मधु॒द्यौर॑स्तु नः पि॒ता॥ मधु॑मान्नो॒ व॒नस्पति॒र्मधु॑माँ अस्तु॒ सूर्य॑:। माध्वी॒र्गावो॑ भवंतु नः॥ (ऋग्वेद १.९०.६) सपरिवार

श्रीविष्णवे नमः। मधु स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल— ॐ तत्पुरु॑षाय वि॒द्महे॑ महादे॒वाय॑ धीमहि। तन्नो॑ रुद्रः प्रचो॒दया॑त्॥ (यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। शुद्धोदक स्नानं सपर्पयामि।

शर्करा (शक्कर)— ॐ स्वा॒दु॒: प॑वस्व दि॒व्याय॒ जन्म॑ने स्वा॒दुरिं॒द्रा॑य सुहवी॑तु नाम्ने।
स्वा॒दुर्मि॒त्राय॒ वरु॑णाय वा॒यवे॒ बृह॒स्पत॑ये॒ मधु॑मा॒ अदा॑भ्यः॥ (ऋग्वेद ९.८५.६)

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। शर्करा स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जन— ॐ ईशानस्सर्व॑ वि॒द्याना॒मीश्वरस्सर्व॑ भूता॒नां॒ ब्रह्माधि॑पति॒र्ब्रह्मणोऽ

धिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोऽम् ॥ *(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)*

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

फल— ॐ याः फलिनी र्या अफला अपुष्पायाश्च पुष्पिणीः। बृहस्पति प्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्वं हंसः ॥ *(ऋग्वेद १०.९७.१५)*

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। फल स्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदक—ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवस्तानऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे ॥ यो वः शिवतमोरसस्तस्य भाजयते हनः।
उशतीरिव मातरः ॥ तस्मा अरंगमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः। *(ऋग्वेद १०.९.१-२-३)*

ॐ कद्रुद्राय प्रचेतसे मीळहुष्टमाय तव्यसे। वोचेम शंतमं हृदे ॥ *(ऋग्वेद १.४३.१)*

ॐ यथा नो अदितिः करत्पश्वे नृभ्यो यथा गवे। यथा तोकाय रुद्रियम् ॥ *(ऋग्वेद १.४३.२)*

ॐ यथा नो मित्रो वरुणो यथा रुद्रश्चिकेतति। यथा विश्वे सजोषसः।

ॐ गाथपतिं मेधपतिं रुद्रं जलाषभेषजम्। तच्छं योः सुम्नमीमहे ॥

ॐ यः शुक्र इव सूर्यो हिरण्यमिव रोचते। श्रेष्ठो देवानां वसुः।

ॐ शं नः करत्यर्वते सुगं मेषाय मेष्ये। नृभ्यो नारिभ्यो गवे ॥

ॐ अस्मे सोम श्रियमधि नि धेहि शतस्य नृणाम्। महिश्रवस्तुविनृम्णम् ॥

ॐ मानः सोमपरिबाधो मारातयो जुहुरंत। आ न इंदो वाजे भज ॥

ॐ यास्ते प्रजा अमृतस्य परस्मिन्धामन्नृतस्य। मूर्धा नाभा सोमवेन आ भूषंतीः सोम वेदः ॥ *(ऋग्वेद १.४३.३-४-५-६-७-८-९)*

ॐ नमः सोमाय च रुद्राय च नमस्ताम्राय चारुणाय च नमः शंगाय च पशुपतये च नम उग्राय च भीमाय च नमो

अग्रेवधाय च दूरेवधाय च नमो हन्त्रे च हनीयसे च नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो नमस्ताराय नमः शंभवे च मयोभवे च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च नम स्तीर्थ्यायच कूल्याय च नमः पार्याय चावार्याय च नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च नम आतार्याय चालाद्याय च नमशष्प्याय च फेन्याय च नमःसिकत्याय च प्रवाह्याय च। *(यजुर्वेद-४ काराड-५ प्रश्ने-८ अनुवाक)*

ॐ तच्छंयोरावृणीमहे। गातुं यज्ञाय। गातुं यज्ञ पतये। दैवीः स्वस्तिरस्तु नः। स्वस्तिर्मानुषेभ्यः।
ऊर्ध्वं जिगातु भेषजम्। शं नो अस्तु द्विपदे। शं चतुष्पदे। ॐ शांतिः शांतिः। शांतिः॥ *(यजुर्वेद-आरराधक)*
ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसंतो अस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥ *(ऋग्वेद १०.९०.६)*
ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदंतु मायांतरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः। *(ऋग्वेद पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)*

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

वस्त्र— ॐ युवं वस्त्राणि पीवसावसाथे युवोरच्छिद्रा मंतवो हसर्गाः।
अवातिरमनृतानि विश्व ऋतेन मित्रा वरुणा सचेथे॥ *(ऋग्वेद १.१५२.१)*
ॐ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः। तेन देवा अयजंत साध्या ऋषयश्च ये॥ *(ऋग्वेद १०.९०.७)*
ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥
(ऋग्वेद पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। वस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतं—ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्रयं प्रतिमुंञ्चशुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥

ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम्। पशून्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्यान् ग्राम्याश्च ये॥ (ऋग्वेद १०.९०.८)

ॐ क्षुत् पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वान्निर्णुद मे गृहात्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

आभरण—ॐ हिरण्यरूपः स हिरण्य संदृगपान्नपात् सेदु हिरण्यवर्णः। हिरण्ययात् परियोनेर्निषद्या हिरण्यदा ददत्यन्नमस्मै॥
(ऋग्वेद २.३५.१०)

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। आभरणं समर्पयामि।

गन्ध— ॐ गंधं द्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्य जुस्तस्मादजायत॥ (ऋग्वेद १०.९०.९)

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। गन्धं समर्पयामि।

अक्षत—ॐ अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत। अर्चन्तु पुत्रका उतपुरंन्न धृष्णवर्चत॥ (ऋग्वेद ८.६९.८)

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पाणि—ॐ आयने ते परायणे दूर्वारोहंतु पुष्पिणीः। ह्रदाश्च पुण्डरीकाणि समुद्रस्य गृहा इमे॥ (ऋग्वेद १०.१४२.८)

ॐ तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः। गावोहजज्ञिरे तस्मात् तस्माज्जाता अजावयः॥ (ऋग्वेद १०.९०.१०)

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥ (ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। पुष्पाणि समर्पयामि।

प्रथमावरण पूजनम्—ॐ हृदयाय नमः। आग्नेय दिशि। ॐ शिरसे स्वाहा नमः। ऐशान्यां दिशि। ॐ शिखायै वषट् नमः। नैर्ऋत्यां दिशि। ॐ कवचाय हुम्

नमः। वायव्यां दिशि। ॐनेत्रत्रयाय वौषट् नमः। अग्रे ॐअस्त्राय फट् नमः। आग्नेयादि कोणेषु पूजयेत् *(अनुष्ठान पद्धति)*। पूजन करे।

द्वितीयावरण पूजनम्—ॐब्राह्मयै नमः। पूर्वे ॐमाहेश्वर्यै नमः। आग्नेय दिशि। ॐकौमार्यै नमः। दक्षिण दिशि। ॐवैष्णव्यै नमः। नैऋत्यां दिशि। ॐवाराह्यै नमः पश्चिम दिशि। ॐइन्द्राण्यै नमः। वायव्यां दिशि। ॐचामुण्डायै नमः। उत्तरस्यां दिशि। ॐगिरिजायै नमः ऐशान्यां दिशि। *(अनुष्ठान पद्धति)*

तृतीया**वरण पूजनम्**—ॐइन्द्राय सुराधिपतये पीतवर्णाय वज्रहस्ताय ऐरावत वाहनाय सशक्ति काय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवारायश्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐअग्नये तेजोधिपतये पिंगलवर्णाय शक्ति हस्ताय मेष वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय स वाहनाय स परिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐयमाय प्रेताधिपतये कृष्णवर्णाय दण्ड हस्ताय महिष वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐनिर्ऋतये रक्षोधिपतये रक्तवर्णाय खड्ग हस्ताय नरवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐवरुणाय जलाधितये कुंदवर्णाय पाशहस्ताय मकरवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐवायवे प्राणाधिपतये धूम्रवर्णाय अंकुश हस्ताय हरिणवाहनाय सशक्ति काय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐसोमाय नक्षत्राधिपतये शुक्लवर्णाय गदा हस्ताय अश्व वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐईशानाय विद्याधिपतये स्फटिकवर्णाय त्रिशूल हस्ताय वृषभ वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐअनंताय नागाधिपतये क्षीरवर्णाय चक्रहस्ताय गरुड वाहनाय स शक्तिाकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। नैर्ऋत्यं एवं पश्चिम दिशा के बीच में अनन्त का पूजन करें। ॐब्रह्मणे लोकाधिपतये कंजवर्णाय पाशहस्ताय हंसवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। पूर्व एवं ईशान दिशा के बीच में ब्रह्मा जी का पूजन करें। *(अनुष्ठान पद्धति)*

चतुर्थावरणपूजनम्—ॐवज्राय नमः। (पूर्व में) ॐशक्त्यै नमः। (आग्नेय में) ॐदण्डाय नमः। (दक्षिण में) ॐखड्गाय नमः। (नैर्ऋत्य) ॐपाशाय नमः। (पश्चिम में) ॐअंकुशाय नमः। (वायव्य में) ॐगदायै नमः। (उत्तर में) ॐत्रिशूलाय नमः। (ईशान में) ॐचक्राय न मः। (पश्चिम नैर्ऋत्य के बीच में) ॐपद्माय नमः। (पूर्व ईशान के बीच में) *(अनुष्ठान पद्धति)*

विष्णु अष्टोत्तर शतनाम पूजा

ॐ विष्णवे नमः। ॐ लक्ष्मीपतये नमः। ॐ कृष्णाय नमः। ॐ वैकुण्ठाय नमः। ॐ गरुडध्वजाय नमः। ॐ जगन्नाथाय नमः। ॐ परब्रह्मणे नमः। ॐ वासुदेवाय नमः। ॐ त्रिविक्रमाय नमः। ॐ दैत्यान्तकाय नमः। ॐ मधुरिपवे नमः। ॐ तार्क्ष्यवाहनाय नमः। ॐ सनातनाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ पद्मनाभाय नमः। ॐ हृषीकेशाय नमः। ॐ सुधाप्रदाय नमः। ॐ माधवाय नमः। ॐ पुण्डरीकाक्षाय नमः। ॐ स्थितिकर्त्रे नमः। ॐ परात्पराय नमः। ॐ वनकालिने नमः। ॐ यज्ञ रूपाय नमः। ॐ चक्र पाणये नमः। ॐ गदाधराय नमः। ॐ उपेन्द्राय नमः। ॐ केशवाय नमः। ॐ हंसाय नमः। ॐ समुद्रमथनाय नमः। ॐ हरये नमः। ॐ गोविन्दाय नमः। ॐ ब्रह्मजनकाय नमः ॐ कैटभासुरमर्दनाय नमः। ॐ श्रीधराय नमः। ॐ कामजनकाय नमः ॐ शेषशायिने नमः। ॐ चतुर्भजाय नमः। ॐ पाञ्चजन्यधराय नमः। ॐ श्रीमते नमः। ॐ शार्ङ्गपाणये नमः। ॐ जनार्दनाय नमः। ॐ पीताम्बरधराय नमः। ॐ देवाय नमः। ॐ सूर्यचन्द्रविलोचनाय नमः। ॐ मत्स्यरूपाय नमः। ॐ कूर्मतनवे नमः। ॐ क्रोडरूपाय नमः। ॐ नृकेसरिणे नमः। ॐ वामनाय नमः। ॐ भार्गवाय नमः। ॐ रामाय नमः। ॐ बलिने नमः। ॐ कल्किने नमः। ॐ हयाननाय नमः। ॐ विश्वम्भराय नमः। ॐ शिशुमाराय नमः। ॐ श्रीकराय नमः। ॐ कपिलाय नमः। ॐ ध्रुवाय नमः। ॐ दत्तात्रेयाय नमः। ॐ अच्युताय नमः। ॐ अनन्ताय नमः। ॐ मुकुन्दाय नमः। ॐ दधिवामनाय नमः। ॐ धन्वन्तरये नमः। ॐ श्रीनिवासाय नमः। ॐ प्रद्युम्नाय नमः। ॐ पुरुषोत्तमाय नमः। ॐ श्रीवत्सकौस्तुभधराय नमः। ॐ मुरारातये नमः। ॐ अधोक्षजाय नमः। ॐ ऋषभाय नमः। ॐ मोहिनी रुप धारिणे नमः। ॐ सङ्कर्षणाय नमः। ॐ पृथवे नमः। ॐ क्षीराब्धिशायिने नमः। ॐ भूतात्मने नमः। ॐ अनिरुद्धाय नमः। ॐ भक्तवत्सलाय नमः। ॐ नराय नमः। ॐ गजेन्द्रवरदाय नमः। ॐ त्रिधाम्ने नमः। ॐ भूतभावनाय नमः। ॐ श्वेतद्वीपसुवास्तव्याय नमः। ॐ सनकादिमुनिध्येयाय नमः। ॐ भगवते नमः। ॐ शङ्करप्रियाय नमः। ॐ नीलकान्ताय नमः। ॐ धराकान्ताय नमः। ॐ वेदात्मने नमः। ॐ बादरायणाय नमः। ॐ भागीरथीजन्मभूमि पादपद्माय नमः। ॐ सतांप्रभवे नमः। ॐ स्वभुवे नमः। ॐ विभवे नमः। ॐ घनश्यामाय नमः। ॐ जगत्कारणाय नमः। ॐ अव्ययाय नमः। ॐ बुद्धावताराय नमः। ॐ शान्तात्मने नमः। ॐ लीलामानुष विग्रहाय नमः। ॐ दामोदराय नमः। ॐ विराड्रूपाय नमः। ॐ भूतभव्यभवत्प्रभवे नमः। ॐ आदिदेवाय नमः। ॐ प्रह्लादपरिपालकाय नमः। ॐ श्रीमहाविष्णवे नमः। अष्टोत्तर शतनाम पूजां समर्पयामि। *(अनुष्ठान पद्धति)*

धूपम्—ॐ वनस्पति रसोत्पन्नो गंधाढ्यः सुमनोहरः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्य कौ बाहू का ऊरू पादा उच्येते॥ *(ऋग्वेद १०.९०.११)*

ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि संभव कर्दम। श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥ *(ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। धूपं आघ्रापयामि।

दीपम्— आज्यं त्रिवर्ति संयुक्तं वह्निना योजितं मया। गृहाण मंगलं दीपं त्रैलोक्य तिमिरापह॥ *(स्मृति संग्रह)*

ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत॥ *(ऋग्वेद १०.६०.१२)*

ॐ आपः सृजंतु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे। नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥ *(ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। दीपं दर्शयामि। धूप दीपानंतरं आचमनीयं समर्पयामि।

नैवेद्यम्—देवस्याग्रे स्थलं संशोध्य गोमयेन मण्डलं कृत्वा तत्र शुद्धं पात्रं न्यस्य अभिघार्य निर्मलं हवि तदुपरि न्यस्य आज्येन द्रवीभूतं कृत्वा "ॐ भू र्भुवः स्वः इति गायत्र्या च प्रोक्ष्य वायु बीजं जप्त्वा निवेद्यान्नं संशोध्य इक्षिणहस्ते अग्निबीजं विलिख्य तेन हस्तेन संदह्यवामहस्ते अमृतबीजं विलिख्य तेत हस्तेन हविराप्लाव्य मूलमंत्रमष्टवारं संजप्य मंत्रामृतमयं संकल्प्य सुरभिमुद्रां बध्वा अमृतमयं भावयित्वा मल धातु रसांशं विभज्य देवस्य निवेद्य ग्रहणेच्छां कुर्यात्।

(अनुष्ठान पद्धति)

"सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि" इत्यनेन

परिषिच्य हस्ताभ्यां पुष्पैः "देवस्य जिह्वार्चीरुचि निवेद्ये निपात्य निवेदयामि भवते जुषाणेदं हविर्विभो" इति वामहस्तेन ग्रासमुद्रा प्रदर्श्य दक्षिण हस्तेन प्राणादि मुद्राः प्रदर्शयेत्। अन्नात् मलांशं धात्वंशं च परित्यज्य रसांशं देवस्य वदनार्चिषि समर्पयेत्। वं अबात्मने इति नैवेद्य मुद्रां प्रदर्शयेत्।

नैवेद्य सारं रससमर्पणात् जातं सुधांशं देवे समर्प्य अंललिमुद्रां बध्वा नैवेद्यसार रससमर्पित जातामृतमय सुधांशुना पुनः पुनः वर्धितं देवं हृन्मूर्ति देवं ध्यायन् स्व स्व मूलमन्त्रं यथा शक्ति जप्त्वा।

कलश के आगे स्थल शुद्धिकर गोमय से शुद्धिकर चतुरस्र मण्डल को बनाकर उस पर शुद्ध पात्र को रखें। पात्र में थोडा सा घी डालें। उस पात्र में निर्मल

हविस् (नैवेद्य पदार्थ को) को घी पर रखें उस हविस् को घी से भिगोयें। गायत्री मंत्र से नैवेद्य का प्रोक्षण करें। यंयं यं'' इस वायु बीज को जपकर हविस् को शुद्ध करें। दाहिने हाथ में (रं) अग्नि बीज को लिखकर उस अग्नि से हविस् में विद्यमान कश्मलों को लजायें। (कल्पना करें) बायें हाथ में अमृत बीज (वं) को लिखकर उस हाथ से हविस् को शुद्ध करें। धोने की कल्पना करें। **ॐ नमोनारायणाय**। इस मन्त्र का आठ बार जप करें। हविस् को मत्रमय एवं अमृतमय होने की कल्पना करें। सुरभि मुद्रा से अमृतमय हुआ है मानकर मलांश, धातु अंश एवं रसांश को अलग-अलग करने की कल्पना करें।
देवता को नैवेद्य ग्रहण करने की इच्छा उत्पन्न करनी चाहिये। ''सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि'' इससे परिषिञ्चन करें। दोनों हाथों में पुष्प लेकर देवता का जीभ नैवेद्य तक पहुँचने का चिन्तन करें। ''निवेदयामि भवते जुषाण हविर्विभो'' कहकर नैवेद्य स्वीकार करने की प्रार्थना करते हुए बायें हाथ से ग्रास मुद्रा (जैसे बछडे को घास देते हैं) को दिखाकर दाहिने हाथ से—

प्राणाय स्वाहा-अङ्गुष्ठ कनिष्ठिका मिलाकर, **अपानाय स्वाहा**-अङ्गुष्ठ एवं तर्जनी मिलाकर, **व्यानाय स्वाहा**-अङ्गुष्ठ एवं मध्यमा मिलाकर, **उदानाय स्वाहा**-अङ्गुष्ठ एवं अनामिका मिलाकर, **समानाय स्वाहा**। सभी अङ्गुलियों को लाकर। अन्न से मलांश एवं धातु के अंश को अलग कर केवल रसांश को अर्पित करने की कल्पना करें।

''वं अबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि'' कहकर नैवेद्य मुद्रा का प्रदर्शन करें। अंगुष्ट एवं अनामिका मिलाने से नैवेद्य मुद्रा। नैवेद्य का सार जो रसांश था उसका भी सार अमृत का जो अंश है उसे देवता को समर्पित कर, हाथ जोडकर, नैवेद्य के सार अमृत से भगवान् को बढते हुए मानकर उसे हृदय में स्थित मानकर यथाशक्ति **ॐ नमोनारायणाय**। '' इस मूल मंत्र का जप करें।

ॐ स्वादुः पवस्व दिव्याय जन्मने स्वादुरिन्द्राय सुहवीतुनाम्ने।
स्वादुर्मित्राय वरुणाय वायवे बृहस्पतये मधुमां अदाभ्यः॥ *(ऋग्वेद ९.८५.६)*
ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत। मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरजायत॥ *(ऋग्वेद १०.९०.१३)*
ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

(ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

यथा संभव नैवेद्यं निवेदयामि। **अमृतापिधानमसि** कहकर उत्तरापोशन देवें। हस्ताप्रक्षालनार्थे जलं समर्पयामि। गराडूषार्थे जलं समर्पयामि। शुद्धाचमनार्थे जलं समर्पयामि। करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि।

ताम्बूल—पूगीफल समायुक्तं नागवल्या दलैर्युतं। चूर्णं कर्पूर संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥ *(स्मृति संग्रह-देवपूजा)*

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। क्रमुक तांबूलं समर्पयामि।

नीराजन (आरति)—ॐ अर्चत प्रार्चत प्रियमेधा सो अर्चत। अर्चतु पुत्रका उत पुरं न धृष्ण्वर्चत। *(ऋग्वेद ८.६९.८)*

ॐ ध्रुवाद्यौ र्ध्रुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वता इमे। ध्रुवं विश्वमिदं जगद् ध्रुवो राजा विशामयम्॥

ॐ ध्रुवं ते राजा वरुणो ध्रुवं देवो बृहस्पतिः। ध्रुवं त इन्द्रश्चाग्निश्च राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम्॥ *(ऋग्वेद १०.१७३.४)*

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। मंगल नीराजनंसमर्पयामि।

मंत्रपुष्प—ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदं। समूळ्हमस्य पांसुरे। (ऋग्वेद १.२२.१७) आ. गृ. सूत्रम्

ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन्। *(ऋग्वेद-१०.९०.१४)*

ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्। सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

(ऋग्वेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्) सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। मंत्रपुष्पं समर्पयामि।

प्रदक्षिणा नमस्कार—यानि कानि च पापानि जन्मांतर कृतानि च। तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे॥ *(देवपूजा-स्मृति संग्रह)*

ॐ सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुं॥ *(ऋग्वेद १०.९०.१५)*

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।

यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विंदेयं पुरुषानहम्॥ *(ऋग्वेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। प्रदक्षिणा नमस्कारान् समर्पयामि।

प्रसन्नार्घ्य—ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि। तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्॥ इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यम् (कहकर तीन बार पुष्पमिश्रित जल छोडें।)

सर्वोपचार पूजनम्—ॐ छत्रं समर्पयामि। चामरेण वीजयामि। गीतं गायामि। नाट्यं नटामि। आंदोळिकामारोहयामि। अश्वमारोहयामि। गजमारोहयामि। समस्य राजोपचार देवोपचार पूजां समर्पयामि।

ॐ यज्ञेनं यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥ *(ऋग्वेद १०.९०.१६)*
ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्। सूक्तं पंचदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्॥ *(ऋग्वेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। सर्वोपचार पूजां समर्पयामि।

प्रार्थना—**विष्णुं जिष्णुं महाविष्णुं प्रभविष्णुं महेश्वरम्। अनेकोत्पात शमनं नमामि पुरुषोत्तमम्॥**
ॐ कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुध्यात्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि॥ *(पौराणिकम्)*
ॐ ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविः ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्। ब्रह्मैव तेन गंतव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना॥ *(श्री भगवद्गीते)*

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। **अनेन पूजनेन सपरिवारः श्री विष्णुः प्रीयताम्।**

पीठ पर नवग्रह पूजन्

प्रमाण— **वर्तुलं चतुरस्त्रं च त्रिकोणं बाण एव च। सुदीर्घ चतुरस्त्रं च पञ्चकोणं धनुस्तथा।**

शूर्पाकारं ध्वजाकारं भान्वादीनां तु मराडलम्। मध्ये तु भास्करं विद्यात् शशिनं पर्व दक्षिणे ॥
दक्षिणे लोहितं विद्यात् बुद्यां पूर्वोत्तरेण तु। उत्तरेण गुरं विद्यात् पूर्वेणैव तु भार्गवम् ॥
परिव्यमे तु शनिं विद्यात् राहुं दक्षिण पश्चिमे। पश्चिमोत्तरतः केतुः स्थापनीयाः प्रयत्नतः ॥ *(स्कान्दंमूलं प्रयोगरत्नाकर)*

नवग्रह मराडल वर्तुलाकार पष के जैसे रहता है। उसके आठ दल होते हैं। मध्य भग कर्णिका कहताला है। मध्य कर्णिका वर्तुलाकार मराडल में सूर्य को मानना चाहिये। आग्रेय दिशा में चतुरस्र मराडल में चन्द्र देवता को मानें। दक्षिण पषदल के त्रिकोणमराडल में अंगारक को मानें। ऐशान्य दिशा में बाण की चिह्न में बुध को मानें। उत्तर दिशा में दीर्घ चतुरस्र मराडल में गुरु को मानें। पूर्व दिशा में पञ्चकोण मराडल में शुक्र को मानें। पश्चिम दल में धनुष आकार मराडल में शनि को मानें। नैऋत्य दिशा में शूर्पाकार मराडल में राहु को माने। वायव्य दिशा में ध्वजाकार मराडल में केतु को मानें। एवं ग्रहों की इसी क्रम सें स्थापना करें।

सूर्यः सोमो महीपुत्रः सोमपुत्रो बृहस्पतिः। शुक्रः शनैश्चरो राहुः केतुश्चेति ग्रहा स्मृताः ॥ उपरोक्त नौ ग्रह कहलाते हैं।
ताम्रेण कारयेद् भानुं रजतेन निशाकरम्। कुजज्ञ जीवरूपाणि सुवर्णो प्रकल्पयेत् ॥
रजतेन ततः शुक्रं कृष्णलोहेने सूर्यजम्। सीसेन कारयेत् राहुं केतुं कांस्येन कारयेत् ॥ *(ग्रहमख पद्धति)*

सूर्य की प्रतिमा ताम्र से, चाँदी से चन्द्र की प्रतिमा को, कुज, बुध एवं गुरु की प्रतिमा को सेने से, शुक्र की प्रतिमा चॉदी से, शनि की प्रतिमा काले लोहे से, राहु की प्रतिमा सीस (Led) से एवं केतु की प्रतिमा काञ्च से बनाना चाहिये।

स्वांगुलेनोच्छ्रितास्सर्वे ग्रहाः कार्या विधानतः। अथवा स्वर्णमात्रेण कारयेत् प्रतिमाः सुधीः ॥
सर्वे किरीटिनः कार्या ग्रहा लोकहितावहाः ॥ *(ग्रहमख पद्धति)*

सभी ग्रहों को एक अंगुल (लगभग एक इञ्च) से कम ऊँचे न बनाये। उन लोहों से या साने से शास्त्र विधि के अनुसार बनायें। सभी को किरीट अवश्य रहना चाहिये।

आदित्यांगारकौ रक्तौ बुध जीवौ च पीतकौ। सोमशुक्रौ विदुः श्वेतौ कृष्णौ राहु शनीश्वरौ॥
धूम्रः केतुगणाश्चैषां वस्त्राण्याभरणानि च। ग्रहवर्णानि गृह्णीयात् गंधं पुष्पं तथैव च॥ *(ग्रहमख पद्धति)*

सूर्य एवं अंगारक लाल रंग के है। बुध एवं गुरु दोनों पीले रंग के हैं। चन्द्र एवं शुक्र सफेद रंग के हैं। राहु एवं शनी काले रंग के हैं। केतु गणों का रंगा धूम्र है। इनके वस्त्र एवं आभारण, गंध एवं पुष्प भी उनके रंग के समान होने चाहिये।

गोधूमास्तण्डुलाश्चैव ह्याढकाः कुद्गकास्तथा। चणकाश्चैव निष्पावाः तिलमाष कुळित्थकाः॥
ग्रहाणां धान्य जातानि कीर्तितानि मनीषिभिः। *(स्मृति संग्रह)*

सूर्य के लिए गेंहु, चन्द्र के लिए चावल, कुज के लिए अरहर दाल, बुध के लिए साबूत मूँग, गुरु के लिए चना, शुक्र के लिए सफेद राजमा, शनि के लिए तिल, राहु के लिए उडद दाल, केतु के लिए कुळित्थ धान्य।

अर्कः पलाशखदिरावंपामार्गोऽथ पिप्लः। उदुंबरः शमी दूर्वा कुशाश्च समिधः स्मृताः॥ *(प्रयोगरत्नाकर)*

सूर्य के लिए अर्क समित्, चन्द्र के लिए पलाश समित्, कुज के लिए खदिर समित्, बुध के लिए अपामार्ग समित्, गुरु के लिए पीपल का समित्, शुक्र के लिए ऊदुम्बर समित्, शनि के लिए शमी समित्, राहु के लिए दूर्वा समित्, केतु के लिए कुशा समित् हैं।

गुडोदनं पायसान्नं संयावं क्षीरपिकम्। दध्योदनं घृतान्नं च कृसरं मांसचित्रितम्॥ *(स्मृति संग्रह)*

सूर्य के लिए गूड का चावल, चन्द्र के लिए खीर, सेवई खीर कुज के लिए, बुध के लिए पेढा, गुरु के लिए दही चावल, शुक्र के लिए घी चावल, शनि के लिए दही चावल, राहु के लिए उडद का चावल, केतु के लिए चित्रा (खिचडी) नैवेद्य है। धेनुः शंखस्तथाऽनड्वान् हेम वासो हयः क्रकात्। कृष्णागौ रायससीसः एतावै दक्षिणः क्रमात्॥ सूर्य के लिए गोदान, चन्द्र के लिए शख दान, कुज के लिए बैल, बुध के लिए सोना, गुरु के लिए पीला वस्त्र, शुक्र के लिए घोडा, शनि के लिए कायीगाय, राहु के लिए लोहा एवं केतु के लिए सीसा का दान करें।

संकल्प—देशकालौ संकीर्त्य सर्वेषां महाजनानां जन्मनक्षत्रे जन्मादि द्वादश भावेषु ये ये ग्रहाः अरिष्टस्थान स्थिताः

तेषा ग्रहाणा शुभ एकादशफलावाप्त्यर्थ दुःस्थान स्थित ग्रहात् सुस्थान फलावाप्त्यर्थ, सुस्थान स्थित ग्रहात् अतिशय शुभफलावाप्त्यर्थ, महादशा अन्तर्दशा अन्तरन्तरर्दशा सूक्ष्मदशा प्राणदशासु तत्रागत अप मृत्यु व्यालमृत्यु घोरमृत्यु क्षुद्र मृत्यु पैशाच मृत्यु समस्त मृत्यु पीडा परिहारार्थ परैः कृत कारयिष्यमाण मन्त्र तन्त्र विषचूर्णादि आभिचार कृत्रिमादि सर्वोपद्रव शान्त्यर्थ रुद्र सर्वाद्भुत शान्तियागाङ्गत्वेन आदित्यादि नवग्रहाराधनं करिष्ये। *(प्रयोगरत्नकार)*

त्दंगत्वेन कलश पूजां करिष्ये। जल पूरित कलश को बायें ओर रख लोवें। कलश को गंध पुष्पादिकों से पूजन करें।

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः। मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः ॥
कुक्षौ तु सागराः सर्वो सप्तद्वीपा वसुंधरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः ॥
अंगैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समश्रिताः। अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा ॥
आयान्तु कर्म सिद्धयर्थ दुरितक्षयकारकाः। सर्वे समुद्रा सरितः तीर्थानि जलदा नदाः ॥
गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिंधु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥
कलशोदकं गृहीत्वा देवताः प्रोक्ष्य, पूजा द्रव्याणि प्रोक्ष्य, आत्मनं प्रोक्षयेत्। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-देवपूजा प्रकरण)*

उस कलश जल से देवताओं को प्रोक्षण करें। पूजा द्रव्यों का एवं अपना भी प्रोक्षण करें।

ईशान्यं शुक्लतण्डुलैः सकर्णिकं अष्टदलं अंबुजं उल्लिख्य कर्णिकायां दलेषु च वर्तुलादि तत् तत् ग्रहपीठानि कुर्यात् यथा मध्ये रक्ताक्षतैः वर्तुलं आदित्याय, आग्नेय दले शुक्लाक्षतैः चतुरस्त्रंसोमाय, दक्षिणदले रक्ताक्षतैः त्रिकोणं मंगलाय ईशान दले हरिताक्षतैः बाणाकारं बुधाय, उत्तरदले पीताक्षतैः दीर्घ उचुरस्त्रं गुरवे, पूर्व दले शुक्लक्षतैः पञ्चकोणं शुक्राय, पश्चिमदलेकृष्णाक्षतैः चापाकारंशनैश्चराय, नैर्ऋत्यदलेकृष्णाक्ष तैः शूर्पाकारं राहवे, वायव्यदले चित्राक्षतैः

ध्वजाकारं केतवे इति विलिख्यततः उदीचं रंगवल्लीपद्मे धान्येन कुंभ योग्यं पीठं प्रकल्प्य तत्र नवं अौरणं तेजसं मृणमयं वा अनुलिप्तं अक्षतपुष्पमालाद्यलंकृतं शुभ अभिषेक कुंभं स्थापयेत्। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

ईशान्य दिशा में सफेद चावलों से कर्णिका युक्त अष्टदलपद्म को लिखें। उसके कर्णिका (बीच वाला भाग) एवं दलों में उन उन ग्रहों का पीठ बनायें। जैसे कि लाल क्षतों से बीच में सूर्य का पीठ, आग्नेय दल में सफेद चावलों से चौकाकार पीठ चन्द्र के लिए, दक्षिणदल में लाल अक्षतों से मंगल के त्रिकोणाकार पीठ, ईशान्य ल में हरे अक्षतों से बाणाकार पीठ बुध के लिए, उत्तर दल में पीले चावलों से दीर्घ चौकाकार पीठ गुरु के लिए, पूर्वदल में सफेद अक्षताओं से पञ्च कोण पीठ शुक्र के लिए, पश्चिम दल में काले अक्षतों से धनुष के आकार वाला पीठ शनैश्चर के लिए, नैॠत्य दल में काले अक्षतों से शूर्पाकार पीठ राहु के लिए, वायव्य दल में रंगबिरंगे अक्षतों से ध्वजाकार पीठ केतु के लिए बनायें। इस मण्डल के उत्तर दिशा में रंगोली से बनाये प... के ऊपर धान्य से कलश रखने योग्य पीठ बनाकर, उस पर नया, शुद्ध, मिट्टी का या धातुओं से निर्मित बिना छिद्र के कलश को गंध पुष्पा-क्षतों से अलंकृत कर उस पवित्र अभिषेक कलश को रखें।

पीठ पूजन

ॐ गुं गुरुभ्यो नमः। ॐ गं गणपतये नमः। ॐ आधार शक्त्यै नमः। ॐ मूल प्रकृत्यै नमः। ॐ आदि कूर्माय नमः। ॐ अनंताय नमः। ॐ पृथिव्यै नमः। ॐ धर्माय नमः। ॐ ज्ञानाय नमः। ॐ वैराग्याय नमः। ॐ ऐश्वर्याय नमः। ॐ अधर्माय नमः। ॐ अज्ञानाय नमः। ॐ अवैराग्याय नमः। ॐ अनैश्वर्याय नमः। ॐ सं सत्वाय नमः। ॐ रं रजसे नमः। ॐ तं तमसे नमः। ॐ मं मायायै नमः। ॐ विं विद्यायै नमः। ॐ पं पद्माये नमः। ॐ अं कर्ममण्डलाय नमः। ॐ उं सोममण्डलाय नमः। ॐ मं वह्निमण्डलाय नमः। ॐ अं आत्मने नमः। ॐ उं अंतरात्मने नमः। ॐ मं परमात्मने नमः। अं ह्रीं ज्ञानात्मने नमः। कहकर पीठ का पूजन करें।

महीद्यौः कारवोमेधातिथिर्भूमिर्गायत्री भूमि प्रार्थने विनियोगः।

ॐ म॒हीद्यौः पृ॑थि॒वी च॑ न इ॒मंय॒ज्ञंमि॑मिक्षतां। पि॒पृ॒तांनो॒ भरी॑मभिः॥ *(ऋग्वेद १.२२.१३)* कहकर भूमि की प्रार्थना करें।

ओषधय इत्यस्य आथर्वणोभिषगोषधयोनुष्टुप् धान्य राशि करणे विनियोगः।

ॐ ओषधयः संवदंते सोमेन सहराज्ञा। यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्तं राजन्पारयामसि॥ *(ऋग्वेद १०.९७.२२)* **ॐ आकलशेष्वित्यस्य काश्यपो देवलः पवमानः सोमो गायत्री कलश स्थापने विनियोगः।**

कहकर वस्त्र बिछाकर उस पर धान की राशि फैलाऐं। आकलशेष्वित्यस्य काश्यपो देवलः पवमानः सोमो गायत्री कलश स्थापने विनियोगः।

ॐ त्वेषस्ते धूम ऋणवति दिवि षंच्छुक्र आततः। सूरो न हि द्युतात्वं कृपापावक रोचसे॥ *(ऋग्वेद ६.२.६)*

कहकर कलश को उल्टा कर धूप डालें।

ॐ तन्तुं तन्वन्नजसो भानुमन्विहि ज्योतिष्मतः पथो रक्षधिया कृतान्।
अनुल्बणं वयत जोगुवामपो मनुर्भव जनया दैव्यजनम्॥ *(ऋग्वेद १०.५३.६)* कहकर कलश को धागों से लपेटें (मौली से)
ॐ आकलशेषु धावति पवित्रे परिषिच्यते। उक्थैर्यज्ञेषुवर्धते॥ *(ऋग्वेद ९.१४.४)*

कहकर धान्य राशि पर कलश को रखें। इमं मे गंगइत्यस्य सिंधुक्षित् प्रैयमेधोनद्यौजगती उदक पूरणे विनियोगः।

ॐ इमं मे गंगेयमुनेसरस्वतिशुतुद्रिस्तोमं सचतापरुष्णया। असिक्न्यामरुद्धधे वितस्तयार्जीकीये शृणुह्या सुषोमया॥
(ऋग्वेद १०.७५.५) कहकर कलश को तीर्थजल से भरें।

पञ्चगव्य क्षेप—गायत्र्या विश्वामित्रः सविता गायत्री गोमूत्र प्रक्षेपणे विनियोगः।

ॐ तत्संवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्। *(ऋग्वेद ३.६२.१०)* कहकर कलश में गोमूत्र डालें।

ॐ गंधद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ *(ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

कहकर कलश में गोमय डालें। आप्यायस्वेत्यस्य राहूगणोगोतमः सोमो गायत्री पयः क्षेपणे विनियोगः।

ॐ आप्यायस्वसमेतुते विश्वतः सोमवृष्ण्यं। भवावाजस्य संगथे। *(ऋग्वेद १.९१.१६)*

कहकर कलश में गाय का दूध डालें। दधिक्राव्णा इत्यस्य गोतमो वामदेवो दधिक्रावानष्टुप् दधिक्षेपणे विनियोगः।

ॐ दधिक्राव्णो अकारिषंजिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभिनोमुखाकरत्प्रण आयूंषितारिषत्॥ *(ऋग्वेद ४.३९.६)*

कहकर कलश में दहि डालें।

शुक्रमसि ज्योतिरसि तेजोसि देवोवः सवितोत्पुनात्व च्छिद्रेण पवित्रेण वोः सूर्यस्य रश्मिभिः।

(यजुर्वेद-१ काण्ड-१ प्रश्न-१० अनुवाक) कहकर कलश में घी डालें।

कलश में पञ्चामृत निक्षेप—**ॐ आप्यायस्व समेतुते विश्वतः सोमवृष्ण्यं। भवावाजस्य संगथे।** *(ऋग्वेद १.९१.१६)*

कहकर कलश में दूध डाले।

ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभि नोमुखा करत्प्रण आयूं षितारिषत्॥ *(ऋग्वेद ४.३९.६)*

कहकर कलश में दहि डालें।

ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतवस्य धाम। अनुष्वदमावह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभवक्षि हव्यक्॥

(ऋग्वेद २.३.११)

कहकर कलश में घी डालें। मधुवाता इति तिसृणां राहूगणो गोतमोविश्वेदेवागायत्री मधुप्रक्षेपणे विनियोगः।

ॐ मधुवाता ऋतायते मधुक्षरंति सिंधवः। माध्वीर्नः संत्वोषधीः॥
मधुनक्तमुतोषसो मधुमत् पार्थिवं रजः। मधुद्यौरस्तु नः पिता॥
मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवंतु नः॥ *(ऋग्वेद १.९०.६-७-८)*

कहकर कलश में शहद डालें। स्वादुः पवस्व भार्गवोवेनः पवमानः सोमो जग ती शर्करा प्रक्षेपणे विनियोगः।

ॐ स्वादुः पवस्व दिव्याय जन्मने स्वादुरिंद्राय सुहवीतु नाम्ने।

स्वादुर्मित्राय वरुणाय वायवे बृहस्पतये मधुमाँ अदाभ्यः ॥ *(ऋग्वेद ९.८५.६)*

कहकर कलश में शक्कर डालें। हय गज वल्मीक ह्रद गोष्ठ राजद्वार चतुष्पद मृदः। (घोडा, हाथी, बल्मीक, खड्डा, गोशला, राजद्वार, चौराहे की मिट्टी) स्योनापृथिवि कारवोमेधातिथिर्भूमिर्गायत्री मृत्क्षेपणे विनियोगः।

ॐ स्योनापृथिवि भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छानः शर्मसप्रथः ॥ *(ऋग्वेद १.२२.१५)*

कहकर कलश में मिट्टी डालें। रुवति भीम इत्यस्य वैश्वामित्रोरेणुः पवमान सोमो जगती। त्वक् क्षेपणे विनियोगः।

ॐ रुवति भीमो वृषभस्त विष्यया श्रृंगेशिशानो हरिणीविचक्षणः।
आयोनिं सोमः सुकृतंनिषीदति गव्ययी त्वग्भवतिनिर्णिगव्ययी। *(ऋग्वेद ९.७०.७)*

कहकर वट, पीपल, पलाश, जामून एवं आम के वृक्षों का त्वक् (छिलका) कलश में डालें। याः फलिनीरित्यास्या थर्वणो भिषगोषधयोनुष्टुप् पुष्प फलक्षेपणे विनियोगः।

ॐ याः फलिनीर्याअफला अपुष्पाया श्चपुष्पिणीः। बृहस्पति प्रसूतास्तानो मुंचत्वं हंसः ॥ *(ऋग्वेद १०.९७.१५)*

कहकर कलश में पुष्प फल डालें। सहि रत्नानीत्यस्य श्यावाश्वः सविता गायत्री रत्नक्षेपणे विनियोगः।

ॐ स हि रत्नानि दाशुषे सुवाति सविता भगः। तं भाग चित्रमीमहे ॥ *(ऋग्वेद ५.८२.३)*

कहकर कलश में रत्न डालें। हिरण्य रूप इत्यस्य शौनको गृत्समदो पान्पात्त्रिष्टुप् हिरण्य क्षेपे विनियोगः।

ॐ हिरण्यरूपः स हिरण्य संदृगपान्नपात्सेदुहिरण्यवर्णः।
हिरण्ययापात् परियोनें निषद्याहिरण्यदादंदुत्यन्नमस्मै ॥ *(ऋग्वेद २.३५.१०)*

कहकर कलश में हिरण्य (सिक्का) डालें। या ओषधीरित्यस्या थर्वणोभिषगोषधयोनुष्टुप् ओष्ज्ञधि प्रक्षेपणे विनियोगः।

ॐ याऽओषधीः पूर्वाजाता देवेभ्यस्त्रियुगंपुरा। मनैनुबभ्रूणामहंशतं धामानि सप्तचं॥ (ऋग्वेद १०.९७.१)

कहकर कलश में औषधि डालें।

ॐ गंधद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टांकरीषिणीं। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियं॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

कहकर कलश में चन्दन डालें।

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ति परुषःपरुषस्परि। एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च॥ (यजुर्वेद-महारायणोपनिषद्-आरण्यक)

कहकर कलश में दर्वा डालें। प्रवो यज्ञेष्वित्यस्य वसिष्ठो विश्वेदेवास्त्रिष्टुप् पल्लव प्रक्षेपणे विनियोगः।

ॐ प्रवो यज्ञेषु देवयंतो अर्चन्द्यावानमोभिः पृथिवी इषध्यै।
येषां ब्रह्माण्यसमानि विप्राविष्वग्वियंतिवनिनो न शाखाः॥ (ऋग्वेद ७.४३.१)

कहकर वट, वश्वत्थ, पलाश, जामून एवं आम के वृक्षों के पत्तें से कलश का मुख ढकें। उस पर फल सहित पूर्ण पात्र रखें। युवं वस्त्राणीत्यस्यौचथ्यो दीर्घतमामित्रावरुणौत्रिष्टुप् कुम्भे वस्त्र युग्मविष्टने विनियोगः।

ॐ युवं वस्त्राणिपीवसावसाथेयुवोरच्छिंद्रामंन्तवो हसर्गाः।
अवातिरतमनृतानिविश्व ऋतेन मित्रा वरुणा सचेथे॥ (ऋग्वेद १.१५२.१) कहकर कलश को वस्त्रों से लपेटें।

सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदानदाः। आयांतु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥
गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिंधु कावेरि जलेस्मिन्सन्निधिं कुरु॥ (ब्रह्मकर्म समुच्चय-देवपूजा प्रकरण)

इमं में गंगे इत्यस्य सिंधुक्षित्प्रैयमेधो नद्यो जगति। तीर्थावाहने विनियोगः।

ॐ इमं में गंगे यमुने सरस्वति शुतुद्रिस्तोमं सचतापरुष्णया।

असिक्न्या मंरुद्वृधे वितस्तयार्जीकीये शृणुह्या सुषोमया। (ऋग्वेद १०.७५.५)

कहकर कलश में तीर्थो का आवाहन करें। कलश को कुशाग्रों से छूकर मन्त्र पाठ करें। आपोहिष्ठेति तिसृणामांबरीषः सिंधुद्वीप आपो गायत्री। नहिते क्षत्रमिति तिसृणामाजीगर्तिःशुनः शेपो वरुणस्त्रिष्टुप्। स्वादिष्ठयेति तिसृणामधुच्छंदाः पावमान सोमो गायत्री सर्वासां जपे विनियोगः।

ॐ आपोहिष्ठा मंयोभुवःस्तानं ऊर्जे दंधातन। मुहेरणाय चक्षसे॥
यो वंः शिवतंमोरसस्तस्यं भाजयतेह नंः। उशतीरिंव मातरंः।
तस्मा अरंगमाम वो यस्य क्षयांय जिन्वंथ। आपों जनयंथा च नः। (ऋग्वेद १०.९.१-२-३)
ॐ नहितेंक्षत्रं नसहोनमन्युं वयंश्चनामीपतयंत आपुः। नेमाऽआपों अनिमिषं चरंतीर्नयेवातंस्य प्रमिनंत्यम्वं॥
अबुध्नेराजावरुंणोवनस्योर्ध्वं स्तूपंददतेपूतदंक्षः। नीचीनाः स्थुरुपरिबुध्नएंषामस्मेअन्तर्निहिंताः केतवंः स्युः॥
उरुंहिराजा वरुंणश्चकार सूर्यायपंथामन्वेंतवाऽउं।
अपदेपादा प्रतिंधा तवेकरुतापंवक्ता हृंदयाविधंश्चित्॥ (ऋग्वेद १.२४.६-७-८)
ॐ स्वादिंष्ठया मदिंष्ठया पवंस्व सोमधरंया। इन्द्राय पातंवे सुतः॥
रक्षोहा विश्वचंर्षणिरभियोनिमयोंहतं। द्रुणांसधस्थमासंदत्॥
वरिवोधातंमो भवमंहिंष्टो वृत्रहंतंमः। पर्षिराधों मघोनां॥ (ऋग्वेद ९-१-१-२-३)

इन मंत्रों से कलश का अभिमंत्रण करें। अभिमंत्रण मन्त्रों का अर्थ मनन करते हुए देवता को छूकर सान्निध्य की कल्पना करने की क्रिया है। ध्यायामि। ध्यानं समर्पयामि। आवाहयामि। आसनं समर्पयामि। स्वागतम् समर्पयामि। पादारविंदयोः पाद्यं पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोः अर्ध्यमर्ध्यं समर्पयामि। पञ्चामृत स्नानं समर्पयामि। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि। वस्त्रं समर्पयामि। आभरणं समर्पयामि। गंधं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि। पुष्पाणि समर्पयामि।

धूपमाघ्रापयामि। दीपं दर्शयामि। कदलीफलं निवेदयामि। क्रमुक ताम्बूलं समर्पयामि। मंगल नीराजनं समर्पयामि। मंत्रपुष्पं समर्पयामि। प्रदक्षिणा नकस्कारन् समर्पयामि।। सर्वोपचार पूजां समर्पयामि। अनेन कलशस्थापनेन आदित्यादि नवग्रहाः प्रीयंताम्।

पीठ पर नवग्रहों की स्थापना—गुं गुरुभ्यो नमः। गं गणपतये नमः। आधारशक्त्यै नमः मूल प्रकृत्यै नमः। आदि कूर्माय नमः। अनन्ताय नमः। पृथिव्यै नमः। धर्माय नमः। ज्ञानाय नमः। वैराग्याय नमः। ऐश्वर्याय अधर्माय नमः। अज्ञानाय नमः। अवैराग्याय नमः। अनैश्वर्याय नमः। सं सत्वाय नमः। रं रजसे नमः। तं तमसे नमः।। मं मायायै नमः। विं विद्यायै नमः। पं पद्माय नमः। अं अर्कमण्डलाय नमः। उं सोममण्डलाय नमः। मं वह्निमण्डलाय नमः। अं आत्मने नमः। उं अंतरात्मने नमः। मं परमात्मने नमः।। ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः। पीठपूजां समर्पयामि। *(अनुष्ठान पद्धति)*

नवग्रह प्रतिमाओं का अग्न्युत्तारण—अग्नि सप्तिमिति सप्तर्चस्य सूक्तस्य सोचिको वैश्वानर स्त्रिष्टुप्। अग्न्युत्तारणे विनियोगः।

ॐ सप्तिंवाजं भरं ददाति वीरं श्रुत्यं कर्मनिष्ठां। रोदंसीविचरत्समंजन्नारींवीरकुक्षिं पुरंधिं।।

ॐ अप्रंसः समिदस्तु भद्रामही रोदंसी आविवेश। एकं चोदयत्समत्सुवृत्राणिंदयते पुरूणिं।।

ॐ हत्यं जरंतः कर्णमावाद्भ्योनिरंदहज्जरूथं। अत्रिं घर्म उरुष्यदंतर्नृमेधं प्रजयां सृजत्सं।।

ॐ दाद्रविणं वीरपेशा ऋषिं यः सहस्रां सनोतिं। दिविहव्यमातंतान धामानि विभृतापुरुत्रा।।

ॐ उक्थैर्ऋषयोविह्वयंते नरोयामनि बाधितासः। वयो अंतरिक्षे पतंतः सहस्रा परियातिगोनां।।

ॐ विशंईळते मानुषीर्यामनुषो न हुंषोविजाताः। गांधर्वी पथ्यांमृतस्य गव्यूंतिर्घृत आनिषत्ता।।

ॐ ब्रह्मं ऋभवंस्ततक्षुर्मुहामवोचामासुवृक्तिं। प्रावंजरितारंयविष्ठ महिद्रविणमायंजस्व।।

ॐ अग्निः सप्तिं वाजं भरं ददात्यग्नि वीरं श्रुत्यं कर्मनिःष्ठां। अग्निरोदंसी विचरत्समंजन्नग्निर्नारीं वीर कुक्षिं पुरंधिं।।

ॐ अग्नेरप्रंसः समिदस्तु भद्राग्निर्महीरोदंसी आविवेश। अग्निरेकं चोदयत्समत्स्वग्निर्वृत्राणिंदयतेपुरूणिं।।

ॐ अग्निर्हत्यं जरंतः कर्णमावाग्निरद्भ्योनिरंदहज्जरूथं। अग्निरत्रिं धर्म उरुष्यदुन्तरग्निर्नृमेधं प्रजयां सृजत्सं।।

ॐ अग्निर्दाद्रविणं वीरपेशा अग्निर्ऋषिंयः सहस्रांसनोति। अग्निर्दिविहव्यमातंतानाग्रे धामांनिविभृंता पुरुत्रा॥
ॐ अग्निमुक्थैर्ऋषयोविह्वयंतेग्निं नरोयामंनि बाधितासः। अग्निं वयो अंतरिक्षेपतंतोग्निः सहस्रा परियाति गोनां॥
ॐ अग्निं विशं ईळते मानुंषीर्या अग्निं मनुंषो नहुंषोविजाताः। अग्निर्गांधर्वीं पथ्यामृतस्याग्नेर्गव्यूतिर्घृत आनिषंत्ता॥
ॐ अग्नये ब्रह्मं ऋभवंस्ततक्षुरग्निं महामंवोचामासुवृक्तिं। अग्ने प्रावंजरितारंयविष्ठाग्नेमहिद्रविणमायंजस्व॥
(ब्रह्मकर्म समुच्चय-अग्न्युत्तारण विधान,१० मण्डल-८० संपूर्ण सूक्त)

इन अग्न्युत्तारण सूक्तों से प्रतिमा पर सतत जल धारा करने से प्रतिमा की शुद्धि होती है। पूर्वनिर्मित पीठेषु यथास्थान मुखैः ग्रहप्रतिमाः स्थापयित्वा पहले बनाये गये ग्रहपीठों में स्थान एवं मुख की दिशा को ध्यान में रखकर प्रतिमाओं की स्थापना करें। तद्दक्षिणवामपार्श्वयोः अधिदेवता प्रत्यधिदेवता प्रतिमे तदभिमुख्यौ स्थापयेत्। प्रतिमानां असंभवे पुष्पाक्षतादिषु देवता आवाहयेत्। ग्रह देवताओं के दायें बायें ग्रहों की ओर देखते हुए अधिदेवता प्रत्यधिदेवता मूर्तियों की स्थापना करें। प्रतिमाओं के अभाव में पुष्प अक्षतों में उनका आवाहन कर पूजन करें। प्रत्येक ग्रह के आवाहन में उस प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित करें। प्रणवस्य परब्रह्म परमात्मा गायत्री व्यस्त समस्त व्यातीनां अत्रि भृगु भरद्वाजप्रजापतयः अग्नि वायु सूर्य प्रजापतयो गाय=युष्णिम् अनुष्टुप् बृहत्यः ग्रहावाहने विनियोगः।

सूर्य देवता आवाहन—कर्णिकायां वर्तुल पीठस्थ गोधूम धान्यस्थ आदित्य प्रतिमायाञ्चादित्यावाहनंकुर्यात्। ॐ पं पद्माय नमः। पीठं संपूज्य। आकृष्णेनेत्यस्य हिरण्यस्तूपः सविता त्रिष्टुप् सूर्यावाहने विनियोगः।

ॐ आकृष्णेन रजंसावर्तमानोनिवेशयंन्नमृतंमर्त्यं च। हिरण्ययेंन सविता रथेन देवो यांति भुवंनानिपश्यंन्॥ (ऋग्वेद १.३५.२)

ॐभूः आदित्यग्रहमावाहयामि। ॐभुवः आदित्यग्रहमावाहयामि। ॐस्वः आदित्य ग्रहमावाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः आदित्यग्रहमावाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि। भगवन्नादित्य ग्रहाधिपते काश्यपगोत्रकलिंगदेशेश्वर जपापुष्पोपमांगद्युते द्विभुज पद्माभयहस्त सिंदूरवर्णांबरमाल्यानुलेपन ज्वलन्माणिक्यखचित सर्वागाभ भास्करतेजोनिधे त्रिलोकप्रकाशकत्रिदेवतामयमूर्ते नमस्ते सन्द्धारुण ध्वजपताकोप शोभितेन सप्ताश्वरथवाहनेन मेरुं प्रदक्षिणीकुर्वन् आगच्छ अग्निरुद्राभ्यां सह पद्म कर्णिकायां ताम्र प्रतिमां प्राङ्मुखीं वर्तुलपीठेऽधितिष्ठपूजार्थं त्वामावा हयामि। कहकर मध्य के कर्णिका में सूर्य देवता का आवाहन करें।

सूर्य के आगे दाहिने ओर अग्नि का आवाहन करें। आदित्य अधिदेवता अग्न्यावाहने विनियोगः। अग्निंदूतं मेधातिथिरग्निर्गायत्री अग्न्यावाहने विनियोगः।

ॐ अग्निंदूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसं। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुं॥ *(ऋग्वेद १.१२.१)*

ॐ भूः अधिदेवता अग्निं आवाहयामि। ॐ भुवः अधिदेवता अग्निं आवाहयामि। ॐ स्वः अधिदेवता अग्निं आवाहयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः अधिदेवता अग्निं आवाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि। पिंगश्मश्रुकेशं पिंगाक्षित्रितयं अरुणावर्णागं छागस्थं साक्षसुत्रं सप्तार्चिषं शक्तिधरवरदहस्तद्वयं आदित्याधिदेवतं अग्निं आवाहयामि। सूर्य के आगे बायें ओर रुद्र का आवाहन करें। त्र्यंबकं मैत्रावरुणिर्वसिष्ठोरुद्रोनुष्टुप रुद्रावाहने विनियोगः।

ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनं। उर्वारुकमिव बंधनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्॥ *(ऋग्वेद ७.५९.१२)*

ॐ भूरादित्यप्रत्यधिदेवं रुद्रमावाहयामि। ॐ भुवदादित्यप्रत्यधिदेवं रुद्रमावाहयामि। ॐ स्वरादित्यप्रत्यधिदेवं रुद्रमावाहयामि। ॐ भूर्भुवः स्वरादित्यप्रत्यधिदेवं रुद्रमावाहयामि। स्थापयामि। पूजायामि। त्रिलोचनोपेतं पञ्चवक्त्रं वृषारूढं कपालशूल खट्वांगधारिणं चन्द्रमौलिं सदाशिवं आदित्यप्रत्यधिदेवं रुद्रमावाहयामि।

नवशक्ति पूजा—ॐ दीप्तायै नमः। ॐ सूक्ष्मायै नमः। ॐ जयायै नमः।। ॐ भद्रायै नमः। ॐ विभूत्यै नमः। ॐ विमलायै नमः। ॐ अमोघायै नमः। ॐ विद्युतायै नमः। ॐ सर्वतोमुख्यै नमः। ॐ नमो भगवते सकलगुणात्मशक्तियुक्ताय अनंताययोगपीठात्मने नमः। सुवर्ण पीठं कल्पयामि। स्वात्मसंस्थमजंशुद्धं त्वामद्य ग्रहनायक। अरणयामिव हव्याशं बिम्बेस्मिन् सन्निधिं कुरु॥ *(अनुष्ठान पद्धति)*

ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः दिवाकरण प्राण इह प्राणः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः दिवाकर जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः दिवाकरस्य सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुः श्रोत्र घ्राण प्राणः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा।

ॐ असुनीते पुनरस्मासु चक्षुः पुनः प्राणमिह नो धेहि हभोगं। ज्योक्पश्येम सूर्यमुच्चरन्तमनुमते मृळयानः स्वस्ति॥

(ऋग्वेद १०.५९.६)

ॐ पुनर्नो असुं पृथिवी ददातु पुनर्द्यौर्देवी पुनरन्त रिक्षम्। पुनर्नः सोमस्तन्वं ददातु पुनः पूषा पथ्यां३या स्वस्तिः॥

(ऋग्वेद १०.५९.७)

सशक्ति सांगसायुधसवाहन सपरिवार श्री भास्कर भगवन् अत्रैवागच्छागच्छ। आवाहयिष्ये। आवाहितो भव। संस्थापितो भव। सन्निहितो भव। सन्निरुद्धो

भव। अवगुण्ठितो भव। अमृतीकृतो भव। व्याप्तो भव। सुप्रसन्नो भव। क्षमस्व। ॐ प्रभाकराय विद्महे। दिवाकराय धीमिहि। तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्॥ इसका तीन बार जप करते हुए अर्ध्य देवें।

वेदगर्भ ऋषिः सविता देवता गायत्री छन्दः। ॐ आ कृष्णेन रजसा हृदयाय नमः। ॐ वर्तमानो निवेशयन् शिरसे स्वाहा। ॐ अमृतं मर्त्यं च शिखायै वषट्। ॐ हिरण्ययेन सविता कवचाय हुम्। ॐ रथेन देवो याति नेत्राभ्यां वौषट्। ॐ भुवनामि पश्यन् अस्त्राय फट्। ॐ भूर्भुवः स्वरोमिति दिग्बन्धः।

ध्यानम्— **कालिंगं ग्रहमध्य भागनिलयं प्राचीमुखं वर्तुलं, । रक्तं रक्तविभूषणाध्वजरथच्छत्रश्रियाशोभितम्॥**
सप्ताश्वं कमलद्वयान्वितकरं पद्मासनं काश्यपं। मेरोर्दिव्य गिरेः प्रदक्षिणाकरं सेवामहे भास्करम्॥

"ॐ घृणिः सूर्यआदित्यः" इस मूल मंत्र का आठ बार जप करें। ॐ लं पृथिव्यात्मने गंधं कल्पयामि। ॐ हं आकाशत्मने पुष्पं कल्पयामि। ॐ यं वाय्वात्मने धूपं कल्पयामि। ॐ रं अग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि। ॐ वं अबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि। ॐ पं परमात्मने पञ्चोपचार पूजां समर्पयामि।

प्रार्थना— **दिवाकरं दीप्तसहस्त्ररश्मिं तेजोमयं जगतः कर्मसाक्षिं। अंशु भानुं सूर्यमाद्यं ग्रहाणां रविंसदा शरणामहं प्रपद्ये॥**

(नवग्रह पूजाविधान–सूर्य पूजा प्रकरणम्)

पद्मासनः पद्मकरः पद्मगर्भ समद्युतिः। सप्ताश्वः सप्तरज्जुश्च द्विभुजः 'स्यात् सदा रविः॥ *(स्मृति संग्रह)*

जपा कुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिं। ध्वांतारिं सर्वपापघ्नं प्रणतोस्मि दिवाकरम्॥

ॐ आदित्याय नमः। ॐ अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित आदित्य पूजां समर्पयामि।

चन्द्र देवता आवाहन—आग्नेय दले चतुरस्त्रपीठस्य तण्डुलधान्योपरि चन्द्र प्रतिमायां चन्द्र देवता आवाहनं कुर्यात्। पं पद्माय नमः। पीठं संपूज्य। आप्यायस्व गोतमः सोमो गायत्री सोमावाहने विनियोगः।

ॐ आप्यांयस्व समेंतुते विश्वतः सोमवृष्ण्यं। भावाजंस्य संगथे॥ *(ऋग्वेद १.९१.१६)*

ॐ भूः चन्द्राग्रहमावाहयामि। ॐ भुवः चन्द्राग्रहमावाहयामि। ॐ स्वः चन्द्रग्रहमावाहयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः चन्द्र ग्रहमावाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि। भगवान्

सोम द्विजाधिपते सुधामयशरीर अत्रिगोत्र यामुनदेशेश्वर गोक्षीरधवलांगकांते द्विभुजगदावरदानांकिंतकर शुक्लांबर माल्यानुलेपनसर्वांग मुक्तौमौकिकिकाभरण रमणीय समस्तलोकाप्यायनक देवतास्वाद्यमूर्ते नमस्ते सन्नद्धधवलध्वज पताकोपशोभितेन दशश्वेताश्वरथवाहनेन मेरुं प्रदक्षिणी कुर्वन्नागच्छाद्भिरुमया च सहपद्माग्रेय दल मध्ये स्फाटिक प्रतिमां प्रत्यड़मुखीं चतुरस्रपीठेऽधितिष्ठ पूजार्थं त्वामावाहयामि। चन्द्र के आगे दाहिने ओर अप: का आवाहन करें। अप्सुम इत्यस्यांबरीष: सिंधुद्वीप आपो गायत्री।

ॐ अप्सुमेसोमो अब्रवीदुंत विश्वांनि भेषजा। अग्निं चं विश्वशंभुवं॥ *(ऋग्वेद १.२३.१०)*

ॐ भू: सोमाधिदेवता अप: आवाहयामि। ॐ भुव: सोमाधिदेवता अप: आवाहयामि। ॐ स्व: सोमाधिदेवता अप: आवाहयामि। ॐ भूर्भुव: स्व: सोमाधिदेवता अप: आवाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि। स्त्रीरूपधारिणी: श्वेतवर्णामकरवाहना: पाशकलश धरिणीर्कुक्ताभरण भूषिता: सोमाधिदेवता अप: अवाहयामि। चन्द्र देवता के आगे बायें ओर गौरी का आवाहन करें। गौरीर्मिमाय दीर्घतमाउमाजगती गौरी आवाहने विनियोग:।

ॐ गौरीर्मिमाय सलिलानि तक्षत्येकंपदीद्विपदी सा चतुंष्पदी।
अष्टापंदीनवंपदी बभूवुषीं सहस्त्रांक्षरापरमे व्योंमन्॥ *(ऋग्वेद १.१६४.४१)*

ॐ भू: सोमप्रत्यधिदेवतां गौरीं आवाहयामि। ॐ भुव: सोमप्रत्यधिदेवतां गौरीं आवाहयामि। ॐ स्व: सोमप्रत्यधिदेवतां गौरीं अवाहयामि। ॐ भू र्भुव: स्व: सोमप्रत्यधिदेवतां गौरीं आवाहयामि। स्थापयामि। पूजायामि। अक्षसूत्र कमल दर्पण कमण्डलुधारिणीं त्रिदशपूजितां सोमप्रत्यधि देवतां गौरीं आवाहयामि।

नव शक्ति पूजा

ॐ नमो भगवते सकलगुणात्म शक्तियुक्ताय अनंत योग पीठात्मे नम:। सुवर्ण पीठ कल्पयामि। स्वत्मसंस्थमजं शुद्धं त्वामद्य कुमुदाधिप अरण्यामिव हव्याशं बिम्बेस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः चन्द्र प्राण इह प्राणाः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः चन्द्र जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः चन्द्रस्य सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुः श्रोत्रघ्राणप्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा।

ॐ असुंनीते पुनंरस्मासु चक्षुः पुनंः प्राणमिह नोंधेहि भोगं।
ज्योक्पंश्येम सूर्यंमुच्चरंन्तमनुंमते मृळयांनः स्वस्ति॥
ॐ पुनंर्नो असुं पृथिवी दंदातु पुनर्द्यौर्देवी पुनंरन्तरिंक्षम्।
पुनंर्नः सोमंस्तन्वं ददातु पुनंः पूषा पथ्यां३ं युंया स्वस्तिः॥ (ऋग्वेद १०.५९.६-७)

सशक्ति सांगसायुधसवाहन सपरिवार श्री चन्द्र भगवान् अत्रैवागच्छागच्छ आवाहयिष्ये। आवाहितो भव संस्थापितो भव। सन्निहितो भव। सन्निरुद्धो भव। अवगुण्डितो भव। अमृतीकृतो भ। व्याप्तो भव। सुप्रसन्नो भव। क्षमस्व। ॐ अत्रिपुत्राय विद्महे। अमृतोद्भवाय धीमहि। तन्नः सोमः प्रचोदयात्। इसका तीन बार जप करते हुए अर्ध्य देवें।

गौतम ऋषिः सोमो देवता गायत्री छन्दः। ॐ आप्यायस्व हृदयाय नमः। ॐ समेतु ते शिरसे स्वाहा। ॐ विश्वतः शिखायै वषट्। ॐ सोमवृष्णियं कवचाय हुम्। ॐ संगथे अस्त्राय फट्। ॐ भूर्भुवः स्वरोमिति दिग्बन्धः।

ध्यानं— **आत्रेयं यमुनाप्रभुं ग्रहगणस्याग्नेय भागस्थितं। श्वेतं श्वेतसुगंधमाल्यवसनं श्वेतांबुजोद्यत् करं।**
श्वेतच्छत्रविभूषणं ध्वजरथच्छत्रश्रिया शोभितं। मेरोर्दिव्यगिरेः प्रदक्षिणकरं सेवामहे शीतलम्।
(नवग्रह पूजाविधान-चन्द्रपूजा प्रकरणम्)

ॐ चं चन्द्राय नमः ''इति मूल मंत्र का आठ बार जप करें। ॐ लं पृथिव्यात्मने गंध कल्पयामि। ॐ हं आकाशत्मने पुष्पं कल्पयामि। ॐ यं वाय्वात्मने धूपं कल्पयामि। ॐ रं अग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि। ॐ वं अबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि। ॐ पं परमात्मने पञ्चोपचार पूजां समर्पयामि।

प्रार्थना— **यः कालहेतोः क्षयवृद्धिमेति यंदेवताः पितरः संपिबन्ति। तं वै वरेण्यं सुरसंघवंद्यं सोमं सदा शरणमहं प्रपद्ये।**

श्वेतः श्वेताम्बरधरो दशश्वः श्वेतभूषणः। गदापाणिर्द्विबाहुश्च स्मर्तव्यो वरदः शशी॥
श्वेतं श्वेतांबरधरं दशाश्वं श्वेतभूषणम्। द्विभंजं साम्यगद मात्रेयं सामृतं विभुम्॥
दिव्यशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णवसंभवम्। नमामि शशिनं भक्त्या शंभोर्मुकुटभूषणम्॥
ॐ सोमाय नमः। अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित चन्द्र पूजां समर्पयामि। *(नवग्रह पूजाविधान-चन्द्रपूजा प्रकरणम्)*

अंगारक देवता आवाहन—दक्षिणदले त्रिकोणपीठोपरि आढक राशौ रक्त चन्दन प्रतिमायां अंगारकावाहनं कुर्यात् ॐ पं पद्माय नमः। पीठं संपूज्य। अग्निर्मूर्धाविरूपोंगारको गायत्री अंगारकावाहने विनियोगः।

ॐ अग्निर्मूर्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयं। अपां रेतांसि जिन्वति। *(ऋग्वेद ८.४४.१६)*

ॐ भूः अंगारक ग्रहमावाहयामि। ॐ भुवः अंगारक ग्रहमावाहयामि। ॐ स्वः अंगारक ग्रहमावाहयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः अंगारकग्रहमावाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि।
भगवन्नंगारक अग्न्याकृते भारद्वाजगोत्र अवंति देशेश्वर ज्वालापुंजोपमांगद्युते चतुर्भुज शक्तिशूलगदाङ्गधारिन् रक्तांबर माल्यानुलेजोपमांगद्युते चतुर्भुज शक्तिशूलगदाखङ्गधरिन् रक्तांबर माल्यानुलेपनप्रवालभूषिताभरण सर्वागदुर्धरालोकदीप्तेनमस्ते सन्नद्धरक्त घ्वज पताकोपशोभितेन रक्तमेषरथवाहनेन मेरुं प्रदक्षिणी कुर्वन्नगच्छ भूमिस्कंदाभ्यां सहपद्म दक्षिणदलमध्ये रक्तचंदन प्रतिमां दक्षिणामुखीं त्रिकोणपीठेऽधितिष्ठ पूजार्थं त्वां आवाहयामि। अंगारक के आगे दाहिने ओर भूमि का आवाहन करें। स्योनापृथिवीत्यस्यमेघातिथिर्भूमिर्गायत्री भूम्यावाहने विनियोगः।

ॐ स्योना पृथिविभवानृक्षरा निवेशनी। यच्छांनः शर्मसप्रथः। *(ऋग्वेद १.२२.१५)*

ॐ भूरंगारकाधिदेवतांभूमिमावाहामि। ॐ भुवोंगारकाधिदेवतां भूमिमावाहयामि। ॐ स्वरंगारकाधिदेवतां भूमिमावाहयामि। ॐ भूर्भुवः स्वरंगारकाधिदेवतां भूमिमावाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि। शुक्लवर्णां दिव्याभरणभूषितां चतुर्भुजां सौम्य वपुषं चण्डांशुसदृशां बरां रत्नात्र सस्यपात्रौषधिपात्रपद्मोपेत करां चतुर्दिग्भागपृष्टगतां अंगारकाधिदेवतां भूमिमावाहयामि। अंगारक के आगे बायें ओर स्कन्द का आवाहन करें। कुमारश्चि दित्यस्य गृत्समदः स्कंदस्त्रिष्टुप्

स्कंदावाहने विनियोगः।

ॐ कुमारश्चित्पितरं वंदमानं प्रतिनानामरुद्रोपयंतं। भूरेर्दातारं सत्पतिं गृणीषेस्तुतस्त्वं भेषजारास्यस्मे।। (ऋग्वेद २.३३.१२)

ॐ भूरंगारकप्रत्यधिदेवतां स्कंदमावाहयामि। ॐ भुवोंऽगारक प्रत्यधिदेवतां स्कंदमावाहयमि। ॐ स्वरंगारक प्रत्यधिदेवतां स्कंदमावाहयामि। भू भुर्वः स्वरंगारक प्रत्यधिदेवतां स्कंदमावाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि। षष्मुखं शिखराडक विभूषणं रक्तांबरधरं मयूरयान कुक्कुट घंटा पताका शक्त्युपेतं चक्षुर्भुजं अंगारक प्रत्यधिदेवं स्कंद मावाहयामि।

नवशक्ति पूजा— ॐ रोहितायै नमः। ॐ ज्वालिन्यै नमः। ॐ रौद्रयै नमः। ॐ तीक्ष्णायै नमः। ॐ सूक्ष्मायै नमः। ॐ जयायै नमः। ॐ क्षुधायै नमः। ॐ सारायै नमः। ॐ निर्मलायै नमः। ॐ नमो भगवते सकलगुणात्मशक्तियुक्ताय अनन्ताय योग पीठात्मने नमः। सुवर्ण पीठं कल्पयामि। स्वात्मसंस्थमजं शुद्धं त्वामद्य भूमिनन्दन। अरणयामिव हव्याशं बिम्बेस्मिन् सन्निधिं कुरु॥ ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः अंगारक प्राणा इह प्राणाः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः अंगारक जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः अंगारकस्य सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुश्रोत्रघ्राणप्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा।

ॐ असुनीते पुनरस्मासु चक्षुः पुनः प्राणमिह नोंधेहि भेगं। ज्योक पश्येम सूर्यमुच्चरन्तमनुमते मृळयानः स्वस्ति।
ॐ पुनर्नो असुं पृथिवी ददातु पुनर्द्यौर्देवी पुनरन्तरिक्षम्। पुनर्नः सोमस्तन्वं ददातु पुनः पूषा पथ्यां३ या स्वस्तिः।।

(ऋग्वेद १०.५९.६-७)

सशक्ति सांग सयुध सवाहन सपरिवार श्री अंगारक भगवन् अत्रैवागच्छागच्छा। आवाहयिष्ये। आवातितो भव। संस्थापितो भव। अमृतीकृतो भव। सन्निरुद्धो भव। अवगुणिठतो भव। अमृतीकृतो भव। व्याप्तो भव। सुप्रसन्नो भव। क्षमस्व। ॐ भूमिपुत्राय विद्महे भारद्वाजाय धीमहि। तन्नः कुजः प्रचोदयात्। इसको तीन बार जपते हुए अर्घ्य देवें। विरूप ऋषि अंगारको देवता गायत्री छन्दः। ॐ अग्निर्मूर्धा हृदयाय नमः। ॐ दिवः ककुत् शिरसे स्वाहा। ॐ पति पृथिव्या शिखायै वषट्। ॐ यम् कवचाय हुम्। ॐ अपां रेतांसि नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ जिन्वति अस्त्राय फट्। ॐ भूर्भुवः स्वरोमिति दिग्बंधः।

ध्यानम्— **विंध्येशं ग्रहदक्षिणाप्रतिमुखं रक्तं त्रिकोणाकृतिं। दोर्भिः स्वीकृत शक्तिशूल सुगदं चारूढमेषाधिपं।।**

भारद्वाजमुपेत रक्तवसनं छत्रश्रियाशोभितं। मेरोर्दिव्यगिरेः प्रदक्षिणाकरं सेवामहे तं कुजम्॥

(नवग्रह पूजाविधान-अंगारक पूजा प्रकरणम्)

ॐ अं अंगारकाय नमः। इस मूल मंत्र का आठ बार जप करें। ॐ लं पृथिव्यात्मने गंधं कल्पयामि। ॐ हं आकाशात्मने पुष्पं कल्पयामि। ॐ यं वाय्वात्मने धूपं कल्पयामि। ॐ रं अग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि। ॐ वं अबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि। ॐ पं परमात्मने सर्वोपचार पूजां समर्पयामि।

प्रार्थना—महेश्वरस्यानन स्वेदबिन्दोर्भूमौ जातं रक्तमाल्याम्बराढ्यं। सुरश्मिनं लोहिताङ्ग कुमारं अंगारकं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥ रक्त माल्यांबरधरः शक्तिशूल गदाधरः। चतर्भुजो मेषगमो भारद्वाजो धरासुतः॥ रक्तस्रगंबरालेपं गदाशक्त्यसिशूलिनं। चतुर्भजं मेषगमं भारद्वाजं धरासुतम्॥ धरणीगर्भसंभूतं विद्युत्काञ्चनसन्निभम्। कुमारं शक्तिहस्तं च मंगलं प्रणमाम्यहम्॥ ॐ अंगारकाय नमः। अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित अंगारक पूजां समर्पयामि।

बुध देवता आवाहनम्—ईशान्यदले बाणाकार पीठे मुद्गधान्ये बुध प्रतिमायां बुधावाहनं कुर्यात्। ॐ पं पद्माय नमः। पीठं संपूज्य। उद्बुध्यध्वं बुधो बुधस्त्रिष्टुप् बुधग्रहावाहने विनियोगः।

ॐ उद्बुध्यध्वं॒समनसः सखायः॒ सम॒ग्निमिंध्वं ब॒हवः॒ सनींळाः। द॒धि॒क्राम॒ग्निमु॒षसंञ्चदे॒वीमिन्द्रा॑व॒तो व॑से॒ निह्व॑येवः॥

(ऋग्वेद १०.१०१.१)

ॐ भूः बुध ग्रहमावाहयामि। ॐ भुवः बुध ग्रहमावाहयामि। ॐ स्वः बुध ग्रहमावाहयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः बुध ग्रहमावाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि। भगवन्सौम्यसौम्याकृते सर्वज्ञानमय अत्रिगोत्र मगधदेशेश्वर कुंकुमवर्णोपमांगद्युते चतुर्भुज खड्गखेटकगदावरदानांकित पीतांबरमाल्यानुलेपन मरकताभरणालंकृत सर्वाङ्गविबुधपते नमस्ते सन्नद्ध पीतध्वजपताकोपशोभितेन चतुः सिहस्थवाहनेन मेरुं प्रदक्षिणी कुर्वन्नागच्छ विष्णुपुरुषाभ्यां सहैशान दलमध्ये सुवर्णप्रतिमां उदङ्मुखीं बाणाकार पीठेधितिष्ठ पूजार्थ त्वां आवाहयामि। बुध के आगे दाहिने ओर अधिदेवता विष्णु का आवाहन करें। इदं विष्णुर्मेधातिथि र्विष्णुर्गायत्री विष्णवावाहने विनियोगः।

ॐ इ॒दं विष्णु॒र्विचंक्रमेत्रे॒धानिद॑धेप॒दं। समूंहळमस्य पांसु॒रे॥ *(ऋग्वेद १.२२.१७)*

ॐ भूः बुध अधिदेवतां विष्णुं आवाहयामि। ॐ भुवः बुध अधिदेवतां विष्णुं आवाहयामि। ॐ स्वः बुध अधिदेवतां विष्णुं आवाहयामि। ॐ भूभुवः स्वः बुध

अधिदेवतां विष्णुं आवाहयामि। स्थापयामि पूजयामि। कौमोदकी पद्मशंख चक्रोपेतं चतुर्भुजं सौम्याधिदेवं विष्णुमावाहयामि। बुध के आगे बायें ओर पुरुष का आवाहन करें। सहस्रशीर्षा नारायणः पुरुषोनुष्टुप् पुरुषावाहने विनियोगः।

ॐ सहस्रं शीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रंपात्। सभूमिं विश्वतोंवृत्वात्यंतिष्ठद्दशांगुलम्॥ *(ऋग्वेद १०.९०.१)*

ॐभूर्बुधप्रत्यधिदेवं पुरुषमावाहयामि। ॐभुवर्बुधप्रत्यधिदेवं पुरुषमावाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वर्बुधप्रत्यधिदेवं पुरुष्मावाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि। कौमोदकीपद्मशंखचक्रोपेतं चतुर्भुजं सौम्यप्रत्यधि देवं पुरुषमावाहयामि।

नवशक्ति पूजा— ॐचंद्रिकायै नमः। ॐकौमुद्यै नमः। ॐज्योत्स्नयै नमः। ॐसंध्यायै नमः। ॐविद्यायै नमः। ॐसरस्वत्यै नमः। ॐमेधायै नमः। ॐप्रज्ञायै नमः। ॐप्रभायै नमः। ॐनमो भगवते सकलगुणात्मशक्तियुक्ताय अनंतायययोगपीठात्मने नमः। सुवर्णपीठं कल्पयामि। स्वात्मसंस्थमजं शुद्धं त्वामद्येन्दुसुतोत्तम। अरण्यामिव हव्याशं बिम्बेस्मिन् सन्निधिं कुरु॥ ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः बुध प्राणा इह प्राणाः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः बुध जीव इह स्थितः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः बुधस्य सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुः श्रोत्र घ्राणप्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

ॐ असुंनीते पुरंरस्मासु चक्षुः पुनंः प्राणमिह नों धेहि भोगं। ज्योक्पंश्येम सूर्यंमुच्चरंन्तमनुंमते मृळयांनः स्वस्ति॥
ॐ पुनंर्नो असुं पृथिवी दंदातु पुनद्यौर्देवी पुनंरन्तरिक्षम्। पुनंर्नः सोमंस्तन्वं ददातु पुनंः पूषा पथ्यां३या स्वस्तिः॥

(ऋग्वेद १०.५९.६-७)

स शक्ति सांग सायुध सवाहनसपरिवार श्री बुध भगवान् अत्रैवागच्छागच्छ। आवाहयिष्ये। आवाहितो भव। संस्थापितो भव। सन्निहितो भव। सन्निरुद्धो भव। अवगुण्ठितो भव। अमृतीकृतो भव। व्याप्तो भव। सुप्रसन्नो भव। ॐतारासुतायं विद्महें। सोमपुत्रायं धीमहि। तन्नों बुधः प्रचोदयात्। इसका तीन बार जप करते हुए अर्घ्य देवें। सौम्य ऋषिः बुधो देवता त्रिष्टुप छन्दः।

ॐउद्बुध्यध्वं हृदयाय नमः। ॐसमनसः सखयः शिरसे स्वाहा। ॐसमग्निमिंध्वं बहवः सनीळाः शिखयै वषट्। ॐदधिक्रामाग्निं कवचाय हुम्। ॐउषसञ्च देवीं नेत्राभ्यां वौषट्। ॐइन्द्रावतो वसे निह्वयेवः अस्त्राय फट्। ॐभूर्भुवः स्वरोमिति दिग्बन्धः।

ध्यानम्— **आत्रेयं मगधाधिपं ग्रहगणस्येशानभागस्थितं बाणाकारमुदङ्मुखं कर लसत् तोणीर बाणासनम्।**
पीतस्रग्वसन द्वयध्वजरथ छत्रश्रिया शोभितं मेरोर्दिव्यगिरेः प्रदक्षिणाकरं सेवामहे तं बुधम्॥

ॐबुं बुधाय नमः। इस मन्त्र का आठ बार जप करें। ॐलं पृथिव्यात्मना गंधं कल्पयामि। ॐअं आकाशात्मना पुष्पं कल्पयामि। ॐयं वाय्वात्मना धूपं कल्पयामि। ॐरं अग्न्यात्मना दीपं कल्पयामि। ॐवं अबात्मना नैवेद्यं कल्पयामि। ॐपं परमात्मना पञ्चोपचार पूजां समर्पयामि।

प्रार्थना— **विशुद्धबुद्धिं श्रुतिकालबोधं सत्यावाचं सोमवंशप्रदीपम्। सुवर्चसं छन्दसो विश्वरूपं बुधं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥**
पीतमाल्यांबरधरः कर्णिकार समुद्यतिः। खड्गचर्म गदापाणिः सिंहस्थो वरदो बुधः॥
पीतमाल्यांबरधरं कर्णिकार समद्युतिम्। खड्गचर्मगदापाणिमात्रेयं सिंहगं बुधम्॥
प्रियंगुकलिकाभासं रूपेणाप्रतिमं बुधम्। सौम्यं सौम्युणोपेतं नमानि शशिनन्दनम्॥ *(नवग्रह पूजाविधान-बुध पूजा प्रकरणम्)*

ॐबुधाय नमः। अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित बुध पूजां समर्पयामि।

बृहस्पति देवता आवाहन—उत्तरदले दीर्घ चतुरस्रपीठे चणकराशिस्थ बृहस्पति प्रतिमायां बृहस्पत्यावाहनं कुर्यात्। ॐपं पद्माय नमः। पीठं संपूज्य। बृहस्पते अतीत्यस्य गृत्समदो बृहस्पतिस्त्रिटुप् बृहस्पत्यावाहने विनियोगः।

ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभातिक्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवसऋतप्रजाततदस्मा सुद्रविणं धेहि चित्रं॥

(ऋग्वेद २.२३.१५)

ॐभूः बृहस्पति ग्रहमावाहयामि। ॐभुवः बृहस्पति ग्रहमावाहयामि। ॐस्वः बृहस्पति ग्रहमावाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः बृहस्पति ग्रहमावाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि।

भगवन् बृहस्पे समस्तदेवताचार्य आंगिरस गोत्र सिंधुदेशेश्वर तप्तसुवर्णसदृशांगदीप्ते चतुर्भुज दण्ड कमण्डल्वक्षसूत्र वरदानांकित पीतांबर माल्यानुलेपन पुष्परागमयाभरणरमणीय सर्वविद्याधिपते नमस्ते सन्नद्धपीत ध्वजपताकोपशोभितेन पीताश्वरथवाहनेन मेरुं प्रदक्षिणीकुर्वन्नागच्छेन्द्र ब्रह्मभ्यां सह पद्मोत्तर

दलमध्ये सुवर्णप्रतिमामुदङ्मुखीं दीर्घ चतुरस्र पीठेऽधितिष्ठ पूजार्थं त्वामावाहयामि। बृहस्पति के आगे दाहिने ओर इन्द्र का आवाहन करें। इन्द्र श्रेष्ठानीत्यस्य गृत्समदइन्द्रस्त्रिष्टुप् इंद्रावाहने विनियोगः।

ॐ इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि चित्तिं दक्षस्य सुभगत्वमस्मे। पोषं रयीणामरिष्टिं तनूनां स्वाद्मानं वाचः सुदिनत्वमह्नाम्॥

(ऋग्वेद २.२१.६)

ॐभूः बृहस्पति अधिदेवतां इन्द्रमावाहयामि। ॐभुवः बृहस्पति अधिदेवतां इन्द्रमावाहयामि। ॐस्वः बृहस्पति अधिदेवतां इन्द्रमावाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः बृहस्पति अधिदेवतां इन्द्रं आवाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि। चतुर्दन्तं गजारूढं बज्रांकुशधरं शचीपतिं नानाभरणभूषितं बृहस्पत्यधि देवं इन्दं आवाहयामि। बृहस्पति के आगे बायें ओर ब्रह्मा का आवाहन करें। ब्रह्मणातइत्यस्य विश्वामित्रो ब्रह्मात्रिष्टुप् ब्रह्मावाहने विनियोगः।

ॐ ब्रह्मणाते ब्रह्मयुजा युनज्मि हरी सखाया सधमाद आशू।
स्थिरं रथं सुखमिन्द्राधितिष्ठन्प्रजानन्विद्वाँउप याहि सोमं॥ (ऋग्वेद ३.३५.४)

नव शक्ति पूजा—ॐधृत्यै नमः। ॐकांत्यै नमः। ॐदयायै नमः। ॐमेधयै नमः। ॐप्रज्ञायै नमः। ॐविद्यायै नमः। ॐयशस्विन्यै नमः। ॐस्थिरायै नमः। ॐसुप्रभायै नमः। ॐनमो भगवते सकलगुणात्मशक्तियुक्ताय अनंताय योग पीठात्मने नमः। सुवर्ण पीठं कल्पयामि।

स्वात्मसंस्थमजं शुद्धं त्वामद्य सुरपूजित। अरण्यामिव हव्याशं बिम्बेस्मिन् सन्निधिं कुरू॥

ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः बृहस्पति प्राण इह प्राणः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः बृहस्पति जीव इह स्थितः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः बृहस्पतेः सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुः श्रोत्रघ्राण प्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा।

ॐ असुनीते पुनरस्मासु चक्षुः पुनः प्राणमिह नो धेहि भोगं। ज्योक्पश्येम सूर्यमुच्चरन्तमनुमते मृळया नः स्वस्ति।

(ऋग्वेद १०.५९.६)

ॐ पुनर्नो असुं पृथिवी ददातु पुनर्द्यौर्देवी पुनरन्तरिक्षम्॥ पुनर्नः सोमस्तन्वं ददातु पुनः पूषा पथ्यां३ या स्वस्तिः॥

(ऋग्वेद १०.५९.७)

सशक्ति साङ्ग सायुधसवाहन सपरिवार श्री बृहस्पति भगवान् अत्रैवागच्छागच्छ। आवाहयिष्ये। आवाहितो भव। संस्थापितो भव। सन्निहितो भव। सन्निरुद्धो भव। अवगुण्ठितो भव। अमृतीकृतो भव। व्याप्तो भव। सुप्रसन्नो भव। ॐ देवाचार्याय विद्महे। वाचस्पत्याय धीमहि। तन्नो गुरुः प्रचोदयात्। इसका तीन बार जप करते हुए अर्घ्य देवें। ॐ बृहस्पते अतियत् हृदयाय नमः। ॐ अर्यो अर्हाच्छिरसे स्वाहा। ॐ द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु शिखायै वषट्। ॐ यदियच्छवस ऋत कवचाय हुम्। ॐ प्रजात तदस्मासु नेत्राभ्यां वौषट्। ॐ द्रविणं धेहि चित्रं अस्त्राय फट्। ॐ भूर्भुवः सुवरोम् इति दिग्बन्धः।

ध्यानम्—सिंधूनामधिपं ग्रहोत्तरगतं दीर्घं चतुष्कोणगम्, प्राप्तं मण्डलमङ्गिरान्वयभुवं दण्डं दधानं करे। सौवर्ण ध्वजवस्त्र भूषणरथछत्र श्रिया शोभितं, मेरोर्दिव्यगिरेः प्रदक्षिणकरं सेवामहे वाक्पतिम्॥ ॐ बृं बृहस्पतये नमः। इस मूल मंत्र का आठ बार जप करें। ॐ लं पृथिव्यात्मने गंधं कल्पयामि। ॐ हं आकाशात्मने पुष्पं कल्पयामि। ॐ यं वाय्वात्मने धूपं कल्पयामि। ॐ रं अग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि। ॐ वं अबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि। ॐ पं परमात्मने पञ्चोपचार पूजां समर्पयामि।

प्रार्थना— **बुध्यासमो यस्य न कश्चिदन्यो मतिं देवा उपजीवन्ति यस्य। प्रजापतेरात्मजं धर्मनित्यं गुरुं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥**

देवदैत्य गुरुश्चैव पीतः साक्षात् चतुर्भुजः। दण्डी च वरदश्चैव साक्षसूत्रकमण्डलुः॥

आङ्गिरसं देवगुरुं पीतस्त्रग्गन्धवस्त्रकम्। दण्डिनं वरदं पीतं साक्षसूत्रकमण्डलुम्॥

देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चनसन्निभम्। वन्ध्यं च त्रिषु लोकेषु प्रणमामि बृहस्पतिम्॥ *(नवग्रह पूजा विधान-बृहस्पति पूजा प्रकरणम्)*

ॐ बृहस्पतये नमः। अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित बृहस्पति पूजां समर्पयामि।

शुक्र देवता आवाहन—पूर्वदले पञ्चकोण पीठस्थ निष्पावधान्यस्थ शुक्र प्रतिमायां शुक्रावाहनं कुर्यात्। ॐ पं. पद्माय नमः। पीठं संपूज्य। शुक्रंत इत्यस्य भरद्वाजः शुक्रस्त्रिष्टुप् शुक्रावाहने विनियोगः।

ॐ शुक्रंतें अन्यद्यंजतं तें अन्यद्विषुंरूपे अहंनीद्यौरिंवासि। विश्वाहिमाया अवंसिस्वधावो भद्रातेंपूषन्नि हरातिरंस्तु॥

(ऋग्वेद ६.५८.१)

ॐ भूः शुक्रग्रहमावाहयामि। ॐ भुवः शुक्रग्रहमावाहयामि। ॐ स्वः शुक्रग्रहमावाहयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः शुक्रग्रहमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। भगवन् भार्गव समस्य दैत्यगुरो भार्गव गोत्र भोजकट देशेश्वर रजतोज्वलाङ्गकांते चतुर्भुज दण्ड कमण्डल्वक्ष सूत्र वरदानांकित शुक्लांबरमाल्यानुलेपन वज्राभरण भूषित सर्वाङ्गसमस्त नीतिशास्त्र निपुणमते नमस्ते सन्नद्धशुक्लध्वज पताकोपशोभितेन शुक्लाश्व सहितेन रथेन मेरु प्रदक्षिणीकुर्वन्नागच्छेन्द्राणींद्राभ्यां सह पूर्वदलमध्ये रजतप्रतिमां प्राङ्मुखीं पञ्चकोणपीठेऽधितिष्ठ पूजार्थं त्वां आवाहयामि। कहकर शुक्र का आवाहन करें। शुक्र के आगे दाहिने ओर इंद्राणी का आवाहन करें। इंद्राणीमास्वित्यस्य वृषाकपिरिंद्राणी पंक्तिः इंद्राण्यावाहने विनियोगः।

ॐ इंद्राणीमासुनारिषुसुभगामहमंश्रवं। नह्यंस्या अपरंचन जरसामरंतेपतिर्विश्वंस्मादिंद्र उत्तरः॥ (ऋग्वेद १०.८६.११)

ॐ भूः शुक्राधिदेवतां इंद्राणीमावाहयामि। ॐ भुवः शुक्राधिदेवतां इंद्राणीमावाहयामि। ॐ स्वः शुक्रधिदेवतां इंद्राणीमावाहयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः शुक्राधिदेवतां इंद्राणीमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। ॐ संतानमंजरीवरदानधर द्विभुजांशुक्राधिदेवतां इंद्राणीं आवाहयामि। शुक्र के आगे बायें ओर इन्द्र का आवाहन करें। इंद्रमिद्देवतातय इत्यस्य मेधातिथिरिंद्रोबृहती इंद्रावाहने विनियोगः।

ॐ इंद्रामिद्देवतांतय इंद्रं प्रयत्यंध्वरे। इंद्रंसमीकेवनिनोंहवामह इंद्रंधनंस्य सातयें। (ऋग्वेद ८.३.५)

ॐ भूः शुक्र प्रत्यधिदेवतां इन्द्रं आवाहयामि। ॐ भुवः शुक्र प्रत्यधिदेवतां इन्द्रं आवाहयामि। ॐ स्वः शुक्र प्रत्यधिदेवतां इन्द्रं आवाहयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः शुक्र प्रत्यधिदेवतां इन्द्रं आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। चतुर्दन्तगजारूढं वज्रांकुशधरं शचीपतिं नानाभरणभूषितं भार्गव प्रत्यधिदेवं इन्द्रं आवाहयामि।

नव शक्ति पूजा—ॐ शान्तायै नमः। ॐ नन्दायै नमः। ॐ स्मृत्यै नमः। ॐ कांत्यै नमः। ॐ लक्ष्म्यै नमः। ॐ प्रीत्यै नमः। ॐ कलायै नमः। ॐ अमलायै नमः। ॐ सर्वसंपत्कार्यै नमः। ॐ नमो भगवते सकलगुणात्मशक्तियुक्ताय अनंतायययोगपीठात्मने नमः। सुवर्णपीठं कल्पयामि। स्वात्मसंस्थमजं शुद्धं त्वामद्यासुरपूजित। अरण्यामिव हव्याशं बिम्बेस्मिन् सन्निधिं कुरु॥ ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः शुक्र प्राण इह प्राणः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः शुक्र जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः शुक्रस्य सवेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुश्रोत्रध्राणप्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा।

ॐ असुंनीते पुनंरस्मासु चक्षुः पुनः प्राणमिह नों धेहि भोगं। ज्योक्पंश्येम सूर्यंमुच्चरंन्तमनुंमते मृळयांनः स्वस्ति।

ॐ पुनर्नो असुं पृथिवी ददातु पुनर्द्यौर्देवी पुनरन्तरिक्षम्। पुनर्नः सोमस्तनवं ददातु पुनः पूषा पथ्यां ३या स्वस्तिः॥

(ऋग्वेद १०.५९.६-७)

सशक्ति साङ्ग सायुध सवाहन सपरिवार श्री शुक्र भगवान् अत्रैवागच्छागच्छ। आवाहयिष्ये। आवाहितो भव। संस्थापितो भव। सन्निहितो भव। सन्निरुद्धो भव। अवगुण्ठितो भव। अमृतीकृतो भव। व्याप्तो भव। सुप्रसन्नो भव। क्षस्व। ॐ दैत्याचार्याय विद्महे विद्यारूपाय धीमहि। तन्नः शुक्रः प्रचोदयात्॥ इसका तीन बार जप कर अर्घ्य देवें। भारद्वाज ऋषिः शुक्रो देवता त्रिष्टुप् छन्दः। ॐ शुक्रं ते अन्यत् हृदयाय नमः। ॐ यजतं ते अन्यत् शिरसे स्वाहा। ॐ विषुरूपे अहनीद्यौरिवासि शिखायै वषट्। ॐ विश्वाहि माया कवचाय हुम्। ॐ अवसि स्वधावो भद्राते नेत्राभ्यां वौषट्। ॐ पूषन्निह रातिरस्तु अस्त्राय फट्। ॐ भूर्भुवः स्वरोमिति दिग्बन्धः।

ध्यानम्—भोजेशं भृगुगोत्रजं ग्रहगणप्राचीन भागस्थितं, पाञ्च श्रोज्वलमण्डलं करयुगे दण्डं च सत्कुंडिकाम्॥
बिभ्राणं सितवस्त्रभूषणरथच्छत्रश्रिया शोभितं, मेरोर्दिव्यगिरेः प्रदक्षिणाकरं सेवामहे भार्गवम्॥

(नवग्रह पूजा विधान-शुक्र पूजा प्रकरणम्)

ॐ शुं शुक्राय नमः। इस मूलमंत्र का आठ बार जप करें। ॐ लं पृथिव्यात्मने गंधं कल्पयामि। ॐ हं आकाशात्मने पुष्पं कल्पयामि। ॐ यं वाय्वात्मने धूपं कल्पयामि। ॐ रं अग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि। ॐ वं अबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि। ॐ पं परमात्मने पञ्चोपचारपूजां समर्पयामि।

प्रार्थना—वर्षप्रदं चिंतितार्थानुकूलं मौनाद्विशिष्टं विनयोपपन्नम्। तं भार्गवं योग विशुद्धसत्वं शुक्रं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥ शुक्रं शुक्रतनुं श्वेत वस्त्राढ्यं दैत्यमंत्रिणम्। भार्गवं दण्डवरदं कमण्डल्वक्षसूत्रिणम्॥ हिमकुन्द मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्। सर्वशास्त्र प्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्॥ ॐ शुक्राय नमः अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित शुक्रपूजां समर्पयामि।

शनैश्चर देवता आवाहन—मण्डलस्य पश्चिम दले धनुराकारपीठे तिलधान्यस्थ शनैश्चर प्रतिमायां शनैश्चरावाहनं कुर्यात्। शमिग्न रिरिंबिठिः शनैश्चर उष्णिक् शनैश्चरावाहने विनियोगः। ॐ पं पद्माय नमः। पीठं संपूज्य।

शमग्निरग्निभिः करच्छंनस्तपतु सूर्यः। शंवातोवात्वरपा अपस्त्रिधः। (ऋग्वेद ८.१८.९)

ॐभूः शनैश्चर ग्रहमावाहयामि। ॐभुवः शनैश्चर ग्रहमावाहयामि। ॐस्वः शनैश्चर ग्रहमावाहयामि। ॐभू र्भुवः स्वः शनैश्चर ग्रहमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

भगवन् शनैश्चर भास्कर तनय काश्यप गोत्र सौराष्ट्र देशेश्वर कज्जल समानाङ्ग कांते चतुर्भुज चाप-तूणीर-कृपाणाभ्यांकित नीलांबर माल्यानुलेपन नीलरत्न भूषणालंकृतसर्वांग समस्त भुवन भीषणामर्षमूर्ते नमस्ते सन्नद्ध नीलध्वजपताकोपशोभितेन नील गृध्ररथवाहनेन मेरु प्रदक्षिणी कुर्वन्नागच्छ प्रजापति यमाभ्यां सह पश्चिम दलामध्ये कालायस प्रतिमां प्रत्यङ्मुखीं चापाकर पीठेऽधितिष्ठ पूजार्थ त्वां आवाहयामि। शनैश्चर के आगे दाहिने ओर प्रजापति का आवाहन करें। प्रजापते हिरण्यगर्भः प्रजापतिस्त्रिष्टुप् प्रजापत्यावाहने विनियोगः।

ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम्॥ (ऋग्वेद १०.१२१.१०)

ॐभूः शनैश्चराधिदेवतां प्रजापतिं आवाहयामि। ॐभुवः शनैश्चराधिदेवतां प्रजापतिं आवाहयामि। ॐस्वः शनैश्चराधिदेवतां प्रजापतिं आवाहयामि। ॐभू भुर्वः स्वः शनैश्चराधिदेवतां प्रजापतिं आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। यज्ञोपवीतिनं हंसस्थं एकवक्त्रं अक्षमालास्रुव पुस्तक कमण्डलु सहितं चतुर्भजं शनैश्चराधिदेवं प्रजापतिमावाहयामि। शनैश्चर के आगे बायें ओर यम का आवाहन करें। यमाय सोममित्यस्य समोयमोनुष्टुप् यमावाहने विनियोगः।

ॐ यमाय सोमं सुनुत यमाय जुहुता हविः यमं ह यज्ञो गच्छत्यग्निदूतो अरंकृतः॥ (ऋग्वेद १०.१४.१३)

ॐभूः शनैश्चर प्रत्यधिदेवतां यमं आवाहयामि। ॐभुवः शनैश्चर प्रत्यधिदेवतां यमं आवाहयामि। ॐस्वः शनैश्चर प्रत्यधिदेवतां यमं आवाहयामि। ॐशनैश्चर प्रत्यधिदेवतां यमं आवाहयामि। ॐभू र्भुवः स्वः शनैश्चर प्रत्यधिदेवतां यमं आवाहयमि, स्थापयामि, पूजयामि। ईशत्पीनं दण्डहस्तं रक्त सदृश पाशधरं कृष्णावर्ण महिषारूढं सर्वा भरण भूषितं शनैश्चर प्रत्यधिदेवतां यमं आवाहयामि।

नव शक्तिपूजा—ॐभद्रायै नमः। ॐतंद्रायै नमः। ॐक्षुधायै नमः। ॐमृत्यवे नमः। ॐजरायै नमः। ॐमायायै नमः। ॐमनोमयै नमः। ॐकामुकायै नमः। ॐवरदायै नमः। ॐनमो भगवते सकलगुणात्मशक्तियुक्ताय अनंत योगपीठात्मने नमः। सुवर्णपीठं कल्पयामि। स्वात्मसंस्थमजं शुद्धं त्वामद्य रविनन्दन। अरण्यामिव हव्याशं बिम्बेस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः शनैश्चर प्राण इह प्राणाः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः शनैश्चर जीव इह स्थितः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हो सं हं सः शनैश्चरस्य सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुः श्रोत्र घ्राणप्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा।

ॐ असुंनीते पुनंरस्मासु चक्षुः पुनंः प्राणमिह नोंधेहि भोगं। ज्योक्पंश्येम सूर्यमुच्चरंन्तमनुंमते मृळयांनः स्वस्ति॥
ॐ पुनंर्नो असुं पृथिवी दंदातु पुनर्द्यौर्देवी पुनंरन्तरिंक्षम्। पुनंर्नः सोमंस्तन्वं ददातु पुनंः पूषा पथ्यां ३ या स्वस्तिः॥

(ऋग्वेद १०.५९.६-७)

स शक्ति साङ्ग सायुधसवाहन सपरिवार री शनैश्चर भगवन् अत्रैवागच्छागच्छ आवाहयिष्ये। आवाहितो भव। संस्थापितो भव। सन्निहितो भव। सन्निरूद्धो भव। अवगुण्ठितो भव। अमृतीकृतो भव। व्याप्तो भव। सुप्रसन्नो भव। क्षमस्व। ॐसूर्यपुत्राय विद्महे शनैश्चराय धीमहि। तन्नो मंदः प्रचोदयात्॥ इसका तीन बार जप करते हुए अर्घ्य देवें। शिरिंबिठिः ऋषिः शनैश्चरोदेवता उष्णिक् छन्दः। ॐशमग्नि रग्निर्भिर्हृदयाय नमः। ॐकरच्छिरसे स्वाहा। ॐशन्नस्तपतु शिखायै वषट्। ॐसूर्यः कवचाय हुम्। ॐशं वातो वात्वरपा नेत्राभ्यां वौषट्। ॐअपस्त्रिधः अस्त्राय फट्। ॐभूर्भुवः स्वरोम् इति दिग्बन्धः।

ध्यानम्—आन्ध्रेशं ग्रंहपश्चिमं करलसत्तूणीर बाणासनं, कोदण्डाकृतिमण्डलं घननिभं गृध्रासनं काश्यपिम्॥ नीलच्छत्रविभूषणं ध्वजरथः छत्रश्रिया शोभितं। मेरोर्दिव्यगिरेः प्रदक्षिण करं सेवामहे भानुजम्॥

ॐ शं शनैश्चराय नमः। इस मूल मन्त्र का आठ बार जप करें। ॐ लं पृथिव्यात्मने गंधं कल्पयामि। ॐ हं आकाशात्मने पुष्पं कल्पयामि। ॐ यं वाय्वात्मने धूपं कल्पयामि। ॐ रं अग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि। ॐ वं अबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि। ॐ पं परमात्मने पञ्चोपचार पूजां समर्पयामि।

प्रार्थना— **इंद्रदीलद्युतिः शूली सरदो गृध्रवाहनः। बाणबाणासनधरः स्मर्तव्योऽर्कसुतः सदा॥**
इंद्रनीलनिभं मन्दं काश्यपिं चित्रभूषणाम्। चापबाणधरं चर्मशूलिनं गृध्रवाहनम्॥
शनैश्चरो राशितो राशिमेति शनैर्भोगो गमनं चेष्टितं च। सूर्यात्मजं क्रोधनं सुप्रसन्नं मंदं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥
नीलांजन समाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्। छायामार्तण्ड संभूतं तं नमामि शनैश्चरम्॥ *(स्मृति सङ्ग्रह)*

ॐ शनैश्चराय नमः, अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित शनैश्चर पूजां समर्पयामि।

राहु देवता आवाहनम्—मण्डलस्य नैर्ऋत्यदले शूर्पाकार मण्डले माष धान्यस्थ राहुप्रतिमायां राहु आवाहनं कुर्यात्। पं पद्माय नमः पीठं संपूज्य। कयान इत्यस्य वामदेवो राहुर्गायत्री राहु आवाहने विनियोगः।

ॐ कयांनश्चित्र आभुंवदूतीसदावृंधः सखा। कया शचिंष्ठयावृता। *(ऋग्वेद ४.३१.१)*

ॐ भूः राहुग्रहमावाहयामि। ॐ भुवः राहुग्रहमावाहयामि। ॐ स्वः राहुग्रहमावाहयामि। ॐ भू र्भुवः स्वः राहुग्रहमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। भगवान् राहोरविसोम मर्दन सिंहिकानंदन पैठीनसगोत्र बर्बर देशेश्वर कालमेघद्युते व्याघ्रवदन चतुर्भुज खड्गचर्म शूल वरदानांकित कृष्णांबर माल्यानुलेपन गोमेदकाभरण भूषित सर्वाङ्गशौर्यनिधे नमस्ते सन्नद्ध कृष्णध्वजपताकोप शोभितेन कृष्णसिंहरथवाहनेन मेरुं प्रदक्षिणीकुर्वन् आगच्छ सर्पकालाभ्यां सह नैर्ऋतदलमध्ये सीसक प्रतिमां दक्षिणामुखीं शूर्पाकार पीठेधितिष्ठ पूजार्थ त्वां आवाहयामि। राहु के आगे दाहिने ओर सर्पो का आवाहन करें। आयङ्गौः सार्पराज्ञीसर्पागायत्री सर्पावाहने विनियोगः।

नवशक्ति पूजा— ॐ उग्रायै नमः। ॐ यमदूत्यै नमः। ॐ कराल्यै नमः। ॐ विकरालिकायै नमः। ॐ धूम्रायै नमः। तीव्रायै नमः। ॐ अजितायै नमः। ॐ शक्त्यै नमः। ॐ क्रूरायै नमः। ॐ नमो भगवते सकलगुणात्मशक्ति युक्ताय अनंताय योगपीठात्मने नमः। सुवर्णपीठं कल्पयामि। स्वात्मसंस्थमजं शुद्धं त्वामद्य सिंहिकासुत। अरणयामिव हव्याशं बिम्बेस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः राहु प्राण इह प्राणाः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः राहु जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः राह्वोः सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुः श्रोत्र घ्राण प्राणः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा।

ॐ असुनीते पुनरस्मासु चक्षुः पुनः प्राणमिह नो धेहि भोगम्। ज्योक्पश्येम सूर्यमुच्चरन्त मनुमते मृळयानः स्वस्ति॥
ॐ पुनर्नो असुं पृथिवी ददातु पुनर्द्यौर्देवी पुनरन्तरिक्षम्। पुनर्नः सोमस्तन्वं ददातु पुनः पूषा पथ्यां३या स्वस्तिः॥
(ऋग्वेद १०.५९.६-७)

स शक्ति साङ्ग सायुध सवाहन सपरिवार श्री राहु भगवान् अत्रैवागच्छागच्छ आवाहयिष्ये। आवाहितो भव। संस्थापितो भव। सन्निहितो भव। सन्निरुद्धो भव। अवगुण्ठितो भव। अमृतीकृतो भव। व्याप्तो भव। सुप्रसन्नो भव। क्षमस्व।

ॐ सैंहिकेयाय विद्महे। तमो मयाय धीमहि। तन्नो राहुः प्रचोदयात्॥

इसका तीन बार जप करते हुए अर्घ्य देवें। कयानोवामदेव ऋषिः राहुर्देवता गायत्री छन्दः ॐ कयानश्चित्र हृदयाय नमः। ॐ आभुवच्छिरसे स्वाहा। ॐ ऊती शिखायै वषट्। ॐ सदावृधः सखा कवचाय हुम्। ॐ कया शचिष्ठया नेत्राभ्यां वौषट्। ॐ वृता अस्त्राय फट्। ॐ भूर्भुवः स्वरोमिति दिग्बन्धः।

ध्यानम्— **राहुं मध्यमदेशजं च निर्ऋतिस्थाने स्थितं पैठिनं गोत्रं खड्गधरं शूर्प सदृशं शर्दूदरत्नासनम्।**
नीलच्छत्रविभूषणध्वजरथच्छत्रश्रिया शोभितं मेरोर्दिव्यगिरेः प्रदक्षिणकरं सेवामहे तामसम्॥ (स्मृति सङ्ग्रह)

ॐ रां राहवे नमः। इस मूल मंत्र का आठ बार जप करें। ॐ लं पृथिव्यात्मने गंधं कल्पयामि। ॐ हं आकाशात्मने पुष्पं कल्पयामि। ॐ यं वाय्वात्मने धूपं कल्पयामि। ॐ रं अग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि। ॐ वं अबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि। ॐ पं परमात्मने पञ्चोपचार पूजां समर्पयामि।

ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमी दसंदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः॥ (ॠग्वेद १०.१८९.१)

ॐभूः राहु आधिदेवतां सर्पान् आवाहयामि। ॐभुवः राहु अधिदेवतां सर्पान् आवाहयामि। ॐस्वः राहु अधिदेवतां सर्पान् आवाहयामि। ॐभू भुर्वः स्वः राहु अधिदेवान् सर्पान् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। अक्षसूत्र घटान् कुंडलाकार पुच्छयुक्तानेक भोगां स्त्रिभोगान्भीषणान् राह्वधिदेवताम् सर्पान् आवाहयामि। राहु के आगे बायें ओर मृत्यु का आवाहन करें। परमृत्योसंकुसुकः मृत्यु स्त्रिषुप् मृत्यु आवाहने विनियोगः।

ॐ परंमृत्यो अनुपरेहिपंथांयस्तेस्वइतरो देवयानात्।

चक्षुंष्मते श्रृणवतेतें ब्रवीमिमानंः प्रजांरींरिषोमोतवीरान्॥ (ॠग्वेद १०.१८.१)

ॐभूः राहु प्रत्यधिदेवतां मृत्युं आवाहयामि। ॐभुवः राहु प्रत्यधिदेवतां मृत्युं आवाहयामि। ॐस्वः राहु प्रत्यधिदेवतां मृत्युं आवाहयामि। ॐभू भुर्वः स्वः राहुप्रत्यधिदेवतां मृत्युं आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। करालवदनं नीलाङ्गं भीषणं पाशदण्डधरं सर्पवृश्चिक रोमाणं राहु प्रत्यधिदेवतां मृत्युमावाहयामि।

प्रार्थना—यो विष्णुनैवामृतं पीयमानः छित्वाशिरो ग्रहभावे नियुक्तः। यश्चन्द्रसूर्याग्रसते पर्वकाले राहुं सदा शरणामहं प्रपद्ये॥
करालवदनः खड्गचर्मशूली वरप्रदः। नीलसिंहासनस्थश्च ग्रहरत्नं प्रशस्यते॥
सैंहिकेयं करालास्यं कोरिडनेयं तमोमयम्। खड्गचर्मधरं भोमं नील सिंहासने स्थितम्॥
अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्। सिंहिकागर्भसंभूतं राहु च प्रणामाम्यहम्॥
ॐ राहवे नमः, अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित राहु पूजां समर्पयामि। *(ऋग्वेद स्मृति सङ्ग्रह)*

केतु देवता आवाहनम्—मण्डलस्य वायव्यदले ध्वजाकार मण्डले कुलित्थराशौ केतु प्रतिमायां केत्वावाहनं कुर्यात्। ॐ पं पद्माय नमः, पीठं संपूज्य। केतुं कृण्वन्नित्यस्य मधुच्छंदाः केतुर्गायत्री केत्वावाहने विनियोगः।

ॐ केतुं कृण्वन्नंकेतवे पेशोंमर्या अपेशसें। समुषद्भिंरजायथाः॥ *(ऋग्वेद १.६.३)*

ॐ भूः केतु ग्रहमावाहयामि। ॐ भुवः केतु ग्रहमावाहयामि। ॐ स्वः केतु ग्रहमावाहयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः केतु ग्रहमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। भगवन् केतो कामरूप जैमिनि गोत्र मध्यदेशेश्वर धूम्रवर्णध्वजाकृते द्विभुजगदावरदानांकित चित्रांबरमाल्यानुलेपन वैडूर्यमयाभरणभूषित सर्वाङ्गचित्रशक्ते नमस्ते सन्नद्ध चित्रध्वजपताकोपशोभितेन चित्रकपोतरथवाहनेन मेरुं प्रदक्षिणीकुर्वन्नागच्छ ब्रह्मचित्रगुप्ताभ्यां सह वायव्यदलमध्ये कांस्यप्रतिमां दक्षिणामुखीं ध्वजाकार पद्मे धितिष्ठपूजार्थं त्वां आवाहयामि। केतु के आगे दाहिने ओर ब्रह्मा जी का आवाहन करें। ब्रह्मजज्ञानं वामदेवोब्रह्मात्रिष्टुप् ब्रह्मावाहने विनियोगः।

ॐ ब्रह्मंजज्ञानं प्रंथमंपुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोंवेन आंवः। सबुध्न्यां उपमा अंस्यविष्ठाः सतश्चयोनिमसंतश्चविवंः॥
(यजुर्वेद-४ काण्ड-२ प्रश्ने-८ अनुवाक-४ मन्त्र)

ॐ भूः केत्वधिदेवतां ब्रह्माणमावाहयामि। ॐ भुवः केत्वधिदेवतां ब्रह्माणमावाहयामि। ॐ स्वः केत्वधिदेवतां ब्रह्माणमावाहयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः केत्वधिदेवतां ब्रह्माणमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। पद्मासनस्थं जटिलं चतुर्मुखं अक्षमालास्रुवपुस्तक कमण्डलुधरं कृष्णाजिनवाससं पार्श्वस्थितहंसं केत्वधिदेवतां ब्रह्माणमावाहयामि। केतु के आगे बायें ओर चित्रगुप्त का आवाहन करें। सचित्रचित्रमित्यस्य भरद्वाजः चित्रगुप्तस्त्रिष्टुप् चित्रगुप्तावाहने विनियोगः।

ॐ सचिंत्रचि॒त्रं चि॒तयंयमु॒स्मे चित्रंक्षत्रचि॒त्रतंमंवयो॒धां। चं॒द्रंरयिंपुंरु॒वीरंबृ॒हंतं॒ चन्द्रंचं॒द्राभिंर्गृ॒णा॒तेयुं॒वस्व॥ (ऋग्वेद ६.६.७)

ॐ भूः केतु प्रत्यधिदेवतां चित्रगुप्तमावाहयामि। ॐ भुवः केतु प्रत्यधिदेवतां चित्रगुप्तमावाहयामि। ॐ स्वः केतु प्रत्यधिदेवतां चित्रगुप्तमावाहयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः केतु प्रत्यधिदेवतां चित्रगुप्तमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। उदीच्यवेषधरं सौम्यदर्शनं लेखनीपत्रोपेतद्विभुजं केतु प्रत्यधिदेवं चित्रगुप्तं आवाहयामि।

नवशक्ति पूजा—ॐ निम्नायै नमः। ॐ अभयायै नमः। ॐ प्रकीर्णायै नमः। ॐ लीनायै नमः। ॐ भेदायै नमॐ: ॐ नटायै नमः। ॐ आज्ञयै नमः। ॐ प्रतिज्ञायै नमः। ॐ मेधायै नमः।

ॐ नमो भगवते सकलगुणात्मशक्तियुक्ताय अनंताय योगपीठात्मने नमः, सुवर्णपीठं कल्पयामि। स्वात्मसंस्थमजं शुद्धं त्वामद्य विकृतानन। अरण्यामिव हव्याशं बिम्बेस्मिन् सन्निधिं कुरु। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः केतु प्राण इह प्राणः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः केतु जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः केत्वोः सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुः श्रोत्रघ्राणप्राणाः। इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा।

ॐ असुंनीते॒ पुनंर॒स्मासु चक्षुः पुनंः प्रा॒णमि॒ह नों धेहि॒ भोगंं। ज्योक्पंश्येम॒ सूर्यंमु॒च्चरंन्त॒मनुंमते मृळयांनः स्व॒स्ति॥

ॐ पुनंर्नो॒ असुं पृथि॒वी ददातु पुन॒र्द्यौर्दे॒वी पुनंर॒न्तरिक्षम्। पुनंर्न॒ः सोमंस्त॒न्वं॑ ददातु॒ पुनंः पूषा॒ प॒थ्यां॒ ३॒ या स्व॒स्तिः॥

(ऋग्वेद १०.५९.६-७)

सशक्ति साङ्गसायुधसवाहनसपरिवार श्री केतु भगवन् अत्रैवागच्छागच्छ, आवाहयिष्ये, आवाहितो भव। अवगुण्ठितो भव। अमृतीकृतो भव। व्याप्तो भव। सुप्रसन्नो भव। क्षमस्व।

ॐ ब्र॒ह्मपुत्रायं वि॒द्महें विकृता॒स्यायं धीमहि। तन्नंः केतुः प्रचो॒दयां॒त्॥

इसका तीन बार जप करते हुए अर्ध्य देवें। मधुच्छन्दा ऋषिः केतुर्देवता गायत्री छन्दः। ॐ केतुं कृण्वन् हृदयाय नमः। ॐ अकेतवे शिरसे स्वाहा। ॐ पेशोमर्या शिखायै वषट्। ॐ अपेशसे कवचाय हुम्। ॐ समुषद्भिः नेत्राभ्यां वौषट्। ॐ अजायथाः अस्त्राय फट्। ॐ भुर्भूवस्वरोमिति दिग्बन्धः।

ध्यानम्—केतुं बर्बरदेशजं ध्वजसमाकारं विचित्रायुधं। चित्रं जैमिनिगोत्रजं ग्रहभुवो वायव्यभागस्थितम्। चित्रं स्यंदन भूषणध्वजरथच्छत्रश्रिया शोभितं। मेरोर्दिव्यगिरेः प्रदक्षिणाकरं सेवामहे तं ध्वजम्। ॐ कें केतवे नमः। इस मूल मंत्र का आठ बार जप करें। ॐ लं पृथिव्यात्मने गंधं कल्पयामि। ॐ हं

आकाशात्मने पुष्पं कल्पयामि। ॐयं वाय्वात्मने धूपं कल्पयामि। ॐरं अग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि। ॐवं अबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि। ॐ पं परमात्मने पञ्चोपचारपूजां समर्पयामि।

प्रार्थना— **ये ब्रह्मपुत्रा ब्रह्मसमानवक्त्रा ब्रह्मोद्भवाः ब्रह्मसमाः कुमाराः।**
ब्रह्मोत्तमा वरदा जामदग्न्याः केतून् सदा शरणमहं प्रपद्ये॥
धूम्राद्विबाहवः सर्वे गदिनो विकृताननाः। गृध्रासनगताः नित्यं केतवः स्युर्वरप्रदाः॥
धूम्रान् द्विबाहून् गदिनो विकृतास्यान् शतात्मकान्। गृध्रासनगतान् केतून् वरदान् ब्रह्मणः सुतान्।
पालाश धूम्रसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्। रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्॥ *(स्मृति सङ्ग्रह)*

ॐकेतवे नमः। अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित केतु पूजां समर्पयामि।

कर्म साद्गुण्य देवता आवाहन

कर्म के सभी गुणों को यजमान को देने वाले देवता। ये कर्म के लोपों को दूरकर पूर्ण फल दिलाते हैं। ये छः है।

शनैवायु प्रदेशे कर्म साद्गुण्य देवतां विनायकं आवाहयेत्।

नवग्रह मण्डल के वायव्य दिशा में विनायक का आवाहन करें। सभी देवतावाहन मण्डल के पश्चिम में करें। आतूनइत्यस्य काण्वः कुसीदी विनायको गायत्री क्रतु साद्गुण्य देवता विनायकावाहने विनियोगः।

ॐ आतूनं इन्द्रक्षुमंतंचित्रङ्ग्राभंसङ्गृभाय। महाहस्ती दक्षिणेन॥ *(ऋग्वेद ८.८१.१)*

ॐभूः क्रतु साद्गुण्यदेवतां विनायकं आवाहयामि। ॐभुवः क्रतु साद्गुण्यदेवतां विनायकं आवाहयामि। ॐस्वः क्रतु साद्गुण्यदेवतां विनायकं आवाहयामि।

ॐभूर्भुवः स्वः क्रतु साद्गुण्यदेवतां विनायकं आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। उनके (विनायक के) दाहिने ओर दुर्गा जी का आवाहन करें। जातवेद से कश्यपो दुर्गात्रिष्टुप् क्रतुसाद्गुण्य देवता दुर्गामावाहने विनियोगः।

ॐ जातवेदसे सुनवाम् सोममरातीयतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदति दुर्गाणिविश्वा नावेव सिंधुंदुरितात्यग्निः॥
(ऋग्वेद १.९९.१)

ॐभूः क्रतु साद्गुण्यदेवतां दुर्गामावाहयामि। ॐभुवः क्रतु साद्गुण्यदेवतां दुर्गामावाहयामि। ॐस्वः क्रतु साद्गुण्यदेवतां दुर्गामावाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः क्रतु साद्गुण्यदेवतां दुर्गामावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। शक्तिबाणशूलखड्गचक्र चन्द्रबिम्बखेटकपालपरशु टंकोपेतां दशभुजां सिंहारूढां दुर्गाख्यदैत्यासुहारिणीं दुर्गामावाहयामि। दुर्गा जी के दाहिने ओर क्षेत्रपाल का आवाहन करें। क्षेत्रस्य पतिना वामदेवः क्षेत्रपालोनुष्टुप् क्रतुसाद्गुण्य देवता क्षेत्रपालावाहने विनियोगः।

ॐ क्षेत्रस्य पतिना वयं हितेनेवजयामसि। गामश्वंपोषयित्वा सनोमृळातीदृशे॥ (ऋग्वेद ४.५७.१)

ॐभू क्रतु साद्गुण्य देवतां क्षेत्रपालमावाहयामि। ॐभुवः क्रतु साद्गुण्यदेवतां क्षेत्रपालमावाहयामि। ॐस्वः क्रतु साद्गुण्यदेवतां क्षेत्रपालमावाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः क्रतु साद्गुण्यदेवतां क्षेत्रपालमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। श्यामवर्णं त्रिलोचनं ऊर्ध्वकेशं सुदंष्ट्रं भ्रुकुटि कुटिलाननं नूपुरालंकृतांघ्रिं सर्पमेखलयायुतं सर्पाङ्गमतिक्रुद्धं क्षुद्रघटाबद्ध गुल्फावलंबिनि नृकरोटीमाला धारिणं उरगकौपीनं चंद्रमौलिं दक्षिणहस्तैः शूलवेतालखड्गदुंदुभिन्दधानं वामहस्तैः कपाल घंटाचर्म चापान्दधानं भीमं दिग्वाससं अमित द्युतिं क्षेत्रपालमावाहयामि। क्षेत्रपाल के दाहिने ओर वायु का आवाहन करें। क्राणाशिशुरित्य स्यत्रितोवायुरुष्णिाक् क्रतुसाद्गुण्यदेवता वाय्वावाहने विनियोगः।

ॐ क्राणाशिशुर्महीनांहिन्वन्नृतस्य दीधितिं। विश्वापरिप्रियाभुवदधद्विता॥ (ऋग्वेद ९.१०२.१)

ॐभूः क्रतु साद्गुण्यदेवतां वायुमावाहयामि। ॐभुवः क्रतु साद्गुण्यदेवतां वायुमावाहयामि। ॐस्वः क्रतु साद्गुण्यदेवतां वायुमावाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः क्रतु साद्गुण्यदेवतां वायुमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। धवद्धरिणपृष्ठगतं ध्वजवरदानधारिणं धूम्रवर्णं वायुं आवाहयामि। वायु के दाहिने ओर आकाश का आवाहन करें। आदित्प्रत्नस्य वत्स आकाशो गायत्री आकाशावाहने विनियोगः।

ॐ आदित्प्रत्नस्यरेतसोज्योतिंष्पश्यंति वासरं। परोयदिध्यतेदिवा॥ (ऋग्वेद ८.६.३०)

ॐ भूः क्रतु सादगुरायदेवतां आकाशं आवाहयामि। ॐ भुवः क्रतु साद्गुरायदेवतां आकाशं आवाहयामि। ॐ स्वः क्रतु साद्गुरायदेतवां आकाशं आवाहयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः क्रतु साद्गुरायदेवतां आकाशं आवाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि। नीलोत्पलाभं नीलांबरधारिणं चंद्रार्कोपेतं द्विभुजंषंढं आकाशमावाहयामि। अश्विनावर्ति राहूगणो गौतमोश्विनावुष्णिक् अश्व्यावाहने विनियोगः।

ॐ अश्विंनावुर्तिरुस्मदागोमंद्दस्त्राहिरंरायवत्। अुर्वाग्रथं॒ समंनसानियंच्छतम्॥ (ऋग्वेद १.९२.१६)

ॐ भूः क्रतु साद्गुराय देवतां अश्विनौ आवाहयामि। ॐ भुवः क्रतु साद्गुराय देवतां अश्विनौ आवाहयामि। ॐ स्वः क्रतु साद्गुराय देवतां अश्विनौ आवाहयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः क्रतु साद्गुराय देवतां अश्विनौ आवांहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। प्रत्येकमौषधिपूस्तकोपेत दक्षिणावामहस्तावन्योन्यसंसक्तदेहो एकस्य दक्षिणपार्श्वे अपरस्य वामपार्श्वे रत्नमाराडवर शुक्लांबरधारि नारीयुग्मोपेतो देवभिषजो अश्विनौ आवाहयामि।

क्रतु संरक्षक देवता—क्रतु संरक्षक देवता आठ हैं। ये यज्ञ का संरक्षण करते हैं। आठ दिशाओं के अधिपति अष्टदिक्पालक क्रतु संरक्षक देवता कहलाते हैं। **प्रागदलाग्रे** नवग्रह मराडल के पूर्व दल के अग्र भाग में इन्द्र का आवाहन करें। इंद्रं वो मधुच्छन्दा इन्द्रो गायत्री इन्द्रावाहने विनियोगः।

इन्द्रंवोविश्वतुस्परिहवांमहे जनेंभ्यः। अुस्माकंमस्तु केवंलः॥ (ऋग्वेद १.७.१०)

ॐ भूः क्रतु संरक्षकदेवतां इन्द्रमावाहयामि। ॐ भुवः क्रतु संरक्षकदेवतां इन्द्रमावाहयामि। ॐ स्वः क्रतु संरक्षकदेवतां इन्द्रमावाहयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः क्रतु संरक्षकदेवतां इन्द्रमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। स्वर्णवर्णं सहस्राक्षं ऐरावतवाहनं वज्रपाणिं शचीप्रियं इन्द्रमावाहयामि।

आग्नेय दलाग्रे—नवग्रह मराडल के आग्नेय दल के अग्र भाग में अग्नि का आवाहन करें। अग्निं दूतमित्यस्य कारावोमेधातिथिरग्निर्गायत्री क्रतु संरक्षक देवता अग्न्यावाहने विनियोगः।

ॐ अुग्निं दूतं वृंणीमहे होतांरं विश्ववेंदसम्। अुस्य युज्ञस्यं सुक्रतुंम्॥ (ऋग्वेद १.१२.१)

ॐ भूः क्रतु संरक्षकदेवतां अग्निं आवाहयामि। ॐ भुवः क्रतु संरक्षकदेवतां अग्निं आवाहयामि। ॐ स्वः क्रतु संरक्षकदेवतां अग्निं आवाहयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः क्रतु संरक्षकदेवतां अग्निं आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। रक्तवर्णं साक्षसूत्रं सप्तार्चिषं शक्त्यन्नस्रुक्स्रुवतोमरव्यजन घृतपात्राणि दधानं स्वाहाप्रियं मेषवाहनं अग्निं आवाहयामि।

याम्यदलाग्रे—नवग्रह मगडल के दक्षिण दल के अग्र भाग में यम का आवाहन करें। यमाय सोमं यमोयमोनुष्टुप् क्रतु संरक्षक देवता यमावाहने विनियोगः।

ॐ यमायसोमँसुनुतयमायंजुहुता हविः। यमंह यज्ञो गच्छत्यग्निर्दूतो अरंकृतः॥ (ऋग्वेद १०.१४.१३)

ॐभूः क्रतु संरक्षकदेवतां यमं आवाहयामि। ॐभुवः क्रतु संरक्षकदेतवतां यमं आवाहयामि। ॐस्वः क्रतु संरक्षकदेवतां यमं आवाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः क्रतु संरक्षकदेवतां यमं आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। रक्तवर्णं दगडधरं महिषवाहनं इळाप्रियं यमं आवाहयामि।

नैर्ऋत्यदलाग्रे—नवग्रह मगडल के नैऋत्य दल के अग्र भाग में निर्ऋति का आवाहन करें। मोषुणः कागवो निर्ऋतिर्गायत्री क्रतु संरक्षकदेवता निर्ऋत्यावाहने विनियोगः।

ॐ मोषुणः परांपरानिर्ऋतिर्दुर्हणांवधीत् । पदीष्टतृष्णांयासह॥ (ऋग्वेद १.३८.६)

ॐभूः क्रतु संरक्षकदेवतां निर्ऋतिं आवाहयामि। ॐभूवः क्रतु संरक्षकदेवतां निर्ऋतिं आवाहयामि। ॐस्वः क्रतु संरक्षकदेवतां निर्ऋतिं आवाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः क्रतु संरक्षकदेवतां निर्ऋतिं आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। नीलवर्णं खड्गचर्मधरं ऊर्ध्वकेशं नरवाहनंकालिकाप्रियं निर्ऋतिमावाहयामि।

पश्चिमदलाग्रे—नवग्रह मगडल के पश्चिम दल के अग्र भाग में वरुण का आवाहन करें। ॐतत्वायामीत्यस्य शुनःशेपोवरुणस्त्रिष्टुप् क्रतुसंरक्षकदेवता वरुणावाहने विनियोगः।

ॐ तत्वांयामि ब्रह्मंणा वन्दंमानस्तदाशांस्तेयजमानोहविर्भिः। अहेंळमानोवरुणेह बोध्युरुंशंसमान आयुः प्रमोंषीः॥ (ऋग्वेद १.२४.११)

ॐभूः क्रतु संरक्षकदेवतां वरुणं आवाहयामि। ॐभूवः क्रतु संरक्षकदेवतां वरुणं आवाहयामि। ॐस्वः क्रतु संरक्षकदेवतां निर्ऋतिं आवाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः क्रतु संरक्षक देवतां वरुणं आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। रक्तवर्णं नागपाशधरं मकरवाहनं पद्मिनीप्रियं सुवर्ण भूषणं वरुणं आवाहयामि।

वायव्यदलाग्रे—नवग्रह मगडल के वायव्य दलके अग्र भाग में वायु का आवाहन करें। तववायो व्यश्वो वायुर्गायत्री क्रतु संरक्षक देवता वाय्वावाहने विनियोगः।

ॐ तवं वायवृतस्पतेत्वष्टुर्जा मातरद्भुत। अवांस्यावृंणीमहे। (ऋग्वेद ८.२६.२१)

ॐभूः क्रतु संरक्षकदेवतां वायुं आवाहयामि। ॐभुवः क्रतु संरक्षकदेवतां वायुं आवाहयामि। ॐस्वः क्रतु संरक्षकदेवतां वायुं आवाहयामि। ॐभू र्भुवः स्वः क्रतु संरक्षकदेवतां वायुं आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। श्यामवर्णं हेमदण्डधरं कृष्णामृगवाहनं जगत्प्राणरूपं मोहिनी प्रियं वायुमावाहयामि।

उत्तर दलाग्रे—नवग्रह मण्डल के उत्तर दल के अग्र भाग में कुबेर को आवाहन करें। सोमो धेनुमित्यस्य गौतमः सोमस्त्रिष्टुप् क्रतु संरक्षक देवता कुबेरावाहने विनियोगः।

ॐ सोमों धेनुं सोमो अर्वन्तमाशुं सोमों वीरं कर्मण्यं ददाति। सादुन्यं विदुव्यं सभेयं पितृश्रवणां यो ददांशदस्मै॥

(ऋग्वेद १.९१.२०)

ॐभूः क्रतु संरक्षक देवतां कुबेरं आवाहयामि। ॐभुवः क्रतु संरक्षक देवतां कुबेरं आवाहयामि। ॐस्वः क्रतु संरक्षक देवतां कुबेरं आवाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः क्रतु संरक्षक देवतां कुबेरं आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। स्वर्णवर्णं निधीश्वरं कुंतपाणिं आश्ववाहनं चित्रिणीप्रियं कुबेरं आवाहयामि।

ऐशान दलाग्रे—नवग्रह मण्डल के ईशत्य दल के अग्र भाग में ईशान का आवाहन करें। तमीशानमित्यस्य गौतम ईशानो जगती क्रतु संरक्षण देवता ईशानावाहने विनियोगः।

ॐ तमीशांनं जगंतस्तस्थुषस्पतिं धियंजिन्वमवंसेहूमहे वयम्।
पूषा नो यथा वेदंसामसंदवृधे रंक्षिता पायुरदंब्धःस्वस्तयें॥ (ऋग्वेद १.८९.५)

ॐभूः क्रतु संरक्षक देवतां ईशानमावाहयामि। ॐभुवः क्रतु संरक्षक देवतां ईशानमावाहयामि। ॐस्वः क्रतु संरक्षक देवतां ईशानमावाहयामि। ॐभू र्भुवः स्वः क्रतु संरक्षकदेवतां ईशानमावाहयामि। शुद्धस्फटिकवर्णं वरदाभ्य शूलाक्षसूत्रधरं वृषभवाहनं गौरीप्रियं ईशानं आवाहयामि। एवं एकपंचत्वारिंशत् देवता आवाह्य।

इस प्रकार नवग्रह मण्डल में ४१ देवताओं का आवाहन किया गया ग्रह ९+अधिदेवता ९+प्रत्यधिदेवता ९+क्रतु साद्गुण्यदेवता ६+क्रतु संरक्षक देवता ८ = कुल ४१ देवता। आवाहित नवग्रह मण्डलस्थ एकचत्वारिंशत् देवताभ्यः यथाशक्ति कल्पोक्त षोडशोपचार पूजां करिष्ये।

नवग्रहषोडशोपचार पूजन

ध्यायामि। ध्यानं समर्पयामि।

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिं विश्वतो वृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥ *(ऋग्वेद १०.९०.१)*

ॐ हिरण्य वर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ नवग्रहमण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, आवाहनं समर्पयामि।

ॐ पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति॥ *(ऋग्वेद १०.९०.२)*

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥ *(पञ्चन मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ नवग्रहमण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, आसनं समर्पयामि।

ॐ एतावानस्य महिमाऽतो ज्यायाँश्च पूरुषः। पादोऽस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥ *(ऋग्वेद १०.९०.३)*

ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद प्रमोदिनीम्। श्रियं देवी मुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, पादारविंदयोः पाद्यं पाद्यं समर्पयामि।

ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत् पुरुषः पादोऽस्येहा भवत् पुनः। ततो विष्वं व्यक्रामत् साशनानशने अभि॥ *(ऋग्वेद १०.९०.४)*

ॐ कां सोस्मितां हिरण्य प्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्। पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्।

(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहितदेवताभ्यो नमः, हस्तयोः अर्घ्यमर्घ्यं समर्पयामि।

ॐ तस्माद् विराळजायत विराजो अधिपूरुषः। सजातो अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथो पुरः॥ (ऋग्वेद १०.९०.५)

ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्ती श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः। मुखे आचमनीयं समर्पयामि।

पञ्चामृत स्नानम् पयः (दूध)—ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्णियं। भवावाजस्य सङ्गथे। (ऋग्वेद १.९१.१६)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, पयः स्नानं समर्पयामि। दूध से स्नान के बाद शुद्धोदक स्नान

ॐ उद्यन्नद्य मित्रमह आरोहन्नुत्तरां दिवम्। हृद्रोगं मम सूर्य हरिमाणं च नाशय॥ (ऋग्वेद १.५०.११)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः। पयः स्नानांते शूद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

दधि (दहि)—ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभिनोमुखा करत्प्रण आयूंषि तारिषत्॥ (ऋग्वेद ४.३९.६)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, दधि स्नानं समर्पयामि। दहि स्नान के बाद शुद्धोदक स्नान

ॐ शुकेषु मे हरिमाणं रोपणाकासु दध्मसि। अथो हारिद्रवेषु मे हरिमाणं निदध्मसि॥ (ऋग्वेद १.५०.१२)

ॐ नवग्रह मंडलस्थ आवाहितदेवताभ्यो नमः, दधि स्नानांते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

घृत (घी)—ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्ययोनिर्घृते श्रितो घृतं वस्य धाम।
अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभवक्षि हव्यम्॥ (ऋग्वेद २.३.११)

ॐ नवग्रह मंडलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, घृत स्नानं समर्पयामि। घी स्नान के बाद शुद्धोदक स्नान

ॐ उदगादयमादित्यो विश्वेन सहसा सह। द्विषन्तं मह्यं रन्धयन् मो अहं द्विषते रधम्॥ (ऋग्वेद १.५०.१३)

ॐ नवग्रह मंडलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, घृतस्नानांते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

मधु (शहद)—ॐ मधुवाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः॥

ॐ मधुनक्तमुतोषसो मधुमत् पार्थिवं रजः। मधुद्यौरस्तु नः पिता॥

ॐ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥ (ऋग्वेद १.९०.६-७-८)

ॐ नवग्रहमंडलस्थ आवाहितदेवताभ्यो नमः, मधु स्नानं समर्पयामि।

ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च॥ (ऋग्वेद १.११४.१)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहितदेवताभ्यो नमः, मधु स्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

शर्करा (शक्कर)—ॐ स्वादुः पवस्व दिव्याय जन्मने स्वादुरिन्द्राय सुहवीतु नाम्ने।

स्वादुर्मित्राय वरुणाय वायवे बृहस्पतये मधुमाँ अदाभ्यः॥ (ऋग्वेद ९.८५.६)

ॐ नवग्रह मंडलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, शर्करास्नानं समर्पयामि।

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेनाऽदेवो याति भुवनानि पश्यन्॥ (ऋग्वेद १.३५.२)

ॐ नवग्रहमण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, शर्करास्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पायाश्च पुष्पिणीः। बृहस्पतिं प्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्वं हंसः॥ (ऋग्वेद १०.९७.१५)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, फलस्नानं समर्पयामि।

ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवस्तानं ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे॥

यो वः शिवतमोरसस्तस्य भाजयते हनः। उशतीरिव मातरः॥
तस्मा अरंगमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः॥ (ऋग्वेद १०.९.१-२-३)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, फल स्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेनाऽऽदेवो याति भुवनानि पश्यन्॥
ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य सङ्गथे॥ (ऋग्वेद १.९१.१६)
ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपां रेतांसि जिन्वति॥ (ऋग्वेद ८.४४.१६)
ॐ उद्बुध्यध्वं समनसः सखायः समग्निमिन्ध्वं बहवः सनीळाः।
दधिक्रामग्निमुषसं च देवीमिंद्रावतोऽवसे निह्वये वः॥ (ऋग्वेद १०.१०१.१)
ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।
यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ (ऋग्वेद २.२३.१५)
ॐ शुक्रं ते अन्यद्यजतं ते अन्यद्विषुरूपे अहनी द्यौरिवासि।
विश्वा हि माया अवसि स्वधावो भद्रा ते पूषन्निह रातिरस्तु॥ (ऋग्वेद ६.५८.१)
ॐ शमग्निरग्निभिः करच्छंनस्तपतु सूर्यः। शं वातो वात्वरपा अपस्रिधः॥ (ऋग्वेद ८.१८.९)
ॐ कयानश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कयाशचिष्ठया वृता॥ (ऋग्वेद ४.३१.१)
ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः॥ (ऋग्वेद १.६.३)
ॐ तच्छंय्योरावृणीमहे गातुं यज्ञाय गातुं यज्ञपतये। दैवी स्वस्तिरस्तु नः। स्वस्तिर्मानुषेभ्यः।

ऊर्ध्वं जिंगातु भेषजम् शंनों अस्तु द्विपदे शं चतुंष्पदे ।। (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ यत्पुंरुषेण हविषां देवा यज्ञमतंन्वत । वसन्तो अंस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ।। (ऋग्वेद १०.९०.६)

ॐ आदित्यंवर्णो तपसोऽधिंजातो वनस्पतिस्तवं वृक्षोऽथ बिल्वः ।

तस्य फलांनि तपसा नुंदन्तु मायान्तंरायाश्च बाह्या अंलक्ष्मीः ।। (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, शुद्धोदकस्नानं सपर्मयामि ।

वस्त्रम्— ॐ युवं वस्त्रांणि पीवसावंसाथे युवोरच्छिंद्रा मन्तंवो ह सर्गाः ।

अवांतिरतमनृंतानि विश्वंऋतेनं मित्रा वरुणा सचेथे । (ऋग्वेद १.१५२.१)

ॐ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुंषं जातमंग्रतः । तेनं देवा अंयजन्त साध्या ऋषंयश्च ये ।। (ऋग्वेद १०.९०.७)

ॐ उपैंतु मां देंवसखः कीर्तिश्च मणिंना सह । प्रादुर्भूतोऽस्मिं राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृंद्धिं ददातुं मे ।। (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, वस्त्रं समर्पयामि ।

यज्ञोपवीतम्—ॐ यज्ञोंपवीतं परमं पवित्रं प्रजांपते र्यत् सहजं पुरस्तांत् । आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुंञ्च शुभ्रं यज्ञोंपवीतं बलमंस्तु तेजः ।।

ॐ तस्मांद् यज्ञात् सर्वहुतः संभृंतं पृषदाज्यम् । पशून्स्ताँश्चंक्रे वायव्यांनारण्यान् ग्राम्याश्च ये ।। (ऋग्वेद १०.९०.८)

ॐ क्षुत्पिंपासामंलां ज्येष्ठामंलक्ष्मीं नांशयाम्यहंम् । अभूंतिमसंमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहांत् ।। (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि, आचमनं समर्पयामि ।

आभरणम्—ॐ हिरंण्यरूपः स हिरंण्य सन्दृगपान्नपात् सेदुहिरंण्यवर्णः । हिरण्ययात् परियोनेंर्निषद्यां हिरण्यदा दंदुत्यन्नंमस्मै ।। (ऋग्वेद २.३५.१०)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, आभरणं समर्पयामि ।

गन्धम्—ॐ तस्मा॑द् य॒ज्ञात् स॑र्व॒हुत॒ऋच॑ः सामा॑नि जज्ञिरे। छंदा॑सि जज्ञि॒रे तस्मा॒द् यजु॒स्तस्मा॑दजायत॥ (ऋग्वेद १०.९०.९)

ॐ गंध॒द्वारां दु॒राध॒र्षां नि॒त्यपु॑ष्टां करी॒षिणी॑म्। ई॒श्व॒रीं सर्व॑भूता॒नां ता॒मि॒होप॑ह्वये॒ श्रियम्॥ (पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)

ॐनवग्रहमराडलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, गन्धं समर्पयामि।

अक्षतम्—ॐ अर्चं॑त॒ प्रार्चं॑त॒ प्रिय॑मेधासो॒ अर्चं॑त। अर्चं॑न्तु पु॒त्रका उ॒तपु॑र॒न्न धृ॒ष्ण्व॑र्चत॥ (ऋग्वेद ८.६९.८)

ॐनवग्रह मराडलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पाणि—ॐ आय॑ने ते॒ परा॑यणे॒ दूर्वा॑ रोहन्तु॒ पु॒ष्पिणी॑ः। ह्र॒दाश्च॑ पु॒राडरी॑काणि समु॒द्रस्य॑ गृ॒हा इमे॥ (ऋग्वेद १०.१४२.८)

ॐ तस्मा॒दश्वा॑ अजायन्त॒ ये के च॑ोभ॒याद॑तः। गावो॑हजज्ञि॒रे तस्मा॒त् तस्मा॑ज्जा॒ता अ॑जा॒ वय॑ः॥ (ऋग्वेद १०.९०.१०)

ॐ मन॑स॒ः काम॒नाकू॑तिं वा॒चः स॒त्यम॑शीमहि। प॒शू॒नां रू॒पम॑न्न॒स्य॒ मयि॒ श्रीः श्र॑यतां॒ यश॑ः॥ (ऋग्वेद - पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)

ॐनवग्रह मराडलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, पुष्पाणि समर्पयामि।

नाम पूजा

ॐसहस्रकिरणाय नमः। ॐसूर्याय नमः। ॐतपनाय नमः। ॐसवित्रे नमः। ॐरवये नमः। ॐविकर्तनाय नमः। ॐजगच्चक्षुषे नमः। ॐद्युमणये नमः। ॐतिग्मदीधितये नमः। ॐत्रयीमूर्तये नमः। ॐद्वादशात्मने नमः। ॐब्रह्माविष्णुशिवात्मकाय नमः। ॐआदित्याय नमः। ॐअग्नये नमः। ॐरुद्राय नमः। ॐचन्द्रमसे नमः। ॐअद्भ्यो नमः। ॐगौर्यै नमः। ॐअङ्गारकाय नमः। ॐभूम्यै नमः। ॐस्कन्दाय नमः। ॐबुधाय नमः। ॐविष्णवे नमः। ॐपुरुषाय नमः। ॐबृहस्पतये नमः। ॐइंद्राय नमः। ॐब्रह्मणे नमः। ॐशुक्राय नमः। ॐइंद्राण्यै नमः। ॐइंद्राय नमः। ॐशनैश्चराय नमः। ॐप्रजापतये नमः। ॐयमाय नमः। ॐराहवे नमः। ॐसर्पेभ्यो नमः। ॐमृत्यवे नमः। ॐकेतवे नमः। ॐब्रह्मणे नमः। ॐचित्रगुप्ताय नमः। ॐविनायकाय नमः। ॐदुर्गायै नमः। ॐक्षेत्रपालाय नमः। ॐवायवे नमः। ॐआकाशाय नमः। ॐअश्विभ्यां नमः। ॐइन्द्राय नमः। ॐअग्नये नमः। ॐयमाय नमः। ॐनिर्ऋतये नमः। ॐवरुणाय नमः। ॐवायवे नमः। ॐसोमाय नमः। ॐईशानाय नमः। ॐनवग्रह मराडलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, नाम पूजां समर्पयामि।

धूपः— वनस्पति रसोत्पन्नो गन्धाढ्यः सुमनोहरः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्य कौ बाहू का ऊरू पादा उच्येते॥ *(ऋग्वेद १०.९०.११)*

ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम। श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥ *(ऋग्वेद - पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, धूपं आघ्रापयामि।

दीपं— साज्यं त्रिवर्ति संयुक्तं वह्निना योजितं मया। गृहाण मङ्गलं दीपं त्रैलोक्यतिमिरापह॥

ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत॥ *(ऋग्वेद १०.९०.१२)*

ॐ आपः स्रजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत व स मे गृहे। नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥ *(ऋग्वेद - पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, दीपं दर्शयामि। धूपदीपानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि।

नैवेद्यं—नैवेद्य रखने के स्थल पर मण्डल बनायें (चतुरस्त्र) नैवेद्य को मण्डल पर रखने के बाद मंत्र पढ़ें। विश्वामित्र ऋषिः देवी गायत्री छन्दः, सविता देवता निवेदने विनियोगः। एक बार नैवेद्य पर गायत्री मंत्र से प्रोक्षण करें। सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि इस मंत्र से दिन में एवं **ऋतं त्वा सत्येन परिषिञ्चामि।** इस मंत्र से रात्रि में परिषिञ्चन करें।

यथा संभव नैवेद्यं निरीक्षस्व कहकर प्रार्थना कर **अमृतोपस्तरणमसि** मन्त्र से जल छोड़ें। बायें हाथ से ग्रास मुद्रा (जैसे बछड़े को घास खिलाते हैं) एवं दाहिने हाथ से निम्न मुद्राओं से देवताओं को नैवेद्य अर्पण करें। मन में कल्पना करें कि भगवान को खिला रहे हैं। प्राणाय स्वाहा। अपानाय स्वाहा। व्यानाय स्वाहा। उदानाय स्वाहा। समानाय स्वाहा। ॐ घृणिः सूर्य आदित्यः-इस मूल मंत्र को आठ बार जप करें।

ॐ स्वादुः पवस्व दिव्याय जन्मने स्वादुरिन्द्राय सुहवीतु नाम्ने।
स्वादुर्मित्राय वरुणाय वायवे बृहस्पतये मधुमाँ अदाभ्यः॥ *(ऋग्वेद ९.८५.६)*

ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत। मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरजायत॥ *(ऋग्वेद १०.९०.१३)*

ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥ (ऋग्वेद - पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

यथा सम्भवं नैवेद्यं निवेदयामि। अमृतापिधानमसि। कहकर उत्तरापोशण जल दें। उत्तरापोशनार्थं जलं समर्पयामि। हस्तप्रक्षालनार्थे जलं समर्पयामि। गण्डूषार्थे जलं समर्पयामि। शुद्धाचमनार्थे जलं समर्पयामि। करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि।

ताम्बूलम्—पूगीफलसमायुक्तं नागवल्ल्यादलैर्युतम्। चूर्ण कर्पूर संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥ ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, क्रमुक ताम्बूलं समर्पयामि। ताम्बूल के पश्चात् नीराजन करें।

ॐ अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत। अर्चन्तु पुत्रका उत पुरं न घृष्ण्वर्चत॥ (ऋग्वेद ८.६९.८)

ॐ श्रिये जातः श्रिय आनिरियाय श्रियं वयो जरितृभ्यो दधाति।
श्रियं वसाना अमृतत्वमायन् भवन्ति सत्या समिथा मितद्रौ॥ (ऋग्वेद ९.९४.४)

ॐ ध्रुवा द्यौर्ध्रुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वता इमे। ध्रुवं विश्वमिदं जगद् ध्रुवो राजा विशामयम्॥
ॐ ध्रुवं ते राजा वरुणो ध्रुवं देवो बृहस्पतिः। ध्रुवं त इन्द्रश्चाग्निश्च राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम्॥ (ऋग्वेद १०.१७३.४-५)

ॐ नवग्रह मडलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, मङ्गल नीराजनं दर्शयामि।

मन्त्र पुष्पः—ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च।
हिरण्ययेन सविता रथेनाऽऽदेवो याति भुवनानि पश्यन्॥ (ऋग्वेद १.३५.२)

ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य सङ्गथे॥ (ऋग्वेद १.९१.१६)

ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपां रेतांसि जिन्वति। (ऋग्वेद ८.४४.१६)

ॐ उद्बुध्यध्वं समनसः सखायः समग्निमिंध्वं बहवः सनीळाः।

दधिक्रामग्निमुषसं च देवीमिन्द्रावतोऽवसे निह्वये वः॥ (ऋग्वेद १०.१०१.१)
ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।
यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहिचित्रम्॥ (ऋग्वेद २.२३.१५)
ॐ शुक्रं ते अन्यद्यजतं ते अन्यद्विषुरूपे अहनीद्यौरिवासि।
विश्वा हि माया अवसि स्वधावो भद्रा ते पूषन्निह रातिरस्तु॥ (ऋग्वेद ६.५८.१)
ॐ शमग्निरग्निभिः करच्छनस्तपतु सूर्यः। शं वातो वात्वरपा अपस्त्रिधः॥ (ऋग्वेद ८.१५.९)
ॐ कयानश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥ (ऋग्वेद ४.३१.१)
ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशोमर्या अपेशसे। समुषद्भिरजाय थाः॥ (ऋग्वेद १.६.३)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, मंत्रपुष्पं समर्पयामि।

प्रदक्षिणा नमस्कारः—यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च। तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे पदे॥

ॐ सप्तास्या सन् परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम्॥ (ऋग्वेद १०.९०.१५)
ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्।
(ऋग्वेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रहमण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, प्रदक्षिणा नमस्कारान् समर्पयामि।

प्रसन्नार्घ्यः—ॐ प्रभाकराय विद्महे दिवाकराय धीमहि। तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्॥ ॐ अत्रिपुत्राय विद्महे अमृतोद्भवाय धीमहि। तन्नः सोमः प्रचोदयात्॥ ॐ भूमिपुत्राय विद्महे भारद्वाजाय धीमहि। तन्नः कुजः प्रचोदयात्॥ ॐ तारापुत्राय विद्महे सोमपुत्राय धीमहि। तन्नो बुधः प्रचोदयात्॥ ॐ देवाचार्याय विद्महे वाचस्पतये धीमहि। तन्नो गुरुः प्रचोदयात्॥ ॐ दैत्याचार्याय विद्महे विद्यारूपाय धीमहि। तन्नः शुक्रः प्रचोदयात्॥ ॐ सूर्यपुत्राय विद्महे शनैश्चराय धीमहि।

तन्नो मंदः प्रचोदयात् ॥ ॐ सैंहिकेयाय विद्महे तमोमयाय धीमहि। तन्नो राहुः प्रचोदयात् ॥ ॐ ब्रह्मपुत्राय विद्महे विकृतास्याय धीमहि। तन्नः केतुः प्रचोदयात् ॥
ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यं, प्रसन्नार्घ्यं समर्पयामि।

सर्वोपचार पूजनम्—ॐ छत्रं समर्पयामि। चामरेण वीजयामि। गीतं गायामि। नाट्यं नटामि। आन्दोळिकामारोहयामि। अश्वमारोहयामि। गजमारोहयामि। समस्त राजोपचार देवोपचारपूजां समर्पयामि।

ॐ यज्ञेनं यज्ञमंयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यांसन्। तेह नाकं महिमानंः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्तिं देवाः ॥
(ऋग्वेद १०.९०.१६)

ॐ यः शुचिः प्रयंतो भूत्वा जुहुयांदाज्यमन्वंहम्। सूक्तं पंचदंशर्चं च श्रीकामंः सततं जंपेत् ॥ (ऋग्वेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, सर्वोपचारपूजां समर्पयामि।

प्रार्थना— **ग्रहाणामादिरादित्यो लोकरक्षणकारकः। विषमस्थानसंभूतां पीडां हरतु ते रविः ॥**
रोहिणीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रः सुधाशनः। विषमस्थानसंभूतां पीडां हरतु ते विधुः ॥
भूमिपुत्रो महातेजा जगतां भयकृत्सदा। वृष्टिकृद्वृष्टिहर्ता च पीडां हरतु ते कुजः ॥
उत्पातरूपो जगतां चन्द्रपुत्रो महाद्युतिः। सूर्य प्रियकरो विद्वान् पीडां हरतु ते बुधः ॥
देवमन्त्री विशालाक्षः सदालोकहितेरतः। अनेक शिष्य संपूर्णः पीडां हरतु ते गुरुः ॥
दैत्यमन्त्री गुरुस्तेषां प्राणदश्च महामतिः। प्रभुस्ताराग्रहाणां च पीडां हरतु ते भृगुः ॥
सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः। मंदचारः प्रसन्नात्म पीडां हरतु ते शनिः ॥
महाशिरा महावक्त्रो दीर्घदंष्ट्रो महाबलः। अतनुश्चोर्ध्व केशश्च पीडां हरतु ते तमः ॥
अनेक रूपवर्णैश्च शतशोथ सहस्त्रशः। उत्पातरूपो जगतः पीडां हरतु ते शिखी ॥ (ब्रह्मकर्म समुच्चय)

आरोग्यं पद्मबन्धुर्वितरतु विपुलां संपदं शीतरश्मिः, भूलाभं भूमिपुत्रः सकलगुणयुतां वाग्विभूतिं च सौम्यः। सौभाग्यं देवमन्त्री रिपुभयशमनं भार्गवः शौर्यमार्किः, दीर्घायुस्सैंहिकेयो विपुलतरयशः केतुराचन्द्रतारम्॥ शान्तिरस्तु। शिवं ते अस्तु। ग्रहाः कुर्वन्तु मङ्गलम्। अरिष्टानि प्रणश्यन्तु। दुरितानि भयानि च।

ॐ नवग्रहमण्डलस्थ देवताभ्यो नमः, प्रार्थनां समर्पयामि। अनेन कृत पूजनेन आदित्यादि नवग्रहदेवताः प्रीयन्ताम्॥

यहाँ पर नवग्रह पूजन समाप्त हुआ। मण्डप में कलशों का पूजन भी संपूर्ण हुआ।

अग्निमुख प्रकरण

सृष्टि के आरम्भ में ब्रह्मा जी के मुख से ब्राह्मण एवं अग्नि का प्रादुर्भाव हुआ। इसलिए ब्राह्मणों के लिए अग्नि प्रधान देवता है। अग्नि में देने वाले हविर्भाग समस्त देवताओं को प्राप्त होते हैं। अतः अग्नि मुख से द्रव्यों का देवताओं को अर्पण कर अपने वांच्छित वस्तुओं को अपने लिए एवं राष्ट्र के लिए प्राप्त करते थे। इसलिए अग्नि सिद्धि प्राप्त करते थे। इसके लिए सूर्यकान्त मणि से अग्नि को प्रज्वलित करते थे। जिनके पास यह नहीं था वे अरणी मन्थन विधान से पीपल का नीचे वाला आधार, एवं खदिर की मथनी से मथ कर अग्नि प्रज्वलित करते थे।

दोनों न होने पर आस-पास के श्रोत्रियों के घर से अग्नि लाकर होम में प्रयुक्त करते थे लौकिक अग्नि का उपयोग प्रयोग में नहीं था श्रोत्रीय अग्नि या सूर्यकान्त मणि का अग्नि या अरणी मन्थन की अग्नि से भी षोडश संस्कार करना चाहिये। बड़े यज्ञों में यही विधान अनिवार्य है। यज्ञों के प्रधान देवता के अनुसार वैष्णवाग्नि, शैवाग्नि, गाणपत्याग्नि, दुर्गाग्नि, हरिहराग्नि, शास्ताग्नि, स्कन्दाग्नि, नामक सात अग्नियों में अपने कर्म के लिए आवश्यक अग्नि को सृष्टिकर उसमें यागादि करने से यज्ञ का संपूर्ण फल प्राप्त होता है। अन्यथा अत्यल्प फल मिलता है।

अग्नौ प्रास्ताहुतिः सम्यक् आदित्यं उपतिष्ठते। आदित्याज्जायते वृष्टिः वृष्टेरन्नं ततः प्रजाः॥ *(मनुस्मृति)*

विधि पूर्वक किया गया अग्नि की आहुतियाँ सूर्य को प्राप्त होते हैं। सूर्य से बारिश होती है। बारिश से अन्न (धान्य) एवं उससे प्रजा होते हैं। अर्थात् विधिपूर्वक किये गये यज्ञों से समृद्धि होती है। इस विधान में पूर्वाङ्ग अर्थात् प्रधान होम से पहले करने वाला कर्म एवं उत्तराङ्ग अर्थात् प्रधान होम के बाद करने वाले कर्म को पूर्णतया बताने वाला विधान अग्निमुख कहलाता है।

प्रत्येक वेद का अलग-अलग विधान है। ऋग्वेद में बाष्कल शाकल दो शाखायें हैं। अधिकतर शाकल शाखा के विधान का अनुसरण करते हैं। उसी क्रम से आगे अग्निमुख प्रयोग है। अग्निमुख शुद्ध होने पर ही यज्ञ का फल प्राप्त होता है। लौकिकाग्नि में किये गये हव्य देवताओं को नहीं प्राप्त होते हैं। अतः इसे सावधानी से करना चाहिये।

ऋग्वेद के २१ शाखाओ में २ शाखायें शेष है। यजुर्वेद के १०१ शाखओं में ५ शाखायें उपलब्ध हैं।
सामवेद के १०० शाखओं में ३ शाखयें उपलब्ध हैं। अथर्ववेद मे ९ शाखओं में १ शाखा उपलब्ध है।

लौकिके पावको ह्यग्निः प्रथमः परिकीर्तितः।

लौकिक कार्यों में पावकाग्नि कहलाता है। अग्निस्तु मारुतोनाम गर्भाधाने प्रकीर्तितः। गर्भाधान में मारुत नामक अग्नि कि प्रतिष्ठा होती है।

पुंसवे पवमानस्तु शोभनः शुभकर्मसु।

पुंसवन में पवमान नामक अग्नि एवं शुभकार्यों में शोभन नामक अग्नि की प्रतिष्ठा होती है।

सीमान्ते मंगलोनाम प्रबलो जातकर्मणि। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

सीमान्त संस्कार में मंगल नामक अग्नि एवं जात कर्म संस्कार में प्रबल नामक अग्नि की प्रतिष्ठा होती है।

पार्थिवो नामकरणे प्राशनेन्नस्यवैशुचिः। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

नामकरण संस्कार में पार्थिव अग्नि एवं अन्न प्राशन में शुचि नामक अग्नि कि प्रतिष्ठा होती है।

सभ्यनामातु चूडायां व्रतादेशे समुद्भवः। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

चूडाकर्म संस्कार में सभ्यनाम अग्नि उपनयन व्रत में समुद्भव नामक अग्नि कि प्रतिष्ठा होती है।

गोदाने सूर्यनामास्यद्विवाहे योजकः स्मृतः। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

गोदान में सूर्य नामक अग्नि एवं विवाह में योजन नामक अग्नि की प्रतिष्ठा होती है।

आवसथ्ये द्विजो ज्ञेयो वैश्वदेवेतु रुक्मकः। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

अतिथि सत्कारादि में प्रयुक्त आवसथ्य में द्विज नामक अग्नि एवं वैश्वदेव पाँच महायज्ञों में एक में रुक्मक नामक अग्नि की प्रतिष्ठा होती है।

प्रायश्चित्ते विटश्चैव पाकयज्ञेषु पावकः। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

प्रायश्चिताङ्ग होम में विट नामक अग्नि एवं पाकसंस्थ यज्ञों में असप्त सोमसंस्था, (सप्त हविः संस्था, सप्त पाकसंस्था) इन २१ यज्ञों में पावक नामक अग्नि की प्रतिष्ठा होती है।

देवानां हव्यवाहश्चपितॄणां कव्यवाहनः। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

सामान्य देवे कार्यो में हव्यवाहन नामक अग्नि एवं पितृयज्ञों में कव्यवाहन नामक अग्नि की प्रतिष्ठा होती है।

शान्तिके वरदः प्रोक्तः पौष्टिके बलवर्धनः। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

समस्त शान्तिकर्मो में वरद नामक अग्नि एवं समस्त पौष्टिक कर्मो में बलवर्धन नामक अग्नि की प्रतिष्ठा होती हैं।

पूर्णाहुत्यां मृडोनाम क्रोधोग्निश्चाभिचारिके। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

पूर्णाहुति में मृडनाम अग्नि एवं अभिचार (शत्रु नाशादि) कर्मो में क्रोध नामक अग्निकि प्रतिष्ठा होती हैं।

वश्यार्थे कामदो नाम वनदाहे तु दूषकः। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

वशीकरण कर्म में कामद नामक अग्नि एवं वनदाह कर्म में (उदाहरण—खाण्डव दहन) दूषक नामक अग्नि की प्रतिष्ठा होती है।

कुक्षौ तु जाठरो ज्ञेयः क्रव्यादोमृतदाहने। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

पेठ में जाठर नामक अग्नि एवं मरे हुए को जलाने में क्रव्याद नामक अग्नि की प्रतिष्ठा होती है।

वह्निनामालक्षहोमे कोटिहोमे हुताशनः। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

जहाँ लक्ष संख्याक होम होता है वहाँ वह्नि नामक अग्नि, कोटिहोम में हुताशन नामक अग्नि की प्रतिष्ठा होती है।

वृषोत्सर्गेऽध्वरो नाम शुचये ब्राह्मणः स्मृतः। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

अपर संस्कार में ग्यारवें दिन करने वाला कर्म में, अथवा अपुत्र व्यक्ति स्वतः जीवित रहते इस कर्म को करते समय अध्वर नामक अग्नि, एवं शुद्धि के लिए करने वाले कर्म में ब्राह्मण नामक अग्नि की प्रतिष्ठा होती है।

समुद्रे वाडवोह्यग्निः क्षये संवर्तकस्तथा। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

समुद्र में वाडव नामक अग्नि एवं प्रलय काल में संवर्तक नामक अग्नि की प्रतिष्ठा होती है।

ब्रह्मावैगार्हयत्पश्च ईश्वरो दक्षिणास्तथा। विष्णुराहवनीयः स्यादग्निहोत्रेत्रयोग्नयः॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

अग्निहोत्र में प्रयुक्त तीन अग्नियों में गार्हपत्य अग्नि में ब्रह्मा नामक अग्नि, दक्षिणाग्नि में ईश्वर नामक अग्नि, आहवनीय अग्नि में विष्णु नामक अग्नि की प्रतिष्ठा होती है।

ज्ञात्वैवमग्निनामानि गृह्यकर्म समारभेत्। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

इन अग्नियों के नामों को जानकर ही कर्म करना चाहिये।

इमानिसर्वसंस्कारशांतिकपौष्टिकाद्यनुष्ठानोपयुक्तानि तत्र तत्र योज्यान्यग्निनामानि।

ऊपर लिखे अग्नि नामों को जानकर उन्हें प्रयोगकर सभी संस्कार, शान्तिक, पौष्टिक आदि अनुष्ठान करने चाहिये।

वैदिक प्रक्रिया से अग्नि प्रज्वलन – **तत्र यजमानः कृतनित्यक्रियः शुचिः परिहित धौतवासाः पीठोपविष्टः प्राङ्मुखः वाग्यतो द्विराचम्य दर्भपाणिः प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य ममोपात्त दुरितक्षयद्वारा परमेश्वर प्रीत्यर्थं अमुक कर्म करिष्ये।**

सामान्य संस्कारों में ऋत्विग्वरण के बाद एवं विशिष्ठ यज्ञों में मधुपर्क के बाद पूर्वाभिमुख बैठकर दो बार आचमन करें, हाथ में कुश लेकर—

अप्रच्छिन्नाग्रौ अनन्तर्गर्भै प्रादेशमात्रौ कुशौ पवित्रम्।

कुश लगभग १२ अंगुल लम्बे हो जिनका अग्र टूटा न हो, एवं दूसरे कुश किले न हो ऐसे दो कुशों से बनाना चाहिये।

ग्रन्थीकृत पवित्रेण न भुञ्जीयात् न चाचमेत्। न पिबेत् यदि कृत्वैतान्तदातच्छेणितं भवेत्॥
तस्मादग्रथितेनाम्बु पिबेत् भुञ्जीतचाचमेत्। *(अश्वलायन स्मृति)*

ग्रन्थि (गाँठ) युक्त पवित्र पहनकर न खाना चाहिये आचमन भी नहीं करना चाहिये। यदि उसे पहनकर खाने से आचमन करने से वह भेजन एवं जल रक्त समान हो जाता है। इसलिए बिना गाँठ बाँधे हुए कुश से भोजन एवं आचमन करना चाहिये।

हैमेन सर्वदा सर्वान् कुर्यादेवाविचायन्। *(अश्वलायन स्मृति)*

सोने के पवित्र बनाकर सभी कर्म कर सकने हैं। कारण यह पवित्र कभी अपवित्र नहीं होता है। अतः संभव हो तो पवित्र उपयोग में ला सकते हैं। कुशों को हाथ में लेकर प्राणायाम करें प्राणायाम के बाद संकल्प लेवें।

तदंगहोमं कर्तुं स्थंडिलादि कर्म करिष्ये।

उस उद्देश्य (संकल्प) के अंगभूत होम करने के लिए स्थंडिलादि कर्मो को करुँगा। इनका विवरण आगे है।

स्थंडिलनिर्माण विधान—इति संकल्प्य गोमयादि लिप्तेशुद्धदेशे शुद्धमृदा ऐशान्यारंभमुदक्संस्थं चतुरंगुलोन्न्तं अंगुलो न्नतं वा चतुर्दिक्षुमिलित्वा द्विसप्तत्यंगुल परिधिकं फलितमष्टादशांगुल विस्तृतं होमानुसारेण तदधिकं वा न तु ततो न्यूनं मध्योन्नतं स्थंडिलं कुर्यात्। गोमय से लेपित शुद्ध भूमि पर, पवित्र मिट्टी से लेपन करना चाहिये या रेत डालना चाहिये।

ईशान्य से प्रारम्भकर उत्तर में समाप्त हो ऐसे चार अंगुल ऊँचा या एक अंगुल ऊँचा चबूतरा पवित्र मिट्टी से या रेत से बनाना चाहिये। उस चबूतरे का संपूर्ण विस्तार ७२ अंगुल एवं एक-एक दिशा में १८ अंगुल होना चाहिये। इससे कम कभी नहीं करना चाहिये। बड़े यागों के अनुसार बड़ा सकते हैं। सामान्य होमों में स्थण्डिल का प्रयोग करते हैं। बड़े होमों में हवन कुण्ड बनाते हैं।

स्थरिडल के बीच वाला भाग ऊँचा रहना चाहिये।

ऊँचाई १ अंगुल या चार अंगुल, लम्बाई एवं चौढ़ाई

(बारा प्रमारा हस्त प्रमारा या १८ अंगुल)

लिख्यन्तेऽसुरनिर्हत्यै सिकताः सर्वकर्मसु। चतुरस्त्र चतुर्दिक्षु बाणमात्रं द्विरावृतम्॥
भूमौ भूपुर मुख्यस्य दिक्ष्वश्वथ्थ दलाकृतैः। नेच्छन्ति मध्यमावेष्टु मसुरा यज्ञहारिणः॥ *(अश्वलायन स्मृति)*

सभी कर्मो में असुरनिवारण के लिए चौक वाले चार दिशाओं में बाण के समान लम्बे (१८") स्थरिडल में रेत का प्रयोग करें। उसके बाहर सफेद रंगोली से दो चौक लिखें। चार दिशाओं में अश्वत्थ पत्र लिखें। एवं चार उपदिशाओं में अष्टदल पत्र का निर्माण रंगोली से करें। एवं रंग भरें। इसका चित्र अगले पत्रे में है। यज्ञ को अपहरण करने वाले असुर मराडल एवं स्थरिडल के अन्दर प्रवेश करने में समर्थ नहीं होते हैं। अन्यथा वे अन्दर आकर देवभाग का अपहरण करते हैं।

कुराड का विवरण अग्निमुख के अन्त में होगा।—

स्थरिडल शुद्धिः— तद् गोमयेन प्रदक्षिणामुपलिप्य दक्षिणे उदीच्यां द्वे, प्रतीच्यां चतुः, प्राच्यामर्धं इत्यंगुलानित्यक्त्वा दक्षिणोपक्रमां उदक्संस्थां प्रादेशमात्रां एकां लेखां तस्या दक्षिणोत्तरयोः प्रागायते पूर्वरेखया असंसृष्टे प्रादेशसंमिते द्वे लेखे लिखित्वा तयोर्मध्ये परस्परं असंसृष्टाः उदक्संस्थाः प्रागायताः प्रादेश संमिताः तिस्त्रः इति षड्लेखाः यज्ञीय शकलमूलेन दक्षिण हस्तेन उल्लिख्य लेखासु तच्छकलं उदगग्रं निधाय स्थंडिलं अद्भिः अभ्युक्ष्य शकलं भंक्त्वा आग्नेय्यां निरस्य पाणिं प्रक्षाल्य वाग्यतः भवेत्।

स्थरिडल को पहले गोमय से लेपना चाहिये। स्थरिडल (वेदी) में दक्षिण में आठ अंगुल, उत्तर में दो अंगुल, पश्चिम में चार अंगुल, पूर्व में आधा अंगुल छोड़कर दक्षिण से प्रारम्भकर उत्तर में समाप्त हो ऐसे १२ अंगुल चौक बनाना चाहिये। फिर बीच में दक्षिण से उत्तर एक रेखा खींचना चाहिये। १२ अंगुल

फिर दक्षिण से प्रारम्भ कर एक दक्षिण में एवं एक उत्तर में दो रेखायें पश्चिम से पूर्व की ओर खीचें १२ अंगुल की फिर दक्षिण से प्रारम्भकर दक्षिण में समाप्त होने वाले पश्चिम से पूर्व में समाप्त होने वाले तीन रेखायें। (१२ अंगुल) खीचें। (प्रादेश प्रमाण-लगभग १२ अंगुल) (ब) इसे यज्ञ में प्रयुक्त अश्वत्थादि समित् के अग्रभाग से इन लकीरों को खीचना चाहिये। दाहिने हाथ से लिखें। (रेत पर) खीचने वाले समित् को उसके ऊपर उत्तर उत्तराभिमुख रखें। फिर स्थण्डिल (stage) को जल से अभ्युक्षण करना चाहिये। (अभ्युक्षण मतलब मुष्टि में जल लेकर सिञ्चन करना चाहिये।) फिर उस समित् को (लकीर खीचें) तोडकर आग्नेय दिशा में फेंककर हाथ धो लेना चाहिये।

इन रेखाओं के देवता, उद्देश्य—तन्मध्ये सिकताकीर्णे लिख्यन्ते यज्ञसिद्धये। यज्ञीय शकलेनैव रेखाः षट् द्वादशांगुलाः ।। *(अश्वलायन स्मृति)*

रेंत से व्याप्त होम वेदी पर यज्ञ सिद्धि के लिए यज्ञ के लिए योग्य समित् से बारह अंगुल प्रमाण वाले ६ रेखायें खींचना चाहिये।

पूर्वा प्रजापते रूपा लिख्यते चोदगायता। दक्षिणाताररूपा स्यात् सावित्र्याश्चोत्तरा स्मृता ।।
मध्ये तिस्त्रः त्रिवेदानां रूपाः प्रागायता मताः। स्मर्तव्या इति तारेखा वैदिकं कर्म कर्तृभिः ।।
प्रजापतेः समुत्पन्ना स्ताराद्याः श्रुतयोखिलाः। तेषां तु कर्मनानात्वात् नानात्वमिह संस्मृतम् ।।
ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च उमालक्ष्मीसरस्वती। षड्रेखा देवताः प्रोक्ता अक्षतांस्तासु निक्षिपेत् ।। *(अश्वलायन स्मृति)*

सबसे पहले दक्षिण से उत्तर की ओर एक १२ अंगुल की रेखा खीचे। यह प्रजापति का रूप है (**अ**)। दक्षिण भाग में पश्चिम से पूर्व की ओर जाने वाले एक १२ अंगुल प्रमाण का रेखा खीचे। यह प्रणव स्वरूप है (**ब**)। उत्तर दिशा में पश्चिम से पूर्व की ओर जाने वाला एक १२ अङ्गुल प्रमाण का रेखा खीचें। यह सावित्री रूप है (**ब**)।

इन दोनों के बीच में तीन रेखायें पश्चिम से पूर्व की ओर खीचें। ये भी १२ अङ्गुल प्रमाण के हों। यह तीन वेदो के स्वरुप है। वैदिक कर्म करने वाले इन तीन रेखाओं को खीचते समय तीन वेदो का स्मरण करना चाहिये। प्रजापति ब्रह्मा से उत्पन्न प्रणवादि सभी श्रुतियाँ अनेक रूप में हैं। अतः ये रेखयें भी अलग-अलग रहना चाहिये। इनका मिलन नहीं होना चाहिये।

पहले खीचें दक्षिण से उत्तर की ओर की रेखा में ब्रह्मा जी को (**अ**) ॐ ब्रह्मणे नमः। **दूसरी बार** *खीचें दक्षिण में स्थित पश्चिम से पूर्व की ओर खीचें रेखा*

में विष्णु जी को (ब) ॐ विष्णवे नमः। **तीसरी बार** खींचे उत्तर में स्थित पश्चिम से पूर्व की ओर खींचे रेखा में रुद्र जी को (ब) ॐ रुद्राय नमः एवं बीच के तीन रेखाओं में दक्षिण से उत्तर की ओर क्रम से उमा, लक्ष्मी, सरस्वती जी का आवाहन कर पञ्चोपचार या षोडशोपचार से पूजन करना चाहिये।

ॐ उमायै नमः। ॐ लक्ष्म्यै नमः। ॐ सरस्वतत्यै नमः। ॐ ब्रह्मणे नमः। ब्रह्माणं आवाहयामि। ॐ विष्णवे नमः। विष्णुं आवाहयामि। ॐ रुद्राय नमः। रुद्रं आवाहयामि। ॐ उमायै नमः। उमां आवाहयामि। ॐ लक्ष्म्यै नमः। लक्ष्मीं आवाहयामि। ॐ सरस्वत्यै नमः। सरस्वतीं आवाहयामि। ॐ आवाहित देवताभ्यो नमः। ॐ लं पृथिव्यात्मने गन्धं कल्पयामि। ॐ हं आकाशात्मने पुष्पं कल्पयामि। ॐ यं वाय्वात्मने धूपं कल्पयामि। ॐ रं अगन्यात्मने दीपं कल्पयामि। ॐ वं अबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि। ॐ पं परमात्मने पञ्चोपचारपूजां समर्पयामि। अनेन पूजनेन आवाहित देवताः प्रीयन्ताम्।

अग्नि प्रतिष्ठा विधान—यहाँ तक होम वेदी निर्माण विधि, होम वेदी पर देवताओं का आवाहन पूजन संपन्न हुआ। आगे अग्नि प्रतिष्ठा विधान वर्णित है। ततः तैजसेन असंभवे मृन्मयेन वा पात्रयुग्मेन संपुटीकृत्य सुवासिन्या श्रोत्रियागारात् स्वगृहाद्वा समृद्धं निर्धूमं अग्निं आहृतं स्थंडिलात् आग्नेय्यां निधाय। उसके बाद लोहपात्र में (संभव हो तो ताम्र पात्र में) यदि न हो तो मिट्टी के पात्र में श्रोतियों के घर से या अपने घर से लाकर, धुऐं रहित अंगारों को पात्र में रखकर दूसरे पात्र से ढक्कर लाना चाहिये। लाए हुए अग्निपात्र को स्थण्डिल होमवेदी के आग्नेय दिशा में रखना चाहिये। एह्यग्नेराहूगणोगोतमो ग्रस्त्रिष्टुप् अग्न्याह्वाने विनियोगः।

ॐ एह्यग्नइहहोता निषीदादब्धः सुपुर एताभवानः॥
अवंतांत्वारोदसीविश्वमिन्वेयजामहे सौमनसायं देवान्। *(ऋग्वेद १.७६.२)*

जुष्टोदमूना आत्रेयोवसुश्रुतोग्निस्त्रिष्टुप् अग्निनमस्कारे विनियोगः॥

ॐ जुष्टोदमूनाअतिथिर्दुरोण इमं नों यज्ञमुपयाहि विद्वान्।
विश्वांअग्ने अभियुजों विहत्यां शत्रूयतामाभराभोजनानि॥ *(ऋग्वेद ५.४.५)*

पहले मन्त्र से अग्नि देव को आह्वन करें। एवं दूसरे मंत्र से नमस्कार करें। **आच्छादनं दूरीकृत्य** फिर ऊपर ढके पात्र को निकालें।

समस्तव्याहृतीनां परमेष्ठीप्रजापतिः प्रजापतिर्बृहती। अग्निप्रतिष्ठापने विनियोगः।

ॐभूर्भुवः स्वः। इति आत्माभिमुख पाराम्यां षट्सुलेखासु अमुक नामानमग्निं प्रतिष्ठापयामि इति अग्निं प्रतिष्ठाप्य। ऊपर के मन्त्र कहकर अग्नियुक्त पात्र को अपने सामने हाथों में पकडकर एक बार पदक्षिणा कर जो ६ रेखायें है, उन पर कर्माङ्ग देवता नामक अग्नि को प्रतिष्ठापित कर रहा हूँ कहकर रखना चाहिये। रखते समय हाथ कर्तरी शकल में होना चाहिये। कैची जैसे अग्न्याहरणा पात्रयोः अक्षतैः सह उदकमासिच्य इन्धनंप्रोक्ष्य वेणु धमन्या प्रबोधयेत्। अग्नि लायें दोनों पात्रों में अक्षत डालकर जल सींचकर उसे बाहर कर देवें। फिर लकडियों को जल से प्रोक्षणा कर बॉस की या लोहे की धमनी फूकनी से फूंककर अग्नि को प्रज्वलित करें। अग्निनाग्निः काणवोमेधातिथिः अग्निर्गायत्री अग्नि समिन्धने विनियोगः।

ॐ अ॒ग्निना॒ग्निः समि॑ध्यते क॒विर्गृ॒हप॑ति॒र्युवा॑। ह॒व्य॒वाड्जु॒ह्वा॑स्यः।

इस मन्त्र से लकड़ी डालना चाहिये।

प्रक्षिपेत् तासु रेखासु वह्नि तारमनुस्मरन्। शुद्धं प्रदक्षिणानीत मनलं शुद्धपात्रगम्॥ १॥
प्राग्घोष्यद् देवताः स्मृत्वा होतातत्रात्मविश्रुतान्। तासामभिमुखत्वा स्वाभ्यात्मं निक्षिपेतच्छुचिं॥ २॥
आयुर्हरति होतुस्तु निक्षिप्तो ज्वलितोनलः। पुनर्नष्टश्च भूमिस्थो मुखेन च विबोधितः॥ ३॥
शुचित्व प्राप्तये प्रोक्ष्य काष्ठानग्नौ विनिक्षिपेत्। ज्वलयित्वानलं सम्यगन्वाधानं समाचरेत्॥ ४॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

ये सभी प्रमाण श्लोक है। इनमें प्रयोग के तात्विक विचार है। न कि प्रयोग। प्रणव का स्मरण करते हुए उन छः रेखाओं पर शुद्ध पात्र में स्थित अग्नि का प्रदक्षिणा क्रम से लाकर रखना चाहिये॥ १॥ फिर यज्ञ करने वाले कर्माङ्ग देवता नामक अग्नि का स्मरण कर अग्नि को अपने अभिमुख करके शुद्ध भाव से छोड़ना चाहिये। अग्नि को जब आगे करते हैं तब अग्नि का दाहिना भाग अपने बायें हाथ की ओर आता हैं इसके निवरण के लिए हाथ को (cross) कैंची जैसे करके दाहिने हाथ से दाहिना भाग एवं बायें हाथ से वामन भाग को पकड़ते हैं। २॥ प्रतिष्ठापित अग्नि अपने आप ही जले तो, या बुझ जाये तो, या मुँह से फूँक मारकर जलाये तो ऋत्विज का आयु हरण होता है। अतः फूँक मारकार लजाये तो ऋत्विज का आयु हरण होता है। अतः फूकनी से जलाना चाहिये

या हाथ को आगे कर हाथ पर से फूकनी से जलाना चाहिये या हाथ को आगे कर हाथ पर से फूँक सकते है। मुख की थूक अग्नि में नहीं पड़ना चाहिये ॥ ३ ॥
शुचित्व प्राप्ति के लिए काष्ठों को प्रोक्षण कर अग्नि में डालना चाहिये। स्वयं ही जलाना चाहिये। अग्नि के जलने के बाद अन्वाधान करना चाहिये ॥ ४ ॥
विज्ज्योतिषेति जानो वृषोग्निस्त्रिष्टुप् अग्नि ज्वलने विनियोगः।

ॐ विज्ज्योतिषा बृहता भांत्यग्निराविर्विश्वानि कृणुते महित्वा।
प्रादेवीर्मायाः संहते दुरेवाः शिशीते शृंगेरक्षसे विनिक्षे। (ऋग्वेद ५.२.९)

इन मन्त्र से अग्नि ज्वलन करना चाहिये।

अग्निमूर्तिध्यान—चत्वारिशृंगागोतमो वामदेवोग्निस्त्रिष्टुप्। अग्निमूर्ति ध्याने विनियोगः।

ॐ चत्वारि शृंगात्रयों अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्तहस्तांसो अस्य। त्रिधांबद्धो वृषभोरोरवीति महोदेवो मर्त्याँ आविवेश ॥
सप्तहस्तश्चतुः शृंगः सप्तजिह्वो द्विशीर्षकः। त्रिपात्प्रसन्नवदनः सुखासीनः शुचिस्मितः ॥
स्वाहांतुदक्षिणेपार्श्वे देवीं वामेस्वधां तथा। बिभ्रद्दक्षिण हस्तैस्तु शक्तिमन्नंस्त्रुचं स्त्रुवं ॥
तोमरंव्यजनंवामैर्घृतपात्रं च धारयन्। मेषारूढो जटाबद्धो गौरवर्णो महौजसः।
धूम्रध्वजो लोहिताक्षः सप्तार्चिः सर्वकामदः ॥ आत्माभिमुख मासीन एवं रूपो हुताशनः। (ब्रह्मकर्म समुच्चय-अग्निमुख प्रकरण)

इन मन्त्रों को पढकर ध्यान करें। अग्ने अच्छावदेत्यस्य मन्त्रस्य अग्निस्तापसोग्निरनुष्टुप् अग्नि स्वाभिमुखीकरणे विनियोगः।

ॐ अग्ने अच्छांवदेहनः प्रत्यङ्ङनः सुमना भव। प्रनोयच्छ विशस्पते धनदा असि नस्त्वम् ॥ (ऋग्वेद १०.१४१.१)
ॐ एष हि देवः प्रदिशो नु सर्वाः पूर्वो हि जातस्य उ गर्भे अंतः।
स विजायमानस्य जनिष्यमाणः प्रत्यङ्मुखांस्तिष्ठाति विश्वतोंमुखः ॥ (यजुर्वेद-आरण्यक-महानारायणोपनिषत्)

हे अग्रे शाण्डिल्यगोत्र मेषारूढ वैश्वानर प्राङ्मुखः सन् ममाभिमुखो वरदस्सुप्रसन्नो भव। इतना कहकर ध्यसान से सम्मुख करके अन्वाधान करें।

अन्वाधान—अन्वाधानाभिधं कर्म क्रियते सर्वकर्मसु। निमन्त्रणार्थं देवानां होतव्यानां च होतृभिः॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

सभी कर्मों में अन्वाधान कर्म करना चाहिये। ऋत्विज अपने यज्ञ में जिन-जिन देवताओं को आहुतियाँ देते हैं उन्हें पहले बुलाकर सूचित करना चाहिये। यह क्रिया अन्वाधान कहलाता है। आचम्य प्राणानायम्य देशकालौस्मृत्वा श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थ एतत् कर्म करिष्ये। आचमन कर (यदि बीच में उठ के बार गये हो तो), प्राणायाम करके देशकालसंकीर्तन पूर्वक संकल्प लें। तत्र देवता परिग्रहार्थं अन्वाधानं करिष्ये। समित् द्वयं आदाय। (दो समितों को हाथ में लेकर) अस्मिन् अन्वाहितेग्नौ जातवेदसमग्निं इध्मेन प्रजापतिं प्रजापतिं चाघारदेवते आज्येन अग्नीषोमौचक्षुषी आज्येन। इन अग्नियों में जातवेदाग्नि को समित् से, आधार देवता प्रजापति एवं प्रजापति को घी से, चक्षुष् अग्नि सोम को घी से होम करना चाहिये। यह पूर्वाङ्ग है। सभी यज्ञों में इतना अन्वाधान होता है। आगे यज्ञों के अनुसार बदलता है।

जैसे सर्वाद्भुत शान्ति यज्ञ—अग्निं वायुं सूर्य प्रजापतिं च आज्यद्रव्येण प्रधान देवतां आदित्यं अधिदेवतामग्निं प्रत्यधिदेवतां रुद्रं अर्क समित् चर्वाज्य द्रव्यैः प्रधान देवतां सोमं अधिदेवतां अपः प्रत्यधिदेवतां गोरीं, पलाशसमित् चर्वाज्य द्रव्यैः, प्रधान देवतां अंगारकं अधिदेवतां भूमिं, प्रत्यधिदेवतां स्कन्दं खदिरसमित् चर्वाज्य द्रव्यैः, प्रधान देवतां बुधं, अधिदेवतां विष्णुं प्रत्यधिदेवतां पुरुषं अपामार्ग समित् चर्वाज्य द्रव्यैः, प्रधान देवतां बृहस्पितिं, अधिदेवतां इन्द्रं, प्रत्यधिदेवतां, ब्रह्माणं पिप्पल समित् चर्वाज्य द्रव्यैः, प्रधान देवतां शुक्रं, अधिदेवतां इन्द्राणीं प्रत्यधिदेवतां इन्द्रं, औदुम्बर समित् चर्वाज्यद्रव्यैः प्रधानदेवतां शनिं अधिदेवतां प्रजापतिं प्रत्यधिदेवतां यमं, शमीसमित् चर्वाज्यद्रव्यैः, प्रधान देवतां राहुं अधिदेवतां सर्पान् प्रत्यधिदेवतां मृत्युं, दूर्वा समित् चर्वाज्य द्रव्यैः, प्रधान देवतां केतुं, अधिदेवतां ब्रह्माणं प्रत्यधिदेवतां चित्रगुप्तं कुशसमित् चर्वाज्य द्रव्यैः प्रधान देवताः अष्टाविंशति संख्यया अधिदेवताः प्रत्यधिदेवताः दशांशसंख्यया विनायकं दुर्गां क्षेत्रपालं वायुं आकाशं अश्विनौ क्रतु साद्गुण्य देवताः प्रधान विंशांश संख्यया इन्द्रं अग्निं यमं निर्ऋतिं वरुणं वायुं कुबेरं ईशानं एताः क्रतुसंरक्षणदेवताः प्रागुक्त समित् चर्वाज्यद्रव्यैः प्रधान विंशांश संख्याया अग्निं वायुं सूर्यं प्रजापतिं च आज्यद्रव्येण, विष्णु सर्वाद्भुत शान्ति होमे प्रधान देवतां विष्णुं अष्टोत्तर शतसंख्यया चरु द्रव्येण,विष्णुं महाद्भुताधिपतिं ईश्वरं सर्वौत्पातशमनं अग्निं पृथिवीं महान्तं वायुमन्तरिक्षं महान्तं आदित्यं दिवं महान्तं प्रजापतिं चन्द्रमसं नक्षत्राणि दिशो महान्तं च एताः देवताः आज्य द्रव्येण एकैक संख्यया चरु शेषेणास्विष्टकृतमग्निं इध्मसन्नहनेन रुद्रं अयासमग्निं देवान् विष्णुं अग्निं, वायुं सूर्यं प्रजापतिं च एताः प्रायश्चित्त देवता आज्येन ज्ञाताज्ञात दोष निबर्हणार्थं त्रिवारमग्निं मरुतश्चाज्येन विश्वान् देवान् संस्रावेण एताः

अङ्गदेवताः प्रधानदेवताः सर्वाः सन्निहिताः सन्तु एवं सांगोपाङ्गेन कर्मणा सद्यो यक्ष्ये।

॥ सर्वाद्भुत शान्ति याग का अन्वाधान समाप्त ॥

शेष यज्ञों के लिए अन्वाधान अन्त में लिखा जायेगा। समस्तव्याहृतीनां परमेष्ठी प्रजापतिः प्रजापतिर्बृहती अन्वाधान समिद्धोमे विनियोगः। ॐभूर्भुवः स्वः स्वाहा। प्रजापतय इदं न मम। इतना कहकर हाथ में रखे दो समित् को अग्नि में डालना चाहिये।

अन्वाधान का अर्थ—

१. अग्नि, वायु, सूर्य, प्रजापतियों को एक-एक घी की आहुतियाँ देने चाहिये। मन्त्रों को आगे प्रयोग में लिखा जायेग।
२. प्रधान देवता आदित्य को, अधिदेवता अग्नि को, प्रत्यधि देवता रुद्र को अर्क समित्, चरु एवं घी से आहुतियाँ।
३. प्रधान देवता चन्द्र को अधिदेवता जल, प्रत्यधिदेवता गौरी को पलाश समित्, चरु एवं घी से आहुतियाँ।
४. प्रधान देवता अंगारक को, अधिदेवता भूमि को, प्रत्यधि देवता स्कन्द को खदिर समित् चरु एवं घी से आहुतियाँ।
५. प्रधान देवता बुध को, अधिदेवता विष्णु को, प्रत्यधि देवता पुरुष को अर्पामार्ग समित् चरु एवं घी से आहुतियाँ।
६. प्रधान देवता बृहस्पति को, अधिदेवता इन्द्र को प्रत्यधिदेवता ब्रह्मा को पिप्पल (अश्वत्थ) समित् चरु एवं घी से आहुतियाँ।
७. प्रधान देवता शुक्र को, अधिदेवता इन्द्राणी को, प्रत्यधिदेवता इन्द्र को औदुम्बर समित् चरु एवं घी से आहुतियाँ।
८. प्रधान देवता शनि को, अधिदेवता प्रजापति को, प्रत्यधिदेवता यम को शमी समित् चरु एवं घी से आहुतियाँ।
९. प्रधान देवता राहु को, अधिदेवता सर्पों को प्रत्यधि देतवा मृत्यु को दुर्वा समित् चरु एवं घी से आहुतियाँ,
१०. प्रधान देवता केतु को अधिदेवता ब्रह्मा को प्रत्यधि देवता चित्रगुप्त को कुश समित् चरु एवं घी से आहुतियाँ। प्रधान देवता को २८ आहुतियाँ, अधि देवता प्रत्यधिदेवताओं को उसके दशांश यानि ३-३ आहुतियाँ।
११. विनायक, दुर्गा, क्षेत्रपाल, वायु आकाश एवं अश्विनी देवताओं को जो कि यज्ञ को सद्गुण प्रधान करने वाले हैं उन्हें विंशांश

संख्या (प्रधान का १/२० भाग अर्थात् २-२) समित् चरु आज्य की आहुतियाँ।

१२. इन्द्र अग्नि यम निर्ऋति वरुण वायु कुबेर (सोम) ईशान इन अष्टदिक्पालक जो कि यज्ञ के संरक्षक है उन्हें विंशांश संख्या (यानि प्रधान देवता का १/२० भाग अर्थात् २-२) समित् चरु आज्य की आहुतियाँ।

१३. अग्नि वायु सूर्य एवं प्रजापति को एक-एक घी की आहुतियाँ।

१४. सर्वाद्भुत शान्ति याग में प्रधान देवता रुद्र को १०८ आहुतियाँ चरु द्रव्य से,

१५. विष्णुं महाद्भुताधिपतिं , ईश्वर, सर्वोत्पात शमन, इन्हें नाम मन्त्र से एक-एक घी की आहुतियाँ।

१६. अग्नि पृथिवी महान्त को, वायु अन्तरिक्ष एवं महान्त को आदित्य, द्यौ एवं महान्त को, प्रजापति, चन्द्रमस्, नक्षत्र दिशाऐं एवं महान्त को इन्हें आगे बताने वाले मन्त्रों से घी की १-१ आहुतियाँ।

१७. बचे हुए चरु से अल्प प्रमाण में-हमेशा देने वाले प्रमाण से कुछ अधिक ग्रास प्रमाण स्विष्टकृत् अग्नि को आहुति देवे।

१८. इध्म १५ समितों का एक समूह उसके बन्धन रस्सी को रुद्र को अहुति देवे। प्रायः इसे कुश से बाँधते है। ३६ कुश हो उन्हे चोटी जैसे गूँथना चाहिये वे १२ अंगुल प्रमाण हो।

इध्म—यज्ञे पञ्चदशेध्मानि तिथि रूपाणि होतृभिः। स्मर्तव्यानि प्रमाणेन चतुर्विंशाङ्गुलानि तु॥ *(आश्वलयन स्मृति)*

यज्ञ में १५ समिधों को जो कि २४ अङ्गुल लगभग १२ '' लम्बे हो उनका समूह इध्म कहलाता है। ये १५ तिथियों के प्रतीक हैं।

रज्जु—शक्तिर्वामकरे पुंसां वसतीन्दुस्वरूपिणी। शिवो वह्निमयश्चापि विप्राणां दक्षिणेकरे॥ १॥

शक्त्यैवतु दृढीकारः कृतानां कर्मणां भवेत्। सर्वेषामिति यत्तस्माद्रज्जुं तद्वत् समाचरेत्॥ २॥

दक्षोपरि करं वाम करं कृत्वा कृतैर्बुधः। रज्जुं करोति तावच्च तदालभ्यक्रियाञ्चरेत्॥ ३॥

उपरिस्थितमाविश्य शक्तिर्वसति शाश्वती। स्त्रियं वा पुरुषं वान्यं विजृंभत्यपि कर्मसु॥ ४॥

कलयामीति कालेन कालरूपानि संस्मरेत्। इध्मानि कर्म सिद्ध्यर्थं कालरूपमिदं जगत्॥ ५॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

मनुष्य के बायें हाथ में चन्द्रकलास्वरूपिणी शक्ति का आवास हैं, ब्राह्मणों के दाहिने हाथ में अग्निस्वरूप शिव वास करते हैं॥ १ ॥ किये गये कर्मों का दृढीकरण शक्ति से ही होता है। अतः उसी क्रम से रज्जु (रस्सी बनाना चाहिये) ॥ २ ॥ इध्म शिप रूप, रज्जु शक्ति रूप अतः रज्जु आवश्यक है। दाहिने हाथ पर बायें हाथ रखकर रस्सी बनाना चाहिये। इसी से कर्म प्रारम्भ करना चाहिये॥ ३ ॥ इध्म को बाँधने वाली रज्जु हमेशा ऊपर रहती है। हमेशा शक्ति की ही प्रधानता है। उसी से सभी कर्म प्रकाशित होते हैं॥ ४ ॥ यह जगत् कालरुप है एवं शक्ति कालरूपी है। उनका स्मरण करते हुए कर्म सिद्धि के लिए इध्म एवं रज्जु का निर्माण करना चहिये॥ ५ ॥ प्रदेशमात्रं षट्त्रिंशत् दर्भान् त्रिसन्धि। रज्जु में १२ अंगुल लम्बे ३६ कुश लेना चाहिये। ३+३+३ को चोटी बाँधे फिर ३+३+३ जोड़कर चोटी बाँधे फिर ३+३+३ जोड़कर चोटी बाँधे तब रज्जु बना।

बर्हिष्—आज्य पात्र (घी के पात्र रखने के लिए आसन)

बर्हिषो बन्धनं पूर्वं मुष्टिमात्रस्य हि स्मृतम्। सर्वौषधि स्वरूपस्य देवानां सुप्रियस्य च॥ १ ॥
बहूनां संग्रहार्थाय बर्हिषो बन्धनं भवेत्। भूमौ निहितया रज्वा बन्धनं चोदगग्रया॥ २ ॥
भूमौ सन्निहितान्येव बध्यन्ते दाढ्यसिद्धये। भूमि जातानि सर्वाणि वस्तूनीह विचक्षणैः॥ ३ ॥
अथ प्रांचंनयेदग्रं रज्वाग्रन्थिमयं तथा। बर्हिर्द्विवारमावृत्या जलंस्पृष्ट्वोदृतं भुवः॥ ४ ॥
तथा सकृत् समाहृत्य ग्रन्थिं कृत्वेध्ममेव च। निधाय दक्षिणेवह्नेश्शुचावपउपस्मृशेत्॥ ५ ॥
दुर्गाहत्वाच्च सूक्ष्मत्वात् इध्म ग्रन्थिर्भवेदिह। कालरूपी मनुष्याणा मेकत्वात् सकृदाकृतिः॥ ६ ॥
ओषधीनां बहुत्वे तु बन्धनं स्यात् द्विरावृतिः। त्रिग्रन्थिः पारवश्यत्वात् शुद्ध्यर्थं स्पर्शनंत्वपाम्॥ ७ ॥
द्विधा स्यात् बन्धनं तेषां पीडादोषापनुत्तये। अधः स्पृशेत् च रज्वग्रं अधोरेतोमयं नयेत्॥ ८ ॥
निर्वीर्यत्वं भवेत् तेषां समिधां छेदनादिह। बर्हिषां च तदावीर्यं संसजामीत्यधोनयेत्॥ ९ ॥
संग्रहः सर्ववस्तूनां दक्षिणे प्रविशिष्यते। तस्मात् संगृह्य निर्बध्य बह्नेः दक्षिणातः क्षिपेत्॥ १० ॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

एक मुष्टि मात्र कुश को बर्हिष् के लिए रखना चाहिये। बर्हिष् सर्वौषधि स्वरूप है, यह देवताओं को प्रिय है॥ १॥ अनेक कर्मो के आधारभूत होने के कारण बर्हिष को बाँधकर रखना चाहिये। भूमि पर उत्तराभिमुख रखे रज्जु से बर्हिष को बाँधना चाहिये॥ २॥ भूमि पर जो भी वस्तुऐ उपलब्ध हैं उन्हें उपयोग के लिए एवं दृढता प्राप्ति के लिए बाँधकर संग्रह करने की परम्परा है॥ ३॥ बाँधने के बाद बंधा हुआ बर्हिष् का गाँठ वाला भाग पूर्वाभिमुख होना चाहिये। उसे हाथ में लेकर दोबारा घूमाकर बाँधना चाहिये। बाँधने के बाद हाथ धो ले। इस इसे बगल में रखें (दक्षिण में)॥ ४॥ उसी प्रकार इध्म को भी एक बार रज्जु से बाँधकर उसे अग्नि के दक्षिण में शुद्ध भूमि पर रखें। पुनः हाथ धो लें॥ ५॥ इसे पकडने में कठिन होने के कारण एवं इस की सूक्ष्मता के कारण इध्म को बाँधना आवश्क है। इध्म शिवरुप (कालरूप) होने के कारण एक बार ही इसे बाँधना चाहिये॥ ६॥ इध्म एवं औषध अधिक होने पर दो बार घूमाकर तीन गाँठ लगाकर बाँधकर रखना चाहिये। इसे भी बाँधने के बाद हाथ धे लेना चाहिये॥ ७॥ इध्यम एवं औषधियों को पीडा (नष्ट) न हो इसलिए दो प्रकार का बन्धन बताये हैं। रज्जु रेतस्वरूप होने के कारण भूमि पर उसका स्पर्श होना चाहिये॥ ८॥ काटने से समित् निर्विर्य थे, बर्हिषः भी निर्वीर्य थे, रज्जुबन्धन से उनमें वीर्यसञ्चार (शक्ति सञ्चार) होता है। इसलिए रज्जु का भूस्पर्श आवश्यक है॥ ९॥ सभी वस्तुओं का संग्रह दक्षिण दिशा में करना चाहिये। इसलिये सभी वस्तुओं को ठीक तरह से बाँधकर दक्षिण दिशा में रखना चाहिये॥ १०॥ यहाँ तक प्रमाण श्लोक है।

१९. अयसमग्नि को मन्त्रों से एक आहुति घी से प्रायश्चित्त देवता।

२०. देवान्, विष्णु, अग्नि, वायु, सूर्य, प्रजापति इन प्रायश्चित देवताओं को घी से १-१ आहुति देवें।

२१. जानते हुए या अनजाने में हुए दोष परिहार के लिए अग्नि को तीन आहुतियाँ, मरुत् को एक आहुति मन्त्रों से घी से आहुति देवें। शेष घी से विश्वेदेवताओं को एक आहुति देवें।

इस प्रकार अङ्गदेवता एवं प्रधान देवताऐं सभी पास में ही रहें। इस प्रकार अङ्ग उपाङ्ग सहित कर्म से याग करुँगा ''मन में प्रतिज्ञा करना चाहिये। यह अन्वाधान देवताओं को यज्ञ से पहले निमन्त्रण देने जैसी प्रक्रिया है। ताकि अपने यज्ञ भागों को लेने के लिए वे उपस्थित रहें। इतना कहकर अन्वाधान समित् जो कि हाथ में रहता है, अग्नि में डाल दें। **यहाँ पर सर्वाद्भुत शान्ति याग का अन्वाधान समाप्त आगे इसका प्रयोग है।**

परिसमूहन एवं पर्युक्षण विधान—

करेण तोयमादाय प्रागराभ्य प्रदक्षिणम्। परितो मार्जनं यत् तत् आहुः परिसमूहनम्॥ १॥
होता पूर्वादिदिक्ष्वग्नेः आशाः आलभते त्रिशः। चतुःकृत्व स्पृशेत् चापः कुर्वन् परिसमूहनम्॥ २॥
आशादेव्यः स्थिता वह्नेर्बहिर्यज्ञस्य पालने। इति स्मृत्वा सुरेभ्यस्तु संमानार्थं त्रिशः स्पृशेत्॥ ३॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

हाथ में जल लेकर पूर्वदिशा से प्रारम्भ करके प्रदक्षिणाकार में चारों ओर मार्जन करने की क्रिया परिसमूहन कहलाता है॥ १॥ हवनकर्ता अग्नि से पूर्वादि दिशाओं में तीन बार जल युक्त हाथ से स्पर्श करना चाहिये, चार बार हाथ धो लेना चाहिये। यह परिसमूहन है॥ २॥ दिग्देवताऐं अग्नि के बाहर यज्ञ की रक्षा के लिए खड़े हैं समझकर उन देवताओं को गौरव देने के लिए तीन बार जलयुक्त हाथ से चारों ओर स्पर्श करना चाहिये॥ ३॥

परिसमुह्य परिस्तृणीयात्। तच्चेत्थम्।—उपरोक्त क्रम से परिसमूहन पर परिस्तरण डालना चाहिये। वह इस प्रकार है। अग्न्यायतनाद् अष्टांगुल परिमिते देशे ऐशानीं दिशं आरभ्य प्रदक्षिणं संमतात् सोदकेन पाणिना त्रिः परिमृज्य दशांगुलमिते देशे प्राच्यादिषु पूर्वं उपरिनिहितदर्भैः परिस्तृणीयात्।

स्थण्डिले होम वेदी के आठ अंगुल बाहर ईशान्य दिशा से प्रारम्भकर प्रदक्षिणा क्रम से चारों ओर जलयुक्त हाथ से तीन बार परिमार्जन करें। स्थण्डिले होमवेदी के दस अंगुली बाहर पूर्व से प्रारम्भकर सभी दिशाओं में कुशों को बिछाना चाहिये।

तत्र प्राच्यां प्रतीच्यां च उदगग्रादर्भाः अवाच्यामुदीच्यां च प्रागग्राः पूर्वपश्चिमपरिस्तरणमूलयोरुपरि दक्षिणपरिस्तरणं उत्तरपरिस्तरणंतु तदग्रयोरधस्तात्। पूर्व एवं पश्चिम दिशा में कुशाग्र (कुश का आगे का भाग) उत्तराभिमुख हो, दक्षिण एवं उत्तर दिशा में कुशाग्र पूर्वाभिमुख होना चाहिये। पूर्व एवं पश्चिम दिशा की कुशों के (परिस्तरण) ऊपर दक्षिण का परिस्तरण, एवं पूर्व पश्चिम कुशों के परिस्तरण के नीचे उत्तर का परिस्तरण होना चाहिये। परिस्तरण कुशों के लिए कोई निश्चित संख्या नहीं हैं। अधिक उपलब्ध होने पर अधिक विछावे। कम होने पर चार-चार बिछायें। उतना ही न हो तो तीन-तीन बिछायें।

परिस्तृणात्यासनार्थं आशेशानां त्रिभिस्त्रिभिः। कुशैः प्रागादिदिक्ष्वत्र कृत्वा परिसमूहनम्॥ १॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

आशापालांस्तु शक्रादीनासनेषु समावहेत्। दिक्पालकों के आसन के लिए यह परिस्तरण बिछायें जाते हैं। एक-एक दिशा में तीन कुश डालना चाहिये। उन

पर इन्द्रादि दिक्पालकों का आवाहन करना चाहिये।

ततो अग्नेर्दक्षिणतो ब्रह्मासनार्थं उत्तरतश्च पात्रासादनार्थं कांश्चित्प्रागग्रान् दर्भानास्तृणीयात्। *(आश्वलायन स्मृति)*

इसके पश्चात् अग्नि के दक्षिण दिशा में ब्रह्मा के आसन के लिए एवं उत्तर में यज्ञपात्रों को रखने के लिए कुछ कुशाग्रों को पूर्वाभिमुख बिछाना चाहिये। अग्नेरैशानतस्त्रिरंभसापरिषिच्य उत्तरास्तीर्णेषु दर्भेषु दक्षिणसव्यपाणिभ्यां क्रमेण चरु स्थाली प्रोक्षण्यौ, दर्वी स्रुवौ, प्रणीताज्यपात्रे, इध्माबर्हिषी इति द्वे द्वे पात्रे उदगपवर्ग प्राक्संस्थंयुब्जान्या सादयेत्। अग्नि के चारों ओर फिर से तीन बार ईशान्य से प्रदक्षिणाकार में परिषेचन करें।

परिषेचन का प्रमाण श्लोक—नदीनां पुलिनत्वस्य संसिध्यै यज्ञकर्मणाम्। त्रिशः पर्युक्षणं होता करोत्यद्भिः प्रदक्षिणम्॥

जेसे नदियों को रोकने के लिए तट होता है, उसी प्रकार परिस्तरण भी तट है, जिससे यज्ञ कर्मो की सिद्धि होती है। उन परिस्तरण कुशों के ऊपर तीन बार परिषेचन करें। ईशान्य से ईशान्य प्रदक्षिणाकर में एक बार, पुनः दिशातिक्रमण न करते हुए फिर से दुबारा जल लेकर ईशान्य से ईशान्य तक, तीसरी बार भी ऐसा ही करें।

उत्तर में बिछे कुशाग्रों के ऊपर दाहिने एवं बायें हाथ से कर्तरि हाथ से (cross hand)

१. चरुथ्थाली एवं प्रोक्षणी पात्र २. दर्वी एवं स्रुवा ३. प्रणीता एवं आज्यपात्र ४. इध्म एवं बर्हिष् इन्हें एक-एक बार उठाकर रखना चाहिये।

A B C D E F G H

यदि केवल घी का होम हो ता—१. प्रोक्षणी स्रुव, २. प्रणीता एवं आज्यपात्र, ३. इध्म एवं बर्हिष् को एक-एक बार उठाकर रखना याहिये। इन पात्रों को उत्तर दिशा में, पहले दो पात्र पश्चिम में, अगला उससे आगे पूर्व में इसी क्रम से रखना चाहिये। सभी पात्र उत्तर में ही रखें

H G
F E
D C

B A

कृते पर्युक्षणे तीर्थदेशे पात्राणि सादयेत्। पात्राणां दोषनिर्हृत्यै सादनं यज्ञकर्मसु॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

पर्युक्षण के पश्चात् यज्ञ पात्रों के दोष परिहार के लिए तीर्थ देश में उत्तर दिशा में सोम ईशानयोर्मध्ये पात्रों को रखना चाहिये। पहले सभी को उलटा करके रखें।

स्थालींचरोः प्रोक्षणभाजनं च दर्वीस्रुवौ सादयदर्विहोमे।
पात्रं प्रणीतार्थ मथाज्यपात्रं इध्मः क्रमेण क्रमवित् कुशैश्च॥

चरु होम में—चरुस्थाली, प्रोक्षणी पात्र, दर्वी स्रुव, प्रणीता आज्यपात्र इध्म एवं बर्हिष् को रखना चाहिये।

केवल घी के होम में—प्रोक्षणी स्रुवमासाद्य चमसं चाज्यभाजनम्। इध्मा बर्हिरयं प्रोक्तं आज्यहोमेष्वनुक्रमात्॥ *(स्मृति संग्रह)*

घी के होम में प्रोक्षणी सुवाप्रणीता (चमस) आज्य पात्र, इध्म एवं बर्हिष् को रखना चाहिये।

विवरण (पात्रों का)—चरु स्थाली-चावल (होम के लिए) बनाने वाला पात्र, **प्रोक्षण पात्र**-जल सेंचने का पात्र, **दर्वी पात्र**-चरु होम करने वाला कर्ची, **स्रुव**-घी होम करने वाला कर्ची (छोटा), **प्रणीता पात्र**-जल पात्र अन्त तक इसमें जल रहना चाहिये। इसका अन्त में प्रोक्षण में उपयोग होता है।, **आज्य पात्र**-घी रखने वाला बर्तन, **इध्म**-समित् का एक बण्डल, **बर्हिष्**-एक मुष्टि कुशका बण्डल

पात्रों के अभिमानी देवताएँ—आदित्यं स्यात् चरोः पात्रं वायव्या प्रोक्षणी मता। पार्थिवं तु जुहूपात्रं स्रुवमाग्नेयमुच्यते॥ १॥
वारुणं पूर्णपात्रं स्यात् पावमानं घृतस्य च। आग्नेयानीह चेक्ष्मानि सौम्या बर्हिष ईरिताः॥ २॥
अधोभागं समाश्रित्य स्थितानां सुरवैरिणाम्। कुर्यान् रिसनार्थाय न्यषमुखानि क्रमाद् भुवि॥ ३॥
त्रिभिरद्भिरधोभागं पात्राणां प्राक्ष्यहोमकृत्। कृत्वोन्मुखानि च तथा करोति निरसन्बलात्॥ ४॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

चरु पात्र के अभिमानी देवता आदित्य है, प्रोक्षणी पात्र के वायु, दर्वी को भूमि, स्रुवपात्र को अग्नि, प्रणीता पात्र को वरुण, आज्य पात्र को पवमान, इध्म को

अग्नि एवं बर्हिष् को सोम अभिमानी देवताऐं हैं ॥ १-२ ॥ पात्रों के नीचे वास करने वाले दैत्यों का निवारण के लिए पहले पात्रों को उलटा करके रखना चाहिये। फिर पात्रों के अधोभाग को तीन बार प्रोक्षण करना चाहिये ताकि वे वहाँ से चले जायें तब सीधा करके सभी पात्रों को रखना चाहिये ॥ ३-४ ॥

यहाँ तक पात्र शोधन प्रक्रिया संपन्न हुआ

ततः प्रोक्षणीपात्रमुत्तानं कृत्वा तत्र अनन्तर्शर्भित साग्र समस्थूल प्रादेश मात्र कुशद्वयरूपे पवित्रे निधाय शुद्धाभिरद्भिः तत् पात्रं पूरयित्वा गंधपुष्पादि निक्षिप्य हस्तयोः अङ्गुष्ठोपकनिष्ठिकाभ्यां उत्तानाभ्यां पाणिभ्यां उदगग्रे पृथक् पवित्रे धृत्वा अपस्त्रिरुत्पूय सर्वाणि पात्राणि प्रोक्ष्य पात्राण्युत्तानानिकृत्वा इध्मं विसृस्य सर्वाणि पात्राणि त्रिः प्रोक्षेत्।

इसके पश्चात् प्रोक्षणीपात्र को सीधा करें। उसमें १२ अङ्गुल प्रमाणवाले दो अग्रयुक्त (नोक) कुशों को जो कि समान आकार वाले हो उसका पवित्र उस पर रखें (अर्थात् दो कुश रखें)। शुद्ध जल से उस पात्र को भरना चाहिये। गन्ध पुष्प उसमें डालें। आकाश की ओर हथेली युक्त दोनों हाथों के अंङ्गुष्ठ एवं अनामिका अङ्गुलियों में कुशों को अलग-अलग रखकर प्रोक्षणीपात्र के जल को हिलाना चाहिये (शुद्धीकरण के लिए) ऐसे करते समय कुश का अग्र उत्तराभिमुख हो तीन बार इसे हिलाना चाहिये। इस जल से सभी पात्रों का एक बार प्रोक्षण करना चाहिये। फिर उन्हें सीधा करके रखें फिर सभी पात्रों को तीन बार प्रोक्षण करें।

प्रमाण श्लोक—पाक् प्रोक्षिण्यां जलं स्राव्यं स्वाभ्यात्मं शुचिनाऽहृतम्। अन्तर्धाय पवित्रे द्वे प्रागग्रे तच्च शोधयेत् ॥ १ ॥
द्वादशांगुलविस्तारे पवित्रे जल शुद्धये। भवेतां प्रोक्षणीपात्रे पात्रवत् संस्कृते पुरा ॥ २ ॥
वारुणास्याभिमुख्यत्व सिद्धयेऽध्यात्ममिष्यते। जलस्य स्त्रवणे त्वापो वरुणाभिमुखे स्थिताः ॥ ३ ॥
स पवित्रेण हस्तेण गृह्येत प्रोक्षणीजलं। अधोनीत्वा त्रिशस्तस्याः प्रोक्षयेत् जल शुद्धये ॥ ४ ॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

पहले प्रोक्षणीपात्र में शुद्ध जल को अपने अभिमुख डालना चाहिये। दो कुशों को पूर्वाभिमुख रखकर उस पर से जल छोडें। वे दो कुश १२ अंगुल प्रमाण के होना चाहिये। अपने संमुख करके जल को डालना चाहिये। जल पात्र का मुख डालते हुए अपने ओर होना चाहिये ताकि वरुण देव अपने सामने हो। वरुण देव हमेशा पश्चिमाभिमुख रहते हैं। १-२-३ ॥ पवित्र को हाथ में लेकर बायें हाथ में प्रोक्षणी पात्र को लेकर तीन बार नीचे से ऊपर हाथ घुमाने

से जल शुद्ध होता है। (प्रदक्षिणाकार-जल हाथ में लेवे) उसी पात्र के जल को लेकर घुमाकर फिर उसी में तीन बार छोडना चाहिये॥ १॥

तज्जलैः साधु संप्रोक्ष्यपात्राण्युक्तेन वर्त्मना। अन्तर्धाय पवित्रे द्वे पूर्णपात्रं प्रपूरयेत्॥ १॥
अमृन्मयं भवेद्यज्ञे पूर्णपात्रमिमि स्थितिः। अपार्थिवमकांस्यं चाप्यसीसं चाप्यनायसन्॥ २॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

उस प्रोक्षणी पात्र के जल से सभी पात्रों का प्रोक्षण करना चाहिये। उन पवित्रों को पूर्ण पात्र में रखकर जल से भरना चाहिये॥ १॥

पूर्णपात्र—यह पात्र मिट्टी का, कांस्य का एवं लोहे का नहीं होना चाहिये, अर्थात् ताम्र, लकड़ी, चाँदी या सोने का हो सकता है। **पूर्ण पात्र-प्रणीता पात्र कहलाता है।** प्रोक्षणीपात्र से प्रोक्षण करने के बाद, पूर्ण पात्र में कुशों को पवित्र को रखकर उसमें भी जल भरना चाहिये।

ब्रह्मा का वरण (अग्निमुखाङ्ग)—ततो यथोक्त लक्षणां ईशानदिग् अवस्थितं ब्राह्मणं अस्मिन् (सर्वाद्भुत शान्ति याग) कर्मणि ब्रह्माणं त्वामहं वृणे इति तत् पाणिं पाणिना गृहीत्वा वृणुयात्। उसके पश्चात् श्रेष्ठ लक्षणों से युक्त ईशान दिशा में उपविष्ट ब्राह्मण को इस याग कर्म में आपको मैं ब्रह्मा के रूप में वरण करता हूँ। कहकर हाथ पकडकर वरण करें।

ततः ब्रह्मा वृतोस्मि। कर्म करिष्यामि इति उक्त्वा प्राङ्मुखो तीर्थदेशे यज्ञोपवीत्यचाम्य समस्य पाण्यङ्गुष्ठो भूत्वा अग्रेणाग्निं दक्षिणपादपुरः सरं परीत्य दक्षिणतः उदङ्मुखः स्थित्वा आसनार्थ दर्भेषु दक्षिणभागस्थं एकं दर्भं अङ्गुष्ठानामिकाभ्यां गृहीत्वा "**निरस्तः परावसुः**" "इति नैर्ऋत्यान् निरस्य, अपः स्पृष्ट्वा **इदमहम् अर्वावसोः सदने सीदामि**" इति उदङ्मुख एवं वामोरोरुपरि दक्षिणपादं संस्थाप्य उपविश्य यजमानेन गन्धाक्षतादिभिः अर्चितः सन् "ब्रह्मन् ब्रह्मासि नमस्ते ब्रह्मन् ब्रह्मणे नमः। ब्रह्माणमावाहयामि" यजमानेन आचार्येण वा आवाहितः।

इसके पश्चात् ब्रह्मा मुझे यह स्वीकार है। कहकर पूर्वाभिमुख बैठकर (उत्तर एवं ईशान्य के बीच में) ब्रह्मवस्त्र (उत्तरीय) डालकर, हाथ जोडकर (संकल्प लेते समय जैसे हाथ बंद करते हैं वैसे) अग्नि के आगे प्रदक्षिणाकार में दाहिने पाँव को आगे कर चलकर दक्षिण में उत्तराभिमुख खड़े होकर, अपने आसन के कुशों में दक्षिण की एक कुश को अङ्गुष्ठ एवं अनामिका अङ्गुलियों से खींचकर निरस्तः परावसुः" कहकर नैऋत्य दिशा में फेंकना चाहिये। फिर हाथ धोलें। "इदमहम् अर्वावसोः सदने सीदामि" मन्त्र कहकर उत्तराभिमुख ही बायें जाँघ पर दाहिने पैर को रखकर बैठना चाहिये। फिर यजमान "ब्रह्मन् मन्त्र कहकर गन्ध अक्षतों से ब्रह्मा का पूजन करें।

ॐ बृहस्पतिर्ब्रह्मा ब्रह्म सदन आशिष्यते बृहस्पते यज्ञं गोपाय सयज्ञंपाहि सयज्ञपतिं पाहि समांपाहीति जपित्वा सदा यज्ञ मना एव वर्तेत। इसे कहकर ब्रह्म निरन्तर यज्ञ में ही मन लगायें। यहाँ पर ब्रह्मा का वरणादि कार्य संपन्न हुआ।

प्रमाण श्लोक—प्रपूर्य पूर्णपात्रं च ब्रह्माणमुपवेशयेत्। दक्षिणेग्रेः शुभे पीठे सदृशे धर्मवित्तमम्॥ १॥
श्रेष्ठा दिक् दक्षिणा प्रोक्ता श्रेष्ठा श्रेष्ठो ब्रह्मा प्रजापतिः॥ २॥
श्रेष्ठायां दक्षिणाशायां प्राकपूर्वोपरयोरपि। परिस्तरणायोरूर्ध्वं वृणीत्वैव तु दक्षिणा॥ ३॥
सर्वेषां पश्चिमत्वात्तु उदीच्यायास्तु पश्चिमम्। परिस्तृणात्यधस्ताच्च परिस्तरणामुत्तरम्॥ ४॥
सर्वकर्म विशेषज्ञो ब्रह्मत्वे ब्राह्मणो भवेत्। न्यूनातिरिक्तभावस्य साक्षित्वे चापि कर्मणः॥ ५॥
अकर्मतन्त्रविन्मूढो ब्रह्मत्वे स्याद्यदिद्विजः क्षयिष्यति हि तत् कर्म वैदिकं नात्र संशयः॥ ६॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

ब्रह्मत्वे ब्राह्मणस्तस्मात् होतुरभ्यधिको भवेत्। कर्म कारण वित् शुद्धः शान्तः कर्मसु लोलुपः॥ १॥ उपरोक्त श्लोकों में ब्रह्मा के स्थान पर बैठने वाले ब्राह्मण की श्रेष्ठता, योग्यता एवं दक्षिण दिशा की प्रधानता का वर्णन है। ततो यजमानः प्रणीतापात्रमग्रेः प्रत्यङ्निधाय तत्र प्रागग्रे पवित्रे निधायोत्पूताभिरद्भिस्तत्पात्रं पूरयित्वा गन्धपुष्पाक्षतान्निक्षिप्य सरस्वतीमावाह्य ॐ ब्रह्मन्नपः प्रणेष्यामीति पृच्छेत्।

इसके बाद यजमान (आचार्य) प्रणीतापात्रको अग्नि के पश्चिम में रखें, उसके ऊपर पवित्र को रखें, उस में शुद्ध जल को भरें। उसे गन्धपुष्प अक्षताओं से पूजन कर सरस्वती का अवाहन करें एवं "ॐ ब्रह्मन्नपः प्रणेष्यामि" कहकर जल लेने की अनुमति मांगना चाहिये।

ततो ब्रह्मा उपांशुभूर्भुवः स्वः बृहस्पति प्रसूतः। उच्चैः ॐ प्रणय ईत्यनुजानीयात्। कर्ता पूर्णपात्रं मुखसममुद्धृत्य अग्नेरुत्तरतो दर्भेषु निधाय ते पवित्रे गृहीत्वा अन्यैः दर्भैः आच्छादयेत्।

तब ब्रह्मा जी कहते हैं—ॐ भूर्भुवस्वः बृहस्पति प्रसूतः" इसे उपांशु स्वर में धीरे से कहकर ॐ प्रणय इसे जोर से अनुमति प्रदान करना चाहिये। तब आचार्य प्रणीतापात्र को नाक के बराबर ऊँचाई तक लाकर उसे उत्तर में कुशों पर रखें। प्रणीता पात्र के ऊपर रखें कुश लेकर उसके स्थान पर दूसरे कुशों को रखना चाहिये।

प्रमाण श्लोक—**ब्रह्माणमुपवेश्यैवं करंगृह्य निमन्त्र्यतु। आदरार्थं प्रणीतां तु तीर्थदेशे निधापयेत्॥ १॥**
वामपाणौ तु तत् कृत्वा दक्षिणेन पिधायतु। नासिकामात्रमुद्धृत्य कुशोपरि निधापयेत्॥ २॥
सौम्यं पात्रं तु तत् स्मृत्वा जलमाग्नेयमुत्तमम्। सौम्याग्नेयस्वरूपाभ्यां पाणिभ्यां तत्समुद्धरेत्॥ ३॥
प्राणस्थानं भवेद् घ्राणं प्राग् तत् प्राणं विना कृतम्। प्राणस्य सन्निधानार्थ मुद्धरत्येव तत्समम्॥ ४॥
प्रदायालोकयित्वा तु गतप्राणैर्विनाकृतम्। ततस्तत्पात्र मुद्धृत्य तदुक्तविधिनार्पयेत्॥ ५॥
गन्धपुष्पाक्षतैः सम्यगावहेच्चसरस्वतीम्। तीर्थदेशस्य सिद्धयै च ब्रह्मणश्चापि तृप्तये॥ ६॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

ब्रह्मा का हाथ पकड़कर वरण देकर उन्हें बैठाऐं प्रणीतापात्र को आदरपूर्वक उत्तर दिशा में रखना चाहियें॥ १॥ बायें हाथ में प्रणीतापात्र को पकडें। दाहिने हाथ से ढकें। एवं नाम के बराबर रखकर फिर उसे नीचे कुशाओं पर रखना चाहिये॥ २॥ प्रणीता पात्र सोम देवात्मक एवं उसमें विद्यमान जल अग्नि देवता, बायें हाथ सोम देवात्मक एवं दाहिने हाथ अग्निदेवतात्मक अतः सोम एवं अग्नि देवात्मक हाथों से उसे उठाना चाहिये॥ ३॥ उसे नाम तक उठाना चाहिये क्योंकि नाक प्राणस्थान है। उस जल में प्राण नहीं है। अतः जल में प्राण का सञ्चार हो इसलिए नाम के बराबर रखना चाहिये॥ ४॥ उसे नाक के बराबर लाकर पात्र को दोखना चाहिये। नाक के बराबर न ले जाने पर उस जल में प्राण नहीं रहता। अतः निरर्थक हो जाता है॥ ५॥ तीर्थ देश उत्तर दिशा की सिद्धि के लिए एवं ब्रह्मा जी की तृप्ति के लिए गन्ध पुष्प एवं अक्षताओं से सरस्वती को आवाहन करना चाहिये॥ ६॥

ते पवित्रे चरुपात्रे निधाय यज्ञस्य प्रधान देवता मन्त्रेण प्रोक्ष्य अग्नौ अधिश्रितय उत्तरे निधाय तत् पवित्रं गृहीत्वा।

प्रणीता पात्र से निकाले हुए पवित्र को चरुपात्र के ऊपर रखकर **यज्ञ के प्रधान देवता मन्त्र से पोक्षण कर अग्नि के ऊपर दिखाकर** उत्तर में रखना चाहिये। फिर उस पवित्र को लेकर,

ततस्ते पवित्रे आज्यपात्रे निधाय तत् पात्रं स्वपुरतः संस्थाप्य तस्मिन् आज्यमासिच्य अग्नेरुत्तरतः स्थितांगारान् भस्मना सह अग्ने रुदक् परिस्तरणात् बहिः निरुह्य तेषु आज्यपात्रम् अधिश्रित्य ज्वलता दर्भोल्मुकेन अवज्वल्य

अङ्गुष्ठ पर्व मात्रं प्रक्षालितं दर्भाग्र द्वयं आज्ये प्रक्षिप्य पुनः ज्वलता तेनैव दर्भोल्मुकेन चरुणा सह आज्यंत्रिः पर्यग्निकृत्वा तदुल्मुकमपास्य अपः स्पृष्ट्वा तत्रस्थ मेवाज्यं। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

चरु पात्र से निकाले हुए पवित्र को आज्यपात्र पर रखें। उस पात्र को अपने सामने रखें। उस में घी डालें। अग्नि के उत्तरपरिस्तरण के बाहर रखें। उस पर घी का पात्र रखें एक कुश को जलते हुए उस पर रखें। एक अंगुल प्रमाण धुले हुए दो कुशाग्रों को घी के पात्र में डालें। जलते हुए कुश से चरु पात्र एवं आज्यपात्र को तीन बार प्रदक्षिणा करायें फिर उसे वायव्य दिशा में डाल दें। हाथ धो लें। घी के पात्र को खीचते हुए उसे और भी उत्तर में ले जाना चाहिये। अंगारों को वापस होम वेदी में डालें। हाथ धो लें। उस घी को मन्त्रों से उत्पवन करना चाहिये।

उत्पवनं नाम शुद्धीकरणाम्। शुद्धीकरण क्रिया को उत्पवन कहते हैं। सवितुष्ट्वाहिरण्यस्तूपः सवितापुर उष्णिाक्। आज्यस्योत्पवने विनियोगः।

ॐ सवितुष्ट्वाप्रसवउत्पुनाच्छिद्रेण पवित्रेण वसोः सूर्यस्य रश्मिभिः॥ *(यजुर्वेद)*

इति मन्त्रेण एकश्रुत्या उच्चारितेन एकवारं द्विस्तूष्णीं उत्तानपाणिद्वय अङ्गुष्ठ उपकनिष्ठिकाभ्यां उंतयोरससृष्ट गृहीताभ्यां उत्तानपाणिद्वय अङ्गुष्ठ उपकनिष्ठिकाभ्यां अंतयोरससृष्ट गृहीताभ्यां उदगग्राभ्यां पवित्राभ्यां प्रागुत्पूय ते पवित्रे अद्भिः प्रोक्ष्य अग्नौ प्रहरेत्। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

इस एक स्वरी मन्त्र को कहते हुए एक बार हथेलियों को उपर किये दोनों हाथों के अंगुष्ठ एवं अनामिका अंगुलियों में पवित्र के दो कुशों को अलग-अलग (परस्पर न मिलें) ऐसे पकड़ना चाहिये। उनका अग्रभाग उत्तर की ओर होना चाहिये। पहले उन्हें पश्चिम से पूर्व की ओर घी में जाकर ऊपर उठायें। फिर दो बाद इसी क्रिया को बिना मन्त्र कहते हुए दोहरायें। फिर उन पवित्र कुशों को जल में प्रोक्षण कर अग्नि में डालना चाहिये।

प्रोक्षण-उत्तानेन तु हस्तेन कर्तव्यं प्रोक्षणं भवेत्। *(आश्वलायन स्मृति)*

हथेली में जल लेकर उसे सींचना प्रोक्षण कहलाता है।

अवोक्षणं-अवाचीनेन हस्तेन कर्तव्यं स्यादवोक्षणम्॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

जल लेकर हथेली को नीचे करके जल सींचना अवोक्षण कहलता है।

अभ्युक्षण-मुष्टीकृतेन हस्तेन कृतमभ्युक्षणं भवेत्। *(आश्वलायन स्मृति)*

मुट्ठी में जल भरकर हथेली को नीचे करके जल सीचना अभ्युक्षण कहलाता है।

पर्युक्षणं-तिर्यग्भूतेनहस्तेनकृतंपर्युक्षणं तथा। *(आश्वलायन स्मृति)*

हाथ को तिरचा करके चारों ओर सींचना पर्युक्षण कहलाता है। अथाग्नेः पश्चात् परिस्तरणाद् बहिः आत्मनो अग्रतो भूमिं प्रोक्ष्य तत्र बर्हिः सन्नहनीं रज्जुं उदगग्रां प्रसार्य तस्यां बर्हिः प्रागग्रमुदगपवर्ग अविरलं आस्तीर्य तस्मिन् आज्यपात्रं निधाय स्रुवादि संमार्जयेत्।

उसके पश्चात् अग्नि के पश्चिम में परिस्तरण के बाहर अपने आगे भूमि की प्रोक्षण कर वहाँ बर्हिष् को बाँधी-हुई रज्जु (रस्सी) को उत्तराभिमुख खोलकर रखें। उस बर्हिष् को बाँधी-हुई रज्जु रस्सी को उत्तराभिमुख खोलकर रखें। उस बर्हिष को पूर्वाग्र रखते हुए उत्तर की ओर मोटे-बिछाना चाहिये। (बीच में जगह खाली न रहना चाहिये।) फिर उस बर्हिष पर घी का पात्र रखें।

इसके बाद स्रुवादियों का संस्कार करना चाहिये—**दक्षिणेन हस्तेन स्रुक् स्रुवो गृहीत्वा सव्येन कांश्चिद्दर्भानादाय सहैवाग्नौ प्रताप्य स्रुचं निधाय स्रुवं वामहस्तेगृहीत्वा दक्षिणहस्तेन स्रुवस्य बिलं दर्भाग्रैः प्रादक्षिण्येन प्रागादि प्रागपवर्गं त्रिः संमृज्य अधस्ताद्दर्भाग्रैः एव अभ्यात्मं बिलपृष्ठं त्रिः संगृज्य ततो दर्भाणां मूलैः दंडस्याधस्ताद् बिलपृष्ठादारभ्य यावदुपरिष्टाद् बिलं तावत् त्रिः संमृज्य अद्भिः प्रोक्ष्यं स्रुव निष्टप्याज्य स्थाल्या उत्तरतः स्रुगसंसृष्टं निधाय उदकं स्पृष्ट्वा तैरेव दर्भैः जुहूं च एव मेव संमृज्यद्युत्तरतोश्रुवाधुन्तरो निधाय दर्भानद्भिः क्षालयित्वा अग्नौ अनु प्रहरेत्।** *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

दाहिने हाथ में स्रुक स्रुवो को पकडकर, बाये हाथ में कुछ कुशों को लेकर, दोनों को अग्नि में थोड़ा से गरमायें, स्रुक् को नीचे रखें। स्रुव को बायें हाा में लवें, एवं कुशों को दाहिने हाथ में लेवें। कुशाग्र से स्रुवा के जो बिल (खड्डा) है उसे पूर्व से प्रदक्षिणाकार में तीन बार घुमाकर स्वच्छ करें। स्रुव को

अपने ओर कर स्रुव के निचले भाग को भी तीन बार कुशाग्र से स्वच्छ करें। इसके पश्चात् कुश के निचले भाग से स्रुव के पीछे बिलपृष्ठ से (गड्डे से) अगले भाग (बिल) तक तीन बार घूमाकर स्वच्छ करना चाहिये। जल से प्रोक्षण करें। आत्यस्थाली के उत्तर में स्पर्श न हो ऐसे रखें। फिर पानी से हाथ धो लें। फिर उन्हीं कुशों को दाहिने हाथ में लेवें। बाये हाथ में स्रुक को लें।
कुशाग्र से सुक् के जो बिल (गड्डा) है उसे पूर्व से प्रदक्षिणा कार में तीन बार घुमाकर स्वच्छ करें। स्रुक् को अपने ओर कर स्रुक् के निचले भाग को भी तीन बार कुशाग्र से स्वच्छ करें। इसके पश्चात् कुश के निचले भाग से स्रुक के पीछे बिलपृष्ठ से (गड्डे) अगले भाग (बिल) तक तीन बार घुमाकर स्वच्छ करना चाहिये। जल से प्रोक्षण करें। आज्यस्थाली के उत्तर में रखे स्रुवा के उत्तर में स्रुक को रखें। फिर उन कुशों को जल से धोकर अग्नि में डाल दें।

यहाँ पर स्रुव एवं स्रुक् का संस्कार पूर्ण हुआ।

चरु शुद्धि—ततः सुशृतं स्रुव गृहीतेनाज्येन अभिघार्य उदगुद्वास्य अगन्याज्ययोर्मध्येन नीत्वा आज्यात् दक्षिणतो बर्हिषि सोत्तरमासाद्य पुनरप्यभिघार्य नवाभिघार्य (परिधीन् ऊर्ध्व समिधौ अग्नौ निधाय।) पक्व चरु पात्र में स्थित चरु को घी से अभिघार्य (सिञ्चन) करके उत्तर में रखना चाहिये। अग्नि एवं घी पात्र के बीच में इसे लाना चाहिये। आज्यपात्र के दक्षिण में बर्हिष् पर इसे रखकर घी से अभिघार करना चाहिये। न करने पर भी कोई बाधा नहीं है। (परिधि को तीन ओर रखकर ऊर्ध्व समित् को अग्नि में डालकर।)

प्रमाण श्लोक—**रक्षार्थ तन्मुखे दर्भान् निधाय प्राक्स्थिते कृते। पवित्रे चरुपात्रस्थे करोति सुविचक्षणः ॥ १ ॥**
निमन्त्रितानां देवानां प्रागिध्माधानकर्मणि। निर्वापस्तु बहिष्ठानादन्तराह्वानवद्भवेत् ॥ २ ॥
विसृम्भणार्थकं तेषां भीतानामात्मवैरतः। अन्तर्धाय पवित्रेतु चरोः पात्रे तु निर्वपेत् ॥ ३ ॥
व्रीहीन्वा तण्डुलान् वाथ पाकयज्ञेषु मन्त्रकृत्। चतुरश्चतुरो मुष्टीन् निर्वपेत् प्रतिदेवताः ॥ ४ ॥
एका तद्देवतानां स्यात् तत्पत्नीनां परा भवेत्। तत् पुत्राणां भवेदेका तद् भृत्यानां तथा परा ॥ ५ ॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

रक्षा के लिए प्रणीता पात्र के ऊपर जो सम्मुख हो उस पर रखें पवित्र को उठाकर चरु पात्र के ऊपर रखें ॥ १ ॥ इध्माधान (समित् के कट्टा को देने से) पहले आवाहन किये गये देवताओं को अन्वाधान में पवित्र रखकर निर्वाप करना चाहिये। बाहर आये देवताओं को अन्दर बुलाना चाहिये ॥ २ ॥ अपने शत्रु

दैंत्यों से भत देवताओं के विश्वास के लिए चरुपात्र में पवित्र रखकर निर्वाप करना चाहिये। दैत्य पवित्र से डरते हैं एवं कुशों के पास नहीं आते हैं॥ ३॥ चरु यज्ञ में धान या चावल को चार-चार मुष्टि प्रति देवता के हिसाब से डालना चाहिये। (अल्प प्रमाण में होने पर यह विधि है। अधिक प्रमाण में होने पर यह आवश्यक नहीं है)॥ ४॥ एक मुष्टि देवता के लिए, एक उनकी पत्नी के लिए, एक पुत्रों के लिए एवं एक एक सेवकों के लिए मिलाकर चार मुष्टि होती हैं॥ ५॥

चरु पात्र प्रोक्षण प्रमाण श्लोक—शुद्ध्यर्थं प्रोक्षयेत् तद्वत् प्राग् प्रणीतास्थितैर्जलैः। पूर्ववत् सपवित्रेण दक्षिणेन करेण तु॥ १॥
चतुर्वारं निर्णिजति तण्डुलान् पात्रगान् शुभान्। स्राव्यपात्रे तु तत्पात्रमग्नौ चर्वां निधापयेत्॥ २॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

तण्डुल (चावल) शुद्धि के लिए प्रणीता जल से दाहिने हाथ में पवित्र रखकर चार बार प्रोक्षण करना चाहिये। चार बार धोना चाहिये॥ १॥ चरुपात्र में स्थित चावलों को पानी मिलाकर पकने के लिए रखना चाहिये॥ २॥

प्रदेशमात्रमुदित मेक्षणं यज्ञियं भवेत्। रक्षार्थं पाकसिद्धयै च चरोः पात्रे निधापयेत्॥ ३॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

१२ अंगुल लम्बे यज्ञीय वृक्ष के एक समित् (उदा.) पीपल को पाक सिद्धि एवं रक्षण के लिए चरुपात्र के ऊपर रखना चाहिये॥ ३॥

जलं तत् पूर्णपात्रस्थं तीर्थोदत्वात् चरौ क्षिपेत्। यज्ञीयेन पवित्रेण स्रुगादिभ्यः परेण तत्॥ ४॥
प्रमाण लक्षणैर्युक्तं स्रुव ताम्रदिभिस्तु यत्। यदि यज्ञीय वृक्षाणां पर्णानि स्युः स्रुगादिषु॥ ५॥
चत्वारः क्षीरिणो वृक्षाः द्वौ पलाशौ विकंकतः। खदिरश्च शमी बिल्वौ यज्ञीयास्तरवः स्मृताः॥ ६॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

पूर्ण पात्र में विद्यमान जल तीर्थ स्वरूप होने के कारण चरु में उसी को डालें। यज्ञीय वृक्षों से स्रुक् आदियों को बनाना चाहिये या ताम्र से भी बना सकते हैं। यज्ञीय वृक्षों के पत्ते से भी स्रुक् स्रुवादि बना सकते हैं॥ ४-५॥ दो प्रकार के पलाश, विकंकत, खदिर, शमी एवं बेल (बिल्व) ये यज्ञीय वृक्ष कहलाते हैं। इनमें दूध नहीं होते है। दूध युक्त-पीपल, वट, औदुम्बर, वट का एक भेद प्लक्ष ये चार दूध युक्त यज्ञीय वृक्ष है॥ ६॥ **इन यज्ञीय वृक्षों के पात्र श्रेष्ठ माने जाते हैं।**

शस्तानीमानि पात्राणि चैतेषां यज्ञ कर्मसु। अश्वत्थोदुम्बरौ श्रेष्ठौ पात्राणां ग्रहणे मतौ ॥ ७ ॥
ऐतेषां च पलाशौ द्वौ खदिरश्चापि शस्यते। शमी चौदुम्बरश्चापि पूर्वालाभे तु शस्यते ॥ ८ ॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

यज्ञीय पात्र निर्माण के लिए अश्वत्थ एवं औदुम्बर की लकड़ी श्रेष्ठ है, दो प्रकार पलाश एवं खदिर भी ठीक है। इनके न मिलने पर शमी एवं औदुम्बर भी ठीक है।

यस्माच्चरुरसंपातात् न बहिः स्यन्दितु व्रजेत्। स्यन्दने त्वपि संप्रीतिर्नदेवानां भविष्यति ॥ ९ ॥
यदि विष्यन्दते कुर्यात् निष्कृतिं यान्ति ते मुदं। तस्य होमस्य चाद्यन्ते घृतैः स्कन्नाय मन्त्रवत् ॥ १० ॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

चरु को पकाते समय उबलकर बाहर आकर अग्नि पर नहीं पड़ना चाहिये। गिरने से देवताओं को सन्तोष नहीं होता है। प्रायश्चित्त करने से प्रसन्न होते है। प्रधान आहुति से पहले एवं अन्त में घी की आहुतियाँ देना चाहिये। यदि हुआ तो दो बाद घी की आहुति दे देवें ॥ ९-१० ॥ यह स्कन्नाहुति कहलाता है।

घी के पात्र के संस्कार का प्रमाण श्लोक—

शन्ते सशब्दे हविषि घृतं गोर्वस्त्र गाळितम्। संस्रावयेदाज्यपात्रे सपवित्रे पुरस्थिते ॥ १ ॥
अग्नेः प्रागुत्तरे भागे सांगारं भस्म तत् पृथक्। विभज्य तस्मिन्नंगारे घृतपात्रं विनिक्षिपेत् ॥ २ ॥
पृथक् पाकतव संसिध्यै हविषोऽस्य घृतस्य च। तदग्निना तत् क्रियते त्वशांतत्वाय भस्मवत् ॥ ३ ॥
ज्वालामदृष्ट्वा पक्वस्य पाकस्यार्थोर्ध्वगामिनीं। हविषा नातितृप्तिः स्यात् देवानां होमकर्मणि ॥ ४ ॥
तस्माच्च रक्षासां हत्यै तत्स्थानां च यदृच्छया। होता प्रज्वाल्य दर्भाग्र माज्यस्यैव प्रदर्शयेत् ॥ ५ ॥
हतानां आज्य संस्थानां दर्भाग्राग्नेः प्रभावतः। शुद्धते स्वर्शनादग्रे घृते क्षिपति दर्भयोः ॥ ६ ॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

चरु बनने के बाद, गाय के घी को वस्त्र से शोधर करना चाहिये, उस घी को पूर्वाग्र कुशा के ऊपर अपने सम्मुख घी के पात्र में डालें ॥ १ ॥ होमाग्नि के

ईशान भाग में भस्म सहित अंगारो को अलग करना चाहिये। उस पर घी के पात्र को रखना चाहिये ॥ २ ॥ हविस् एवं घी अलग होना चाहिये। चरु निर्माण समय में अग्नि ज्वालाये दिखना चाहियें, न दिखने पर देवता प्रसन्न नहीं होत हैं। अथात् धुऐं में नहीं गरम करना चाहिये ॥ ४ ॥ वहाँ विद्यमान राक्षसों के नाश के लिए कुशाग्नि को घी को दिखाना चाहिये ॥ ५ ॥ कुशाग्र कि अग्नि के प्रभाव से नाश हुए राक्षसों के संपर्क से अशुचि घी को पवित्र करने के लिए दो कुशाग्रो को घी में डालना चाहिये ॥ ६ ॥

पर्यग्निकरण प्रमाण श्लोकः-दैत्या हविर्मुखा नाम तदाऽऽयास्यन्ति साहसात्। तेषां निरसनार्थाय पर्यग्निकरणं त्रिशः ॥ ७ ॥
सपवित्रं घृतं तीर्थे समुद्वपति तद् बहिः। तदग्निमग्नौ प्रागेतमेकीकुर्यात् सभस्मना ॥ ८ ॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

हविर्मुख नामक दैत्य साहस से वहाँ आते हैं। उनके निराकरण के लिए तीन बार पर्यग्निकरण (कुशाग्नि) करना चाहिये ॥ ७ ॥ पवित्र समेत घी के पात्र को तीर्थ देश में रखना चाहिये। भस्मसहित अंगारों को अग्नि में मिलाना चाहिये ॥ ८ ॥

घी के उत्पवन (शुद्धिकरण) के प्रमाण श्लोक—

रक्षोहाग्नेस्तु शुद्ध्यर्थं स्पर्शनात् संस्पृशेदपः। तत उत्पवनं कार्यं घृतस्य प्रत्यगुत्तरे ॥ १ ॥
अमेध्य भक्षणान्नित्यं गवामाज्येषु यद्भवेत्। तद्दोषपरिहारार्थं सम्यगुत्पवनं चरेत् ॥ २ ॥
आविशान्त्यपि तावच्च पुनर्दैत्या घृतं स्थितं। क्रूरा यज्ञप्रहर्तारश्चैतास्तेन विनिर्णुदेत् ॥ ३ ॥
सुधाहारा सुराः सर्वे सुधातृप्त्यै घृतस्ययत्। सवितुष्ट्वेति मन्त्रेण त्रिरुत्पवनमिष्यते ॥ ४ ॥
दर्भाभ्यामुदगग्राभ्यां प्राग्वीर्यं विसृजन्निव। साङ्गुष्ठोपकनिष्ठाभ्यां शनैरुत्पवनं चरेत् ॥ ५ ॥
असंस्पृष्टे यथान्योन्यं तथा ग्राह्ये पवित्रके। तयोर्मध्यात् सुधायास्तु मथनादिव संभवः ॥ ६ ॥
अपृथक् संगृहीताभ्यां ताभ्यां प्राक् प्रोक्षणी जलं ।ग उत्पुनाति विशुद्ध्यर्थं वीर्योत्सिक्ता भवन्ति हि ॥ ७ ॥
तेऽग्रावनुप्रहरति पवित्रे प्रोक्ष्य वारिणा। मथनत्वात् शुचेः शुद्ध्यै दद्यात् चापउपस्पृशेत् ॥ ८ ॥

पृथिव्या अपि ते धर्तुमशक्यत्वात् पवित्रके। अग्नौ क्षिपति ते होता प्रागग्रे तु प्रभावतः॥ ९॥
ततो बर्हिस्समाधाय रज्जुं विसृस्य चात्मनः। पुरतः पश्चिमे भागे तूदगग्रांस्तृणात्यधः॥ १०॥
तेषु बर्हिरुदक्संस्थं प्रागग्रं विकिरेत् ततः। बर्हिष्युत्तरतः पात्रमाज्यस्यापि विनिक्षिपेत्॥ ११॥
अदन्त्येवौघशीर्गावो गव्यस्य च घृतस्य च। एकत्वात् बर्हिषस्तस्मिन् नाज्यपात्रं विनिक्षिपेत्॥ १२॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

राक्षसों से ग्रस्त अग्नि कि शुद्धि के लिए जल को स्पर्श करना चाहिये। अनन्तर नैऋतय में घी का उत्पवन करना चाहिये (शुद्धीकरण)॥ १॥ गायें प्रतिदिन अनेक खाने के अयोग्य वस्तुओं को खाते है। इस दोष परिहार के लिए घी सही तरीखे से उत्पवन (शुद्धीकरण) करना चाहिये॥ २॥ दैत्य पुनः पुनः घी में प्रवेश करते हैं, ये यज्ञ को नाशकरने वाले है एवं क्रूर है इसलिए इनको दूर करना चाहिये॥ ३॥ देवता अमृत पीने वाले है, अमृत पीने के बाद तृप्ति के लिए घी पीते हैं। इस घी को अमृत बनाने के लिए ''सवितुष्ट्वा'' इस मन्त्र से तीन बार उत्पवन करना चाहिये॥ ४॥ उत्तर की ओर अग्रवाले पवित्र (दो कुशों को) अंगुष्ठ एवं अनामिका अंगुलियों में परस्पर अलग पकडकर पूर्वाभिमुख उन कुशाग्रों से घी में उत्पवन करना चाहिये। घी में शक्ति सञ्चार की कल्पना करनी चाहिये। उनके बीच में मंथन से ऋदो कुशों से घी को हिलाने से अमृत की उत्पत्ति होती है॥ ५-६॥ प्रोक्षणी जल भी इसी प्रकार पवित्र किया गया है। इस प्रक्रिया से शुद्ध होकर वीर्यवान् बनते हैं॥ ७॥ जल से प्रोक्षणकर उन कुशों को (पवित्र) अग्नि में डालना चाहिये। मंथन करने से जो अशुद्धि हुई उसका परिहार के लिए जल से हाथ धा लें॥ ८॥ इतना अधिक पवित्र (शुद्धीकरण) कार्य करने वाले उन कुशों को (पवित्र) भूमि भी सहने में असमर्थ है। अतः उसे भूर्वाभिमुख कर अग्नि में डालना चाहिये॥ ९॥ बर्हिष् को हाथ में लेकर उसका रजजू (रस्सी) को उततराभिमुख रखकर खोले। इसे अपने आग्र यानि पश्चिम दिशा में करें। भूमि पर इसे पसारे॥ १०॥ इन बर्हिष् का अग्र पूर्वाभिमुख हो, इसे दक्षिण से उत्तर की ओर पसारें। उस पर उत्तर में घी का पात्र रखें॥ ११॥ गाये औषधियों को खाते हैं। उन का आहार बर्हिष् (घास) अतः बर्हिष् एवं घी एक ही परिवार के है। अतः बर्हिष् के ऊपर घी का पात्र रखना चाहिये॥ १२॥

स्रुक् स्रुव शुद्धीकरण का प्रमाणश्लोक—

दर्भास्तु वामहस्तेन स्रुक् स्रुवौ दक्षिणेन तु। गृहीत्वा निष्टपत्यग्नौ युगपत् होमकर्मणि॥ १॥

तेषां भूमौ स्थितानां प्रागसुरावेशशंकया। दर्भादीनां तु निस्सृत्यै निष्टपत्येव कर्मकृत्॥ २॥
माययान्तः प्रविष्टानां जुह्वास्तस्याः स्रुवस्य च। असुराणां विनाशार्थं कुशमार्जनमिष्यते॥ ३॥
त्रिःपवित्रस्य तस्याग्रं दर्भाग्रैस्तैः प्रदक्षिणम्। दर्भमध्यैर्बिलस्याग्रं मूलाद्यन्तं तदाचरेत्॥ ४॥
दर्भमूलैर्बिलादर्वाक् दण्डमूलं तथा त्रिशः। कृत्वा पृष्ठे तदग्रादि मूलान्तं सकृदारभेत्॥ ५॥
दैत्य बाधा समुद्भूत दोष निर्हरणायतु। पुनर्निष्टप्य चाज्येस्मिन् स्रुव होता निधापयेत्॥ ६॥
एवं जुहूँ च संमृज्य यत्स्रुवेण अभिघारितम्॥ ७॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

बायें हाथ में कुशों को पकड़कर दाहिने हाथ में स्रुक्एवं स्रुव को पकडे। एककाल में सभी को अग्नि में तपाना चाहिये॥ १॥ भूमि पर रहने पर असुरों के प्रवेश भय से हाथ में पकड़ना चाहिये। कुशों से एवं स्रुक् स्रुव से असुर निवारण के लिए उन्हें अग्नि में तपपाना चाहिये॥ २॥ स्रुक एवं स्रुव में माया से प्रवेश करने वाले असुरों का निवारण के लिए कुशों से उन्हें शुद्ध करना चाहिये॥ ३॥ स्रुव के अग्र को (बिल) तीन बार कुशों से प्रदक्षिणाकार में शुद्ध करना चाहिये। कुशों के मध्य से उपरिभाग को स्वच्छ करें। स्रुव के दण्ड को कुश के मूल से तीन बार स्वच्छ करना चाहिये॥ ४॥ बिल के नीचे से स्रुव के पीछे तक एवं स्रुव के बिल पृष्ट से बिल का अग्रभाग तक तीन बार स्वच्छ करें॥ ५॥ दैत्य बाधा निवारण के लिए पुनः स्रुव को अग्नि मे सेकना चाहिये। घी के पात्र में उस स्रुव को रखें॥ ६॥ स्रुक् का भी इसी प्रकार शुद्धीकरण करना चाहिये। स्रुव के चरु में अभिधर्य घी डालना चाहिये। सुक्र को उत्तर में रखना चाहिये॥ ७॥

चरु संस्कार प्रमाण श्लोकः—करोत्यशब्दे हविषि पक्कोदस्थेऽमृताप्तये। प्राक् कार्यत्वात् स्रुवेणात्र प्राक् संमार्जनमिष्यते॥ १॥
दग्धे मृत्युमपक्के हृद्रोगमिष्यति ते भयम्॥ २॥
विद्वेषं च विषादं च शशब्देत्ववरोपिते। मथनात् कलहं चापि स्वजनेभ्यः समृच्छति॥ ३॥
तीर्थीकरण संसिद्ध्यै तीर्थदेशे निधास्यति। आरोप्य तस्मिन् हविषि पुनराज्यं प्रसिञ्चति॥ ४॥

ऊर्ध्वं श्येना यथाकाशे विचरन्त्यामिषेच्छया। तथाऽसुरा दुरात्मानः सञ्चरन्ति जिघृक्षया॥ ५॥
आज्याभिघारणं तस्मात् तीर्थस्थे हविषि स्मृतम्। अग्नेराज्यस्य मध्येन नयनं च विशिष्यते॥ ६॥
यदा नीत्वाऽसुरभ्यात् पुनराज्येन सिञ्चति॥ ७॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

चरु के शब्द (पकने का) बन्द होने के बाद उसे उत्तर में रखना चाहिये। स्रुव का कार्य पहले आने के कारण पहले उसका शुद्धीकरण होता है॥ १॥ चरु जल जाने पर मृत्यु, कच्चे रहने पर हृदय रोग होता है॥ २॥ यदि पकते हुए शब्द करते हुए चरु को उतारने पर विहेष एवं विवाद होता है। चरु मथने पर बन्धुओं से कलह होता है। उतारने समय मथन नहीं करना चाहिये॥ ३॥ उतारकर उसे तीर्थदेश में रखना चाहिये। वहाँ रखकर उसमें घी डालना चाहिये॥ ४॥ मांस के लिए जैसे गिद्ध घूमते हैं, सैसे चरु को लेने के लिए राक्षर तैयार रहते हैं। इसलिए तीर्थदेश में स्थित चरु को घी का सिञ्चन करना चाहिये। अग्नि एवं आज्यपात्र के बीच से लाकर दक्षिण में चरु पात्र को रखना चाहिये॥ ५-६॥ पुनः एक बार रखने के बाद असुरों के भय से घी का सिञ्च न करना चाहिये॥ ७॥ इस प्राकर तीन बार घी का अभिघार होता है।

परिधि प्रकरण प्रमाण श्लोक—ऊर्ध्वेध्मकानुयाजाश्च त्रयः परिधयः पुरा। इध्मैः सहैव बध्यन्ते प्रागुक्तात्मान एव ते॥ १॥
हुतस्य होष्यमाणस्य हविषः पालनाय च। परितः परिधीयन्ते त्रयः परिधयस्तथा॥ २॥
पश्चिमे वसवो रुद्रा दक्षिणे चोत्तरे स्थिताः। आदित्यास्तु क्रमात्तेवै निधीयन्ते तथा त्रयः॥ ३॥
रौद्रस्याद्द क्षिणास्तस्मात् पश्चिमोपरि दक्षिणः। करोति मूलं मूलेन चाग्रं मूलोपरि स्थितम्॥ ४॥
आदित्यः पश्चिमाग्राधो मूलं प्रागग्रमिष्यते। उत्तरं पश्चिमत्वात्तु तेषु तांश्च समावहेत्॥ ५॥
मनसा कल्पयेत् पूर्वं प्रजापत्यं विचक्षणः। दुर्ग्रहत्वात् तत् क्रियते तत् कोणादेव सिद्धयति॥ ६॥
अनुयाजं सरस्वत्यां निधायोर्ध्वेध्माकावुभौ। शृङ्गत्वसिद्धये वह्नेः क्षिपेदुपरि चोच्छ्रितौ॥ ७॥
प्राग्जातौ दक्षिणौ शृंगौ पश्चात् जातौ तदुत्तरौ। प्राग्जातोपरि जातत्वात् उत्तरः परिधिः स्मृतः॥ ८॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

होमवेदी के चारों ओर बिछाने वाला परिधि कहलाता है। ऊर्ध्व समित् दो (ऊपर की ओर उठे हुए) १५ इध्म समित्, अनुयाज समित् एक, तीन परिधि समित्, कुल मिलाकर २१ हुए। इन छः को १५ इध्म के साथ मिलाकर बाँधना चाहिये॥ १॥ पहले किये कर्मों का एवं आगे होने वाले सभी होम कर्मों की रक्षा के लिए तीन परिधि रखना चाहिये॥ २॥ पश्चिम दिशा के परिधि के वसु देवता, दक्षिण दिशा के परिधि के रुद्र देवता, उत्तर दिशा के परिधि के आदित्य देवता है। इन्हें तीन दिशा में रक्षा के लिए रखते हैं॥ ३॥ पश्चिम दिशा के परिधि के मूल पर दक्षिण दिशा के परिधि का मूल रखना चाहिये। पश्चिम दिशा के परिधि के अग्र को उत्तर दिशा के मूल पर रखना चाहिये॥ ४॥ उत्तर दिशा के परिधि का अग्र पूर्वाभिमुख होना चाहिये क्योंकि यह आखरी है। उन परिधियों पर वसु रुद्र आदित्यों को आवाहन करना चाहिये॥ ५॥ पूर्व में प्रजापति को मन में कल्पना करनी चाहिये। ब्रह्मा जी का मूर्तिरूप न होने के कारण स्मरण करना चाहिये॥ ६॥ अनुयाज समित् को सरस्वती के पास रखें। प्रणीता पात्र में सरस्वती का आवाहन किये हैं। ऊर्ध्व दो समिधों को वह्नि को शृंगत्व सिद्धि के लिए सींच के रूप में ऊर्ध्वमुख अग्नि पर रखना चाहिये॥ ७॥ अग्नि के दक्षिण के दो सींग पहले आये थे। उत्तर के सींग बाद में आये थे। आद में पैदा होने के कारण उत्तर की सींच श्रेष्ठ है॥ ८॥

आगे प्रयोग विधि है—एकादशाङ्गुलिमिते देशे गंधाक्षतपुष्पैः अग्निं समन्त्रं अर्चयेत्। चत्वारिशृंगा इति मन्त्रेण अग्नौ शृंङ्ग प्रक्षेपणे विनियोगः स्थण्डिल (होम वेदी से) ११ अंगुल बाहर गंध अक्षत पुष्पों से अग्नि को मन्त्रसहित पूजन करें। चत्वारि शृङ्गा इस मन्त्र से अग्नि में शृंग समित् को छोडे। **विश्वानि न इति तिसृणां आत्रेयो वसुश्रुतोग्निस्त्रिष्टुप् द्वयोरर्चने अन्त्याया उपस्थाने विनियोगः।**

ॐ विश्वा॑नि नो दु॒र्गहा॑ जातवेदः। पूर्व में पूजन करें। ॐ सिंधुनना॒वादु॑रि॒तातिं॑पार्षि॥ आग्नेय में पूजन करें

ॐ अग्ने॑ अत्रि॒वन्नम॑सागृणा॒नः॥ दक्षिण में पूजन करें। ॐ अ॒स्माकं॑ बोध्यवि॒ता॒त॒नूनां॑॥ नैर्ऋत्य में पूजन करें। (ऋग्वेद ५.४.९)

ॐ यस्त्वा॑हृदाकी॒रिणा॒मन्यमानः॥ पश्चिम में पूजन करें। ॐ अमं॑र्त्यं॒ मर्त्यो॒ जोहं॑वीमि॥ वायव्य में पूजन करें।

ॐ जातं॑वेदो॒ यशो॑ अ॒स्मासुं॑धेहि॥ उत्तर में पूजन करें। ॐ प्रजाभिं॑रग्ने अमृत॒त्वमं॑श्यां॥ ईशान में पूजन करें। (ऋग्वेद ५.४.१०)

ॐ यस्मै॒त्वं सु॒कृते॑ जातवेदउलो॒कमं॑ग्नेकृ॒णवं॑स्योनं। अ॒श्विनं॒ स पु॒त्रिणं॑ वी॒रव॑न्तं॒ गोमं॑न्तं र॒यिंनं॑शते॒स्वस्ति॥ (ऋग्वेद ५.४.११)

यह मन्त्र कहकर उपस्थान (प्रार्थना) करें। ॐ अग्नये नमः। ॐ जानवेदसे नमः, ॐ हुताशनाय नमः। इन मन्त्रों से अग्नि का पूजन करें। ॐ आत्मने

नमः, ॐ अन्तरात्मने नमः, ॐ परमात्मने नमः। इन मन्त्रों से आत्मा का पूजन करें। हाथ धो लें। **ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ वसिष्ठाय नमः। ॐ त्रयीवद्यात्मने नमः।** इन मन्त्रों से ब्रह्मा का पूजन करें।

इध्म बन्धन रज्जुं इध्म स्थाने निधाय पाणिना इध्ममादाय मूलमध्याग्रेषु स्रुवेण त्रिरभिधार्य मूल मध्ययो र्मध्यभागे गृहीत्वा। सरज्जुं अनुयाजं प्रणीतायां प्रतिष्ठाप्य इध्म को हाथ में लेवें। उसके रज्जु (रस्सी) को खोलें। रज्जू को अनुयाज समित् के साथ प्रणीता पात्र पर रखना चाहिये। हाथ में लिए इध्यम को मूल, मध्य एवं अग्र में स्रुव से तीन बार घी से अभिधार्य (सिञ्चन) करके, मूल एवं मध्य के बीच में पकड़कर (दाहिने हाथ में)—

अयं ते वामदेवो जातवेदा अग्निस्त्रिष्टुप् इध्म हवने विनियोगः। ॐअयं तइध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्वचेद्धवर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्न द्येन समेधयस्वाहा॥ जातवेदसेग्नये इदं न मम। इन मन्त्रों को कहकर इध्यम को अग्नि में डाल देवें। **इध्यम मूलं स्पृष्ट्वा अपः उपस्पृश्य आघारावाधारयेत्।** इध्ममूल को छूकर हाथ धो लें। आघार होम करें।

अग्नि अलंकार इध्यम हवन के प्रमाणश्लोक—

ततोग्नेर्गं धपुष्पाद्यैः बहिरर्चा विधीयते। अमृतत्वस्य संसिद्ध्यै घृतेनेध्माभिघारणम्॥ १॥
समिद्बन्धनरज्जुं च प्रणीतायामुखेक्षिपेत्। होष्यन् सहानुयाजेन क्षिप्तवान्यत्रासुरं भवेत्॥ २॥
प्रसारिताङ्गुलिर्वाम ऊर्ध्वाग्रो हृदये करः। भवेद् होतुर्मण्डनार्थं होतव्यानां दिवौकसां॥ ३॥ *(आश्वलायन स्मृति)*
अयं तं इति मन्त्रेण मन्त्रार्थं संस्मरन हुनेत्। अन्तर्नयेदादरार्थं आस्ये गोर्दन्तशष्पवत्॥ ४॥
उच्छिष्टस्पृष्टितः शुद्ध्यै जलं स्पृशति वै तदा॥ ५॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

फिर अग्नि को गन्ध पुष्पादियों से होम वेदी से बाहर पूजन करना चाहिये। अमृतत्व प्राप्ति के लिए इध्म समित् पर घी से अभिघार (सिञ्चन) करना चाहिये॥ १॥ समित् बाँधने वाले रज्जु (रस्सी) को अनुयाज समित् के साथ प्रणीता पात्र पर रखना चाहिये। अन्यत्र रखने पर वह आसुर हो जाता है॥ २॥ बायें हाथ के सभी अङ्गुलियों को अलग-अलग करके हथेली को हृदय भाग पर रखना चाहिये। देवताओं के सम्मान के लिए हाथ को ऐसे नमस्कार रूप में रखते हैं॥ ३॥ अयं त इति मन्त्र के अर्थ को स्मरण करते हुए होम करना चाहिये। गाय के मूँह में जैसे घास देते हैं, वेसै इध्म को हाथ के बीच में

रखकर उसे अग्नि में देना चाहिये ॥ ४ ॥ इध्म खिलाने पर उच्छिष्ट होने के कारण हाथ को धो लेवें ॥ ५ ॥

आघार होम

ततः स्रुवेण आज्यं आदाय अग्नेः आयतनस्य वायव्य कोणं आरभ्य आग्नेय कोण पर्यन्तं प्रजापतय इति मनसा स्मरन् स्वाहेति उच्चार्य नैरंतर्येण आज्यधारां अग्नौ इध्मदारूपरि हुत्वा, पुनराज्यं आदाय अग्नेरायतनस्य नैर्ऋतकोणात ऐशानीपर्यन्तं तथैव हुत्वा त्यक्त्वा च, इध्माहुति के बाद स्रुवा से घी लेकर होम वेदी के कोण से (परिधि सन्धि) वायव्य से प्रारंभकर आग्नेय कोण तक प्रजापति को स्मरण करते हुए स्वाहा शब्द को बोलते हुए निरन्तर घी को अग्नि में इध्म के ऊपर डालना चाहिये। **प्रजापतये इदं न मम।** कहकर त्याग करना चाहिये। इसी प्रकार नैर्ऋत्य कोण से (परिधि सन्धि) ईशान कोण पर्यन्त निरन्तर घी की धार डालते हुए प्रजापति को मन में स्मरण कर अग्नि में इध्म के ऊपर डालना चाहिये। **प्रजापतय इदं न मम।** कहकर त्याग करना चाहिये।

आघार होम के प्रमाण—**प्रागुत्तरस्य मूलात्तु जातः पश्चिम दक्षिणः। अंशं वित्तस्य हरति पूर्वं ज्येष्ठाद्यथा परः ॥ १ ॥**

पितुस्तथा भवेत् तूष्णीं होम आघारयोःक्रमात्। तावुभौ सहजातत्वात् दक्षिणादिक् प्रकीर्तितः ॥ २ ॥

प्राग्दक्षिणस्य मूलात्तु जात उत्तर पश्चिमः। तावुभौ सहजातत्वादुत्तरा दिक् प्रकीर्तिता ॥ ३ ॥

तस्मात् प्राग्जातयोः पश्चाद् घृतधारा प्रदीयते। शृङ्गयोर्वर्धयेद्वह्निं पूर्वं पश्चात् प्रजातयोः ॥ ४ ॥

हविर्मन्त्राच्च यज्ञत्वात् तस्मात् तन्मंत्र इष्यते ॥ ५ ॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

उत्तर दिशा के प्रारम्भ से उत्पन्न होने के कारण श्रेष्ठ होता है। पिता के जायदाद में जैसे बड़े बेटे से छोटा भाग लेता है वैसे ही उत्तर के मल श्रेष्ठ है। अर्थात वायव्य से प्रारम्भ करना चाहिये ॥ १ ॥ प्रथम आघार होम वायव्य से आग्नेय पर्यन्त, दूसरा आघर होम नैर्ऋत्य से ईशान्य पर्यन्त करना चाहिये ॥ ३ ॥ श्रेष्ठ होने के कारण पहली घृत धारा वायव्य से करना चाहिये। नैर्ऋत्य बडा होने के कारण उसकी घृतधारा बाद में की जाती है ॥ ४ ॥ यज्ञ में मन्त्र आवश्यक होने के कारण मन में प्रजापति का स्मरण कर दो शृङ्गो को बढाने के लिए आघार होम करते हैं ॥ ५ ॥

चक्षुहोम—ततः स्रुवेणाज्यमादाय अग्नेय स्वाहा इति अग्नेः उत्तर पार्श्वे पूर्व भागे हुत्वा पुनराज्यं सोमय स्वाहा इति अग्नि दक्षिणपार्श्वे तत् समप्रदेशे हुत्वा अघार होम के पश्चात् स्रुवा से घी लेकर "अग्नेय स्वाहा" कहकर अग्नि के उत्तर दिशा के पूर्वभाग में होम करें। फिर स्रुवा में घी लेकर "ॐ सोमाय स्वाहा कहकर अग्नि के दक्षिण दिशा के पूर्वभाग में पहले हवन किये भाग के समानान्तर में होम करें।

यहाँ पर अग्निमुख का पूर्वाङ्ग समाप्त

चक्षुहोम के प्रमाण श्लोक—प्रत्यङ्मुखोपविष्टस्य यथा स्यातां विलोचने। ततोत्तरं भवेत् चक्षुः अग्नेः दक्षिणमुत्तरम्॥ १॥
उत्तरं दक्षिणं चापि हूयते प्रोक्त दक्षिणम्। आज्येनैवोत्तरं पश्चात् इति शास्त्रस्य निर्णयः॥ २॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

अग्नि देव हमारे सम्मुख होने के कारण हमारे विपरीत दिशा में है। उनका दाहिना आँख उत्तर में हैं एवं बायां आँख दक्षिण में है। अतः पहले उत्तर में होम करना चाहिये एवं बाद में दक्षिण में होम करना चाहिये। प्रायः दक्षिण से उत्तर होम होता है। परन्तु यहाँ विपरीत है यह शास्त्र वचन है॥ १-२॥

व्याहृति होमः—समस्त व्याहृतीनां परमेष्ठी प्रजापतिः प्रजापतिर्बृहती व्याहृतिहोमे विनियोगः। ॐभूः स्वाहा अग्नये इदं न मम। ॐभुवः स्वाहा वायवे इदं न मम। ॐस्वः स्वाहा सूर्याय इदं न मम। ॐभूर्भुवः स्वः स्वाहा प्रजापतये इदं न मम।

नवग्रह होमः

प्रधान देवता सूर्य होमः—आकृष्णेनेत्यस्य हिरण्यस्तूपः सविता त्रिष्टुप्, प्रधान देवता आदित्य प्रीत्यर्थे अर्कसमित्, आज्य, चरु होमे विनियोगः।

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च।
हिरण्ययेन सविता रथेनाऽऽदेवो याति भुवनानि पश्यन् स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १.३५.२)*

आदित्यायेदं न मम। २८ बार इस मंत्र से अर्क सहित घी एवं चरु से होम यह संख्या ८ या २८ या १०८ बार कर सकते हैं।

सूर्य अधिदेवता अग्नि होमः—अग्निं दूतमित्यस्य काण्वो मेधातिथिरग्निर्गायत्री आदित्यस्य अधिदेवता अग्निप्रीत्यर्थे अर्कसमित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम्। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् स्वाहा। *(ऋग्वेद १.१२.१)*

ॐ आदित्य अधिदेवतायै अग्नये इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें। (३+३+३=९ आहुति)

सूर्य प्रत्यधिदेवता रुद्र होमः—ॐ कद्रुद्राय इत्यस्य घोरः काण्वो रुद्रो गायत्री आदित्यस्य प्रत्यधिदेवता रुद्र प्रीत्यर्थे अर्कसमित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ कद्रुद्राय प्रचेतसे मीळहुष्टमाय तव्यसे। वोचेम शंतमं हृदे स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १.४३.१)*

आदित्य प्रत्यधिदेवता रुद्राय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें। (३ समित् + ३ घी + ३ चरु की आहुतियां = ९ आहुतियाँ)

प्रार्थना - दिवाकरं दीप्त सहस्त्ररश्मिं तेजोमयं जगतः कर्मसाक्षिम्। अंशुं भानुं सूर्यमादिं ग्रहाणां दिवाकरं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥

आदित्याय नमः।

प्रधान देवता सोम होमः—आप्यायस्व गौतमः सोमो गायत्री प्रधान देवता चन्द्रप्रीत्यर्थे पलाश समित्, आज्य, चरु होम विनियोगः।

ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्ण्यम्। भवा वाजस्य सङ्गथे स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १.९१.१६)*

सोमाय इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से पलाश सहित घी एवं चरु से होम करें।

सोम अधिदेवता अप होमः—अप्सु मे सिन्धुद्वीप आपोगायत्री सोमस्य अधिदेवता अप् प्रीत्यर्थे पलाश समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ अप्सु मे सोमो अब्रवीदुन्तर्विश्वानि भेषजा। अग्निं च विश्वशंभुवं स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १०.९.६)*

सोमाधिदेवतायै अद्भ्य इदं न मम। इस मन्त्र से तीन बार होम करें।

सोम प्रत्यधिदेवता गौरी होम—गौरीर्मीमायेत्यस्य औचत्यपुत्रो दीर्घतमा उमा जगती। सोमस्य प्रत्यधिदेवता गौरी प्रीत्यर्थे पलाशसमित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ गौरीर्मिमाय सलिलानि तक्षत्येकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी।

अष्टापदी नवपदी बभूवुषी सहस्राक्षरा परमे व्योमन् स्वाहा।

सोम प्रत्यधिदेवता गौर्यै इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

प्रार्थना— **यः कालहेतोः क्षयवृद्धिमेति यं देवताः पितरश्चापिबन्ति तं वै वरेण्यं ब्रह्मेन्द्रवन्द्यं चन्द्रं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥**

चन्द्राय नमः।

प्रधान देवता अङ्गारक होमः—अग्निर्मूर्धा विरूपोङ्गारको गायत्री। प्रधान देवता अङ्गारक प्रीत्यर्थे खदिरसमित आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपां रेतांसि जिन्वति स्वाहा। *(ऋग्वेद ८.४४.१६)*

अङ्गारकाय इदं न मम। २८ बार इस मंत्र में खदिर समित्, घी एवं चरु से होम करें।

अङ्गारक अधिदेवता भूमि होमः—स्योना पृथिवीत्यस्य मेधातिथिः पृथिवी गायत्री। अङ्गारकस्य अधिदेवता भूमि प्रीत्यर्थे खदिरसमित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ स्योना पृथिवि भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथः स्वाहा। *(ऋग्वेद १.२२.१५)*

अङ्गारकाधिदेवतायै भूम्यै इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

अङ्गारक प्रत्यधिदेवता स्कन्द होमः—कुमारं माता स्कन्दः स्कन्दस्त्रिष्टुप्। अङ्गारकस्य प्रत्यधिदेवता स्कन्द प्रीत्यर्थे खदिर समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ कुमारं माता युवतिः समुब्धं गुहा बिभर्ति न ददाति पित्रे
अनीकमस्य न मिनज्जनासः पुरः पश्यन्ति निहितमरतौ स्वाहा। *(ऋग्वेद ५.२.१)*

अङ्गारक प्रत्यधिदेवतायै स्कन्दाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

प्रार्थना— **महेश्वरस्याननस्वेदबिन्दोर्भूमौ जातं रक्तमालांबराढ्यं। सुरश्मिणं लोहिताङ्गं कुमारमङ्गारकं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥**

अङ्गारकाय नमः।

प्रधान देवता बुध होमः—उद्बुध्यध्वं बुधो बुधस्त्रिष्टुप्, प्रधान देवता बुध प्रीत्यर्थे अपामार्ग समित्, आज्य, चरु होमे विनियोगः।

ॐ उद्बुध्यध्वं समनसः सखायः समग्निमिंध्वं बहवः सनीळा।
दधिक्रमग्निमुषसँ च देवीमिन्द्रां वतोऽवंसे निह्वये वः स्वाहां। *(ऋग्वेद १०.१०१.१)*

बुधाय इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से अपामार्ग समित्, घी एवं चरु से होम करें।

बुध अधिदेवता विष्णु होमः—इदं विष्णुर्मेधातिथिर्विष्णुर्गायत्री, बुधस्य अधिदेवता विष्णु प्रीत्यर्थे अपामार्ग समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ इदं विष्णुर्विचंक्रमे त्रेधा निदंधे पदम्। समूंळहमस्य पांसुरे स्वाहां। *(ऋग्वेद १.२२.१७)*

बुधाधिदेवतायै विष्णावे इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

बुध प्रत्यधिदेवता पुरुष होमः—सहस्त्रशीर्षा नारायणः पुरुषोऽनुष्टुप्, बुध प्रत्यधिदेवता पुरुष प्रीत्यर्थे अपामार्ग समित्, आज्य, चरु होमे विनियोगः।

ॐ सहस्त्रंशीर्षा पुरुंषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रंपात्। स भूमिं विश्वतों वृत्वात्यंतिष्ठद्दशाङ्गुलम् स्वाहां। *(ऋग्वेद १०.९०.१)*

बुध प्रत्यधिदेवता पुरुषाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

प्रार्थना— उत्पातरूपो जगतां चन्द्रपुत्रौ महाद्युतिः। सूर्य प्रियकरो विद्यान् पीडां दहतु मे बुधः।। ॐ बुधाय नमः।

प्रधान देवता बृहस्पति होमः—बृहस्पते गृत्समदो बृहस्पतिस्त्रिष्टुप्, प्रधान देवता बृहस्पति प्रीत्यर्थे पिप्ल समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ बृहंस्पते अति यदुर्यो अर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुंमज्जनेषु।
यद्दीदयुच्छवंस ऋतप्रजात तदुस्मासु द्रविंणं धेहि चित्रम् स्वाहां।। *(ऋग्वेद २.२३.१५)*

बृहस्पतये इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से पिप्ल समित्, घी एवं चरु से होम करें।

बृहस्पति अधिदेवता इन्द्र होमः—इन्द्र श्रेष्ठानि गृत्समद इन्द्रस्त्रिष्टुप्, बृहस्पतेरधिदेवता इन्द्रप्रीत्यर्थे पिप्पल समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ इन्द्र श्रेष्ठांनि द्रविंणानि धेहि चित्तिं दक्षंस्य सुभगत्वमस्मे।
पोषँ रयीणामरिंष्टिं तनूनां स्वादमानँ वाचः सुंदिनत्वमह्नाम् स्वाहां। *(ऋग्वेद २.२१.६)*

बृहस्पत्यधिदेवतायै इन्द्राय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

बृहस्पति प्रत्यधिदेवता ब्रह्मा होमः—ब्रह्मणाते विश्वामित्रो ब्रह्मा त्रिष्टुप्, बृहस्पति प्रत्यधिदेवता ब्रह्म प्रीत्यर्थे पिप्लसमित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ ब्रह्मणा ते ब्रह्मयुजा युनज्मि हरी सखाया सधमाद आशू।
स्थिरं रथं सुखमिन्द्राधितिष्ठन् प्रजानन् विद्वाँ उपयाहि सोमम् स्वाहा। (ऋग्वेद ३.३५.४)

बृहस्पति प्रत्यधिदेवतायै ब्रह्मणे इदं न मम। इस मंत्र से तीन बर होम करें।

प्रार्थना— बुध्यात्मनो यस्य न कश्चिदन्यो मतिं देवा उपजीवंति यस्य। प्रजापते रात्मजं धर्मनिष्ठं गुरुं सदा शरणमहं प्रपद्ये।।

ॐ गुरुवे नमः।

प्रधान देवता शुक्र होमः—शुक्रं ते भारद्वाजः शुक्रस्त्रिष्टुप्, प्रधान देवता शुक्र प्रीत्यर्थे औदुम्बर समित्, आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ शुक्रं ते अन्यद्यजतं ते अन्यद्विषुरूपे अहनी द्यौरिवासि।
विश्वा हि माया अवसि स्वधावो भद्रा ते पूषन्निह रातिरस्तु स्वाहा। (ऋग्वेद ६.५८.१)

शुक्राय इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से औदुम्बर समित्, घी एवं चरु से हाम करें।

शुक्र अधिदेवता इन्द्राणी होमः—इन्द्राणी वृषाकपिरिंद्राणी पंक्तिः, शुक्रस्य अधिदेवता इन्द्राणी प्रीत्यर्थे औदुम्बर समित्, आज्य, चरु होमे विनियोगः।

ॐ इंद्राणीमासु नारिषु सुभगामहमश्रवम्। नह्यस्या अपरं चन जरसा मरते पतिर्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः स्वाहा।

(ऋग्वेद १०.८६.११)

ॐ शुक्र अधिदेवतायै इन्द्राण्यै इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

शुक्र प्रत्यधिदेवता इन्द्र होमः—इन्द्रं वो मधुच्छन्दा इन्द्रो गायत्री, शुक्रप्रत्यधिदेवता इन्द्र प्रीन्यर्थे औदुम्बर समित्, आज्य, चरु होमे विनियोगः।

ॐ इंद्रं वो विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्यः। अस्माकमस्तु केवलः स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १.७.१०)*

ॐ शुक्र प्रत्यधिदेवतायै इन्द्राय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

प्रार्थना— वर्षप्रदं चिन्तितार्थानुकूलं मौनाद्विशिष्टं सुनयोमपन्नम्। तं भार्गवं योगविशुद्धसत्वं शुक्रं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥

ॐ शुक्राय नमः।

प्रधान देवता शनैश्चर होमः—शमग्निरित्यस्य इरिंबिठिः शनैश्चर उष्णिक्, प्रधान देवता शनैश्चर प्रीत्यर्थे शमी समित्, आज्य, चरु होमे विनियोगः।

ॐ शमग्निरग्निभिः करच्छंनस्तपतु सूर्यः। शं वातो वात्वरपा अपस्त्रिधः स्वाहा। *(ऋग्वेद ८.१८.९)*

शनैश्चराय इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से शमी समित्, घी एवं चरु से होम करें।

शनैश्चर अधिदेवता प्रजापति होमः—प्रजापते हिरण्यगर्भः प्रजापतिस्त्रिष्टुप्, शनैश्चरस्य अधिदेवता प्रजापतिप्रीत्यर्थे शमी समित्, आज्य, चरु होमे विनियोगः।

ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १०.१२१.१०)*

शनैश्चरस्य अधिदेवता प्रजापतये इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

शनैश्चर प्रत्यधिदेवता यम होमः—यमाय हसोमं यमो यमोनुष्टुप्, शनैश्चरस्य प्रत्यधि देवता यम प्रीत्यर्थे शमीसमित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ यमाय सोमं सुनुत यमाय जुहुता हविः। यमं ह यज्ञो गच्छत्यग्निदूतो अरंकृतः स्वाहा। *(ऋग्वेद १०.१४.१३)*

शनैश्चर प्रत्यधिदेवतायै यमाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

प्रार्थना— शनैश्चरो राशितो राशिमेति शनैर्भोगो गमनं चेष्टितं च। सूर्यात्मजं क्रोधनं सुप्रसन्नं शनैश्चरं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥

ॐ शनैश्चराय नमः।

प्रधान देवता राहु होम—कयानो वामदेवो राहुर्गायत्री प्रधान देवता राहु प्रीत्यर्थे दूर्वासमित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ कयांनश्चित्र आ भुंवदूती सदावृंधः सखा। कयाशचिंष्ठया वृता स्वाहा। *(ऋग्वेद ४.३१.१)*

राहवे इदं न मम २८ बार इस मंत्र से दूर्वा समित्, घी एवं चरु से होम करें।

राहु अधिदेवता सर्प होमः—आयं गौः सार्पराज्ञीः सर्पा गायत्री। राहु अधिदेवता सर्प प्रीत्यर्थे दूर्वा समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमीदसंदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयंत्स्वः १ स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १०.१८९.१)*

राहु अधिदेवतायै सर्पेभ्यः इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

राहु प्रत्यधिदेवता मृत्यु होमः—परं मृत्युः संकुसिको मृत्युस्त्रिष्टुप्। राहु प्रत्यधिदेवता मृत्यु प्रीत्यर्थे दूर्वा समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ परं मृत्यो अनुपरेंहि पंथां यस्ते स्व इतरो देव यानात्।
चक्षुंष्मते शृण्वते तें ब्रवीमि मा नः प्रजां रीरिषो मोत वीरान् स्वाहा। *(ऋग्वेद १०.१८.१)*

राहु प्रत्यधिदेवतायै मृत्यवे इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

प्रार्थना— यो विष्णुनैवामृतं भोक्ष्यमाणः छित्वाशिरो ग्रहभावे नियुक्तः। यश्चन्द्रसूर्यौ ग्रसते पर्व काले राहुं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥

ॐ राहवे नमः।

प्रधान देवता केतु होमः—केतुं कृण्वन्नत्यिस्य मंत्रस्य मधुच्छन्दाः केतुर्गायत्री प्रधान देवता केतु प्रीत्यर्थे कुश समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ केतुं कृण्वन्नंकेतवे पेशों मर्या अपेशसें। समुषद्भिंरजायथाः स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १.६.३)*

केतवे इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से कुश समित्, घी एवं चरु से होम करें।

केतु अधिदेवता ब्रह्म होमः—ब्रह्मजज्ञानमिति नकुलो ब्रह्मा त्रिष्टुप्, केत्वधिदेवता ब्रह्मप्रीत्यर्थे कुश समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोंवेन आंवः।
स बुध्नियां उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसंतश्च विवः स्वाहा॥ *(यजुर्वेद-४ काण्ड-२ प्रश्न-८ अनुवाक-४ मन्त्र)*

केतु अधिदेवताब्रह्मणे इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

केतु प्रत्यधिदेवता चित्रगुप्त होम—स चित्र चित्रं भारद्वाजश्चित्रगुप्तस्त्रिष्टुप्। केतु प्रत्यधिदेवता चित्रगुप्तप्रीत्यर्थे कुश समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ स चित्र चित्रं चितयन्तमस्मे चित्रंक्षत्र चित्रतमं वयोधाम्।
चन्द्रं रयिं पुरुवीरं बृहंतं चन्द्रंचन्द्राभिर्गृणते युंवस्व स्वाहा॥ (ऋग्वेद ६.६.७)

केतु प्रत्यधिदेवतायै चित्रगुप्ताय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

प्रार्थना—हे ब्रह्मपुत्रा ब्रह्मसमानवक्त्राः ब्रह्मोद्भवाः ब्रह्मसमाः कुमाराः।
ब्रह्मोत्तमा वरदा जामदग्न्याः केतून् सदा शरणमहं प्रपद्ये॥

ॐकेतवे नमः। यहाँ पर नवग्रह होम संपन्न हुआ। आगे छः कर्म साद्गुण्य देवता होम होगा।

कर्म साद्गुण्य देवता विनायक होमः-१—आतून इत्यस्य काण्वः कुसीदी विनायको गायत्री क्रतु साद्गुण्यदेवता विनायक प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ आतूनं इन्द्रक्षुमन्तं चित्रं ग्राभं सङ्गृभाय। महाहस्ती दक्षिणेन स्वाहा। (ऋग्वेद ८.८१.१)

कर्म साद्गुण्यदेवतायै विनायकाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

कर्म साद्गुण्यदेवता दुर्गा होमः-२—जातवेद से कश्यपो दुर्गा त्रिष्टुप् क्रतुसाद्गुण्यदेवता दुर्गा प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः।
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेवसिंधुं दुरितात्यग्निः स्वाहा॥ (ऋग्वेद १.९९.१)

क्रतु साद्गुण्य देवतायै दुर्गायै इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

कर्म साद्गुण्यदेवता क्षेत्रपाल होमः-३—क्षेत्रस्य पतिना वामदेवः क्षेत्रपालोनुष्टुप् चरु होमे विनियोगः।

ॐ क्षेत्रस्य पतिना वयं हितेनेवजयामसि। गामश्वं पोषयित्वा सनोमृळातीदृशे स्वाहा। (ऋग्वेद ४.५७.१)

क्रतु साद्गुण्य देवतायै क्षेत्रपालाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

कर्म साद्गुण्य देवता वायु होमः-४—क्राणाशिशुरित्यस्यत्रियोवायुरुष्णिाक् क्रतु साद्गुण्य देवता वायु प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ क्राणाशिशुर्महीनांहिन्वन्नृतस्यदीधितिं। विश्वापरिप्रिया भुवदधद्विता स्वाहा॥ (ऋग्वेद ९.१०२.१)

क्रतु साद्गुण्य देवतायै वायवे इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

कर्म साद्गुण्य देवता आकाश होमः-५—आदित्यप्रत्नस्य वत्स आकाशो गायत्री क्रतु साद्गुण्य देवता आकाश प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ आदित् प्रत्नस्यरेतसो ज्योतिष्पश्यंति वासरं। परोयदिध्यतेदिवा स्वाहा॥ (ऋग्वेद ८.६.३०)

क्रतु साद्गुण्यदेवतायै आकाशाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

कर्म साद्गुण्य देवता अश्विनी देवता होमः-६—अश्विनावर्ति राहूगणो गोतमोश्विनावुष्णिाक् अश्वि प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ अश्विनावर्तिरस्मदागोमद्दस्राहिरण्यवत्। अर्वाग्रथं समनसानियच्छतं स्वाहा॥ (ऋग्वेद १.९२.१६)

क्रतु साद्गुण्य देवतायै अश्विभ्यां इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता इन्द्र होमः—इन्द्रं वो मधुच्छन्दा इन्द्रो गायत्री क्रतु संरक्षक देवता इन्द्र प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ इन्द्रं वो विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्यः। अस्माकमस्तु केवलः स्वाहा॥ (ऋग्वेद १.७.१०)

क्रतु संरक्षक देवतायै इन्द्राय इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता अग्नि होमः—अग्निं दूतमित्यस्य काण्वो मेधातिथिरग्निर्गायत्री क्रतु संरक्षक देवता अग्नि प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम्। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् स्वाहा॥ (ऋग्वेद १.१२.१)

क्रतु संरक्षक देवतौ अग्नय इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता यम होमः—यमाय सोमं यमोयमोनुष्टुप् क्रतु संरक्षक देवता यम प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ यमाय सोमं सुनुतयमायंजुहुता हविः। यमंहंयज्ञो गंच्छत्यग्निदूंतो अरंकृतः स्वाहां॥ (ऋग्वेद १०.१४.१३)

क्रतु संरक्षक देवतायै यमाय इदं न मम। इस मंत्र को दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता निर्ऋति होमः—मोषुणः कारावो निर्ऋतिर्गायत्री क्रतु संरक्षक देवता निर्ऋति प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ मोषुणः परांपरानिर्ऋतिर्दुर्हणांवधीत्। पदीष्ट तृष्णांयासह स्वाहां॥ (ऋग्वेद १.३८.६)

क्रतु संरक्षक देवतायै निर्ऋतये इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता वरुण होमः—तत्वायामीत्यस्य शुनः शेपोवरुणस्त्रिष्टुप् क्रतु संरक्षक देवता वरुण प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ तत्वांयामि ब्रह्मंणा वन्दंमानस्तदाशांस्तेयजंमानो हविर्भिः।
अहेंळमानो वरुणेह बोध्युरुंशंसमान आयुः प्रमोंषीः स्वाहां॥ (ऋग्वेद १.२४.११)

क्रतु संरक्षक देवतायै वरुणाय इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता वायु होमः—तव वायो व्यश्वोवायुर्गायत्री क्रतु संरक्षक देवता वायु प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ तवं वायवृतस्पतेत्वष्टुंर्जामातरद्भुत। अवांस्यावृंणीमहे स्वाहां॥ (ऋग्वेद ८.२६.२१)

क्रतु संरक्षक देवतायै वायवे इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता सोम होम—सोमो धेनुमित्यस्य गौतमः सोमस्त्रिष्टुप् क्रतु संरक्षक देवता सोम प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ सोमों धेनुं सोमो अर्वन्तमाशुं सोमों वीरं कर्मण्यं ददाति।
सादुन्यं विदथ्यं सभेयं पितृश्रवंणं यो ददांशदस्मै स्वाहां॥ (ऋग्वेद १.९१.२०)

क्रतु संरक्षक देवतायै सोमाय इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता ईशान होमः—तमीशानमित्यस्य गौतम ईशानो जगती क्रतु संरक्षक देवता ईशान प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ तमीशा॑नं॒ जग॑तस्त॒स्थुष॒स्पतिं॑ धियं जि॒न्वमव॑से हूमहे व॒यम्।
पू॒षा नो॒ यथा॒ वेद॑सा॒मस॑दृ॒धे र॑क्षि॒ता पा॒युरद॑ब्धः स्व॒स्तये॒ स्वाहा॑॥ *(ऋग्वेद १.८९.५)*

क्रतु संरक्षक देवतायै ईशानाय इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें। यहाँ पर क्रतु संरक्षक देवता होम संपन्न हुआ।

व्याहृति होमः—व्याहृतीनां परमेष्ठी प्रजापतिः बृहती व्याहृति होमे विनियोगः। ॐभूः स्वाहा, अग्नये इदं न मम। ॐभुवः स्वाहा,वायवे इदं न मम। ॐस्वः स्वाहा, सूर्याय इदं न मम। ॐभूर्भुवः स्वः स्वाहा, प्रजापतये इदं न मम। इन मत्रों से एक बार होम करें।

प्रधान देवता विष्णु होमः—इदं विष्णुर्मेधातिथिर्विष्णुर्गायत्री प्रधानदेवता विष्णुप्रीत्यर्थेआज्यचरुहोमे विनियोगः।

ॐ इ॒दं विष्णु॒र्वि च॑क्रमे त्रे॒धा नि द॑धे प॒दं। समू॑ळ्हमस्य पांसु॒रे स्वाहा॑। *(ऋग्वेद १.२२.१७) आ. गृ. सूत्रम्*

ॐ विष्णवे स्वाहा। ॐ विष्णव इदं न मम। ॐमहाद्भुताधिपतये स्वाहा। ॐमहाद्भुताधिपतय इदं न मम। ॐमहाविष्णवे स्वाहा। ॐमहाविष्णव इदं न मम। ॐईश्वराय स्वाहा। ॐईश्वराय इदं न मम। ॐसर्वोत्पातशमनाय स्वाहा। ॐसर्वोत्पातशमनाय इदं न मम।

ॐ भूर॒ग्नये॑ च पृथि॒व्यै च॑ मह॒ते च॒ स्वाहा॑ अग्नये पृथिव्यै महते च इदं न मम।
ॐ भुवो॑ वा॒यवे॑चा॒न्तरि॑क्षाय च मह॒ते च॒ स्वाहा॑। वायवेऽन्तरिक्षाय महते च इदं न मम।
ॐ सुव॑रादि॒त्याय॑ य दि॒वे च॑ मह॒ते च॒ स्वाहा॑। आदित्याय दिवे महते च इदं न मम।
ॐ भुर्भूव॒ः सुव॑श्चन्द्रम॑से च॒ नक्ष॑त्रेभ्योदि॒ग्भ्यश्च॑ मह॒ते च॒ स्वाहा॑। *(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषद्-आरण्यक)*

चन्द्रमसे नक्षत्रेभ्यो दिग्भ्यो महते च इदं न मम। इन चार मंत्रों से भी घी की आहुतियाँ एक-एक बार देवें। **ॐ भूः स्वाहा, अग्नये इदं न मम। ॐ भुवः स्वाहा, वायवे इदं न मम। ॐ स्वः स्वाहा, सूर्याय इदं न मम। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा, प्रजापतये इदं न मम।**

स्विष्टकृत् होमः—दर्व्यामुपस्तीर्य हविर्भागस्योत्तरार्धतः सकृत् अवदाय अवत्तंतु द्विः अभिघार्य। स्रुवा से दर्वी में (स्रुक्) घी डालकर, चरु के उत्तर

भाग से चरु को निकालकर (हाथ से) दर्वी में रखें। फिर स्रुवा से उप पर दो बार घी डालें। आगे कहने वाले मंत्र को कहते हुए होम कुण्ड में ईशान्य दिशा में डालें। यदस्येति हिरण्यगर्भोग्निः स्विष्टकृद्घृतिः स्विष्टकृत् होमे विनियोगः।

ॐ यदस्य कर्मणोत्यरीरिचंयद्वान्यूनमिहाकरम्। अग्निष्टत्स्विष्टकृद्विद्वान्त्सर्वं स्विष्टंसुहुतं करोतु मे॥
अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त्समर्धय: स्वाहा॥ *(श्रौत मन्त्र)*

इन दो मंत्रों को कहकर अग्नि के ईशान्य भाग में होम करें। स्विष्टकृतेऽग्नय इदं न मम।

इध्म बंधन रज्जुं विस्रस्य

पहले जिस रस्सी (कुशा निर्मित) से इध्यम बाँधे थे उस रस्सी को खोलकर उसे—ॐ रुद्राय पशुपतये स्वाहा, रुद्राय पशुपतये इदं न मम। कहकर होम करें। **प्रायश्चित आज्याहुतीः सप्त जुहुयात्।** प्रायश्चित सात घी की आहुतियाँ देवें। अयाश्चेतिविमदोया अग्निः पंक्तिः प्रायश्चित्याज्य होमे विनियोगः।

ॐ अयांश्चाग्नेस्यनंभिशस्तीश्चसत्यमित्वमया असि अयासावयंसाकतो यासंन्हव्यमूंहिषेयानोंधेहि भेषजं स्वाहा॥

(यजुर्वेद-आरण्यक)

अग्नेय इदं न मम। अतो देवाः काण्वोमेधातिथिर्देवा गायत्री प्रायश्चिताज्यहोमे विनियोगः।

ॐ अतोंदेवा अवंतु नो यतोविष्णुर्विचक्रमे। पृथिव्याः सप्त धामभिः स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १.२२.१६)*

देवेभ्य इदं न मम। इदं विष्णुः काण्वोमेधातिथिर्विष्णुर्गायत्री प्रायश्चित्ताज्यहोमे विनियोगः।

ॐ इदं विष्णुर्विचंक्रमे त्रेधानिदंधे पदं। समूंळहमस्यपांसुरे स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १.२२.१७)*

विष्णवे इदं न मम। व्यस्त समस्त व्याहृतीनां विश्वामित्र जमदग्निर्भरद्वाज प्रजापतय ऋषयः, अग्निवायुसूर्यप्राजापतयो देवताः गाय त्र्युष्णिगनुष्टुबृहत्यश्छंदांसि। प्रायश्चित्ताज्य होमे विनियोगः। ॐभूः स्वाहा, अग्नये इदं न मम। ॐभुवः स्वाहा, वायवे इदं न मम। ॐस्वः स्वाहा, सूर्याय इदं न मम। ॐभूर्भुवः स्वः स्वाहा,

प्रजापतये इदं न मम। यहाँ पर यजमान के द्वारा करने वाला प्रायश्चित होम संपन्न हुआ। यज्ञ के पूजन होम में अनेक प्रकार के लोप संभव है। अतः उनके निवारण के लिए प्रायश्चित्त होम आवश्यक है। यजमान के प्रायश्चित होम से भी बचे हुए लोप दोषों के निवारण के लिए ब्रह्म प्रायश्चित विधान है। ब्रह्मा के स्थान पर यदि कुश हो तो स्वयं आचार्य ही ब्रह्म प्रायश्चित होम करें।

ब्रह्म प्रायश्चित्त होमः

ब्रह्मा के स्थान पर बैठे पं. जी के द्वारा यज्ञ में सपन्न लोप दोषों की निवृत्ति के लिए ब्रह्मा जी प्रायश्चित होम करते हैं।

ततो ब्रह्मा कर्तारं परीत्याग्नर्वायव्यदेशे तिष्ठन् एता एव सप्त आज्याहुतीर्जुहुयात्।

उसके बाद ब्रह्मा जी यजमान के पीठे से जाकर अग्नि के वायव्य दिशा में खडे होकर पूर्वोक्त सात मंत्रों से आहुति देवें। ब्रह्म प्रायश्चित्याज्यहोमे विनियोगः।

ॐ अयाश्चाग्नेस्यनंभिशस्तीश्चंसत्यमित्वमया असि।
अयांसावयंसाकृतो यासंन्हव्यमूंहिषेयानों धेहि भेषजम् स्वाहां॥ *(यजुर्वेद-आरण्यक)*

अग्नेय इदं न मम। इस पंक्ति को यजमान या अचार्य कहें।

ॐ अतों देवा अवंतु नो यतोविष्णुंर्विचक्रमे। पृथिव्याः सप्त धामंभिः स्वाहां॥ *(ऋग्वेद १.२२.१६)*

देवेभ्य इदं न मम (इस पंक्ति को आचार्य पढ़ें।)

ॐ इदं विष्णुर्विचंक्रमे त्रेधा निदंधे पदं। समूंळहमस्य पांसुरे स्वाहां॥ *(ऋग्वेद १.२२.१७)*

विष्णाव इदं न मम। (आचार्य इस पंक्ति को कहें) ॐभूः स्वाहा, अग्नये इदं न मम। ॐभुवः स्वाहा, वायवे इदं न मम। ॐस्वः स्वाहा, सूर्याय इदं न मम। ॐभूर्भुवः स्वः स्वाहा, प्रजापतये इदं न मम। स्वाहा तक ब्रह्मा जी कहते है। इदं न मम वाला भाग यजमान व आचार्य को ही कहना हैं, त्याग को ब्रह्मा

नहीं करना चाहिये। इदं न मम त्याग कहलाता है। ततो ब्रह्मा यथा आगतं तथैव स्वस्थाने उपविशेत्। ब्रह्मा जी जिस प्रकार आये थे उसी प्रकार जाकर अपने आसन पर बैठें। अनाज्ञातमिति मंत्रद्वयस्य हिरण्यगर्भोऽग्निरनुष्टुप्, ज्ञाताज्ञातदोष निबर्हणार्थं प्रायश्चित्ताज्य होमे विनियोगः।

ॐ अनाज्ञातं यदाज्ञातं यज्ञस्य क्रियतेमिथु। अग्नेतदस्य कल्पयत्वं हिवेत्थयथातथं स्वाहा॥ *(यजुर्वेद-आरण्यक)*

अग्नये इदं न मम।

ॐ पुरुषसंमितो यज्ञोयज्ञः पुरुषसंमितः। अग्नेतदस्य कल्पयत्वं हिवेत्थयथातथं स्वाहा॥ *(यजुर्वेद-आरण्यक)*

यत्पाकत्रेत्याप्त्यस्त्रितोग्निस्त्रिष्टुप्। प्रायश्चिताज्य होमे विनियोगः।

ॐ यत्पाकत्रामनसादीनदक्षानयज्ञस्य मन्वतेमर्त्यासः।
अग्निष्टद्धोता क्रतुविद्विजानन्यजिष्ठो देवाँऋतुशोयजाति स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १०.२.५)*

अग्नय इदं न मम। ॐयद्वोदेवा अभितपामरुत स्त्रिष्टुप्। मंत्र तंत्र विपर्यासादि निमित्तक प्रायश्चिताज्य होमे विनियोगः।

ॐ यद्वोदेवा अतिपातयानि वाचाचप्रयुतीदेवहेळनं।
अरायो अस्माँ अभिदुच्छुनायतेन्यत्रास्मन्मरुतस्तन्निधेतनस्वाहा॥ *(यजुर्वेद-आरण्यक)*

मरुद्भ्य इदं न मम। ततः स्कन्न भिन्नाद्यनियत निमित्ते सति वक्ष्यमाण प्रकारेण तत् प्रतिपदोक्त जप होमान् कुर्यात्। इसके बाद गिरने वाले, टूटने वाले सभी दोष जिनका वर्णन संभव नहीं है, उनके प्रायश्चित के लिए आगे कहने वाले जप एवं होम करें।

ॐभूः स्वाहा, अग्नये इदं न मम। ॐभुवः स्वाहा, वायवे इदं न मम। ॐस्वः स्वाहा, सूर्याय इदं न मम। ॐभूर्भुवः स्वः स्वाहा, प्रजापतये इदं न मम। यहाँ पर प्रायश्चित होम समाप्त हुआ। प्रारम्भ दिन से अन्तिम दिन तक यह होम कार्य एक जैसा है।

विष्णु सर्वाद्भुत होमस्य सर्व फलावाप्त्यर्थं साङ्गतासिद्ध्यर्थं च यावच्छक्ति ध्यानावाहनादि षोडशोपचार पूजां करिष्ये। होम कुण्ड में आचार्य एवं कलश वेदि में प्रधानाचार्य एक साथ पूजन करें। प्रधान देवता विष्णु मंत्रों से।

षोडशोपचार पूजनम् (कुराड में)

ध्यान—विष्णुं जिष्णुं महाविष्णुं प्रभविष्णुं महेश्वरम्। अनेकोत्पात शमनं नमामि पुरुषोत्तमम्॥ नमोनारायणाय।

आवाहन-ॐ सहस्रंशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रंपात्। स भूमिं विश्वतोंवृत्वात्यं तिष्ठद् दशांगुलम्॥ *(ऋग्वेद १०.९०.१)*
ॐ हिरंरायवर्णां हरिणीं सुवर्णरजत स्रंजाम्। चन्द्रां हिरणमयीं लक्ष्मीं जातंवेदो म आवंह॥ *(पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)*
सपरिवार श्री विष्णावे नमः। आवाहयामि। आवाहनं समर्पयामि।

आसनम्—ॐ पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेना तिरोहंति॥ *(ऋग्वेद १०.९०.२)*
ॐ तां म आवंह जातवेदो लक्ष्मीमनंपगामिनीम्। यस्यां हिरंरायं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥ *(पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)*
सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। आसनं समर्पयामि।

पाद्यम्— ॐ एतावानस्य महिमाऽतो ज्यायांश्च पुरुषः। पादोंऽस्य विश्वांभूतानिं त्रिपादस्यामृतं दिवि॥ *(ऋग्वेद १०.९०.३)*
ॐ अश्वपूर्वां रंथमध्यां हस्तिनांद प्रमोदिनीम्। श्रियं देवीमुपंह्वये श्रीर्मा देवी जुंषताम्॥ *(पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)*
सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। पादारविंदयोः पाद्यं पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यं— ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत् पुरुषः पादोंऽस्येहा भंवत्पुनः। ततो विश्वं व्यंक्रामत् साशनानशने अभि॥ *(ऋग्वेद १०.९०.४)*
ॐ कां सोस्मितां हिरंराय प्राकारामार्द्रां ज्वलंन्तीं तृप्तां तर्पयंन्तीम्।
पद्मेस्थितां पद्मवंर्णां तामिहो पंह्वये श्रियम्॥ *(पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)* सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। हस्तयोः अर्घ्यमर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनम्—ॐ तस्माद्विराळजायत विराजो अधिपूरुषः। स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथो पुरः। (ऋग्वेद १०.९०.५)

ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टा मुदाराम्।
तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। मुखे आचमनीयं समर्पयामि।

पञ्चामृत स्नानम् (दूध)— ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्ण्यं। भवावाजस्य संगथे। (ऋग्वेद १०.९१.१६)

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। पयः स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः। भवे भवेनाति भवे भवस्वमाम् भवोद्भवाय नमः॥
(यजुर्वेद-महानारायणोपनिपत् आरण्यक)

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि

दहि— ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभिनोमुखा करत्प्रण आयूंषितारिषत्॥ (ऋग्वेद ४.३९.६)

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। दधि स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमश्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमःकलविकरणाय
नमोबलाय नमो बलप्रमथनाय नमस्सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः। (यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। शुद्धोदक स्नानं सपर्मयामि।

घी— ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्ययोनिर्घृते श्रितो घृतं वस्य धाम।
अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभवक्षि हव्यम्॥ (ऋग्वेद २.३.११) सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। घृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥ *(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)*

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

मधु (शहद)—ॐ मधुवाता ऋतायते मधुक्षरंति सिंधवः। माध्वीर्नः संत्वोषधीः॥ मधुनक्तमुतोषसो मधुमत् पार्थिवं रजः। मधुद्यौरस्तु नः पिता॥ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवंतु नः॥ *(ऋग्वेद १.९०.६)* सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। मधु स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥ *(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)*

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। शुद्धोदक स्नानं सपर्पयामि।

शर्करा (शक्कर)—ॐ स्वादुः पवस्व दिव्याय जन्मने स्वादुरिंद्राय सुहवीतु नाम्ने। स्वादुर्मित्राय वरुणाय वायवे बृहस्पतये मधुमाँ अदाभ्यः॥ *(ऋग्वेद ९.८५.६)*

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। शर्करा स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जन—ॐ ईशानस्सर्वविद्यानामीश्वरस्सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोऽम्॥ *(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)*

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

फल— ॐ याः फलिनी र्या अफला अपुष्पायाश्च पुष्पिणीः। बृहस्पतिं प्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्वं हंसः॥ *(ऋग्वेद १०.९७.१५)*

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। फल स्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदक—ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवस्तानऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे॥ यो वः शिवतमोरसस्तस्य भाजयते हनः। उशतीरिव मातरः॥ तस्मा अरंगमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः। (ऋग्वेद १०.९.१-२-३)

ॐ कद्रुद्राय प्रचेतसे मीळहुष्टमाय तव्यसे। वोचेम शंतमं हृदे॥ (ऋग्वेद १.४३.१)

ॐ यथा नो अदितिः करत्पश्वे नृभ्यो यथा गवे। यथा तोकाय रुद्रियम्॥ (ऋग्वेद १.४३.२)

ॐ यथा नो मित्रो वरुणो यथा रुद्रश्चिकेतति। यथा विश्वे सजोषसः।

ॐ गाथपतिं मेधपतिं रुद्रं जलाषभेषजम्। तच्छं योः सुम्नमीमहे॥

ॐ यः शुक्र इव सूर्यो हिरण्यमिव रोचते। श्रेष्ठो देवानां वसुः।

ॐ शं नः करत्यर्वते सुगं मेषाय मेष्ये। नृभ्यो नारिभ्यो गवे॥

ॐ अस्मे सोम श्रियमधि नि धेहि शतस्य नृणाम्। महिश्रवस्तुविनृम्णम्॥

ॐ मानः सोमपरिबाधो मारातयो जुहुरंत। आ न इंदो वाजे भज॥

ॐ यास्ते प्रजा अमृतस्य परस्मिन्धामन्नृतस्य। मूर्धा नाभा सोमवेन आ भूषंतीः सोम वेदः॥ (ऋग्वेद १.४३.३-४-५-६-७-८-९)

ॐ नमः सोमाय च रुद्राय च नमस्ताम्राय चारुणाय च नमः शंगाय च पशुपतये च नम उग्राय च भीमाय च नमो अग्रेवधाय च दूरेवधाय च नमो हन्त्रे च हनीयसे च नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो नमस्ताराय नमः शंभवे च मयोभवे च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च नम स्तीर्थ्यायच कूल्याय च नमः पार्याय चावार्याय च नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च नम आतार्याय चालाद्याय च नमशष्प्याय च फेन्याय च नमःसिकत्याय च प्रवाह्याय च। (यजुर्वेद-४ काण्ड-५ प्रश्ने-८ अनुवाक)

ॐ तच्छंयोरावृंणीमहे। गातुं यज्ञायं। गातुं यज्ञ पंतये। दैवीः स्वस्तिरंस्तु नः। स्वस्तिर्मानुंषेभ्यः।
ऊर्ध्वं जिंगातु भेषजम्। शं नों अस्तु द्विपदें। शं चतुंष्पदे। ॐ शांतिः शांतिः। शांतिः॥ (यजुर्वेद-आरण्यक)
ॐ यत्पुरुंषेण हविषा देवा यज्ञमतंन्वत। वसंतो अंस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥ (ऋग्वेद १०.९०.६)
ॐ आदित्यवंर्णो तपसोऽधिंजातो वनस्पतिस्तवं वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलांनि तपसा नुंदंतु मायांतरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः। (ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

वस्त्र— ॐ युवं वस्त्राणि पीवसावंसाथे युवोरच्छिंद्रा मंतंवो हसर्गाः।
अवांतिरमनृंतानि विश्वं ऋतेनं मित्रा वरुणा सचेथे॥ (ऋग्वेद १.१५२.१)
ॐ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुंषं जातमंग्रतः। तेनं देवा अंयजंत साध्या ऋषंयश्च ये॥ (ऋग्वेद १०.९०.७)
ॐ उपैंतु मां देंवसखः कीर्तिश्च मणिंना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मिं राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृंद्धिं ददातुं मे॥
(ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। वस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतं—ॐ यज्ञोंपवीतं परमं पवित्रं प्रजांपतेर्यत् सहजं पुरास्तात्। आयुष्यमग्रयं प्रतिमुंञ्चशुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमंस्तु तेजः॥
ॐ तस्मांद्यज्ञात् संर्वहुतः संभृंतं पृषदाज्यम्। पशून्ताँश्चंक्रे वायव्यांनारण्यान् ग्राम्याश्च ये॥ (ऋग्वेद १०.९०.८)
ॐ क्षुत् पिपासामंलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहंम्। अभूंतिमसंमृद्धिं च सर्वान्निर्णुद मे गृहात्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

आभरण— ॐ हिरंण्यरूपः स हिरंण्य संदृग्पान्नपात् सेदु हिरंण्यवर्णः। हिरण्ययात् परियोनें र्निषद्यां हिरण्यदा दंदुत्यन्नंमस्मै ॥ (ऋग्वेद २.३५.१०)

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। आभरणं समर्पयामि।

गन्ध— ॐ गंधं द्वारां दुंराधर्षां नित्यपुंष्टां करीषिणींम्। ईश्वरीं सर्वंभूतानां तामिहोपंह्वये श्रियम् ॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ तस्मांद्यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामांनि जज्ञिरे। छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्य जुस्तस्मांदजायत ॥ (ऋग्वेद १०.९०.९)

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। गन्धं समर्पयामि।

अक्षत— ॐ अर्चंत प्रार्चंत प्रियंमेधासो अर्चंत। अर्चंन्तु पुत्रका उतपुरंन्न धृष्णवर्चत ॥ (ऋग्वेद ८.६९.८)

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पाणि— ॐ आयंने ते परायंणे दूर्वारोहंतु पुष्पिणीः। हृदाश्चं पुण्डरींकाणि समुद्रस्यं गृहा इमे ॥ (ऋग्वेद १०.१४२.८)

ॐ तस्मादश्वां अजायन्त ये के चों भयादंतः। गावोंहजज्ञिरे तस्मात् तस्मांज्जाता अंजावयः ॥ (ऋग्वेद १०.९०.१०)

ॐ मनंसः काममाकूंतिं वाचः सत्यमंशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रंयतां यशः ॥ (ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। पुष्पाणि समर्पयामि।

ऐशान्यां दिशि। ॐशिखायै वषट् नमः। नैर्ऋत्यां दिशि। ॐकवचाय हुम्

प्रथमावरण पूजनम्— ॐहृदयाय नमः। आग्नेय दिशि। ॐशिरसे स्वाहा नमः।

नमः। वायव्यां दिशि। ॐनेत्रत्रयाय वौषट् नमः। अग्रे ॐअस्त्राय फट् नमः। आग्नेयादि कोणेषु पूजयेत् *(अनुष्ठान पद्धति)*। पूजन करे।

द्वितीयावरण पूजनम्— ॐब्राह्मयै नमः। पूर्वे ॐमाहेश्वर्यै नमः। आग्नेय दिशि। ॐकौमार्यै नमः। दक्षिण दिशि। ॐवैष्णव्यै नमः। नैऋत्यां दिशि। ॐवाराह्यै

नमः पश्चिम दिशि। ॐइन्द्राण्यै नमः। वायव्यां दिशि। ॐचामुण्डायै नमः। उत्तरस्यां दिशि। ॐगिरिजायै नमः ऐशान्यां दिशि। *(अनुष्ठान पद्धति)*

तृतीयावरण पूजनम्— ॐइन्द्राय सुराधिपतये पीतवर्णाय वज्रहस्ताय ऐरावत वाहनाय सशक्ति काय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवारायश्री सूर्यमूर्ति

पार्षदाय नमः। ॐअग्रये तेजोधिपतये पिंगलवर्णाय शाक्ति हस्ताय मेष वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय स वाहनाय स परिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐयमाय प्रेताधिपतये कृष्णवर्णाय दण्ड हस्ताय महिष वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐनिर्ऋतये रक्षोधिपतये रक्तवर्णाय खङ्ग हस्ताय नरवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐवरुणाय जलाधितये कुंदवर्णाय पाशहस्ताय मकरवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐवायवे प्राणाधिपतये धूम्रवर्णाय अंकुश हस्ताय हरिणवाहनाय सशक्ति काय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐसोमाय नक्षत्राधिपतये शुक्लवर्णाय गदा हस्ताय अश्व वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐईशानाय विद्याधिपतये स्फटिकवर्णाय त्रिशूल हस्ताय वृषभ वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐअनंताय नागाधिपतये क्षीरवर्णाय चक्रहस्ताय गरुड वाहनाय स शक्तिाकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। नैर्ऋत्यं एवं पश्चिम दिशा के बीच में अनन्त का पूजन करें। ॐब्रह्मणे लोकाधिपतये कंजवर्णाय पाशहस्ताय हंसवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। पूर्व एवं ईशान दिशा के बीच में ब्रह्मा जी का पूजन करें। *(अनुष्ठान पद्धति)*

चतुर्थावरणपूजनम्—ॐवज्राय नमः। (पूर्व में) ॐशक्त्यै नमः। (आग्रेय में) ॐदण्डाय नमः। (दक्षिण में) ॐखड्गाय नमः। (नैर्ऋत्य) ॐपाशाय नमः। (पश्चिम में) ॐअंकुशाय नमः। (वायव्य में) ॐगदायै नमः। (उत्तर में) ॐत्रिशूलाय नमः। (ईशान में) ॐचक्राय न मः। (पश्चिम नैर्ऋत्य के बीच में) ॐपद्माय नमः। (पूर्व ईशान के बीच में) *(अनुष्ठान पद्धति)*

विष्णु अष्टोत्तर शतनाम पूजा

ॐविष्णवे नमः। ॐलक्ष्मीपतये नमः। ॐ कृष्णाय नमः। ॐ वैकुण्ठाय नमः। ॐ गरुडध्वजाय नमः। ॐ जगन्नाथाय नमः। ॐपरब्रह्मणे नमः।ॐवासुदेवाय नमः। ॐत्रिविक्रमाय नमः। ॐ दैत्यान्तकाय नमः। ॐ मधुरिपवे नमः। ॐ तार्क्ष्यवाहनाय नमः। ॐसनातनाय नमः। ॐनारायणाय नमः। ॐपद्मनाभाय नमः। ॐहृषीकेशाय नमः। ॐसुधाप्रदाय नमः। ॐ माधवाय नमः। ॐ पुण्डरीकाक्षाय नमः। ॐ स्थितिकर्त्रे नमः। ॐपरात्पराय नमः। ॐवनकालिने नमः। ॐयज्ञ रूपाय नमः। ॐचक्र पाणये नमः। ॐगदाधराय नमः। ॐउपेन्द्राय नमः। ॐकेशवाय नमः। ॐ हंसाय नमः। ॐ समुद्रमथनाय नमः। ॐ हरये

ॐ कैटभासुरमर्दनाय नमः। ॐ श्रीधराय नमः। ॐ कामजनकाय नमः ॐ शेषायिने नमः। ॐ चतुर्भजाय नमः। ॐगोविन्दाय नमः। ॐ ब्रह्मजनकाय नमः ॐ कैटभासुरमर्दनाय नमः। ॐ श्रीधराय नमः। ॐ कामजनकाय नमः ॐ शेषायिने नमः। ॐ देवाय नमः। ॐ सूर्यचन्द्रविलोचनाय नमः। ॐ पाञ्चजन्यधराय नमः। ॐ श्रीमते नमः। ॐ शार्ङ्गपाणये नमः। ॐ जनार्दनाय नमः। ॐ पीताम्बरधराय नमः। ॐ देवाय नमः। ॐ सूर्यचन्द्रविलोचनाय नमः। ॐ मत्स्यरूपाय नमः। ॐ कूर्मतनवे नमः। ॐ क्रोडरूपाय नमः। ॐ नृकेसरिणे नमः। ॐ वामनाय नमः। ॐभार्गवाय नमः। ॐ रामाय नमः। ॐ बलिने नमः। ॐ कल्किने नमः। ॐ हयाननाय नमः। ॐ विश्वम्भराय नमः। ॐ शिशुमाराय नमः। ॐश्रीकराय नमः। ॐ कपिलाय नमः। ॐ ध्रुवाय नमः। ॐ दत्तात्रेयाय नमः। ॐ अच्युत्ताय नमः। ॐअनन्ताय नमः। ॐ मुकुन्दाय नमः। ॐ दधिवामनाय नमः। ॐ धन्वन्तरये नमः। ॐ श्रीनिवासाय नमः। ॐप्रद्युम्नाय नमः। ॐ पुरुषोत्तमाय नमः। ॐ श्रीवत्सकौस्तुभधराय नमः। ॐ मुरारातये नमः। ॐ अधोक्षजाय नमः। ॐ ऋषभाय नमः। ॐ मोहिनी रुप धारिणे नमः। ॐ सङ्कर्षणाय नमः। ॐ पृथवे नमः। ॐ क्षीराब्धिशायिने नमः। ॐ भूतात्मने नमः। ॐ अनिरुद्धाय नमः। ॐ भक्तवत्सलाय नमः। ॐनराय नमः। ॐ गजेन्द्रवरदाय नमः। ॐ त्रिधाम्ने नमः। ॐ भूतभावनाय नमः। ॐ श्वेतद्वीपसुवास्तव्याय नमः। ॐ सनकादिमुनिध्येयाय नमः। ॐ भगवते नमः। ॐ शङ्करप्रियाय नमः। ॐ नीलकान्ताय नमः। ॐ धराकान्ताय नमः। ॐवेदात्मने नमः। ॐ बादरायणाय नमः। ॐ भागीरथीजन्मभूमि पादपद्माय नमः। ॐ सतांप्रभवे नमः। ॐस्वभुवे नमः। ॐ विभवे नमः। ॐ घनश्यामाय नमः। ॐ जगत्कारणाय नमः। ॐ अव्ययाय नमः। ॐ बुद्धावताराय नमः। ॐ शान्तात्मने नमः। ॐ लीलामानुष विग्रहाय नमः। ॐ दामोदराय नमः। ॐ विराड्रूपाय नमः। ॐ भूतभव्यभवत्प्रभवे नमः। ॐ आदिदेवाय नमः। ॐ प्रह्लादपरिपालकाय नमः। ॐ श्रीमहाविष्णवे नमः। अष्टोत्तर शतनाम पूजां समर्पयामि। *(अनुष्ठान पद्धति)*

धूपम्—ॐवनस्पति रसोत्पन्नो गंधाढ्यः सुमनोहरः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्य कौ बाहू का ऊरू पादा उच्येते॥ *(ऋग्वेद १०.९०.११)*

ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि संभव कर्दम। श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥ *(ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। धूपं आघ्रापयामि।

दीपम्— आज्यं त्रिवर्ति संयुक्तं वह्निना योजितं मया। गृहाण मंगलं दीपं त्रैलोक्य तिमिरापह॥ *(स्मृति संग्रह)*

ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासी बाहू राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत॥ *(ऋग्वेद १०.९०.१२)*

ॐ आपः सृजंतु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे। नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥ *(ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। दीपं दर्शयामि। धूप दीपानंतरं आचमनीयं समर्पयामि।

नैवेद्यम्—देवस्याग्रे स्थलं संशोध्य गोमयेन मण्डलं कृत्वा तत्र शुद्धं पात्रं न्यस्य अभिघार्य निर्मलं हवि तदुपरि न्यस्य आज्येन द्रवीभूतं कृत्वा "ॐ भू र्भुवः स्वः इति गायत्र्या च प्रोक्ष्य वायु बीजं जप्त्वा निवेद्यान्नं संशोध्य इक्षिणहस्ते अग्निबीजं विलिख्य तेन हस्तेन संदह्यवामहस्ते अमृतबीजं विलिख्य तेत हस्तेन हविराप्लाव्य मूलमंत्रमष्टवारं संजप्य मंत्रामृतमयं संकल्प्य सुरभिमुद्रां बध्वा अमृतमयं भावयित्वा मल धातु रसांशं विभज्य देवस्य निवेद्य ग्रहणेच्छां कुर्यात्।

(अनुष्ठान पद्धति)

"सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि" इत्यनेन

परिषिच्य हस्ताभ्यां पुष्पैः "देवस्य जिह्वार्चीरुचि निवेद्ये निपात्य निवेदयामि भवते जुषाणेदं हविर्विभो" इति वामहस्तेन ग्रासमुद्रा प्रदर्श्य दक्षिण हस्तेन प्राणादि मुद्राः प्रदर्शयेत्। अन्नात् मलांशं धात्वंशं च परित्यज्य रसांशं देवस्य वदनार्चिषि समर्पयेत्। वं अबात्मने इति नैवेद्य मुद्रां प्रदर्शयेत्।

नैवेद्य सारं रससमर्पणात् जातं सुधांशं देवे समर्प्य अंललिमुद्रां बध्वा नैवेद्यसार रससमर्पित जातामृतमय सुधांशुना पुनः पुनः वर्धितं देवं हृन्मूर्ति देवं ध्यायन् स्व स्व मूलमन्त्रं यथा शक्ति जप्त्वा।

कलश के आगे स्थल शुद्धिकर गोमय से शुद्धिकर चतुरस्त्र मण्डल को बनाकर उस पर शुद्ध पात्र को रखें। पात्र में थोडा सा घी डालें। उस पात्र में निर्मल हविस् (नैवेद्य पदार्थ को) को घी पर रखें उस हविस् को घी से भिगोयें। गायत्री मंत्र से नैवेद्य का प्रोक्षण करें। यंयं यं" इस वायु बीज को जपकर हविस् को शुद्ध करें। दाहिने हाथ में (रं) अग्नि बीज को लिखकर उस अग्नि से हविस् में विद्यमान कश्मलों को लजायें। (कल्पना करें) बायें हाथ में अमृत बीज (वं) को लिखकर उस हाथ से हविस् को शुद्ध करें। धोने की कल्पना करें। ॐ **नमोनारायणाय**। इस मन्त्र का आठ बार जप करें। हविस् को मत्रमय एवं अमृतमय होने की कल्पना करें। सुरभि मुद्रा से अमृतमय हुआ है मानकर मलांश, धातु अंश एवं रसांश को अलग-अलग करने की कल्पना करें।

देवता को नैवेद्य ग्रहण करने की इच्छा उत्पन्न करनी चाहिये। "सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि" इससे परिषिञ्चन करें। दोनों हाथों में पुष्प लेकर देवता का जीभ नैवेद्य तक पहुँचने का चिन्तन करें। "निवेदयामि भवते जुषाण हविर्विभो" कहकर नैवेद्य स्वीकार करने की प्रार्थना करते हुए बायें हाथ से ग्रास मुद्रा (जैसे बछडे को घास देते हैं) को दिखाकर दाहिने हाथ से—

प्राणाय स्वाहा-अङ्गुष्ठ कनिष्ठिका मिलाकर, **अपानाय स्वाहा**-अङ्गुष्ठ एवं तर्जनी मिलाकर, **व्यानाय स्वाहा**-अङ्गुष्ठ एवं मध्यमा मिलाकर, **उदानाय स्वाहा**-अङ्गुष्ठ एवं अनामिका मिलाकर, **समानाय स्वाहा**। सभी अङ्गुलियों को लिाकर। अन्न से मलांश एवं धातु के अंश को अलग कर केवल रसांश को अर्पित करने की कल्पना करें।

"वं अबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि" कहकर नैवेद्य मुद्रा का प्रदर्शन करें। अंगुष्ट एवं अनामिका मिलाने से नैवेद्य मुद्रा। नैवेद्य का सार जो रसांश था उसका भी सार अमृत का जो अंश है उसे देवता को समर्पित कर, हाथ जोडकर, नैवेद्य के सार अमृत से भगवान् को बढते हुए मानकर उसे हृदय में स्थित मानकर यथाशक्ति ॐ **नमोनारायणाय**।" इस मूल मंत्र का जप करें।

ॐ स्वादुः पवस्व दिव्याय जन्मने स्वादुरिन्द्राय सुहवीतुनाम्ने।
स्वादुर्मित्राय वरुणाय वायवे बृहस्पतये मधुमां अदाभ्यः॥ *(ऋग्वेद ९.८५.६)*
ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत। मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरजायत॥ *(ऋग्वेद १०.९०.१३)*
ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

(ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

यथा संभव नैवेद्यं निवेदयामि। **अमृतापिधानमसि** कहकर उत्तरापोशन देवें। हस्ताप्रक्षालनार्थे जलं समर्पयामि। गण्डूषार्थे जलं समर्पयामि। शुद्धाचमनार्थे जलं समर्पयामि। करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि।

ताम्बूल— पूगीफल समायुक्तं नागवल्या दलैर्युतं। चूर्ण कर्पूर संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥ *(स्मृति संग्रह-देवपूजा)*

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। क्रमुक तांबूलं समर्पयामि।

नीराजन (आरति)—ॐ अर्चंत प्रार्चत प्रियमेधा सो अर्चंत। अर्चतु पुत्रका उत पुरं न धृष्णवर्चत। (ऋग्वेद ८.६९.८)

ॐ ध्रुवाद्यौ र्ध्रुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वता इमे। ध्रुवं विश्वमिदं जगद् ध्रुवो राजा विशामयम्॥

ॐ ध्रुवं ते राजा वरूणो ध्रुवं देवो बृहस्पतिः। ध्रुवं त इन्द्रश्चाग्निश्च राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम्॥ (ऋग्वेद १०.१७३.४)

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। मंगल नीराजनंसमर्पयामि।

मंत्रपुष्प—ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदं। समूहळमस्य पांसुरे। (ऋग्वेद १.२२.१७) आ. गृ. सूत्रम्

ॐ नाभ्यां आसीदंतरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन्। (ऋग्वेद-१०.९०.१४)

ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्। सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

(ऋग्वेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्) सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। मंत्रपुष्पं समर्पयामि।

प्रदक्षिणा नमस्कार—यानि कानि च पापानि जन्मांतर कृतानि च। तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे पदे॥ (देवपूजा-स्मृति संग्रह)

ॐ सप्तास्यां सन् परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुं॥ (ऋग्वेद १०.९०.१५)

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।

यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावोदास्योऽश्वान् विंदेयं पुरुषानहम्॥ (ऋग्वेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। प्रदक्षिणा नमस्कारान् समर्पयामि।

प्रसन्नार्घ्य—ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि। तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्॥ इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यम् (कहकर तीन बार पुष्पमिश्रित जल छोडें।)

सर्वोपचार पूजनम्—ॐ छत्रं समर्पयामि। चामरेण वीजयामि। गीतं गायामि। नाट्यं नटामि। आंदोळिकामारोहयामि। अश्वमारोहयामि। गजमारोहयामि। समस्य राजोपचार देवोपचार पूजां समर्पयामि।

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥ *(ऋग्वेद १०.९०.१६)*
ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्। सूक्तं पंचदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्॥ *(ऋग्वेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। सवोपचार पूजां समर्पयामि।

प्रार्थना—**विष्णुं जिष्णुं महाविष्णुं प्रभविष्णुं महेश्वरम्। अनेकोत्पात शमनं नमामि पुरुषोत्तमम्॥**

ॐ कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुध्यात्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि॥ *(पौराणिकम्)*
ॐ ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविः ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्। ब्रह्मैव तेन गंतव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना॥ *(श्री भगवद्गीते)*

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। **अनेन पूजनेन सपरिवारः श्री विष्णुः प्रीयताम्।**

पूर्णाहुति—प्रतिदिन संक्षेप में पूर्णाहुति करनी चाहिये अन्तिम दिन विशेष रूप से करनी चाहिये।

प्रतिदिन वाला पूर्णाहुति—स्रुचि स्रुवेण द्वादशवारं आज्यं गृहीत्वा तस्यां स्रुवं ऊर्ध्वबिलं निधाय पुनरधो बिलं निक्षिप्य स्रुवाग्रे कुसुमाक्षतान् निधाय सव्य पाणिना स्रुकूस्रुवमूले धृत्वा दक्षिणपाणिना स्रुक्स्रुवं शंखमुद्रया गृहीत्वातिष्ठन् समपाद ऋजुकायः स्रुवाग्रे न्यास्त दृष्टिः प्रसन्नात्मना। स्रुवा से स्रुक में १२ बार घी डाले। स्रुक् के ऊपर स्रुवा को ऊपर मुख करके रखें, फिर उसे उल्टा करके स्रुक् के ऊपर रखें। स्रुवा के अग्रभाग में पुष्प एवं अक्षतों से पूजन करें। बायें हाथ से स्रुक् एवं स्रुवा के मूल को पकडकर, दाहिने हाथ से शंखमुद्रा से स्रुक एवं स्रुवा को पकडकर, सीधे खडे रहकर स्रुवा के अग्रभाग

को देखते हुए प्रसन्न मन से पूर्णाहुति होम करें। धामं ते वामदेव आपो जगती पूर्णाहुति होमेविनियोगः।

ॐ धामं॑ ते॒ विश्वं॒ भुव॑नम॒धि॑श्रि॒तम॒न्तः स॑मु॒द्रे हृ॒द्यं१॒॑न्तरायु॑षि।

अ॒पाम नीं के समि॒थेयआ॒भृतर॒तम॑श्याम॒ मधु॑मन्तन्तऊ॒र्मिं स्वाहा॑॥ *(ऋग्वेद ४.५८.११)*

कहकर पूर्णाहुति डालें। अद्भ्य इदं न मम। विज्योतिषेत्यस्य जारोवृशोग्निस्त्रिष्टुप्। पूर्णाहुति शेषाज्य होमे विनियोगः।

ॐ विज्योति॑षाबृह॒ता भा॑त्य॒ग्निरा॒विर्विश्वा॑निकृणुते महि॒त्वा।

प्रादे॑वीर्मा॒याः स॑हते दु॒रेवा॒ः शिशी॑ते॒ शृङ्गे॒ रक्ष॑से वि॒निक्षे स्वाहा॑॥ *(ऋग्वेद ५.२.९)*

इतना कहकर स्रुक् में शेष घी का होम करें। अग्नये इदं न मम। कहकर हाथ जोडें। विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा। विश्वेभ्यः देवेभ्य इदं न मम। स्रुक् स्रुवा में शेष बचे घी का भी होम करें। यह संस्राव कहलता है। अथावभृथस्थानीयं पूर्णपात्रजलेन मार्जनं कुर्यात्। अवभृथस्नान के जगह (बदले) पूर्णपात्र जल से मार्जन करें। पूर्वसादितं पूर्णपात्रं आस्तीर्णे बर्हिषि दक्षिणपाणिना निधाय तत्र गङ्गादि पुण्यनदीः स्मरन् दक्षिण पाणिना स्पृशन्। उत्तर में स्थापित प्रणीतापात्र के जल से अवभृथस्नान के बदले में आगे बिछाये बर्हिषि (कुशाओं) के ऊपर रखकर दाहिने हाथ से उसे छूते हुए गङ्गादि पुण्यनदियों का स्मरण करते हुए मंत्र पाठ करें।

ॐ पूर्णम॑सि पूर्णं मे॑ भूया॒ः सुपूर्णम॑सि सुपूर्णं मे॑ भूया॒ः सद॑सि॒ सन्मे॑भूया॒ः

सर्व॑मसि॒सर्वं॑ मे भूयाः। अक्षि॑तिरसि॒ मामे॑क्षेष्ठाः॥ *(यजुर्वेद)*

इति जपित्वा कुशाग्रैः प्रागादि पञ्चदिक्षुजलं मंत्रैः यथालिङ्गं सिञ्चेत्। आगे कहे जाने वाले मंत्रों से कहे जाने वाले दिशाओं में कुश के अग्र भाग से जल प्रोक्षण करें।

प्राच्यां दिशि देवा ऋत्विजो मार्जयन्ताम्। दक्षिणस्यां दिशि मासाः पितरो मार्जयन्ताम्। अप उपस्पृस। (हाथ धो लें)
प्रतीच्यां दिशि ग्रहाः पशवो मार्जयन्ताम्। उदीच्यां दिश्याप ओषधयोवनस्पतयो मार्जयन्ताम्।
ऊर्ध्वायां दिशि यज्ञः संवत्सरः प्रजापतिर्मार्जयताम्। *(यजुर्वेद)*

इति एकश्रुत्या पठन् प्रतिदिशं सिक्त्वा कुशाग्रैः स्वशिरसि मार्जयेत्। उपरोक्त मंत्रों को कहते हुए उन दिशाओं के सिञ्चन के साथ अपने पर भी सिञ्चन करें। आपो अस्मानित्यस्य देवश्रवा आपस्त्रिष्टुप्। मार्जने विनियोगः।

ॐ आपो अस्मान्मातरः शुंधयंतु घृतेननोघृतप्वः पुनंतु। विश्वं हिरिप्रंप्रवहंतिदेवीरुदिदाभ्यः शुचिरापूतएमि॥

(ऋग्वेद १०.१७.१०)

इदमापः सिंधुद्वीप आपोनुष्टुप्। मार्जने विनियोगः।

ॐ इदमापः प्रवहतयत्किंञ्चंदुरितं मयि। यद्वाहमभि दुद्रोहय द्वांशे पउतानृतं॥ *(ऋग्वेद १०.६.८)*

सुमित्र्यान आप ओषधयः सन्तु। इत्येतैर्मंत्रांते मार्जनं कृत्वा। उपरोक्त मंत्रों से मार्जन करें॥

दुर्मित्र्यास्तस्मैसंतु योस्मान्द्वेष्टियं चवयं द्विष्मः। *(यजुर्वेद-आरण्यक)*

इति निर्ऋति देशे कुशाग्रैः अपः सिञ्चेत्। उपरोक्त मंत्र को कहकर नैऋत्य में कुशाग्रभाग से जल प्रोक्षण करें। ततो ब्रह्मा यजमान वामपार्श्वेस्थित पत्न्यंजलौ तदभावे पूर्णपात्रस्थं जलं यजमान पव स्व वामपाणावुत्ताने बर्हिर्निधाय तत्र दक्षिणपाणिना पूर्णपात्रं आदाय जलं प्रत्यड़्मुखं निषिच्य। इसके बाद ब्रह्मा यजमान के बायें पार्श्व में स्थित पत्नी के अंजली में स्थित पूर्णपात्र के जल से दोनों का प्रोक्षण करें। यदि यजमान अकेला हो तो बायें हाथ में बर्हिष्

(कुशा) रखकर दाहिने हाथ में पूर्णपात्र पकडकर बायें हाथ में स्थित कुशपर जल छोडें एवं उस जल को पश्चिम की ओर हाथ से गिरायें (स्वाभिमुख)

ॐ माहंप्रजां परांसिचंयानंः सयावंरीस्थनं। समुद्रेवोंनिनयानिस्वंपाथों अपीथ॥ *(श्रौत मन्त्र)*

उपरोक्त मत्र कहते हुए पाप नाश के लिए नीचे गिरे जल को समुद्र में गया मानकर हाथ में बचे शेष जल से अपना प्रोक्षरा करें। ततः कर्ता अग्नेः वायव्ये स्थितः संस्थाजपेन उपतिष्ठेत। इसके बाद यजमान अग्नि के वायव्य दिशा में खड़े होकर संस्था जप जो कि आगे बताया जा रहा है, उससे हाथ जोडकर अग्नि की प्रार्थना करें। अग्नेत्वं न इति चतसृणां गौपायना लौपायनावाबंधुः सुबंधुः श्रुतबंधुर्विप्रबंधुश्च एकैकर्चा ऋषयः। अग्निर्देवता। द्विपदाविराट्छंदः। अग्न्युपस्थाने विनियोगः।

ॐ अग्नेत्वंनो अंतंमउतत्राता शिवो भंवावरूथ्यंः। वसुंरग्निर्वसुंश्रवा अच्छांनक्षिद्युमत्तंमंरयिंदाः॥ *(ऋग्वेद ५.२४.१-२)*
सनोंबोधिश्रुधीहवं मुरुष्याणों अघायतः संमस्मात्। तंत्वांशोचिष्ठदीदिवः सुम्नायंनूनमींमहेसखिंभ्यः॥ *(ऋग्वेद ५.२४.३-४)*
ॐ चंमे स्वरंश्च मे यज्ञोपंतेनमंश्च। यत्तेंन्यूनं तस्मैंत उपंयत्तेतिरिक्तं तस्मैं ते नमंः॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

अग्नये नमः। ॐस्वस्ति। श्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां विद्यां बुद्धिं श्रियंबलं। आयुष्यं तेज आरोग्यं देहि मे हव्यवाहन॥ मानस्तोक इत्यस्य कुत्सोरुद्रोजगती। विभूति ग्रहणे विनियोगः।

ॐ मानंस्तोके तनंये मानं आयौ मानो गोषुमानो अश्वेंषुरीरिषः।
वीरान्मानोंरुद्र भामितोवंधीर्ह विष्मंतः सदमित्वां हवामहे॥ *(ऋग्वेद १.११४.८)*

इति स्रुव बिलपृष्ठेनैशानीगतां विभूतिं गृहीत्वा। उपरोक्त मंत्र पाठ करते हुए स्रुवा के बिल के पिछले हिस्से के ईशान भाग से भस्म (होम करें) को निकालें। ॐत्र्यायुषं जमदग्नेरिति ललाटे। (ललाटे में भस्म लगायें) ॐकश्यपस्य त्र्यायुषं इति कंठे। (कण्ठ में भस्म लगायें) ॐअगस्त्यस्य त्र्यायुषं

इति नाभौ। (नाभि में भस्म लगायें) ॐ यद्देवानां त्र्यायुषमिति दक्षिणस्कंधे (दाहिने भुजा में भस्म) ॐ तन्मे अस्तु त्र्यायुषं इति वाम स्कंधे (बाये कंधे पर) ॐ सर्वमस्तु शतायुषं इति शिरसि धारयेत् (सिर से भस्म लगायें) ततः परिस्तरणानि विसृज्य अग्निं परिसमूह्य परिषियुक्ष्य। अग्नि का परिसमूहन एवं परिषिञ्चन करें। इसके बाद जिस प्रकार से डाले थे उसी प्रकार पूर्व से उन परिस्तरणों को अग्नि में डाल दें (विसर्जन) हाथों में जल लेकर पूर्वदिशा से प्रारम्भ करके प्रदक्षिणाकार में चारों ओर मार्जन करने की क्रिया परिसमूहन कहलाता है। पहले हाथ धो लें फिर जलयुक्त हाथ से पूर्वादि दिशाओं को स्पर्श करना चाहिये। पुनः हाथ धोकर इसी क्रिया दो बार और करना चाहिये। यह क्रिया परिसमूहन कहलाता है। अग्नेरैशानतस्त्रिरंभसा परिषेचनं। हाथ में जल लेकर ईशान्य से ईशान्य तक तीन बर जल से परिषिञ्चन करें। विश्वानिन इति तिसृणामात्रेयो वसुश्रुतोग्निस्त्रिष्टुप् द्वोरर्चने अंत्यायाउपस्थाने विनियोगः।

ॐ विश्वानिनो दुर्गहा जातवेदः। (पूर्व में पुष्पाक्षत से अग्निदेव का पूजन करें), **ॐ सिन्धुं ननावादुरितातिपर्षि।** (आग्नेय में पूजन करें), **ॐ अग्ने अत्रिवन्नमंसागृणानः।** (दक्षिण में पूजन करें), **ॐ अस्माकं बोध्यवितातनूनां।** (नैर्ऋत्य में पूजन करें), **ॐ यस्त्वांहृदाकीरिणामन्यमानः।** (पश्चिम में पूजन करें) *(ऋग्वेद ५.४.६-१०-११)*, **ॐ अमर्त्यं मर्त्योजोहवीमि।** (वायव्य में पूजन करें), **ॐ जातवेदोयशो अस्मासुधेहि।** (उत्तर में पूजन करें), **ॐ प्रजाभिरग्ने अमृतत्वमश्यां।** (ईशान्य में पूजन करें), **ॐ यस्मैत्वं सुकृते जातवेद उलोकंमग्नेकृणवस्योनं। अश्विनं सपुत्रिणंवीरवंतं गोमंतं रयिंनंशते स्वस्ति॥** *(ऋग्वेद ५.४.१०-११)* इन मंत्रों को कहकर पूजन एवं नमस्कार करें।

ब्रह्मा को एवं ऋत्विजों को दक्षिणा देवें।

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपो होमक्रियादिषु। न्यूनं संपूर्णतां यातु सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥ ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविः ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्। ब्रह्मैव तेन गंतव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना॥ अनेन सग्रहमख विष्णु सर्वाद्भुतशान्ति होमकर्मणा सपरिवारः भगवान् श्री विष्णुः नारायण प्रीयताम्। यागमध्ये मंत्रतंत्र विपर्यासादि

सर्वदोष परिहारार्थं नामत्रय जपं करिष्ये। ॐअच्युताय नमः। ॐअनंताय नमः। ॐगोविन्दाय नमः। ॐहराय नमः। ॐमृडाय नमः। ॐशंभवे नमः। इति जपेत्। कर्म के अन्त में पवित्र का विसर्जन करके दो बार आचमन करें। ॐतत् सत्॥ यहाँ पर मध्याह्न तक का कार्यक्रम संपन्न हुआ।

मध्याह्न य सांयकाल का कार्यक्रम—यह प्रारम्भ दिन से अन्तिम दिन के पहले दिन तक समान है। जप का विवरण अगले पन्ने (भाग) में है। आचम्य प्राणानायम्य उद्दिष्ट मंत्रजपं कुर्यात्। आचमन करके प्राणायाम करें। फिर उद्देशित मंत्रों का जप संपन्न करें। जप मंत्रों का संपूर्ण विवरण अगले भाग में है।

सर्वाद्भुत शान्ति भाग में—**जप के मन्त्र—महाशान्ति सूक्त—शन्नइन्द्राग्नि सूक्त—प्रधान विष्णु मन्त्र जप—नवग्रह जप**

द्वितीय दिन द्वितीय प्रहर सम्पन्न

तृतीय / चतुर्थ / पञ्चम दिन प्रथम प्रहर

देह शुद्धि—येभ्यो मातेत्यस्य गयःप्लात ऋषिः। विश्वेदेवा देवताः। जगतीछन्दः। एवापित्रेत्यस्य वामदेव ऋषिः। बृहस्पतिर्देवता। त्रिष्टुप् छन्दः। मनुष्य गन्ध निवारणे विनियोगः।

ॐ येभ्यो मातामधुमत् पिन्वते पयः पीयूषं द्यौरदितिरद्रिबर्हाः।

उक्थशुष्मान् वृषभरान्त्स्वप्नसस्ताँ आदित्याँ अनुमदास्वस्तये॥ *(ऋकृवेद १०.६३.३)*

ॐ एवापित्रे विश्वदेवाय वृष्णे यज्ञैर्विधेम नमसा हविर्भिः।

बृहस्पते सुप्रजा वीरवन्तो वयं स्याम पतयो रयीणाम्॥ *(ऋकृवेद ४.५०.६)*

आचमन मन्त्र—ऋग्वेदाय स्वाहा। यजुर्वेदाय स्वाहा। सामवेदाय स्वाहा। (स्वाहा मन्त्र से जल पीना चाहिये।) अथर्ववेदाय नमः। इतिहास पुराणेभ्यो नमः। अग्नये नमः। वायवे नमः। प्राणाय नमः। सूर्याय नमः। चन्द्राय नमः। दिग्भ्यो नमः। इन्द्राय नमः। पृथिव्यै नमः। अन्तरिक्षाय नमः। दिवे नमः। ब्रह्मणे नमः। विष्णवे नमः। सदाशिवाय नमः। द्विराचम्य .. इस प्रक्रिया को दुबारा करना चाहिये।

पवित्र धारणम्—पवित्रन्त इत्यनयोः आङ्गीरसः पवित्र ऋषिः। पवमानः सोमो देवता। जगतीछन्दः। पवित्राभिमंत्रणे, धारणे विनियोगः।

ॐ पवित्रन्ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि विश्वतः।

अतप्ततनूर्न तदामो अश्नुतेशृता सइद्वहन्तस्तत् समाशत॥ *(ऋग्वेद ९.८३.१)*

ॐ तपोष्पवित्रं विततं दिवस्पदे शोचन्तो अस्य तन्तवो व्यस्थिरन्।

अवन्त्यस्य पवी॒तारं मा॒शवो॑ दि॒वस्पृ॒ष्ठमधि॑तिष्ठन्ति॒ चेत॑सा ॥ *(ऋग्वेद ९.८३.२)*

ॐभूर्भुवः स्वः कहकर जल सिञ्चन करें॥ (इन मन्त्रों से पवित्र शुद्धिकर धारण करना चाहिये आसन के नीचे दो कुश डाल लेना चाहिये।)

प्राणायाम—प्रणवस्य परब्रह्म ऋषिः, दैवी गायत्री छन्दः, परमात्मा देवता प्राणायामे विनियोगः।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं। ॐ तत्स॑वि॒तुर्वरे॑ण्यं॒ भर्गो॑ दे॒वस्य॑ धीमहि।
धियो॒ यो नः॑ प्रचो॒दया॑त्। ॐ आपो॒ ज्योती॒रसो॒मृतं॒ ब्रह्म भूर्भु॑वस्स्व॒रोम्। *(ऋग्वेद ३.६२.१०)*

करन्यासः ॐ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ तर्जनीभ्यां नमः। ॐ मध्यमाभ्यां नमः। ॐ अनामिकाभ्यां नमः। ॐ कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः

अङ्गन्यास-हृदयादिन्यास ॐ हृदयाय नमः। ॐ शिरसे स्वाहा । ॐ शिखायै वषट् । ॐ कवचाय हुम्। ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ अस्त्राय फट्

ॐ भूर्भुवः स्वरोमिति दिग्बन्धः

आसन शुद्धि—ॐ स्यो॒ना पृ॑थिवि भवानृक्ष॒रा नि॒वेश॑नी। यच्छा॑ नः॒ शर्म॑ स॒प्रथः॑।' *(१५ मन्त्र-२२ सूक्त-प्रथम मण्डल)* इस मन्त्र से जल प्रोक्षण करने से भूमि शुद्ध होती है।

शिखाबन्धनम्—

ऊर्ध्वकेशि विरूपाक्षि मांसशोणित भक्षणे। तिष्ठ देवि शिखाबन्धे चामुण्डे ह्यपराजिते॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

(इस मन्त्र से शिखाबन्धन करना चाहिये।)

महासंकल्प—हेमाद्रि संकल्प

ॐस्वस्ति श्री समस्तजगदुत्पत्तिस्थितिलयकारणस्य रक्षा-शिक्षा-विचक्षणस्य प्रणतपारिजातस्य अशेषपराक्रमस्य श्रीमदनन्तवीर्यस्यादि नारायणस्य अचिन्त्यापरिमितिशक्त्या ध्रियमाणानां महाजलौघमध्ये परिभ्रमताम् अनेक कोटि ब्रह्माण्डानाम् एकतमे अव्यक्त- महादहंकार - पृथिव्यप्तेजो वाय्वाकाशाद्याव रणैरावृते अस्मिन् महति ब्रह्माण्डखण्डे आधारशक्तिश्रीमदादि- वाराह-दंष्ट्राग्र- विराजिते कूर्मानन्त- वासुकि-तक्षक-कुलिक - कर्कोटक -पद्म - महापद्म

- शंखाद्यष्टमहानागैर्ध्रियमाणे ऐरावत-पुण्डरीक-वामन-कुमुद-अञ्जन-पुष्पदन्त-सार्वभौम-सुप्रतीकाष्टदिग्गजोपरिप्रतिष्ठितानाम् अतल-वितल-सुतल-तलातल-रसातल-महातल-पाताल-लोकनामुपरिभागे भुवर्लोक-स्वर्लोक-महर्लोक -जनोलोक - तपोलोक - सत्यलोकाख्य षड्लोकानामधोभागे भूर्लोके चक्रवाल शैल - महावलयनागमध्यवर्तिनो महाकाल महाफणि राजशेषस्य सहस्रफणामणिमण्डल मण्डिते दिग्दन्तिशुण्डादण्डोद्दण्डितेअमरावत्यशोकवती भोगवती - सिद्धवती- गान्धर्ववती - काशी- काञ्ची - अवन्ती अलकावती यशोवतीतिपुण्यपुरीप्रतिष्ठिते लोकालोकाचलवलयिते लवणेक्षु- सुरा सर्पि - दधि क्षीरोदकार्णवपरिवृते जम्बू-प्लक्ष-कुश-क्रौञ्च - शाक शाल्मलिपुष्कराख्यसप्तद्वीपयुते इन्द्र-कांस्य-ताम्र-गभस्ति-नाग-सौम्य-गान्धर्व-चारणभारतेतिनव-खण्डमण्डिते सुवर्णगिरिकार्णिकोपेत महासरोरुहाकार पञ्चाशत् कोटि योजनविस्तीर्णभूमण्डले अयोध्या मथुरा-माया-काशी-काञ्ची-अवन्तिकापुरी द्वारावतीतिमोक्षदायिकसप्तपुरीप्रतिष्ठिते सुमेरु निषधत्रिकूट-रजतकूटाम्रकूट-चित्रकूट-हिमवद्विन्ध्याचलानां महापर्वत प्रतिष्ठिते हरिवर्ष किंपुरुषयोश्च दक्षिणे नवसहस्रयोजन विस्तीर्णे मलयाचल-सह्याचल विन्ध्याचलानामुत्तरे स्वर्णप्रस्थ-चण्डप्रस्थ-चान्द्र-सूक्तावान्तक-रमणक महारमणक-पाञ्चजन्य-सिंहल लंङ्केति-नवखण्डमण्डिते गंगा-भागीरथी-गोदावरी- क्षिप्रा-यमुना- सरस्वती-नर्मदा-ताप्ती-चन्द्रभागा-कावेरी-पयोष्णी-कृष्णावेणी-भीमरथी-तुंगभद्रा-ताम्रपर्णी- विशालाक्षी- चर्मणवती-वेत्रवती- कौशिकी-गण्डकी- विश्वामित्रीसरयूकरतोया- ब्रह्मानन्दामहीत्यनेक पुण्यनदी विराजिते भारतवर्षे भरतखण्डे जम्बूद्वीपे कूर्मभूमौ साम्बवती कुरुक्षेत्रादि समभूमौ आर्यावर्तान्तरगते ब्रह्मावर्तैकदेशे गंगायमुनयोर्मध्यभागे योजनव्यापिविस्तीर्णक्षेत्रे,ज्ञानयुगप्रवर्तकानां महर्षि महेशयोगिवर्याणां परमाराध्यगुरुदेवै : अनन्तश्रीविभूषितैः ज्योतिष्पीठाधीश्वरैः जगद्गुरु श्री मच्छङ्कराचार्य ब्रह्मानन्दसरस्वतीमहाभागैः सम्पादितशतमखकोटि होम महायज्ञपावितायां भूमौ.............................. सकलजगत्स्रष्टुः परार्धद्वय जीविनो ब्रह्मणः द्वितीये परार्धे एकपञ्चाशत्तमे वर्षे प्रथम मासे प्रथम पक्षे प्रथम दिवसे अह्नस्तृतीये यामे तृतीये मुहूर्ते रथन्तरादिद्वात्रिंशत्कल्पानांमध्ये अष्टमे श्वेतवाराहकल्पे स्वायंभुवादि मन्वन्तराणां मध्ये सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे कृत त्रेताद्वापरकलिसंज्ञकानां चतुर्णां युगानां मध्ये वर्तमाने अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमपादे प्रभवादि षष्ठि सम्वत्सराणां मध्ये........................ ....संवत्सरे..................................अयने...............................ऋतौ ....मासे ....पक्षे

.... तिथौ .... वासरे .... नक्षत्रे .... योगे .... करणे ....राशि स्थिते श्रीसूर्ये .... राशि स्थिते श्रीचन्द्रे...................... राशि स्थिते श्रीकुजे................................ राशि स्थिते श्रीबुधे .... राशि स्थिते श्रीदेवगुरौ .... राशि स्थिते श्रीशुक्रे......................... राशि स्थिते श्रीशनौ............ राशि स्थिते श्रीराहौ................ राशि स्थिते श्रीकेतौ.............एवं गुण विशेषण विशिष्टायां पुण्यायाम् महापुण्य शुभ तिथौ.......................................

गुरू प्रार्थना —

नमो गुरुभ्यो गुरुपादुकाभ्यो नमः परेभ्यः परपादुकाभ्यः।
आचार्य सिद्धेश्वर पादुकाभ्यो नमोऽस्तु लक्ष्मीपति पादुकाभ्यः॥ *(श्रृङ्गेरी मठीय आचार्य प्रार्थनम्)*

श्री गुरु परमगुरु परमेष्ठी गुरु सद्गुरु पादुकाभ्यो नमो नमः।

भूतोच्चाटन मन्त्र—

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुविसंस्थिताः। ये भूता विघ्नकर्तारः ते गच्छन्तु शिवाज्ञया॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-आसन विधि प्रकरण)*
ॐ अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम्। सर्वेषामविरोधेन ब्रह्मकर्म समारभे॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-आसन विधि प्रकरण)*
ॐ तीक्ष्णदंष्ट्रमहाकाय कल्पान्ते दहनोपम। भैरवाय नमस्तुभ्यं अनुज्ञां दातुमर्हसि॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

इति भैरवं नमस्कृत्य। (इन मन्त्रों से भूतोच्चाटन कर भैरव जी से यज्ञ रक्षा की प्रार्थना करते हैं।)

गणपति प्रार्थना—गणानान्त्वा इति मन्त्रस्य गृत्समदऋषिः। गणपतिर्देवता। जगती छन्दः। गणपति प्रार्थने विनियोगः।

ॐ ग॒णाना॑न्त्वा ग॒णप॑तिं हवामहे क॒विं क॑वी॒नामु॑प॒मश्र॑वस्तमं।
ज्ये॒ष्ठ॒राजं॒ ब्रह्म॑णां ब्रह्मणस्पत॒ आनः॑ शृ॒ण्वन्नू॒तिभिः॑ सीद॒साद॑नम्॥ *(ऋग्वेद २.२३.१)*

(इन मन्त्रों से गणपति प्रार्थना कर पुष्पाक्षत छोड़ना चाहिये।)

त्रिवाक्येण पुण्याह वाचन—

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयामदेवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरंगैस्तुष्टुवांसंस्तनूभिर्व्यशेमदेवहितं यदायुः। (ऋग्वेद १.८९.८)

ॐ द्रविणोदा द्रविणसस्तुरस्य द्रविणोदाः सनरस्य प्रयंसत्।
द्रविणोदावीरवतीमिषंनोद्रविणोदारासतेदीर्घमायुः॥ (ऋग्वेद १.९६.८)

ॐ सवितापश्चातात्सवितापुरस्तात्सवितोत्तरात्तात्सविता धरात्तात्।
सवितानः सुवतु सर्वतातिं सवितानोरासतां दीर्घमायुः॥ (ऋग्वेद १०.३६.१४)

ॐ नवो नवो भवति जायमानोह्नांकेतुरुषसामेत्यग्रम्।
भागं देवेभ्यो विदधात्यायन्प्रचंन्द्रमास्तिरते दीर्घमायुः॥ (ऋग्वेद १०.८५.१९)

ॐ उच्चादिवि दक्षिणावंतो अस्थुर्येअश्वदाः सहतेसूर्येण। हिरण्यदा अमृतत्वं भजंतेवासोदाः सोमप्रतिरन्त आयुः॥
(ऋग्वेद ६.६५.६)

ॐ आपउंदंतु जीव से दीर्घायुत्वाय वर्चसे। सस्त्वाहृदा कीरिणामन्यमानो मर्त्यं मर्त्योजोहवीमि॥
(यजुर्वेद १ काण्ड-२ प्रश्न-१ अनुवाक-१ मन्त्र)

ॐ जातवेदोयशो अस्मासु धेहि प्रजाभिरग्ने अमृतत्वमश्याम्। यस्मैत्वं सुकृते जातवेद उलोकमग्ने कृणवस्योनम्।
अश्विनं सपुत्रिणं वीरवंतं गोमंतंरयिंनशते स्वस्ति। संत्वा सिञ्चामि यजुषा प्रजामायुर्धनं च॥
(यजुर्वेद १ काण्ड-६ प्रश्न-१ अनुवाक-१ मन्त्र)

ॐ उद्गातेवंशकुनेसामंगायसि ब्रह्मपुत्र इंव सवंनेषु शंससि।
वृषेव वाजीशिशुंमतीरपीत्यां सर्वतोंनः शकुनेभद्रमावंद विश्वतोंनः शकुनेपुरायं मावंद ॥ (ऋग्वेद २.४२.२)
याज्ययायजतिप्रत्तिर्वैयाज्यापुरायैवलक्ष्मीः पुरायामेवतल्लक्ष्मीं संभावयति पुरायां लक्ष्मीं संस्कुरुते ॥
यत्पुरायं नक्षत्रं। तद्बट्कुंर्वी तोपव्युषं। यदावैसूर्यं उदेतिं। अथ नक्षंत्रंनैतिं। यावंति तत्र सूर्यो गच्छेत्।
यत्रं जघन्यं पश्येत्। तावंतिकुर्वीतयत्कारीस्यात्। पुरायाह एव कुंरुते। तानि वा एतानिं यमनक्षत्राणिं।
यान्येव देंवनक्षत्राणिं। तेषु कुर्वीत यत्कारीस्यात्। पुरायाह एव कुंरुते। (यजुर्वेद - ब्राह्मण)

सर्वेषां महाजनान्नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणायाद्यकरिष्यमाणविष्णुसर्वाद्भुतशान्त्याख्यायकर्मणः पुरायाहं भवंतो ब्रुवंत्विति त्रिर्वदेत्।
(यजमान अपने सकुटुम्ब प्रणाम करते हुए आज संपन्न होने वाले कर्म के लिए पुरायाह की याचना करते हुए तीन बार कहते हैं। जिसका प्रत्युत्तर ब्राह्मण तीन बार देते हैं।)

१. ॐ पुरायाहं भवन्तो ब्रुवन्तु। ॐ अस्तु पुरायाहम्। २. ॐ पुरायाहं भवन्तो ब्रुवन्तु। ॐ अस्तु पुरायाहम्। ३. ॐ पुरायाहं भवन्तो ब्रुवन्तु। ॐ अस्तु पुरायाहम्।

ॐ स्वस्तयें वायुमुपंब्रवामहै सोमं स्वस्ति भुवंनस्य यस्पतिंः।
बृहस्पतिं संर्वगणं स्वस्तयें स्वस्तयं आदित्या सों भवन्तु नः ॥ (ऋग्वेद ५.५१.१२)
आदित्य उदयनीयः पथ्यैवेतः स्वस्त्याप्रयंतिपश्यांस्वस्तिमभ्युद्यंतिस्वस्त्येवेतः प्रयंतिस्वस्त्युद्यंति स्वस्त्युद्यंति ॥ (स्मृति संग्रह)
ॐ स्वस्तिन इन्द्रोंवृद्धश्रंवाःस्वस्ति नंः पूषा विश्ववेंदाः। स्वस्तिनस्तार्क्ष्यो अरिंष्टनेमिःस्वस्तिनो बृहस्पतिंर्दधातु।
(ऋग्वेद १.८९.६)

ॐ अष्टौ देवा वसंवः सोम्यासंः ॥ चतंस्त्रोदेवीरुजरा श्रविंष्ठाः।

ते यज्ञं पांतु रजंसः पुरस्तांत्। संवत्सरीणांममृतँ स्वुस्ति। (यजुर्वेद - ब्राह्मण)

सर्वेषां महाजनान्नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणायाद्यकरिष्यमाणाविष्णुसर्वाद्भुतशान्त्याख्याय कर्मणः स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु। (ब्राह्मण कहते हैं)—ॐ आयुष्मते स्वत्ति। इन उपरोक्त वाक्यों को तीन बार दोहराना चाहिये। इसके बाद पुनः पहले जैसे उत्तर क़लश से जल नीचे रखे बड़े पात्र में थोड़ा-थोड़ा कर गिराते हुए मंत्रपाठ करें।

ॐ ऋध्यामुस्तोमँ सनुयामुवाजमानो मंत्रं सुरथे होपंयांतं।
यशोनपक्कं मधुगोष्वंतराभूतांशों अश्विनोः काममप्राः॥ (ऋग्वेद १०.१०६.११)
सर्वामृद्धिमृध्नुयामितितं वैतेजसैवपुरस्तात् पर्यभवच्छन्दोभिर्मध्यतोक्षरै
रुपरिष्टाद्गायत्र्या सर्वतो द्वादशाहंपरिभूयसर्वामृद्धिमार्ध्नोत्सर्वामृद्धिमृध्नोति य एवं वेद॥
ऋध्यास्मंहव्यैर्नमंसोपसद्यं॥ मित्रं देवं मित्रधेयंनो अस्तु॥ अनूराधान् हविषांवर्धयंतः।
शतंजीवेमशरदः सवींराः। त्रीणिं-त्रीणि वै देवानांमृद्धानिं।
त्रीणिच्छन्दांः सित्रीणि सवनानि त्रयं इमे लोकाः। ऋध्यामेवतद्वीर्यं एषु लोकेषु प्रतिंतिष्ठति॥ (यजुर्वेद - ब्राह्मण)

इसके बाद पुनः नीचे लिखे वाक्यों को तीन बार यजमान कहें। एवं ब्राह्मण प्रत्युत्तर दें। सर्वेषां महाजनान्नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणायाद्य करिष्यमाणविष्णुसर्वाद्भुतशान्त्याख्याय अस्य कर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु (ब्राह्मण कहते हैं)—ॐ ऋध्यतां। इन उपरोक्त वाक्यों को तीन बार दोहराना चाहिये। इसके बाद मन्त्र पाठ करते हुए उत्तरकलश से नीचे रखे पात्र में जल छोड़ना चाहिये।

ॐ श्रिये जातः श्रियऽआनिरियाय श्रियंवयोंजरितृभ्योंदधाति।
श्रियं वसांना अमृतत्वमांयन् भवंतिसत्यासंमिथामितद्रौ॥ (ऋग्वेद ९.९४.४)

श्रिय एवैनं तच्छ्रियामादधाति संततमृचा वषट् कृत्यं संतत्यैसंधीयते प्रजया पशुभिर्यएवं वेद।
यस्मिन्ब्रह्माभ्यजंय त्सर्वमेतत्॥ अमुञ्चंलोकमिदमूंचसंर्व॥ तन्नो नक्षंत्रमभिजिद्विजित्यं॥
श्रियं दधात्वहंणीयमानं॥ अहे बुध्निय मंत्रंमे गोपाय। यमृषंयस्त्रयीविदाविदुः॥
ऋचः सामानि यजूंषि। सा हि श्रीरमृतासताम्। *(यजुर्वेद - ब्राह्मण)*

इसके बाद पुनः नीचे लिखे वाक्यों को तीन बार यजमान कहें एवं ब्राह्मण प्रत्युत्तर दें। सर्वेषां महाजनान्नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणायाद्य करिष्यमाण विष्णुसर्वाद्भुतशान्त्याख्याय कर्मणः श्रीरस्त्विति भवंतो ब्रुवन्तु। (ब्राह्मण कहते हैं)—ॐ अस्तु श्रीः। इन वाक्यों को तीन बार कहना चाहियें। वर्षशतं परि पूर्णमस्तु। गोत्राभिवृद्धिरस्तु। कर्माङ्ग देवता प्रीयताम्। (ब्राह्मण आशीर्वाद देते हैं—सौ साल पूर्ण हो। आप की वंश वृद्धि हो। कर्माङ्ग देवता आप पर प्रसन्न हो।)

ॐ शुक्रेभिरंगैरज आततन्वान् क्रतुं पुनानः कविभिः पवित्रैः।
शोचिर्वसानः पर्यायुरपां श्रियोमिमीते बृहतीरनूंनाः॥ *(ऋग्वेद ३.१.५)*
तदप्येषः श्लोकोभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे॥ आविक्षितस्य कामप्रेः विश्वेदेवाः सभासद इति॥

पुण्याह वाचन फल समृद्धिरस्तु—पुण्याहे कर्माङ्ग देवता प्रीयन्ताम्।

मातृका पूजनम्—पान सुपारी दक्षिणा के ऊपर कूर्च (कुश से बना) रखकर उसमें मातृका आवाहन करके उनमें मातृका पूजन करना चाहिये। नान्दी मण्डल के आगे मातृका पूजन करना चाहिये।

ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा। वाराही तथेन्द्राणी चामुण्डाः सप्तमातरः॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

सात मातृकायें।

गौरीपद्मा शचीमेधासावित्रीविजयाजया। देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*
धृतिः पुष्टिस्तथातुष्टिरात्मनः कुलदेवताः (गौर्यादि षोडश मातृकायें)। ब्राह्म्यादि सप्त मातृः गौर्यादि षोडश मातृः आवाहयामि। विनायकं आवाहयामि। दुर्गा आवाहयामि। क्षेत्रपालं आवाहयामि। गणपतिं आवाहयामि। मातृस्वसारं आवाहयामि। पितृस्वसारं आवाहयामि। एताभ्यो देवताभ्यो नमः। ध्यायामि। ध्यानं समर्पयामि। इनका षोडशोपचार पूजन करना याहिये। **उदाहरण**—आवाहित देवताभ्यो नमः। आसनं समर्पयामि आदि। षोडशोपचार पूजन संक्षेप में करें। (गणेश पूजन में है।)

अन्त में पुष्पांजलि मन्त्र—ॐ गौरीर्मिमाय सलिलानितक्षत्येकपदीद्विपदी सा चतुष्पदी।
अष्टापदी नवपदीबभूवुषीं सहस्राक्षरापरमेव्योमन्॥ *(ऋग्वेद १.१६४.४१)*

ॐभूर्भुवः स्वः आवाहित देवताभ्यो नमः। मन्त्रपुष्पं समर्पयामि।

तदस्तु मित्रावरुणा तदग्ने शं योरस्मभ्यमिदमस्तुशस्तं। अशीमहिं गाधमुत प्रतिष्ठां नमोदिवे बृहते सादनाय॥ *(ऋग्वेद ५.४७.७)*

गृहावै प्रतिष्ठासूक्तंतत्प्रतिष्ठि ततमयावाचाशंस्तव्यं तस्माद्यद्यपिदूर इव पशूँल्लभते गृहानेवैनानाजिगमिषति गृहाहिपशूनां प्रतिष्ठाप्रतिष्ठा। इन मन्त्रों को पढकर पुष्पाक्षत चढ़ायें।

मातृका पूजन समाप्तम्

आवाहित देवनान्दी पूजन—देवनान्दी में मातृका पूजन आवश्यक नहीं है। यज्ञ,(अतिरुद्र, सहस्रचण्डी) रथोत्सव आदि सार्वजनिक आचरणों में देवनान्दी ही करना चाहिये। **क्रतुदक्षावुत्सवे तु।** इस वाक्य से क्रतु एवं दक्ष नामक विश्वेदेव देवता हैं। देवनान्दी में पितृदेवता चार है। अमूर्त्य।

१. अग्निष्वात्ता, २. बर्हिषदः, ३. आज्यपाः, ४. सोमपाः

संकल्प—देशकालौ संकीर्त्य करिष्यमाण कर्माङ्ग भूतं नान्दीसमाराधनं करिष्ये। पहले दो मण्डल बनायें।

दत्वातण्डुलपूर्णपात्रयुगले संकल्प्य भुक्तिं तयोः।

ताम्बूलादि सुदक्षिणान्तिकमनुज्ञातः समुद्वाहयेत् ॥ *(लक्षण संहिता)*

दो पात्रों में चावल, काजू किशमिश, फल, दाल, आदि दो मण्डलों पर रखें।

ॐ आनो भद्राः क्रतवो यंतुविश्वतोदब्धसो अपरीता स उद्भिदः।
देवानो यथासदमिद्वृधे असन्न प्रायुवोरक्षितारो दिवे दिवे। *(ऋग्वेद १.८९.१)*

ॐ क्रतुदक्षसंज्ञका विश्वेदेदेवाः—नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूभुर्वस्वः इयं च वृद्धिः। इससे दुर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें। अग्निष्वात्ताः पितृगणाः नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूभुर्वः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोड़ें।

बर्हिषदः पितृगणाः—नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें। **आज्यपाः पितृगणाः**—नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दुर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें। **सोमपाः पितृगणाः** नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें।

ॐ क्रतुदक्ष संज्ञका विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणायोः इदमासनगंधाद्युपचार कल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध अक्षत पुष्प दूर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें।**ॐ अग्निष्वात्ताः पितृगणाः** नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणायोः इदं आसनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध अक्षत पुष्प दूर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें। **बर्हिषदः पितृगणाः** नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणायोः इदमासनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध अक्षत पुष्प दुर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें। **आज्यपाः पितृगणाः** नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणायोः इदमासनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध, अक्षत, पुष्प, दुर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें।

सोमपाः पितृगणाः नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणायोः इदमासनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भूवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध, अक्षत, पुष्प, दुर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें। ॐभूर्भुवः स्वः सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि कहकर मण्डल पर रखे दोनों पात्रों को परिषेचन कर दक्षिणादिशा के पात्र को "इदं

विश्वेभ्यो देवेभ्यः'' उत्तरदिशा के पात्र को ''इदं नान्दीमुख पितृभ्यः'' कहकर दान संकल्प कर ब्राह्मणों को दे देवें।
क्रतुदक्षसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामं सोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणापर जल छोड़कर नीचे रखना चाहिये। **अग्निष्वात्ताः पितृगणाः** नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामंसोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणापर जल छोडकर नीचे रखना चाहिये। **बर्हिषदः पितृगणाः** नान्दीमुखाः गुग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं दमनामं सोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणापर जल छोड़कर नीचे रखना चाहिये। **आज्यपाः पितृगणाः** नान्दीमुखा युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामंसोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणापर जल छोडकर नीचे रखना चाहिये।
सोमपाः पितृगणाः नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामं सोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणा पर जल छोड़कर नीचे रखना चाहिये। आगे लिखे मन्त्रों से खड़े होकर उपस्थान करें।

ॐ उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे। अभिदेवाँऽइयंक्षते। *(ऋग्वेद ९.११.१)*
ॐ अभिते मधुना पयोथर्वाणो अशिश्रयुः। देवं देवाय देवयु। *(ऋग्वेद ९.११.२)*
ॐ स नः पवस्व शंगवे शंजनायशमर्वते। शंराजन्नोषधीभ्यः। *(ऋग्वेद ९.११.३)*
ॐ बभ्रवेनु स्वतवसेरुणाय दिविस्पृशे। सोमाय गाथमर्चत॥ *(ऋग्वेद ९.११.४)*
ॐ हस्तच्युतेभिरद्रिभिः सुतं सोमं पुनीतन। मधावाधावता मधु॥ *(ऋग्वेद ९.११.५)*
ॐ अक्षन्नमी मदन्तह्यवप्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती यो जान्विन्द्र ते हरी॥ *(ऋग्वेद १.८२.२)*
ॐ प्रजापतेनत्वदेतान्यन्यो विश्वाजातानि परिता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्यामपतयोरयीणाम्॥
(ऋग्वेद १०.१२१.१०)

कृतस्य देवनान्दी समाराधनस्य प्रतिठाफलसिद्ध्यर्थं द्राक्षामलक निष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृये। कहकर हाथ में दक्षिणा लेकर उस पर जल छोडकर

नीचे रख दें।

प्रार्थना—अग्निष्वात्वा बर्हिषदः आज्यपाः सोमपास्तथा। एते भवन्तु मे प्रीताः प्रयच्छन्तु च मङ्गलम्।। कहकर जल छोड़ें। **अनेन नान्दीसमाराधनेन नान्दीमुखदेवताः प्रीयंताम्। आचम्य**—मंगल तिलक रकें। **विसर्जन**—यज्ञ के अन्तिम दिन विसर्जन करें।

ॐ इळांमग्नेपुरुदंसँसनिंगोः शंश्वत्तमं हवंमानायसाध। स्यान्नंः सूनुस्तनंयो विजावाग्ने सातेंसुमतिर्भूत्वस्मे।। *(ऋग्वेद ३.१५.७)*

ॐ इळामुपह्वयते पशवो वा इळापशूनेवतदुपह्वयते। पशून्यजमानेदधाति दधाति।। *(ऋग्वेद ब्राह्मण)*

यथाचारं हिरण्येन भाण्डवादनं। मन्त्र कहते हुए सिक्के से थाली के निचले भाग में शब्द करना चाहिये। (घण्टा वादन के बदले)

१. सर्वाद्भुत शान्ति याग के लिए-१—आचाय, एक कुण्ड में १-ब्रह्मा, ईशान्य में १-कलश पूजन, होमाङ्ग पूजन दक्षिण में १-इतर पूजन, पश्चिम में १-तर्पण के लिए, परिचारक (कर्मचारी) १-एक ब्राह्मण-कुल ५ पण्डित रहने पर

१५ पण्डित से संपन्न कर्म में—२-१५ पण्डित कर्म में (एक कुण्ड में), २-१५ पण्डित से संपन्न याग में—१ आचार्य, १ ब्रह्मा, १-कलश पूजन, १-इतर पूजन, १-तर्पण पूजन, १-परिचारक ब्राह्मण, ६-ऋत्विज होम के लिए

३-५५ पण्डित से संपन्न याग में—१- आचार्य (५ कुण्ड में), १-ब्रह्मा, १-कलश पूजन, १-इतर पूजन, १-तर्पण के लिए, १-परिचारक ब्राह्मण, ४५-ऋत्विज होम के लिए, ४-अग्निमुख जानकार उप आचार्य (९×५)

४-१०० पण्डित से संपन्न या में—१-आचार्य (९ कुण्ड में), १-ब्रह्मा, १-कलश पूजन, १-इतर पूजन, १-तर्पण के लिए, ५-परिचारक ब्राह्मण, ८१-ऋत्विज होम के लिए, ९-अग्निमुख जानकार उपआचार्य (९×९), इसी अनुपात में अधिक संख्या में कर सकते हैं।

ॐ उत्तिंष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तंस्त्वेमहे। उपप्रयंन्तु मरुतंः सुदानंव इन्द्रंप्राशूर्भवा सचां।। *(ऋग्वेद १.४०.१)*

ॐ अभ्यारमिद द्रंयो निषिंक्तं पुष्कंरे मधुं। अवतस्यं विसर्जने।। *(ऋग्वेद ८.७२.११)*

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मत्कृताम्। इष्टकामार्थसिद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च।। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

(इन मन्त्रों से आवाहित देवताओं को उठाना चाहिये।)

देवनान्दी समास

ब्राह्मण वन्दन— **ॐ नमो महद्भ्यो नमो अर्भकेभ्यो नमो युवभ्यो नम आशिनेभ्यः।**
यजाम देवान् यदि शक्नवाममाज्यायसः शंसमा वृक्षि देवाः। सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः॥ *(ऋग्वेद २७.१३)*
इस मन्त्र से ब्राह्मण पूजा करें। "करिष्यमाण कर्मणः आरम्भमुहूर्तः सुमुहुर्तो अस्तु इति अनुगृणहन्तु"। यजमान पूछते है॥ "सुमुहूर्तमस्तु"।

सर्वतोभद्र मण्डल में देवता पूजनम्—मध्ये ब्रह्माणं, (मध्य में ब्रह्मा का आवाहन करें।) ब्रह्मजज्ञानं वामदेवो ब्रह्मात्रिष्टुप् ब्राह्मावाहने विनियोगः।

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेन आवः।
सबुध्निया उपमाअस्यविष्ठाः सतश्चयोनिमसतश्चविवः॥ *(यजुर्वेद ४ काण्ड-२ प्रश्न-८ अनुवाक-४ मन्त्र)*

ॐभूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः। ब्रह्माणमावाहयामि। भो ब्रह्मन् इहागच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदो भव। **उत्तरे सोमं**—(उत्तर में सोम का आवाहन करें।) आप्यायस्व गोतमः सोमोगायत्री सोमावाहने विनियोगः।

ॐ आप्यायस्व समेतुते विश्वतःसोमवृष्णयं। भवावाजस्यसङ्गथे॥ *(ऋग्वेद १.९१.१६)*

ॐभूर्भुवः स्वः सोमय नमः। सोमं आवाहयामि। भो सोम इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदो भव। **ईशान्यं ईशानं**—(ईशान्य दिशा में ईशन का आवाहन करें।) अभित्वा शुनः शेप ईशानो गायत्री ईशानावाहने विनियोगः।

ॐ अभित्वां देव सवितुरीशानं वार्याणां। सदावन्भागमीमहे॥ *(ऋग्वेद १.२४.३)*

ॐभूर्भुवः स्वः ईशानाय नमः। ईशानमावाहयामि। भो ईशान इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूजा गृहाण वरदो भव। **पूर्वे इन्द्रं**—(पूर्व में इन्द्र का आवाहन करें।) इन्द्र वो मधुच्छन्दा इन्द्रो गायत्री इन्द्रावाहने विनियोगः।

ॐ इन्द्रं वो विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्यः। अस्माकमस्तु केवलः॥ *(ऋग्वेद १.७.१०)*

ॐभूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयामि। भो इन्द्र इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहाण। वरदो भव॥ **आग्नेयामग्निं**—(आग्नेय दिशा में अग्नि का आवाहन करें।) अग्निं दूतं मेधातिथिरग्निर्गायत्री अग्न्यावाहने विनियोगः।

ॐ अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्व वेदसम्। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुं॥ *(ऋग्वेद १.१२.१)*

ॐभूर्भुवः स्वः। अग्नेय नमः। अग्निमावाहयामि। भो अग्ने इहा गच्छ इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरणो भव। **दक्षिणे यमं**—(दक्षिण दिशा में यम का आवाहन करें।) यमाय सोमं यमोयमोनुष्टुप् यमावाहने विनियोगः।

ॐ यमाय सोमं सुनुत यमाय जुहुता हविः। यमंह यज्ञो गच्छत्यग्नि दूतो अरंकृतः॥ *(ऋग्वेद १०.१४.१३)*

ॐभूर्भुवः स्वः यमाय नमः। यममावाहयामि। भो यम इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदो भव। **नैऋत्यां निऋतिं**—(नैऋत्य दिशा में निऋति को।) मोषुणः कण्वो निऋतिर्गायत्री निऋत्या वाहने विनियोगः॥

ॐ मोषुणः परापरा निर्ऋतिर्दुर्हणावधीत्। पदीष्टतृष्णायासह॥ *(ऋग्वेद १.३८.६)*

ॐभूर्भुवः स्वः निर्ऋतये नमः। निर्ऋतिमावाहयामि। भो निऋति इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूहां गृहाण। वरदो भव। **पश्चिमे वरुणं**—(पश्चिम दिशा में वरुण का आवाहन करें।) तत्वायामि शुनःशेपो वरुणस्त्रिष्टुप् वरुणावाहने विनियोगः।

ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेळमानो वरुणेह बोध्युरुशंस मान आयुः प्रमोषीः॥ *(ऋग्वेद १.२४.११)*

ॐभूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः। वरुणमावाहयामि। भो वरुण इहागच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदो भव। **वायव्यां वायुं**—(वायव्य दिशा में वायु का आवाहन करें।) वायोशतं वामदेवो वायुरनुष्टुप् वाय्वावाहने विनियोगः।

ॐ वायोशतं हरीणां युवस्व पोष्याणां। उतवाते सहस्त्रिणो रथआयातुपाजसा। *(ऋग्वेद ४.४८.५)*

ॐभूर्भुवः स्वः वायवे नमः। वायुमावाहयामि। भो वायो इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूहां गृहाण। वरदो भव। **वायुसोममध्ये अष्टवसून्**—वायु एवं सोम के बीच में अष्ठ वसुओं को (वायव्य एवं उत्तर के बीच में) ज्मया अत्र वसिष्ठो वसवस्त्रिष्टुप् व स्वावाहने विनियोगः।

ॐ ज्मया अत्र वसंवो रन्तदेवाउरावन्तरिंक्षे मर्जयन्त शुभ्राः।
आर्वाक्पथ उंरुज्रयः कृणुध्वं श्रोतांदूतस्यंजग्मुषोंनो अस्य॥ *(ऋग्वेद ७.३९.३)*

ॐभूर्भुवः स्वः अष्टवसुभ्यो नमः। अष्टवसून् आवाहयामि। भो अष्टवसवः इहा गच्छ। इह तिष्ठतः। पूजां गृहाण। वरदो भवत। **सोमेशानयोर्मध्ये एकादशमरुद्रान्**—(सोमन एवं ईशान के बीच में एकादश रुद्रों का आवाहन करें।) (उत्तर एवं ईशान के बीच में) आरुद्रा सः श्यावाश्व एकादश रुद्रो जगती। एकादशरुद्रावाहने विनियोगः।

ॐ आरुंद्रासइन्द्रंवन्तः सजोषंसो हिरंण्यरथाः सुवितायंगंतन।
इयं वों अस्मत्प्रतिंहर्यतेमतितृष्णाजेन दिवउत्सांउदुन्यवें। *(ऋग्वेद ५.५७.१)*

ॐभूर्भुवः स्वः एकादशरुद्रेभ्यो नमः। एकादश रुद्रानावाहयामि। भो एकादशरुद्राः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृषीत। वरदा भवत। **ईशानेन्द्रयोर्मध्ये द्वादशादित्यान्**—(ईशान्य एवं पूर्व के बीच में द्वादशादित्यों का आवाहन करें।) त्यांनुमत्स्योमान्योवा द्वादशादित्यागायत्री द्वादशादित्या-वाहने विनियोगः।

ॐ त्यांनुक्षत्रियाँ अवं आदित्यान्यांचिषामहे। सुमृळीकाँअभिष्टंये॥ *(यजुर्वेद-२ काण्ड-१ प्रश्न-११ अनुवाक-१८ मन्त्र)*

ॐभूर्भुवः स्वः द्वादशादित्येभ्यो नमः। द्वादशादित्यानावाहयामि। भो द्वादशादित्याः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृह्मीत। वरदो भवत। **इन्द्राग्निमध्ये अश्विनौ**—(पूर्वा एवं आग्नेय के बीच में अश्विनी देवताओं को आवाहन करें।) अश्विनावर्तिर्गोतमोश्विनावुष्णिाक् अश्व्यावाहने विनियोगः।

ॐ अश्विनावर्तिरस्मदागोमंद्दस्त्राहिरंण्यवत्। अर्वाग्रथंसमंनसानियंच्छतं॥ *(ऋग्वेद १.९२.१६)*

ॐभूर्भुवः स्वः अश्विभ्यां नमः। अश्विनौ आवाहयामि। भो अश्विनौ इहा गच्छतं। इह तिष्ठतं पूजां गृषीतं। वरदौ भवतं। **अग्नियम मध्ये विश्वेदेवान् सपैतृकान्**—(आग्नेय एवं दक्षिण के बीच में पितृसाहित विश्वेदेवों का आवाहन करें।) ओमासोमधुच्छंदाविश्वेदेवा गायत्री। विश्वेदेवावाहने विनियोगः।

ॐ ओमांसश्चर्षणीधृतोविश्वेंदेवा स आगंत। दाश्वांसोंदाशुषंः सुतं॥ (ऋग्वेद १.३.७)

ॐभूर्भुवः स्वः विश्वेभ्योदेवेभ्यो नमः विश्वान् देवान् आवाहयामि। भो विश्वेदेवाः इहा गच्छत। इह तिष्ठंत पूजां गृह्णीत। वरदा भवत। **यम निऋतिमध्ये सप्तयक्षान्**—(दक्षिण एवं नैऋत्य के बीच में सप्त यक्षों का आवाहन करें।) अभित्यं वामदेवः सप्तयक्षा अष्टी। सप्तयक्षावहने विनियोगः।

ॐ अभित्यं देवं..संवितारंमोण्योः कविक्रंतुर्चामि सत्यंसवस..रत्नधामभिप्रियंमतिमूर्ध्वा
यस्यामतिर्भा अदिंद्युतत्सवींमनिहिरंण्यपाणिरमिमीत सुक्रतुः कृपासुवंः॥ (यजुर्वेद-१ काण्ड-२ प्रश्न-६ अनुवाक)

ॐभूर्भुवः स्वः सप्तयक्षेभ्यो नमः सप्तयक्षान् आवाहयामि। भो सप्तयक्षाः इहा गच्छत। इह तिष्ठत पूजां गृह्णीत। वरदा भवत। **निर्ऋति वरुण मध्ये भूतनागान्**—(नैर्ऋत्य एवं पश्चिम के बीच में भुतगण एवं नागों का आवाहन करें।) आयङ्गो सार्पराज्ञी सर्पा गायत्री। सर्पावाहने विनियोगः।

आयं गौः पृश्निरक्रमीद संदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वंः॥ (ऋग्वेद १०.१८९.१)

ॐभूर्भुवः स्वः सर्पेभ्यो नमः। सर्पान् आवाहयामि। भो सर्पाः इहागच्छत। इह तिष्ठत पूजां गृह्णीत। वरदा भवत। **वरुणवायुमध्ये गंधर्वाप्सरसः**—(पश्चिम एवं वायव्य के बीच में गन्धर्व एवं अप्सराओं का आवाहन करें।) अप्सरसामृष्यशृङ्गोगंधर्वाप्सरसोनुष्टुप्। गन्धर्व अप्सरावाहने विनियोगः।

ॐ अप्सरसां गन्धर्वाणां मृगाणां चरंणेचरंन्। केशीकेतंस्य विद्वान्त्सखांस्वादुर्मदिन्तंमः॥ (ऋग्वेद १.१६३.६)

ॐभूर्भुवः स्वः गन्धर्वाप्सरोभ्यो नमः। गन्धर्वाप्सरस आवाहयामि। भो गन्धवाप्सरसः इहा गच्छत। इह तिष्ठत पूजां गृह्णीत। वरदा भवत।

ब्रह्म सोममध्ये स्कन्दं नन्दीश्वरं शूलं महाकालं च

(मध्ये में स्थित ब्रह्मा एवं सोम (उत्तर) के मध्य में स्कन्द नन्दीश्वर शूल एवं महाकाल का आवाहन करें।) यदक्रंदो दीर्घतमास्कंदस्त्रिष्टुप्। स्कंदावाहने विनियोगः।

ॐ यदक्रंदः प्रथमं जायंमान उद्यन्त्संमुद्रादुतवा पुरींषात्।
श्येनस्यंपक्षा हरिणस्यं बाहू उंपस्तुत्यं महिंजातंतें अर्वन्॥ (ऋग्वेद १.१६३.१)

ॐभूर्भुवः स्वः स्कन्दाय नमः। स्कन्दमावाहयामि। भो स्कन्द इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहाण। वरदो भव। ऋषभमृषभो नन्दीश्वरोनुष्टुप्। **नन्दीश्वरावाहने विनियोगः।**

ॐ ऋषभं मांसमानानां सपत्नानां विषासहिं। हंतारं शत्रूणां कृधि विराजं गोपतिं गवां॥ *(ऋग्वेद १०.१६६.१)*

ॐभूर्भुवः स्वः नन्दीश्वराय नमः नन्दीश्वरं आवाहयामि। भो नंदीश्वर इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहाण। वरदो भव। कद्रुद्राय घौरः कणवः शूलो गायत्री शूलावाहने विनियोगः।

ॐ कद्रुद्राय प्रचेतसेमीढुष्टमायतव्यंसे। वोचेमशतंमंहृदे॥ *(ऋग्वेद १.४३.१)*

ॐभूर्भुवः स्वः शूलायनमः शूलमावाहयामि। भो शूल इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहाण। वरदो भव। कुमारं माता कुमारी महाकालस्त्रिष्टुप्। **महाकालावाहने विनियोगः।**

ॐ कुमारं मातायुवतिः समुब्धङ्गुहांबिभर्ति न ददातिपित्रे।
अनीकमस्य नमिनज्जनासः पुरः पश्यंति निहितमरतौ॥ *(ऋग्वेद ५.२.१)*

ॐभूर्भुवः स्वः महाकालाय नमः। महाकालमावाहयामि। भो महाकाल इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूहां गृहाण। वरदो भव। **ब्रह्मेशानमध्ये दक्षं**—(बीच में विद्यमान ब्रह्मा एवं ईशान्य दिशा के बीच में दक्ष का आवाहन करें।) अदतिर्बृहस्पतिर्दक्षोनुष्टुप्। दक्षावाहने विनियोगः।

ॐ अदितिर्ह्यजनिष्टदक्षयादुहितातव। तां देवा अन्वजायन्त भद्रा अमृतबंधवः॥ *(ऋग्वेद १०.७२.५)*

ॐभूर्भुवः स्वः दक्षाय नमः। दक्षमावाहयामि। भो दक्ष इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहाण। वरदो भव। ब्रह्मेन्द्रमध्ये दुर्गां विष्णुं च (ब्रह्मा एवं इन्द्र के बीच में अर्थात् बीच में स्थित ब्रह्मा एवं पूर्व के बीच में दुर्गा एवं विष्णु का आवाहन करें।) तामग्निवर्णां सौभरिदुर्गात्रिष्टुप्। दुर्गावाहने विनियोगः।

ॐ तामग्निवर्णां तपसाज्वलंतीं वैरोचनीं कर्मफलेषुजुष्टां।
दुर्गां देवीं शरणमहंप्रपद्ये सुतरसितरसे नमः॥ *(यजुर्वेद-दुर्गासूक्त)*

ॐभूर्भुवः स्वः दुर्गायै नमः। दुर्गां आवाहयामि। भो दुर्गे इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदा भव। इदं विष्णुर्मेधातिथिर्विष्णुगायत्री। विष्णवावाहने विनियोगः।

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदं। समूह्लमस्य पांसुरे॥ *(ऋग्वेद १.२२.१७)*

ॐभूर्भुवः स्वः विष्णवेनमः। विष्णुं आवाहयामि। भो विष्णो इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूहां गृहाण। वरदो भव। ग्रह्माग्नि मध्ये स्वधां (बीच में स्थित ब्रह्मा एवं आग्नेय दिशा के बीच में स्वधा को) उदीरतां शंखः स्वधा त्रिष्टुप्। स्वधावाहने विनियोगः।

ॐ उदीरता मवरउत्परासउन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः। असुंय ईयुरवृकाऽऋतज्ञास्तेनोवंतु पितरो हवेषु॥

(ऋग्वेद १०.१५.१)

ॐभूर्भुवः वः स्वधायै नमः। स्वधामावाहयामि। भो स्वधे इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहाण। वरदा भव। **ब्रह्म यममध्ये मृत्युरोगान्**—(बीच में स्थित ब्रह्मा एवं दक्षिण दिशा के बीच में मृत्यु एवं रोगों का आवाहन करें।) परं मृत्यो संकुसुकोमृत्युरोगास्त्रिष्टुप्। मृत्युरोगावाहने विनियोगः।

ॐ परं मृत्यो अनुपरेहिपंथांयस्तेस्व इतरोदेवयानात्। चक्षुष्मते शृणवतेते ब्रवीमिमानः प्रजारीरिषोमोत वीरान्॥

(ऋग्वेद १०.१८.१)

ॐभूर्भुवः स्वः मृत्युरोगेभ्यो नमः। मृत्यरोगान् आवाहयामि। भो मृत्युरोगाः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृषीत। वरदा भवत। ब्रह्म निर्ऋतिमध्ये गणपतिं (बीच में स्थित ब्रह्मा एवं नैऋत्य दिशा के बीच में गणपति का आवाहन करें।) गणानान्त्वा शौनकोगृत्समदो गणपतिर्जगती। गणपत्या वाहने विनियोगः।

ॐ गणानांत्वागणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमं।
ज्येष्ठराजंब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आनः शृण्वन्नूतिभिः सीदसादनं॥ *(ऋग्वेद २.२३.१)*

ॐभूर्भुवः स्वः गणपतये नमः। गणपतिमावाहयामि। भो गणपति इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदो भव। **ब्रह्मवरुणमध्ये अपः**—(बीच में स्थित ब्रह्मा एवं पश्चिम दिशा के बीच में जल का आवाहन करें।) शंनोदेवीः सिंधुद्वीप आपो गायत्री। अप् आवाहने विनियोगः।

ॐ शंनोदेवीरभिष्टय आपो भवंतु पीतये। शंयोरभिस्रवंतु नः॥ *(ऋग्वेद १०.९.४)*

ॐभूर्भुवः स्वः अद्भयो नमः। अपः आवाहयामि। भो आपः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृह्णीत। वरदा भवत। **ब्रह्मवायुमध्ये मरुतः**—(बीच में स्थित

ब्रह्मा एवं वायव्य दिशा के बीच में मरुत् का आवाहन करें।) मरुतोयस्यगोतमो मरुतो गायत्री। मरुदावाहने विनियोगः

ॐ मरुतोयस्य हि क्षयेपाथा दिवोविमहसः। स सुगोपातमोजनः *(ऋग्वेद १.८६.१)*

ॐभूर्भुवः स्वः मरुद्भयो नमः। मरुतः आवाहयामि। भो मरुतः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृहणीत। वरदा भवत। ब्रह्मणः पादमूले कर्णिकाधः पृथिवीं (बीच में स्थित ब्रह्मा जी के नीचे पादमूल में पृथिवी का आवाहन करें।) स्योना पृथिवी मेधातिथिर्भूमिर्गायत्री। भूम्यावाहने विनियोगः।

ॐ स्योना पृथिवि भवानृक्षरानिवेशनी। यच्छांनः शर्म सप्रथः॥ *(ऋग्वेद १.२२.१५)*

ॐभूर्भुवः स्वः भूम्यै नमः। भूमिं आवाहयामि। भो भूमे इहा गच्छा। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदा भव। **तत्रैव गङ्गादिसर्वनद्यः**—(उसी स्थान पर अर्थात पृथिवी पर ही गङ्गादि सभी नदियों का आवाहन करें।) इमं मे गङ्गे सिंधुक्षित्प्रैयमेधानद्यो जगती। गङ्गादिनद्यावाहने विनियोगः।

ॐ इमं मे गङ्गेयमुनेसरस्वतिशुतुद्रिस्तोमं सचतापरुष्णया। असिक्न्यामं रुद्वृधेवितस्तया जींकीयेशृणुह्या सुषोमया॥

(ऋग्वेद १०.७५.५)

ॐभूर्भुवः स्वः गङ्गादि नदीभ्यो नमः। गङ्गादि नदीः आवाहयामि। भो गङ्गादिनद्यः इहागच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृहणीतां। वरदा भवत। तत्रैव सप्तसागराः। (वहीं पर सात सागरों का आवाहन करें।) धाम्नो धाम्नो वामदेवः सप्तसागरा अष्टी। सप्त सागरावाहने विनियोगः।

ॐ धाम्नों धाम्नो राजन्नितो वरुणानोमुञ्च। यदापो अध्न्या इति वरुणेतिशपांमहेततों वरुणांनोमुञ्च।
मयिवापोमोषधीहिं सीरतों विश्वव्यंचा भूस्त्वेतों वरुणांनो मुञ्च॥ *(यजुर्वेद-१ काण्ड-३ प्रश्न-११ अनुवाक-१५ मन्त्र)*

ॐभूर्भुवः स्वः सप्तसागरेभ्यो नमः। सप्तसागरान् आवाहयामि। भो सप्तसागराः इहागच्छत। इह तिष्ठतः। पूहां गृहणीत। वरदा भवत। तदुपरि मेरवे नमः। मेरुं आवाहयामि। (उसके ऊपर मेरु पर्वत का आवाहन करें।) (भूमि पर) सोमसमीपे गदायै नमः। गदां आवाहयामि। (सोम के पास (उत्तर) गदा का आवाहन करें।) ईशान समीपेत्रिशूलाय नमः। त्रिशूलं आवाहयामि।। (ईशान के पास ईशान में त्रिशूल का आवाहन करें।) इन्द्रसमीपे वज्राय नमः। वज्रं आवाहयामि। (इन्द्र के पास पूर्व में वज्र का आवाहन करें।) अग्नि समीपे शक्तये नमः। शक्तिं आवाहयामि। (अग्नि के पास आग्नेय में शक्ति का आवाहन

करें।) यम समीपे दण्डाय नमः। दण्ड आवाहयामि। (यम के पास दक्षिण में दण्ड का आवाहन करें।) निर्ऋति समीपे खड्गय नमः। खड्गमावाहयामि। (निर्ऋति के पास नैऋत्य के खड्ग का आवाहन करें।) वरुण समीपे पाशाय नमः। पाशं आवाहयामि। (वरुण के पास पश्चिम में पाश का आवाहन करें।) वायु समीपे अंकुशाय नमः। अंकुशं आवाहयामि। (वायु के पास वायव्य दिशा में अंकुश का आवाहन करें।)

तद्बाहये उत्तरादि क्रमेण (मण्डल के बाहर) गौतमाय नमः। गौतमं आवाहयामि। (उत्तर में गौतम जी का आवाहन करें।) भारद्वाजाय नमः। भरद्वाजं आवाहयामि। (ईशान में भरद्वाज जी का आवाहन करें।) विश्वामित्राय नमः। विश्वामित्रं आवाहयामि। (पूर्व में विश्वामित्र जी का आवाहन करें।) कश्यपाय नमः। कश्यपं आवाहयामि। (आग्नेय में अश्यप जी का आवाहन करें।) जमदग्नये नमः। जमदग्निं आवाहयामि। (दक्षिण में जमदग्नि जी का आवाहन करें।) वसिष्ठाय नमः। वसिष्ठं आवाहयामि। (नैर्ऋत्य में वसिष्ठ जी का आवाहन करें।) अत्रये नमः। अत्रिं आवाहयामि। (पश्चिम में अत्रि जी का आवाहन करें।) अरुंधत्यै नमः। अरुंधतीं आवाहयामि। (वायव्ये में अरुंधति जी का आवाहन करें।) ततः पूर्वादि क्रमेण मातृः। (पूर्वादि क्रम से मण्डल के बाहर मातृगणों का आवाहन करें।) ऐंद्र्यै नमः। ऐन्द्रीं आवाहयामि। (पूर्व में ऐन्द्री का आवाहन करें।) कौमार्यै नमः। कौमारीं आवाहयामि। (आग्नेय में कौमारी का आवाहन करें।) ब्राह्यै नमः। ब्राह्मीं आवाहयामि। (दक्षिण में ब्राह्मी का आवाहन करें।) वाराह्यै नमः। वाराहीं आवाहयामि। (नैर्ऋत्य में वाराही का आवाहन करें।) चामुण्डायै नमः। चामुण्डां आवाहयामि। (पश्चिम में चामुण्डा का आवाहन करें।) वैष्णव्यै नमः वैष्णवीं आवाहयामि। (वायव्य में वैष्णवी का आवाहन करें।) वैनायक्यै नमः वैनायकीं आवाहयामि। (ईशान्य में वैनायकी का आवाहन करें।) इति सर्वतो भद्र देवताः। (यहाँ पर सर्वतोभद्रमण्डल में विद्यमान सभी देवताओं का आवाहन संपन्न हुआ।)

ॐ तदस्तु मित्रावरुणातदग्नेशंयोरस्मभ्यमिदमस्तु शस्तं। अशीमहि गाधमुतप्रतिष्ठां नमो दिवे बृहते सादनाय॥

(ऋग्वेद ५.४७.७)

गृहावै प्रतिष्ठासूक्तं तत् प्रतिष्ठिततमया वाचाशंस्तव्यं तस्माद्यद्यपिदूर इव पशूँलभते गृहानेवै नानाजिगमिषति गृहाहिपशूनां प्रतिष्ठा प्रतिष्ठा॥

ॐ नर्यप्रजां मे गोपाय॥ अमृतत्वाय जीव से॥ जातां जनिष्यमाणां च॥ अमृते सत्वे प्रतिष्ठितां॥ *(यजुर्वेद-ब्राह्मण)*

एताः ब्रह्मादि देवताः सुप्रतिष्ठिताः सन्तु। (इन मन्त्रों को कहकर आवाहित ब्रह्मादि देवताओं का प्रतिष्ठा करें।)

ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेन आवः। सुबुध्निया उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्चविवः॥ *(यजुर्वेद-४ काण्ड-२ प्रश्न-८ अनुवाक-४ मन्त्र)*

अनेन मंत्रेण पूजयेत्। (इस मन्त्र से पूजन करें।) ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। ध्यायामि। ध्यानं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। आवाहयामि। आसनं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। स्वागतं समर्पयामी। पादारविन्दयोःपाद्यं पाद्यं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। मुखे आचमनीयं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवः तान ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे॥
यो वः शिवतमोरसस्तस्य भाजयते हनः। उशतीरिव मातरः॥
तस्मा अरंगमामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपोजनयथा च नः॥ *(ऋग्वेद १०.९.१)*

स्नानं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। स्नानाङ्ग आचमनं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ युवं वस्त्राणि पीवसा वसाथे युवोरच्छिद्रामन्तवोहसर्गाः। अवातिरतमनृतानि विश्व ऋतेन मित्रा वरुणा यचेथे॥ *(ऋग्वेद १.१५२.१)*

वस्त्रयुग्मं समर्पयामि। वस्त्रान्ते आचमनं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुंच शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥ *(ऋग्वेद)*

यज्ञोपवीतं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ हिरण्यरूपः स हिरण्य संदृगपान्नपात् सेदु हिरण्यवर्णाः। हिरण्ययात् परियोनेर्निषद्याहिरण्य दाददत्यन्नमस्मै॥ *(ऋग्वेद २.३५.१०)*

आभरणं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ गन्धं द्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीं। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

गन्धं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत। अर्चन्तु पुत्रका उतपुरन्न धृष्णवर्चत॥ *(ऋग्वेद ८.६९.८)*

अक्षतान् समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ आयने ते परायणे दूर्वारोहन्तु पुष्पिणीः। ह्रदाश्च पुण्डरीकाणि समुद्रस्य गृहा इमे। पुष्पाणि समर्पयामि। *(ऋग्वेद १०.१४२.८)*

नाम पूजां करिष्ये— ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ सोमाय नमः। ॐ ईशानाय नमः। ॐ इन्द्राय नमः। ॐ अग्नये नमः। ॐ यमाय नमः। ॐ निर्ऋतये नमः। ॐ वरुणाय नमः। ॐ वायवे नमः। ॐ अष्टवसुभ्यो नमः। ॐ एकादश रुद्रेभ्यो नमः। ॐ द्वादशादित्येभ्यो नमः। ॐ अश्विभ्यां नमः। ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। ॐ सप्तयक्षेभ्यो नमः। ॐ भूतनागेभ्यो नमः। ॐ गंधर्वाप्सरोभ्यो नमः। ॐ स्कन्दाय नमः। ॐ नन्दीश्वराय नमः। ॐ शूलाय नमः। ॐ महाकालाय नमः। ॐ दुर्गायै नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ स्वधायै नमः। ॐ मृत्युरोगेभ्यो नमः। ॐ गणपतये नमः। ॐ अद्भयो नमः। ॐ मरुद्भयो नमः। ॐ पृथिव्यै नमः। ॐ गङ्गादि सर्वनदीभ्यो नमः। ॐ सप्त सागरेभ्यो नमः। ॐ मेरवे नमः। ॐ गदायै नमः। ॐ त्रिशूलाय नमः। ॐ वज्राय नमः। ॐ शक्तये नमः। ॐ दण्डाय नमः। ॐ खड्गाय नमः। ॐ पाशाय नमः। ॐ अंकुशाय नमः। ॐ गौतमाय नमः। ॐ भरद्वाजाय नमः। ॐ विश्वामित्राय नमः। ॐ कश्यपाय नमः। ॐ जमदग्नये नमः। ॐ वसिष्ठाय नमः। ॐ अत्रये नमः। ॐ अरुन्धत्यै नमः। ॐ ऐन्द्र्यै नमः। ॐ कौमार्यै नमः। ॐ ब्राह्मै नमः। ॐ वाराह्यै नमः। ॐ चामुण्डायै नमः। ॐ वैष्णव्यै नमः। ॐ माहेश्वर्यै नमः। ॐ वैनायक्यै नमः। (देवताओं के ५७ समूह।) नाम पूजां समर्पयामि। (ये सभी देवता सर्वतो भद्र मण्डल से आवाहित हैं।) ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

वनस्पति रसोत्पन्नो गन्धाढयः सुमनोहरः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम्॥ धूपं आघ्रापयामि। *(प्रयोगरत्नाकर)*

ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

आज्यं त्रिवर्ति संयुक्तं वह्निना योजितं मया। गृहाण मङ्गलं दीपं त्रैलोक्य तिमिरापह॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

दीपं दर्शयामि धूपदीपानन्तरं आचमनं समर्पयामि। ॐब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। (नैवेद्य को गायत्री मन्त्र से प्रोक्षण करें नैवेद्य मण्डल पर रखें। **सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि।** इस मन्त्र से परिषिञ्चन करें।) **अमृतोपस्तरणमसि** कहकर जल छोड़ें। ॐप्राणाय स्वाहा (अङ्गुष्ठ एवं कनिष्ठिका मिलाकर) ॐअपानाय स्वाहा (अङ्गुष्ठ एवं तर्जनी मिलाकर) ॐव्यानाय स्वाहा (अङ्गुष्ठ एवं मध्यमा मिलाकर) ॐउदानाय स्वाहा (अङ्गुष्ठ एवं अनामिका मिलाकर) ॐसमानाय स्वाहा (सभी अङ्गुलियों को मिलाकर) ॐदेवेभ्यः स्वाहा नैवेद्यं निवेदयामि। **अमृतापिधानमसि** कहकर जल छोड़ें। नैवेद्यं विसर्जयामि। हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि। गण्डूषं समर्पयामि। पुनराचमनं समर्पयामि। (कहकर जल छोड़ें) ॐब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

पूगीफल समायुक्तं नागवल्ल्यादलैर्युतम्। चूर्ण कर्पूर संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यतां। क्रमुक ताम्बूलं समर्पयामि।

(देवपूजा)

ॐब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ अर्चत प्रार्चत प्रियमेधा सो अर्चत। अर्चन्तु पुत्र का उत पुरं न धृष्णवर्चत। *(ऋग्वेद ८.६९.८)*

ॐ ध्रुवाद्यौ र्ध्रुवापृथिवीध्रुवासः पर्वता इमे। ध्रुवं विश्वमिदं जगद् ध्रुवो राजा विशामयम्॥

ॐ ध्रुवं ते राजा वरुणो ध्रुवं देवो बृहस्पतिः। ध्रुवं त इन्द्रश्चाग्निश्च राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम्॥ *(ऋग्वेद १०.१७३.५)*

मङ्गलनीराजनं समर्पयामि। नीराजनान्ते परिमल पत्र पुष्पाणि समर्पयामि। मन्त्रपुष्पं समर्पयामि। प्रदक्षिणां समर्पयामि। नमस्कारान् समर्पयामि।

देवाराधनमण्डलं सुरगणावासं सदामङ्गलं। कुर्तुः दर्शनमात्रतः शुभकरं तत् पञ्च भूतात्मकं॥

अर्णाद्यक्षरसंयुतं भयहरं तद् याग पुण्यार्जितं। नानामन्त्रमयं समस्त फलदं ध्यायेन्मनोनन्दनं॥

अरिष्टानि बहून्यस्मिन् दुष्कृतानि शतानि च। मण्डलानि निरीक्षन्ते यथा युद्धेषु कातराः॥ *(अनुष्ठान पद्धति)*

(युद्ध भूमि में कायर जैसे देखते ही भीत हो जाते हैं, वैसे ही मण्डल को देखते ही सभी अरिष्ट दूर हो जाते हैं।) **अनया पूजया ब्रह्मादि मण्डल देवताः प्रीयन्तां** यहाँ पर सर्वतोभद्र मण्डल पूजन संपन्न हुआ।

प्रधान देवता विष्णु षोडशोपचार पूजन

ध्यान—विष्णुं जिष्णुं महाविष्णुं प्रभविष्णुं महेश्वरम्। अनेकोत्पात शमनं नमामि पुरुषोत्तमम्॥ नमोनारायणाय।

आवाहन–ॐ सहस्रंशीर्षा पुरुंषः सहस्राक्षः सहस्रंपात्। स भूमिं विश्वतोंवृत्वात्यं तिष्ठद् दशांगुलम्॥ (ऋग्वेद १०.९०.१)

ॐ हिरंण्यवर्णा हरिंणीं सुवर्णरजत स्रंजाम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातंवेदो म आवंह॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवार श्री विष्णवे नमः। आवाहयामि। आवाहनं समर्पयामि।

आसनम्—ॐ पुरुंष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भव्यंम्। उतामृतत्वस्येशांनो यदन्नेंना तिरोहंति॥ (ऋग्वेद १०.९०.२)

ॐ तां म आवंह जातवेदो लक्ष्मीमनंपगामिनीम्। यस्यां हिरंण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुंषानहम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। आसनं समर्पयामि।

पाद्यम्— ॐ एतावांनस्य महिमाऽतो ज्यायाँश्च पुरुंषः। पादोंऽस्य विश्वांभूतानिं त्रिपादंस्यामृतं दिवि॥ (ऋग्वेद १०.९०.३)

ॐ अश्वपूर्वा रंथमध्यां हस्तिनांद प्रमोदिनीम्। श्रियं देवीमुपंह्वये श्रीर्मा देवी जुंषताम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। पादारविंदयोः पाद्यं पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यं— ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत् पुरुंषः पादों ऽस्येहा भंवत्पुनंः। ततो विश्वं व्यंक्रामत् साशनानशने अभि॥ (ऋग्वेद १०.९०.४)

ॐ कां सोस्मितां हिरंण्य प्राकारांमार्द्रां ज्वलंन्तीं तृप्तां तर्पयंन्तीम्।

पद्मेस्थितां पद्मवंर्णां तामिहो पंह्वये श्रियंम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्) सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। हस्तयोः अर्घ्यमर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनम्—ॐ तस्मांद्विराळंजायत विराजो अधिपूरुंषः। स जातो अत्यंरिच्यत पश्चाद् भूमिमथोंपुरः। (ऋग्वेद १०.९०.५)

ॐ चंद्रां प्रंभासां यशसा ज्वलंतीं श्रियं लोके देवजुंष्टा मुदाराम्।

तां पद्मिनीमीं शरंणमहं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मेनश्यतां त्वां वृणे ॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। मुखे आचमनीयं समर्पयामि।

पञ्चामृत स्नानम् (दूध)— ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्णियं। भवावाजस्य संगथे। (ऋग्वेद १०.९१.१६)

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। पयः स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः। भवे भवेनातिं भवे भवस्वमाम् भवोद्भवाय नमः ॥

(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत् आरण्यक)

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि

दहि— ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभिनोमुखा करत्प्रण आयूंषितारिषत् ॥ (ऋग्वेद ४.३९.६)

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। दधि स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमश्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमःकलविकरणाय
नमोबलाय नमो बलप्रमथनाय नमस्सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः। (यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। शुद्धोदक स्नानं सपर्मयामि।

घी— ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्ययोनिर्घृते श्रितो घृतं वस्य धाम।
अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभवक्षि हव्यम् ॥ (ऋग्वेद २.३.११) सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। घृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोर तरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥

(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

मधु (शहद)— ॐ मधुवाता ऋतायते मधुक्षरंति सिंधवः। माध्वीर्नः संत्वोषधीः॥ मधुनक्तमुतोषसो मधुमत् पार्थिवं रजः। मधुद्यौरस्तु नः पिता॥ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवंतु नः॥ *(ऋग्वेद १.९०.६)* सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। मधु स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल— ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥ *(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)* सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। शुद्धोदक स्नानं सपर्पयामि।

शर्करा (शक्कर)— ॐ स्वादुः पवस्व दिव्याय जन्मने स्वादुरिंद्राय सुहवीतु नाम्ने। स्वादुर्मित्राय वरुणाय वायवे बृहस्पतये मधुमा अदाभ्यः॥ *(ऋग्वेद ९.८५.६)*
सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। शर्करा स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जन— ॐ ईशानस्सर्वविद्यानामीश्वरस्सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोऽम्॥ *(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)*
सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

फल— ॐ याः फलिनी या अफला अपुष्पायाश्च पुष्पिणीः। बृहस्पतिं प्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्वं हंसः॥ *(ऋग्वेद १०.९७.१५)*
सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। फल स्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदक— ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवस्तानऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे॥ यो वः शिवतमोरसस्तस्य भाजयते हनः। उशतीरिव मातरः॥ तस्मा अरंगमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः। *(ऋग्वेद १०.९.१-२-३)*
ॐ कद्रुद्राय प्रचेतसे मीळहुष्टमाय तव्यसे। वोचेम शंतमं हृदे॥ *(ऋग्वेद १.४३.१)*

ॐ यथा नो अदितिः करत्पश्वे नृभ्यो यथा गवे। यथा तोकाय रुद्रियम्॥ (ऋग्वेद १.४३.२)
ॐ यथा नो मित्रो वरुणो यथा रुद्रश्चिकेतति। यथा विश्वे सजोषसः।
ॐ गाथपतिं मेधपतिं रुद्रं जलाषभेषजम्। तच्छं योः सुम्नमीमहे॥
ॐ यः शुक्र इव सूर्यो हिरण्यमिव रोचते। श्रेष्ठो देवानां वसुः।
ॐ शं नः करत्यर्वते सुगं मेषाय मेष्ये। नृभ्यो नारिभ्यो गवे॥
ॐ अस्मे सोम श्रियमधि नि धेहि शतस्य नृणाम्। महिश्रवस्तुविनृम्णाम्॥
ॐ मानः सोमपरिबाधो मारातयो जुहुरंत। आ न इंदो वाजे भज॥
ॐ यास्ते प्रजा अमृतस्य परस्मिन्धामन्नृतस्य। मूर्धा नाभा सोमवेन आ भूषंतीः सोम वेदः॥ (ऋग्वेद १.४३.३-४-५-६-७-८-९)

ॐ नमः सोमाय च रुद्राय च नमस्ताम्राय चारुणाय च नमः शंगाय च पशुपतये च नम उग्राय च भीमाय च नमो अग्रेवधाय च दूरेवधाय च नमो हन्त्रे च हनीयसे च नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो नमस्ताराय नमः शंभवे च मयोभवे च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च नम स्तीर्थ्यायच कूल्याय च नमः पार्याय चावार्याय च नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च नम आतार्याय चालाद्याय च नमशष्प्याय च फेन्याय च नमःसिकत्याय च प्रवाह्याय च। (यजुर्वेद-४ काण्ड-५ प्रश्ने-८ अनुवाक)

ॐ तच्छंयोरावृणीमहे। गातुं यज्ञाय। गातुं यज्ञ पतये। दैवीः स्वस्तिरस्तु नः। स्वस्तिर्मानुषेभ्यः।
ऊर्ध्वं जिगातु भेषजम्। शं नो अस्तु द्विपदे। शं चतुष्पदे। ॐ शांतिः शांतिः। शांतिः॥ (यजुर्वेद-आरण्यक)
ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसंतो अस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥ (ऋग्वेद १०.९०.६)

ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधिंजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलांनि तपसा नुंदंतु मायांतंरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः। *(ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

वस्त्र— ॐ युवं वस्त्राणि पीवसावसाथे युवोरच्छिद्रा मंतवो ह सर्गाः।
अवांतिरमनृतानि विश्वं ऋतेनं मित्रा वरुणा सचेथे॥ *(ऋग्वेद १.१५२.१)*

ॐ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः। तेनं देवा अयजंत साध्या ऋषयश्च ये॥ *(ऋग्वेद १०.९०.७)*

ॐ उपैंतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥
(ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। वस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतं—ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तांत्। आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमंस्तु तेजः॥

ॐ तस्मांद्यज्ञात् सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम्। पशून्ताँश्चक्रे वायव्यांनारण्यान् ग्राम्याश्च ये॥ *(ऋग्वेद १०.९०.८)*

ॐ क्षुत् पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वान्निर्णुद मे गृहात्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

आभरण—ॐ हिरंण्यरूपः स हिरंण्य संदृगपान्नपात् सेदु हिरंण्यवर्णः। हिरण्ययात् परियोनेर्निषद्या हिरण्यदा ददत्यन्नमस्मै॥
(ऋग्वेद २.३५.१०)

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। आभरणं समर्पयामि।

गन्ध— ॐ गंधं द्वारां दुंराधर्षां नित्यपुंष्टां करीषिणींम्। ईश्वरीं सर्वंभूतानां तामिहोपंह्वये श्रियंम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)
ॐ तस्मांद्यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामांनि जज्ञिरे। छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्य जुस्तस्मांदजायत॥ (ऋग्वेद १०.९०.९)
सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। गन्धं समर्पयामि।

अक्षत—ॐ अर्चंत प्रार्चंत प्रियंमेधासो अर्चंत। अर्चंन्तु पुत्रका उतपुरंन्न धृष्णवंर्चत॥ (ऋग्वेद ८.६९.८)
सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पाणि—ॐ आयंने ते परायंणे दूर्वांरोहंतु पुष्पिणीः। ह्रदाश्च पुण्डरीकाणि समुद्रस्यं गृहा इमे॥ (ऋग्वेद १०.१४२.८)
ॐ तस्मादश्वां अजायन्त ये के चोंभयादंतः। गावोंहजज्ञिरे तस्मात् तस्मांज्जाता अंजावयंः॥ (ऋग्वेद १०.९०.१०)
ॐ मनंसः कामुमाकूंतिं वाचः सत्यमंशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रंयतां यशंः॥ (ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)
सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। पुष्पाणि समर्पयामि।

प्रथमावरण पूजनम्—ॐ हृदयाय नमः। आग्नेय दिशि। ॐ शिरसे स्वाहा नमः। ऐशान्यां दिशि। ॐ शिखायै वषट् नमः। नैर्ऋत्यां दिशि। ॐ कवचाय हुम् नमः। वायव्यां दिशि। ॐ नेत्रत्रयाय वौषट् नमः। अग्रे ॐ अस्त्राय फट् नमः। आग्नेयादि कोणेषु पूजयेत् *(अनुष्ठान पद्धति)*। पूजन करे।

द्वितीयावरण पूजनम्—ॐ ब्राह्म्यै नमः। पूर्वे ॐ माहेश्वर्यै नमः। आग्नेय दिशि। ॐ कौमार्यै नमः। दक्षिण दिशि। ॐ वैष्णव्यै नमः। नैऋत्यां दिशि। ॐ वाराह्यै नमः पश्चिम दिशि। ॐ इन्द्राण्यै नमः। वायव्यां दिशि। ॐ चामुण्डायै नमः। उत्तरस्यां दिशि। ॐ गिरिजायै नमः ऐशान्यां दिशि। *(अनुष्ठान पद्धति)*

तृतीयावरण पूजनम्—ॐ इन्द्राय सुराधिपतये पीतवर्णाय वज्रहस्ताय ऐरावत वाहनाय सशक्ति काय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवारायश्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐ अग्नये तेजोधिपतये पिंगलवर्णाय शक्ति हस्ताय मेष वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय स वाहनाय स परिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐ यमाय प्रेताधिपतये कृष्णवर्णाय दण्ड हस्ताय महिष वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐ निर्ऋतये रक्षोधिपतये रक्तवर्णाय खड्ग हस्ताय नरवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐ वरुणाय

जलाधिपतये कुंदवर्णाय पाशहस्ताय मकरवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐवायवे प्राणाधिपतये धूम्रवर्णाय अंकुश हस्ताय हरिणवाहनाय सशक्ति काय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐसोमाय नक्षत्राधिपतये शुक्लवर्णाय गदा हस्ताय अश्व वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐईशानाय विद्याधिपतये स्फटिकवर्णाय त्रिशूल हस्ताय वृषभ वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐअनंताय नागाधिपतये क्षीरवर्णाय चक्रहस्ताय गरुड वाहनाय स शक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। नैर्ऋत्यं एवं पश्चिम दिशा के बीच में अनन्त का पूजन करें। ॐब्रह्मणे लोकाधिपतये कंजवर्णाय पाशहस्ताय हंसवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। पूर्व एवं ईशान दिशा के बीच में ब्रह्मा जी का पूजन करें। *(अनुष्ठान पद्धति)*

चतुर्थावरणपूजनम्—ॐवज्राय नमः। (पूर्व में) ॐशक्त्यै नमः। (आग्नेय में) ॐदण्डाय नमः। (दक्षिण में) ॐखड्गाय नमः। (नैर्ऋत्य) ॐपाशाय नमः। (पश्चिम में) ॐअंकुशाय नमः। (वायव्य में) ॐगदायै नमः। (उत्तर में) ॐत्रिशूलाय नमः। (ईशान में) ॐचक्राय न मः। (पश्चिम नैर्ऋत्य के बीच में) ॐपद्माय नमः। (पूर्व ईशान के बीच में) *(अनुष्ठान पद्धति)*

विष्णु अष्टोत्तर शतनाम पूजा

ॐविष्णवे नमः। ॐलक्ष्मीपतये नमः। ॐ कृष्णाय नमः। ॐ वैकुण्ठाय नमः। ॐ गरुडध्वजाय नमः। ॐ जगन्नाथाय नमः। ॐपरब्रह्मणे नमः।ॐवासुदेवाय नमः। ॐत्रिविक्रमाय नमः। ॐ दैत्यान्तकाय नमः। ॐ मधुरिपवे नमः। ॐ तार्क्ष्यवाहनाय नमः। ॐसनातनाय नमः। ॐनारायणाय नमः। ॐपद्मनाभाय नमः। ॐहृषीकेशाय नमः। ॐसुधाप्रदाय नमः। ॐ माधवाय नमः। ॐ पुण्डरीकाक्षाय नमः। ॐ स्थितिकर्त्रे नमः। ॐपरात्पराय नमः। ॐवनकालिने नमः। ॐयज्ञ रूपाय नमः। ॐचक्र पाणये नमः। ॐगदाधराय नमः। ॐउपेन्द्राय नमः। ॐकेशवाय नमः। ॐ हंसाय नमः। ॐ समुद्रमथनाय नमः। ॐ हरये नमः। ॐगोविन्दाय नमः। ॐ ब्रह्मजनकाय नमः ॐ कैटभासुरमर्दनाय नमः। ॐ श्रीधराय नमः। ॐ कामजनकाय नमः ॐ शेषशायिने नमः। ॐ चतुर्भजाय नमः। ॐ पाञ्चजन्यधराय नमः। ॐ श्रीमते नमः। ॐ शार्ङ्गपाणये नमः। ॐ जनार्दनाय नमः। ॐ पीताम्बरधराय नमः। ॐ देवाय नमः। ॐ सूर्यचन्द्रविलोचनाय नमः। ॐ मत्स्यरूपाय नमः। ॐ कूर्मतनवे नमः। ॐ क्रोडरूपाय नमः। ॐ नृकेसरिणे नमः। ॐ वामनाय नमः। ॐभार्गवाय नमः। ॐ रामाय नमः। ॐ

बलिने नमः। ॐ कल्किने नमः। ॐ हयाननाय नमः। ॐ विश्वम्भराय नमः। ॐ शिशुमाराय नमः। ॐ श्रीकराय नमः। ॐ कपिलाय नमः। ॐ ध्रुवाय नमः। ॐ दत्तात्रेयाय नमः। ॐ अच्युत्ताय नमः। ॐ अनन्ताय नमः। ॐ मुकुन्दाय नमः। ॐ दधिवामनाय नमः। ॐ धन्वन्तरये नमः। ॐ श्रीनिवासाय नमः। ॐ प्रद्युम्नाय नमः। ॐ पुरुषोत्तमाय नमः। ॐ श्रीवत्सकौस्तुभधराय नमः। ॐ मुरारातये नमः। ॐ अधोक्षजाय नमः। ॐ ऋषभाय नमः। ॐ मोहिनी रुप धारिणे नमः। ॐ सङ्कर्षणाय नमः। ॐ पृथवे नमः। ॐ क्षीराब्धिशायिने नमः। ॐ भूतात्मने नमः। ॐ अनिरुद्धाय नमः। ॐ भक्तवत्सलाय नमः। ॐ नराय नमः। ॐ गजेन्द्रवरदाय नमः। ॐ त्रिधाम्ने नमः। ॐ भूतभावनाय नमः। ॐ श्वेतद्वीपसुवास्तव्याय नमः। ॐ सनकादिमुनिध्येयाय नमः। ॐ भगवते नमः। ॐ शङ्करप्रियाय नमः। ॐ नीलकान्ताय नमः। ॐ धराकान्ताय नमः। ॐ वेदात्मने नमः। ॐ बादरायणाय नमः। ॐ भागीरथीजन्मभूमि पादपद्माय नमः। ॐ सतांप्रभवे नमः। ॐ स्वभुवे नमः। ॐ विभवे नमः। ॐ घनश्यामाय नमः। ॐ जगत्कारणाय नमः। ॐ अव्ययाय नमः। ॐ बुद्धावताराय नमः। ॐ शान्तात्मने नमः। ॐ लीलामानुष विग्रहाय नमः। ॐ दामोदराय नमः। ॐ विराड्रूपाय नमः। ॐ भूतभव्यभवत्प्रभवे नमः। ॐ आदिदेवाय नमः। ॐ प्रह्लादपरिपालकाय नमः। ॐ श्रीमहाविष्णवे नमः। अष्टोत्तर शतनाम पूजां समर्पयामि। *(अनुष्ठान पद्धति)*

धूपम्—ॐ वनस्पति रसोत्पन्नो गंधाढ्यः सुमनोहरः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्य कौ बाहू का ऊरू पादा उच्येते ॥ *(ऋग्वेद १०.९०.११)*

ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि संभव कर्दम। श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥ *(ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। धूपं आघ्रापयामि।

दीपम्— **आज्यं त्रिवर्ति संयुक्तं वह्निना योजितं मया। गृहाण मंगलं दीपं त्रैलोक्य तिमिरापह ॥** *(स्मृति संग्रह)*

ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत ॥ *(ऋग्वेद १०.९०.१२)*

ॐ आपः सृजंतु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे। नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥ *(ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। दीपं दर्शयामि। धूप दीपानंतरं आचमनीयं समर्पयामि।

नैवेद्यम्—देवस्याग्रे स्थलं संशोध्य गोमयेन मण्डलं कृत्वा तत्र शुद्धं पात्रं न्यस्य अभिघार्य निर्मलं हवि तदुपरि न्यस्य आज्येन द्रवीभूतं कृत्वा "ॐ भू र्भुवः स्वः इति गायत्र्या च प्रोक्ष्य वायु बीजं जप्त्वा निवेद्यान्नं संशोध्य दक्षिणहस्ते अग्निबीजं विलिख्य तेन हस्तेन संदह्यवामहस्ते अमृतबीजं विलिख्य तेत हस्तेन हविराप्लाव्य मूलमंत्रमष्टवारं संजप्य मंत्रामृतमयं संकल्प्य सुरभिमुद्रां बध्वा अमृतमयं भावयित्वा मल धातु रसांशं विभज्य देवस्य निवेद्य ग्रहणेच्छां कुर्यात्।

(अनुष्ठान पद्धति)

"सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि" इत्यनेन

परिषिच्य हस्ताभ्यां पुष्पैः "देवस्य जिह्वार्चीरुचि निवेद्ये निपात्य निवेदयामि भवते जुषाणेदं हविर्विभो" इति वामहस्तेन ग्रासमुद्रा प्रदर्श्य दक्षिण हस्तेन प्राणादि मुद्राः प्रदर्शयेत्। अन्नात् मलांशं धात्वंशं च परित्यज्य रसांशं देवस्य वदनार्चिषि समर्पयेत्। वं अबात्मने इति नैवेद्य मुद्रां प्रदर्शयेत्।

नैवेद्य सारं रससमर्पणात् जातं सुधांशं देवे समर्प्य अंललिमुद्रां बध्वा नैवेद्यसार रससमर्पित जातामृतमय सुधांशुना पुनः पुनः वर्धितं देवं हृन्मूर्ति देवं ध्यायन् स्व स्व मूलमन्त्रं यथा शक्ति जप्त्वा।

कलश के आगे स्थल शुद्धिकर गोमय से शुद्धिकर चतुरस्र मण्डल को बनाकर उस पर शुद्ध पात्र को रखें। पात्र में थोडा सा घी डालें। उस पात्र में निर्मल हविस् (नैवेद्य पदार्थ को) को घी पर रखें उस हविस् को घी से भिगोयें। गायत्री मंत्र से नैवेद्य का प्रोक्षण करें। यंयं यं" इस वायु बीज को जपकर हविस् को शुद्ध करें। दाहिने हाथ में (रं) अग्नि बीज को लिखकर उस अग्नि से हविस् में विद्यमान कश्मलों को लजायें। (कल्पना करें) बायें हाथ में अमृत बीज (वं) को लिखकर उस हाथ से हविस् को शुद्ध करें। धोने की कल्पना करें। **ॐ नमोनारायणाय**। इस मन्त्र का आठ बार जप करें। हविस् को मत्रमय एवं अमृतमय होने की कल्पना करें। सुरभि मुद्रा से अमृतमय हुआ है मानकर मलांश, धातु अंश एवं रसांश को अलग-अलग करने की कल्पना करें। देवता को नैवेद्य ग्रहण करने की इच्छा उत्पन्न करनी चाहिये। "सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि" इससे परिषिञ्चन करें। दोनों हाथों में पुष्प लेकर देवता का जीभ नैवेद्य तक पहुँचने का चिन्तन करें। "निवेदयामि भवते जुषाण हविर्विभो" कहकर नैवेद्य स्वीकार करने की प्रार्थना करते हुए बायें हाथ से ग्रास मुद्रा (जैसे बछडे को घास देते हैं) को दिखाकर दाहिने हाथ से—

प्राणाय स्वाहा-अङ्गुष्ठ कनिष्ठिका मिलाकर, **अपानाय स्वाहा**-अङ्गुष्ठ एवं तर्जनी मिलाकर, **व्यानाय स्वाहा**-अङ्गुष्ठ एवं मध्यमा मिलाकर, **उदानाय स्वाहा**-अङ्गुष्ठ एवं अनामिका मिलाकर, **समानाय स्वाहा**। सभी अङ्गुलियों को लिाकर। अन्न से मलांश एवं धातु के अंश को अलग कर केवल रसांश को अर्पित करने की कल्पना करें।

''वं अबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि'' कहकर नैवेद्य मुद्रा का प्रदर्शन करें। अंगुष्ट एवं अनामिका मिलाने से नैवेद्य मुद्रा। नैवेद्य का सार जो रसांश था उसका भी सार अमृत का जो अंश है उसे देवता को समर्पित कर, हाथ जोडकर, नैवेद्य के सार अमृत से भगवान् को बढते हुए मानकर उसे हृदय में स्थित मानकर यथाशक्ति ॐ **नमोनारायणाय**। '' इस मूल मंत्र का जप करें।

ॐ स्वा॒दुः पंवस्व दि॒व्याय॒ जन्मं॑ने स्वा॒दुरिंद्रा॑य सु॒हवीं॑तुनाम्ने।
स्वा॒दुर्मि॒त्राय॒ वरुं॑णाय वा॒यवे॒ बृह॒स्पतं॑ये॒ मधुं॑मां॒ अदा॑भ्यः॥ *(ऋग्वेद ९.८५.६)*

ॐ च॒न्द्रमा॒ मनं॑सो जा॒तश्चक्षो॒ः सूर्यो॑ अजायत। मुखा॒दिन्द्रं॑श्चा॒ग्निश्चं॑ प्रा॒णाद्वा॒युरं॑जायत॥ *(ऋग्वेद १०.९०.१३)*

ॐ आ॒र्द्रां पुष्करि॑णीं पु॒ष्टिं पि॒ङ्गलां॑ पद्म॒मालि॑नीम्। च॒न्द्रां हि॒रण्म॑यीं ल॒क्ष्मीं जात॑वेदो म॒ आव॑ह॥

(ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

यथा संभव नैवेद्यं निवेदयामि। **अमृतापिधानमसि** कहकर उत्तरापोशन देवें। हस्ताप्रक्षालनार्थे जलं समर्पयामि। गण्डूषार्थे जलं समर्पयामि। शुद्धाचमनार्थे जलं समर्पयामि। करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि।

ताम्बूल—पूगीफल समायुक्तं नागवल्या दलैर्युतं। चूर्ण कर्पूर संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥ *(स्मृति संग्रह-देवपूजा)*

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। क्रमुक तांबूलं समर्पयामि।

नीराजन (आरति)—**ॐ अर्चं॑त॒ प्रार्चं॑त॒ प्रियं॑मेधा सो॒ अर्चं॑त। अर्चं॑तु पु॒त्रका उ॒त पुरं॒ न धृ॒ष्ण्वं॑र्चत।** *(ऋग्वेद ८.६९.८)*

ॐ ध्रु॒वा द्यौ ध्रु॒वा पृ॑थि॒वी ध्रु॒वास॒ः पर्व॑ता इ॒मे। ध्रु॒वं विश्व॑मि॒दं जग॑द् ध्रु॒वो राजा॑ वि॒शाम॒यम्॥

ॐ ध्रुवं ते राजा वरुणो ध्रुवं देवो बृहस्पतिः। ध्रुवं त इन्द्रश्चाग्निश्च राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम्॥ (ऋग्वेद १०.१७३.४)

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। मंगल नीराजनंसमर्पयामि।

मंत्रपुष्प—ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदं। समूळ्हमस्य पांसुरे। (ऋग्वेद १.२२.१७) आ. गृ. सूत्रम्

ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन्। (ऋग्वेद-१०.९०.१४)

ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्। सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

(ऋग्वेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्) सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। मंत्रपुष्पं समर्पयामि।

प्रदक्षिणा नमस्कार—यानि कानि च पापानि जन्मांतर कृतानि च। तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे पदे॥ (देवपूजा-स्मृति संग्रह)

ॐ सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुं॥ (ऋग्वेद १०.९०.१५)

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावोदास्योऽश्वान् विंदेयं पुरुषानहम्॥ (ऋग्वेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। प्रदक्षिणा नमस्कारान् समर्पयामि।

प्रसन्नार्घ्य—ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि। तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्॥ इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यम् (कहकर तीन बार पुष्पमिश्रित जल छोडें।)

सर्वोपचार पूजनम्—ॐ छत्रं समर्पयामि। चामरेण वीजयामि। गीतं गायामि। नाट्यं नटामि। आंदोळिकामारोहयामि। अश्वमारोहयामि। गजमारोहयामि। समस्य राजोपचार देवोपचार पूजां समर्पयामि।

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।

तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥ (ऋग्वेद १०.९०.१६)

ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्। सूक्तं पंचदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्॥ (ऋग्वेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। सर्वोपचार पूजां समर्पयामि।

प्रार्थना—विष्णुं जिष्णुं महाविष्णुं प्रभविष्णुं महेश्वरम्। अनेकोत्पात शमनं नमामि पुरुषोत्तमम्॥

ॐ कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुध्यात्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि॥ (पौराणिकम्)

ॐ ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविः ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्। ब्रह्मैव तेन गंतव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना॥ (श्री भगवद्गीते)

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। अनेन पूजनेन सपरिवारः श्री विष्णुः प्रीयताम्।

नवग्रहषोडशोपचार पूजन

ध्यायामि। ध्यानं समर्पयामि।

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिं विश्वतो वृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥ (ऋग्वेद १०.९०.१)

ॐ हिरण्य वर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रहमण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, आवाहनं समर्पयामि।

ॐ पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति॥ (ऋग्वेद १०.९०.२)

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रहमण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, आसनं समर्पयामि।

ॐ एतावानस्य महिमाऽतो ज्यायाँश्च पूरुषः। पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥ (ऋग्वेद १०.९०.३)

ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद प्रमोदिनीम्। श्रियं देवी मुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, पादारविंदयोः पाद्यं पाद्यं समर्पयामि।

ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत् पुरुषः पादोऽस्येहा भवत् पुनः। ततो विष्वं व्यक्रामत् साशनानशने अभि॥ (ऋग्वेद १०.९०.४)

ॐ कां सोस्मितां हिरण्य प्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्। पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्।

(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहितदेवताभ्यो नमः, हस्तयोः अर्घ्यमर्घ्यं समर्पयामि।

ॐ तस्माद् विराळजायत विराजो अधिपूरुषः। सजातो अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथो पुरः॥ (ऋग्वेद १०.९०.५)

ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्ती श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।

तां पद्मिनींमीं शरणमहं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः। मुखे आचमनीयं समर्पयामि।

पञ्चामृत स्नानम् पयः (दूध)—ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्णियं। भवावाजस्य सङ्गथे। (ऋग्वेद १.९१.१६)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, पयः स्नानं समर्पयामि। दूध से स्नान के बाद शुद्धोदक स्नान

ॐ उद्यन्नद्य मित्रमह आरोहन्नुत्तरां दिवम्। हृद्रोगं मम सूर्य हरिमाणं च नाशय॥ (ऋग्वेद १.५०.११)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः। पयः स्नानांते शूद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

दधि (दहि)—ॐ द॒धि॒क्राव्णो॑ अकारिषं जि॒ष्णोरश्व॑स्य वा॒जिन॑ः। सु॒र॒भि नो॒ मुखा॑ कर॒त्प्रण॒ आयूं॑षि तारिषत् ॥ (ऋग्वेद ४.३९.६)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, दधि स्नानं समर्पयामि। दहि स्नान के बाद शुद्धोदक स्नान

ॐ शुके॑षु मे हरि॒माणं॑ रोप॒णाका॑सु दध्मसि। अथो॑ हारिद्र॒वेषु॑ मे हरि॒माणं॒ नि द॑ध्मसि ॥ (ऋग्वेद १.५०.१२)

ॐ नवग्रह मंडलस्थ आवाहितदेवताभ्यो नमः, दधि स्नानांते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

घृत (घी)—ॐ घृ॒तं मि॑मिक्षे घृ॒तम॑स्य॒ योनि॑र्घृ॒ते श्रि॒तो घृ॒तम्व॑स्य॒ धाम॑।

अ॒नु॒ष्व॒धमा व॑ह मा॒दय॑स्व॒ स्वाहा॑कृतं वृषभ वक्षि ह॒व्यम् ॥ (ऋग्वेद २.३.११)

ॐ नवग्रह मंडलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, घृत स्नानं समर्पयामि। घी स्नान के बाद शुद्धोदक स्नान

ॐ उद॑गाद॒यमा॑दि॒त्यो विश्वे॑न॒ सह॑सा स॒ह। द्वि॒षन्तं॒ मह्यं॑ र॒न्धय॒न् मो अ॒हं द्वि॑ष॒ते र॑धम् ॥ (ऋग्वेद १.५०.१३)

ॐ नवग्रह मंडलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, घृतस्नानांते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

मधु (शहद)—ॐ मधु॒वाता॑ ऋताय॒ते मधु॑ क्षरन्ति॒ सिन्ध॑वः। माध्वी॑र्नः स॒न्त्वोष॑धीः ॥

ॐ मधु॒नक्त॑मु॒तोष॑सो॒ मधु॑म॒त्पार्थि॑वं॒ रजः॑। मधु॒ द्यौर॑स्तु नः पि॒ता ॥

ॐ मधु॑मान्नो॒ वन॒स्पति॒र्मधु॑माँ अस्तु॒ सूर्यः॑। माध्वी॒र्गावो॑ भवन्तु नः ॥ (ऋग्वेद १.९०.६-७-८)

ॐ नवग्रहमंडलस्थ आवाहितदेवताभ्यो नमः, मधु स्नानं समर्पयामि।

ॐ चि॒त्रं दे॒वाना॒मुद॑गा॒दनी॑कं॒ चक्षु॑र्मि॒त्रस्य॒ वरु॑णस्या॒ग्नेः। आप्रा॒ द्यावा॑पृथि॒वी अ॒न्तरि॑क्षं॒ सूर्य॑ आ॒त्मा जग॑तस्त॒स्थुष॑श्च ॥

(ऋग्वेद १.११५.१)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहितदेवताभ्यो नमः, मधु स्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

शर्करा (शक्कर)—ॐ स्वा॒दुः प॑वस्व दि॒व्याय॒ जन्म॑ने स्वा॒दुरिन्द्रा॑य सु॒हवी॑तु॒ नाम्ने॑।

स्वादुर्मित्राय वरुणाय वायवे बृहस्पतये मधुमाँ अदाभ्यः ॥ (ऋग्वेद ९.८५.६)

ॐ नवग्रह मंडलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, शर्करास्नानं समर्पयामि।

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेनाऽदेवो याति भुवनानि पश्यन्॥

(ऋग्वेद १.३५.२)

ॐ नवग्रहमण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, शर्करास्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पायाश्च पुष्पिणीः। बृहस्पति प्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्वं हंसः॥ (ऋग्वेद १०.९७.१५)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, फलस्नानं समर्पयामि।

ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवस्तानं ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे॥
यो वः शिवतमोरसस्तस्य भाजयते हनः। उशतीरिव मातरः॥
तस्मा अरंगमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः॥ (ऋग्वेद १०.९.१-२-३)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, फल स्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेनाऽऽदेवो याति भुवनानि पश्यन्॥
ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य सङ्गथे॥ (ऋग्वेद १.९१.१६)
ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपां रेतांसि जिन्वति॥ (ऋग्वेद ८.४४.१६)
ॐ उद्बुध्यध्वं समनसः सखायः समग्निमिंध्वं बहवः सनीळाः।
दधिक्रामग्निमुषसं च देवीमिंद्रावतोऽवसे निह्वये वः॥ (ऋग्वेद १०.१०१.१)

ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।
यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ (ऋग्वेद २.२३.१५)

ॐ शुक्रं ते अन्यद्यजतं ते अन्यद्विषुरूपे अहनी द्यौरिवासि।
विश्वा हि माया अवसि स्वधावो भद्रा ते पूषन्निहरातिरस्तु॥ (ऋग्वेद ६.५८.१)

ॐ शमग्निरग्निभिः करच्छंनस्तपतु सूर्यः। शं वातो वात्वरपा अपस्त्रिधः॥ (ऋग्वेद ८.१८.९)

ॐ कयानश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कयाशचिष्ठया वृता॥ (ऋग्वेद ४.३१.१)

ॐ केतु कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुष द्भिरजायथाः॥ (ऋग्वेद १.६.३)

ॐ तच्छंय्योरावृणीमहे गातुं यज्ञाय गातुं यज्ञ पतये। दैवी स्वस्तिरस्तु नः। स्वस्तिमानुषेभ्यः।
ऊर्ध्वं जिगातु भेषजम् शंनो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तो अस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥ (ऋग्वेद १०.९०.६)

ॐ आदित्यवर्णो तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, शुद्धोदकस्नानं सपर्मयामि। शुद्धोदक स्नान मंत्रों के तीन प्रकार प्रचलित है।

प्रथम क्रम में—९ ग्रह- ९ अधिदेवता-९ प्रत्यधिदेवता ६ कर्म साद्गुण्य देवता, ८ क्रतु संरक्षक देवता कुल मिलाकर ४१ देवताओं का मंत्र पठन करके शुद्धोदक स्नान करना चाहिये। सभी मंत्र आवाहन में है। नवग्रह यागादियों में इसका प्रयोग होता है। जहाँ कलश पूजन के लिए ही एक पण्डित नियुक्त हो वहाँ भी इसे कर सकते हैं।

द्वितीय क्रम में—९ ग्रह+९ अधिदेवता+९ प्रत्यधिदेवता कुलमिलाकर २७ देवताओं का मंत्र पठन करके शुद्धोदक स्नान कराना चाहिये।
तृतीय क्रम में—९ ग्रहों का मंत्र पठन करके शुद्धोदक स्नान कराना चाहिये।

वस्त्रम्— **ॐ युवं वस्त्राणि पीवसावसाथे युवोरच्छिद्रा मन्तवो ह सर्गाः।**
अवातिरतमनृतानि विश्व ऋतेन मित्रा वरुणा सचेथे। *(ऋग्वेद १.१५२.१)*
ॐ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः। तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये॥ *(ऋग्वेद १०.९०.७)*
ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*
ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, वस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतम्—**ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥**
ॐ तस्माद् यज्ञात् सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम्। पशून्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्यान् ग्राम्याश्च ये॥ *(ऋग्वेद १०.९०.८)*
ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*
ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि, आचमनं समर्पयामि।

आभरणम्—**ॐ हिरण्यरूपः स हिरण्यसन्दृगपान्नपात् सेदु हिरण्यवर्णः। हिरण्ययात् परि योनेर्निषद्या हिरण्यदा ददत्यन्नमस्मै॥**
(ऋग्वेद २.३५.१०)
ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, आभरणं समर्पयामि।

गन्धम्—**ॐ तस्माद् यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे। छंदांसि जज्ञिरे तस्माद् यजुस्तस्मादजायत॥** *(ऋग्वेद १०.९०.९)*
ॐ गंधद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*
ॐ नवग्रहमण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, गन्धं समर्पयामि।

अक्षतम्—ॐ अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत। अर्चन्तु पुत्रका उतपुरन्न धृष्ण्वर्चत॥ (ऋग्वेद ८.६९.८)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पाणि—ॐ आयने ते परायणे दूर्वा रोहन्तु पुष्पिणीः। ह्रदाश्च पुण्डरीकाणि समुद्रस्य गृहा इमे॥ (ऋग्वेद १०.१४२.८)

ॐ तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः। गावो ह जज्ञिरे तस्मात् तस्माज्जाता अजावयः॥ (ऋग्वेद १०.९०.१०)

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥ (ऋग्वेद - पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, पुष्पाणि समर्पयामि।

नाम पूजा

ॐ सहस्रकिरणाय नमः। ॐ सूर्याय नमः। ॐ तपनाय नमः। ॐ सवित्रे नमः। ॐ रवये नमः। ॐ विकर्तनाय नमः। ॐ जगच्चक्षुषे नमः। ॐ द्युमणये नमः। ॐ तिग्मदीधितये नमः। ॐ त्रयीमूर्तये नमः। ॐ द्वादशात्मने नमः। ॐ ब्रह्माविष्णुशिवात्मकाय नमः। ॐ आदित्याय नमः। ॐ अग्नये नमः। ॐ रुद्राय नमः। ॐ चन्द्रमसे नमः। ॐ अद्भ्यो नमः। ॐ गौर्यै नमः। ॐ अङ्गारकाय नमः। ॐ भूम्यै नमः। ॐ स्कन्दाय नमः। ॐ बुधाय नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ पुरुषाय नमः। ॐ बृहस्पतये नमः। ॐ इंद्राय नमः। ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ शुक्राय नमः। ॐ इंद्राण्यै नमः। ॐ इंद्राय नमः। ॐ शनैश्चराय नमः। ॐ प्रजापतये नमः। ॐ यमाय नमः। ॐ राहवे नमः। ॐ सर्पेभ्यो नमः। ॐ मृत्यवे नमः। ॐ केतवे नमः। ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ चित्रगुप्ताय नमः। ॐ विनायकाय नमः। ॐ दुर्गायै नमः। ॐ क्षेत्रपालाय नमः। ॐ वायवे नमः। ॐ आकाशाय नमः। ॐ अश्विभ्यां नमः। ॐ इन्द्राय नमः। ॐ अग्नये नमः। ॐ यमाय नमः। ॐ निर्ऋतये नमः। ॐ वरुणाय नमः। ॐ वायवे नमः। ॐ सोमाय नमः। ॐ ईशानाय नमः। ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, नाम पूजां समर्पयामि।

धूपः— वनस्पति रसोत्पन्नो गन्धाढ्यः सुमनोहरः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्य कौ बाहू का ऊरू पादा उच्येते॥ (ऋग्वेद १०.९०.११)

ॐ कर्दमेन प्रंजा भूता मयि संम्भव कर्दम। श्रियं वासयं मे कुले मातरं पद्ममालिंनीम्।। (ऋग्वेद - पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रह मराडलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, धूपं आघ्रापयामि।

दीपं— साज्यं त्रिवर्ति संयुक्तं वह्निना योजितं मया। गृहाण मङ्गलं दीपं त्रैलोक्यतिमिरापह।।

ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखंमासीद्बाहू राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अंजायत।। (ऋग्वेद १०.९०.१२)

ॐ आपः स्रजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत व सं मे गृहे। नि चं देवीं मातरं श्रियं वासयं मे कुले।। (ऋग्वेद - पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रह मराडलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, दीपं दर्शयामि। धूपदीपानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि।

नैवेद्यं—नैवेद्य रखने के स्थल पर मराडल बनायें (चतुरस्र) नैवेद्य को मराडल पर रखने के बाद मंत्र पढ़ें। विश्वामित्र ऋषिः देवी गायत्री छन्दः, सविता देवता निवेदने विनियोगः। एक बार नैवेद्य पर गायत्री मंत्र से प्रोक्षण करें। सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि इस मंत्र से दिन में एवं **ऋतं त्वा सत्येन परिषिञ्चामि**। इस मंत्र से रात्रि में परिषिञ्चन करें।

यथा संभव नैवेद्यं निरीक्षस्व कहकर प्रार्थना कर **अमृतोपस्तरणमसि** मन्त्र से जल छोड़ें। बायें हाथ से ग्रास मुद्रा (जैसे बछड़े को घास खिलाते हैं) एवं दाहिने हाथ से निम्न मुद्राओं से देवताओं को नैवेद्य अर्पण करें। मन में कल्पना करें कि भगवान को खिला रहे हैं। प्राणाय स्वाहा। अपानाय स्वाहा। व्यानाय स्वाहा। उदानाय स्वाहा। समानाय स्वाहा। ॐ घृणिः सूर्य आदित्यः—इस मूल मंत्र को आठ बार जप करें।

ॐ स्वादुः पंवस्व दिव्याय जन्मंने स्वदुरिन्द्रांय सुहवींतु नाम्ने।
स्वादुर्मित्राय वरुणाय वायवे बृहस्पतंये मधुमाँ अदाभ्यः।। (ऋग्वेद ९.८५.६)

ॐ चन्द्रमा मनंसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत। मुखादिन्द्रंश्चाग्निश्चं प्राणाद्वायुरंजायत।। (ऋग्वेद १०.९०.१३)

ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिंनीम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातंवेदो म आवंह।। (ऋग्वेद - पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)

यथा सम्भवं नैवेद्यं निवेदयामि। अमृतापिधानमसि। कहकर उत्तरापोशण जल दें। उत्तरापोशनार्थं जलं समर्पयामि। हस्तप्रक्षालनार्थे जलं समर्पयामि।

गराडूषार्थे जलं समर्पयामि। शुद्धाचमनार्थे जलं समर्पयामि। करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि।

ताम्बूलम्—पूगीफलसमायुक्तं नागवल्ल्यादलैर्युतम्। चूर्णं कर्पूर संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥ ॐ नवग्रह मराडलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, क्रमुक ताम्बूलं समर्पयामि। ताम्बूल के पश्चात् नीराजन करें।

ॐ अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत। अर्चन्तु पुत्रका उत पुरं न घृष्णवर्चत॥ *(ऋग्वेद ८.६९.८)*

ॐ श्रिये जातः श्रिय आनिरियाय श्रियं वयो जरितृभ्यो दधाति।

श्रियं वसाना अमृतत्वमायन् भवन्ति सत्या समिथा मितद्रौ॥ *(ऋग्वेद ९.९४.४)*

ॐ ध्रुवाद्यौ ध्रुवापृथिवी ध्रुवासः पर्वता इमे। ध्रुवं विश्वमिदं जगद् ध्रुवो राजा विशामयम्॥

ॐ ध्रुवं ते राजा वरुणो ध्रुवं देवो बृहस्पतिः। ध्रुवं त इन्द्रश्चाग्निश्च राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम्॥ *(ऋग्वेद १०.१७३.४-५)*

ॐ नवग्रह मडलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, मङ्गल नीराजनं दर्शयामि।

मन्त्र पुष्पः—**ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च।**

हिरण्ययेन सविता रथेनाऽऽदेवो याति भुवनानि पश्यन्॥ *(ऋग्वेद १.३५.२)*

ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य सङ्गथे॥ *(ऋग्वेद १.९१.१६)*

ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपां रेतांसि जिन्वति। *(ऋग्वेद ८.४४.१६)*

ॐ उद्बुध्यध्वं समनसः सखायः समग्निमिन्ध्वं बहवः सनीळाः।

दधिक्रामग्निमुषसं च देवीमिन्द्रावतोऽवसे निह्वये वः॥ *(ऋग्वेद १०.१०१.१)*

ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।

यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहिचित्रम्॥ *(ऋग्वेद २.२३.१५)*

ॐ शुक्रं ते अन्यद्यजतं ते अन्यद्विषुरूपे अहनीद्यौरिवासि।

विश्वा हि माया अवसि स्वधावो भद्रा ते पूषन्निह रातिरस्तु॥ *(ऋग्वेद ६.५८.१)*

ॐ शमग्निरग्निभिः करच्छनस्तपतु सूर्यः। शं वातो वात्वरपा अपस्त्रिधः॥ *(ऋग्वेद ८.१५.६)*

ॐ कयानश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥ *(ऋग्वेद ४.३१.१)*

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशोमर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः॥ *(ऋग्वेद १.६.३)*

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, मंत्रपुष्पं समर्पयामि।

प्रदक्षिणा नमस्कारः—यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च। तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे पदे॥

ॐ सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम्॥ *(ऋग्वेद १०.९०.१५)*

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्।

(ऋग्वेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रहमण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, प्रदक्षिणा नमस्कारान् समर्पयामि।

प्रसन्नार्घ्यः—ॐ प्रभाकराय विद्महे दिवाकराय धीमहि। तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्॥ ॐ अत्रिपुत्राय विद्महे अमृतोद्भवाय धीमहि। तन्नः सोमः प्रचोदयात्॥ ॐ भूमिपुत्राय विद्महे भारद्वाजाय धीमहि। तन्नः कुजः प्रचोदयात्॥ ॐ तारापुत्राय विद्महे सोमपुत्राय धीमहि। तन्नो बुधः प्रचोदयात्॥ ॐ देवाचार्याय विद्महे वाचस्पतये धीमहि। तन्नो गुरुः प्रचोदयात्॥ ॐ दैत्याचार्याय विद्महे विद्यारूपाय धीमहि। तन्नः शुक्रः प्रचोदयात्॥ ॐ सूर्यपुत्राय विद्महे शनैश्चराय धीमहि। तन्नो मंदः प्रचोदयात्॥ ॐ सैंहिकेयाय विद्महे तमोमयाय धीमहि। तन्नो राहुः प्रचोदयात्॥ ॐ ब्रह्मपुत्राय विद्महे विकृतास्याय धीमहि। तन्नः केतुः प्रचोदयात्॥

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहितं देवताभ्यो नमः, इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यं, प्रसन्नार्घ्यं समर्पयामि।

सर्वोपचार पूजनम्—ॐ छत्रं समर्पयामि। चामरेण वीजयामि। गीतं गायामि। नाट्यं नटामि। आन्दोळिकामारोहयामि। अश्वमारोहयामि। गजमारोहयामि। समस्त राजोपचार देवोपचारपूजां समर्पयामि।

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥

(ऋग्वेद १०.९०.१६)

ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्। सूक्तं पंचदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्॥ (ऋग्वेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, सर्वोपचारपूजां समर्पयामि।

प्रार्थना— **ग्रहाणामादिरादित्यो लोकरक्षणकारकः। विषमस्थानसंभूतां पीडां हरतु ते रविः॥**
रोहिणीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रः सुधाशनः। विषमस्थानसंभूतां पीडां हरतु ते विधुः॥
भूमिपुत्रो महातेजा जगतां भयकृत्सदा। वृष्टिकृद्वृष्टिहर्ता च पीडां हरतु ते कुजः॥
उत्पातरूपो जगतां चन्द्रपुत्रो महाद्युतिः। सूर्य प्रियकरो विद्वान् पीडां हरतु ते बुधः॥
देवमन्त्री विशालाक्षः सदालोकहितेरतः। अनेक शिष्य संपूर्णः पीडां हरतु ते गुरुः॥
दैत्यमन्त्री गुरुस्तेषां प्राणदश्च महामतिः। प्रभुस्ताराग्रहाणां च पीडां हरतु ते भृगुः॥
सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः। मंदचारः प्रसन्नात्म पीडां हरतु ते शनिः॥
महाशिरा महावक्त्रौ दीर्घदंष्ट्रो महाबलः। अतनुश्चोर्ध्व केशश्च पीडां हरतु ते तमः॥

अनेक रूपवर्णैश्च शतशोथ सहस्रशः। उत्पातरूपो जगतः पीडां हरतु ते शिखी॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

आरोग्यं पद्मबन्धुर्वितरतु विपुलां संपदं शीतरश्मिः, भूलाभं भूमिपुत्रः सकलगुणयुतां वाग्विभूतिं च सौम्यः। सौभाग्यं देवमन्त्री रिपुभयशमनं भार्गवः शौर्यमार्किः, दीर्घायुस्सैंहिकेयो विपुलतरयशः केतुराचन्द्रतारम्॥ शान्तिरस्तु। शिवं ते अस्तु। ग्रहाः कुर्वन्तु मङ्गलम्। अरिष्टानि प्रणश्यन्तु। दुरितानि भयानि च। ॐ नवग्रहमण्डलस्थ देवताभ्यो नमः, प्रार्थनां समर्पयामि। **अनेन कृत पूजनेन आदित्यादि नवग्रहदेवताः प्रीयन्ताम्॥**

यहाँ पर नवग्रह पूजन समाप्त हुआ। मण्डप में कलशों का पूजन भी संपूर्ण हुआ।

तृतीय / चतुर्थ / पञ्चम दिन द्वितीय प्रहर

देह शुद्धि—येभ्यो मातेत्यस्य गयःप्लात ऋषिः। विश्वेदेवा देवताः। जगतीछन्दः। एवापित्रेत्यस्य वामदेव ऋषिः। बृहस्पतिर्देवता। त्रिष्टुप् छन्दः। मनुष्य गन्ध निवारणे विनियोगः।

ॐ येभ्यो॑ मा॒तामधु॑म॒त् पिन्व॑ते॒ पयः॑ पी॒यूषं॒ द्यौरदि॑ति॒रद्रि॑बर्हाः।

उ॒क्थशु॑ष्मान् वृषभ॒रान्त्स्वप्न॑स॒स्ताँ आ॑दि॒त्याँ अनु॑मदास्व॒स्तये॑॥ *(ऋक्वेद १०.६३.३)*

ॐ ए॒वापि॒त्रे वि॒श्वदे॑वाय॒ वृष्णे॑ य॒ज्ञैर्वि॑धेम॒ नम॑सा ह॒विर्भिः॑।

बृह॑स्पते सुप्र॒जा वी॒रव॑न्तो व॒यं स्या॑म॒ पत॑यो रयी॒णाम्॥ *(ऋक्वेद ४.५०.६)*

आचमन मन्त्र—ऋग्वेदाय स्वाहा। यजुर्वेदाय स्वाहा। सामवेदाय स्वाहा। (स्वाहा मन्त्र से जल पीना चाहिये।) अथर्ववेदाय नमः। इतिहास पुराणेभ्यो नमः। अग्नये नमः। वायवे नमः। प्राणाय नमः। सूर्याय नमः। चन्द्राय नमः। दिग्भ्यो नमः। इन्द्राय नमः। पृथिव्यै नमः। अन्तरिक्षाय नमः। दिवे नमः। ब्रह्मणे नमः। विष्णवे नमः। सदाशिवाय नमः। द्विराचम्य .. इस प्रक्रिया को दुबारा करना चाहिये।

पवित्र धारणम्—पवित्रन्त इत्यनयोः आङ्गीरसः पवित्र ऋषिः। पवमानः सोमो देवता। जगतीछन्दः। पवित्राभिमंत्रणे, धारणे विनियोगः।

ॐ पवित्रंन्ते वितंतं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि विश्वतः।
अतंप्तनूर्न तदामो अंश्नुतेशृता सइद्वहंन्तस्तत् समांशत॥ *(ऋग्वेद ६.८३.१)*
ॐ तपोष्पवित्रं वितंतं दिवस्पदे शोचंन्तो अस्य तन्तंवो व्यंस्थिरन्।
अवंन्त्यस्य पवीतारं माशवों दिवस्पृष्ठमधिंतिष्ठन्ति चेतंसा॥ *(ऋग्वेद ६.८३.२)*

ॐभूर्भुर्वः स्वः कहकर जल सिञ्चन करें॥ (इन मन्त्रों से पवित्र शुद्धिकर धारण करना चाहिये आसन के नीचे दो कुश डाल लेना चाहिये।)

प्राणायाम—प्रणवस्य परब्रह्म ऋषिः, दैवी गायत्री छन्दः, परमात्मा देवता प्राणायामे विनियोगः।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं। ॐ तत्संवितुर्वरेंण्यं भर्गो देवस्यं धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयांत्। ॐ आपो ज्योतीरसोमृतं ब्रह्म भूर्भुवस्वरोम्। *(ऋग्वेद ३.६२.१०)*

(रेखङ्कित मन्त्र को तीन बार कुम्भक में जप करना चाहिये।)

आसन शुद्धि—ॐ स्योना पृंथिवि भवानृक्षरा निवेशंनी। यच्छां नः शर्मं सप्रथः।' *(१५ मन्त्र-२२ सूक्त-प्रथम मण्डल)* इस मन्त्र से जल प्रोक्षण करने से भूमि शुद्ध होती है।

शिखाबन्धनम्—

ऊर्ध्वकेशि विरूपाक्षि मांसशोणित भक्षणे। तिष्ठ देवि शिखाबन्धे चामुण्डे ह्यपराजिते॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

(इस मन्त्र से शिखाबन्धन करना चाहिये।)

महा संकल्प —

गुरू प्रार्थना —

नमो गुरुभ्यो गुरुपादुकाभ्यो नमः परेभ्यः परपादुकाभ्यः।
आचार्य सिद्धेश्वर पादुकाभ्यो नमोऽस्तु लक्ष्मीपति पादुकाभ्यः॥ *(श्रृङ्गेरी मठीय आचार्य प्रार्थनम्)*

श्री गुरु परमगुरु परमेष्ठी गुरु सद्गुरु पादुकाभ्यो नमो नमः।

हवन कुराड में

स्थंडिल शुद्धिः—तद् गोमयेन प्रदक्षिणामुपलिप्य दक्षिणे उदीच्यां द्वे, प्रतीच्यां चतुः, प्राच्यामर्धं इत्यंगुलानित्यक्त्वा दक्षिणोपक्रमां उदक्संस्थां प्रादेशमात्रां एकां लेखां तस्या दक्षिणोत्तरयोः प्रागायते पूर्वरेखया असंसृष्टे प्रादेशसंमिते द्वे लेखे लिखित्वा तयोर्मध्ये परस्परं असंसृष्टाः उदक्संस्थाः प्रागायताः प्रादेश संमिताः तिस्त्रः इति षड्लेखाः यज्ञीय शकलमूलेन दक्षिण हस्तेन उल्लिख्य लेखासु तच्छकलं उदगग्रं निधाय स्तंडिलं अद्भिः अभ्युक्ष्य शकलं भंक्त्वा आग्नेय्यां निरस्य पाणिं प्रक्षाल्य वाग्यतः भवेत्।

स्थरिडल को पहले गोमय से लेपना चाहिये। स्थरिडल (वेदी) में दक्षिण में आठ अंगुल, उत्तर में दो अंगुल, पश्चिम में चार अंगुल, पूर्व में आधा अंगुल छोड़कर दक्षिण से प्रारम्भकर उत्तर में समाप्त हो ऐसे १२ अंगुल चौक बनाना चाहिये। फिर बीच में दक्षिण से उत्तर एक रेखा खींचना चाहिये। १२ अंगुल फिर दक्षिण से प्रारम्भ कर एक दक्षिण में एवं एक उत्तर में दो रेखायें पश्चिम से पूर्व की ओर खीचें १२ अंगुल बी फिर दक्षिण से प्रारम्भकर दक्षिण में समाप्त होने वाले पश्चिम से पूर्व में समाप्त होने वाले तीन रेखायें। (१२ अंगुल) खीचें। (प्रादेश प्रमाण–लगभग १२ अंगुल) (ब) इसे यज्ञ में प्रयुक्त

अश्वत्थादि समित् के अग्रभाग से इन लकीरों को खीचना चाहिये। दाहिने हाथ से लिखें। (रेत पर) खीचने वाले समित् को उसके ऊपर उत्तर उत्तराभिमुख रखें। फिर स्थण्डिल (stage) को जल से अभ्युक्षण करना चाहिये। (अभ्युक्षण मतलब मुष्टि में जल लेकर सिञ्चन करना चाहिये।) फिर उस समित् को (लकीर खीचें) तोडकर आग्नेय दिशा में फेंककर हाथ धो लेना चाहिये।

अग्नि प्रतिष्ठा—यहाँ तक होम वेदी निर्माण विधि, होम वेदी पर देवताओं का आवाहन पूजन संपन्न हुआ। आगे अग्नि प्रतिष्ठा विधान वर्णित है। ततः तैजसेन असंभवे मृन्मयेन वा पात्रयुग्मेन संपुटीकृत्य सुवासिन्या श्रोत्रियागारात् स्वगृहाद्वा समृद्धं निर्धूमं अग्निं आहृतं स्थंडिलात् आग्नेय्यां निधाय। उसके बाद लोहपात्र में (संभव हो तो ताम्र पात्र में) यदि न हो तो मिट्टी के पात्र में श्रोतियों के घर से या अपने घर से लाकर, धुऐं रहित अंगारों को पात्र में रखकर दूसरे पात्र से ढक्कर लाना चाहिये। लाए हुए अग्निपात्र को स्थण्डिल होमवेदी के आग्नेय दिशा में रखना चाहिये।

एह्यग्नेराहूगणोगोतमोग्निस्त्रिष्टुप् अग्न्याह्वाने विनियोगः। एह्यंग्नइहहोता निषीदादंब्धः सुपुर एताभंवानः॥
अवंतांत्वारोदंसीविश्वमिन्वेयजांमहे सौंमनसायं देवान्। *(ऋग्वेद १.७६.२)*

जुष्टोदमूना आत्रेयोवसुश्रुतोग्निस्त्रिष्टुप् अग्निनमस्कारे विनियोगः॥

ॐ जुष्टोदमूंनाअतिंथिर्दुरोण इमं नों यज्ञमुपंयाहि विद्वान्। विश्वांअग्ने अभियुजों विहत्यां शत्रूयतामाभंराभोजंनानि॥
(ऋग्वेद ५.४.५)

पहले मन्त्र से अग्नि देव को आह्वन करें। एवं दूसरे मंत्र से नमस्कार करें। **आच्छादनं दूरीकृत्य** फिर ऊपर ढके पात्र को निकालें।

समस्तव्याहृतीनां परमेष्ठीप्रजापतिः प्रजापतिर्बृहती। अग्निप्रतिष्ठापने विनियोगः।

ॐभूर्भुवः स्वः। इति आत्माभिमुख पाणिभ्यां षट्सुलेखासु अमुक नामानमग्निं प्रतिष्ठापयामि इति अग्निं प्रतिष्ठाप्य। ऊपर के मन्त्र कहकर अग्नियुक्त पात्र को अपने सामने हाथों में पकडकर एक बार पदक्षिण कर जो ६ रेखायें है, उन पर कर्माङ्ग देवता नामक अग्नि को प्रतिष्ठापित कर रहा हूँ कहकर रखना चाहिये। रखते समय हाथ कर्तरी शकल में होना चाहिये। कैची जैसे (cross) अग्न्याहरण पात्रयोः अक्षतैः सह उदकमासिच्य इन्धनंप्रोक्ष्य वेणु धमन्या प्रबोधयेत्। अग्नि लायें दोनों पात्रों में अक्षत डालकर जल सींचकर उसे बाहर कर देवें। फिर लकडियों को जल से प्रोक्षण कर बॉस की या लोहे की

धमनी फूकनी से फूंककर अग्नि को प्रज्वलित करें। अग्निनाग्निः काण्वोमेधातिथिः अग्निर्गायत्री अग्नि समिन्धने विनियोगः।

ॐ अ॒ग्निना॒ग्निः समि॑ध्यते क॒विर्गृ॒हप॑ति॒र्युवा॑। ह॒व्य॒वाड्जु॒ह्वा॑स्यः।

विज्ज्योतिषेति जानो वृषोग्निस्त्रिष्टुप् अग्नि ज्वलने विनियोगः।

ॐ विज्ज्योति॑षा बृह॒ता भा॑त्य॒ग्निरा॒विर्विश्वा॑नि कृणुते महि॒त्वा।

प्रादे॑वीर्मा॒यायाः सहते दु॒रेवा॒ः शिशी॑ते॒ शृंगे॒रक्ष॑से वि॒निक्षे॑। *(ऋग्वेद ५.२.९)*

इन मन्त्र से अग्नि ज्वलन करना चाहिये।

अग्निमूर्तिध्यान—चत्वारिश्रृंगागोतमो वामदेवोग्निस्त्रिष्टुप्। अग्निमूर्ति ध्याने विनियोगः।

ॐ च॒त्वारि॒ शृंगा॒त्रयो॑ अस्य॒ पादा॒ द्वे शी॒र्षे स॒प्तहस्ता॑सो अस्य। त्रिधा॑ब॒द्धो वृ॒ष॒भोरो॑रवीति म॒होदे॒वो मर्त्या॒ँआवि॑वेश॥

सप्तहस्तश्चतुः शृंगः सप्तजिह्वो द्विशीर्षकः। त्रिपात्प्रसन्नवदनः सुखासीनः सुचिस्मितः॥

स्वाहांतुदक्षिणेपार्श्वे देवीं वामेस्वधां तथा। बिभ्रद्दक्षिण हस्तैस्तु शक्तिमन्नंस्त्रुचं स्त्रुवं॥

तोमरंव्यजनंवामैर्घृतपात्रं च धारयन्। मेषारूढो जटाबद्धो गौरवर्णो महौजसः।

धूम्रध्वजो लोहिताक्षः सप्तार्चिः सर्वकामदः॥ आत्माभिमुख मासीन एवं रूपो हुताशनः। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-अग्निमुख प्रकरण)*

इन मन्त्रों को पढकर ध्यान करें। अग्ने अच्छावदेत्यस्य मन्त्रस्य अग्निस्तापसोग्निरनुष्टुप् अग्नि स्वाभिमुखीकरणे विनियोगः।

ॐ अग्ने॒ अच्छा॑वदे॒हनः प्र॒त्यङ्नः सु॒मना॑ भव। प्रनो॑यच्छ विशस्पते धन॒दा अ॑सि न॒स्त्वम्॥ *(ऋग्वेद १०.१४१.१)*

ॐ ए॒ष हि दे॒वः प्र॒दिशो न॒ु सर्वा॒ः पूर्वो॑ हि जा॒तस्य उ॒ गर्भे॑ अ॒न्तः।

स वि॒जाय॑मानस्य जनि॒ष्यमा॑णः प्र॒त्यङ्मुखा॑स्तिष्ठति वि॒श्वतो॑मुखः॥ *(यजुर्वेद-आरण्यक-महानारायणोपनिषत्)*

हे अग्ने शाण्डिल्यगोत्र मेषारूढ वैश्वानर प्राङ्मुखः सन् ममाभिमुखो वरदस्सुप्रसन्नो भव। इतना कहकर ध्यसान से सम्मुख करके अन्वाधान करें।

अन्वाधान—अन्वाधानाभिधं कर्म क्रियते सर्वकर्मसु। निमन्त्रणार्थं देवानां होतव्यानां च होतृभिः॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

सभी कर्मों में अन्वाधान कर्म करना चाहिये। ऋत्विज अपने यज्ञ में जिन-जिन देवताओं को आहुतियाँ देते हैं उन्हें पहले बुलाकर सूचित करना चाहिये। यह क्रिया अन्वाधान कहलाता है। **आचम्य प्राणानायम्य देशकालौस्मृत्वा श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थं एतत् कर्म करिष्ये।** आचमन कर (यदि बीच में उठ के बार गये हो तो), प्राणायाम करके देशकालसंकीर्तन पूर्वक संकल्प लें। **तत्र देवता परिग्रहार्थं अन्वाधानं करिष्ये।** समित् द्वयं आदाय। (दो समितों को हाथ में लेकर) अस्मिन् अन्वाहितेग्नौ जातवेदसमग्निं इध्मेन प्रजापतिं प्रजापतिं चाघारदेवते आज्येन अग्नीषोमौचक्षुषी आज्येन। इन अग्नियों में जातवेदाग्नि को समित् से, आधार देवता प्रजापति एवं प्रजापति को घी से, चक्षुष् अग्नि सोम को घी से होम करना चाहिये। यह पूर्वाङ्ग है। सभी यज्ञों में इतना अन्वाधान होता है। आगे यज्ञों के अनुसार बदलता है।

जैसे सर्वाद्भुत शान्ति याग—अग्निं वायुं सूर्य प्रजापतिं च आज्यद्रव्येण प्रधान देवतां आदित्यं अधिदेवतामग्निं प्रत्यधिदेवतां रुद्रं अर्क समित् चर्वाज्य द्रव्यैः प्रधान देवतां सोमं अधिदेवतां अपः प्रत्यधिदेवतां गोरीं, पलाशसमित् चर्वाज्य द्रव्यैः, प्रधान देवतां अंगारकं अधिदेवतां भूमिं, प्रत्यधिदेवतां स्कन्दं खदिरसमित् चर्वाज्य द्रव्यैः, प्रधान देवतां बुधं, अधिदेवतां विष्णुं प्रत्यधिदेवतां पुरुषं अपामार्ग समित् चर्वाज्य द्रव्यैः, प्रधान देवतां बृहस्पितिं, अधिदेवतां इन्द्रं, प्रत्यधिदेवतां, ब्रह्माणं पिप्पल समित् चर्वाज्य द्रव्यैः, प्रधान देवतां शुक्रं, अधिदेवतां इन्द्राणीं प्रत्यधिदेवतां इन्द्रं, औदुम्बर समित् चर्वाज्यद्रव्यैः प्रधानदेवतां शनिं अधिदेवतां प्रजापतिं प्रत्यधिदेवतां यमं, शमीसमित् चर्वाज्यद्रव्यैः, प्रधान देवतां राहुं अधिदेवतां सर्पान् प्रत्यधिदेवतां मृत्युं, दूर्वा समित् चर्वाज्य द्रव्यैः, प्रधान देवतां केतुं, अधिदेवतां ब्रह्माणं प्रत्यधिदेवतां चित्रगुप्तं कुशसमित् चर्वाज्य द्रव्यैः प्रधान देवताः अष्टाविंशति संख्यया अधिदेवताः प्रत्यधिदेवताः दशांशसंख्यया विनायकं दुर्गां क्षेत्रपालं वायुं आकाशं अश्विनौ क्रतु साद्गुण्य देवताः प्रधान विंशांश संख्यया इन्द्रं अग्निं यमं निर्ऋतिं वरुणं वायुं कुबेरं ईशानं एताः क्रतुसंरक्षणदेवताः प्रागुक्त समित् चर्वाज्यद्रव्यैः प्रधान विंशांश संख्याया अग्निं वायुं सूर्यं प्रजापतिं च आज्यद्रव्येण, सर्वाद्भुत शान्ति होमे प्रधान देवतां विष्णुं अष्टोत्तर शतसंख्यया चरु द्रव्येण, विष्णुं महाद्भुताधिपतिं महाविष्णुं ईश्वरं सर्वौत्पातशमनं अग्निं पृथिवीं महान्तं वायुमन्तरिक्षं महान्तं आदित्यं दिवं महान्तं प्रजापतिं चन्द्रमसं नक्षत्राणि दिशो महान्तं च एताः देवताः आज्य द्रव्येण एकैक संख्यया चरु शेषेणास्विष्टकृतमग्निं इध्मसन्नहनेन रुद्रं अयासमग्निं देवान् विष्णुं अग्निं, वायुं सूर्यं प्रजापतिं च एताः प्रायश्चित्त देवता आज्येन ज्ञाताज्ञात दोष निबर्हणार्थं त्रिवारमग्निं मरुतश्चाज्येन विश्वान् देवान्

संस्रावेण एताः अङ्गदेवताः प्रधानदेवताः सर्वाः सन्निहिताः सन्तु एवं सांगोपाङ्गेन कर्मणा सद्यो यक्ष्ये।

॥ सर्वाद्भुत शान्ति याग का अन्वाधान समाप्त ॥

परिसमूहन एवं पर्युक्षण—उपरोक्त क्रम से परिसमूहन पर परिस्तरण डालना चाहिये। वह इस प्रकार है। अग्न्यायतनाद् अष्टांगुल परिमिते देशे ऐशानीं दिशं आरभ्य प्रदक्षिणां संमतात् सोदकेन पाणिना त्रिः परिमृज्य दशांगुलमिते देशे प्राच्यादिषु पूर्वं उपरिनिहितदर्भैः परिस्तृणीयात्।

स्थण्डिले होम वेदी के आठ अंगुल बाहर ईशान्य दिशा से प्रारम्भकर प्रदक्षिणा क्रम से चारों ओर जलयुक्त हाथ से तीन बार परिमार्जन करें। स्थण्डिले होमवेदी के दस अंगुली बाहर पूर्व से प्रारम्भकर सभी दिशाओं में कुशों को बिछाना चाहिये।

तत्र प्राच्यां प्रतीच्यां च उदगग्रादर्भाः अवाच्यामुदीच्यां च प्रागग्राः पूर्वपश्चिमपरिस्तरणमूलयोरुपरि दक्षिणपरिस्तरणं उत्तरपरिस्तरणंतु तदग्रयोरधस्तात्। पूर्व एवं पश्चिम दिशा में कुशाग्र (कुश का आगे का भाग) उत्तराभिमुख हो, दक्षिण एवं उत्तर दिशा में कुशाग्र पूर्वाभिमुख होना चाहिये। पूर्व एवं पश्चिम दिशा की कुशों के (परिस्तरण) ऊपर दक्षिण का परिस्तरण, एवं पूर्व पश्चिम कुशों के परिस्तरण के नीचे उत्तर का परिस्तरण होना चाहिये। परिस्तरण कुशों के लिए कोई निश्चित संख्या नहीं हैं। अधिक उपलब्ध होने पर अधिक विछावे। कम होने पर चार-चार बिछायें। उतना ही न हो तो तीन-तीन बिछायें।

परिस्तृणात्यासनार्थं आशेशानां त्रिभिस्त्रिभिः। कुशैः प्रागादिदिक्ष्वत्र कृत्वा परिसमूहनम्॥ १॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

आशापालांस्तु शक्रादीनासनेषु समावहेत्। दिक्पालकों के आसन के लिए यह परिस्तरण बिछायें जाते हैं। एक-एक दिशा में तीन कुश डालना चाहिये। उन पर इन्द्रादि दिक्पालकों का आवाहन करना चाहिये।

ततो अग्नेर्दक्षिणतो ब्रह्मासनार्थं उत्तरतश्च पात्रासादनार्थं कांश्चित्प्रागग्रान् दर्भानास्तृणीयात्। *(आश्वलायन स्मृति)*

इसके पश्चात् अग्नि के दक्षिण दिशा में ब्रह्मा के आसन के लिए एवं उत्तर में यज्ञपात्रों को रखने के लिए कुछ कुशाओं को पूर्वाभिमुख बिछाना चाहिये। अग्नेरैशानतस्त्रिरंभसापरिषिच्य उत्तरास्तीर्णेषु दर्भेषु दक्षिणसव्यपाणिभ्यां क्रमेण चरु स्थाली प्रोक्षण्यौ, दर्वी स्रुवौ, प्रणीताज्यपात्रे, इध्माबर्हिषी इति द्वे द्वे पात्रे उदगपवर्ग प्राक्संस्थंयुब्जान्या सादयेत्। अग्नि के चारों ओर फिर से तीन बार ईशान्य से प्रदक्षिणाकार में परिषेचन करें।

ब्रह्मा का आवाहन् (अग्निमुखाङ्ग)—ततो यथोक्त लक्षणं ईशानदिग् अवस्थितं ब्राह्मणं अस्मिन् (सर्वाद्भुत शान्ति याग) कर्मणि ब्रह्माणं त्वामहं वृणे इति तत् पाणिं पाणिना गृहीत्वा वृणुयात्। उसके पश्चात् श्रेष्ठ लक्षणों से युक्त ईशान दिशा में उपविष्ट ब्राह्मण को इस याग कर्म में आपको मैं ब्रह्मा के रूप में वरण करता हूँ। कहकर हाथ पकडकर वरण करें।

ततः ब्रह्मा वृतोस्मि। कर्म करिष्यामि इति उक्त्वा प्राङ्मुखो तीर्थदेशे यज्ञोपवीत्यचाम्य समस्य पाण्यङ्गुष्ठो भूत्वा अग्रेणाग्निं दक्षिणापादपुरः सरं परीत्य दक्षिणतः उदङ्मुखः स्थित्वा आसनार्थ दर्भेषु दक्षिणभागस्थं एकं दर्भं अङ्गुष्ठानामिकाभ्यां गृहीत्वा "**निरस्तः परावसुः**" "इति नैर्ऋत्यान् निरस्य, अपः स्पृष्ट्वा **इदमहम् अर्वावसोः सदने सीदामि**" इति उदङ्मुख एवं वामोरोरुपरि दक्षिणपादं संस्थाप्य उपविश्य यजमानेन गन्धाक्षतादिभिः अर्चितः सन् "ब्रह्मन् ब्रह्मासि नमस्ते ब्रह्मन् ब्रह्मणे नमः। ब्रह्माणमावाहयामि" यजमानेन आचार्येण वा आवाहितः।

इसके पश्चात् ब्रह्मा मुझे यह स्वीकार है। कहकर पूर्वाभिमुख बैठकर (उत्तर एवं ईशान्य के बीच में) ब्रह्मवस्त्र (उत्तरीय) डालकर, हाथ जोडकर (संकल्प लेते समय जैसे हाथ बंद करते हैं वैसे) अग्नि के आगे प्रदक्षिणाकार में दाहिने पॉव को आगे कर चलकर दक्षिण में उत्तराभिमुख खड़े होकर, अपने आसन के कुशों में दक्षिण की एक कुश को अङ्गुष्ठ एवं अनामिका अङ्गुलियों से खींचकर निरस्तः परावसुः" कहकर नैऋत्य दिशा में फेंकना चाहिये। फिर हाथ धोलें। "इदमहम् अर्वावसोः सदने सीदामि" मन्त्र कहकर उत्तराभिमुख ही बायें जॉघ पर दाहिने पैर को रखकर बैठना चाहिये। फिर यजमान "ब्रह्मन् मन्त्र कहकर गन्ध अक्षतों से ब्रह्मा का पूजन करें।

ॐ बृहस्पतिर्ब्रह्मा ब्रह्म सदन आशिष्यते बृहस्पते यज्ञं गोपाय सयज्ञंपाहि सयज्ञपतिं पाहि समांपाहीति जपित्वा सदा यज्ञ मना एव वर्तेत। इसे कहकर ब्रह्म निरन्तर यज्ञ में ही मन लगायें। यहाँ पर ब्रह्मा का वरणादि कार्य संपन्न हुआ।

उत्पवनं नाम शुद्धीकरणम्— शुद्धीकरण क्रिया को उत्पवन कहते हैं। सवितुष्टाहिरण्यस्तूपः सवितापुर उष्णिक्। आज्यस्योत्पवने विनियोगः।

ॐ सवितुष्ट्वाप्रसवउत्पुनाच्छिद्रेण पवित्रेण वसोः सूर्यस्य रश्मिभिः ॥ *(यजुर्वेद)*

इति मन्त्रेण एकश्रुत्या उच्चारितेन एकवारं द्विस्तूष्णीं उत्तानपाणिद्वय अङ्गुष्ठ उपकनिष्ठिकाभ्यां उंतयोरससृष्ट

गृहीताभ्यां उत्तानपाणिद्वय अङ्गुष्ठ उपकनिष्ठिकाभ्यां अंतयोरससृष्ट गृहीताभ्यां उदगग्राभ्यां पवित्राभ्यां प्रागुत्पूय ते पवित्रे अद्भिः प्रोक्ष्य अग्नौ प्रहरेत्। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

इस एक स्वरी मन्त्र को कहते हुए एक बार हथेलियों को उपर किये दोनों हाथों के अंगुष्ठ एवं अनामिका अंगुलियों में पवित्र के दो कुशों को अलग-अलग (परस्पर न मिलें) ऐसे पकड़ना चाहिये। उनका अग्रभाग उत्तर की ओर होना चाहिये। पहले उन्हें पश्चिम से पूर्व की ओर घी में जाकर ऊपर उठायें। फिर दो बाद इसी क्रिया को बिना मन्त्र कहते हुए दोहरायें। फिर उन पवित्र कुशों को जल में प्रोक्षण कर अग्नि में डालना चाहिये।

अथाग्रेः पश्चात् परिस्तरणाद् बहिः आत्मनो अग्रतो भूमिं प्रोक्ष्य तत्र बर्हिः सन्नहनीं रज्जुं उदगग्रां प्रसार्य तस्यां बर्हिः प्रागग्रमुदगपवर्ग अविरलं आस्तीर्य तस्मिन् आज्यपात्रं निधाय स्रुवादि संमार्जयेत्।

उसके पश्चात् अग्नि के पश्चिम में परिस्तरण के बाहर अपने आगे भूमि की प्रोक्षण कर वहाँ बर्हिष् को बाँधी-हुई रज्जु (रस्सी) को उत्तराभिमुख खोलकर रखें। उस बर्हिष् को बाँधी-हुई रज्जु रस्सी को उत्तराभिमुख खोलकर रखें। उस बर्हिष को पूर्वाग्र रखते हुए उत्तर की ओर मोटे-बिछाना चाहिये। (बीच में जगह खाली न रहना चाहिये।) फिर उस बर्हिष पर घी का पात्र रखें।

स्रुवादि संस्कार—दक्षिणेन हस्तेन स्रुक् स्रुवो गृहीत्वा सव्येन कांश्चिद्दर्भानादाय सहैवाग्नौ प्रताप्य स्रुचं निधाय स्रुवं वामहस्तेगृहीत्वा दक्षिणहस्तेन स्रुवस्य बिलं दर्भाग्रैः प्रादक्षिण्येन प्रागादि प्रागपवर्गं त्रिः संमृज्य अधस्ताद्दर्भाग्रैः एव अभ्यात्मं बिलपृष्ठं त्रिः संगृज्य ततो दर्भाणां मूलैः दंडस्याधस्ताद् बिलपृष्ठादारभ्य यावदुपरिष्टाद् बिलं तावत् त्रिः संमृज्य अद्भिः प्रोक्ष्य स्रुव निष्टप्याज्य स्थाल्या उत्तरतः स्रुगसंसृष्टं निधाय उदकं स्पृष्ट्वा तैरेव दर्भैः जुहूं च एव मेव संमृज्यद्युत्तरतोश्रुवाधुन्तरो निधाय दर्भानद्भिः क्षालयित्वा अग्नौ अनु प्रहरेत्। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*
पर्युक्षणं-तिर्यग्भूतेनहस्तेनकृतंपर्युक्षणं तथा। *(आश्वलायन स्मृति)*

हाथ को तिरचा करके चारों ओर सींचना पर्युक्षण कहलाता है। अथाग्रेः पश्चात् परिस्तरणाद् बहिः आत्मनो अग्रतो भूमिं प्रोक्ष्य तत्र बर्हिः सन्नहनीं रज्जुं उदगग्रां प्रसार्य तस्यां बर्हिः प्रागग्रमुदगपवर्ग अविरलं आस्तीर्य तस्मिन् आज्यपात्रं निधाय स्रुवादि संमार्जयेत्।

उसके पश्चात् अग्नि के पश्चिम में परिस्तरण के बाहर अपने आगे भूमि की प्रोक्षण कर वहाँ बर्हिष् को बाँधी-हुई रज्जु (रस्सी) को उत्तराभिमुख खोलकर रखें। उस बर्हिष् को बाँधी-हुई रज्जु रस्सी को उत्तराभिमुख खोलकर रखें। उस बर्हिष को पूर्वाग्र रखते हुए उत्तर की ओर मोटे-बिछाना चाहिये। (बीच में जगह खाली न रहना चाहिये।) फिर उस बर्हिष पर घी का पात्र रखें।

चरु शुद्धि—ततः सुश्रृतं स्रुव गृहीतेनाज्येन अभिघार्य उदगुद्वास्य अगन्याज्ययोर्मध्येन नीत्वा आज्यात् दक्षिणतो बर्हिषि सोत्तरमासाद्य पुनरप्यभिधार्य नवाभिधार्य (परिधीन् ऊर्ध्व समिधौ अग्नौ निधाय।) पक्व चरु पात्र में स्थित चरु को घी से अभिघार्य (सिञ्चन) करके उत्तर में रखना चाहिये। अग्नि एवं घी पात्र के बीच में इसे लाना चाहिये। आज्यपात्र के दक्षिण में बर्हिष् पर इसे रखकर घी से अभिघार करना चाहिये। न करने पर भी कोई बाधा नहीं है।

अग्नि उपस्थानम्—विश्वानि न इति तिसृणां आत्रेयो वसुश्रुतोग्निस्त्रिष्टुप् द्वयोरर्चने अन्त्याया उपस्थाने विनियोगः।

ॐ विश्वानि नो दुर्गहा जातवेदः। पूर्व में पूजन करें। ॐ सिंधुननावादुरितातिपर्षि॥ आग्नेय में पूजन करें
ॐ अग्ने अत्रिवन्नमसागृणानः॥ दक्षिण में पूजन करें। ॐ अस्माकं बोध्यवितातनूनां॥ नैर्ऋत्य में पूजन करें। (ऋग्वेद ५.४.६)
ॐ यस्त्वाहृदाकीरिणामन्यमानः॥ पश्चिम में पूजन करें। ॐ अमर्त्यं मर्त्यो जोहवीमि॥ वायव्य में पूजन करें।
ॐ जातवेदो यशो अस्मासुधेहि॥ उत्तर में पूजन करें। ॐ प्रजाभिरग्ने अमृतत्वमश्यां॥ ईशान में पूजन करें। (ऋग्वेद ५.४.१०)
ॐ यस्मैत्वं सुकृते जातवेदउलोकमग्नेकृणवस्योनं। अश्विनं स पुत्रिणं वीरवन्तं गोमन्तं रयिंनशतेस्वस्ति॥ (ऋग्वेद ५.४.११)

यह मन्त्र कहकर उपस्थान (प्रार्थना) करें। **ॐ अग्नये नमः। ॐ जानवेदसे नमः, ॐ हुताशनाय नमः।** इन मन्त्रों से अग्नि का पूजन करें। **ॐ आत्मने नमः, ॐ अन्तरात्मने नमः, ॐ परमात्मने नमः।** इन मन्त्रों से आत्मा का पूजन करें। हाथ धो लें। **ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ वसिष्ठाय नमः। ॐ त्रयीवद्यात्मने नमः।** इन मन्त्रों से ब्रह्मा का पूजन करें।

इध्म बन्धन रज्जुं इध्म स्थाने निधाय पाणिना इध्यममादाय मूलमध्याग्रेषु स्रुवेण त्रिरभिधार्य मूल मध्ययो र्मध्यभागे गृहीत्वा। सरज्जुं अनुयाजं प्रणीतायां प्रतिष्ठाप्य इध्म को हाथ में लेवें। उसके रज्जु (रस्सी) को खोलें। रज्जू को अनुयाज समित् के साथ प्रणीता पात्र पर रखना चाहिये। हाथ में लिए इध्यम को मूल, मध्य एवं अग्र में स्रुव से तीन बार घी से अभिधार्य (सिञ्चन) करके, मूल एवं मध्य के बीच में पकड़कर (दाहिने हाथ में)—
अयं ते वामदेवो जातवेदा अग्निस्त्रिष्टुप् इश्म हवने विनियोगः। ॐ अयं तइध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्वचेद्धवर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधयस्वाहा॥ जातवेदसेग्नये इदं न मम। इन मन्त्रों को कहकर इध्यम को अग्नि में डाल देवें। **इध्म मूलं स्पृष्ट्वा अपः उपस्पृश्य आघारावाघारयेत्।** इध्ममूल को छूकर हाथ धो लें। आघार होम करें।

आघार होम

वायव्य कोणादारभ्य आग्नेय कोण पर्यन्तं प्रजापतये स्वाहा। (मनसा स्मरन्) नैर्ऋत्यकोणादारभ्य ऐशानी कोणपर्यन्तं प्रजापतये स्वाहा। प्रजापतय इदं न मम
अग्नेरुत्तरतः अग्नये स्वाहा। अग्नय इदं न मम। दक्षिणतः सोमाय स्वाहा। सोमाय इदं न मम।

व्याहृतीनां परमेष्ठी प्रजापतिः प्रजापतिर्बृहती व्याहृतिहोमे विनियोगः। ॐभूः स्वाहा अग्नये इदं न मम। ॐभुवः स्वाहा वायवे इदं न मम। ॐस्वः स्वाहा सूर्याय इदं न मम। ॐभूर्भुवः स्वः स्वाहा प्रजापतये इदं न मम।

नवग्रह होमः

प्रधान देवता सूर्य होमः—आकृष्णेनेत्यस्य हिरण्यस्तूपः सविता त्रिष्टुप्, प्रधान देवता आदित्य प्रीत्यर्थे अर्कसमित्, आज्य, चरु होमे विनियोगः।

ॐ आकृष्णेन रजंसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्य च।
हिरण्ययेन सविता रथेनाऽऽदेवो याति भुवनानि पश्यन् स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १.३५.२)*

आदित्यायेदं न मम। २८ बार इस मंत्र से अर्क सहित घी एवं चरु से होम यह संख्या ८ या २८ या १०८ बार कर सकते हैं।

सूर्य अधिदेवता अग्नि होमः—अग्निं दूतमित्यस्य काण्वो मेधातिथिरग्निर्गायत्री आदित्यस्य अधिदेवता अग्निप्रीत्यर्थे अर्कसमित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम्। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् स्वाहा। *(ऋग्वेद १.१२.१)*

ॐ आदित्य अधिदेवतायै अग्नये इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें। (३+३+३=९ आहुति)

सूर्य प्रत्यधिदेवता रुद्र होमः—ॐ कद्रुद्राय इत्यस्य घोरः काण्वो रुद्रो गायत्री आदित्यस्य प्रत्यधिदेवता रुद्र प्रीत्यर्थे अर्कसमित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ कद्रुद्राय प्रचेतसे मीळहुष्टमाय तव्यसे। वोचेम शंतमं हृदे स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १.४३.१)*

आदित्य प्रत्यधिदेवता रुद्राय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें। (३ समित् + ३ घी + ३ चरु की आहुतियां = ९ आहुतियाँ)

प्रार्थना - दिवाकरं दीप्त सहस्त्ररश्मिं तेजोमयं जगतः कर्मसाक्षिम्। अंशुं भानुं सूर्यमादिं ग्रहाणां दिवाकरं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥

आदित्याय नमः।

प्रधान देवता सोम होमः—आप्यायस्व गौतमः सोमो गायत्री प्रधान देवता चन्द्रप्रीत्यर्थे पलाश समित्, आज्य, चरु होम विनियोगः।

ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्ण्यम्। भवा वाजस्य सङ्गथे स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १.९१.१६)*

सोमाय इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से पलाश सहित घी एवं चरु से होम करें।

सोम अधिदेवता अप होमः—अप्सु मे सिन्धद्वीप आपोगायत्री सोमस्य अधिदेवता अप् प्रीत्यर्थे पलाश समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ अप्सु मे सोमो अब्रवीदन्तर्विश्वानि भेषजा। अग्निं च विश्वशंभुवं स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १०.९.६)*

सोमाधिदेवतायै अद्भ्य इदं न मम। इस मन्त्र से तीन बार होम करें।

सोम प्रत्यधिदेवता गौरी होम—गौरीर्मीमायेत्यस्य औचत्यपुत्रो दीर्घतमा उमा जगती। सोमस्य प्रत्यधिदेवता गौरी प्रीत्यर्थे पलाशसमित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ गौरीर्मिमाय सलिलानि तक्षत्येकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी।
अष्टापदी नवपदी बभूवुषी सहस्राक्षरा परमे व्योमन् स्वाहा।

सोम प्रत्यधिदेवता गौर्यै इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

प्रार्थना— यः कालहेतोः क्षयवृद्धिमेति यं देवताः पितरश्चापिबन्ति तं वै वरेण्यं ब्रह्मेन्द्रवन्द्यं चन्द्रं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥
चन्द्राय नमः।

प्रधान देवता अङ्गारक होमः—अग्निर्मूर्धा विरूपोङ्गारको गायत्री। प्रधान देवता अङ्गारक प्रीत्यर्थे खदिरसमित आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपां रेतांसि जिन्वति स्वाहा। *(ऋग्वेद ८.४४.१६)*

अङ्गारकाय इदं न मम। २८ बार इस मंत्र में खदिर समित्, घी एवं चरु से होम करें।

अङ्गारक अधिदेवता भूमि होमः—स्योना पृथिवीत्यस्य मेधातिथिः पृथिवी गायत्री। अङ्गारकस्य अधिदेवता भूमि प्रीत्यर्थे खदिरसमित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ स्योना पृथिवि भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथः स्वाहा। *(ऋग्वेद १.२२.१५)*

अङ्गारकाधिदेवतायै भूम्यै इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

अङ्गारक प्रत्यधिदेवता स्कन्द होमः—कुमारं माता स्कन्दः स्कन्दस्त्रिष्टुप्। अङ्गारकस्य प्रत्यधिदेवता स्कन्द प्रीत्यर्थे खदिर समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ कुमारं माता युवतिः समुब्धं गुहा बिभर्ति न ददाति पित्रे
अनीकमस्य न मिनज्जनासः पुरः पश्यन्ति निहितमरतौ स्वाहा। *(ऋग्वेद ५.२.१)*

अङ्गारक प्रत्यधिदेवतायै स्कन्दाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

प्रार्थना— महेश्वरस्याननस्वेदबिन्दोर्भूमौ जातं रक्तमालांबराढ्यं। सुरश्मिणं लोहिताङ्गं कुमारमङ्गारकं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥
अङ्गारकाय नमः।

प्रधान देवता बुध होमः—उद्बुध्यध्वं बुधो बुधस्त्रिष्टुप्, प्रधान देवता बुध प्रीत्यर्थे अपामार्ग समित्, आज्य, चरु होमे विनियोगः।

ॐ उद्बुध्यध्वं समनसः सखायः समग्निमिन्ध्वं बहवः सनीळा।
दधिक्रमग्निमुषसं च देवीमिन्द्रावतोऽवसे निह्वये वः स्वाहा। *(ऋग्वेद १०.१०१.१)*

बुधाय इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से अपामार्ग समित्, घी एवं चरु से होम करें।

बुध अधिदेवता विष्णु होमः—इदं विष्णुर्मेधातिथिर्विष्णुर्गायत्री, बुधस्य अधिदेवता विष्णु प्रीत्यर्थे अपामार्ग समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूळहमस्य पांसुरे स्वाहा। *(ऋग्वेद १.२२.१७)*

बुधाधिदेवतायै विष्णवे इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

बुध प्रत्यधिदेवता पुरुष होमः—सहस्रशीर्षा नारायणः पुरुषोऽनुष्टुप्, बुध प्रत्यधिदेवता पुरुष प्रीत्यर्थे अपामार्ग समित्, आज्य, चरु होमे विनियोगः।

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिं विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् स्वाहा। *(ऋग्वेद १०.९०.१)*

बुध प्रत्यधिदेवता पुरुषाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

प्रार्थना— उत्पातरूपो जगतां चन्द्रपुत्रो महाद्युतिः। सूर्य प्रियकरो विद्वान् पीडां दहतु मे बुधः॥ ॐ बुधाय नमः।

प्रधान देवता बृहस्पति होमः—बृहस्पते गृत्समदो बृहस्पतिस्त्रिष्टुप्, प्रधान देवता बृहस्पति प्रीत्यर्थे पिप्ल समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।
यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् स्वाहा॥ *(ऋग्वेद २.२३.१५)*

बृहस्पतये इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से पिप्ल समित्, घी एवं चरु से होम करें।

बृहस्पति अधिदेवता इन्द्र होमः—इन्द्र श्रेष्ठानि गृत्समद इन्द्रस्त्रिष्टुप्, बृहस्पतेरधिदेवता इन्द्रप्रीत्यर्थे पिप्पल समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि चित्तिं दक्षस्य सुभगत्वमस्मे।

पोषं रयीणामरिष्टिं तनूनां स्वाद्मानं वाचः सुदिनत्वमह्नाम् स्वाहा। (ऋग्वेद २.२१.६)

बृहस्पत्यधिदेवतायै इन्द्राय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

बृहस्पति प्रत्यधिदेवता ब्रह्मा होमः—ब्रह्मणाते विश्वामित्रो ब्रह्मा त्रिष्टुप्, बृहस्पति प्रत्यधिदेवता ब्रह्म प्रीत्यर्थे पिप्लसमित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ ब्रह्मणा ते ब्रह्मयुजा युनज्मि हरी सखाया सधमाद आशू।
स्थिरं रथं सुखमिन्द्राधितिष्ठन् प्रजानन् विद्वाँ उपयाहि सोमम् स्वाहा। (ऋग्वेद ३.३५.४)

बृहस्पति प्रत्यधिदेवतायै ब्रह्मणे इदं न मम। इस मंत्र से तीन बर होम करें।

प्रार्थना— बुध्यात्मनो यस्य न कश्चिदन्यो मतिं देवा उपजीवंति यस्य। प्रजापते रात्मजं धर्मनिष्ठं गुरुं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥

ॐ गुरुवे नमः।

प्रधान देवता शुक्र होमः—शुक्रं ते भारद्वाजः शुक्रस्त्रिष्टुप्, प्रधान देवता शुक्र प्रीत्यर्थे औदुम्बर समित्, आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ शुक्रं ते अन्यद्यजतं ते अन्यद्विषुरूपे अहनी द्यौरिवासि।
विश्वा हि माया अवसि स्वधावो भद्रा ते पूषन्निह रातिरस्तु स्वाहा। (ऋग्वेद ६.५८.१)

शुक्राय इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से औदुम्बर समित्, घी एवं चरु से हाम करें।

शुक्र अधिदेवता इन्द्राणी होमः—इन्द्राणी वृषाकपिरिंद्राणी पंक्तिः, शुक्रस्य अधिदेवता इन्द्राणी प्रीत्यर्थे औदुम्बर समित्, आज्य, चरु होमे विनियोगः।

ॐ इंद्राणीमासु नारिषु सुभगामहमश्रवम्। नह्यस्या अपरं चन जरसा मरते पतिर्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः स्वाहा।
(ऋग्वेद १०.८६.११)

ॐ शुक्र अधिदेवतायै इन्द्राण्यै इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

शुक्र प्रत्यधिदेवता इन्द्र होमः—इन्द्रं वो मधुच्छन्दा इन्द्रो गायत्री, शुक्रप्रत्यधिदेवता इन्द्र प्रीन्यर्थे औदुम्बर समित्, आज्य, चरुं होमे विनियोगः।

ॐ इंद्रं वो विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्यः। अस्माकमस्तु केवलः स्वाहा॥ (ऋग्वेद १.७.१०)

ॐ शुक्र प्रत्यधिदेवतायै इन्द्राय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

प्रार्थना— वर्षप्रदं चिन्तितार्थानुकूलं मौनाद्विशिष्टं सुनयोमपन्नम्। तं भार्गवं योगविशुद्धसत्वं शुक्रं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥

ॐ शुक्राय नमः।

प्रधान देवता शनैश्चर होमः—शमग्निरित्यस्य इरिंबिठिः शनैश्चर उष्णिक्, प्रधान देवता शनैश्चर प्रीत्यर्थे शमी समित्, आज्य, चरु होमे विनियोगः।

ॐ शमग्निरग्निभिः करच्छंनस्तपतु सूर्यः। शं वातो वात्वरपा अपस्त्रिधः स्वाहा। (ऋग्वेद ८.१८.९)

शनैश्चराय इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से शमी समित्, घी एवं चरु से होम करें।

शनैश्चर अधिदेवता प्रजापति होमः—प्रजापते हिरण्यगर्भः प्रजापतिस्त्रिष्टुप्, शनैश्चरस्य अधिदेवता प्रजापतिप्रीत्यर्थे शमी समित्, आज्य, चरु होमे विनियोगः।

ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् स्वाहा॥ (ऋग्वेद १०.१२१.१०)

शनैश्चरस्य अधिदेवता प्रजापतये इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

शनैश्चर प्रत्यधिदेवता यम होमः—यमाय हसोमं यमो यमोनुष्टुप्, शनैश्चरस्य प्रत्यधि देवता यम प्रीत्यर्थे शमीसमित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ यमाय सोमं सुनुत यमाय जुहुता हविः। यमं ह यज्ञो गच्छत्यग्निदूतो अरंकृतः स्वाहा। (ऋग्वेद १०.१४.१३)

शनैश्चर प्रत्यधिदेवतायै यमाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

प्रार्थना— शनैश्चरो राशितो राशिमेति शनैर्भोगो गमनं चेष्टितं च। सूर्यात्मजं क्रोधनं सुप्रसन्नं शनैश्चरं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥

ॐ शनैश्चराय नमः।

प्रधान देवता राहु होम—कयानो वामदेवो राहुर्गायत्री प्रधान देवता राहु प्रीत्यर्थे दूर्वासमित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ कयांनश्चित्र आ भुंवदूती सदावृंधः सखां। कयाशचिंष्ठया वृता स्वाहां राहवे इदं न मम॥ (ऋग्वेद ४.३१.१)

२८ बार इस मंत्र से दूर्वा समित्, घी एवं चरु से होम करें।

राहु अधिदेवता सर्प होमः—आयं गौः सार्पराज्ञीः सर्पा गायत्री। राहु अधिदेवता सर्प प्रीत्यर्थे दूर्वा समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ आयं गौः पृश्निंरक्रमीदसंदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयंत्स्वः १ स्वाहां॥ (ऋग्वेद १०.१८९.१)

राहु अधिदेवतायै सर्पेभ्यः इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

राहु प्रत्यधिदेवता मृत्यु होमः—परं मृत्युः संकुसिको मृत्युस्त्रिष्टुप्। राहु प्रत्यधिदेवता मृत्यु प्रीत्यर्थे दूर्वा समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ परं मृत्यो अनुपरेंहि पंथां यस्ते स्व इतंरो देव यांनांत्।
चक्षुंष्मते शृण्वते तें ब्रवीमि मा नंः प्रजां रींरिषो मोत वीरान् स्वाहां। (ऋग्वेद १०.१८.१)

राहु प्रत्यधिदेवतायै मृत्यवे इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

प्रार्थना— यो विष्णुनैवामृतं भोक्ष्यमाणः छित्वाशिरो ग्रहभावे नियुक्तः। यश्चन्द्रसूर्यौ ग्रसते पर्व काले राहुं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥

ॐ राहवे नमः।

प्रधान देवता केतु होमः—केतुं कृण्वन्नत्यिस्य मंत्रस्य मधुच्छन्दाः केतुर्गायत्री प्रधान देवता केतु प्रीत्यर्थे कुश समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ केतुं कृण्वन्नंकेतवे पेशों मर्या अपेशसें। समुषद्भिंरजायथाः स्वाहां॥ (ऋग्वेद १.६.३)

केतवे इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से कुश समित्, घी एवं चरु से होम करें।

केतु अधिदेवता ब्रह्म होमः—ब्रह्मजज्ञानमिति नकुलो ब्रह्मा त्रिष्टुप्, केत्वधिदेवता ब्रह्मप्रीत्यर्थे कुश समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रंथमं पुरस्ताद्विसींमतः सुरुचोंवेन आंवः।
स बुध्नियां उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसंतश्च विवः स्वाहां॥ (यजुर्वेद-४ काण्ड-२ प्रश्न-८ अनुवाक-४ मन्त्र)

केतु अधिदेवताब्रह्मणे इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

केतु प्रत्यधिदेवता चित्रगुप्त होम—स चित्र चित्रं भारद्वाजश्चित्रगुप्तस्त्रिष्टुप्। केतु प्रत्यधिदेवता चित्रगुप्तप्रीत्यर्थे कुश समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ स चित्र चित्रं चितयन्तमस्मे चित्रक्षत्र चित्रतमं वयोधाम्।
चन्द्रं रयिं पुरुवीरं बृहन्तं चन्द्रचन्द्राभिर्गृणते युवस्व स्वाहा।। *(ऋग्वेद ६.६.७)*

केतु प्रत्यधिदेवतायै चित्रगुप्ताय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

प्रार्थना—**हे ब्रह्मपुत्रा ब्रह्मसमानवक्त्राः ब्रह्मोद्भवाः ब्रह्मसमाः कुमाराः।**
ब्रह्मोत्तमा वरदा जामदग्न्याः केतून् सदा शरणमहं प्रपद्ये।।

ॐ केतवे नमः। यहाँ पर नवग्रह होम संपन्न हुआ। आगे छः कर्म साद्गुण्य देवता होम होगा।

कर्म साद्गुण्य देवता होमः

कर्म साद्गुण्य देवता विनायक होमः-१—आतून इत्यस्य काण्वः कुसीदी विनायको गायत्री क्रतु साद्गुण्यदेवता विनायक प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ आतूनं इन्द्रक्षुमन्तं चित्रं ग्राभं सङ्गृभाय। महाहस्ती दक्षिणेन स्वाहा। *(ऋग्वेद ८.८१.१)*

कर्म सादगुण्यदेवतायै विनायकाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

कर्म साद्गुण्यदेवता दुर्गा होमः-२—जातवेद से कश्यपो दुर्गा त्रिष्टुप् क्रतुसाद्गुण्यदेवता दुर्गा प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः।
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिंधुं दुरितात्यग्निः स्वाहा।। *(ऋग्वेद १.९९.१)*

क्रतु साद्गुण्य देवतायै दुर्गायै इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

कर्म साद्गुण्यदेवता क्षेत्रपाल होमः-३—क्षेत्रस्य पतिना वामदेवः क्षेत्रपालोनुष्टुप् चरु होमे विनियोगः।

ॐ क्षेत्रस्य पतिना वयं हितेनेवजयामसि। गामश्वं पोषयित्वा सनोमृळातीदृशे स्वाहा। (ऋग्वेद ४.५७.१)

क्रतु साद्गुण्य देवतायै क्षेत्रपालाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

कर्म साद्गुण्य देवता वायु होमः-४—क्राणाशिशुरित्यस्यत्रियोवायुरुष्णिक् क्रतु साद्गुण्य देवता वायु प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ क्राणाशिशुर्महीनांहिन्वन्नृतस्यदीधितिं। विश्वापरिप्रिया भुवदधद्विता स्वाहा॥ (ऋग्वेद ९.१०२.१)

क्रतु साद्गुण्य देवतायै वायवे इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

कर्म साद्गुण्य देवता आकाश होमः-५—आदित्यप्रत्नस्य वत्स आकाशो गायत्री क्रतु साद्गुण्य देवता आकाश प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ आदित् प्रत्नस्यरेतसो ज्योतिष्पश्यंति वासरं। परोयदिध्यतेदिवा स्वाहा॥ (ऋग्वेद ८.६.३०)

क्रतु साद्गुण्यदेवतायै आकाशाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

कर्म साद्गुण्य देवता अश्विनी देवता होमः-६—अश्विनावर्ति राहूगणो गोतमोश्विनावुष्णिक् अश्वि प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ अश्विनावर्तिरस्मदागोमद्दस्राहिरण्यवत्। अर्वाग्रथं समनसानियच्छतं स्वाहा॥ (ऋग्वेद १.९२.१६)

क्रतु साद्गुण्य देवतायै अश्विभ्यां इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता होमः

क्रतु संरक्षक देवता इन्द्र होमः—इन्द्रं वो मधुच्छन्दा इन्द्रो गायत्री क्रतु संरक्षक देवता इन्द्र प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ इन्द्रं वो विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्यः। अस्माकमस्तु केवलः स्वाहा॥ (ऋग्वेद १.७.१०)

क्रतु संरक्षक देवतायै इन्द्राय इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता अग्नि होमः—अग्निं दूतमित्यस्य काण्वो मेधातिथिरग्निर्गायत्री क्रतु संरक्षक देवता अग्नि प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम्। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् स्वाहा॥ (ऋग्वेद १.१२.१)

क्रतु संरक्षक देवतौ अग्नय इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता यम होमः—यमाय सोमं यमोयमोनुष्टुप् क्रतु संरक्षक देवता यम प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ यमाय सोमं सुनुतयमायंजुहुता हविः। यमंहंयज्ञो गंच्छत्यग्निर्दूतो अरंकृतः स्वाहा॥ (ऋग्वेद १०.१४.१३)

क्रतु संरक्षक देवतायै यमाय इदं न मम। इस मंत्र को दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता निर्ऋति होमः—मोषुणः काण्वो निर्ऋतिर्गायत्री क्रतु संरक्षक देवता निर्ऋति प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ मोषुणः परापरानिर्ऋतिर्दुर्हणावधीत्। पदीष्ट तृष्णायासह स्वाहा॥ (ऋग्वेद १.३८.६)

क्रतु संरक्षक देवतायै निर्ऋतये इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता वरुण होमः—तत्वायामीत्यस्य शुनः शेपोवरुणस्त्रिष्टुप् क्रतु संरक्षक देवता वरुण प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्तेयजमानो हविर्भिः।
अहेळमानो वरुणेह बोध्युरुशंसमान आयुः प्रमोषीः स्वाहा॥ (ऋग्वेद १.२४.११)

क्रतु संरक्षक देवतायै वरुणाय इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता वायु होमः—तव वायो व्यश्वोवायुर्गायत्री क्रतु संरक्षक देवता वायु प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ तवं वायवृतस्पतेत्वष्टुर्जामातरद्भुत। अवांस्यावृणीमहे स्वाहा॥ (ऋग्वेद ८.२६.२१)

क्रतु संरक्षक देवतायै वायवे इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता सोम होम—सोमो धेनुमित्यस्य गौतमः सोमस्त्रिष्टुप् क्रतु संरक्षक देवता सोम प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ सोमो धेनुं सोमो अर्वन्तमाशुं सोमो वीरं कर्मण्यं ददाति।
सादन्यं विदथ्यं सभेयं पितृश्रवणं यो ददाशदस्मै स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १.९१.२०)*

क्रतु संरक्षक देवतायै सोमाय इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता ईशान होमः—तमीशानमित्यस्य गौतम ईशानो जगती क्रतु संरक्षक देवता ईशान प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्।
पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १.८९.५)*

क्रतु संरक्षक देवतायै ईशानाय इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें। यहाँ पर क्रतु संरक्षक देवता होम संपन्न हुआ।

व्याहृति होमः—व्याहृतीनां परमेष्ठी प्रजापतिः बृहती व्याहृति होमे विनियोगः। ॐभूः स्वाहा, अग्नये इदं न मम। ॐभुवः स्वाहा,वायवे इदं न मम। ॐस्वः स्वाहा, सूर्याय इदं न मम। ॐभूर्भुवः स्वः स्वाहा, प्रजापतये इदं न मम। इन मन्त्रों से एक बार होम करें।

प्रधान देवता विष्णु होमः

प्रधान देवता विष्णु होमः—इदं विष्णुर्मेधातिथिर्विष्णुर्गायत्री प्रधानदेवता विष्णुप्रीत्यर्थेआज्यचरुहोमे विनियोगः।

कलशे महाविष्णु आवाहनम्—ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदं। समूहळमस्य पांसुरे स्वाहा। *(ऋग्वेद १.२२.१७) आ. गृ. सूत्रम्*

ॐ विष्णावे स्वाहा। ॐ विष्णाव इदं न मम। ॐमहाद्भुताधिपतये स्वाहा। ॐमहाद्भुताधिपतय इदं न मम। ॐमहाविष्णावे स्वाहा। ॐमहाविष्णाव इदं न मम। ॐईश्वराय स्वाहा। ॐईश्वराय इदं न मम। ॐसर्वोत्पातशमनाय स्वाहा। ॐसर्वोत्पातशमनाय इदं न मम। प्रधान देवता के होम के बाद इन पॉच मंत्रों से घी की आहूति एक-एक बार देवें।

ॐ भूरग्नये च पृथिव्यै च महते च स्वाहा अग्नये पृथिव्यै महते च इदं न मम।

ॐ भुवों वायवेंचान्तरिक्षाय च महते च स्वाहां। वायवेऽन्तरिक्षाय महते च इदं न मम।
ॐ सुवंरादित्यायं य दिवे चं महते च स्वाहां। आदित्याय दिवे महते च इदं न मम।
ॐ भुर्भूवः सुवंश्चन्द्रमंसे च नक्षंत्रेभ्योदिग्भ्यश्च महते च स्वाहां। *(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषद्-आरण्यक)*

चन्द्रमसे नक्षत्रेभ्यो दिग्भ्यो महते च इदं न मम। इन चार मंत्रों से भी घी की आहुतियाँ एक-एक बार देवें। **ॐ भूः स्वाहा, अग्नये इदं न मम। ॐ भुवः स्वाहा, वायवे इदं न मम। ॐ स्वः स्वाहा, सूर्याय इदं न मम। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा, प्रजापतये इदं न मम।**

स्विष्टकृत् होमः—दर्व्यामुपस्तीर्य हविर्भागस्योत्तरार्धतः सकृत् अवदाय अवत्तंतु द्विः अभिघार्य। स्रुवा से दर्वी में (स्रुक्) घी डालकर, चरु के उत्तर भाग से चरु को निकालकर (हाथ से) दर्वी में रखें। फिर स्रुवा से उप पर दो बार घी डालें। आगे कहने वाले मंत्र को कहते हुए होम कुण्ड में ईशान्य दिशा में डालें। यदस्येति हिरण्यगर्भोग्निः स्विष्टकृद्घृतिः स्विष्टकृत् होमे विनियोगः।

ॐ यदंस्य कर्मणोत्यरींरिचंयद्वान्यूनमिहाकरम्। अग्निष्टत्स्विष्टकृद्विद्वान्त्सर्वं स्विष्टंसुहुतं करोतु मे॥
अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त्समर्धयः स्वाहां॥ *(श्रौत मन्त्र)*

इन दो मंत्रों को कहकर अग्नि के ईशान्य भाग में होम करें। स्विष्टकृतेऽग्नय इदं न मम।

इध्म बंधन रज्जुं विस्रस्य

पहले जिस रस्सी (कुशा निर्मित) से इध्यम बाँधे थे उस रस्सी को खोलकर उसे—ॐ रुद्राय पशुपतये स्वाहा, रुद्राय पशुपतये इदं न मम। कहकर होम करें। **प्रायश्चित आज्याहुतीः सप्त जुहुयात्।** प्रायश्चित सात घी की आहुतियाँ देवें। अयाश्चेतिविमदोया अग्निः पंक्तिः प्रायश्चित्याज्य होमे विनियोगः।

ॐ अयांश्चाग्नेस्यनंभिशस्तीश्चसत्यमिंत्वमया अंसि अयासावयंसाकतो यासंन्हव्यमूंहिषेयानोंधेहि भेषजं स्वाहां॥
(यजुर्वेद-आरण्यक)

अग्नेय इदं न मम। अतो देवाः काण्वोमेधातिथिर्देवा गायत्री प्रायश्चिताज्यहोमे विनियोगः।

ॐ अतोदेवा अवंतु नो यतोविष्णुर्विचक्रमे। पृथिव्याः सप्त धामभिः स्वाहा ॥ *(ऋग्वेद १.२२.१६)*

देवेभ्य इदं न मम। इदं विष्णुः कारावोमेधातिथिर्विष्णुर्गायत्री प्रायश्चित्ताज्यहोमे विनियोगः।

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधे पदं। समूळहमस्यपांसुरे स्वाहा ॥ *(ऋग्वेद १.२२.१७)*

विष्णवे इदं न मम। व्यस्त समस्त व्याहृतीनां विश्वामित्र जमदग्निर्भरद्वाज प्रजापतय ऋषयः, अग्निवायुसूर्यप्राजापतयो देवताः गाय त्र्युष्णिगनुष्टुबृहत्यश्छंदांसि। प्रायश्चित्ताज्य होमे विनियोगः। ॐभूः स्वाहा, अग्नये इदं न मम। ॐभुवः स्वाहा, वायवे इदं न मम। ॐस्वः स्वाहा, सूर्याय इदं न मम। ॐभूर्भुवः स्वः स्वाहा, प्रजापतये इदं न मम। यहाँ पर यजमान के द्वारा करने वाला प्रायश्चित होम संपन्न हुआ। यज्ञ के पूजन होम में अनेक प्रकार के लोप संभव है। अतः उनके निवारण के लिए प्रायश्चित्त होम आवश्यक है। यजमान के प्रायश्चित होम से भी बचे हुए लोप दोषों के निवारण के लिए ब्रह्म प्रायश्चित विधान है। ब्रह्मा के स्थान पर यदि कुश हो तो स्वयं आचार्य ही ब्रह्म प्रायश्चित होम करें।

ब्रह्म प्रायश्चित्त होमः

ब्रह्मा के स्थान पर बैठे पं. जी के द्वारा यज्ञ में सपन्न लोप दोषों की निवृत्ति के लिए ब्रह्मा जी प्रायश्चित होम करते हैं।

ततो ब्रह्मा कर्तारं परीत्याग्नेर्वायव्यदेशे तिष्ठन् एता एव सप्त आज्याहुतीर्जुहुयात्।

उसके बाद ब्रह्मा जी यजमान के पीठे से जाकर अग्नि के वायव्य दिशा में खडे होकर पूर्वोक्त सात मंत्रों से आहुति देवें। ब्रह्म प्रायश्चित्याज्यहोमे विनियोगः।

ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तीश्चसत्यमित्वमया असि।
अयांसावयंसाकृतो यासंन्हव्यमूहिषेयानो धेहि भेषजम् स्वाहा ॥ *(यजुर्वेद-आरण्यक)*

अग्नेय इदं न मम। इस पंक्ति को यजमान या अचार्य कहें।

ॐ अतो देवा अवन्तु नो यतो विष्णुर्विचक्रमे। पृथिव्याः सप्त धामभिः स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १.२२.१६)*

देवेभ्य इदं न मम (इस पंक्ति को आचार्य पढ़ें।)

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदं। समूळ्हमस्य पांसुरे स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १.२२.१७)*

विष्णव इदं न मम। (आचार्य इस पंक्ति को कहें) ॐभूः स्वाहा, अग्नये इदं न मम। ॐभुवः स्वाहा, वायवे इदं न मम। ॐस्वः स्वाहा, सूर्याय इदं न मम। ॐभूर्भुवः स्वः स्वाहा, प्रजापतये इदं न मम। स्वाहा तक ब्रह्मा जी कहते है। इदं न मम वाला भाग यजमान व आचार्य को ही कहना हैं, त्याग को ब्रह्मा नहीं करना चाहिये। इदं न मम त्याग कहलाता हैं। ततो ब्रह्मा यथा आगतं तथैव स्वस्थाने उपविशेत्। ब्रह्मा जी जिस प्रकार आये थे उसी प्रकार जाकर अपने आसन पर बैठें। अनाज्ञातमिति मंत्रद्वयस्य हिरण्यगर्भोग्निरनुष्टुप्, ज्ञाताज्ञातदोष निबर्हणार्थं प्रायश्चित्ताज्य होमे विनियोगः।

ॐ अनाज्ञातं यदाज्ञातं यज्ञस्य क्रियतेमिथु। अग्नेतदस्य कल्पयत्वं हिवेत्थयथातथं स्वाहा॥ *(यजुर्वेद-आरण्यक)*

अग्नये इदं न मम।

ॐ पुरुषसंमितो यज्ञोयज्ञः पुरुषसंमितः। अग्नेतदस्य कल्पयत्वं हिवेत्थयथातथं स्वाहा॥ *(यजुर्वेद-आरण्यक)*

यत्पाकत्रेत्याप्त्यस्त्रितोग्निस्त्रिष्टुप्। प्रायश्चिताज्य होमे विनियोगः।

ॐ यत्पाकत्रामनसादीनदक्षानयज्ञस्य मन्वतेमर्त्यासः।
अग्निष्टद्धोता क्रतुविद्विजानन्यजिष्ठो देवाँऋतुशोयजाति स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १०.२.५)*

अग्नय इदं न मम। ॐयद्वोदेवा अभितपामरुत स्त्रिष्टुप्। मंत्र तंत्र विपर्यासादि निमित्तक प्रायश्चिताज्य होमे विनियोगः।

ॐ यद्वोदेवा अतिपातयानि वाचाचप्रयुतीदेवहेळनं।
अरायो अस्माँ अभिदुच्छुनायतेन्यत्रास्मन्मरुतस्तन्निधेतनस्वाहा॥ *(यजुर्वेद-आरण्यक)*

मरुद्भ्य इदं न मम। ततः स्कन्न भिन्नाद्यनियत निमित्ते सति वक्ष्यमाण प्रकारेण तत् प्रतिपदोक्त जप होमान् कुर्यात्। इसके बाद गिरने वाले, टूटने वाले सभी दोष जिनका वर्णन संभव नहीं है, उनके प्रायश्चित के लिए आगे कहने वाले जप एवं होम करें।

ॐभूः स्वाहा, अग्नये इदं न मम। ॐभुवः स्वाहा, वायवे इदं न मम। ॐस्वः स्वाहा, सूर्याय इदं न मम। ॐभूर्भुवः स्वः स्वाहा, प्रजापतये इदं न मम। यहाँ पर प्रायश्चित होम समाप्त हुआ। प्रारम्भ दिन से अन्तिम दिन तक यह होम कार्य एक जैसा है।

विष्णु सर्वाद्भुत होमस्य सर्व फलावाप्त्यर्थं साङ्गतासिद्ध्यर्थं च यावच्छक्ति ध्यानावाहनादि षोडशोपचार पूजां करिष्ये। होम कुण्ड में आचार्य एवं कलश वेदि में प्रधानाचार्य एक साथ पूजन करें। प्रधान देवता विष्णु मंत्रों से।

षोडशोपचार पूजनम् (कुण्ड में)

ध्यान —विष्णुं जिष्णुं महाविष्णुं प्रभविष्णुं महेश्वरम्। अनेकोत्पात शमनं नमामि पुरुषोत्तमम्॥ नमोनारायणाय।

आवाहन-ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिं विश्वतोवृत्वात्य तिष्ठद् दशांगुलम्॥ *(ऋग्वेद १०.९०.१)*

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजत स्रजाम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

सपरिवार श्री विष्णवे नमः। आवाहयामि। आवाहनं समर्पयामि।

आसनम्—ॐ पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेना तिरोहति॥ *(ऋग्वेद १०.९०.२)*

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। आसनं समर्पयामि।

पाद्यम्— ॐ एतावानस्य महिमाऽतो ज्यायाँश्च पुरुषः। पादोऽस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥ *(ऋग्वेद १०.९०.३)*

ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद प्रमोदिनीम्। श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्॥ *(पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)*

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। पादारविंदयोः पाद्यं पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यं— ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत् पुरुषः पादोऽस्येहा भवत्पुनः। ततो विश्वं व्यक्रामत् साशनानशने अभि॥ *(ऋग्वेद १०.९०.४)*

ॐ कां सोस्मितां हिरराय प्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।

पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहो पह्वये श्रियम्॥ *(पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)* सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। हस्तयोः अर्घ्यमर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनम्— ॐ तस्माद्विराळजायत विराजो अधिपूरुषः। स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथोपुरः। *(ऋग्वेद १०.९०.५)*

ॐ चंद्रां प्रभासां यशसा ज्वलंतीं श्रियं लोके देवजुष्टा मुदाराम्।

तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मेनश्यतां त्वां वृणे॥ *(पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)*

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। मुखे आचमनीयं समर्पयामि।

पञ्चामृत स्नानम् (दूध)— ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्णियं। भवावाजस्य संगथे। *(ऋग्वेद १०.९१.१६)*

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। पयः स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल— ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः। भवे भवेनातिं भवे भवस्वमाम् भवोद्भवाय नमः॥

(यजुर्वेद-महानारायणोपनिपत् आररायक)

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि

दहि— ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभिनोमुखा करत्प्रण आयूंषितारिषत्॥ *(ऋग्वेद ४.३९.६)*

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। दधि स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमश्श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमःकलविकरणाय नमोबलाय नमो बलप्रमथनाय नमस्सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः। (यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। शुद्धोदक स्नानं सपर्मयामि।

घी— ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतं वस्य धाम।
अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभवक्षि हव्यम्॥ (ऋग्वेद २.३.११) सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। घृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥ (यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

मधु (शहद)—ॐ मधुवाता ऋतायते मधुक्षरंति सिंधवः। माध्वीर्नः संत्वोषधीः॥ मधुनक्तमुतोषसो मधुमत् पार्थिवं रजः। मधुद्यौरस्तु नः पिता॥ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवंतु नः॥ (ऋग्वेद १.९०.६) सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। मधु स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥ (यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। शुद्धोदक स्नानं सपर्पयामि।

शर्करा (शक्कर)—ॐ स्वादुः पवस्व दिव्याय जन्मने स्वादुरिंद्राय सुहवीतु नाम्ने।
स्वादुर्मित्राय वरुणाय वायवे बृहस्पतये मधुमाँ अदाभ्यः॥ (ऋग्वेद ९.८५.६)

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। शर्करा स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जन—ॐ ईशानस्सर्वं विद्यानामीश्वरस्सर्वं भूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽ
धिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोऽम् ॥ (यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

फल— ॐ याः फलिनी या अफला अपुष्पायाश्च पुष्पिणीः। बृहस्पति प्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्वं हंसः ॥ (ऋग्वेद १०.९७.१५)

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। फल स्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदक—ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवस्तानऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे ॥ यो वः शिवतमोरसस्तस्य भाजयते हनः।
उशतीरिव मातरः ॥ तस्मा अरंगमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः। (ऋग्वेद १०.९.१-२-३)

ॐ कद्रुद्राय प्रचेतसे मीळहुष्टमाय तव्यसे। वोचेम शंतमं हृदे ॥ (ऋग्वेद १.४३.१)

ॐ यथा नो अदितिः करत्पश्वे नृभ्यो यथा गवे। यथा तोकाय रुद्रियम् ॥ (ऋग्वेद १.४३.२)

ॐ यथा नो मित्रो वरुणो यथा रुद्रश्चिकेतति। यथा विश्वे सजोषसः।

ॐ गाथपतिं मेधपतिं रुद्रं जलाषभेषजम्। तच्छंयोः सुम्नमीमहे ॥

ॐ यः शुक्र इव सूर्यो हिरण्यमिव रोचते। श्रेष्ठो देवानां वसुः।

ॐ शं नः करत्यर्वते सुगं मेषाय मेष्ये। नृभ्यो नारिभ्यो गवे ॥

ॐ अस्मे सोम श्रियमधि नि धेहि शतस्य नृणाम्। महिश्रवस्तुविनृम्णाम् ॥

ॐ मानः सोमपरिबाधो मारातयो जुहुरंत। आ न इंदो वाजे भज ॥

ॐ यास्ते प्रजा अमृतस्य परस्मिन्धामन्नृतस्य। मूर्धा नाभा सोमवेन आ भूषंतीः सोम वेदः ॥ (ऋग्वेद १.४३.३-४-५-६-७-८-९)

ॐ नमः सोमाय च रुद्राय च नमस्ताम्राय चारुणाय च नमः शंगाय च पशुपतये च नम उग्राय च भीमाय च नमो अग्रेवधाय च दूरेवधाय च नमो हन्त्रे च हनीयसे च नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो नमस्ताराय नमः शंभवे च मयोभवे च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च नम स्तीर्थ्यायच कूल्याय च नमः पार्याय चावार्याय च नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च नम आतार्याय चालाद्याय च नमशष्प्याय च फेन्याय च नमःसिकत्याय च प्रवाह्याय च। *(यजुर्वेद-४ काराड-५ प्रश्ने-८ अनुवाक)*

ॐ तच्छंयोरावृणीमहे। गातुं यज्ञाय। गातुं यज्ञ पतये। दैवीः स्वस्तिरस्तु नः। स्वस्तिर्मानुषेभ्यः।
ऊर्ध्वं जिगातु भेषजम्। शं नो अस्तु द्विपदे। शं चतुष्पदे। ॐ शांतिः शांतिः। शांतिः॥ *(यजुर्वेद-आरण्यक)*
ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसंतो अस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥ *(ऋग्वेद १०.९०.६)*
ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदंतु मायांतरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः। *(ऋग्वेद पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)*

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

वस्त्र— ॐ युवं वस्त्राणि पीवसावसाथे युवोरच्छिद्रा मंतवो हसर्गाः।
अवातिरमनृतानि विश्व ऋतेन मित्रा वरुणा सचेथे॥ *(ऋग्वेद १.१५२.१)*
ॐ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः। तेन देवा अयजंत साध्या ऋषयश्च ये॥ *(ऋग्वेद १०.९०.७)*
ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥
(ऋग्वेद पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। वस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतं—ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्रयं प्रतिमुञ्चशुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥

ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम्। पशूनताँश्चक्रे वायव्यानारण्यान् ग्राम्याश्च ये॥ *(ऋग्वेद १०.९०.८)*

ॐ क्षुत् पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वान्निर्णुद मे गृहात्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

आभरण—ॐ हिरण्यरूपः स हिरण्य संदृगपान्नपात् सेदु हिरण्यवर्णः। हिरण्ययात् परियोनेर्निषद्या हिरण्यदा ददत्यन्नमस्मै॥ *(ऋग्वेद २.३५.१०)*

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। आभरणं समर्पयामि।

गन्ध— ॐ गंधं द्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्य जुस्तस्मादजायत॥ *(ऋग्वेद १०.९०.९)*

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। गन्धं समर्पयामि।

अक्षत—ॐ अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत। अर्चन्तु पुत्रका उतपुरंन्न धृष्णवर्चत॥ *(ऋग्वेद ८.६९.८)*

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पाणि—ॐ आयने ते परायणे दूर्वारोहंतु पुष्पिणीः। ह्रदाश्च पुण्डरीकाणि समुद्रस्य गृहा इमे॥ *(ऋग्वेद १०.१४२.८)*

ॐ तस्मादश्वा अजायन्त ये के चो भयादतः। गावोहजज्ञिरे तस्मात् तस्माज्जाता अजावयः॥ *(ऋग्वेद १०.९०.१०)*

ॐ मनंसः कामुमाकूंतिं वाचः सुत्यमंशीमहि। पुशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रंयतां यशंः॥ *(ऋग्वेद पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)*
सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। पुष्पाणि समर्पयामि।

प्रथमावरण पूजनम्—ॐहृदयाय नमः। आग्नेय दिशि। ॐशिरसे स्वाहा नमः। ऐशान्यां दिशि। ॐशिखायै वषट् नमः। नैर्ऋत्यां दिशि। ॐकवचाय हुम् नमः। वायव्यां दिशि। ॐनेत्रत्रयाय वौषट् नमः। अग्रे ॐअस्त्राय फट् नमः। आग्नेयादि कोरोषु पूजयेत् *(अनुष्ठान पद्धति)*। पूजन करे।

द्वितीयावरण पूजनम्—ॐब्राह्म्यै नमः। पूर्वे ॐमाहेश्वर्यै नमः। आग्नेय दिशि। ॐकौमार्यै नमः। दक्षिण दिशि। ॐवैष्णव्यै नमः। नैऋत्यां दिशि। ॐवाराह्यै नमः पश्चिम दिशि। ॐइन्द्राण्यै नमः। वायव्यां दिशि। ॐचामुण्डायै नमः। उत्तरस्यां दिशि। ॐगिरिजायै नमः ऐशान्यां दिशि। *(अनुष्ठान पद्धति)*

तृतीय**ावरण पूजनम्**—ॐइन्द्राय सुराधिपतये पीतवर्णाय वज्रहस्ताय ऐरावत वाहनाय सशक्ति काय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवारायश्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐअग्नये तेजोधिपतये पिंगलवर्णाय शक्ति हस्ताय मेष वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय स वाहनाय स परिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐयमाय प्रेताधिपतये कृष्णवर्णाय दण्ड हस्ताय महिष वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐनिर्ऋतये रक्षोधिपतये रक्तवर्णाय खड्ग हस्ताय नरवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐवरुणाय जलाधितये कुंदवर्णाय पाशहस्ताय मकरवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐवायवे प्राणाधिपतये धूम्रवर्णाय अंकुश हस्ताय हरिणवाहनाय सशक्ति काय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐसोमाय नक्षत्राधिपतये शुक्लवर्णाय गदा हस्ताय अश्व वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐईशानाय विद्याधिपतये स्फटिकवर्णाय त्रिशूल हस्ताय वृषभ वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐअनंताय नागाधिपतये क्षीरवर्णाय चक्रहस्ताय गरुड वाहनाय स शक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। नैर्ऋत्यं एवं पश्चिम दिशा के बीच में अनन्त का पूजन करें। ॐब्रह्मणे लोकाधिपतये कंजवर्णाय पाशहस्ताय हंसवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। पूर्व एवं ईशान दिशा के बीच में ब्रह्मा जी का पूजन करें। *(अनुष्ठान पद्धति)*

चतुर्थावरणपूजनम्—ॐवज्राय नमः। (पूर्व में) ॐशक्त्यै नमः। (आग्नेय में) ॐदण्डाय नमः। (दक्षिण में) ॐखड्गाय नमः। (नैर्ऋत्य) ॐपाशाय

नमः। (पश्चिम में) ॐ अंकुशाय नमः। (वायव्य में) ॐ गदायै नमः। (उत्तर में) ॐ त्रिशूलाय नमः। (ईशान में) ॐ चक्राय न मः। (पश्चिम नैर्ऋत्य के बीच में) ॐ पद्माय नमः। (पूर्व ईशान के बीच में) *(अनुष्ठान पद्धति)*

विष्णु अष्टोत्तर शतनाम पूजा

ॐ विष्णवे नमः। ॐ लक्ष्मीपतये नमः। ॐ कृष्णाय नमः। ॐ वैकुण्ठाय नमः। ॐ गरुडध्वजाय नमः। ॐ जगन्नाथाय नमः। ॐ परब्रह्मणे नमः।ॐ वासुदेवाय नमः। ॐ त्रिविक्रमाय नमः। ॐ दैत्यान्तकाय नमः। ॐ मधुरिपवे नमः। ॐ तार्क्ष्यवाहनाय नमः। ॐ सनातनाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ पद्मनाभाय नमः। ॐ हृषीकेशाय नमः। ॐ सुधाप्रदाय नमः। ॐ माधवाय नमः। ॐ पुण्डरीकाक्षाय नमः। ॐ स्थितिकर्त्रे नमः। ॐ परात्पराय नमः। ॐ वनकालिने नमः। ॐ यज्ञ रूपाय नमः। ॐ चक्र पाणये नमः। ॐ गदाधराय नमः। ॐ उपेन्द्राय नमः। ॐ केशवाय नमः। ॐ हंसाय नमः। ॐ समुद्रमथनाय नमः। ॐ हरये नमः। ॐ गोविन्दाय नमः। ॐ ब्रह्मजनकाय नमः ॐ कैटभासुरमर्दनाय नमः। ॐ श्रीधराय नमः। ॐ कामजनकाय नमः ॐ शेषायिने नमः। ॐ चतुर्भजाय नमः। ॐ पाञ्चजन्यधराय नमः। ॐ श्रीमते नमः। ॐ शार्ङ्गपाणये नमः। ॐ जनार्दनाय नमः। ॐ पीताम्बरधराय नमः। ॐ देवाय नमः। ॐ सूर्यचन्द्रविलोचनाय नमः। ॐ मत्स्यरूपाय नमः। ॐ कूर्मतनवे नमः। ॐ क्रोडरूपाय नमः। ॐ नृकेसरिणे नमः। ॐ वामनाय नमः। ॐ भार्गवाय नमः। ॐ रामाय नमः। ॐ बलिने नमः। ॐ कल्किने नमः। ॐ हयाननाय नमः। ॐ विश्वम्भराय नमः। ॐ शिशुमाराय नमः। ॐ श्रीकराय नमः। ॐ कपिलाय नमः। ॐ ध्रुवाय नमः। ॐ दत्तात्रेयाय नमः। ॐ अच्युत्ताय नमः। ॐ अनन्ताय नमः। ॐ मुकुन्दाय नमः। ॐ दधिवामनाय नमः। ॐ धन्वन्तरये नमः। ॐ श्रीनिवासाय नमः। ॐ प्रद्युम्नाय नमः। ॐ पुरुषोत्तमाय नमः। ॐ श्रीवत्सकौस्तुभधराय नमः। ॐ मुरारातये नमः। ॐ अधोक्षजाय नमः। ॐ ऋषभाय नमः। ॐ मोहिनी रुप धारिणे नमः। ॐ सङ्कर्षणाय नमः। ॐ पृथवे नमः। ॐ क्षीराब्धिशायिने नमः। ॐ भूतात्मने नमः। ॐ अनिरुद्धाय नमः। ॐ भक्तवत्सलाय नमः। ॐ नराय नमः। ॐ गजेन्द्रवरदाय नमः। ॐ त्रिधाम्ने नमः। ॐ भूतभावनाय नमः। ॐ श्वेतद्वीपसुवास्तव्याय नमः। ॐ सनकादिमुनिध्येयाय नमः। ॐ भगवते नमः। ॐ शङ्करप्रियाय नमः। ॐ नीलकान्ताय नमः। ॐ धराकान्ताय नमः। ॐ वेदात्मने नमः। ॐ बादरायणाय नमः। ॐ भागीरथीजन्मभूमि पादपद्माय नमः। ॐ सतांप्रभवे नमः। ॐ स्वभुवे नमः। ॐ विभवे नमः। ॐ घनश्यामाय नमः। ॐ जगत्कारणाय नमः। ॐ अव्ययाय नमः। ॐ बुद्धावताराय नमः। ॐ शान्तात्मने नमः। ॐ लीलामानुष विग्रहाय नमः। ॐ दामोदराय नमः। ॐ विराड्रूपाय नमः। ॐ भूतभव्यभवत्प्रभवे नमः। ॐ आदिदेवाय नमः। ॐ प्रह्लादपरिपालकाय नमः। ॐ श्रीमहाविष्णवे

नमः। अष्टोत्तर शतनाम पूजां समर्पयामि। *(अनुष्ठान पद्धति)*

धूपम्—ॐ वनस्पति रसोत्पन्नो गंधाढ्यः सुमनोहरः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्य कौ बाहू का ऊरू पादा उच्येते॥ *(ऋग्वेद १०.९०.११)*

ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि संभव कर्दम। श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥ *(ऋग्वेद पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)*

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। धूपं आघ्रापयामि।

दीपम्— **आज्यं त्रिवर्ति संयुक्तं वह्निना योजितं मया। गृहाण मंगलं दीपं त्रैलोक्य तिमिरापह॥** *(स्मृति संग्रह)*

ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासी बाहू राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत॥ *(ऋग्वेद १०.९०.१२)*

ॐ आपः सृजंतु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे। नि चं देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥ *(ऋग्वेद पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)*

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। दीपं दर्शयामि। धूप दीपानंतरं आचमनीयं समर्पयामि।

नैवेद्यम्—देवस्याग्रे स्थलं संशोध्य गोमयेन मराडलं कृत्वा तत्र शुद्धं पात्रं न्यस्य अभिघार्य निर्मलं हवि तदुपरि न्यस्य आज्येन द्रवीभूतं कृत्वा ''ॐ भू र्भुवः स्वः इति गायत्र्या च प्रोक्ष्य वायु बीजं जप्त्वा निवेद्यान्नं संशोध्य दक्षिणहस्ते अग्निबीजं विलिख्य तेन हस्तेन संदह्यवामहस्ते अमृतबीजं विलिख्य तेत हस्तेन हविराप्लाव्य मूलमंत्रमष्टवारं संजप्य मंत्रामृतमयं संकल्प्य सुरभिमुद्रां बध्वा अमृतमयं भावयित्वा मल धातु रसांशं विभज्य देवस्य निवेद्य ग्रहणेच्छां कुर्यात्।

(अनुष्ठान पद्धति)

''सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि'' इत्यनेन

परिषिच्य हस्ताभ्यां पुष्पैः ''देवस्य जिह्वार्चीरुचि निवेद्ये निपात्य निवेदयामि भवते जुषाणेदं हविर्विभो'' इति वामहस्तेन ग्रासमुद्रा प्रदर्श्य दक्षिण हस्तेन

प्राणादि मुद्राः प्रदर्शयेत्। अन्नात् मलांशं धात्वंशं च परित्यज्य रसांशं देवस्य वदनार्चिषि समर्पयेत्। वं अबात्मने इति नैवेद्य मुद्रां प्रदर्शयेत्। नैवेद्य सारं रससमर्पणात् जातं सुधांशं देवे समर्प्य अंललिमुद्रां बध्वा नैवेद्यसार रससमर्पित जातामृतमय सुधांशुना पुनः पुनः वर्धितं देवं हृन्मूर्ति देवं ध्यायन् स्व स्व मूलमन्त्रं यथा शक्ति जप्त्वा।

कलश के आगे स्थल शुद्धिकर गोमय से शुद्धिकर चतुरस्त्र मण्डल को बनाकर उस पर शुद्ध पात्र को रखें। पात्र में थोडा सा घी डालें। उस पात्र में निर्मल हविस् (नैवेद्य पदार्थ को) को घी पर रखें उस हविस् को घी से भिगोयें। गायत्री मंत्र से नैवेद्य का प्रोक्षण करें। यंयं यं'' इस वायु बीज को जपकर हविस् को शुद्ध करें। दाहिने हाथ में (रं) अग्नि बीज को लिखकर उस अग्नि से हविस् में विद्यमान कश्मलों को लजायें। (कल्पना करें) बायें हाथ में अमृत बीज (वं) को लिखकर उस हाथ से हविस् को शुद्ध करें। धोने की कल्पना करें। **ॐ नमोनारायणाय**। इस मन्त्र का आठ बार जप करें। हविस् को मत्रमय एवं अमृतमय होने की कल्पना करें। सुरभि मुद्रा से अमृतमय हुआ है मानकर मलांश, धातु अंश एवं रसांश को अलग-अलग करने की कल्पना करें। देवता को नैवेद्य ग्रहण करने की इच्छा उत्पन्न करनी चाहिये। ''सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि'' इससे परिषिञ्चन करें। दोनों हाथों में पुष्प लेकर देवता का जीभ नैवेद्य तक पहुँचने का चिन्तन करें। ''निवेदयामि भवते जुषाण हविर्विभो'' कहकर नैवेद्य स्वीकार करने की प्रार्थना करते हुए बायें हाथ से ग्रास मुद्रा (जैसे बछडे को घास देते हैं) को दिखाकर दाहिने हाथ से—

प्राणाय स्वाहा-अङ्गुष्ठ कनिष्ठिका मिलाकर, **अपानाय स्वाहा**-अङ्गुष्ठ एवं तर्जनी मिलाकर, **व्यानाय स्वाहा**-अङ्गुष्ठ एवं मध्यमा मिलाकर, **उदानाय स्वाहा**-अङ्गुष्ठ एवं अनामिका मिलाकर, **समानाय स्वाहा**। सभी अङ्गुलियों को लाकर। अन्न से मलांश एवं धातु के अंश को अलग कर केवल रसांश को अर्पित करने की कल्पना करें।

''वं अबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि'' कहकर नैवेद्य मुद्रा का प्रदर्शन करें। अंगुष्ट एवं अनामिका मिलाने से नैवेद्य मुद्रा। नैवेद्य का सार जो रसांश था उसका भी सार अमृत का जो अंश है उसे देवता को समर्पित कर, हाथ जोडकर, नैवेद्य के सार अमृत से भगवान् को बढते हुए मानकर उसे हृदय में स्थित मानकर यथाशक्ति **ॐ नमोनारायणाय।** '' इस मूल मंत्र का जप करें।

ॐ स्वा॒दुः पंवस्व दि॒व्याय॒ जन्म॑ने स्वा॒दुरिंद्राय सु॒हवीं॑तुनाम्ने।
स्वा॒दुर्मि॒त्राय॒ वरु॑णाय वा॒यवे॒ बृह॒स्पत॑ये॒ मधु॑मां॒ अदा॑भ्यः ॥ (ऋग्वेद ९.८५.६)

ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत। मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरजायत॥ *(ऋग्वेद १०.९०.१३)*

ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

(ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

यथा संभव नैवेद्यं निवेदयामि। **अमृतापिधानमसि** कहकर उत्तरापोशन देवें। हस्ताप्रक्षालनार्थे जलं समर्पयामि। गण्डूषार्थे जलं समर्पयामि। शुद्धाचमनार्थे जलं समर्पयामि। करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि।

ताम्बूल—**पूगीफल समायुक्तं नागवल्या दलैर्युतं। चूर्ण कर्पूर संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥** *(स्मृति संग्रह-देवपूजा)*

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। क्रमुक तांबूलं समर्पयामि।

नीराजन (आरति)—**ॐ अर्चत प्रार्चत प्रियमेधा सो अर्चत। अर्चतु पुत्रका उत पुरं न धृष्णवर्चत।** *(ऋग्वेद ८.६९.८)*

ॐ ध्रुवाद्यौ ध्रुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वता इमे। ध्रुवं विश्वमिदं जगद् ध्रुवो राजा विशामयम्॥

ॐ ध्रुवं ते राजा वरूणो ध्रुवं देवो बृहस्पतिः। ध्रुवं त इन्द्रश्चाग्निश्च राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम्॥ *(ऋग्वेद १०.१७३.४)*

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। मंगल नीराजनंसमर्पयामि।

मंत्रपुष्प—**ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदं। समूह्ळमस्य पांसुरे।** (ऋग्वेद १.२२.१७) आ. गृ. सूत्रम्

ॐ नाभ्या आसीदंतरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन्। *(ऋग्वेद-१०.९०.१४)*

ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्। सूर्या हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

(ऋग्वेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्) सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। मंत्रपुष्पं समर्पयामि।

प्रदक्षिणा नमस्कार—**यानि कानि च पापानि जन्मांतर कृतानि च। तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे पदे॥** *(देवपूजा-स्मृति संग्रह)*

ॐ सप्तास्यांसन् परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुं॥ (ऋग्वेद १०.९०.१५)

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावोदास्योऽश्वान् विंदेयं पुरुषानहम्॥ (ऋग्वेद-पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। प्रदक्षिणा नमस्कारान् समर्पयामि।

प्रसन्नार्घ्य—ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि। तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्॥ इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यम् (कहकर तीन बार पुष्पमिश्रित जल छोडें।)

सर्वोपचार पूजनम्—ॐ छत्रं समर्पयामि। चामरेण वीजयामि। गीतं गायामि। नाट्यं नटामि। आंदोळिकामारोहयामि। अश्वमारोहयामि। गजमारोहयामि। समस्य राजोपचार देवोपचार पूजां समर्पयामि।

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥ (ऋग्वेद १०.९०.१६)

ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्। सूक्तं पंचदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्॥ (ऋग्वेद-पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। सवोपचार पूजां समर्पयामि।

प्रार्थना—विष्णुं जिष्णुं महाविष्णुं प्रभविष्णुं महेश्वरम्। अनेकोत्पात शमनं नमामि पुरुषोत्तमम्॥

ॐ कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुध्यात्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि॥ (पौराणिकम्)

ॐ ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविः ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्। ब्रह्मैव तेन गंतव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना॥ (श्री भगवद्गीते)

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। **अनेन पूजनेन सपरिवारः श्री विष्णुः प्रीयताम्।**

पूर्णाहुति—प्रतिदिन संक्षेप में पूर्णाहुति करनी चाहिये अन्तिम दिन विशेष रूप से करनी चाहिये।

प्रतिदिन वाला पूर्णाहुति—स्रुचि स्रुवेण द्वादशवारं आज्यं गृहीत्वा तस्यां स्रुवं ऊर्ध्वबिलं निधाय पुनरधो बिलं निक्षिप्य स्रुवाग्रे कुसुमाक्षतान् निधाय सव्य पाणिना स्रुकूस्रुवमूले धृत्वा दक्षिणपाणिना स्रुक्स्रुवं शंखमुद्रया गृहीत्वातिष्ठन् समपाद ऋजुकायः स्रुवाग्रे न्यास्त दृष्टिः प्रसन्नात्मना। स्रुवा से स्रुक में १२ बार घी डाले। स्रुक् के ऊपर स्रुवा को ऊपर मुख करके रखें, फिर उसे उल्टा करके स्रुक् के ऊपर रखें। स्रुवा के अग्रभाग में पुष्प एवं अक्षतों से पूजन करें। बायें हाथ से स्रुक् एवं स्रुवा के मूल को पकडकर, दाहिने हाथ से शंखमुद्रा से स्रुक एवं स्रुवा को पकडकर, सीधे खडे रहकर स्रुवा के अग्रभाग को देखते हुए प्रसन्न मन से पूर्णाहुति होम करें। धामं ते वामदेव आपो जगती पूर्णाहुति होमेविनियोगः।

ॐ धामँ ते विश्वं भुवनमधिंश्रितमंतः संमुद्रे हृद्यं१ंतरायुंषि।
अपाम नीं के समिथेयआभृंतरतमंश्याम मधुंमंतंतऊर्मिं स्वाहा॥ *(ऋग्वेद ४.५८.११)*

कहकर पूर्णाहुति डालें। अद्भ्य इदं न मम। विज्योतिषेत्यस्य जारोवृशोग्निस्त्रिष्टुप्। पूर्णाहुति शेषाज्य होमे विनियोगः।

ॐ विज्योतिंषाबृहता भांत्यग्निराविर्विश्वांनिकृणुते महित्वा।
प्रादेंवीर्मायाः संहते दुरेवाः शिशींते शृङ्गे रक्षंसे विनिक्षे स्वाहा॥ *(ऋग्वेद ५.२.९)*

इतना कहकर स्रुक् में शेष घी का होम करें। अग्नये इदं न मम। कहकर हाथ जोडें। विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा। विश्वेभ्यः देवेभ्य इदं न मम। स्रुक् स्रुवा में शेष बचे घी का भी होम करें। यह संस्राव कहलता है। अथावभृथस्थानीयं पूर्णपात्रजलेन मार्जनं कुर्यात्। अवभृथस्नान के जगह (बदले) पूर्णपात्र जल से मार्जन करें। पूर्वसादितं पूर्णपात्रं आस्तीर्णे बर्हिषि दक्षिणपाणिना निधाय तत्र गङ्गादि पुण्यनदीः स्मरन् दक्षिण पाणिना स्पृशन्। उत्तर में स्थापित प्रणीतापात्र

के जल से अवभृथस्नान के बदले में आगे बिछाये बर्हिषि (कुशाग्रों) के ऊपर रखकर दाहिने हाथ से उसे छूते हुए गङ्गादि पुण्यनदियों का स्मरण करते हुए मंत्र पाठ करें।

ॐ पूर्णमसि पूर्णं मे भूयाः सुपूर्णमसि सुपूर्णं मे भूयाः सदसि सन्मेभूयाः सर्वमसि सर्वं मे भूयाः। अक्षितिरसि मामेक्षेष्ठाः॥ *(यजुर्वेद)*

इति जपित्वा कुशाग्रैः प्रागादि पञ्चदिक्षुजलं मंत्रैः यथालिङ्गं सिञ्चेत्। आगे कहे जाने वाले मंत्रों से कहे जाने वाले दिशाओं में कुश के अग्र भाग से जल प्रोक्षण करें।

प्राच्यां दिशि देवा ऋत्विजो मार्जयन्ताम्। दक्षिणस्यां दिशि मासाः पितरो मार्जयन्ताम्। अप उपस्पृस। (हाथ धो लें) **प्रतीच्यां दिशि ग्रहाः पशवो मार्जयन्ताम्। उदीच्यां दिश्याप ओषधयोवनस्पतयो मार्जयन्ताम्। ऊर्ध्वायां दिशि यज्ञः संवत्सरः प्रजापतिर्मार्जयताम्।** *(यजुर्वेद)*

इति एकश्रुत्या पठन् प्रतिदिशं सिक्त्वा कुशाग्रैः स्वशिरसि मार्जयेत्। उपरोक्त मंत्रों को कहते हुए उन दिशाओं के सिञ्चन के साथ अपने पर भी सिञ्चन करें। आपो अस्मानित्यस्य देवश्रवा आपस्त्रिष्टुप्। मार्जने विनियोगः।

ॐ आपो अस्मान्मातरः शुंधयंतु घृतेननोघृतप्वः पुनंतु। विश्वं हिरिप्रंप्रवहंतिदेवीरुदिदाभ्यः शुचिरापूतएमि॥

(ऋग्वेद १०.१७.१०)

इदमापः सिंधुद्वीप आपोनुष्टुप्। मार्जने विनियोगः।

ॐ इदमापः प्रवहतयत्किंञ्चदुरितं मयि। यद्वाहमभि दुद्रोहय द्वांशे पउतानृतं॥ *(ऋग्वेद १०.६.८)*

सुमित्र्यान आप ओषधयः सन्तु। इत्येतैर्मंत्रांते मार्जनं कृत्वा। उपरोक्त मंत्रों से मार्जन करें॥

दुर्मित्र्यास्तस्मैसंतु योऽस्मान्द्वेष्टियं चवयं द्विष्मः। *(यजुर्वेद-आरण्यक)*

इति निर्ऋति देशे कुशाग्रैः अपः सिञ्चेत्। उपरोक्त मंत्र को कहकर नैऋत्य में कुशाग्रभाग से जल प्रोक्षण करें। ततो ब्रह्मा यजमान वामपार्श्वेस्थित पत्न्यंजलौ तदभावे पूर्णपात्रस्थं जलं यजमान पव स्व वामपाणावुत्ताने बर्हिर्निधाय तत्र दक्षिणपाणिना पूर्णपात्रं आदाय जलं प्रत्यड़मुखं निषिच्य। इसके बाद ब्रह्मा यजमान के बायें पार्श्व में स्थित पत्नी के अंजली में स्थित पूर्णपात्र के जल से दोनों का प्रोक्षण करें। यदि यजमान अकेला हो तो बायें हाथ में बर्हिष् (कुशा) रखकर दाहिने हाथ में पूर्णपात्र पकडकर बायें हाथ में स्थित कुशपर जल छोडें एवं उस जल को पश्चिम की ओर हाथ से गिरायें (स्वाभिमुख)

ॐ माहंप्रजां परासिचुंयानः सयावरीस्थनं। समुद्रेवोंनिनयानिस्वंपाथों अपीथ॥ *(श्रौत मन्त्र)*

उपरोक्त मत्र कहते हुए पाप नाश के लिए नीचे गिरे जल को समुद्र में गया मानकर हाथ में बचे शेष जल से अपना प्रोक्षण करें। ततः कर्ता अग्रेः वायव्ये स्थितः संस्थाजपेन उपतिष्ठेत। इसके बाद यजमान अग्नि के वायव्य दिशा में खड़े होकर संस्था जप जो कि आगे बताया जा रहा है, उससे हाथ जोडकर अग्नि की प्रार्थना करें। अग्नेत्वं न इति चतसृणां गौपायना लौपायनावाबंधुः सुबंधुः श्रुतबंधुर्विप्रबंधुश्च एकैकर्चा ऋषयः। अग्निर्देवता। द्विपदाविराट्छंदः। अग्न्युपस्थाने विनियोगः।

ॐ अग्नेत्वंनो अंतमउतत्राता शिवो भवावरूथ्यः। वसुरग्निर्वसुश्रवा अच्छानक्षिद्युमत्तमंरयिंदाः॥ *(ऋग्वेद ५.२४.१-२)*

सनोबोधिश्रुधीहवं मुरुष्याणो अघायतः समस्मात्। तंत्वाशोचिष्ठदीदिवः सुम्नायंनूनमीमहेसखिभ्यः॥ *(ऋग्वेद ५.२४.३-४)*

ॐ चंमे स्वरश्च मे यज्ञोपंतेनमश्च। यत्तेन्यूनं तस्मैत उपयत्तेतिरिक्तं तस्मै ते नमः॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

अग्नये नमः। ॐस्वस्ति। श्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां विद्यां बुद्धिं श्रियंबलं। आयुष्यं तेज आरोग्यं देहि मे हव्यवाहन॥ मानस्तोक

इत्यस्य कुत्सोरुद्रोजगती। विभूति ग्रहणे विनियोगः।

ॐ मानंस्तोके तनंये मानं आयौ मानो गोषुमानो अश्वेंषुरीरिषः।
वीरान्मानोंरुद्र भामितोवंधीर्हं विष्मंतः सदमित्वां हवामहे॥ *(ऋग्वेद १.११४.८)*

इति स्रुव बिलपृष्ठेनैशानीगतां विभूतिं गृहीत्वा। उपरोक्त मंत्र पाठ करते हुए स्रुवा के बिल के पिछले हिस्से के ईशान भाग से भस्म (होम करें) को निकालें। ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेरिति ललाटे। (ललाटे में भस्म लगायें) ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषं इति कंठे। (कराठ में भस्म लगायें) ॐ अगस्त्यस्य त्र्यायुषं इति नाभौ। (नाभि में भस्म लगायें) ॐ यद्देवानां त्र्यायुषमिति दक्षिणस्कंधे (दाहिने भुजा में भस्म) ॐ तन्मे अस्तु त्र्यायुषं इति वाम स्कंधे (बाये कंधे पर) ॐ सर्वमस्तु शतायुषं इति शिरसि धारयेत् (सिर से भस्म लगायें) ततः परिस्तरणानि विसृज्य अग्निं परिसमूह्य परिषियुक्ष्य।

अग्नि का परिसमूहन एवं परिषिञ्चन करें। इसके बाद जिस प्रकार से डाले थे उसी प्रकार पूर्व से उन परिस्तरणों को अग्नि में डाल दें (विसर्जन) हाथों में जल लेकर पूर्वदिशा से प्रारम्भ करके प्रदक्षिणाकार में चारों ओर मार्जन करने की क्रिया परिसमूहन कहलाता है। पहले हाथ धो लें फिर जलयुक्त हाथ से पूर्वादि दिशाओं को स्पर्श करना चाहिये। पुनः हाथ धोकर इसी क्रिया दो बार और करना चाहिये। यह क्रिया परिसमूहन कहलाता है। अग्नेरैशानतस्त्रिरंभसा परिषेचनं। हाथ में जल लेकर ईशान्य से ईशान्य तक तीन बर जल से परिषिञ्चन करें। विश्वानिन इति तिसृणामात्रेयो वसुश्रुतोग्निस्त्रिष्टुप् द्वोरर्चने अंत्यायाउपस्थाने विनियोगः।

ॐ विश्वांनिनो दुर्गहां जातवेदः। (पूर्व में पुष्पाक्षत से अग्निदेव का पूजन करें), **ॐ सिन्धुं ननावादुंरितातिंपर्षि।** (आग्नेय में पूजन करें), **ॐ अग्नें अत्रिवन्नमंसागृणानः।** (दक्षिण में पूजन करें), **ॐ अस्माकं बोध्यवितातनूंनां।** (नैर्ऋत्य में पूजन करें), **ॐ यस्त्वांहृदाकीरिणामन्यंमानः।** (पश्चिम में पूजन करें) *(ऋग्वेद ५.४.९-१०-११)*, **ॐ अमंर्त्यं मर्त्योजोहंवीमि।** (वायव्य में पूजन करें), **ॐ जातंवेदोयशो**

अ॒स्मासु॑धेहि। (उत्तर में पूजन करें), **ॐ प्र॒जाभि॑रग्ने अ॒मृत॒त्वमं॑श्यां।** (ईशान्य में पूजन करें), **ॐ यस्मै॒त्वं सु॒कृते॑ जातवेद उलो॒कम॑ग्नेकृ॒णवः॒स्यो॒नं। अ॒श्विन॑ं सपु॒त्रिणं॑वी॒रव॑तं॒ गोम॑तं र॒यिं॑नंशते स्व॒स्ति॥** *(ऋग्वेद ५.४.१०-११)*

इन मंत्रों को कहकर पूजन एवं नमस्कार करें। ब्रह्मा को एवं ऋत्विजों को दक्षिणा देवें। यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपो होमक्रियादिषु। न्यूनं संपूर्णतां यातु सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥ ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविः ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्। ब्रह्मैव तेन गंतव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना॥ अनेन सग्रहमख विष्णु सर्वाद्भुतशान्ति होमकर्मणा सपरिवारः भगवान् श्री विष्णुः प्रीयताम्। यागमध्ये मंत्रतंत्र विपर्यासादि सर्वदोष परिहारार्थं नामत्रय जपं करिष्ये। ॐअच्युताय नमः। ॐअनंताय नमः। ॐगोविन्दाय नमः। ॐहराय नमः। ॐमृडाय नमः। ॐशंभवे नमः। इति जपेत्। कर्म के अन्त में पवित्र का विसर्जन करके दो बार आचमन करें। ॐतत् सत्॥ यहाँ पर मध्याह्न तक का कार्यक्रम संपन्न हुआ।

मध्याह्न य सांयकाल का कार्यक्रम—यह प्रारम्भ दिन से अन्तिम दिन के पहले दिन तक समान है। जप का विवरण अगले पन्ने (भाग) में है। आचम्य प्राणानायम्य उद्दिष्ट मंत्रजपं कुर्यात्। आचमन करके प्राणायाम करें। फिर उद्देशित मंत्रों का जप संपन्न करें। जप मंत्रों का संपूर्ण विवरण अगले भाग में है। सर्वाद्भुत शान्ति भाग में—**जप के मन्त्र—महाशान्ति सूक्त—शन्नइन्द्राग्नि सूक्त—प्रधान विष्णु मन्त्र जप—नवग्रह जप**

तृतीय / चतुर्थ / पञ्चम दिन द्वितीय प्रहर सम्पन्न

षष्ठ दिन प्रथम प्रहर

देह शुद्धि—येभ्यो मातेत्यस्य गयःप्लात ऋषिः। विश्वेदेवा देवताः। जगतीछन्दः। एवापित्रेत्यस्य वामदेव ऋषिः। बृहस्पतिर्देवता। त्रिष्टुप् छन्दः। मनुष्य गन्ध निवारणे विनियोगः।

ॐ येभ्यो मातामधुमत् पिन्वते पयः पीयूषं द्यौरदितिरद्रिबर्हाः।

उक्थशुष्मान् वृषभरान्त्स्वप्नसस्तां आदित्यां अनुमदास्वस्तये॥ *(ऋकवेद १०.६३.३)*

ॐ एवापित्रे विश्वदेवाय वृष्णे यज्ञैर्विधेम नमसा हविर्भिः।

बृहस्पते सुप्रजा वीरवन्तो वयं स्याम पतयो रयीणाम्॥ *(ऋकवेद ४.५०.६)*

आचमन मन्त्र—ऋग्वेदाय स्वाहा। यजुर्वेदाय स्वाहा। सामवेदाय स्वाहा। (स्वाहा मन्त्र से जल पीना चाहिये।)
अथर्ववेदाय नमः। इतिहास पुराणेभ्यो नमः। अग्नये नमः। वायवे नमः। प्राणाय नमः। सूर्याय नमः। चन्द्राय नमः। दिग्भ्यो नमः। इन्द्राय नमः। पृथिव्यै नमः। अन्तरिक्षाय नमः। दिवे नमः। ब्रह्मणे नमः। विष्णवे नमः। सदाशिवाय नमः। द्विराचम्य .. इस प्रक्रिया को दुबारा करना चाहिये।

पवित्र धारणम्—पवित्रन्त इत्यनयोः आङ्गीरसः पवित्र ऋषिः। पवमानः सोमो देवता। जगतीछन्दः। पवित्राभिमंत्रणे, धारणे विनियोगः।

ॐ पवित्रन्ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि विश्वतः।

अतप्ततनूर्न तदामो अश्नुतेश्रृता सइद्वहन्तस्तत् समाशत॥ *(ऋग्वेद ९.८३.१)*

ॐ तपोष्पवित्रं विततं दिवस्पदे शोचन्तो अस्य तन्तवो व्यस्थिरन्।

अवन्त्यस्य पवीतारं माशवो दिवस्पृष्ठमधितिष्ठन्ति चेतसा॥ *(ऋग्वेद ९.८३.२)*

ॐभूभुर्वः स्वः कहकर जल सिञ्चन करें॥ (इन मन्त्रों से पवित्र शुद्धिकर धारण करना चाहिये आसन के नीचे दो कुश डाल लेना चाहिये।)
प्राणायाम—प्रणवस्य परब्रह्म ऋषिः, दैवी गायत्री छन्दः, परमात्मा देवता प्राणायामे विनियोगः।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योतीरसोमृतं ब्रह्म भूर्भुवस्वरोम्। *(ऋग्वेद ३.६२.१०)*

करन्यासः। ॐ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ तर्जनीभ्यां नमः। ॐ मध्यमाभ्यां नम। ॐ अनामिकाभ्यां नमः। ॐ कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः
अङ्गन्यास-हृदयादिन्यास। ॐ हृदयाय नमः। ॐ शिरसे स्वाहा। ॐ शिखायै वषट्। ॐ कवचाय हुम्। ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ अस्त्राय फट् ॐ भूर्भुवः स्वरोमिति दिग्बन्धः।

आसन शुद्धि—ॐ स्योना पृथिवि भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथः।' *(१५ मन्त्र-२२ सूक्त-प्रथम मण्डल)* इस मन्त्र से जल प्रोक्षण करने से भूमि शुद्ध होती है।
शिखाबन्धनम्—

ऊर्ध्वकेशि विरूपाक्षि मांसशोणित भक्षणे। तिष्ठ देवि शिखाबन्धे चामुण्डे ह्यपराजिते॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*
(इस मन्त्र से शिखाबन्धन करना चाहिये।)

महासंकल्प—हेमाद्रि संकल्प

ॐस्वस्ति श्री समस्तजगदुत्पत्तिस्थितिलयकारणस्य रक्षा-शिक्षा-विचक्षणस्य प्रणतपारिजातस्य अशेषपराक्रमस्य श्रीमदनन्तवीर्यस्यादि नारायणस्य अचिन्त्यापरिमितिशक्त्या ध्रियमाणानां महाजलौघमध्ये परिभ्रमताम् अनेक कोटि ब्रह्माण्डानाम् एकतमे अव्यक्त- महादहंकार - पृथिव्यप्तेजो वाय्वाकाशाद्याव रणैरावृते अस्मिन् महति ब्रह्माण्डखण्डे आधारशक्तिश्रीमदादि- वाराह-दंष्ट्राग्र- विराजिते कूर्मानन्त- वासुकि-तक्षक-कुलिक - कर्कोटक -पद्म - महापद्म - शंखाद्यष्टमहानागैध्रियमाणे ऐरावत-पुण्डरीक-वामन-कुमुद-अञ्जन-पुष्पदन्त-सार्वभौम-सुप्रतीकाष्टदिग्गजोपरिप्रतिष्ठितानाम् अतल-वितल-सुतल-

तलातल-रसातल-महातल-पाताल-लोकनामुपरिभागे भुवर्लोक-स्वर्लोक-महर्लोक -जनोलोक - तपोलोक - सत्यलोकाख्य षड्लोकानामधोभागे भूर्लोके चक्रवाल शैल - महावलयनागमध्यवर्तिनो महाकाल महाफणि राजशेषस्य सहस्रफणामणिमण्डल मण्डिते दिग्दन्तिशुण्डादण्डोद्दण्डितेऽमरावत्यशोकवती भोगवती - सिद्धवती- गान्धर्ववती - काशी- काञ्ची - अवन्ती अलकावती यशोवतीतिपुण्यपुरीप्रतिष्ठिते लोकालोकाचलवलयिते लवणेक्षु- सुरा सर्पि - दधिक्षीरोदकार्णवपरिवृते जम्बू-प्लक्ष-कुश-क्रौञ्च - शाक शाल्मलिपुष्कराख्यसप्तद्वीपयुते इन्द्र-कांस्य-ताम्र-गभस्ति-नाग-सौम्य-गान्धर्व-चारणभारतेतिनव-खण्डमण्डिते सुवर्णगिरिकार्णिकोपेत महासरोरुहाकार पञ्चाशत् कोटि योजनविस्तीर्णभूमण्डले अयोध्या मथुरा-माया-काशी-काञ्ची-अवन्तिकापुरी द्वारावतीतिमोक्षदायिकसप्तपुरीप्रतिष्ठिते सुमेरु निषधत्रिकूट-रजतकूटाम्रकूट-चित्रकूट-हिमवद्विन्ध्याचलानां महापर्वत प्रतिष्ठिते हरिवर्ष किंपुरुषयोश्च दक्षिणे नवसहस्रयोजन विस्तीर्णे मलयाचल-सह्याचल विन्ध्याचलानामुत्तरे स्वर्णप्रस्थ-चण्डप्रस्थ-चान्द्र-सूक्तावान्तक-रमणक महारमणक-पाञ्चजन्य-सिंहल लंङ्केति-नवखण्डमण्डिते गंगा-भागीरथी-गोदावरी- क्षिप्रा-यमुना- सरस्वती-नर्मदा-ताप्ती-चन्द्रभागा-कावेरी-पयोष्णी-कृष्णावेणी-भीमरथी-तुंगभद्रा-ताम्रपर्णी- विशालाक्षी- चर्मण्वती-वेत्रवती- कौशिकी-गण्डकी- विश्वामित्रीसरयूकरतोया- ब्रह्मानन्दामहीत्यनेक पुण्यनदी विराजिते भारतवर्षे भरतखण्डे जम्बूद्वीपे कूर्मभूमौ साम्बवती कुरुक्षेत्रादि समभूमौ आर्यावर्तान्तरगते ब्रह्मावर्तैकदेशे गंगायमुनयोर्मध्यभागे योजनव्यापिविस्तीर्णेक्षेत्रे,ज्ञानयुगप्रवर्तकानां महर्षि महेशयोगिवर्याणां परमाराध्यगुरुदेवै : अनन्तश्रीविभूषितैः ज्योतिष्पीठाधीश्वरैः जगद्गुरु श्री मच्छङ्कराचार्य ब्रह्मानन्दसरस्वतीमहाभागैः सम्पादितशतमखकोटि होम महायज्ञपावितायां भूमौ.............................. सकलजगत्स्रष्टुः परार्धद्वय जीविनो ब्रह्मणः द्वितीये परार्धे एकपञ्चाशत्तमे वर्षे प्रथम मासे प्रथम पक्षे प्रथम दिवसे अह्नस्तृतीये यामे तृतीये मुहूर्ते रथन्तरादिद्वात्रिंशत्कल्पानांमध्ये अष्टमे श्वेतवाराहकल्पे स्वायंभुवादि मन्वन्तराणां मध्ये सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे कृत त्रेताद्वापरकलिसंज्ञकानां चतुर्णां युगानां मध्ये वर्तमाने अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमपादे प्रभवादि षष्ठि सम्वत्सराणां मध्ये.........................
..............................संवत्सरे...................................अयने..............................ऋतौ ....मासे ....पक्षे
.... तिथौ .... वासरे .... नक्षत्रे .... योगे .... करणे ....राशि स्थिते श्रीसूर्ये

.... राशि स्थिते श्रीचन्द्रे...................... राशि स्थिते श्रीकुजे.................................... राशि स्थिते श्रीबुधे .... राशि स्थिते श्रीदेवगुरौ .... राशि स्थिते श्रीशुक्रे.............................. राशि स्थिते श्रीशनौ............ राशि स्थिते श्रीराहौ................. राशि स्थिते श्रीकेतौ..............एवं गुण विशेषण विशिष्टायां पुण्यायाम् महापुण्य शुभ तिथौ...

गुरू प्रार्थना —

नमो गुरुभ्यो गुरुपादुकाभ्यो नमः परेभ्यः परपादुकाभ्यः।
आचार्य सिद्धेश्वर पादुकाभ्यो नमोऽस्तु लक्ष्मीपति पादुकाभ्यः॥ *(श्रृङ्गेरी मठीय आचार्य प्रार्थनम्)*

श्री गुरु परमगुरु परमेष्ठी गुरु सद्गुरु पादुकाभ्यो नमो नमः। हम लोग ब्रह्मानन्दं गुरु तं नमानि। गुरु परम्परा को भी बोल सकते हैं। कर सकते हैं। हरौ रुष्टे गुरुस्त्राता गुरौ रुष्टे न कश्चन॥ ईश्वर के रुष्ट होने पर गुरुजी रक्षा करते हैं एवं गुरुजी के कुपित होने पर कोई भी रक्षक नहीं है।

भूतोच्चाटन मन्त्र—

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुविसंस्थिताः। ये भूता विघ्नकर्तारः ते गच्छन्तु शिवाज्ञया॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-आसन विधि प्रकरण)*
ॐ अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम्। सर्वेषामविरोधेन ब्रह्मकर्म समारभे॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-आसन विधि प्रकरण)*
ॐ तीक्ष्णदंष्ट्रमहाकाय कल्पान्ते दहनोपम। भैरवाय नमस्तुभ्यं अनुज्ञां दातुमर्हसि॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

इति भैरवं नमस्कृत्य। (इन मन्त्रों से भूतोच्चाटन कर भैरव जी से यज्ञ रक्षा की प्रार्थना करते हैं।)

गणपति प्रार्थना—गणानान्त्वा इति मन्त्रस्य गृत्समदऋषिः। गणपतिर्देवता। जगती छन्दः। गणपति प्रार्थने विनियोगः।

ॐ गणानांत्वा गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमं।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आनः शृणवन्नूतिभिः सीदसादनम्॥ *(ऋग्वेद २.२३.१)*

(इन मन्त्रों से गणपति प्रार्थना कर पुष्पाक्षत छोड़ना चाहिये।)

त्रिवाक्येण पुण्याह वाचन—

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयामदेवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरंगैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेमदेवहितं यदायुः। *(ऋग्वेद १.८९.८)*

ॐ द्रविणोदा द्रविणसस्तुरस्य द्रविणोदाः सनरस्य प्रयंसत्।
द्रविणोदावीरवतीमिषंनोद्रविणोदारासतेदीर्घमायुः॥ *(ऋग्वेद १.९६.८)*

ॐ सवितापश्चातात्सवितापुरस्तात्सवितोत्तरात्तात्सविता धरात्तात्।
सवितानः सुवतु सर्वतातिं सवितानोरासतां दीर्घमायुः॥ *(ऋग्वेद १०.३६.१४)*

ॐ नवो नवो भवति जायमानोह्नांकेतुरुषसामेत्यग्रम्।
भागं देवेभ्यो विदधात्यायन्प्रचन्द्रमास्तिरते दीर्घमायुः॥ *(ऋग्वेद १०.८५.१९)*

ॐ उच्चादिवि दक्षिणावंतो अस्थुर्येअश्वदाः सहतेसूर्येण।
हिरण्यदा अमृतत्वं भजंतेवासोदाः सोमप्रतिरन्त आयुः॥ *(ऋग्वेद ६.६५.६)*

ॐ आपउंदंतु जीव से दीर्घायुत्वाय वर्चसे।
सस्त्वाहृदा कीरिणामन्यमानो मर्त्यं मर्त्योजोहवीमि॥ *(यजुर्वेद १ काण्ड-२ प्रश्न-१ अनुवाक-१ मन्त्र)*

ॐ जातवेदोयशो अस्मासु धेहि प्रजाभिरग्ने अमृतत्वमश्याम्।

यस्मै॒त्वं सु॒कृते॑ जातवेद उलो॒कम॑ग्ने कृ॒णव॑स्यो॒नम्।
अ॒श्विनं॒ सपु॒त्रिणं॑ वी॒रव॑तं॒ गोम॑तं॒र॒यिं॑नंशते स्व॒स्ति।
संत्वां सि॒ञ्चामि॒ यजु॑षा प्र॒जामायु॒र्धनं॑ च॥ (यजुर्वेद १ काण्ड-६ प्रश्न-१ अनुवाक-१ मन्त्र)

ॐ उ॒द्गा॒तेव॑शकु॒ने॒साम॑गायसि ब्रह्मपु॒त्र इ॑व॒ सव॑नेषु शंससि।
वृषे॑व वा॒जीशिशु॑मतीर॒पीत्यां स॒र्वतो॑नः शकुनेभ॒द्रमाव॑द वि॒श्वतो॑नः शकुने॒पुण्य मावंद॥ (ऋग्वेद २.४२.२)
याज्ययायजतिप्रत्तिर्वैयाज्यापुण्यैवलक्ष्मीः पुण्यामेवतल्लक्ष्मीं संभावयति पुण्यां लक्ष्मीं संस्कुरुते॥
यत्पुण्यं॒ नक्ष॑त्रं। तद्बट्कु॑र्वी तोपव्यु॒षं। य॒दावैसूर्यं॑ उ॒देति॑। अ॒थ॒ नक्ष॑त्र॒नैति॑। याव॑ति॒ तत्र॒ सूर्यो॒ गच्छे॑त्।
यत्र॑ जघ॒न्यं॑ पश्ये॑त्। ताव॑तिकुर्वीतयत्का॒रीस्यात्। पुण्या॒ह ए॒व कु॑रुते। तानि॒ वा ए॒तानि॑ यमनक्ष॒त्राणि॑।
यान्ये॒व दे॑वनक्ष॒त्राणि॑। तेषु॑ कुर्वीत यत्का॒रीस्यात्। पुण्या॒ह ए॒व कु॑रुते। (यजुर्वेद - ब्राह्मण)

सर्वेषां महाजनान्नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणायाद्यकरिष्यमाणविष्णुसर्वाद्भुतशान्त्याख्याय कर्मणः पुण्याहं भवंतो ब्रुवंत्विति त्रिर्वदेत्।
(यजमान अपने सकुटुम्ब प्रणाम करते हुए आज संपन्न होने वाले कर्म के लिए पुण्याह की याचना करते हुए तीन बार कहते हैं। जिसका प्रत्युत्तर ब्राह्मण तीन बार देते हैं।) १. ॐ पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु। ॐ अस्तु पुण्याहम्। २. ॐ पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु। ॐ अस्तु पुण्याहम्। ३. ॐ पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु। ॐ अस्तु पुण्याहम्।

ॐ स्व॒स्तये॑ वा॒युमुप॑ब्रवामहै॒ सोमं॑ स्व॒स्ति भुव॑नस्य॒ यस्पति॑ः।
बृह॒स्पति॒ं सर्व॑गणं॒ स्व॒स्तये॑ स्व॒स्तय॑ आदि॒त्या सों भवन्तु नः॥ (ऋग्वेद ५.५१.१२)
आदित्य उदयनीयः पथ्यैवेतः स्वस्त्याप्रयंतिपश्यांस्वस्तिमभ्युद्यंतिस्वस्त्येवेतः प्रयंतिस्वस्त्युद्यंति स्वस्त्युद्यंति॥ (स्मृति संग्रह)

ॐ स्वस्तिन इन्द्रोवृद्धश्रवाःस्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्तिनस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिःस्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु। (ऋग्वेद १.८८.६)
ॐ अष्टौ देवा वसवः सोम्यासः॥ चतस्त्रोदेवीरजराश्रविष्ठाः।
ते यज्ञं पांतु रजसः परस्तात्। संवत्सरीणममृतँ स्वस्ति। (यजुर्वेद - ब्राह्मण)

सर्वेषां महाजनान्नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणायाद्यकरिष्यमाणविष्णुसर्वाद्भुतशान्त्याख्याय कर्मणः स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु। (ब्राह्मण कहते हैं)—ॐआयुष्मते स्वत्ति। इन उपरोक्त वाक्यों को तीन बार दोहराना चाहिये। इसके बाद पुनः पहले जैसे उत्तर कलश से जल नीचे रखे बड़े पात्र में थोड़ा-थोड़ा कर गिराते हुए मंत्रपाठ करें।

ॐ ऋध्यामस्तोमं सनुयामवाजमानो मंत्रं सरथे होपंयातं।
यशोनपक्कं मधुगोष्वंतराभूतांशो अश्विनोः काममप्राः॥ (ऋग्वेद १०.१०६.११)
सर्वामृद्धिमृध्नुयामितितं वैतेजसैवपुरस्तात् पर्यभवच्छन्दोभिर्मध्यतोक्षरै
रुपरिष्टाद्गायत्र्या सर्वतो द्वादशाहंपरिभूयसर्वामृद्धिमार्ध्नोत्सर्वामृद्धिमृध्नोति य एवं वेद॥
ऋध्यास्मंहव्यैर्नमसोपसद्यं॥ मित्रं देवं मित्रधेयँनो अस्तु॥ अनूराधान् हविषांवर्धयंतः।
शतंजीवेमशरदः सवीराः। त्रीणि-त्रीणि वै देवानांमृद्धानि।
त्रीणिच्छन्दांः सित्रीणि सवनानि त्रयं इमे लोकाः। ऋध्यामेवतद्वीर्यं एषु लोकेषु प्रतितिष्ठति॥ (यजुर्वेद - ब्राह्मण)

सर्वेषां महाजनान्नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणायाद्य करिष्यमाणविष्णुसर्वाद्भुतशान्त्याख्याय कर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु (ब्राह्मण कहते हैं)—ॐऋध्यतां। इन उपरोक्त वाक्यों को तीन बार दोहराना चाहिये। इसके बाद मन्त्र पाठ करते हुए उत्तरकलश से नीचे रखे पात्र में जल छोड़ना

चाहिये।

ॐ श्रिये जातः श्रियऽआनिरियाय श्रियंवयोंजरितृभ्योंदधाति।
श्रियं वसाना अमृतत्वमायन् भवंतिसत्यासंमिथामितद्रौ ॥ (ऋग्वेद ९.९४.४)
श्रिय एवैनं तच्छ्रियामादधाति संततमृचा वषट् कृत्यं संतत्यैसंधीयते प्रजया पशुभिर्यएवं वेद।
यस्मिन्ब्रह्माभ्यजंय त्सर्वंमेतत् ॥ अमुञ्चंलोकमिदमूंचसर्वं ॥ तन्नो नक्षंत्रमभिजिद्विजित्यं ॥
श्रियं दधात्वहंणीयमानं ॥ अहें बुध्निय मंत्रंमे गोपाय। यमृषंयस्त्रयीविदाविदुः ॥
ऋचः सामांनि यजूंषि। सा हि श्रीरमृतासतां। (यजुर्वेद - ब्राह्मण)

सर्वेषां महाजनान्नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणायाद्य करिष्यमाणविष्णुसर्वाद्भुतशान्त्याख्याय कर्मणः श्रीरस्त्विति भवंतो ब्रुवन्तु। (ब्राह्मण कहते हैं)—ॐ अस्तु श्रीः। इन वाक्यों को तीन बार कहना चाहियें। वर्षशतं परि पूर्णमस्तु। गोत्राभिवृद्धिरस्तु। कर्माङ्ग देवता प्रीयताम्। (ब्राह्मण आशीर्वाद देते हैं—सौ साल पूर्ण हो। आप की वंश वृद्धि हो। कर्माङ्ग देवता आप पर प्रसन्न हो।)

ॐ शुक्रेभिरंगैरजं आततन्वान् क्रतुं पुनानः कविभिः पवित्रैः।
शोचिर्वसानः पर्यायुरपां श्रियोंमिमीते बृहतीरनूंनाः ॥ (ऋग्वेद ३.१.५)
तदप्येषः श्लोकोभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे ॥ आविक्षितस्य कामप्रेः विश्वेदेवाः सभासद इति ॥
पुण्याह वाचन फल समृद्धिरस्तु—पुण्याहे कर्माङ्ग देवता प्रीयन्ताम्।

मातृका पूजनम्—पान सुपारी दक्षिणा के ऊपर कूर्च (कुश से बना) रखकर उसमें मातृका आवाहन करके उनमें मातृका पूजन करना चाहिये।

नान्दी मण्डल के आगे मातृका पूजन करना चाहिये।

ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा। वाराही तथेन्द्राणी चामुण्डाः सप्तमातरः॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

सात मातृकायें।

गौरीपद्मा शचीमेधासावित्रीविजयाजया। देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

धृतिः पुष्टिस्तथातुष्टिरात्मनः कुलदेवताः (गौर्यादि षोडश मातृकायें)। ब्राह्म्यादि सप्त मातृः गौर्यादि षोडश मातृः आवाहयामि। विनायकं आवाहयामि। दुर्गा आवाहयामि। क्षेत्रपालं आवाहयामि। गणपतिं आवाहयामि। मातृस्वसारं आवाहयामि। पितृस्वसारं आवाहयामि। एताभ्यो देवताभ्यो नमः। ध्यायामि। ध्यानं समर्पयामि। इनका षोडशोपचार पूजन करना याहिये। **उदाहरण**—आवाहित देवताभ्यो नमः। आसनं समर्पयामि आदि। षोडशोपचार पूजन संक्षेप में करें। (गणेश पूजन में है।)

अन्त में पुष्पांजलि मन्त्र—ॐ गौरीर्मिमाय सलिलानितक्षत्येकंपदीद्विपदी सा चतुंष्पदी।

अष्टापंदी नवंपदीबभूवुषीं सहस्राक्षरापरमेव्योंमन्॥ *(ऋग्वेद १.१६४.४१)*

ॐभूभुर्वः स्वः आवाहित देवताभ्यो नमः। मन्त्रपुष्पं समर्पयामि।

तदंस्तु मित्रावरुणा तदंग्ने शं योरस्मभ्यंमिदमंस्तुशस्तं। अशीमहिं गाधमुत प्रंतिष्ठां नंमोदिवे बृंहते सादंनाय॥ *(ऋग्वेद ५.४७.७)*

गृहावै प्रतिष्ठासूक्तंतत्प्रतिष्ठि ततमयावाचाशंस्तव्यं तस्माद्यद्यपिदूर इव पशूँल्लभते गृहानेवैनानाजिगमिषति गृहाहिपशूनां प्रतिष्ठाप्रतिष्ठा। इन मन्त्रों को पढकर पुष्पाक्षत चढ़ायें।

मातृका पूजन समाप्तम्

आवाहित देवनान्दी पूजन—देवनान्दी में मातृका पूजन आवश्यक नहीं है। यज्ञ,(अतिरुद्र, सहस्त्रचण्डी) रथोत्सव आदि सार्वजनिक आचरणों में देवनान्दी ही करना चाहिये। **क्रतुदक्षावुत्सवे तु।** इस वाक्य से क्रतु एवं दक्ष नामक विश्वेदेव देवता हैं। देवनान्दी में पितृदेवता चार है। अमूर्त्य।

१. अग्निष्वात्ता, २. बर्हिषद:, ३. आज्यपा:, ४. सोमपा:

संकल्प—देशकालौ संकीर्त्य करिष्यमाण कर्माङ्ग भूतं नान्दीसमाराधनं करिष्ये। पहले दो मण्डल बनायें।

दत्वातण्डुलपूर्णापात्रयुगले संकल्प्य भुक्तिं तयोः।
ताम्बूलादि सुदक्षिणान्तिकमनुज्ञातः समुद्वाहयेत्॥ *(लक्षण संहिता)*

दो पात्रों में चावल, काजू किशमिश, फल, दाल, आदि दो मण्डलों पर रखें।

ॐ आनो भद्राः क्रतवो यंतुविश्वतोदब्धसो अपरीता स उद्भिदः।
देवानो यथासदमिद्वृधे असन्न प्रांयुवोरक्षितारो दिवे दिंवे। *(ऋग्वेद १.८९.१)*

ॐ क्रतुदक्षसंज्ञका विश्वेदेवाः—नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूभुर्वस्वः इयं च वृद्धिः। इससे दुर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें। अग्निष्वात्ताः पितृगणाः नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूभुर्वः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोड़ें।

बर्हिषदः पितृगणाः—नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें। **आज्यपाः पितृगणाः**—नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दुर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें। **सोमपाः पितृगणाः** नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें।

ॐ क्रतुदक्ष संज्ञका विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणयोः इदमासनगंधाद्युपचार कल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध अक्षत पुष्प दूर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें।**ॐ अग्निष्वात्ताः पितृगणाः** नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणयोः इदं आसनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध अक्षत पुष्प दूर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें। **बर्हिषदः पितृगणाः** नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणयोः इदमासनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध अक्षत पुष्प दुर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें। **आज्यपाः पितृगणाः** नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणयोः

इदमासनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध, अक्षत, पुष्प, दुर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें।
सोमपाः पितृगणाः नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणायोः इदमासनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भूवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध, अक्षत, पुष्प, दुर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें। ॐभूर्भुवः स्वः सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि कहकर मण्डल पर रखे दोनों पात्रों को परिषेचन कर दक्षिणादिशा के पात्र को "इदं विश्वेभ्यो देवेभ्यः" उत्तरदिशा के पात्र को "इदं नान्दीमुख पितृभ्यः" कहकर दान संकल्प कर ब्राह्मणों को दे देवें।
क्रतुदक्षसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामं सोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणापर जल छोड़कर नीचे रखना चाहिये। **अग्निष्वात्ताः पितृगणाः** नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामंसोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणापर जल छोडकर नीचे रखना चाहिये। **बर्हिषदः पितृगणाः** नान्दीमुखाः गुग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं दमनामं सोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणापर जल छोड़कर नीचे रखना चाहिये। **आज्यपाः पितृगणाः** नान्दीमुखा युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामंसोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणापर जल छोडकर नीचे रखना चाहिये।
सोमपाः पितृगणाः नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामं सोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणा पर जल छोड़कर नीचे रखना चाहिये। आगे लिखे मन्त्रों से खड़े होकर उपस्थान करें।

ॐ उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे। अभिदेवाँऽइयक्षते। (ऋग्वेद ९.११.१)
ॐ अभिते मधुना पयोथर्वाणो अशिश्रयुः। देवं देवाय देवयु। (ऋग्वेद ९.११.२)
ॐ स नः पवस्व शंगवे शंजनायशमर्वते। शंराजन्नोषधीभ्यः। (ऋग्वेद ९.११.३)
ॐ बभ्रवेनु स्वतवसेरुणाय दिविस्पृशे। सोमाय गाथमर्चत॥ (ऋग्वेद ९.११.४)
ॐ हस्तच्युतेभिरद्रिभिः सुतं सोमं पुनीतन। मधावाधावता मधु॥ (ऋग्वेद ९.११.५)
ॐ अक्षन्नमीं मदन्तह्यवप्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती यो जान्विंन्द्र ते हरीं॥ (ऋग्वेद १.८२.२)

ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम्॥

(ऋग्वेद १०.१२१.१०)

कृतस्य देवनान्दी समाराधनस्य प्रतिठाफलसिद्ध्यर्थं द्राक्षामलक निष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे। कहकर हाथ में दक्षिणा लेकर उस पर जल छोडकर नीचे रख दें।

प्रार्थना—अग्निष्वात्वा बर्हिषदः आज्यपाः सोमपास्तथा। एते भवन्तु मे प्रीताः प्रयच्छन्तु च मङ्गलम्॥ कहकर जल छोड़ें। **अनेन नान्दीसमाराधनेन नान्दीमुखदेवताः प्रीयंताम्। आचम्य**—मंगल तिलक रकें। **विसर्जन**—यज्ञ के अन्तिम दिन विसर्जन करें।

ॐ इळामग्ने पुरुदंसं सनिं गोः शश्वत्तमं हवमानाय साध। स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्ने सा ते सुमतिर्भूत्वस्मे॥ (ऋग्वेद ३.१५.७)

ॐ इळामुपह्वयते पशवो वा इळापशूनेवतदुपह्वयतेपशून्यजमानेदधाति दधाति॥ (ऋग्वेद ब्राह्मण)

यथाचारं हिरण्येन भाण्डवादनं। मन्त्र कहते हुए सिक्के से थाली के निचले भाग में शब्द करना चाहिये। (घण्टा वादन के बदले)

१. सर्वाद्भुत शान्ति याग के लिए-१—आचाय, एक कुण्ड में १-ब्रह्मा, ईशान्य में १-कलश पूजन, होमाङ्ग पूजन दक्षिण में १-इतर पूजन, पश्चिम में १-तर्पण के लिए, परिचारक (कर्मचारी) १-एक ब्राह्मण-कुल ५ पण्डित रहने पर

१५ पण्डित से संपन्न कर्म में—२-१५ पण्डित कर्म में (एक कुण्ड में), २-१५ पण्डित से संपन्न याग में—१ आचार्य, १ ब्रह्मा, १-कलश पूजन, १-इतर पूजन, १-तर्पण पूजन, १-परिचारक ब्राह्मण, ६-ऋत्विज होम के लिए

३-५५ पण्डित से संपन्न याग में—१- आचार्य (५ कुण्ड में), १-ब्रह्मा, १-कलश पूजन, १-इतर पूजन, १-तर्पण के लिए, १-परिचारक ब्राह्मण, ४५-ऋत्विज होम के लिए, ४-अग्निमुख जानकार उप आचार्य (६×५)

४-१०० पण्डित से संपन्न या में—१-आचार्य (६ कुण्ड में), १-ब्रह्मा, १-कलश पूजन, १-इतर पूजन, १-तर्पण के लिए, ५-परिचारक ब्राह्मण, ८१-ऋत्विज होम के लिए, ६-अग्निमुख जानकार उपआचार्य (६×६), इसी अनुपात में अधिक संख्या में कर सकते हैं।

ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे। उप प्र यन्तु मरुतः सुदानव इन्द्र प्राशूर्भवा सचा॥ (ऋग्वेद १.४०.१)

ॐ अभ्यारमिदद्रयो निषिक्तं पुष्करे मधु। अवतस्य विसर्जने॥ *(ऋग्वेद ८.७२.११)*

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मत्कृताम्। इष्टकामार्थसिद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

(इन मन्त्रों से आवाहित देवताओं को उठाना चाहिये।)

देवनान्दी समास

ब्राह्मण वन्दन— **ॐ नमो महद्भ्यो नमो अर्भकेभ्यो नमो युवभ्यो नम आशिनेभ्यः।**

यजाम देवान् यदि शक्नवाममाज्यायसः शंसमा वृक्षि देवाः। सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः॥ *(ऋग्वेद २७.१३)*

इस मन्त्र से ब्राह्मण पूजा करें। ''करिष्यमाण कर्मणः आरम्भमुहूर्तः सुमुहुर्तो अस्तु इति अनुगृण्हन्तु''। यजमान पूछते है॥ ''सुमुहूर्तमस्तु''।

सर्वतोभद्र मण्डल में देवता पूजनम्—मध्ये ब्रह्माणं, (मध्य में ब्रह्मा का आवाहन करें।) ब्रह्मजज्ञानं वामदेवो ब्रह्मात्रिष्टुप् ब्राह्मावाहने विनियोगः।

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेन आवः।

सबुध्निया उपमाअस्यविष्ठाः सतश्चयोनिमसंतश्चविवः॥ *(यजुर्वेद ४ काण्ड-२ प्रश्न-८ अनुवाक-४ मन्त्र)*

ॐभूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः। ब्रह्माणामावाहयामि। भो ब्रह्मन् इहागच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदो भव। **उत्तरे सोमं**—(उत्तर में सोम का आवाहन करें।) आप्यायस्व गोतमः सोमोगायत्री सोमावाहने विनियोगः।

ॐ आप्यायस्व समेतुते विश्वतःसोमवृष्ण्यं। भवावाजस्यसङ्गथे॥ *(ऋग्वेद १.९१.१६)*

ॐभूर्भुवः स्वः सोमय नमः। सोमं आवाहयामि। भो सोम इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदो भव। **ईशान्यं ईशानं**—(ईशान्य दिशा में ईशन का आवाहन करें।) अमित्वा शुनः शेप ईशानो गायत्री ईशानावाहने विनियोगः।

ॐ अभित्वां देव सवितरीशांनं वार्याणां। सदांवन्भागमींमहे ॥ *(ऋग्वेद १.२४.३)*

ॐभूर्भुवः स्वः ईशानाय नमः। ईशानमावाहयामि। भो ईशान इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूजा गृहाण वरदो भव। **पूर्वे इन्द्रं**—(पूर्व में इन्द्र का आवाहन करें।) इन्द्र वो मधुच्छन्दा इन्द्रो गायत्री इन्द्रावाहने विनियोगः।

ॐ इन्द्रं वो विश्वतस्परि हवांमहे जनेभ्यः। अस्माकंमस्तु केवंलः ॥ *(ऋग्वेद १.७.१०)*

ॐभूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयामि। भो इन्द्र इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहाण। वरदो भव॥ **आग्नेयामग्निं**—(आग्ने दिशा में अग्नि का आवाहन करें।) अग्निं दूतं मेधातिथिरग्निर्गायत्री अग्न्यावाहने विनियोगः।

ॐ अग्निं दूतं वृणीमहे होतांरं विश्व वेंदसम्। अस्य य ज्ञस्यं सुक्रतुं ॥ *(ऋग्वेद १.१२.१)*

ॐभूर्भुवः स्वः। अग्नेय नमः। अग्निमावाहयामि। भो अग्ने इहा गच्छ इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरणो भव। **दक्षिणे यमं**—(दक्षिण दिशा में यम का आवाहन करें।) यमाय सोमं यमोयमोनुष्टुप् यमावाहने विनियोगः।

ॐ यमाय सोमँ सुनुत यमायं जुहुता हविः। यमंहं यज्ञो गंच्छत्यग्नि दूंतो अरंकृतः ॥ *(ऋग्वेद १०.१४.१३)*

ॐभूर्भुवः स्वः यमाय नमः। यममावाहयामि। भो यम इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदो भव (नैऋत्य दिशा में निर्ऋति को।) मोषुणः कणवो निर्ऋतिर्गायत्री निर्ऋत्या वाहने विनियोगः॥

ॐ मोषुणः परांपरा निर्ऋतिर्दुर्हणांवधीत्। पदीष्टतृष्णांयासह ॥ *(ऋग्वेद १.३८.६)*

ॐभूर्भुवः स्वः निर्ऋतये नमः। निर्ऋतिमावाहयामि। भो निऋति इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूहां गृहाण। वरदो भव। **पश्चिमे वरुणं**—(पश्चिम दिशा में वरुण का आवाहन करें।) तत्वायामि शुनःशेपो वरुणस्त्रिष्टुप् वरुणावाहने विनियोगः।

ॐ तत्वांयामि ब्रह्मंणा वन्दंमानस्तदा शांस्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेंळमानो वरुणेह बोध्युरुंशं समान आयुः प्रमोंषीः ॥ *(ऋग्वेद १.२४.११)*

ॐभूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः। वरुणमावाहयामि। भो वरुण इहागच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदो भव। **वायव्यां वायुं**—(वायव्य दिशा में वायु का आवाहन करें।) वायोशतं वामदेवो वायुरनुष्टुप् वाय्वावाहने विनियोगः।

ॐ वायोशतं हरीणां युवस्व पोष्याणां। उतवांते सहस्त्रिणो रथआयांतुपाजंसा। *(ऋग्वेद ४.४८.५)*

ॐभूर्भुवः स्वः वायवे नमः। वायुमावाहयामि। भो वायो इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूहां गृहाण। वरदो भव। **वायुसोममध्ये अष्टवसून्**—वायु एवं सोम के बीच में अष्ठ वसुओं को (वायव्य एवं उत्तर के बीच में) ज्मया अत्र वसिष्ठो वसवस्त्रिष्टुप् व स्वावाहने विनियोगः।

ॐ ज्मया अत्र वसंवो रन्तदेवाउरावन्तरिक्षे मर्जयन्त शुभ्राः।
आर्वाक्पथ उंरुज्रयः कृणुध्वं श्रोतांदूतस्यंजग्मुषोंनो अस्य॥ *(ऋग्वेद ७.३९.३)*

ॐभूर्भुवः स्वः अष्टवसुभ्यो नमः। अष्टवसून् आवाहयामि। भो अष्टवसवः इहा गच्छ। इह तिष्ठतः। पूजां गृहाण। वरदो भवत। **सोमेशानयोर्मध्ये एकादशमरुद्रान्**—(सोमन एवं ईशान के बीच में एकादश रुद्रों का आवाहन करें।) (उत्तर एवं ईशान के बीच में) आरुद्रा सः श्यावाश्व एकादश रुद्रो जगती। एकादशरुद्रावाहने विनियोगः।

ॐ आरुंद्रासइन्द्रंवन्तः सजोषंसो हिरंण्यरथाः सुवितायंगंतन।
इयं वों अस्मत्प्रतिंहर्यतेमतितृष्णाजेन दिवउत्सांउदुन्यवें। *(ऋग्वेद ५.५७.१)*

ॐभूर्भुवः स्वः एकादशरुद्रेभ्यो नमः। एकादश रुद्रानावाहयामि। भो एकादशरुद्राः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृषीत। वरदा भवत। **ईशानेन्द्रयोर्मध्ये द्वादशादित्यान्**—(ईशान्य एवं पूर्व के बीच में द्वादशादित्यों का आवाहन करें।) त्यांनुमत्स्योमान्योवा द्वादशादित्यागायत्री द्वादशादित्या-वाहने विनियोगः।

ॐ त्यांनुक्षत्रियाँ अवं आदित्यान्यांचिषामहे। सुमृळीकाँअभिष्टंये॥ *(यजुर्वेद-२ काण्ड-१ प्रश्न-११ अनुवाक-१८ मन्त्र)*

ॐभूर्भुवः स्वः द्वादशादित्येभ्यो नमः। द्वादशादित्यानावाहयामि। भो द्वादशादित्याः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृह्णीत। वरदो भवत। **इन्द्राग्निमध्ये अश्विनौ**—(पूर्वा एवं आग्नेय के बीच में अश्विनी देवताओं को आवाहन करें।) अश्विनावर्तिर्गोतमोश्विनावुष्णिक् अश्व्यावाहने विनियोगः।

ॐ अश्विनावर्तिरस्मदागोमद्दस्राहिरंगयवत्। अर्वाग्रथंसमनसानियच्छतं॥ (ऋग्वेद १.९२.१६)

ॐभूर्भुवः स्वः अश्विभ्यां नमः। अश्विनौ आवाहयामि। भो अश्विनौ इहा गच्छतं। इह तिष्ठतं पूजां गृषीतं। वरदौ भवतं। **अग्नियम मध्ये विश्वेदेवान् सपैतृकान्**—(आग्नेय एवं दक्षिण के बीच में पितृसाहित विश्वेदेवों का आवाहन करें।) ओमासोमधुच्छंदाविश्वेदेवा गायत्री। विश्वेदेवावाहने विनियोगः।

ॐ ओमांसश्चर्षणीधृतोविश्वेदेवा स आगंत। दाश्वांसोदाशुषः सुतं॥ (ऋग्वेद १.३.७)

ॐभूर्भुवः स्वः विश्वेभ्योदेवेभ्यो नमः विश्वान् देवान् आवाहयामि। भो विश्वेदेवाः इहा गच्छत। इह तिष्ठंत पूजां गृह्णीत। वरदा भवत। **यम निऋतिमध्ये सप्तयक्षान्**—(दक्षिण एवं नैऋत्य के बीच में सप्त यक्षों का आवाहन करें।) अभित्यं वामदेवः सप्तयक्षा अष्टी। सप्तयक्षावहने विनियोगः।

ॐ अभित्यं देवं..संवितारमोरायोः कविक्रंतुर्चामि सत्यंसवस..रत्नधाममभिप्रियंमतिमूर्ध्वा यस्यामतिर्भा अदिंद्युतत्सवींमनिहिरंगयपाणिरमिमीत सुक्रतुः कृपासुवः॥ (यजुर्वेद-१ कारड-२ प्रश्न-६ अनुवाक)

ॐभूर्भुवः स्वः सप्तयक्षेभ्यो नमः सप्तयक्षान् आवाहयामि। भो सप्तयक्षाः इहा गच्छत। इह तिष्ठत पूजां गृह्णीत। वरदा भवत। **निर्ऋति वरुण मध्ये भूतनागान्**—(नैर्ऋत्य एवं पश्चिम के बीच में भुतगण एवं नागों का आवाहन करें।) आयङ्गो सार्पराज्ञी सर्पा गायत्री। सर्पावाहने विनियोगः।

आयं गौः पृश्निरक्रमीद संदन्मातरँ पुरः। पितरँ च प्रयन्त्स्वः॥ (ऋग्वेद १०.१८९.१)

ॐभूर्भुवः स्वः सर्पेभ्यो नमः। सर्पान् आवाहयामि। भो सर्पाः इहागच्छत। इह तिष्ठत पूजां गृह्णीत। वरदा भवत। **वरुणवायुमध्ये गंधर्वाप्सरसः**—(पश्चिम एवं वायव्य के बीच में गन्धर्व एवं अप्सराओं का आवाहन करें।) अप्सरसामृष्यशृङ्गोगंधर्वाप्सरसोनुष्टुप्। गन्धर्व अप्सरावाहने विनियोगः।

ॐ अप्सरसां गन्धर्वाणां मृगाणां चरणेचरन्। केशीकेतस्य विद्वान्त्सखांस्वादुर्मदिन्तमः॥ (ऋग्वेद १.१६३.६)

ॐभूर्भुवः स्वः गन्धर्वाप्सरोभ्यो नमः। गन्धर्वाप्सरस आवाहयामि। भो गन्धवाप्सरसः इहा गच्छत। इह तिष्ठत पूजां गृह्णीत। वरदा भवत।

ब्रह्म सोममध्ये स्कन्दं नन्दीश्वरं शूलं महाकालं च

(मध्ये में स्थित ब्रह्मा एवं सोम (उत्तर) के मध्य में स्कन्द नन्दीश्वर शूल एवं महाकाल का आवाहन करें।) यंदक्रंदो दीर्घतमास्कंदस्त्रिष्टुप्। स्कंदावाहने विनियोगः।

ॐ यदक्रंदः प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्रादुतवा पुरीषात्।
श्येनस्यपक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महिजातंते अर्वन्॥ *(ऋग्वेद १.१६३.१)*

ॐभूर्भुवः स्वः स्कन्दाय नमः। स्कन्दमावाहयामि। भो स्कन्द इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहाण। वरदो भव। ऋषभमृषभो नन्दीश्वरोनुष्टुप्। **नन्दीश्वरावाहने विनियोगः।**

ॐ ऋषभं मांसमानानां सपत्नानां विषासहिं। हंतारं शत्रूणां कृधि विराजं गोपतिं गवां॥ *(ऋग्वेद १०.१६६.१)*

ॐभूर्भुवः स्वः नन्दीश्वराय नमः नन्दीश्वरं आवाहयामि। भो नंदीश्वर इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहाण। वरदो भव। कद्रुद्राय घौरः कण्वः शूलो गायत्री शूलावाहने विनियोगः।

ॐ कद्रुद्राय प्रचेतसेमीहळुष्टमायतव्यंसे। वोचेमशतंमंहृदे॥ *(ऋग्वेद १.४३.१)*

ॐभूर्भुवः स्वः शूलायनमः शूलमावाहयामि। भो शूल इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहाण। वरदो भव। कुमारं माता कुमारी महाकालस्त्रिष्टुप्। **महाकालावाहने विनियोगः।**

ॐ कुमारं मातायुवतिः समुब्धङ्गुहाबिभर्ति न ददातिपित्रे।
अनीकमस्य नमिनज्जनासः पुरः पश्यंति निहितमरतौ॥ *(ऋग्वेद ५.२.१)*

ॐभूर्भुवः स्वः महाकालाय नमः। महाकालमावाहयामि। भो महाकाल इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूहां गृहाण। वरदो भव। **ब्रह्मेशानमध्ये दक्षं**—(बीच में विद्यमान ब्रह्मा एवं ईशान्य दिशा के बीच में दक्ष का आवाहन करें।) अदतिर्बृहस्पतिर्दक्षोनुष्टुप्। दक्षावाहने विनियोगः।

ॐ अदितिर्ह्यजनिष्टदक्षयादुहितातव। तां देवा अन्वजायन्त भद्रा अमृतबंधवः॥ *(ऋग्वेद १०.७२.५)*

ॐभूर्भुवः स्वः दक्षाय नमः। दक्षमावाहयामि। भो दक्ष इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहाण। वरदो भव। ब्रह्मेन्द्रमध्ये दुर्गां विष्णुं च (ब्रह्मा एवं इन्द्र के बीच में अर्थात् बीच में स्थित ब्रह्मा एवं पूर्व के बीच में दुर्गा एवं विष्णु का आवाहन करें।) तामग्निवर्णां सौभरिदुर्गात्रिष्टुप्। दुर्गावाहने विनियोगः।

ॐ तामग्निवर्णां तपसाज्वलंतीं वैरोचनीं कर्मफलेषुजुष्टां।

दुर्गां देवीं शरणमहंप्रपद्ये सुतरंसितरसे नमः ॥ *(यजुर्वेद-दुर्गासूक्त)*

ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गायै नमः। दुर्गां आवाहयामि। भो दुर्गे इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदा भव। इदं विष्णुर्मेधातिथिर्विष्णुगायत्री। विष्णवावाहने विनियोगः।

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदंधेपदं। समूह्ळमस्य पांसुरे ॥ *(ऋग्वेद १.२२.१७)*

ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवेनमः। विष्णुं आवाहयामि। भो विष्णो इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूहां गृहाण। वरदो भव। ग्रह्माग्नि मध्ये स्वधां (बीच में स्थित ब्रह्मा एवं आग्नेय दिशा के बीच में स्वधा को) उदीरतां शंखः स्वधा त्रिष्टुप्। स्वधावाहने विनियोगः।

ॐ उदीरता मवरउत्परासउन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः। असुंय ईयुरवृकाऽऋतज्ञास्तेनोवंतु पितरो हवेषु ॥

(ऋग्वेद १०.१५.१)

ॐ भूर्भुवः वः स्वधायै नमः। स्वधामावाहयामि। भो स्वधे इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहाण। वरदा भव। **ब्रह्म यममध्ये मृत्युरोगान्**—(बीच में स्थित ब्रह्मा एवं दक्षिण दिशा के बीच में मृत्यु एवं रोगों का आवाहन करें।) परं मृत्यो संकुसुकोमृत्युरोगास्त्रिष्टुप्। मृत्युरोगावाहने विनियोगः।

ॐ परं मृत्यो अनुपरेहिपंथांयस्तेस्व इतरोदेवयानांत्। चक्षुष्मते शृणवतेतें ब्रवीमिमानः प्रजारीरिषोमोत वीरान् ॥

(ऋग्वेद १०.१८.१)

ॐ भूर्भुवः स्वः मृत्युरोगेभ्यो नमः। मृत्यरोगान् आवाहयामि। भो मृत्युरोगाः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृषीत। वरदा भवत। ब्रह्म निर्ऋतिमध्ये गणपतिं (बीच में स्थित ब्रह्मा एवं नैऋत्य दिशा के बीच में गणपति का आवाहन करें।) गणानान्त्वा शौनकोगृत्समदो गणपतिर्जगती। गणपत्या वाहने विनियोगः।

ॐ गणानांत्वागणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमं।
ज्येष्ठराजंब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आनः शृणवन्नूतिभिः सीदसादनं ॥ *(ऋग्वेद २.२३.१)*

ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतये नमः। गणपतिमावाहयामि। भो गणपति इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदो भव। **ब्रह्मवरुणमध्ये अपः**—(बीच में स्थित ब्रह्मा एवं पश्चिम दिशा के बीच में जल का आवाहन करें।) शंनोदेवीः सिंधुद्वीप आपो गायत्री। अप् आवाहने विनियोगः।

ॐ शंनोदेवीरभिष्टय आपो भवंतु पीतये। शंयोरभिस्रवंतु नः ॥ *(ऋग्वेद १०.९.४)*

ॐभूर्भुवः स्वः अद्भयो नमः। अपः आवाहयामि। भो आपः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृह्णीत। वरदा भवत। **ब्रह्मवायुमध्ये मरुतः**—(बीच में स्थित ब्रह्मा एवं वायव्य दिशा के बीच में मरुत् का आवाहन करें।) मरुतोयस्यगोतमो मरुतो गायत्री। मरुदावाहने विनियोगः

ॐ मरुतोयस्य हि क्षयेपाथा दिवोविमहसः। स सुगोपातमोजनः *(ऋग्वेद १.८६.१)*

ॐभूर्भुवः स्वः मरुद्भयो नमः। मरुतः आवाहयामि। भो मरुतः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृहणीत। वरदा भवत। ब्रह्मणः पादमूले कर्णिकाधः पृथिवीं (बीच में स्थित ब्रह्मा जी के नीचे पादमूल में पृथिवी का आवाहन करें।) स्योना पृथिवी मेधातिथिर्भूमिर्गायत्री। भूम्यावाहने विनियोगः।

ॐ स्योना पृथिवि भवानृक्षरानिवेशंनी। यच्छानः शर्म सप्रथः ॥ *(ऋग्वेद १.२२.१५)*

ॐभूर्भुवः स्वः भूम्यै नमः। भूमिं आवाहयामि। भो भूमे इहा गच्छा। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदा भव। **तत्रैव गङ्गादिसर्वनद्यः**—(उसी स्थान पर अर्थात पृथिवी पर ही गङ्गादि सभी नदियों का आवाहन करें।) इमं मे गङ्गे सिंधुक्षित्प्रैयमेधानद्यो जगती। गङ्गादिनद्यावाहने विनियोगः।

ॐ इमं मे गङ्गेयमुनेसरस्वतिशुतुद्रिस्तोमं सचतापरुष्णया। असिक्न्यामं रुद्वृधेवितस्तया जींकीयेशृणुह्या सुषोमंया ॥

(ऋग्वेद १०.७५.५)

ॐभूर्भुवः स्वः गङ्गादि नदीभ्यो नमः। गङ्गादि नदीः आवाहयामि। भो गङ्गादिनद्यः इहागच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृहणीतां। वरदा भवत। तत्रैव सप्तसागराः। (वहीं पर सात सागरों का आवाहन करें।) धाम्नो धाम्नो वामदेवः सप्तसागरा अष्टी। सप्त सागरावाहने विनियोगः।

ॐ धाम्नो धाम्नो राजन्नितो वरुणानोमुञ्च। यदापो अध्न्या इति वरुणेतिशपामहेततो वरुणानोमुञ्च। मयिवापोमोषधीहिं सीरतो विश्वव्यंचा भूस्त्वेतो वरुणानो मुञ्च ॥ *(यजुर्वेद-१ काण्ड-३ प्रश्न-११ अनुवाक-१५ मन्त्र)*

ॐभूर्भुवः स्वः सप्तसागरेभ्यो नमः। सप्तसागरान् आवाहयामि। भो सप्तसागराः इहागच्छत। इह तिष्ठतः। पूहां गृहणीत। वरदा भवत। तदुपरि मेरवे नमः। मेरुं आवाहयामि। (उसके ऊपर मेरु पर्वत का आवाहन करें।) (भूमि पर) सोमसमीपे गदायै नमः। गदां आवाहयामि। (सोम के पास (उत्तर) गदा का

आवाहन करें।) ईशान समीपेत्रिशूलाय नमः। त्रिशूलं आवाहयामि।। (ईशान के पास ईशान में त्रिशूल का आवाहन करें।) इन्द्रसमीपे वज्राय नमः। वज्रं आवाहयामि। (इन्द्र के पास पूर्व में वज्र का आवाहन करें।) अग्नि समीपे शक्तये नमः। शक्तिं आवाहयामि। (अग्नि के पास आग्नेय में शक्ति का आवाहन करें।) यम समीपे दण्डाय नमः। दण्ड आवाहयामि। (यम के पास दक्षिण में दण्ड का आवाहन करें।) निर्ऋति समीपे खड्गय नमः। खड्गमावाहयामि। (निर्ऋति के पास नैऋत्य के खड्ग का आवाहन करें।) वरुण समीपे पाशाय नमः। पाशं आवाहयामि। (वरुण के पास पश्चिम में पाश का आवाहन करें।) वायु समीपे अंकुशाय नमः। अंकुशं आवाहयामि। (वायु के पास वायव्य दिशा में अंकुश का आवाहन करें।)

तद्बाहये उत्तरादि क्रमेण (मण्डल के बाहर) गौतमाय नमः। गौतमं आवाहयामि। (उत्तर में गौतम जी का आवाहन करें।) भारद्वाजाय नमः। भरद्वाजं आवाहयामि। (ईशान में भरद्वाज जी का आवाहन करें।) विश्वामित्राय नमः। विश्वामित्रं आवाहयामि। (पूर्व में विश्वामित्र जी का आवाहन करें।) कश्यपाय नमः। कश्यपं आवाहयामि। (आग्नेय में अश्यप जी का आवाहन करें।) जमदग्नये नमः। जमदग्निं आवाहयामि। (दक्षिण में जमदग्नि जी का आवाहन करें।) वसिष्ठाय नमः। वसिष्ठं आवाहयामि। (नैर्ऋत्य में वसिष्ठ जी का आवाहन करें।) अत्रये नमः। अत्रिं आवाहयामि। (पश्चिम में अत्रि जी का आवाहन करें।) अरुंधत्यै नमः। अरुंधतीं आवाहयामि। (वायव्ये में अरुंधति जी का आवाहन करें।) ततः पूर्वादि क्रमेण मातृः। (पूर्वादि क्रम से मण्डल के बाहर मातृगणों का आवाहन करें।) ऐंद्र्यै नमः। ऐन्द्रीं आवाहयामि। (पूर्व में ऐन्द्री का आवाहन करें।) कौमार्यै नमः। कौमारीं आवाहयामि। (आग्नेय में कौमारी का आवाहन करें।) ब्राह्मै नमः। ब्राह्मीं आवाहयामि। (दक्षिण में ब्राह्मी का आवाहन करें।) वाराह्यै नमः। वाराहीं आवाहयामि। (नैर्ऋत्य में वाराही का आवाहन करें।) चामुण्डायै नमः। चामुण्डां आवाहयामि। (पश्चिम में चामुण्डा का आवाहन करें।) वैष्णव्यै नमः वैष्णावीं आवाहयामि। (वायव्य में वैष्णावी का आवाहन करें।) वैनायक्यै नमः वैनायकीं आवाहयामि। (ईशान्य में वैनायकी का आवाहन करें।) इति सर्वतो भद्र देवताः। (यहाँ पर सर्वतोभद्रमण्डल में विद्यमान सभी देवताओं का आवाहन संपन्न हुआ।)

ॐ तदंस्तु मित्रावरुणातदंग्नेशंयोरस्मभ्यंमिदमंस्तु शस्तं। अशीमहिं गाधमुतप्रंतिष्ठां नमों दिवे बृंहते सादंनाय॥

(ऋग्वेद ५.४७.७)

गृहावै प्रतिष्ठासूक्तं तत् प्रतिष्ठिततमया वाचाशंस्तव्यं तस्माद्यद्यपिदूर इव पशूॅलभते गृहानेवै नानाजिगमिषति गृहाहिपशूनां प्रतिष्ठा प्रतिष्ठा॥

ॐ नर्यंप्रजां मे गोपाय॥ अमृतत्वायं जीव सें॥ जातां जंनिष्यमांणां च॥ अमृतें सत्ये प्रतिंष्ठितं॥ (यजुर्वेद-ब्राह्मण)

एताः ब्रह्मादि देवताः सुप्रतिष्ठिताः सन्तु। (इन मन्त्रों को कहकर आवाहित ब्रह्मादि देवताओं का प्रतिष्ठा करें।)

ॐ ब्रह्मंजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेन आवः। सुबुध्नियां उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसंतश्चविवंः॥ *(यजुर्वेद-४ काराड-२ प्रश्न-८ अनुवाक-४ मन्त्र)*

अनेन मंत्रेरा पूजयेत्। (इस मन्त्र से पूजन करें।) ॐब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। ध्यायामि। ध्यानं समर्पयामि। ॐब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। आवाहयामि। आसनं समर्पयामि। ॐब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। स्वागतं समर्पयामी। पादारविन्दयोःपाद्यं पाद्यं समर्पयामि। ॐब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि। ॐब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। मुखे आचमनीयं समर्पयामि। ॐब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवः तानं ऊर्जे दंधातन। महेरणाय चक्षसे॥
यो वंः शिवतंमोरसस्तस्यं भाजयते हनंः। उशतीरिंव मातरंः॥
तस्मा अरंगमामवो यस्य क्षयांय जिन्वंथ। आपोंजनयंथा च नंः॥ *(ऋग्वेद १०.९.१)*

स्नानं समर्पयामि। ॐब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। स्नानाङ्ग आचमनं समर्पयामि। ॐब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ युवं वस्त्रांणि पीवसा वंसाथे युवोरच्छिंद्रामन्तंवोहसर्गाः। अवातिरतमनृंतानि विश्वं ऋतेनं मित्रा वरुणा यचेथे॥ *(ऋग्वेद १.१५२.१)*

वस्त्रयुग्मं समर्पयामि। वस्त्रान्ते आचमनं समर्पयामि। ॐब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुंच शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमंस्तु तेजः॥ *(ऋग्वेद)*

यज्ञोपवीतं समर्पयामि। ॐब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ हिरंण्यरूपः स हिरंण्य संदृगपान्नपात् सेदु हिरंण्यवर्णः।

हिरण्ययात् परियोनेर्निषद्याहिरण्य दाददुत्यन्नमस्मै॥ *(ऋग्वेद २.३५.१०)*

आभरणं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ गन्धं द्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीं। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

गन्धं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत। अर्चन्तु पुत्रका उतपुरन्न धृष्ण्वर्चत॥ *(ऋग्वेद ८.६९.८)*

अक्षतान् समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ आयने ते परायणे दूर्वारोहन्तु पुष्पिणीः। ह्रदाश्च पुण्डरीकाणि समुद्रस्य गृहा इमे। पुष्पाणि समर्पयामि।

(ऋग्वेद १०.१४२.८)

नाम पूजां करिष्ये—ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ सोमाय नमः। ॐ ईशानाय नमः। ॐ इन्द्राय नमः। ॐ अग्नेय नमः। ॐ यमाय नमः। ॐ निर्ऋतये नमः। ॐ वरुणाय नमः। ॐ वायवे नमः। ॐ अष्टवसुभ्यो नमः। ॐ एकादश रुद्रेभ्यो नमः। ॐ द्वादशादित्येभ्यो नमः। ॐ अश्विभ्यां नमः। ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। ॐ सप्तयक्षेभ्यो नमः। ॐ भूतनागेभ्यो नमः। ॐ गंधर्वाप्सरोभ्यो नमः। ॐ स्कन्दाय नमः। ॐ नन्दीश्वराय नमः। ॐ शूलाय नमः। ॐ महाकालाय नमः। ॐ दुर्गायै नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ स्वधायै नमः। ॐ मृत्युरोगेभ्यो नमः। ॐ गणपतये नमः। ॐ अद्भ्यो नमः। ॐ मरुद्भ्यो नमः। ॐ पृथिव्यै नमः। ॐ गङ्गादि सर्वनदीभ्यो नमः। ॐ सप्त सागरेभ्यो नमः। ॐ मेरवे नमः। ॐ गदायै नमः। ॐ त्रिशूलाय नमः। ॐ वज्राय नमः। ॐ शक्तये नमः। ॐ दण्डाय नमः। ॐ खड्गाय नमः। ॐ पाशाय नमः। ॐ अंकुशाय नमः। ॐ गौतमाय नमः। ॐ भरद्वाजाय नमः। ॐ विश्वामित्राय नमः। ॐ कश्यपाय नमः। ॐ जमदग्नये नमः। ॐ वसिष्ठाय नमः। ॐ अत्रये नमः। ॐ अरुन्धत्यै नमः। ॐ ऐन्द्र्यै नमः। ॐ कौमार्यै नमः। ॐ ब्राह्मै नमः। ॐ वाराह्यै नमः। ॐ चामुण्डयै नमः। ॐ वैष्णव्यै नमः। ॐ माहेश्वर्यै नमः। ॐ वैनायक्यै नमः। (देवताओं के ५७ समूह।) नाम पूजां समर्पयामि। (ये सभी देवता सर्वतो भद्र मण्डल से आवाहित हैं।) ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

वनस्पति रसोत्पन्नो गन्धाढयः सुमनोहरः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम्॥ धूपं आघ्रापयामि। *(प्रयोगरत्नाकर)*

ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

आज्यं त्रिवर्ति संयुक्तं वह्निना योजितं मया। गृहाण मङ्गलं दीपं त्रैलोक्य तिमिरापह ॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

दीपं दर्शयामि धूपदीपानन्तरं आचमनं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। (नैवेद्य को गायत्री मन्त्र से प्रोक्षण करें नैवेद्य मण्डल पर रखें। **सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि**। इस मन्त्र से परिषिञ्चन करें।) **अमृतोपस्तरणमसि** कहकर जल छोड़ें। ॐ प्राणाय स्वाहा (अङ्गुष्ठ एवं कनिष्ठिका मिलाकर) ॐ अपानाय स्वाहा (अङ्गुष्ठ एवं तर्जनी मिलाकर) ॐ व्यानाय स्वाहा (अङ्गुष्ठ एवं मध्यमा मिलाकर) ॐ उदानाय स्वाहा (अङ्गुष्ठ एवं अनामिका मिलाकर) ॐ समानाय स्वाहा (सभी अङ्गुलियों को मिलाकर) ॐ देवेभ्यः स्वाहा नैवेद्यं निवेदयामि। **अमृतापिधानमसि** कहकर जल छोड़ें। नैवेद्यं विसर्जयामि। हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि। गण्डूषं समर्पयामि। पुनराचमनं समर्पयामि। (कहकर जल छोड़ें) ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

पूगीफल समायुक्तं नागवल्ल्यादलैर्युतम्। चूर्ण कर्पूर संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यतां। क्रमुक ताम्बूलं समर्पयामि। *(देवपूजा)*

ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत। अर्चन्तु पुत्रका उत पुरं न धृष्णवर्चत। *(ऋग्वेद ८.६९.८)*

ॐ ध्रुवा द्यौर्ध्रुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वता इमे। ध्रुवं विश्वमिदं जगद् ध्रुवो राजा विशामयम्॥

ॐ ध्रुवं ते राजा वरुणो ध्रुवं देवो बृहस्पतिः। ध्रुवं त इन्द्रश्चाग्निश्च राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम्॥ *(ऋग्वेद १०.१७३.५)*

मङ्गलनीराजनं समर्पयामि। नीराजनान्ते परिमल पत्र पुष्पाणि समर्पयामि। मन्त्रपुष्पं समर्पयामि। प्रदक्षिणं समर्पयामि। नमस्कारान् समर्पयामि।

देवाराधनमण्डलं सुरगणावासं सदामङ्गलं। कुर्तुः दर्शनमात्रतः शुभकरं तत् पञ्च भूतात्मकं॥
अर्णाद्यक्षरसंयुतं भयहरं तद् याग पुण्यार्जितं। नानामन्त्रमयं समस्त फलदं ध्यायेन्मनोनन्दनं॥
अरिष्टानि बहून्यस्मिन् दुष्कृतानि शतानि च। मण्डलानि निरीक्षन्ते यथा युद्धेषु कातराः॥ *(अनुष्ठान पद्धति)*

(युद्ध भूमि में कायर जैसे देखते ही भीत हो जाते हैं, वैसे ही मराडल को देखते ही सभी अरिष्ट दूर हो जाते हैं।) **अनया पूजया ब्रह्मादि मराडल देवताः प्रीयन्तां** यहाँ पर सर्वतोभद्र मराडल पूजन संपन्न हुआ।

प्रधान देवता विष्णु षोडशोपचार पूजन

ध्यान —विष्णुं जिष्णुं महाविष्णुं प्रभविष्णुं महेश्वरम्। अनेकोत्पात शमनं नमामि पुरुषोत्तमम्॥ नमोनारायणाय।

आवाहन-ॐ सहस्त्रंशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रंपात्। स भूमिं विश्वतोंवृत्वात्यं तिष्ठद् दशांगुलम्॥ *(ऋग्वेद १०.९०.१)*

ॐ हिरंगयवर्णां हरिणीं सुवर्णरजत स्त्रजाम्। चन्द्रां हिररमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवंह॥ *(पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)*

सपरिवार श्री विष्णावे नमः। आवाहयामि। **आवाहनं** समर्पयामि।

आसनम्—ॐ पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भव्यम्। उतामृतत्वस्येशांनो यदन्नेंना तिरोहंति॥ *(ऋग्वेद १०.९०.२)*

ॐ तां म आवंह जातवेदो लक्ष्मीमनंपगामिनीम्। यस्यां हिरंगयं विंन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥ *(पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)*

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। आसनं समर्पयामि।

पाद्यम्— ॐ एतावानस्य महिमाऽतो ज्यायाँश्च पुरुंषः। पादोंऽस्य विश्वांभूतानिं त्रिपादंस्यामृतं दिवि॥ *(ऋग्वेद १०.९०.३)*

ॐ अश्वपूर्वां रंथमध्यां हस्तिनांद प्रमोदिनीम्। श्रियं देवीमुपंह्वये श्रीर्मा देवी जुंषताम्॥ *(पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)*

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। पादारविंदयोः पाद्यं पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यं— ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत् पुरुंषः पादों ऽस्येहा भंवत्पुनः। ततो विश्वं व्यंक्रामत् साशनानशने अभि॥ *(ऋग्वेद १०.९०.४)*

ॐ कां सोस्मितां हिरंगय प्राकारांमार्द्रां ज्वलंन्तीं तृप्तां तर्पयंन्तीम्।

पद्मेस्थितां पद्मवंर्णां तामिहो पंह्वये श्रियम्॥ *(पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)* सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। हस्तयोः अर्घ्यमर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनम्—ॐ तस्माद्विराळंजायत विराजो अधिपूरुषः। स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथोपुरः। (ऋग्वेद १०.९०.५)
ॐ चंद्रां प्रभासां यशसा ज्वलंतीं श्रियं लोके देवजुष्टा मुदाराम्।
तां पद्मिनीमीं शरंणमहं प्रपंद्येऽलक्ष्मीर्मेनश्यतां त्वां वृणे॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। मुखे आचमनीयं समर्पयामि।

पञ्चामृत स्नानम् (दूध)— ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्णियं। भवावाजस्य संगथे। (ऋग्वेद १०.९१.१६)

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। पयः स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः। भवे भवेनातिं भवे भवस्वमाम् भवोद्भवाय नमः॥
(यजुर्वेद-महानारायणोपनिपत् आरण्यक)

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि

दहि— ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभिनोमुखा करत्प्रण आयूंषितारिषत्॥ (ऋग्वेद ४.३९.६)

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। दधि स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमश्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमःकलविकरणाय
नमोबलाय नमो बलप्रमथनाय नमस्सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः। (यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। शुद्धोदक स्नानं सपर्मयामि।

घी— ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्ययोनिर्घृते श्रितो घृतं वस्य धाम।
अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभवक्षि हव्यम्॥ (ऋग्वेद २.३.११) सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। घृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरं तरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥
(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

मधु (शहद)—ॐ मधुवाता ऋतायते मधुंक्षरंति सिंधवः। माध्वीर्नः संत्वोषधीः॥ मधुनक्तमुतोषसो मधुमत् पार्थिवं रजः। मधुद्यौरस्तु नः पिता॥ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवंतु नः॥ *(ऋग्वेद १.९०.६)* सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। मधु स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥ *(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)*

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। शुद्धोदक स्नानं सपर्पयामि।

शर्करा (शक्कर)—ॐ स्वादुः पवस्व दिव्याय जन्मने स्वादुरिंद्राय सुहवीतु नाम्ने। स्वादुर्मित्राय वरुणाय वायवे बृहस्पतये मधुमाँ अदाभ्यः॥ *(ऋग्वेद ९.८५.६)*

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। शर्करा स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जन—ॐ ईशानस्सर्वविद्यानामीश्वरस्सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोऽम्॥ *(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)*

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

फल— ॐ याः फलिनी र्या अफला अपुष्पायाश्च पुष्पिणीः। बृहस्पति प्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्वं हंसः॥ *(ऋग्वेद १०.९७.१५)*

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। फल स्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदक—ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवस्तानऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे॥ यो वः शिवतमोरसस्तस्य भाजयते हनः। उशतीरिव मातरः॥ तस्मा अरंगमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः। (ऋग्वेद १०.९.१-२-३)

ॐ कद्रुद्राय प्रचेतसे मीळहुष्टमाय तव्यसे। वोचेम शंतमं हृदे॥ (ऋग्वेद १.४३.१)

ॐ यथा नो अदितिः करत्पश्वे नृभ्यो यथा गवे। यथा तोकाय रुद्रियम्॥ (ऋग्वेद १.४३.२)

ॐ यथा नो मित्रो वरुणो यथा रुद्रश्चिकेतति। यथा विश्वे सजोषसः।

ॐ गाथपतिं मेधपतिं रुद्रं जलाषभेषजम्। तच्छं योः सुम्नमीमहे॥

ॐ यः शुक्र इव सूर्यो हिरण्यमिव रोचते। श्रेष्ठो देवानां वसुः।

ॐ शं नः करत्यर्वते सुगं मेषाय मेष्ये। नृभ्यो नारिभ्यो गवे॥

ॐ अस्मे सोम श्रियमधि नि धेहि शतस्य नृणाम्। महिश्रवस्तुविनृम्णाम्॥

ॐ मानः सोमपरिबाधो मारातयो जुहुरंत। आ न इंदो वाजे भज॥

ॐ यास्ते प्रजा अमृतस्य परस्मिन्धामन्नृतस्य। मूर्धा नाभा सोमवेन आ भूषंतीः सोम वेदः॥ (ऋग्वेद १.४३.३-४-५-६-७-८-९)

ॐ नमः सोमाय च रुद्राय च नमस्ताम्राय चारुणाय च नमः शंगाय च पशुपतये च नम उग्राय च भीमाय च नमो अग्रेवधाय च दूरेवधाय च नमो हन्त्रे च हनीयसे च नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो नमस्ताराय नमः शंभवे च मयोभवे च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च नम स्तीर्थ्यायच कूल्याय च नमः पार्याय चावार्याय च नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च नम आतार्याय चालाद्याय च नमशष्प्याय च फेन्याय च नमःसिकत्याय च प्रवाह्याय च। (यजुर्वेद-४ काण्ड-५ प्रश्ने-८ अनुवाक)

ॐ तच्छंयोरावृंणीमहे। गातुं यज्ञायं। गातुं यज्ञ पंतये। दैवीः स्वस्तिरंस्तु नः। स्वस्तिर्मानुंषेभ्यः।
ऊर्ध्वं जिंगातु भेषुजम्। शं नों अस्तु द्विपदें। शं चतुंष्पदे। ॐ शांतिः शांतिः। शांतिः॥ (यजुर्वेद-आरण्यक)
ॐ यत्पुरुंषेण हविषां देवा यज्ञमतंन्वत। वसंतो अंस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥ (ऋग्वेद १०.९०.६)
ॐ आदित्यवर्णो तपसोऽधिंजातो वनस्पतिस्तवं वृक्षोऽथं बिल्वः।
तस्य फलांनि तपसा नुंदंतु मायांतरा याश्चं बाह्या अंलक्ष्मीः। (ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

वस्त्र— ॐ युवं वस्त्राणि पीवसावंसाथे युवोरच्छिंद्रा मंतंवो ह सर्गाः।
अवांतिरमनृतानि विश्वं ऋतेनं मित्रा वरुणा सचेथे॥ (ऋग्वेद १.१५२.१)
ॐ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुंषं जातमंग्रतः। तेनं देवा अंयजंत साध्या ऋषंयश्च ये॥ (ऋग्वेद १०.९०.७)
ॐ उपैंतु मां देंवसखः कीर्तिश्च मणिंना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मिं राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृंद्धिं ददातुं मे॥
(ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। वस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतं—ॐ यज्ञोंपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तांत्। आयुष्यमग्रयं प्रतिमुंञ्चशुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमंस्तु तेजः॥
ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम्। पशून्ताँश्चंक्रे वायव्यांनारण्यान् ग्राम्याश्च ये॥ (ऋग्वेद १०.९०.८)
ॐ क्षुत् पिंपासामलां ज्येष्ठामंलक्ष्मीं नांशयाम्यहंम्। अभूंतिमसंमृद्धिं च सर्वान्निर्णुद मे गृहात्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

आभरण—ॐ हिरंण्यरूपः स हिरंण्य संदृग्पान्नपात् सेदु हिरंण्यवर्णः। हिरण्ययात् परियोनें र्निषद्या हिरण्यदा दंदुत्यन्नंमस्मै॥ *(ऋग्वेद २.३५.१०)*

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। आभरणं समर्पयामि।

गन्ध— ॐ गंधं द्वारां दुंराधर्षां नित्यपुंष्टां करीषिणींम्। ईश्वरीं सर्वंभूतानां तामिहोपंह्वये श्रियंम्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ तस्मांद्यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामांनि जज्ञिरे। छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्य जुस्तस्मांदजायत॥ *(ऋग्वेद १०.९०.९)*

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। गन्धं समर्पयामि।

अक्षत—ॐ अर्चंत प्रार्चंत प्रियंमेधासो अर्चंत। अर्चंन्तु पुत्रका उतपुरंन्न धृष्णवंर्चत॥ *(ऋग्वेद ८.६९.८)*

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पाणि—ॐ आयंने ते परायंणे दूर्वांरोहंतु पुष्पिणींः। ह्रदाश्च पुण्डरींकाणि समुद्रस्यं गृहा इमे॥ *(ऋग्वेद १०.१४२.८)*

ॐ तस्मादश्वा अजायन्त ये के चों भयादंतः। गावोंहजज्ञिरे तस्मात् तस्मांज्जाता अंजावयंः॥ *(ऋग्वेद १०.९०.१०)*

ॐ मनंसः काममाकूंतिं वाचः सत्यमंशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रंयतां यशंः॥ *(ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। पुष्पाणि समर्पयामि।

प्रथमावरण पूजनम्—ॐ हृदयाय नमः। आग्नेय दिशि। ॐ शिरसे स्वाहा नमः। ऐशान्यां दिशि। ॐ शिखायै वषट् नमः। नैर्ऋत्यां दिशि। ॐ कवचाय हुम् नमः। वायव्यां दिशि। ॐ नेत्रत्रयाय वौषट् नमः। अग्रे ॐ अस्त्राय फट् नमः। आग्नेयादि कोणेषु पूजयेत् *(अनुष्ठान पद्धति)*। पूजन करे।

द्वितीयावरण पूजनम्—ॐ ब्राह्मयै नमः। पूर्वे ॐ माहेश्वर्यै नमः। आग्नेय दिशि। ॐ कौमार्यै नमः। दक्षिण दिशि। ॐ वैष्णव्यै नमः। नैर्ऋत्यां दिशि। ॐ वाराह्यै नमः पश्चिम दिशि। ॐ इन्द्राण्यै नमः। वायव्यां दिशि। ॐ चामुण्डायै नमः। उत्तरस्यां दिशि। ॐ गिरिजायै नमः ऐशान्यां दिशि। *(अनुष्ठान पद्धति)*

तृतीयावरण पूजनम्—ॐ इन्द्राय सुराधिपतये पीतवर्णाय वज्रहस्ताय ऐरावत वाहनाय सशक्ति काय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवारायश्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐ अग्नये तेजोधिपतये पिंगलवर्णाय शाक्ति हस्ताय मेष वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय स वाहनाय स परिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐ यमाय प्रेताधिपतये कृष्णावर्णाय दण्ड हस्ताय महिष वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐ निर्ऋतये रक्षोधिपतये रक्तवर्णाय खड्ग हस्ताय नरवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐ वरुणाय जलाधितये कुंदवर्णाय पाशहस्ताय मकरवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐ वायवे प्राणाधिपतये धूम्रवर्णाय अंकुश हस्ताय हरिणवाहनाय सशक्ति काय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐ सोमाय नक्षत्राधिपतये शुक्लवर्णाय गदा हस्ताय अश्व वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐ ईशानाय विद्याधिपतये स्फटिकवर्णाय त्रिशूल हस्ताय वृषभ वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐ अनंताय नागाधिपतये क्षीरवर्णाय चक्रहस्ताय गरुड वाहनाय स शक्तिाकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। नैर्ऋत्यं एवं पश्चिम दिशा के बीच में अनन्त का पूजन करें। ॐ ब्रह्मणे लोकाधिपतये कंजवर्णाय पाशहस्ताय हंसवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। पूर्व एवं ईशान दिशा के बीच में ब्रह्मा जी का पूजन करें। *(अनुष्ठान पद्धति)*

चतुर्थावरणपूजनम्—ॐ वज्राय नमः। (पूर्व में) ॐ शक्त्यै नमः। (आग्नेय में) ॐ दण्डाय नमः। (दक्षिण में) ॐ खड्गाय नमः। (नैर्ऋत्य) ॐ पाशाय नमः। (पश्चिम में) ॐ अंकुशाय नमः। (वायव्य में) ॐ गदायै नमः। (उत्तर में) ॐ त्रिशूलाय नमः। (ईशान में) ॐ चक्राय न मः। (पश्चिम नैर्ऋत्य के बीच में) ॐ पद्माय नमः। (पूर्व ईशान के बीच में) *(अनुष्ठान पद्धति)*

विष्णु अष्टोत्तर शतनाम पूजा

ॐ विष्णवे नमः। ॐ लक्ष्मीपतये नमः। ॐ कृष्णाय नमः। ॐ वैकुण्ठाय नमः। ॐ गरुडध्वजाय नमः। ॐ जगन्नाथाय नमः। ॐ परब्रह्मणे नमः।ॐ वासुदेवाय नमः। ॐ त्रिविक्रमाय नमः। ॐ दैत्यान्तकाय नमः। ॐ मधुरिपवे नमः। ॐ ताक्ष्र्यवाहनाय नमः। ॐ सनातनाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ पद्मनाभाय नमः। ॐ हृषीकेशाय नमः। ॐ सुधाप्रदाय नमः। ॐ माधवाय नमः। ॐ पुण्डरीकाक्षाय नमः। ॐ स्थितिकर्त्रे नमः। ॐ परात्पराय नमः। ॐ वनकालिने

नमः। ॐ यज्ञ रूपाय नमः। ॐ चक्र पाणये नमः। ॐ गदाधराय नमः। ॐ उपेन्द्राय नमः। ॐ केशवाय नमः। ॐ हंसाय नमः। ॐ समुद्रमथनाय नमः। ॐ हरये नमः। ॐ गोविन्दाय नमः। ॐ ब्रह्मजनकाय नमः ॐ कैटभासुरमर्दनाय नमः। ॐ श्रीधराय नमः। ॐ कामजनकाय नमः ॐ शेषाायिने नमः। ॐ चतुर्भजाय नमः। ॐ पाञ्चजन्यधराय नमः। ॐ श्रीमते नमः। ॐ शार्ङ्गपाणये नमः। ॐ जनार्दनाय नमः। ॐ पीताम्बरधराय नमः। ॐ देवाय नमः। ॐ सूर्यचन्द्रविलोचनाय नमः। ॐ मत्स्यरूपाय नमः। ॐ कूर्मतनवे नमः। ॐ क्रोडरूपाय नमः। ॐ नृकेसरिणे नमः। ॐ वामनाय नमः। ॐ भार्गवाय नमः। ॐ रामाय नमः। ॐ बलिने नमः। ॐ कल्किने नमः। ॐ हयाननाय नमः। ॐ विश्वम्भराय नमः। ॐ शिशुमाराय नमः। ॐ श्रीकराय नमः। ॐ कपिलाय नमः। ॐ ध्रुवाय नमः। ॐ दत्तात्रेयाय नमः। ॐ अच्युत्ताय नमः। ॐ अनन्ताय नमः। ॐ मुकुन्दाय नमः। ॐ दधिवामनाय नमः। ॐ धन्वन्तरये नमः। ॐ श्रीनिवासाय नमः। ॐ प्रद्युम्नाय नमः। ॐ पुरुषोत्तमाय नमः। ॐ श्रीवत्सकौस्तुभधराय नमः। ॐ मुरारातये नमः। ॐ अधोक्षजाय नमः। ॐ ऋषभाय नमः। ॐ मोहिनी रुप धारिणे नमः। ॐ सङ्कर्षणाय नमः। ॐ पृथवे नमः। ॐ क्षीराब्धिशायिने नमः। ॐ भूतात्मने नमः। ॐ अनिरुद्धाय नमः। ॐ भक्तवत्सलाय नमः। ॐ नराय नमः। ॐ गजेन्द्रवरदाय नमः। ॐ त्रिधाम्ने नमः। ॐ भूतभावनाय नमः। ॐ श्वेतद्वीपसुवास्तव्याय नमः। ॐ सनकादिमुनिध्येयाय नमः। ॐ भगवते नमः। ॐ शङ्करप्रियाय नमः। ॐ नीलकान्ताय नमः। ॐ धराकान्ताय नमः। ॐ वेदात्मने नमः। ॐ बादरायणाय नमः। ॐ भागीरथीजन्मभूमि पादपद्माय नमः। ॐ सतांप्रभवे नमः। ॐ स्वभुवे नमः। ॐ विभवे नमः। ॐ घनश्यामाय नमः। ॐ जगत्कारणाय नमः। ॐ अव्ययाय नमः। ॐ बुद्धावताराय नमः। ॐ शान्तात्मने नमः। ॐ लीलामानुष विग्रहाय नमः। ॐ दामोदराय नमः। ॐ विराड्रूपाय नमः। ॐ भूतभव्यभवत्प्रभवे नमः। ॐ आदिदेवाय नमः। ॐ प्रह्लादपरिपालकाय नमः। ॐ श्रीमहाविष्णवे नमः। अष्टोत्तर शतनाम पूजां समर्पयामि। *(अनुष्ठान पद्धति)*

धूपम्—ॐ वनस्पति रसोत्पन्नो गंधाढ्यः सुमनोहरः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्य कौ बाहू का ऊरू पादा उच्येते॥ *(ऋग्वेद १०.९०.११)*

ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि संभव कर्दम। श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥ *(ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। धूपं आघ्रापयामि।

दीपम्— आज्यं त्रिवर्ति संयुक्तं वह्निना योजितं मया। गृहाण मंगलं दीपं त्रैलोक्य तिमिरापह॥ *(स्मृति संग्रह)*

ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत॥ (ऋग्वेद १०.९०.१२)
ॐ आपः सृजंतु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे। नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥ (ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। दीपं दर्शयामि। धूप दीपानंतरं आचमनीयं समर्पयामि।

नैवेद्यम्—देवस्याग्रे स्थलं संशोध्य गोमयेन मण्डलं कृत्वा तत्र शुद्धं पात्रं न्यस्य अभिघार्य निर्मलं हवि तदुपरि न्यस्य आज्येन द्रवीभूतं कृत्वा "ॐ भू र्भुवः स्वः इति गायत्र्या च प्रोक्ष्य वायु बीजं जप्त्वा निवेद्यान्नं संशोध्य इक्षिणहस्ते अग्निबीजं विलिख्य तेन हस्तेन संदह्यवामहस्ते अमृतबीजं विलिख्य तेत हस्तेन हविराप्लाव्य मूलमंत्रमष्टवारं संजप्य मंत्रामृतमयं संकल्प्य सुरभिमुद्रां बध्वा अमृतमयं भावयित्वा मल धातु रसांशं विभज्य देवस्य निवेद्य ग्रहणेच्छां कुर्यात्।
(अनुष्ठान पद्धति)

"सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि" इत्यनेन

परिषिच्य हस्ताभ्यां पुष्पैः "देवस्य जिह्वार्चीरुचि निवेद्ये निपात्य निवेदयामि भवते जुषाणेदं हविर्विभो" इति वामहस्तेन ग्रासमुद्रा प्रदर्श्य दक्षिण हस्तेन प्राणादि मुद्राः प्रदर्शयेत्। अन्नात् मलांशं धात्वंशं च परित्यज्य रसांशं देवस्य वदनार्चिषि समर्पयेत्। वं अबात्मने इति नैवेद्य मुद्रां प्रदर्शयेत्।

नैवेद्य सारं रससमर्पणात् जातं सुधांशं देवे समर्प्य अंललिमुद्रां बध्वा नैवेद्यसार रससमर्पित जातामृतमय सुधांशुना पुनः पुनः वर्धितं देवं हृन्मूर्ति देवं ध्यायन् स्व स्व मूलमन्त्रं यथा शक्ति जप्त्वा।

कलश के आगे स्थल शुद्धिकर गोमय से शुद्धिकर चतुरस्र मण्डल को बनाकर उस पर शुद्ध पात्र को रखें। पात्र में थोडा सा घी डालें। उस पात्र में निर्मल हविस् (नैवेद्य पदार्थ को) को घी पर रखें उस हविस् को घी से भिगोयें। गायत्री मंत्र से नैवेद्य का प्रोक्षण करें। यंयं यं" इस वायु बीज को जपकर हविस् को शुद्ध करें। दाहिने हाथ में (रं) अग्नि बीज को लिखकर उस अग्नि से हविस् में विद्यमान कश्मलों को लजायें। (कल्पना करें) बायें हाथ में अमृत बीज (वं) को लिखकर उस हाथ से हविस् को शुद्ध करें। धोने की कल्पना करें। **ॐ नमोनारायणाय**। इस मन्त्र का आठ बार जप करें। हविस् को मत्रमय

एवं अमृतमय होने की कल्पना करें। सुरभि मुद्रा से अमृतमय हुआ है मानकर मलांश, धातु अंश एवं रसांश को अलग-अलग करने की कल्पना करें। देवता को नैवेद्य ग्रहण करने की इच्छा उत्पन्न करनी चाहिये। "सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि" इससे परिषिञ्चन करें। दोनों हाथों में पुष्प लेकर देवता का जीभ नैवेद्य तक पहुँचने का चिन्तन करें। "निवेदयामि भवते जुषाण हविर्विभो" कहकर नैवेद्य स्वीकार करने की प्रार्थना करते हुए बायें हाथ से ग्रास मुद्रा (जैसे बछडे को घास देते हैं) को दिखाकर दाहिने हाथ से—

प्राणाय स्वाहा-अङ्गुष्ठ कनिष्ठिका मिलाकर, **अपानाय स्वाहा**-अङ्गुष्ठ एवं तर्जनी मिलाकर, **व्यानाय स्वाहा**-अङ्गुष्ठ एवं मध्यमा मिलाकर, **उदानाय स्वाहा**-अङ्गुष्ठ एवं अनामिका मिलाकर, **समानाय स्वाहा**। सभी अङ्गुलियों को लाकर। अन्न से मलांश एवं धातु के अंश को अलग कर केवल रसांश को अर्पित करने की कल्पना करें।

"वं अबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि" कहकर नैवेद्य मुद्रा का प्रदर्शन करें। अंगुष्ट एवं अनामिका मिलाने से नैवेद्य मुद्रा। नैवेद्य का सार जो रसांश था उसका भी सार अमृत का जो अंश है उसे देवता को समर्पित कर, हाथ जोडकर, नैवेद्य के सार अमृत से भगवान् को बढते हुए मानकर उसे हृदय में स्थित मानकर यथाशक्ति ॐ **नमोनारायणाय।** " इस मूल मंत्र का जप करें।

ॐ स्वादुः पवस्व दिव्याय जन्मने स्वादुरिन्द्राय सुहवीतुनाम्ने।
स्वादुर्मित्राय वरुणाय वायवे बृहस्पतये मधुमां अदाभ्यः॥ *(ऋग्वेद ९.८५.६)*
ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत। मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरजायत॥ *(ऋग्वेद १०.९०.१३)*
ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

(ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

यथा संभव नैवेद्यं निवेदयामि। **अमृतापिधानमसि** कहकर उत्तरापोशन देवें। हस्ताप्रक्षालनार्थे जलं समर्पयामि। गण्डूषार्थे जलं समर्पयामि। शुद्धाचमनार्थे जलं समर्पयामि। करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि।

ताम्बूल—पूगीफल समायुक्तं नागवल्या दलैर्युतं। चूर्ण कर्पूर संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥ (स्मृति संग्रह-देवपूजा)
सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। क्रमुक तांबूलं समर्पयामि।

नीराजन (आरति)—ॐ अर्चत प्रार्चत प्रियमेधा सो अर्चत। अर्चतु पुत्रका उत पुरं न धृष्णवर्चत। (ऋग्वेद ८.६९.८)
ॐ ध्रुवाद्यौ र्ध्रुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वता इमे। ध्रुवं विश्वमिदं जगद् ध्रुवो राजा विशामयम्॥
ॐ ध्रुवं ते राजा वरुणो ध्रुवं देवो बृहस्पतिः। ध्रुवं त इन्द्रश्चाग्निश्च राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम्॥ (ऋग्वेद १०.१७३.४)
सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। मंगल नीराजनंसमर्पयामि।

मंत्रपुष्प—ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदं। समूढमस्य पांसुरे। (ऋग्वेद १.२२.१७) आ. गृ. सूत्रम्
ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन्। (ऋग्वेद-१०.९०.१४)
ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्। सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥
(ऋग्वेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्) सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। मंत्रपुष्पं समर्पयामि।

प्रदक्षिणा नमस्कार—यानि कानि च पापानि जन्मांतर कृतानि च। तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे पदे॥ (देवपूजा-स्मृति संग्रह)
ॐ सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुं॥ (ऋग्वेद १०.९०.१५)
ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्॥ (ऋग्वेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)
सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। प्रदक्षिणा नमस्कारान् समर्पयामि।

प्रसन्नार्घ्य—ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि। तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्॥ इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यम् (कहकर तीन बार पुष्पमिश्रित जल

छोड़ें।)

सर्वोपचार पूजनम्—ॐ छत्रं समर्पयामि। चामरेण वीजयामि। गीतं गायामि। नाट्यं नटामि। आंदोळिकामारोहयामि। अश्वमारोहयामि। गजमारोहयामि। समस्य राजोपचार देवोपचार पूजां समर्पयामि।

ॐ यज्ञेनं यज्ञमंयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यांसन्।
तेह नाकं महिमानंः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्तिं देवाः॥ (ऋग्वेद १०.९०.१६)
ॐ यः शुचिः प्रयंतो भूत्वा जुहुयांदाज्यमन्वंहम्। सूक्तं पंचदशर्चं च श्रीकामः सततं जंपेत्॥ (ऋग्वेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। सवोपचार पूजां समर्पयामि।

प्रार्थना—विष्णुं जिष्णुं महाविष्णुं प्रभविष्णुं महेश्वरम्। अनेकोत्पात शमनं नमामि पुरुषोत्तमम्॥

ॐ कायेन वाचा मनसे न्द्रियैर्वा बुध्यात्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि॥ (पौराणिकम्)
ॐ ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविः ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्। ब्रह्मैव तेन गंतव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना॥ (श्री भगवद्गीते)

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। **अनेन पूजनेन सपरिवारः श्री विष्णुः प्रीयताम्।**

नवग्रहषोडशोपचार पूजन

ध्यायामि। ध्यानं समर्पयामि।

ॐ सहस्त्रंशीर्षा पुरुंषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रंपात्। स भूमिं विश्वतों वृत्वाऽत्यंतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥ (ऋग्वेद १०.९०.१)

ॐ हिरंण्य वर्णां हरिंणीं सुवर्णरजतस्त्रंजाम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वंह॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रहमण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, आवाहनं समर्पयामि।

ॐ पुरुंष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भव्यंम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहंति॥ (ऋग्वेद १०.९०.२)

ॐ तां म आवंह जातवेदो लक्ष्मीमनंपगामिनीम्। यस्यां हिरंण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रहमण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, आसनं समर्पयामि।

ॐ एतावानस्य महिमाऽतो ज्यायाँश्च पूरुंषः। पादोंऽस्य विश्वां भूतानिं त्रिपादंस्यामृतं दिवि॥ (ऋग्वेद १०.९०.३)

ॐ अश्वपूर्वां रंथमध्यां हस्तिनाद प्रमोदिनीम्। श्रियं देवी मुपंह्वये श्रीर्मा देवी जुंषताम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, पादारविंदयोः पाद्यं पाद्यं समर्पयामि।

ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत् पुरुंषः पादोंऽस्येहा भंवत् पुनंः। ततो विष्वं व्यंक्रामत् साशनानशने अभि॥ (ऋग्वेद १०.९०.४)

ॐ कां सोस्मितां हिरंण्य प्राकारांमार्द्रां ज्वलंन्तीं तृप्तां तर्पयंन्तीम्। पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपंह्वये श्रियम्।

(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहितदेवताभ्यो नमः, हस्तयोः अर्घ्यमर्घ्यं समर्पयामि।

ॐ तस्मांद् विराळंजायत विराजो अधिपूरुंषः। सजातो अत्यंरिच्यत पश्चाद् भूमिमथों पुरः॥ (ऋग्वेद १०.९०.५)

ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलंन्ती श्रियं लोके देवजुंष्टामुदाराम्।

तां पद्मिनीमीं शरंणमहं प्रपंद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः। मुखे आचमनीयं समर्पयामि।

पञ्चामृत स्नानम् पयः (दूध)—ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्णियं। भवावाजस्य सङ्गथे। (ऋग्वेद १.९१.१६)
ॐनवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, पयः स्नानं समर्पयामि। दूध से स्नान के बाद शुद्धोदक स्नान

ॐ उद्यन्नद्य मित्रमह आरोहन्नुत्तरां दिवम्। हृद्रोगं मम सूर्य हरिमाणं च नाशय॥ (ऋग्वेद १.५०.११)

ॐनवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः। पयः स्नानांते शूद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

दधि (दहि)—ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभिनोमुखा करत्प्रण आयूंषि तारिषत्॥ (ऋग्वेद ४.३९.६)
ॐनवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, दधि स्नानं समर्पयामि। दहि स्नान के बाद शुद्धोदक स्नान

ॐ शुकेषु मे हरिमाणं रोपणाकासु दध्मसि। अथो हारिद्रवेषु मे हरिमाणं निदध्मसि॥ (ऋग्वेद १.५०.१२)

ॐनवग्रह मंडलस्थ आवाहितदेवताभ्यो नमः, दधि स्नानांते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

घृत (घी)—ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्ययोनिर्घृते श्रितो घृतं वस्य धाम।
अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभवक्षि हव्यम्॥ (ऋग्वेद २.३.११)
ॐनवग्रह मंडलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, घृत स्नानं समर्पयामि। घी स्नान के बाद शुद्धोदक स्नान

ॐ उदगादयमादित्यो विश्वेन सहसा सह। द्विषन्तं मह्यं रन्धयन् मो अहं द्विषते रधम्॥ (ऋग्वेद १.५०.१३)

ॐनवग्रह मंडलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, घृतस्नानांते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

मधु (शहद)—ॐ मधुवाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः॥
ॐ मधुनक्तमुतोषसो मधुमत् पार्थिवं रजः। मधुद्यौरस्तु नः पिता॥
ॐ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥ (ऋग्वेद १.९०.६-७-८)

ॐ नवग्रहमंडलस्थ आवाहितदेवताभ्यो नमः, मधु स्नानं समर्पयामि।

ॐ चित्रं देवानामुदंगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च॥

(ऋग्वेद १.११४.१)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहितदेवताभ्यो नमः, मधु स्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

शर्करा (शक्कर)—ॐ स्वादुः पवस्व दिव्याय जन्मने स्वादुरिन्द्राय सुहवीतु नाम्ने।
स्वादुर्मित्राय वरुणाय वायवे बृहस्पतये मधुमाँ अदाभ्यः॥ (ऋग्वेद ९.८५.६)

ॐ नवग्रह मंडलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, शर्करास्नानं समर्पयामि।

ॐ आकृष्णेन रजसावर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेनाऽदेवो याति भुवनानि पश्यन्॥

(ऋग्वेद १.३५.२)

ॐ नवग्रहमण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, शर्करास्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पायाश्च पुष्पिणीः। बृहस्पति प्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्वं हसः॥ (ऋग्वेद १०.९७.१५)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, फलस्नानं समर्पयामि।

ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवस्तानं ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे॥
यो वः शिवतमोरसस्तस्य भाजयते हनः। उशतीरिव मातरः॥
तस्मा अरंगमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः॥ (ऋग्वेद १०.९.१-२-३)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, फल स्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेनाऽऽदेवो याति भुवनानि पश्यन्॥

ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य सङ्गथे ॥ (ऋग्वेद १.९१.१६)

ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपां रेतांसि जिन्वति ॥ (ऋग्वेद ८.४४.१६)

ॐ उद्बुध्यध्वं समनसः सखायः समग्निमिन्ध्वं बहवः सनीळाः।
दधिक्रामग्निमुषसं च देवीमिन्द्रावतोऽवसे नि ह्वये वः ॥ (ऋग्वेद १०.१०१.१)

ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।
यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ॥ (ऋग्वेद २.२३.१५)

ॐ शुक्रं ते अन्यद्यजतं ते अन्यद्विषुरूपे अहनी द्यौरिवासि।
विश्वा हि माया अवसि स्वधावो भद्रा ते पूषन्निह रातिरस्तु ॥ (ऋग्वेद ६.५८.१)

ॐ शमग्निरग्निभिः करच्छं नस्तपतु सूर्यः। शं वातो वात्वरपा अप स्निधः ॥ (ऋग्वेद ८.१८.९)

ॐ कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता ॥ (ऋग्वेद ४.३१.१)

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः ॥ (ऋग्वेद १.६.३)

ॐ तच्छं य्योरावृणीमहे गातुं यज्ञाय गातुं यज्ञपतये। दैवी स्वस्तिरस्तु नः। स्वस्तिर्मानुषेभ्यः।
ऊर्ध्वं जिगातु भेषजम् शंनो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे ॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तो अस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ॥ (ऋग्वेद १०.९०.६)

ॐ आदित्यवर्णो तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, शुद्धोदकस्नानं सपर्मयामि। शुद्धोदक स्नान मंत्रों के तीन प्रकार प्रचलित है।

प्रथम क्रम में—६ ग्रह- ६ अधिदेवता-६ प्रत्यधिदेवता ६ कर्म साद्गुण्य देवता, ८ क्रतु संरक्षक देवता कुल मिलाकर ४१ देवताओं का मंत्र पठन करके शुद्धोदक स्नान करना चाहिये। सभी मंत्र आवाहन में है। नवग्रह यागादियों में इसका प्रयोग होता है। जहाँ कलश पूजन के लिए ही एक पण्डित नियुक्त हो वहाँ भी इसे कर सकते हैं।

द्वितीय क्रम में—६ ग्रह+६ अधिदेवता+६ प्रत्यधिदेवता कुलमिलाकर २७ देवताओं का मंत्र पठन करके शुद्धोदक स्नान कराना चाहिये।

तृतीय क्रम में—६ ग्रहों का मंत्र पठन करके शुद्धोदक स्नान कराना चाहिये।

वस्त्रम्— **ॐ युवं वस्त्राणि पीवसावसाथे युवोरच्छिद्रा मन्तवो ह सर्गाः।**
अवातिरतमनृतानि विश्वऋतेन मित्रा वरुणा सचेथे। *(ऋग्वेद १.१५२.१)*
ॐ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः। तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये॥ *(ऋग्वेद १०.६०.७)*
ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, वस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतम्—**ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥**
ॐ तस्माद् यज्ञात् सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम्। पशून्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्यान् ग्राम्याश्च ये॥ *(ऋग्वेद १०.६०.८)*
ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि, आचमनं समर्पयामि।

आभरणम्—**ॐ हिरण्यरूपः स हिरण्यसन्दृगपान्नपात् सेदु हिरण्यवर्णः। हिरण्ययात् परियोनेर्निषद्या हिरण्यदा ददत्यन्नमस्मै॥**
(ऋग्वेद २.३५.१०)

ॐ नवग्रह मराडलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, आभरणं समर्पयामि।

गन्धम्—ॐ तस्मा॑द् य॒ज्ञात् स॑र्व॒हुत॒ ऋच॒ः सामा॑नि जज्ञिरे। छंदां॑सि जज्ञिरे॒ तस्मा॒द् यजु॒स्तस्मा॑दजायत॥ (ऋग्वेद १०.९०.९)

ॐ गंधद्वा॒रां दु॑राध॒र्षां नि॒त्यपु॑ष्टां करी॒षिणी॑म्। ईश्व॒रीं सर्व॑भूता॒नां तामि॒होप॑ह्वये॒ श्रियम्॥ (पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रहमराडलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, गन्धं समर्पयामि।

अक्षतम्—ॐ अर्चं॑त॒ प्रार्चं॑त॒ प्रियमेधासो॒ अर्चत। अर्चंन्तु पुत्र॒का उ॒तपुर॒न्न धृष्णवर्चत॥ (ऋग्वेद ८.६९.८)

ॐ नवग्रह मराडलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पाणि—ॐ आयने ते प॒राय॑णे दर्वा॑रोहन्तु पु॒ष्पिणीः। हृदाश्च॑ पुराडरीका॑णि समु॒द्रस्य॑ गृ॒हा इमे॥ (ऋग्वेद १०.१४२.८)

ॐ तस्मा॒दश्वा॑ अजायन्त॒ ये के च॑ो॑ भ॒यादंतः। गावो॑हजज्ञिरे॒ तस्मा॒त् तस्मा॑ज्जा॒ता अ॑जा॒ वयः॥ (ऋग्वेद १०.९०.१०)

ॐ मन॑सः काम॒माकू॑तिं वा॒चः स॒त्यम॑शीमहि। प॒शूनां रूपमन्न॒स्य॒ मयि॒ श्रीः श्र॑यतां॒ यशः॥ (ऋग्वेद - पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रह मराडलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, पुष्पाणि समर्पयामि।

नाम पूजा

ॐ सहस्रकिरणाय नमः। ॐ सूर्याय नमः। ॐ तपनाय नमः। ॐ सवित्रे नमः। ॐ रवये नमः। ॐ विकर्तनाय नमः। ॐ जगच्चक्षुषे नमः। ॐ द्युमणये नमः। ॐ तिग्मदीधितये नमः। ॐ त्रयीमूर्तये नमः। ॐ द्वादशात्मने नमः। ॐ ब्रह्माविष्णुशिवात्मकाय नमः। ॐ आदित्याय नमः। ॐ अग्नये नमः। ॐ रुद्राय नमः। ॐ चन्द्रमसे नमः। ॐ अद्भ्यो नमः। ॐ गौर्यै नमः। ॐ अङ्गारकाय नमः। ॐ भूम्यै नमः। ॐ स्कन्दाय नमः। ॐ बुधाय नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ पुरुषाय नमः। ॐ बृहस्पतये नमः। ॐ इंद्राय नमः। ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ शुक्राय नमः। ॐ इंद्राण्यै नमः। ॐ इंद्राय नमः। ॐ शनैश्चराय नमः। ॐ प्रजापतये नमः। ॐ यमाय नमः। ॐ राहवे नमः। ॐ सर्पेभ्यो नमः। ॐ मृत्यवे नमः। ॐ केतवे नमः। ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ चित्रगुप्ताय नमः। ॐ विनायकाय नमः। ॐ दुर्गायै नमः।

ॐ क्षेत्रपालाय नमः। ॐ वायवे नमः। ॐ आकाशाय नमः। ॐ अश्विभ्यां नमः। ॐ इन्द्राय नमः। ॐ अग्नये नमः। ॐ यमाय नमः। ॐ निर्ऋतये नमः। ॐ वरुणाय नमः। ॐ वायवे नमः। ॐ सोमाय नमः। ॐ ईशानाय नमः। ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, नाम पूजां समर्पयामि।

धूपः— **वनस्पति रसोत्पन्नो गन्धाढ्यः सुमनोहरः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥**
ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्य कौ बाहू का ऊरू पादा उच्येते॥ (ऋग्वेद १०.९०.११)
ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम। श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥ (ऋग्वेद - पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, धूपं आघ्रापयामि।

दीपं— **साज्यं त्रिवर्ति संयुक्तं वह्निना योजितं मया। गृहाण मङ्गलं दीपं त्रैलोक्यतिमिरापह॥**
ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत॥ (ऋग्वेद १०.९०.१२)
ॐ आपः स्रजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत व स मे गृहे। नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥ (ऋग्वेद - पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, दीपं दर्शयामि। धूपदीपानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि।

नैवेद्यं—नैवेद्य रखने के स्थल पर मण्डल बनायें (चतुरस्र) नैवेद्य को मण्डल पर रखने के बाद मंत्र पढ़ें। विश्वामित्र ऋषिः देवी गायत्री छन्दः, सविता देवता निवेदने विनियोगः। एक बार नैवेद्य पर गायत्री मंत्र से प्रोक्षण करें। सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि इस मंत्र से दिन में एवं **ऋतं त्वा सत्येन परिषिञ्चामि**। इस मंत्र से रात्रि में परिषिञ्चन करें।

यथा संभव नैवेद्यं निरीक्षस्व कहकर प्रार्थना कर **अमृतोपस्तरणमसि** मन्त्र से जल छोड़ें। बायें हाथ से ग्रास मुद्रा (जैसे बछड़े को घास खिलाते हैं) एवं दाहिने हाथ से निम्न मुद्राओं से देवताओं को नैवेद्य अर्पण करें। मन में कल्पना करें कि भगवान को खिला रहे हैं। प्राणाय स्वाहा। अपानाय स्वाहा। व्यानाय स्वाहा। उदानाय स्वाहा। समानाय स्वाहा। ॐ घृणिः सूर्य आदित्यः-इस मूल मंत्र को आठ बार जप करें।

ॐ स्वादुः पवस्व दिव्याय जन्मने स्वादुरिन्द्राय सुहवीतु नाम्ने।

स्वादुर्मित्राय वरुणाय वायवे बृहस्पतये मधुमाँ अदाभ्यः ॥ (ऋग्वेद ९.८५.६)

ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो आजायत। मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरजायत ॥ (ऋग्वेद १०.९०.१३)

ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥ (ऋग्वेद - पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

यथा सम्भवं नैवेद्यं निवेदयामि। अमृतापिधानमसि। कहकर उत्तरापोशण जल दें। उत्तरापोशनार्थं जलं समर्पयामि। हस्तप्रक्षालनार्थे जलं समर्पयामि। गण्डूषार्थे जलं समर्पयामि। शुद्धाचमनार्थे जलं समर्पयामि। करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि।

ताम्बूलम्—पूगीफलसमायुक्तं नागवल्ल्यादलैर्युतम्। चूर्ण कर्पूर संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, क्रमुक ताम्बूलं समर्पयामि। ताम्बूल के पश्चात् नीराजन करें।

ॐ अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत। अर्चन्तु पुत्रका उत पुरं न घृष्णवर्चत ॥ (ऋग्वेद ८.६९.८)

ॐ श्रिये जातः श्रिय आनिरियाय श्रियं वयो जरितृभ्यो दधाति।
श्रियं वसाना अमृतत्वमायन् भवन्ति सत्या समिथा मितद्रौ ॥ (ऋग्वेद ९.९४.४)

ॐ ध्रुवाद्यौ ध्रुवापृथिवी ध्रुवासः पर्वता इमे। ध्रुवं विश्वमिदं जगद् ध्रुवो राजा विशामयम् ॥

ॐ ध्रुवं ते राजा वरुणो ध्रुवं देवो बृहस्पतिः। ध्रुवं त इन्द्रश्चाग्निश्च राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम् ॥ (ऋग्वेद १०.१७३.४-५)

ॐ नवग्रह मडलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, मङ्गल नीराजनं दर्शयामि।

मन्त्र पुष्पः—ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च।
हिरण्ययेन सविता रथेनाऽऽदेवो याति भुवनानि पश्यन् ॥ (ऋग्वेद १.३५.२)

ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य सङ्गथे ॥ (ऋग्वेद १.९१.१६)

ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपां रेतांसि जिन्वति। (ऋग्वेद ८.४४.१६)

ॐ उद्बुध्यध्वं समनसः सखायः समग्निमिंध्वं बहवः सनीळाः।
दधिक्रामग्निमुषसं च देवीमिन्द्रावतोऽवसे निह्वये वः॥ (ऋग्वेद १०.१०१.१)

ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।
यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहिचित्रम्॥ (ऋग्वेद २.२३.१५)

ॐ शुक्रं ते अन्यद्यजतं ते अन्यद्विषुरूपे अहनीद्यौरिवासि।
विश्वा हि माया अवसि स्वधावो भद्रा ते पूषन्निह रातिरस्तु॥ (ऋग्वेद ६.५८.१)

ॐ शमग्निरग्निभिः करच्छनस्तपतु सूर्यः। शं वातो वात्वरपा अपस्त्रिधः॥ (ऋग्वेद ८.१५.६)

ॐ कयानश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥ (ऋग्वेद ४.३१.१)

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशोमर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः॥ (ऋग्वेद १.६.३)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, मंत्रपुष्पं समर्पयामि।

प्रदक्षिणा नमस्कारः—यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च। तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे पदे॥

ॐ सप्तास्यां सन् परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम्॥ (ऋग्वेद १०.९०.१५)

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्।
(ऋग्वेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रहमण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, प्रदक्षिणा नमस्कारान् समर्पयामि।

प्रसन्नार्घ्यः—ॐ प्रभाकराय विद्महे दिवाकराय धीमहि। तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्॥ ॐ अत्रिपुत्राय विद्महे अमृतोद्भवाय धीमहि। तन्नः सोमः प्रचोदयात्॥

ॐभूमिपुत्राय विद्महे भारद्वाजाय धीमहि। तन्नः कुजः प्रचोदयात्॥ ॐतारापुत्राय विद्महे सोमपुत्राय धीमहि। तन्नो बुधः प्रचोदयात्॥ ॐदेवाचार्याय विद्महे वाचस्पतये धीमहि। तन्नो गुरुः प्रचोदयात्॥ ॐदैत्याचार्याय विद्महे विद्यारूपाय धीमहि। तन्नः शुक्रः प्रचोदयात्॥ ॐसूर्यपुत्राय विद्महे शनैश्चराय धीमहि। तन्नो मंदः प्रचोदयात्॥ ॐसैंहिकेयाय विद्महे तमोमयाय धीमहि। तन्नो राहुः प्रचोदयात्॥ ॐब्रह्मपुत्राय विद्महे विकृतास्याय धीमहि। तन्नः केतुः प्रचोदयात्॥ ॐनवग्रह मराडलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यं, प्रसन्नार्घ्यं समर्पयामि।

सर्वोपचार पूजनम्—ॐछत्रं समर्पयामि। चामरेण वीजयामि। गीतं गायामि। नाट्यं नटामि। आन्दोळिकामारोहयामि। अश्वमारोहयामि। गजमारोहयामि। समस्त राजोपचार देवोपचारपूजां समर्पयामि।

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।

तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥ *(ऋग्वेद १०.९०.१६)*

ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्। सूक्तं पंचदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्॥ *(ऋग्वेद-पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)*

ॐनवग्रह मराडलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, सर्वोपचारपूजां समर्पयामि।

प्रार्थना— **ग्रहाणामादिरादित्यो लोकरक्षणकारकः। विषमस्थानसंभूतां पीडां हरतु ते रविः॥**
रोहिणीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रः सुधाशनः। विषमस्थानसंभूतां पीडां हरतु ते विधुः॥
भूमिपुत्रो महातेजा जगतां भयकृत्सदा। वृष्टिकृद्वृष्टिहर्ता च पीडां हरतु ते कुजः॥
उत्पातरूपो जगतां चन्द्रपुत्रो महाद्युतिः। सूर्य प्रियकरो विद्वान् पीडां हरतु ते बुधः॥
देवमन्त्री विशालाक्षः सदालोकहितेरतः। अनेक शिष्य संपूर्णः पीडां हरतु ते गुरुः॥
दैत्यमन्त्री गुरुस्तेषां प्राणदश्च महामतिः। प्रभुस्ताराग्रहाणां च पीडां हरतु ते भृगुः॥

सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः। मंदचारः प्रसन्नात्म पीडां हरतु ते शनिः॥
महाशिरा महावक्त्रौ दीर्घदंष्ट्रो महाबलः। अतनुश्चोर्ध्व केशश्च पीडां हरतु ते तमः॥
अनेक रूपवर्णौश्च शतशोथ सहस्त्रशः। उत्पातरूपो जगतः पीडां हरतु ते शिखी॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

आरोग्यं पद्मबन्धुर्वितरतु विपुलां संपदं शीतरश्मिः, भूलाभं भूमिपुत्रः सकलगुणयुतां वाग्विभूतिं च सौम्यः। सौभाग्यं देवमन्त्री रिपुभयशमनं भार्गवः शौर्यमार्किः, दीर्घायुस्सैंहिकेयो विपुलतरयशः केतुराचन्द्रतारम्॥ शान्तिरस्तु। शिवं ते अस्तु। ग्रहाः कुर्वन्तु मङ्गलम्। अरिष्टानि प्रणश्यन्तु। दुरितानि भयानि च। ॐ नवग्रहमण्डलस्थ देवताभ्यो नमः, प्रार्थनां समर्पयामि। अनेन कृत पूजनेन आदित्यादि नवग्रहदेवताः प्रीयन्ताम्॥

यहाँ पर नवग्रह पूजन समाप्त हुआ। मण्डप में कलशों का पूजन भी संपूर्ण हुआ।

षष्ठ दिन द्वितीय प्रहर

देह शुद्धि—येभ्यो मातेत्यस्य गयःप्लात ऋषिः। विश्वेदेवा देवताः। जगतीछन्दः। एवापित्रेत्यस्य वामदेव ऋषिः। बृहस्पतिर्देवता। त्रिष्टुप् छन्दः। मनुष्य गन्ध निवारणे विनियोगः।

ॐ येभ्यों मातामधुंमत् पिन्वंते पयंः पीयूषं द्यौरदिंतिरद्रिंबर्हाः।

उक्थशुंष्मान् वृषभरान्त्स्वप्नंसस्ताँ आदित्याँ अनुंमदास्वस्तयें॥ *(ऋक्वेद १०.६३.३)*

ॐ एवापित्रे विश्वदेंवाय वृष्णों यज्ञैर्विधेम नमंसा हविर्भिः।

बृहस्पते सुप्रजा वीरवन्तो वयं स्याम पतयो रयीणाम्॥ (ऋक्वेद ४.५०.६)

आचमन मन्त्र—ऋग्वेदाय स्वाहा। यजुर्वेदाय स्वाहा। सामवेदाय स्वाहा। (स्वाहा मन्त्र से जल पीना चाहिये।) अथर्ववेदाय नमः। इतिहास पुराणेभ्यो नमः। अग्नये नमः। वायवे नमः। प्राणाय नमः। सूर्याय नमः। चन्द्राय नमः। दिग्भ्यो नमः। इन्द्राय नमः। पृथिव्यै नमः। अन्तरिक्षाय नमः। दिवे नमः। ब्रह्मणे नमः। विष्णवे नमः। सदाशिवाय नमः। द्विराचम्य .. इस प्रक्रिया को दुबारा करना चाहिये।

पवित्र धारणम्—पवित्रन्त इत्यनयोः आङ्गीरसः पवित्र ऋषिः। पवमानः सोमो देवता। जगतीछन्दः। पवित्राभिमंत्रणे, धारणे विनियोगः।

ॐ पवित्रन्ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि विश्वतः।
अतप्ततनूर्न तदामो अश्नुतेशृता सइद्वहन्तस्तत् समाशत॥ (ऋग्वेद ६.८३.१)
ॐ तपोष्पवित्रं विततं दिवस्पदे शोचन्तो अस्य तन्तवो व्यस्थिरन्।
अवन्त्यस्य पवीतारं माशवो दिवस्पृष्ठमधितिष्ठन्ति चेतसा॥ (ऋग्वेद ६.८३.२)

ॐभूर्भुवः स्वः कहकर जल सिञ्चन करें॥ (इन मन्त्रों से पवित्र शुद्धिकर धारण करना चाहिये आसन के नीचे दो कुश डाल लेना चाहिये।)

प्राणायाम—प्रणवस्य परब्रह्म ऋषिः, दैवी गायत्री छन्दः, परमात्मा देवता प्राणायामे विनियोगः।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योतीरसोमृतं ब्रह्म भूर्भुवस्वरोम्। (ऋग्वेद ३.६२.१०)

(रेखङ्कित मन्त्र को तीन बार कुम्भक में जप करना चाहिये।)

आसन शुद्धि—ॐ स्योना पृथिवि भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथः।' *(१५ मन्त्र-२२ सूक्त-प्रथम मण्डल)* इस मन्त्र से जल प्रोक्षण करने से भूमि शुद्ध होती है।

शिखाबन्धनम्—

ऊर्ध्वकेशि विरूपाक्षि मांसशोणित भक्षणे। तिष्ठ देवि शिखाबन्धे चामुण्डे ह्यपराजिते॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*
(इस मन्त्र से शिखाबन्धन करना चाहिये।)

महा संकल्प —..........

गुरू प्रार्थना —

नमो गुरुभ्यो गुरुपादुकाभ्यो नमः परेभ्यः परपादुकाभ्यः।
आचार्य सिद्धेश्वर पादुकाभ्यो नमोऽस्तु लक्ष्मीपति पादुकाभ्यः॥ *(श्रृङ्गेरी मठीय आचार्य प्रार्थनम्)*

श्री गुरु परमगुरु परमेष्ठी गुरु सद्गुरु पादुकाभ्यो नमो नमः।

हवन कुण्ड में

स्थंडिल शुद्धिः—तद् गोमयेन प्रदक्षिणामुपलिप्य दक्षिणे उदीच्यां द्वे, प्रतीच्यां चतुः, प्राच्यामर्ध इत्यंगुलानित्यक्त्वा दक्षिणोपक्रमां उदक्संस्थां प्रादेशमात्रां एकां लेखां तस्या दक्षिणोत्तरयोः प्रागायते पूर्वरेखया असंसृष्टे प्रादेशसंमिते द्वे लेखे लिखित्वा तयोर्मध्ये परस्परं असंसृष्टाः उदक्संस्थाः प्रागायताः प्रादेश संमिताः तिस्रः इति षड्लेखाः यज्ञीय शकलमूलेन दक्षिण हस्तेन उल्लिख्य लेखासु तच्छकलं उदगग्रं निधाय स्तंडिलं अद्भिः अभ्युक्ष्य शकलं भंक्त्वा आग्नेय्यां निरस्य पाणिं प्रक्षाल्य वाग्यतः भवेत्।

स्थण्डिल को पहले गोमय से लेपना चाहिये। स्थण्डिल (वेदी) में दक्षिण में आठ अंगुल, उत्तर में दो अंगुल, पश्चिम में चार अंगुल, पूर्व में आधा अंगुल

छोड़कर दक्षिण से प्रारम्भकर उत्तर में समाप्त हो ऐसे १२ अंगुल चौक बनाना चाहिये। फिर बीच में दक्षिण से उत्तर एक रेखा खींचना चाहिये। १२ अंगुल फिर दक्षिण से प्रारम्भ कर एक दक्षिण में एवं एक उत्तर में दो रेखायें पश्चिम से पूर्व की ओर खीचें १२ अंगुल बी फिर दक्षिण से प्रारम्भकर दक्षिण में समाप्त होने वाले पश्चिम से पूर्व में समाप्त होने वाले तीन रेखायें। (१२ अंगुल) खीचें। (प्रादेश प्रमाण-लगभग १२ अंगुल) (ब) इसे यज्ञ में प्रयुक्त अश्वत्थादि समित् के अग्रभाग से इन लकीरों को खीचना चाहिये। दाहिने हाथ से लिखें। (रेत पर) खीचने वाले समित् को उसके ऊपर उत्तर उत्तराभिमुख रखें। फिर स्थण्डिल (stage) को जल से अभ्युक्षण करना चाहिये। (अभ्युक्षण मतलब मुष्टि में जल लेकर सिञ्चन करना चाहिये।) फिर उस समित् को (लकीर खीचें) तोडकर आग्नेय दिशा में फेंककर हाथ धो लेना चाहिये।

अग्नि प्रतिष्ठा—यहाँ तक होम वेदी निर्माण विधि, होम वेदी पर देवताओं का आवाहन पूजन संपन्न हुआ। आगे अग्नि प्रतिष्ठा विधान वर्णित है। ततः तैजसेन असंभवे मृन्मयेन वा पात्रयुग्मेन संपुटीकृत्य सुवासिन्या श्रोत्रियागारात् स्वगृहाद्वा समृद्धं निर्धूमं अग्निं आहतं स्थंडिलात् आग्नेय्यां निधाय। उसके बाद लोहपात्र में (संभव हो तो ताम्र पात्र में) यदि न हो तो मिट्टी के पात्र में श्रोतियों के घर से या अपने घर से लाकर, धुऐं रहित अंगारों को पात्र में रखकर दूसरे पात्र से ढक्कर लाना चाहिये। लाए हुए अग्निपात्र को स्थण्डिल होमवेदी के आग्नेय दिशा में रखना चाहिये।

एह्यग्नेराहूगणोगोतमोग्निस्त्रिष्टुप् अग्न्याह्वाने विनियोगः। एह्यंग्नइहहोता निषीदादंब्धः सुपुंर एताभंवानः॥
अवंतांत्वारोदंसीविश्वमिन्वेयजांमहे सौंमनसायं देवान्। *(ऋग्वेद १.७६.२)*

जुष्टोदमूना आत्रेयोवसुश्रुतोग्निस्त्रिष्टुप् अग्निनमस्कारे विनियोगः॥

ॐ जुष्टोदमूंनाअतिंथिर्दुरोण इमं नों यज्ञमुपंयाहि विद्वान्। विश्वांअग्ने अभियुजों विहत्यां शत्रूयतामाभंराभोजंनानि॥
(ऋग्वेद ५.४.५)

पहले मन्त्र से अग्नि देव को आह्वन करें। एवं दूसरे मंत्र से नमस्कार करें। **आच्छादनं दूरीकृत्य** फिर ऊपर ढके पात्र को निकालें।

समस्तव्याहृतीनां परमेष्ठीप्रजापतिः प्रजापतिर्बृहती। अग्निप्रतिष्ठापने विनियोगः।

ॐभूर्भुवः स्वः। इति आत्माभिमुख पाणिभ्यां षट्सुलेखासु अमुक नामानमग्निं प्रतिष्ठापयामि इति अग्निं प्रतिष्ठाप्य। ऊपर के मन्त्र कहकर अग्नियुक्त पात्र को

अपने सामने हाथों में पकडकर एक बार पदक्षिरा कर जो ६ रेखायें है, उन पर कर्माङ्ग देवता नामक अग्नि को प्रतिष्ठापित कर रहा हूँ कहकर रखना चाहिये। रखते समय हाथ कर्तरी शकल में होना चाहिये। कैची जैसे अग्न्याहरण पात्रयोः अक्षतैः सह उदकमासिच्य इन्धनंप्रोक्ष्य वेणु धमन्या प्रबोधयेत्। अग्नि लायें दोनों पात्रों में अक्षत डालकर जल सींचकर उसे बाहर कर देवें। फिर लकडियों को जल से प्रोक्षण कर बॉस की या लोहे की धमनी फूकनी से फूंककर अग्नि को प्रज्वलित करें। अग्निनाग्निः काण्वोमेधातिथिः अग्निर्गायत्री अग्नि समिन्धने विनियोगः।

ॐ अग्निनाग्निः समिंध्यते कविर्गृहपंतिर्युवां। हव्यवाड्जुह्वास्यः।

विज्ज्योतिषेति जानो वृषोग्निस्त्रिष्टुप् अग्नि ज्वलने विनियोगः।

ॐ विज्ज्योतिंषा बृहता भांत्यग्निराविर्विश्वांनि कृणुते महित्वा।
प्रादेवीर्मायाः संहते दुरेवाः शिशींते शृंगेरक्षंसे विनिक्षें। *(ऋग्वेद ५.२.६)*

इन मन्त्र से अग्नि ज्वलन करना चाहिये।

अग्निमूर्तिध्यान—चत्वारिशृंगागोतमो वामदेवोग्निस्त्रिष्टुप्। अग्निमूर्ति ध्याने विनियोगः।

ॐ चत्वारि शृंगात्रयों अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्तहस्तांसो अस्य। त्रिधांबद्धो वृषभोरोंरवीति महोदेवो मर्त्याँआविवेश॥
सप्तहस्तश्चतुः शृंगः सप्तजिह्वो द्विशीर्षकः। त्रिपात्प्रसन्नवदनः सुखासीनः सुचिस्मितः॥
स्वाहांतुदक्षिणेपार्श्वे देवीं वामेस्वधां तथा। बिभ्रद्दक्षिण हस्तैस्तु शक्तिमन्नंस्त्रुचं स्त्रुवं॥
तोमरंव्यजनंवामैर्घृतपात्रं च धारयन्। मेषारूढो जटाबद्धो गौरवर्णो महौजसः।
धूम्रध्वजो लोहिताक्षः सप्तार्चिः सर्वकामदः॥ आत्माभिमुख मासीन एवं रूपो हुताशनः। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-अग्निमुख प्रकरण)*

इन मन्त्रों को पढकर ध्यान करें। अग्ने अच्छावदेत्यस्य मन्त्रस्य अग्निस्तापसोग्निरनुष्टुप् अग्नि स्वाभिमुखीकरणे विनियोगः।

ॐ अग्ने अच्छावदेहनः प्रत्यङ्नः सुमना भव। प्रनोयच्छ विशस्पते धनदा असि नस्त्वम्॥ *(ऋग्वेद १०.१४१.१)*

ॐ एष हि देवः प्रदिशो नु सर्वाः पूर्वो हि जातस्य उ गर्भे अंतः।

स विजायमानस्य जनिष्यमाणः प्रत्यङ्मुखास्तिष्टति विश्वतोमुखः॥ *(यजुर्वेद-आरण्यक-महानारायणोपनिषत्)*

हे अग्ने शाण्डिल्यगोत्र मेषारूढ वैश्वानर प्राङ्मुखः सन् ममाभिमुखो वरदस्सुप्रसन्नो भव। इतना कहकर ध्यसान से सम्मुख करके अन्वाधान करें।

अन्वाधान—अन्वाधानाभिधं कर्म क्रियते सर्वकर्मसु। निमन्त्रणार्थं देवानां होतव्यानां च होतृभिः॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

सभी कर्मों में अन्वाधान कर्म करना चाहिये। ऋत्विज अपने यज्ञ में जिन-जिन देवताओं को आहुतियाँ देते हैं उन्हें पहले बुलाकर सूचित करना चाहिये। यह क्रिया अन्वाधान कहलाता है। **आचम्य प्राणानायम्य देशकालौस्मृत्वा श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थ एतत् कर्म करिष्ये।** आचमन कर (यदि बीच में उठ के बार गये हो तो), प्राणायाम करके देशकालसंकीर्तन पूर्वक संकल्प लें। **तत्र देवता परिग्रहार्थं अन्वाधानं करिष्ये।** समित् द्वयं आदाय। (दो समितों को हाथ में लेकर) अस्मिन् अन्वाहितेग्नौ जातवेदसमग्निं इध्मेन प्रजापतिं प्रजापतिं चाघारदेवते आज्येन अग्नीषोमौचक्षुषी आज्येन। इन अग्नियों में जातवेदाग्नि को समित् से, आधार देवता प्रजापति एवं प्रजापति को घी से, चक्षुष् अग्नि सोम को घी से होम करना चाहिये। यह पूर्वाङ्ग है। सभी यज्ञों में इतना अन्वाधान होता है। आगे यज्ञों के अनुसार बदलता है।

जैसे सर्वाद्भुत शान्ति याग—अग्निं वायुं सूर्य प्रजापतिं च आज्यद्रव्येण प्रधान देवतां आदित्यं अधिदेवतामग्निं प्रत्यधिदेवतां रुद्रं अर्क समित् चर्वाज्य द्रव्यैः प्रधान देवतां सोमं अधिदेवतां अपः प्रत्यधिदेवतां गोरीं, पलाशसमित् चर्वाज्य द्रव्यैः, प्रधान देवतां अंगारकं अधिदेवतां भूमिं, प्रत्यधिदेवतां स्कन्दं खदिरसमित् चर्वाज्य द्रव्यैः, प्रधान देवतां बुधं, अधिदेवतां विष्णुं प्रत्यधिदेवतां पुरुषं अपामार्ग समित् चर्वाज्य द्रव्यैः, प्रधान देवतां बृहस्पितिं, अधिदेवतां इन्द्रं, प्रत्यधिदेवतां, ब्रह्माणं पिप्पल समित् चर्वाज्य द्रव्यैः, प्रधान देवतां शुक्रं, अधिदेवतां इन्द्राणीं प्रत्यधिदेवतां इन्द्रं, औदुम्बर समित् चर्वाज्यद्रव्यैः प्रधानदेवतां शनिं अधिदेवतां प्रजापतिं प्रत्यधिदेवतां यमं, शमीसमित् चर्वाज्यद्रव्यैः, प्रधान देवतां राहुं अधिदेवतां सर्पान् प्रत्यधिदेवतां मृत्युं, दूर्वा समित् चर्वाज्य द्रव्यैः, प्रधान देवतां केतुं, अधिदेवतां ब्रह्माणं प्रत्यधिदेवतां चित्रगुप्तं कुशसमित् चर्वाज्य द्रव्यैः प्रधान देवताः अष्टाविंशति संख्यया अधिदेवताः प्रत्यधिदेवताः दशांशसंख्यया विनायकं दुर्गां क्षेत्रपालं वायुं आकाशं अश्विनौ क्रतु साद्गुण्य देवताः प्रधान विंशांश संख्यया इन्द्रं अग्निं यमं निर्ऋतिं वरुणं

वायुं कुबेरं ईशानं एताः क्रतुसंरक्षणदेवताः प्रागुक्त समित् चर्वाज्यद्रव्यैः प्रधान विंशांश संख्याया अग्निं वायुं सूर्यं प्रजापतिं च आज्यद्रव्येण, सर्वाद्भुत शान्ति होमे प्रधान देवतां विष्णुं अष्टोत्तर शतसंख्यया चरु द्रव्येण, विष्णुं महाद्भुताधिपतिं महाविष्णु ईश्वरं सर्वौत्पातशमनं अग्निं पृथिवीं महान्तं वायुमन्तरिक्षं महान्तं आदित्यं दिवं महान्तं प्रजापतिं चन्द्रमसं नक्षत्राणि दिशो महान्तं च एताः देवताः आज्य द्रव्येण एकैक संख्यया चरु शेषेणास्विष्टकृतमग्निं इध्मसन्नहनेन रुद्रं अयासमग्निं देवान् विष्णुं अग्निं, वायुं सूर्यं प्रजापतिं च एताः प्रायश्चित्त देवता आज्येन ज्ञाताज्ञात दोष निबर्हणार्थं त्रिवारमग्निं मरुतश्चाज्येन विश्वान् देवान् संस्रावेण एताः अङ्गदेवताः प्रधानदेवताः सर्वाः सन्निहिताः सन्तु एवं सांगोपाङ्गेन कर्मणा सद्यो यक्ष्ये।

॥ सर्वाद्भुत शान्ति याग का अन्वाधान समाप्त॥

परिसमूहन एवं पर्युक्षण—उपरोक्त क्रम से परिसमूहन पर परिस्तरण डालना चाहिये। वह इस प्रकार है। अग्न्यायतनाद् अष्टांगुल परिमिते देशे ऐशानीं दिशं आरभ्य प्रदक्षिणं संमतात् सोदकेन पाणिना त्रिः परिमृज्य दशांगुलमिते देशे प्राच्यादिषु पूर्वं उपरिनिहितदर्भैः परिस्तृणीयात्।

स्थण्डिले होम वेदी के आठ अंगुल बाहर ईशान्य दिशा से प्रारम्भकर प्रदक्षिणा क्रम से चारों ओर जलयुक्त हाथ से तीन बार परिमार्जन करें। स्थण्डिले होमवेदी के दस अंगुली बाहर पूर्व से प्रारम्भकर सभी दिशाओं में कुशों को बिछाना चाहिये।

तत्र प्राच्यां प्रतीच्यां च उदगग्रादर्भाः अवाच्यामुदीच्यां च प्रागग्राः पूर्वपश्चिमपरिस्तरणमूलयोरुपरि दक्षिणपरिस्तरणं उत्तरपरिस्तरणंतु तदग्रयोरधस्तात्। पूर्व एवं पश्चिम दिशा में कुशाग्र (कुश का आगे का भाग) उत्तराभिमुख हो, दक्षिण एवं उत्तर दिशा में कुशाग्र पूर्वाभिमुख होना चाहिये। पूर्व एवं पश्चिम दिशा की कुशों के (परिस्तरण) ऊपर दक्षिण का परिस्तरण, एवं पूर्व पश्चिम कुशों के परिस्तरण के नीचे उत्तर का परिस्तरण होना चाहिये। परिस्तरण कुशों के लिए कोई निश्चित संख्या नहीं हैं। अधिक उपलब्ध होने पर अधिक विछावे। कम होने पर चार-चार बिछायें। उतना ही न हो तो तीन-तीन बिछायें।

परिस्तृणात्यासनार्थं आशेशानां त्रिभिस्त्रिभिः। कुशैः प्रागादिदिक्ष्वत्र कृत्वा परिसमूहनम्॥ १॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

आशापालांस्तु शक्रादीनासनेषु समावहेत्। दिक्पालकों के आसन के लिए यह परिस्तरण बिछायें जाते हैं। एक-एक दिशा में तीन कुश डालना चाहिये। उन पर इन्द्रादि दिक्पालकों का आवाहन करना चाहिये।

ततो अग्नेर्दक्षिणतो ब्रह्मासनार्थं उत्तरतश्च पात्रासादनार्थं कांश्चित्प्रागग्रान् दर्भानास्तृणीयात्। *(आश्वलायन स्मृति)*

इसके पश्चात् अग्नि के दक्षिण दिशा में ब्रह्मा के आसन के लिए एवं उत्तर में यज्ञपात्रों को रखने के लिए कुछ कुशाग्रों को पूर्वाभिमुख बिछाना चाहिये। अग्नेरैशानतस्त्रिरंभसापरिषिच्य उत्तरास्तीर्णेषु दर्भेषु दक्षिणसव्यपाणिभ्यां क्रमेण चरु स्थाली प्रोक्षण्यौ, दर्वी स्रुवौ, प्रणीताज्यपात्रे, इध्माबर्हिषी इति द्वे द्वे पात्रे उदगपवर्ग प्राक्संस्थंयुब्जान्या सादयेत्। अग्नि के चारों ओर फिर से तीन बार ईशान्य से प्रदक्षिणाकार में परिषेचन करें।

ब्रह्मा का आवाहन् (अग्निमुखाङ्ग)— ततो यथोक्त लक्षणं ईशानदिग् अवस्थितं ब्राह्मणं अस्मिन् (सर्वाद्भुत शान्ति याग) कर्मणि ब्रह्माणं त्वामहं वृणे इति तत् पाणिं पाणिना गृहीत्वा वृणुयात्। उसके पश्चात् श्रेष्ठ लक्षणों से युक्त ईशान दिशा में उपविष्ट ब्राह्मण को इस याग कर्म में आपको मैं ब्रह्मा के रूप में वरण करता हूँ। कहकर हाथ पकडकर वरण करें।

ततः ब्रह्मा वृतोस्मि। कर्म करिष्यामि इति उक्त्वा प्राङ्मुखो तीर्थदेशे यज्ञोपवीत्यचाम्य समस्य पाण्यङ्गुष्ठो भूत्वा अग्रेणाग्निं दक्षिणापादपुरः सरं परीत्य दक्षिणतः उदङ्मुखः स्थित्वा आसनार्थ दर्भेषु दक्षिणभागस्थं एकं दर्भं अङ्गुष्टानामिकाभ्यां गृहीत्वा "**निरस्तः परावसुः**" "इति नैर्ऋत्यान् निरस्य, अपः स्पृष्ट्वा **इदमहम् अर्वावसोः सदने सीदामि**" इति उदङ्मुख एवं वामोरोरुपरि दक्षिणपादं संस्थाप्य उपविश्य यजमानेन गन्धाक्षतादिभिः अर्चितः सन् "ब्रह्मन् ब्रह्मासि नमस्ते ब्रह्मन् ब्रह्मणे नमः। ब्रह्माणमावाहयामि" यजमानेन आचार्येण वा आवाहितः।

इसके पश्चात् ब्रह्मा मुझे यह स्वीकार है। कहकर पूर्वाभिमुख बैठकर (उत्तर एवं ईशान्य के बीच में) ब्रह्मवस्त्र (उत्तरीय) डालकर, हाथ जोडकर (संकल्प लेते समय जैसे हाथ बंद करते हैं वैसे) अग्नि के आगे प्रदक्षिणाकार में दाहिने पॉव को आगे कर चलकर दक्षिण में उत्तराभिमुख खड़े होकर, अपने आसन के कुशों में दक्षिण की एक कुश को अङ्गुष्ठ एवं अनामिका अङ्गुलियों से खींचकर निरस्तः परावसुः" कहकर नैॠत्य दिशा में फेंकना चाहिये। फिर हाथ धोलें। "इदमहम् अर्वावसोः सदने सीदामि" मन्त्र कहकर उत्तराभिमुख ही बायें जॉघ पर दाहिने पैर को रखकर बैठना चाहिये। फिर यजमान "ब्रह्मन् मन्त्र कहकर गन्ध अक्षतों से ब्रह्मा का पूजन करें।

ॐ बृहस्पतिर्ब्रह्मा ब्रह्म सदन आशिष्यते बृहस्पते यज्ञं गोपाय सयज्ञंपाहि सयज्ञपतिं पाहि समांपाहीति जपित्वा सदा यज्ञ मना एव वर्तेत। इसे कहकर ब्रह्म निरन्तर यज्ञ में ही मन लगायें। यहाँ पर ब्रह्मा का वरणादि कार्य संपन्न हुआ।

उत्पवनं नाम शुद्धीकरणम्— शुद्धीकरण क्रिया को उत्पवन कहते हैं। सवितुष्टाहिरण्यस्तूपः सवितापुर उष्णिक्। आज्यस्योत्पवने विनियोगः।

ॐ सवितुष्ट्वाप्रसवउत्पुनाच्छिद्रेण पवित्रेण वसोः सूर्यस्य रश्मिभिः ॥ *(यजुर्वेद)*

इति मन्त्रेण एकश्रुत्या उच्चारितेन एकवारं द्विस्तूष्णीं उत्तानपाणिद्वय अङ्गुष्ठ उपकनिष्ठिकाभ्यां उंतयोरससृष्ट गृहीताभ्यां उत्तानपाणिद्वय अङ्गुष्ठ उपकनिष्ठिकाभ्यां अंतयोरससृष्ट गृहीताभ्यां उदगग्राभ्यां पवित्राभ्यां प्रागुत्पूय ते पवित्रे अद्भिः प्रोक्ष्य अग्नौ प्रहरेत्। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

इस एक स्वरी मन्त्र को कहते हुए एक बार हथेलियों को उपर किये दोनों हाथों के अंगुष्ठ एवं अनामिका अंगुलियों में पवित्र के दो कुशों को अलग-अलग (परस्पर न मिलें) ऐसे पकड़ना चाहिये। उनका अग्रभाग उत्तर की ओर होना चाहिये। पहले उन्हें पश्चिम से पूर्व की ओर घी में जाकर ऊपर उठायें। फिर दो बाद इसी क्रिया को बिना मन्त्र कहते हुए दोहरायें। फिर उन पवित्र कुशों को जल में प्रोक्षण कर अग्नि में डालना चाहिये।

अथाग्रे: पश्चात् परिस्तरणाद् बहिः आत्मनो अग्रतो भूमिं प्रोक्ष्य तत्र बर्हिः सन्नहनीं रज्जुं उदगग्रां प्रसार्य तस्यां बर्हिः प्रागग्रमुदगपवर्ग अविरलं आस्तीर्य तस्मिन् आज्यपात्रं निधाय स्रुवादि संमार्जयेत्।

उसके पश्चात् अग्नि के पश्चिम में परिस्तरण के बाहर अपने आगे भूमि की प्रोक्षण कर वहाँ बर्हिष् को बाँधी-हुई रज्जु (रस्सी) को उत्तराभिमुख खोलकर रखें। उस बर्हिष् को बाँधी-हुई रज्जु रस्सी को उत्तराभिमुख खोलकर रखें। उस बर्हिष को पूर्वाग्र रखते हुए उत्तर की ओर मोटे-बिछाना चाहिये। (बीच में जगह खाली न रहना चाहिये।) फिर उस बर्हिष पर घी का पात्र रखें।

स्रुवादि संस्कार—दक्षिणेन हस्तेन स्रुक् स्रुवो गृहीत्वा सव्येन कांश्चिद्दर्भानादाय सहैवाग्नौ प्रताप्य स्रुचं निधाय स्रुवं वामहस्तेगृहीत्वा दक्षिणहस्तेन स्रुवस्य बिलं दर्भाग्रैः प्रादक्षिण्येन प्रागादि प्रागपवर्गं त्रिः संमृज्य अधस्ताद्दर्भाग्रैः एव अभ्यात्मं बिलपृष्ठं त्रिः संगृज्य ततो दर्भाणां मूलैः दंडस्याधस्ताद् बिलपृष्ठादारभ्य यावदुपरिष्टाद् बिलं तावत् त्रिः संमृज्य अद्भिः प्रोक्ष्य स्रुव निष्टप्याज्य स्थाल्या उत्तरतः स्रुगसंसृष्टं निधाय उदकं स्पृष्ट्वा तैरेव दर्भैः जुहूं च एव मेव संमृज्यद्युत्तरतोश्रुवाधुन्तरो निधाय दर्भानद्भिः क्षालयित्वा अग्नौ अनु प्रहरेत्। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

पर्युक्षणं-तिर्यग्भूतेनहस्तेनकृतंपर्युक्षणं तथा। *(आश्वलायन स्मृति)*

हाथ को तिरछा करके चारों ओर सींचना पर्युक्षण कहलाता है। अथाग्नेः पश्चात् परिस्तरणाद् बहिः आत्मनो अग्रतो भूमिं प्रोक्ष्य तत्र बर्हिः सन्नहनीं रज्जुं उदगग्रां प्रसार्य तस्यां बर्हिः प्रागग्रमुदगपवर्ग अविरलं आस्तीर्य तस्मिन् आज्यपात्रं निधाय स्रुवादि संमार्जयेत्।

उसके पश्चात् अग्नि के पश्चिम में परिस्तरण के बाहर अपने आगे भूमि की प्रोक्षण कर वहाँ बर्हिष् को बाँधी-हुई रज्जु (रस्सी) को उत्तराभिमुख खोलकर रखें। उस बर्हिष् को बाँधी-हुई रज्जु रस्सी को उत्तराभिमुख खोलकर रखें। उस बर्हिष को पूर्वाग्र रखते हुए उत्तर की ओर मोटे-बिछाना चाहिये। (बीच में जगह खाली न रहना चाहिये।) फिर उस बर्हिष पर घी का पात्र रखें।

चरु शुद्धि—ततः सुशृतं स्रुव गृहीतेनाज्येन अभिघार्य उदगुद्वास्य अग्न्याज्ययोर्मध्येन नीत्वा आज्यात् दक्षिणतो बर्हिषि सोत्तरमासाद्य पुनरप्यभिधार्य नवाभिधार्य (परिधीन् ऊर्ध्व समिधौ अग्नौ निधाय।) पक्व चरु पात्र में स्थित चरु को घी से अभिघार्य (सिञ्चन) करके उत्तर में रखना चाहिये। अग्नि एवं घी पात्र के बीच में इसे लाना चाहिये। आज्यपात्र के दक्षिण में बर्हिष् पर इसे रखकर घी से अभिघार करना चाहिये। न करने पर भी कोई बाधा नहीं है।

अग्नि उपस्थानम्—विश्वानि न इति तिसृणां आत्रेयो वसुश्रुतोग्निस्त्रिष्टुप् द्वयोरर्चने अन्त्याया उपस्थाने विनियोगः।

ॐ विश्वानि नो दुर्गहा जातवेदः। पूर्व में पूजन करें। ॐ सिंधुनना॒वादु॒रि॒तातिपर्षि॥ आग्नेय में पूजन करें
ॐ अग्ने अत्रिवन्नर्मसागृणा॒नः॥ दक्षिण में पूजन करें। ॐ अ॒स्माकं बोध्यवि॒ताता॒नूनां॥ नैर्ऋत्य में पूजन करें। *(ऋग्वेद ५.४.९)*
ॐ यस्त्वांहृदाकीरि॒णा॒मन्यमानः॥ पश्चिम में पूजन करें। ॐ अमर्त्यं॒ मर्त्यो॒ जोहंवीमि॥ वायव्य में पूजन करें।
ॐ जातवेदो॒ यशो अ॒स्मासुंधेहि॥ उत्तर में पूजन करें। ॐ प्रजाभिरग्ने अमृ॒तत्वमश्यां॥ ईशान में पूजन करें। *(ऋग्वेद ५.४.१०)*
ॐ यस्मै॒त्वं सु॒कृते जातवेदउलो॒कमग्नेकृ॒णवस्यो॒नं। अ॒श्विनं॒ स पु॒त्रिणं वी॒रवन्तं॒ गोमन्तं र॒यिंनंशते॒स्वस्ति॥ *(ऋग्वेद ५.४.११)*

यह मन्त्र कहकर उपस्थान (प्रार्थना) करें। **ॐ अग्नये नमः। ॐ जानवेदसे नमः, ॐ हुताशनाय नमः। इन मन्त्रों से अग्नि का पूजन करें। ॐ आत्मने नमः, ॐ अन्तरात्मने नमः, ॐ परमात्मने नमः।** इन मन्त्रों से आत्मा का पूजन करें। हाथ धो लें। **ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ वसिष्ठाय नमः। ॐ त्रयीवद्यात्मने**

नमः। इन मन्त्रों से ब्रह्मा का पूजन करें।

इध्म बन्धन रज्जुं इध्म स्थाने निधाय पाणिना इध्यममादाय मूलमध्याग्रेषु स्रुवेण त्रिरमिधार्य मूल मध्ययो र्मध्यभागे गृहीत्वा। सरज्जुं अनुयाजं प्रणीतायां प्रतिष्ठाप्य इध्म को हाथ में लेवें। उसके रज्जु (रस्सी) को खोलें। रज्जू को अनुयाज समित् के साथ प्रणीता पात्र पर रखना चाहिये। हाथ में लिए इध्यम को मूल, मध्य एवं अग्र में स्रुव से तीन बार घी से अभिधार्य (सिञ्चन) करके, मूल एवं मध्य के बीच में पकड़कर (दाहिने हाथ में)—

अयं ते वामदेवो जातवेदा अग्निस्त्रिष्टुप् इश्म हवने विनियोगः। ॐ अयं तइध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्वचेद्धवर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधयस्वाहा॥ जातवेदसेग्नये इदं न मम। इन मन्त्रों को कहकर इध्यम को अग्नि में डाल देवें। **इध्म मूलं स्पृष्ट्वा अपः उपस्पृश्य आघारावाघारयेत्।** इध्ममूल को छूकर हाथ धो लें। आघार होम करें।

आघार होम

वायव्य कोणादारम्य आग्नेय कोण पर्यन्तं प्रजापतये स्वाहा। (मनसा स्मरन्) नैर्ऋत्यकोणादारम्य ऐशानी कोणपर्यन्तं प्रजापतये स्वाहा। प्रजापतय इदं न मम

अग्नेरुत्तरतः अग्नये स्वाहा। अग्नय इदं न मम। दक्षिणतः सोमाय स्वाहा। सोमाय इदं न मम।

व्याहृतीनां परमेष्ठी प्रजापतिः प्रजापतिर्बृहती व्याहृतिहोमे विनियोगः। ॐ भूः स्वाहा अग्नये इदं न मम। ॐ भुवः स्वाहा वायवे इदं न मम। ॐ स्वः स्वाहा सूर्याय इदं न मम। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा प्रजापतये इदं न मम।

नवग्रह होमः

प्रधान देवता सूर्य होमः—आकृष्णेनेत्यस्य हिरण्यस्तूपः सविता त्रिष्टुप्, प्रधान देवता आदित्य प्रीत्यर्थे अर्कसमित्, आज्य, चरु होमे विनियोगः।

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च।

हिरण्ययेन सविता रथेनाऽऽदेवो याति भुवनानि पश्यन् स्वाहा ॥ (ऋग्वेद १.३५.२)

आदित्यायेदं न मम। २८ बार इस मंत्र से अर्क सहित घी एवं चरु से होम यह संख्या ८ या २८ या १०८ बार कर सकते हैं।

सूर्य अधिदेवता अग्नि होमः—अग्निं दूतमित्यस्य कारवो मेधातिथिरग्निर्गायत्री आदित्यस्य अधिदेवता अग्निप्रीत्यर्थे अर्कसमित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम्। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् स्वाहा। (ऋग्वेद १.१२.१)

ॐ आदित्य अधिदेवतायै अग्नये इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें। (३+३+३=९ आहुति)

सूर्य प्रत्यधिदेवता रुद्र होमः—ॐ कद्रुद्राय इत्यस्य घोरः कारवो रुद्रो गायत्री आदित्यस्य प्रत्यधिदेवता रुद्र प्रीत्यर्थे अर्कसमित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ कद्रुद्राय प्रचेतसे मीळहुष्टमाय तव्यसे। वोचेम शंतमं हृदे स्वाहा ॥ (ऋग्वेद १.४३.१)

आदित्य प्रत्यधिदेवता रुद्राय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें। (३ समित् + ३ घी + ३ चरु की आहुतियां = ९ आहुतियाँ)

प्रार्थना - दिवाकरं दीप्त सहस्त्ररश्मिं तेजोमयं जगतः कर्मसाक्षिम्। अंशु भानुं सूर्यमादिं ग्रहाणां दिवाकरं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥

आदित्याय नमः।

प्रधान देवता सोम होमः—आप्यायस्व गौतमः सोमो गायत्री प्रधान देवता चन्द्रप्रीत्यर्थे पलाश समित्, आज्य, चरु होम विनियोगः।

ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्ण्यम्। भवा वाजस्य सङ्गथे स्वाहा ॥ (ऋग्वेद १.९१.१६)

सोमाय इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से पलाश सहित घी एवं चरु से होम करें।

सोम अधिदेवता अप होमः—अप्सु मे सिन्धद्वीप आपोगायत्री सोमस्य अधिदेवता अप् प्रीत्यर्थे पलाश समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ अप्सु मे सोमो अब्रवीदन्तर्विश्वानि भेषजा। अग्निं च विश्वशंभुवं स्वाहा ॥ (ऋग्वेद १०.९.६)

सोमाधिदेवतायै अद्भ्य इदं न मम। इस मन्त्र से तीन बार होम करें।

सोम प्रत्यधिदेवता गौरी होम—गौरीर्मीमायेत्यस्य औचत्यपुत्रो दीर्घतमा उमा जगती। सोमस्य प्रत्यधिदेवता गौरी प्रीत्यर्थे पलाशसमित् आज्य चरु होमे

विनियोगः।

ॐ गौरीर्मिमाय सलिलानि तक्षत्येकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी।
अष्टापदी नवपदी बभूवुषी सहस्राक्षरा परमे व्योमन् स्वाहा।

सोम प्रत्यधिदेवता गौर्यै इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

प्रार्थना— यः कालहेतोः क्षयवृद्धिमेति यं देवताः पितरश्चापिबन्ति तं वै वरेण्यं ब्रह्मेन्द्रवन्द्यं चन्द्रं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥

चन्द्राय नमः।

प्रधान देवता अङ्गारक होमः—अग्निर्मूर्धा विरूपोङ्गारको गायत्री। प्रधान देवता अङ्गारक प्रीत्यर्थे खदिरसमित आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपां रेतांसि जिन्वति स्वाहा। *(ऋग्वेद ८.४४.१६)*

अङ्गारकाय इदं न मम। २८ बार इस मंत्र में खदिर समित्, घी एवं चरु से होम करें।

अङ्गारक अधिदेवता भूमि होमः—स्योना पृथिवीत्यस्य मेधातिथिः पृथिवी गायत्री। अङ्गारकस्य अधिदेवता भूमि प्रीत्यर्थे खदिरसमित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ स्योना पृथिवि भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथः स्वाहा। *(ऋग्वेद १.२२.१५)*

अङ्गारकाधिदेवतायै भूम्यै इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

अङ्गारक प्रत्यधिदेवता स्कन्द होमः—कुमारं माता स्कन्दः स्कन्दस्त्रिष्टुप्। अङ्गारकस्य प्रत्यधिदेवता स्कन्द प्रीत्यर्थे खदिर समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ कुमारं माता युवतिः समुब्धं गुहा बिभर्ति न ददाति पित्रे
अनीकमस्य न मिनज्जनासः पुरः पश्यन्ति निहितमरतौ स्वाहा। *(ऋग्वेद ५.२.१)*

अङ्गारक प्रत्यधिदेवतायै स्कन्दाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

प्रार्थना— महेश्वरस्याननस्वेदबिन्दोर्भूमौ जातं रक्तमालांबराढ्यं। सुरश्मिरणं लोहिताङ्गं कुमारमङ्गारकं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥

अङ्गारकाय नमः।

प्रधान देवता बुध होमः—उद्बुध्यध्वं बुधो बुधस्त्रिष्टुप्, प्रधान देवता बुध प्रीत्यर्थे अपामार्ग समित्, आज्य, चरु होमे विनियोगः।

ॐ उद्बुध्यध्वं समनसः सखायः समग्निमिंध्वं बहवः सनीळा।
दधिक्रामग्निमुषसं च देवीमिन्द्रावतोऽवसे निह्वये वः स्वाहा। (ऋग्वेद १०.१०१.१)

बुधाय इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से अपामार्ग समित्, घी एवं चरु से होम करें।

बुध अधिदेवता विष्णु होमः—इदं विष्णुर्मेधातिथिर्विष्णुर्गायत्री, बुधस्य अधिदेवता विष्णु प्रीत्यर्थे अपामार्ग समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूळहमस्य पांसुरे स्वाहा। (ऋग्वेद १.२२.१७)

बुधाधिदेवतायै विष्णवे इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

बुध प्रत्यधिदेवता पुरुष होमः—सहस्रशीर्षा नारायणः पुरुषोऽनुष्टुप्, बुध प्रत्यधिदेवता पुरुष प्रीत्यर्थे अपामार्ग समित्, आज्य, चरु होमे विनियोगः।

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिं विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् स्वाहा। (ऋग्वेद १०.९०.१)

बुध प्रत्यधिदेवता पुरुषाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

प्रार्थना— उत्पातरूपो जगतां चन्द्रपुत्रो महाद्युतिः। सूर्य प्रियकरो विद्वान् पीडां दहतु मे बुधः॥ ॐ बुधाय नमः।

प्रधान देवता बृहस्पति होमः—बृहस्पते गृत्समदो बृहस्पतिस्त्रिष्टुप्, प्रधान देवता बृहस्पति प्रीत्यर्थे पिप्ल समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।
यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् स्वाहा॥ (ऋग्वेद २.२३.१५)

बृहस्पतये इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से पिप्ल समित्, घी एवं चरु से होम करें।

बृहस्पति अधिदेवता इन्द्र होमः—इन्द्र श्रेष्ठानि गृत्समद इन्द्रस्त्रिष्टुप्, बृहस्पतेरधिदेवता इन्द्रप्रीत्यर्थे पिप्पल समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि चित्तिं दक्षस्य सुभगत्वमस्मे।
पोषं रयीणामरिष्टिं तनूनां स्वाद्मानं वाचः सुदिनत्वमह्नाम् स्वाहा। (ऋग्वेद २.२१.६)

बृहस्पत्यधिदेवतायै इन्द्राय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

बृहस्पति प्रत्यधिदेवता ब्रह्मा होमः—ब्रह्मणाते विश्वामित्रो ब्रह्मा त्रिष्टुप्, बृहस्पति प्रत्यधिदेवता ब्रह्म प्रीत्यर्थे पिप्लसमित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ ब्रह्मणा ते ब्रह्मयुजा युनज्मि हरी सखाया सधमाद आशू।
स्थिरं रथं सुखमिन्द्राधितिष्ठन् प्रजानन् विद्वाँ उपयाहि सोमम् स्वाहा। (ऋग्वेद ३.३५.४)

बृहस्पति प्रत्यधिदेवतायै ब्रह्मणे इदं न मम। इस मंत्र से तीन बर होम करें।

प्रार्थना— बुध्यात्मनो यस्य न कश्चिदन्यो मतिं देवा उपजीवंति यस्य। प्रजापते रात्मजं धर्मनिष्ठं गुरुं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥

ॐ गुरुवे नमः।

प्रधान देवता शुक्र होमः—शुक्रं ते भारद्वाजः शुक्रस्त्रिष्टुप्, प्रधान देवता शुक्र प्रीत्यर्थे औदुम्बर समित्, आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ शुक्रं ते अन्यद्यजतं ते अन्यद्विषुरूपे अहनी द्यौरिवासि।
विश्वा हि माया अवसि स्वधावो भद्रा ते पूषन्निह रातिरस्तु स्वाहा। (ऋग्वेद ६.५८.१)

शुक्राय इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से औदुम्बर समित्, घी एवं चरु से हाम करें।

शुक्र अधिदेवता इन्द्राणी होमः—इन्द्राणी वृषाकपिरिंद्राणी पंक्तिः, शुक्रस्य अधिदेवता इन्द्राणी प्रीत्यर्थे औदुम्बर समित्, आज्य, चरु होमे विनियोगः।

ॐ इंद्राणीमासु नारिषु सुभगामहमश्रवम्। नह्यस्या अपरं चन जरसा मरते पतिर्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः स्वाहा। (ऋग्वेद १०.८६.११)

ॐ शुक्र अधिदेवतायै इन्द्राणयै इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

शुक्र प्रत्यधिदेवता इन्द्र होमः—इन्द्रं वो मधुच्छन्दा इन्द्रो गायत्री, शुक्रप्रत्यधिदेवता इन्द्र प्रीन्यर्थे औदुम्बर समित्, आज्य, चरु होमे विनियोगः।

ॐ इंद्रं वो विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्यः। अस्माकमस्तु केवलः स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १.७.१०)*

ॐशुक्र प्रत्यधिदेवतायै इन्द्राय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

प्रार्थना— वर्षप्रदं चिन्तितार्थानुकूलं मौनाद्विशिष्टं सुनयोमपन्नम्। तं भार्गवं योगविशुद्धसत्वं शुक्रं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥

ॐशुक्राय नमः।

प्रधान देवता शनैश्चर होमः—शमग्निरित्यस्य इरिंबिठिः शनैश्चर उष्णिक्, प्रधान देवता शनैश्चर प्रीत्यर्थे शमी समित्, आज्य, चरु होमे विनियोगः।

ॐ शमग्निरग्निभिः करच्छंनस्तपतु सूर्यः। शं वातो वात्वरपा अपस्त्रिधः स्वाहा। *(ऋग्वेद ८.१८.९)*

शनैश्चराय इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से शमी समित्, घी एवं चरु से होम करें।

शनैश्चर अधिदेवता प्रजापति होमः—प्रजापते हिरण्यगर्भः प्रजापतिस्त्रिष्टुप्, शनैश्चरस्य अधिदेवता प्रजापतिप्रीत्यर्थे शमी समित्, आज्य, चरु होमे विनियोगः।

ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १०.१२१.१०)*

शनैश्चरस्य अधिदेवता प्रजापतये इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

शनैश्चर प्रत्यधिदेवता यम होमः—यमाय हसोमं यमो यमोनुष्टुप्, शनैश्चरस्य प्रत्यधि देवता यम प्रीत्यर्थे शमीसमित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ यमाय सोमं सुनुत यमाय जुहुता हविः। यमं ह यज्ञो गच्छत्यग्निदूतो अरंकृतः स्वाहा। *(ऋग्वेद १०.१४.१३)*

शनैश्चर प्रत्यधिदेवतायै यमाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

प्रार्थना— शनैश्चरो राशितो राशिमेति शनैर्भोगो गमनं चेष्टितं च। सूर्यात्मजं क्रोधनं सुप्रसन्नं शनैश्चरं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥

ॐशनैश्चराय नमः।

प्रधान देवता राहु होम—कयानो वामदेवो राहुर्गायत्री प्रधान देवता राहु प्रीत्यर्थे दूर्वासमित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ कयांनश्चित्र आ भुंवदूती सदावृंधः सखां। कयाशचिंष्ठया वृता स्वाहां। (ऋग्वेद ४.३१.१)

राहवे इदं न मम।। २८ बार इस मंत्र से दूर्वा समित्, घी एवं चरु से होम करें।

राहु अधिदेवता सर्प होमः—आयं गौः सार्पराज्ञीः सर्पा गायत्री। राहु अधिदेवता सर्प प्रीत्यर्थे दूर्वा समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ आयं गौः पृश्निंरक्रमीदसंदन्मातरं पुरः। पितरँ च प्रयंत्स्वः १ स्वाहां।। (ऋग्वेद १०.१८९.१)

राहु अधिदेवतायै सर्पेभ्यः इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

राहु प्रत्यधिदेवता मृत्यु होमः—परं मृत्युः संकुसिको मृत्युस्त्रिष्टुप्। राहु प्रत्यधिदेवता मृत्यु प्रीत्यर्थे दूर्वा समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ परँ मृत्यो अनुपरेंहि पंथां यस्ते स्व इतंरो देव यानांत्।
चक्षुंष्मते शृणवते तें ब्रवीमि मा नंः प्रजां रींरिषो मोत वीरान् स्वाहां। (ऋग्वेद १०.१८.१)

राहु प्रत्यधिदेवतायै मृत्यवे इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

प्रार्थना— यो विष्णुनैवामृतं भोक्ष्यमाणः छित्वाशिरो ग्रहभावे नियुक्तः। यश्चन्द्रसूर्यौ ग्रसते पर्व काले राहुं सदा शरणमहं प्रपद्ये।।

ॐ राहवे नमः।

प्रधान देवता केतु होमः—केतुं कृणवन्नत्यिस्य मंत्रस्य मधुच्छन्दाः केतुर्गायत्री प्रधान देवता केतु प्रीत्यर्थे कुश समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ केतुं कृणवन्नंकेतवे पेशों मर्या अपेशसें। समुषद्भिंरजायथाः स्वाहां।। (ऋग्वेद १.६.३)

केतवे इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से कुश समित्, घी एवं चरु से होम करें।

केतु अधिदेवता ब्रह्म होमः—ब्रह्मजज्ञानमिति नकुलो ब्रह्मा त्रिष्टुप्, केत्वधिदेवता ब्रह्मप्रीत्यर्थे कुश समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ ब्रह्मं जज्ञानं प्रंथमं पुरस्ताद्विसींमतः सुरुचोंवेन आंवः।

स बुध्नियां उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसंतश्च विवः स्वाहां ॥ (यजुर्वेद-४ काण्ड-२ प्रश्न-८ अनुवाक-४ मन्त्र)

केतु अधिदेवताब्रह्मणे इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

केतु प्रत्यधिदेवता चित्रगुप्त होम—स चित्र चित्रं भारद्वाजश्चित्रगुप्तस्त्रिष्टुप्। केतु प्रत्यधिदेवता चित्रगुप्तप्रीत्यर्थे कुश समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ स चिंत्र चित्रं चितयंन्तमस्मे चित्रंक्षत्र चित्रतंमं वयोधाम्।
चन्द्रं रयिं पुंरुवीरं बृहंतं चन्द्रंचन्द्राभिंर्गृणते युंवस्व स्वाहां ॥ (ऋग्वेद ६.६.७)

केतु प्रत्यधिदेवतायै चित्रगुप्ताय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

प्रार्थना—हे ब्रह्मपुत्रा ब्रह्मसमानवक्त्राः ब्रह्मोद्भवाः ब्रह्मसमाः कुमाराः।
ब्रह्मोत्तमा वरदा जामदग्न्याः केतून् सदा शरणमहं प्रपद्ये ॥

ॐकेतवे नमः। यहाँ पर नवग्रह होम संपन्न हुआ। आगे छः कर्म साद्गुण्य देवता होम होगा।

कर्म साद्गुण्य देवता होमः

कर्म साद्गुण्य देवता विनायक होमः-१—आतून इत्यस्य काण्वः कुसीदी विनायको गायत्री क्रतु साद्गुण्यदेवता विनायक प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ आतूनं इन्द्रक्षुमन्तं चित्रं ग्राभं सङ्गृंभाय। महाहस्ती दक्षिंणेन स्वाहां। (ऋग्वेद ८.८१.१)

कर्म सादगुण्यदेवतायै विनायकाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

कर्म साद्गुण्यदेवता दुर्गा होमः-२—जातवेद से कश्यपो दुर्गा त्रिष्टुप् क्रतुसाद्गुण्यदेवता दुर्गा प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ जातवेंदसे सुनवाम सोमंमरातीयतो निदंहाति वेदंः।

स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिंधुं दुरितात्यग्निः स्वाहा ॥ (ऋग्वेद १.९९.१)

क्रतु साद्गुण्य देवतायै दुर्गायै इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

कर्म साद्गुण्यदेवता क्षेत्रपाल होमः-३—क्षेत्रस्य पतिना वामदेवः क्षेत्रपालोनुष्टुप् चरु होमे विनियोगः।

ॐ क्षेत्रस्य पतिना वयं हितेनेवजयामसि। गामश्वं पोषयित्वा सनोमृळातीदृशे स्वाहा। (ऋग्वेद ४.५७.१)

क्रतु साद्गुण्य देवतायै क्षेत्रपालाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

कर्म साद्गुण्य देवता वायु होमः-४—क्राणाशिशुरित्यस्यत्रियोवायुरुष्णिाक् क्रतु साद्गुण्य देवता वायु प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ क्राणाशिशुर्महीनांहिन्वन्नृतस्यदीधितिं। विश्वापरिप्रिया भुवदधद्विता स्वाहा ॥ (ऋग्वेद ९.१०२.१)

क्रतु साद्गुण्य देवतायै वायवे इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

कर्म साद्गुण्य देवता आकाश होमः-५—आदित्यप्रत्नस्य वत्स आकाशो गायत्री क्रतु साद्गुण्य देवता आकाश प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ आदित् प्रत्नस्यरेतसो ज्योतिष्पश्यंति वासरं। परोयदिध्यतेदिवा स्वाहा ॥ (ऋग्वेद ८.६.३०)

क्रतु साद्गुण्यदेवतायै आकाशाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

कर्म साद्गुण्य देवता अश्विनी देवता होमः-६—अश्विनावर्ति राहूगणो गोतमोश्विनावुष्णिाक् अश्वि प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ अश्विनावर्तिरस्मदागोमंद्दस्राहिरण्यवत्। अर्वाग्रथं समनसानियच्छतं स्वाहा ॥ (ऋग्वेद १.९२.१६)

क्रतु साद्गुण्य देवतायै अश्विभ्यां इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता होमः

क्रतु संरक्षक देवता इन्द्र होमः—इन्द्रं वो मधुच्छन्दा इन्द्रो गायत्री क्रतु संरक्षक देवता इन्द्र प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ इन्द्रं वो विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्यः। अस्माकमस्तु केवलः स्वाहा ॥ (ऋग्वेद १.७.१०)

क्रतु संरक्षक देवतायै इन्द्राय इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता अग्नि होमः—अग्निं दूतमित्यस्य कारवो मेधातिथिरग्निर्गायत्री क्रतु संरक्षक देवता अग्नि प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम्। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १.१२.१)*

क्रतु संरक्षक देवतौ अग्नय इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता यम होमः—यमाय सोमं यमोयमोनुष्टुप् क्रतु संरक्षक देवता यम प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ यमाय सोमं सुनुतयमायंजुहुता हविः। यमंहंयज्ञो गच्छत्यग्निदूंतो अरंकृतः स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १०.१४.१३)*

क्रतु संरक्षक देवतायै यमाय इदं न मम। इस मंत्र को दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता निर्ऋति होमः—मोषुणः कारवो निर्ऋतिर्गायत्री क्रतु संरक्षक देवता निर्ऋति प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ मोंषुणः परांपरानिर्ऋतिर्दुर्हणांवधीत्। पदीष्ट तृष्णांयासह स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १.३८.६)*

क्रतु संरक्षक देवतायै निर्ऋतये इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता वरुण होमः—तत्वायामीत्यस्य शुनः शेपोवरुणस्त्रिष्टुप् क्रतु संरक्षक देवता वरुण प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ तत्वांयामि ब्रह्मंणा वन्दंमानस्तदाशांस्तेयजंमानो हविर्भिः।
अहेंळमानो वरुणेह बोध्युरुंशंसमान आयुः प्रमोंषीः स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १.२४.११)*

क्रतु संरक्षक देवतायै वरुणाय इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता वायु होमः—तव वायो व्यश्वोवायुर्गायत्री क्रतु संरक्षक देवता वायु प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ तवं वायवृतस्पतेत्वष्टुंर्जामातरद्भुत। अवांस्यावृंणीमहे स्वाहा॥ *(ऋग्वेद ८.२६.२१)*

क्रतु संरक्षक देवतायै वायवे इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता सोम होम—सोमो धेनुमित्यस्य गौतमः सोमस्त्रिष्टुप् क्रतु संरक्षक देवता सोम प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ सोमो धेनुं सोमो अर्वन्तमाशुं सोमो वीरं कर्मण्यं ददाति।
सादन्यं विदथ्यं सभेयं पितृश्रवणं यो ददाशदस्मै स्वाहा॥ (ऋग्वेद १.९१.२०)

क्रतु संरक्षक देवतायै सोमाय इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता ईशान होमः—तमीशानमित्यस्य गौतम ईशानो जगती क्रतु संरक्षक देवता ईशान प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्।
पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये स्वाहा॥ (ऋग्वेद १.८९.५)

क्रतु संरक्षक देवतायै ईशानाय इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें। यहाँ पर क्रतु संरक्षक देवता होम संपन्न हुआ।

व्याहृति होमः—व्याहृतीनां परमेष्ठी प्रजापतिः बृहती व्याहृति होमे विनियोगः। ॐभूः स्वाहा, अग्नये इदं न मम। ॐभुवः स्वाहा,वायवे इदं न मम। ॐस्वः स्वाहा, सूर्याय इदं न मम। ॐभूर्भुवः स्वः स्वाहा, प्रजापतये इदं न मम। इन मत्रों से एक बार होम करें।

प्रधान देवता विष्णु होमः

प्रधान देवता विष्णु होमः—इदं विष्णुर्मेधातिथिर्विष्णुर्गायत्री प्रधानदेवता विष्णुप्रीत्यर्थेआज्यचरुहोमे विनियोगः।

ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदं। समूह्ळमस्य पांसुरे स्वाहा। (ऋग्वेद १.२२.१७) आ. गृ. सूत्रम्

ॐ विष्णवे स्वाहा। ॐ विष्णव इदं न मम। ॐमहाद्भुताधिपतये स्वाहा। ॐमहाद्भुताधिपतय इदं न मम। ॐमहाविष्णवे स्वाहा। ॐमहाविष्णव इदं न मम। ॐईश्वराय स्वाहा। ॐईश्वराय इदं न मम। ॐसर्वोत्पातशमनाय स्वाहा। ॐसर्वोत्पातशमनाय इदं न मम। प्रधान देवता के होम के बाद इन पॉच मंत्रों से घी की आहूति एक-एक बार देवें॥

ॐ भूरग्नये च पृथिव्यै च महते च स्वाहा अग्नये पृथिव्यै महते च इदं न मम।

ॐ भुवो वायवेचान्तरिक्षाय च महते च स्वाहा। वायवेऽन्तरिक्षाय महते च इदं न मम।
ॐ सुवरादित्याय य दिवे च महते च स्वाहा। आदित्याय दिवे महते च इदं न मम।
ॐ भुर्भूवः सुवश्चन्द्रमसे च नक्षत्रेभ्योदिग्भ्यश्च महते च स्वाहा। *(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषद्-आरण्यक)*

चन्द्रमसे नक्षत्रेभ्यो दिग्भ्यो महते च इदं न मम। इन चार मंत्रों से भी घी की आहुतियाँ एक-एक बार देवें। **ॐ भूः स्वाहा, अग्नये इदं न मम। ॐ भुवः स्वाहा, वायवे इदं न मम। ॐ स्वः स्वाहा, सूर्याय इदं न मम। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा, प्रजापतये इदं न मम।**

स्विष्टकृत् होमः—दर्व्यामुपस्तीर्य हविर्भागस्योत्तरार्धतः सकृत् अवदाय अवत्तंतु द्विः अभिघार्य। स्रुवा से दर्वी में (स्रुक्) घी डालकर, चरु के उत्तर भाग से चरु को निकालकर (हाथ से) दर्वी में रखें। फिर स्रुवा से उप पर दो बार घी डालें। आगे कहने वाले मंत्र को कहते हुए होम कुण्ड में ईशान्य दिशा में डालें। यदस्येति हिरण्यगर्भोग्निः स्विष्टकृद्घृतिः स्विष्टकृत् होमे विनियोगः।

ॐ यदस्य कर्मणोत्यरीरिचंयद्वान्यूनमिहाकरम्। अग्निष्टत्स्विष्टकृद्विद्वान्त्सर्वं स्विष्टंसुहुतं करोतु मे॥
अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त्समर्धयः स्वाहा॥ *(श्रौत मन्त्र)*

इन दो मंत्रों को कहकर अग्नि के ईशान्य भाग में होम करें। स्विष्टकृतेऽग्नय इदं न मम।

इध्म बंधन रज्जुं विस्रस्य

पहले जिस रस्सी (कुशा निर्मित) से इध्यम बाँधे थे उस रस्सी को खोलकर उसे—ॐरुद्राय पशुपतये स्वाहा, रुद्राय पशुपतये इदं न मम। कहकर होम करें। **प्रायश्चित आज्याहुतीः सप्त जुहुयात्।** प्रायश्चित सात घी की आहुतियाँ देवें। अयाश्चेतिविमदोया अग्निः पंक्तिः प्रायश्चित्याज्य होमे विनियोगः।

ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तीश्चसत्यमित्वमया असि अयासावयसाकतो यासन्हव्यमूहिषेयानोधेहि भेषजं स्वाहा॥ *(यजुर्वेद-आरण्यक)*

अग्नेय इदं न मम। अतो देवाः काण्वोमेधातिथिर्देवा गायत्री प्रायश्चिताज्यहोमे विनियोगः।

ॐ अतो॑ दे॒वा अ॑वन्तु नो॒ यतो॒ विष्णु॑र्विचक्र॒मे। पृ॒थि॒व्याः स॒प्त धाम॑भिः॒ स्वाहा॑॥ (ऋग्वेद १.२२.१६)

देवेभ्य इदं न मम। इदं विष्णुः काण्वोमेधातिथिर्विष्णुर्गायत्री प्रायश्चित्ताज्यहोमे विनियोगः।

ॐ इ॒दं विष्णु॒र्वि च॑क्रमे त्रे॒धा नि द॑धे प॒दम्। समू॑ळ्हमस्य पांसु॒रे स्वाहा॑॥ (ऋग्वेद १.२२.१७)

विष्णवे इदं न मम। व्यस्त समस्त व्याहृतीनां विश्वामित्र जमदग्निर्भरद्वाज प्रजापतय ऋषयः, अग्निवायुसूर्यप्राजापतयो देवताः गाय त्र्युष्णिगनुष्टुबृहत्यश्छंदांसि। प्रायश्चित्ताज्य होमे विनियोगः। ॐभूः स्वाहा, अग्नये इदं न मम। ॐभुवः स्वाहा, वायवे इदं न मम। ॐस्वः स्वाहा, सूर्याय इदं न मम। ॐभूर्भुवः स्वः स्वाहा, प्रजापतये इदं न मम। यहाँ पर यजमान के द्वारा करने वाला प्रायश्चित होम संपन्न हुआ। यज्ञ के पूजन होम में अनेक प्रकार के लोप संभव है। अतः उनके निवारण के लिए प्रायश्चित्त होम आवश्यक है। यजमान के प्रायश्चित होम से भी बचे हुए लोप दोषों के निवारण के लिए ब्रह्म प्रायश्चित विधान है। ब्रह्मा के स्थान पर यदि कुश हो तो स्वयं आचार्य ही ब्रह्म प्रायश्चित होम करें।

ब्रह्म प्रायश्चित्त होमः

ब्रह्मा के स्थान पर बैठे पं. जी के द्वारा यज्ञ में सपन्न लोप दोषों की निवृत्ति के लिए ब्रह्मा जी प्रायश्चित होम करते हैं।

ततो ब्रह्मा कर्तारं परीत्याग्नेर्वायव्यदेशे तिष्ठन् एता एव सप्त आज्याहुतीर्जुहुयात्।

उसके बाद ब्रह्मा जी यजमान के पीठे से जाकर अग्नि के वायव्य दिशा में खडे होकर पूर्वोक्त सात मंत्रों से आहुति देवें। ब्रह्म प्रायश्चित्याज्यहोमे विनियोगः।

ॐ अ॒याश्चा॒ग्नेस्यन॑भिश॒स्तीश्च॑ स॒त्यमि॑त्वम॒या अ॑सि।
अ॒या॑ सा॒ वयं॑साकृ॒तो यासं॑न्हव्यमू॑हिषे॒ या नो॑ धेहि भेष॒जम् स्वाहा॑॥ (यजुर्वेद-आरण्यक)

अग्नेय इदं न मम। इस पंक्ति को यजमान या अचार्य कहें।

ॐ अतो देवा अवंतु नो यतोविष्णुर्विचक्रमे। पृथिव्याः सप्त धामभिः स्वाहा॥ (ऋग्वेद १.२२.१६)

देवेभ्य इदं न मम (इस पंक्ति को आचार्य पढ़ें।)

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदं। समूळहमस्य पांसुरे स्वाहा॥ (ऋग्वेद १.२२.१७)

विष्णव इदं न मम। (आचार्य इस पंक्ति को कहें) ॐभूः स्वाहा, अग्नये इदं न मम। ॐभुवः स्वाहा, वायवे इदं न मम। ॐस्वः स्वाहा, सूर्याय इदं न मम। ॐभूर्भुवः स्वः स्वाहा, प्रजापतये इदं न मम। स्वाहा तक ब्रह्मा जी कहते है। इदं न मम वाला भाग यजमान व आचार्य को ही कहना हैं, त्याग को ब्रह्मा नहीं करना चाहिये। इदं न मम त्याग कहलाता है। ततो ब्रह्मा यथा आगतं तथैव स्वस्थाने उपविशेत्। ब्रह्मा जी जिस प्रकार आये थे उसी प्रकार जाकर अपने आसन पर बैठें। अनाज्ञातमिति मंत्रद्वयस्य हिरण्यगर्भोग्निरनुष्टुप्, ज्ञाताज्ञातदोष निबर्हणार्थं प्रायश्चित्ताज्य होमे विनियोगः।

ॐ अनाज्ञातं यदाज्ञातं यज्ञस्य क्रियतेमिथु। अग्नेतदस्य कल्पयत्वं हिवेत्थयथातथं स्वाहा॥ (यजुर्वेद-आरण्यक)

अग्नये इदं न मम।

ॐ पुरुषसंमितो यज्ञोयज्ञः पुरुषसंमितः। अग्नेतदस्य कल्पयत्वं हिवेत्थयथातथं स्वाहा॥ (यजुर्वेद-आरण्यक)

यत्पाकत्रेत्याप्त्यस्त्रितोग्निस्त्रिष्टुप्। प्रायश्चिताज्य होमे विनियोगः।

ॐ यत्पाकत्रामनसादीनदक्षानयज्ञस्य मन्वतेमर्त्यासः।
अग्निष्टद्धोता क्रतुविद्विजानन्यजिष्ठो देवाँऋतुशोयजाति स्वाहा॥ (ऋग्वेद १०.२.५)

अग्नय इदं न मम। ॐयद्वोदेवा अभितपामरुत स्त्रिष्टुप्। मंत्र तंत्र विपर्यासादि निमित्तक प्रायश्चिताज्य होमे विनियोगः।

ॐ यद्वोदेवा अतिपातयानि वाचाचप्रयुतीदेवहेळनं।
अरायो अस्माँ अभिदुच्छुनायतेन्यत्रास्मन्मरुतस्तन्निधेतनस्वाहा॥ (यजुर्वेद-आरण्यक)

मरुद्भ्य इदं न मम। ततः स्कन्न भिन्नाद्यनियत निमित्ते सति वक्ष्यमाण प्रकारेण तत् प्रतिपदोक्त जप होमान् कुर्यात्। इसके बाद गिरने वाले, टूटने वाले सभी दोष जिनका वर्णन संभव नहीं है, उनके प्रायश्चित के लिए आगे कहने वाले जप एवं होम करें।

ॐ भूः स्वाहा, अग्नये इदं न मम। ॐ भुवः स्वाहा, वायवे इदं न मम। ॐ स्वः स्वाहा, सूर्याय इदं न मम। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा, प्रजापतये इदं न मम। यहाँ पर प्रायश्चित होम समाप्त हुआ। प्रारम्भ दिन से अन्तिम दिन तक यह होम कार्य एक जैसा है।

रुद्र सर्वाद्भुत होमस्या सर्व फलावाप्त्यर्थं साङ्गतासिद्ध्यर्थं च यावच्छक्ति ध्यानावाहनादि षोडशोपचार पूजां करिष्ये। होम कुण्ड में आचार्य एवं कलश वेदि में प्रधानाचार्य एक साथ पूजन करें। प्रधान देवता रुद्र मंत्रों से।

षोडशोपचार पूजनम् (कुण्ड में)

ध्यान —विष्णुं जिष्णुं महाविष्णुं प्रभविष्णुं महेश्वरम्। अनेकोत्पात शमनं नमामि पुरुषोत्तमम्॥ नमोनारायणाय।

आवाहन-ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिं विश्वतोवृत्वात्यं तिष्ठद् दशांगुलम्॥ (ऋग्वेद १०.९०.१)

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजत स्रजाम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवार श्री विष्णवे नमः। आवाहयामि। आवाहनं समर्पयामि।

आसनम्—ॐ पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेना तिरोहति॥ (ऋग्वेद १०.९०.२)

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। आसनं समर्पयामि।

पाद्यम्— ॐ एतावानस्य महिमाऽतो ज्यायाँश्च पुरुषः। पादोऽस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥ (ऋग्वेद १०.९०.३)

ॐ अश्वपूर्वा रथमध्यां हस्तिनाद प्रमोदिनीम्। श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। पादारविंदयोः पाद्यं पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यं— ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत् पुरुषः पादोऽस्येहा भवत्पुनः। ततो विश्वं व्यक्रामत् साशनानशने अभि ॥ (ऋग्वेद १०.९०.४)

ॐ कां सोस्मितां हिरण्य प्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।

पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहो पह्वये श्रियम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्) सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। हस्तयोः अर्घ्यमर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनम्—ॐ तस्माद्विराळजायत विराजो अधिपूरुषः। स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथोपुरः। (ऋग्वेद १०.९०.५)

ॐ चंद्रां प्रभासां यशसा ज्वलंतीं श्रियं लोके देवजुष्टा मुदाराम्।

तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मेनश्यतां त्वां वृणे॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। मुखे आचमनीयं समर्पयामि।

पञ्चामृत स्नानम् (दूध)— ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्णियं। भवावाजस्य संगथे। (ऋग्वेद १०.९१.१६)

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। पयः स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः। भवे भवेनातिं भवे भवस्वमाम् भवोद्भवाय नमः॥ (यजुर्वेद-महानारायणोपनिपत् आरण्यक)

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि

दहि— ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभिनोमुखा करत्प्रण आयूंषितारिषत्॥ (ऋग्वेद ४.३९.६)

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। दधि स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमश्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमःकलविकरणाय

नमोबलाय नमो बलप्रमथनाय नमस्सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः। (यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। शुद्धोदक स्नानं सपर्मयामि।

घी— ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतं वस्य धाम।
अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभवक्षि हव्यम्।। (ऋग्वेद २.३.११) सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। घृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरं तरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः।।
(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

मधु (शहद)—ॐ मधुवाता ऋतायते मधुक्षरंति सिंधवः। माध्वीर्नः संत्वोषधीः।। मधुनक्तमुतोषसो मधुमत् पार्थिवं रजः।
मधुद्यौरस्तु नः पिता।। मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवंतु नः।। (ऋग्वेद १.९०.६) सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। मधु स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।। (यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। शुद्धोदक स्नानं सपर्पयामि।

शर्करा (शक्कर)—ॐ स्वादुः पवस्व दिव्याय जन्मने स्वादुरिंद्राय सुहवीतु नाम्ने।
स्वादुर्मित्राय वरुणाय वायवे बृहस्पतये मधुमा अदाभ्यः।। (ऋग्वेद ९.८५.६)

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। शर्करा स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जन—ॐ ईशानस्सर्वे विद्यानामीश्वरस्सर्वे भूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽ

धिंपतिर्ब्रह्मां शिवो मे अस्तु सदाशिवोऽम् ॥ *(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)*

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

फल— ॐ याः फलिनी र्या अफला अपुष्पायाश्च पुष्पिणीः। बृहस्पतिं प्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्वं हंसः ॥ *(ऋग्वेद १०.९७.१५)*

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। फल स्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदक—ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवस्तानऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे ॥ यो वः शिवतमोरसस्तस्य भाजयते हनः। उशतीरिव मातरः ॥ तस्मा अरंगमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः। *(ऋग्वेद १०.९.१-२-३)*

ॐ कद्रुद्राय प्रचेतसे मीळहुष्टमाय तव्यसे। वोचेम शंतमं हृदे ॥ *(ऋग्वेद १.४३.१)*

ॐ यथा नो अदितिः करत्पश्वे नृभ्यो यथा गवे। यथा तोकाय रुद्रियम् ॥ *(ऋग्वेद १.४३.२)*

ॐ यथा नो मित्रो वरुणो यथा रुद्रश्चिकेतति। यथा विश्वे सजोषसः।

ॐ गाथपतिं मेधपतिं रुद्रं जलाषभेषजम्। तच्छं योः सुम्नमीमहे ॥

ॐ यः शुक्र इव सूर्यो हिरण्यमिव रोचते। श्रेष्ठो देवानां वसुः।

ॐ शं नः करत्यर्व ते सुगं मेषाय मेष्ये। नृभ्यो नारिभ्यो गवे ॥

ॐ अस्मे सोम श्रियमधि नि धेहि शतस्य नृणाम्। महिश्रवस्तुविनृम्णम् ॥

ॐ मानः सोमपरिबाधो मारातयो जुहुरंत। आ न इंदो वाजे भज ॥

ॐ यास्ते प्रजा अमृतस्य परस्मिन्धामन्नृतस्य। मूर्धा नाभा सोमवेन आ भूषंतीः सोम वेदः ॥ *(ऋग्वेद १.४३.३-४-५-६-७-८-९)*

ॐ नमः सोमाय च रुद्राय च नमस्ताम्राय चारुणाय च नमः शंगाय च पशुपतये च नम उग्राय च भीमाय च नमो

अग्रेवधायं च दूरेवधायं च नमो हन्त्रे च हनीयसे च नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो नमस्ताराय नमः शंभवे च मयोभवे च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च नम स्तीर्थ्यायच कूल्याय च नमः पार्याय चावार्याय च नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च नम आतार्याय चालाद्याय च नमशष्प्याय च फेन्याय च नमःसिकत्याय च प्रवाह्याय च। (यजुर्वेद-४ काण्ड-५ प्रश्ने-८ अनुवाक)

ॐ तच्छंयोरावृणीमहे। गातुं यज्ञाय। गातुं यज्ञ पतये। दैवीः स्वस्तिरस्तु नः। स्वस्तिर्मानुषेभ्यः।
ऊर्ध्वं जिगातु भेषजम्। शं नो अस्तु द्विपदे। शं चतुष्पदे। ॐ शांतिः शांतिः। शांतिः॥ (यजुर्वेद-आरण्यक)

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसंतो अस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥ (ऋग्वेद १०.९०.६)

ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदंतु मायांतरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः। (ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

वस्त्र— ॐ युवं वस्त्राणि पीवसावसाथे युवोरच्छिद्रा मंतवो हसर्गाः।
अवातिरमनृतानि विश्वं ऋतेन मित्रा वरुणा सचेथे॥ (ऋग्वेद १.१५२.१)

ॐ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः। तेन देवा अयजंत साध्या ऋषयश्च ये॥ (ऋग्वेद १०.९०.७)

ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥
(ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। वस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतं—ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्रयं प्रतिमुञ्चशुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥

ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम्। पशून्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्यान् ग्राम्याश्च ये॥ *(ऋग्वेद १०.९०.८)*

ॐ क्षुत् पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वान्निर्णुद मे गृहात्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

आभरण—ॐ हिरण्यरूपः स हिरण्य संदृगपान्नपात् सेदु हिरण्यवर्णः। हिरण्ययात् परियोनेर्निषद्या हिरण्यदा ददुत्यन्नमस्मै॥ *(ऋग्वेद २.३५.१०)*

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। आभरणं समर्पयामि।

गन्ध— ॐ गंधं द्वारां दुराधर्षा नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्य जुस्तस्मादजायत॥ *(ऋग्वेद १०.९०.९)*

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। गन्धं समर्पयामि।

अक्षत—ॐ अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत। अर्चन्तु पुत्रका उतपुरंन्न धृष्णवर्चत॥ *(ऋग्वेद ८.६९.८)*

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पाणि—ॐ आयने ते परायणे दूर्वारोहंतु पुष्पिणीः। ह्रदाश्च पुण्डरीकाणि समुद्रस्य गृहा इमे॥ *(ऋग्वेद १०.१४२.८)*

ॐ तस्मादश्वा अजायन्त ये के चो भयादतः। गावोहजज्ञिरे तस्मात् तस्माज्जाता अजावयः॥ *(ऋग्वेद १०.९०.१०)*

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥ *(ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। पुष्पाणि समर्पयामि।

प्रथमावरण पूजनम्—ॐहृदयाय नमः। आग्नेय दिशि। ॐशिरसे स्वाहा नमः। ऐशान्यां दिशि। ॐशिखायै वषट् नमः। नैर्ऋत्यां दिशि। ॐकवचाय हुम्

नमः। वायव्यां दिशि। ॐनेत्रत्रयाय वौषट् नमः। अग्रे ॐअस्त्राय फट् नमः। आग्नेयादि कोरोषु पूजयेत् *(अनुष्ठान पद्धति)*। पूजन करे।

द्वितीयावरण पूजनम्—ॐब्राह्मयै नमः। पूर्वे ॐमाहेश्वर्यै नमः। आग्नेय दिशि। ॐकौमार्यै नमः। दक्षिण दिशि। ॐवैष्णव्यै नमः। नैर्ऋत्यां दिशि। ॐवाराह्यै नमः पश्चिम दिशि। ॐइन्द्राण्यै नमः। वायव्यां दिशि। ॐचामुण्डायै नमः। उत्तरस्यां दिशि। ॐगिरिजायै नमः ऐशान्यां दिशि। *(अनुष्ठान पद्धति)*

तृतीय**ावरण पूजनम्**—ॐइन्द्राय सुराधिपतये पीतवर्णाय वज्रहस्ताय ऐरावत वाहनाय सशक्ति काय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवारायश्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐअग्नये तेजोधिपतये पिंगलवर्णाय शाक्ति हस्ताय मेष वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय स वाहनाय स परिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐयमाय प्रेताधिपतये कृष्णवर्णाय दण्ड हस्ताय महिष वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐनिर्ऋतये रक्षोधिपतये रक्तवर्णाय खङ्ग हस्ताय नरवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐवरुणाय जलाधितये कुंदवर्णाय पाशहस्ताय मकरवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐवायवे प्राणाधिपतये धूम्रवर्णाय अंकुश हस्ताय हरिणवाहनाय सशक्ति काय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐसोमाय नक्षत्राधिपतये शुक्लवर्णाय गदा हस्ताय अश्व वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐईशानाय विद्याधिपतये स्फटिकवर्णाय त्रिशूल हस्ताय वृषभ वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐअनंताय नागाधिपतये क्षीरवर्णाय चक्रहस्ताय गरुड वाहनाय स शक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। नैर्ऋत्यं एवं पश्चिम दिशा के बीच में अनन्त का पूजन करें। ॐब्रह्मणे लोकाधिपतये कंजवर्णाय पाशहस्ताय हंसवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। पूर्व एवं ईशान दिशा के बीच में ब्रह्मा जी का पूजन करें। *(अनुष्ठान पद्धति)*

चतुर्थावरणपूजनम्—ॐवज्राय नमः। (पूर्व में) ॐशक्त्यै नमः। (आग्नेय में) ॐदण्डाय नमः। (दक्षिण में) ॐखड्गाय नमः। (नैर्ऋत्य) ॐपाशाय नमः। (पश्चिम में) ॐअंकुशाय नमः। (वायव्य में) ॐगदायै नमः। (उत्तर में) ॐत्रिशूलाय नमः। (ईशान में) ॐचक्राय न मः। (पश्चिम नैर्ऋत्य के बीच में) ॐपद्माय नमः। (पूर्व ईशान के बीच में) *(अनुष्ठान पद्धति)*

विष्णु अष्टोत्तर शतनाम पूजा

ॐ विष्णवे नमः। ॐ लक्ष्मीपतये नमः। ॐ कृष्णाय नमः। ॐ वैकुण्ठाय नमः। ॐ गरुडध्वजाय नमः। ॐ जगन्नाथाय नमः। ॐ परब्रह्मणे नमः।ॐ वासुदेवाय नमः। ॐ त्रिविक्रमाय नमः। ॐ दैत्यान्तकाय नमः। ॐ मधुरिपवे नमः। ॐ ताक्ष्यर्वाहनाय नमः। ॐ सनातनाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ पद्मनाभाय नमः। ॐ हृषीकेशाय नमः। ॐ सुधाप्रदाय नमः। ॐ माधवाय नमः। ॐ पुण्डरीकाक्षाय नमः। ॐ स्थितिकर्त्रे नमः। ॐ परात्पराय नमः। ॐ वनकालिने नमः। ॐ यज्ञ रूपाय नमः। ॐ चक्र पाणये नमः। ॐ गदाधराय नमः। ॐ उपेन्द्राय नमः। ॐ केशवाय नमः। ॐ हंसाय नमः। ॐ समुद्रमथनाय नमः। ॐ हरये नमः। ॐ गोविन्दाय नमः। ॐ ब्रह्मजनकाय नमः ॐ कैटभासुरमर्दनाय नमः। ॐ श्रीधराय नमः। ॐ कामजनकाय नमः ॐ शेषाशायिने नमः। ॐ चतुर्भजाय नमः। ॐ पाञ्चजन्यधराय नमः। ॐ श्रीमते नमः। ॐ शार्ङ्गपाणये नमः। ॐ जनार्दनाय नमः। ॐ पीताम्बरधराय नमः। ॐ देवाय नमः। ॐ सूर्यचन्द्रविलोचनाय नमः। ॐ मत्स्यरूपाय नमः। ॐ कूर्मतनवे नमः। ॐ क्रोडरूपाय नमः। ॐ नृकेसरिणे नमः। ॐ वामनाय नमः। ॐ भार्गवाय नमः। ॐ रामाय नमः। ॐ बलिने नमः। ॐ कल्किने नमः। ॐ हयाननाय नमः। ॐ विश्वम्भराय नमः। ॐ शिशुमाराय नमः। ॐ श्रीकराय नमः। ॐ कपिलाय नमः। ॐ ध्रुवाय नमः। ॐ दत्तात्रेयाय नमः। ॐ अच्युत्ताय नमः। ॐ अनन्ताय नमः। ॐ मुकुन्दाय नमः। ॐ दधिवामनाय नमः। ॐ धन्वन्तरये नमः। ॐ श्रीनिवासाय नमः। ॐ प्रद्युम्नाय नमः। ॐ पुरुषोत्तमाय नमः। ॐ श्रीवत्सकौस्तुभधराय नमः। ॐ मुरारातये नमः। ॐ अधोक्षजाय नमः। ॐ ऋषभाय नमः। ॐ मोहिनी रुप धारिणे नमः। ॐ सङ्कर्षणाय नमः। ॐ पृथवे नमः। ॐ क्षीराब्धिशायिने नमः। ॐ भूतात्मने नमः। ॐ अनिरुद्धाय नमः। ॐ भक्तवत्सलाय नमः। ॐ नराय नमः। ॐ गजेन्द्रवरदाय नमः। ॐ त्रिधाम्ने नमः। ॐ भूतभावनाय नमः। ॐ श्वेतद्वीपसुवास्तव्याय नमः। ॐ सनकादिमुनिध्येयाय नमः। ॐ भगवते नमः। ॐ शङ्करप्रियाय नमः। ॐ नीलकान्ताय नमः। ॐ धराकान्ताय नमः। ॐ वेदात्मने नमः। ॐ बादरायणाय नमः। ॐ भागीरथीजन्मभूमि पादपद्माय नमः। ॐ सतांप्रभवे नमः। ॐ स्वभुवे नमः। ॐ विभवे नमः। ॐ घनश्यामाय नमः। ॐ जगत्कारणाय नमः। ॐ अव्ययाय नमः। ॐ बुद्धावताराय नमः। ॐ शान्तात्मने नमः। ॐ लीलामानुष विग्रहाय नमः। ॐ दामोदराय नमः। ॐ विराड्रूपाय नमः। ॐ भूतभव्यभवत्प्रभवे नमः। ॐ आदिदेवाय नमः। ॐ प्रह्लादपरिपालकाय नमः। ॐ श्रीमहाविष्णवे नमः। अष्टोत्तर शतनाम पूजां समर्पयामि। *(अनुष्ठान पद्धति)*

धूपम्—ॐ वनस्पति रसोत्पन्नो गंधाढ्यः सुमनोहरः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्य कौ बाहू का ऊरू पादा उच्येते॥ *(ऋग्वेद १०.९०.११)*

ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि संभव कर्दम। श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥ *(ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। धूपं आघ्रापयामि।

दीपम्— आज्यं त्रिवर्ति संयुक्तं वह्निना योजितं मया। गृहाण मंगलं दीपं त्रैलोक्य तिमिरापह॥ *(स्मृति संग्रह)*

ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासी बाहू राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत॥ *(ऋग्वेद १०.९०.१२)*

ॐ आपः सृजंतु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे। नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥ *(ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। दीपं दर्शयामि। धूप दीपानंतरं आचमनीयं समर्पयामि।

नैवेद्यम्—देवस्याग्रे स्थलं संशोध्य गोमयेन मण्डलं कृत्वा तत्र शुद्धं पात्रं न्यस्य अभिघार्य निर्मलं हवि तदुपरि न्यस्य आज्येन द्रवीभूतं कृत्वा "ॐ भू र्भुवः स्वः इति गायत्र्या च प्रोक्ष्य वायु बीजं जप्त्वा निवेद्यान्नं संशोध्य इक्षिणहस्ते अग्निबीजं विलिख्य तेन हस्तेन संदह्यवामहस्ते अमृतबीजं विलिख्य तेत हस्तेन हविराप्लाव्य मूलमंत्रमष्टवारं संजप्य मंत्रामृतमयं संकल्प्य सुरभिमुद्रां बध्वा अमृतमयं भावयित्वा मल धातु रसांशं विभज्य देवस्य निवेद्य ग्रहणेच्छां कुर्यात्।
(अनुष्ठान पद्धति)

"सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि" इत्यनेन

परिषिच्य हस्ताभ्यां पुष्पैः "देवस्य जिह्वार्चीरुचि निवेद्ये निपात्य निवेदयामि भवते जुषाणेदं हविर्विभो" इति वामहस्तेन ग्रासमुद्रा प्रदर्श्य दक्षिण हस्तेन प्राणादि मुद्राः प्रदर्शयेत्। अन्नात् मलांशं धात्वंशं च परित्यज्य रसांशं देवस्य वदनार्चिषि समर्पयेत्। वं अबात्मने इति नैवेद्य मुद्रां प्रदर्शयेत्।
नैवेद्य सारं रससमर्पणात् जातं सुधांशं देवे समर्प्य अंललिमुद्रां बध्वा नैवेद्यसार रससमर्पित जातामृतमय सुधांशुना पुनः पुनः वर्धितं देवं हृन्मूर्ति देवं ध्यायन् स्व स्व मूलमन्त्रं यथा शक्ति जप्त्वा।
कलश के आगे स्थल शुद्धिकर गोमय से शुद्धिकर चतुरस्त्र मण्डल को बनाकर उस पर शुद्ध पात्र को रखें। पात्र में थोडा सा घी डालें। उस पात्र में निर्मल

हविस् (नैवेद्य पदार्थ को) को घी पर रखें उस हविस् को घी से भिगोयें। गायत्री मंत्र से नैवेद्य का प्रोक्षण करें। यंयं यं'' इस वायु बीज को जपकर हविस् को शुद्ध करें। दाहिने हाथ में (रं) अग्नि बीज को लिखकर उस अग्नि से हविस् में विद्यमान कश्मलों को लजायें। (कल्पना करें) बायें हाथ में अमृत बीज (वं) को लिखकर उस हाथ से हविस् को शुद्ध करें। धोने की कल्पना करें। **ॐ नमोनारायणाय**। इस मन्त्र का आठ बार जप करें। हविस् को मत्रमय एवं अमृतमय होने की कल्पना करें। सुरभि मुद्रा से अमृतमय हुआ है मानकर मलांश, धातु अंश एवं रसांश को अलग-अलग करने की कल्पना करें। देवता को नैवेद्य ग्रहण करने की इच्छा उत्पन्न करनी चाहिये। ''सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि'' इससे परिषिञ्चन करें। दोनों हाथों में पुष्प लेकर देवता का जीभ नैवेद्य तक पहुँचने का चिन्तन करें। ''निवेदयामि भवते जुषाण हविर्विभो'' कहकर नैवेद्य स्वीकार करने की प्रार्थना करते हुए बायें हाथ से ग्रास मुद्रा (जैसे बछडे को घास देते हैं) को दिखाकर दाहिने हाथ से—

प्राणाय स्वाहा-अङ्गुष्ठ कनिष्ठिका मिलाकर, **अपानाय स्वाहा**-अङ्गुष्ठ एवं तर्जनी मिलाकर, **व्यानाय स्वाहा**-अङ्गुष्ठ एवं मध्यमा मिलाकर, **उदानाय स्वाहा**-अङ्गुष्ठ एवं अनामिका मिलाकर, **समानाय स्वाहा**। सभी अङ्गुलियों को लिाकर। अन्न से मलांश एवं धातु के अंश को अलग कर केवल रसांश को अर्पित करने की कल्पना करें।

''वं अबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि'' कहकर नैवेद्य मुद्रा का प्रदर्शन करें। अंगुष्ट एवं अनामिका मिलाने से नैवेद्य मुद्रा। नैवेद्य का सार जो रसांश था उसका भी सार अमृत का जो अंश है उसे देवता को समर्पित कर, हाथ जोडकर, नैवेद्य के सार अमृत से भगवान् को बढते हुए मानकर उसे हृदय में स्थित मानकर यथाशक्ति **ॐ नमोनारायणाय**। '' इस मूल मंत्र का जप करें।

ॐ स्वा॒दुः पव॑स्व दि॒व्याय॒ जन्म॑ने स्वा॒दुरिन्द्रा॑य सु॒हवी॑तुनाम्ने।
स्वा॒दुर्मि॒त्राय॒ वरु॑णाय वा॒यवे॒ बृह॒स्पत॑ये॒ मधु॑मा॒ँ अदा॑भ्यः॥ *(ऋग्वेद ९.८५.६)*

ॐ च॒न्द्रमा॒ मन॑सो जा॒तश्चक्षोः॒ सूर्यो॑ अजायत। मुखा॒दिन्द्र॑श्चा॒ग्निश्च॑ प्रा॒णाद्वा॒युर॑जायत॥ *(ऋग्वेद १०.९०.१३)*

ॐ आ॒र्द्रां पु॒ष्करि॑णीं पु॒ष्टिं पि॒ङ्गलां॑ पद्ममा॒लिनी॑म्। च॒न्द्रां हि॒रण्म॑यीं ल॒क्ष्मीं जात॑वेदो म॒ आव॑ह॥

(ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

यथा संभव नैवेद्यं निवेदयामि। **अमृतापिधानमसि** कहकर उत्तरापोशन देवें। हस्ताप्रक्षालनार्थे जलं समर्पयामि। गण्डूषार्थे जलं समर्पयामि। शुद्धाचमनार्थे जलं समर्पयामि। करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि।

ताम्बूल—पूगीफल समायुक्तं नागवल्या दलैर्युतं। चूर्ण कर्पूर संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥ *(स्मृति संग्रह-देवपूजा)*

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। क्रमुक तांबूलं समर्पयामि।

नीराजन (आरति)—ॐ अर्चत प्रार्चत प्रियमेधा सो अर्चत। अर्चतु पुत्रका उत पुरं न धृष्ण्वर्चत। *(ऋग्वेद ८.६९.८)*

ॐ ध्रुवाद्यौ ध्रुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वता इमे। ध्रुवं विश्वमिदं जगद् ध्रुवो राजा विशामयम्॥

ॐ ध्रुवं ते राजा वरुणो ध्रुवं देवो बृहस्पतिः। ध्रुवं त इन्द्रश्चाग्निश्च राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम्॥ *(ऋग्वेद १०.१७३.४)*

सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। मंगल नीराजनंसमर्पयामि।

मंत्रपुष्प—ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदं। समूहळमस्य पांसुरे। (ऋग्वेद १.२२.१७) आ. गृ. सूत्रम्

ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन्। *(ऋग्वेद-१०.९०.१४)*

ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्। सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

(ऋग्वेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्) सपरिवार श्रीविष्णावे नमः। मंत्रपुष्पं समर्पयामि।

प्रदक्षिणा नमस्कार—यानि कानि च पापानि जन्मांतर कृतानि च। तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे पदे॥ *(देवपूजा-स्मृति संग्रह)*

ॐ सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुं॥ *(ऋग्वेद १०.९०.१५)*

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।

यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावोदास्योऽश्वान् विंदेयं पुरुषानहम्॥ *(ऋग्वेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। प्रदक्षिणा नमस्कारान् समर्पयामि।

प्रसन्नार्घ्य—ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि। तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्॥ इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यम् (कहकर तीन बार पुष्पमिश्रित जल छोडें।)

सर्वोपचार पूजनम्—ॐ छत्रं समर्पयामि। चामरेण वीजयामि। गीतं गायामि। नाट्यं नटामि। आंदोळिकामारोहयामि। अश्वमारोहयामि। गजमारोहयामि। समस्य राजोपचार देवोपचार पूजां समर्पयामि।

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥ *(ऋग्वेद १०.९०.१६)*
ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्। सूक्तं पंचदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्॥ *(ऋग्वेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। सवोपचार पूजां समर्पयामि।

प्रार्थना—**विष्णुं जिष्णुं महाविष्णुं प्रभविष्णुं महेश्वरम्। अनेकोत्पात शमनं नमामि पुरुषोत्तमम्॥**
ॐ कायेन वाचा मनसे न्द्रियैर्वा बुध्यात्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि॥ *(पौराणिकम्)*
ॐ ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविः ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्। ब्रह्मैव तेन गंतव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना॥ *(श्री भगवद्गीते)*

सपरिवार श्रीविष्णवे नमः। **अनेन पूजनेन सपरिवारः श्री विष्णुः प्रीयताम्।**

बलि प्रदान विधान—पूजन के बाद बलि प्रदान करें। यजमानः प्रतिबलिं संकल्प्य साक्षतजलं त्यजेत्। यजमान प्रत्येकबलि का संकल्प कहकर अक्षत सहित जल छोडें। अग्न्यायतनस्य समंतात् दिक्षु माषभक्त कूष्माण्ड बलीन् दिक् पालेभ्यो दद्यात्। यज्ञ शाला के चारों अडद चावल कद्दू के बलि को दिक् पालकों को देना चाहिये। प्रत्येक बलि में दीप लजायें। १. पूर्व में चन्द्र को बलि प्रदान करें। त्रातारमिन्द्रङ्गर्गइन्द्रस्त्रिष्टुप् इन्द्रप्रीत्यर्थे

बलिदाने विनियोगः।

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रंहवें हवे सुहवं शूरमिन्द्रं।
ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रं स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः॥ (ऋग्वेद ६.४७.११)

इंद्राय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एष माषभक्तकूष्माण्ड बलिर्नमम। भो इन्द्र दिशं रक्ष बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेनबलिदानेनइन्द्रःप्रीयताम्। इति पुष्पाक्षतजलानि पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को पूर्वाभिमुख छोडना चाहिये। २. आग्नेय दिश में अग्नि को बलिप्रदान करें। अग्निंदूतंमेधातिथिरग्निगौयत्री अग्निप्रीत्यर्थे बलिप्रदाने विनियोगः।

ॐ अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम्। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम्॥ (ऋग्वेद १.१२.१)

अग्नये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एष माषभक्त कूष्माण्ड बलिर्नमम। भो अग्ने दिशं रक्ष बलिं क्षुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेनबलिदानेनअग्निःप्रीयताम इति पुष्पाक्षतजलानि आग्नेयाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को आग्नेयाभिमुख छोडना चाहिये।

३. दक्षरा दिशा में यम को बलिप्रदान करें। यमाय सोमं यमोयमोनुष्टुप् यमप्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

ॐ यमाय सोमं सुनुत यमाय जुहुता हविः। यमंहयज्ञो गच्छत्यग्निदूतो अरंकृतः॥ (ऋग्वेद १०.१४.१३)

यमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्ति काय एष माषभक्तकूष्माण्ड बलिर्नमम। भो यम दिशं रक्ष बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेनबलिदानेनयमःप्रीयताम। इति पुष्पाक्षतजलानि दक्षिणाभिमुखस्त्जेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को दक्षिणाभिमुख छोडना चाहिये। ४. नैऋत्य दिशा में निऋति को बलिप्रदान करें। मोषुणः कण्वो निर्ऋतिर्गायत्री निर्ऋतिप्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

ॐ मोषुणः परापरानिर्ऋतिदुर्हणावधीत्। पदीष्टतृष्णाया सह॥ (ऋग्वेद १.३८.६)

निर्ऋतये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एष माषभक्त कूष्माण्ड बलिर्नमम। भो निऋते दिशां रक्ष बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः

कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेनबलिदानेननिर्ऋतिःप्रीयताम। इति पुष्पाक्षत जलानि नैर्ऋत्याभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल नैऋत्याभिमुख छोडना चाहिये। ५. पश्चिम दिशा में वरुण को बलिप्रदान करें। तत्वायामि शुनः शेपो वरुणस्त्रिष्टुप् वरुणप्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

ॐ तत्वांयामि ब्रह्मणावन्दमानस्तदाशास्ते यजमानोहविर्भिः।

अहेळमानो वरुणेहवोध्युरुशंसमान आयुः प्रमोषीः॥ *(ऋग्वेद १.२४.११)*

वरुणाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एष माषभक्त कूष्माण्ड बलिर्नमम। भो वरुण दिशं रक्ष बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेनबलिदानेनवरूणःप्रीयताम। इति पुष्पाक्षतजलानि पश्चिमाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को पश्चिमाभिमुख छोडना चाहिये। ६. वायव्य दिशा में वायु को बलिप्रदान करें। तववायोव्यश्वोवायुर्गायत्री वायुप्रीत्यर्थे बलिप्रदाने विनियोगः।

ॐ तववायवृतस्पतेत्वष्टुर्जामातरद्भुत। अवांस्या वृणीमहे॥ *(ऋग्वेद ८.२६.२१)*

वायवे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एष माषभक्त कूष्माण्ड बलिर्नमम। भो वायो दिशं रक्ष बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य ायुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेनबलिदानेनवायुःप्रीयताम। इति पुष्पाक्षतजलानि वायव्याभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को वायव्याभिमुख छोडना चाहिये। ७. उत्तर दिशा में सोम को बलिप्रदान करें। सोमोधेनुं गोतमः सोमस्त्रिष्टुप् सोमप्रीत्यर्थे बलिप्रदाने विनियोगः।

ॐ सोमो धेनुं सोमो अर्वन्तमाशुं सोमो वीरं कर्मण्यं ददाति।

सादन्यं विदथ्यं सभेयं पितृश्रवणं यो ददाशदस्मै॥ *(ऋग्वेद १.९१.२०)*

सोमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एष माषभक्त कूष्माण्ड बलिर्नमम। भो सोम दिशं रक्ष बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेनबलिदानेनसोमःप्रीयताम। इति पुष्पाक्षतजलानि उत्तराभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को उत्तराभिमुख छोडना चाहिये। ८. ईशान्य दिशा में ईशान को बलिप्रदान करें। तमीशानमित्यस्य गौतम ईशानो जगती ईशान प्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसेहूमहे वयम्।
पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥ *(ऋग्वेद १.८९.५)*

ईशानाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एष माषभक्त कूष्माण्ड बलिर्नमम। भो ईशान दिशं रक्ष बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेकर्ता शंतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेनबलिदानेनइशानःप्रीयताम इति पुष्पाक्षतजलानि ऐशान्यभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जे ईशान्याभिमुख छोडना चाहिये। ९. इन्द्रेशानयोर्मध्ये ब्रह्म बलिदान पूर्व एवं ईशान्य दिशा के बीच में ब्रह्मा का बलिदान करें। ब्रह्मजज्ञानं नकुलो ब्रह्मा त्रिष्टुप् ब्रह्मप्रीत्यर्थेबलिदाने विनियोगः।

ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेनआवः।
स बुध्न्या उपमा अस्यविष्ठाः सतश्चयोनिमसतश्चविवः॥ *(यजुर्वेद-४ काण्ड-२ प्रश्न-८ अनुवाक-४ मन्त्र)*

ब्रह्मणे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एष माषभक्त कूष्माण्ड बलिर्नमम। भो ब्रह्मान् दिशं रक्ष बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि पश्चिमाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को पश्चिमाभिमुख छोडना चाहिये। १०. पश्चिम एवं नैऋत्य के बीच में अनन्त को बलिप्रदान करें। आयङ्गौः सार्पराज्ञी अनन्तो गायत्री अनन्त प्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः॥ *(ऋग्वेद १०.१८९.१)*

अनन्ताय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एष माषभक्त कूष्माण्ड बलिर्नमम। भो अनन्त दिशं रक्ष बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को पूर्वाभिमुख होकर छोडना चाहिये।

नवग्रह बलि—१. पूर्व में अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित सूर्य को बलिदान करें। आकृष्णेन हिरण्यस्तूपः सविता त्रिष्टुप् अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित आदित्य प्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यंच।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥ (ऋग्वेद १.३५.२)

आदित्याय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय अधिदेवता अग्नि प्रत्यधिदेवता रुद्रसहिताय इमं सदीपमाषभक्तकूष्माण्डबलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो आदित्य बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजनानि पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को पूर्वाभिमुख छोडना चाहिये। २. आग्नेय में अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित सोम को बलिदान करें। आप्यायस्व गोतमः सोमो गायत्री अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित सोम प्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्ण्यं। भवावाजस्य सङ्गथे। (ऋग्वेद १.९१.१६)

सोमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायधाय सशक्तिकाय अधिदेवता अप प्रत्यधिदेवता गौरीसहिताय इमं सदीपमाषभक्त्कूष्माण्डबलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो सोम बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को पूर्वाभिमुख छोडना चाहिये। ३. दक्षिण में अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित अङ्गारक को बलिदान करें। अग्निर्मूर्धाविरूपोंगारको गायत्री अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित अङ्गारक प्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

ॐ अग्निर्मूर्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयं। अपां रेतांसि जिन्वति॥ (ऋग्वेद ८.४४.१६)

अङ्गारकाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय अधिदेवता भूमि प्रत्यधिदेवतात स्कन्दसहिताइमंसदीपमाषभक्तकूष्माण्डबलिंसमर्पयामि। इदं न मम। भो अङ्गारक बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि उत्तराभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को उत्तराभिमुख छोडना चाहिये। ४. ईशान्य में अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित बुध को बलिदान करें। उद्बुध्यध्वंबुधोबुधस्त्रिष्टुप् अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित बुध प्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

ॐ उद्बुधध्वंसमनसः सखायः समग्निमिंध्वं बहवः सनीळाः।

दुधिक्रामुग्निमुषसं च देवी मिन्द्रांवतो वंसे निंह्वयेवः ॥ (ऋग्वेद १०.१०१.१)

बुधाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय अधिदेवता विष्णु प्रत्यधिदेवता पुरुष सहिताय इमं सदीपमाषभक्तकूष्माराडबलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो बुध बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि दक्षिणाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को दक्षिणाभिमुख छोडना चाहिये। ५. उत्तर में अधदेवता प्रत्यधिदेवता सहित बृहस्पति को बलिदान करें 7 बृहस्पते अतीत्यस्य गृत्समदो बृहस्पतिस्त्रिष्टुप् अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित बृहस्पति प्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

ॐ बृहंस्पते अतियदुर्यो अर्हांदद्युमद्वि भाति क्रतुंमुज्जनेंषु।
यद्दीदयच्छवंस ऋत प्रजाततदुस्मा सुद्रविणं धेहि चित्रं ॥ (ऋग्वेद २.२३.१५)

बृहस्पते साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय अधिदेवता इन्द्र प्रत्यधिदेवता ब्रह्मसहिताय इमं सदीपमाषभक्तकूष्माराडबलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो बृहस्पते बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकार्त शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव! इति पुष्पाक्षतजलानि दक्षिणाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को दक्षिणाभिमुख छोडना चाहिये। ६. पूर्व में अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित शुक्र को बलिदान करें। शुक्रंत इत्यस्य भरद्वाजः शुक्रस्त्रिष्टुप् अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित शुक्र प्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

ॐ शुक्रंतें अन्यद्यंजतंतें अन्यद्विपुंरूपे अहंनीद्यौरिंवासि।
विश्वाहिमाया अवंसिस्वधावो भद्रातेंपूषन्निहरातिरंस्तु ॥ (ऋग्वेद ६.५८.१)

शुक्राय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय अधिदेवता इन्द्राणी प्रत्यधिदेवता इन्द्र सहिताय इमं सदीपमाषभक्तकूष्माराडबलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो शुक्र बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि पश्चिमाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को पश्चिमाभिमुख छोडना चाहिये। ७. पश्चिम में अधिदेवता प्रयिधिदेवता सहित शनैश्चर को बलिदान करें। शमग्निरिरिंबिठिः शनैश्चर उष्णिाक् अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित शनैश्चर प्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

ॐ शमृग्निरृग्निभिः करृच्छन्नंस्तपतु सूर्यः। शंवातोंवात्वरृपा अपुस्त्रिधः॥ (ऋग्वेद ८.१८.९)

शनैश्चराय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय अधिदेवता प्रजापति प्रत्यधिदेवता यमसहिताय इमं सदीपमाषभक्तकूष्माण्डबलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो शनैश्चर बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य क्सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को पूर्वाभिमुख छोडना चाहिये। ८. नैर्ऋत्य दिशा में अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित राहु को बलिदान करें। कयान इत्यस्य वामदेवोराहुर्गायत्री अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित राहु प्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

ॐ कयांनश्चित्र आभुंवदूती सृदावृंधः सखां। कया शचिंष्ठयावृता॥ (ऋग्वेद ४.३१.१)

राहवे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय अधिदेवता सर्प प्रत्यधिदेवता मृत्यु सहिताय इमं सदीपमाषभक्तकूष्माण्डबलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो राहो बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि पश्चिमाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को पश्चिमाभिमुख छोडना चाहिये। ९. वायव्य दिशा में अधीदेवता प्रत्यधिदेवता सहित केतु को बलिदान करें। केतुं कृण्वन्नित्यस्य मधुच्छन्दाः केतुर्गायत्री अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित केतु प्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

ॐ केृतुं कृण्वन्नंकेृतवेृ पेशोंमर्या अपेृशसें। समुषद्भिंरजायथाः॥ (ऋग्वेद १.६.३)

केतवे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय अधिदेवता ब्रह्म प्रत्यधिदेवता चित्रगुप्त सहिताय इमं सदीपमाषभक्त कूष्माण्डबलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो केतो बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि उत्तराभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को उत्तराभिमुख छोडना चाहिये।

कर्म साद्गुण्य देवता बलिदान—१. पश्चिम दिशा में गणपति को बलिदान करें। आतून इत्यस्य काण्वः कुसीदी विनायको गायत्री गणपति प्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

ॐ आ तू नं इन्द्र क्षुमन्तं चिृत्रं ग्राभं सं गृंभाय। मृहाहृस्ती दक्षिंणेन॥ (ऋग्वेद ८.८१.१)

विनायकाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपमाषभक्तकूष्माराडबलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो विनायक साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपमाषभक्तकूष्माराडबलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो विनायक बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को पूर्वाभिमुख छोडना चाहिये। २. पश्चिम दिशा में दुर्गा को बलिदान करें। जातवेदसे कश्यपो दुर्गास्त्रिष्टुप् दुर्गाप्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरायितो निदहाति वेदः।
स नः पर्षदति दुर्गाणिविश्वा नावेव सिंधु दुरितात्यग्निः॥ *(ऋग्वेद १.९९.१)*

दुर्गायै साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै इमं सदीपमाषभक्तकूष्माराडबलिं समर्पयामि। इदं न ममम। भो दुर्गे बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्त्री क्षेमकर्त्री शांतिकपुष्टिकर्त्री वरदा भव। इति पुष्पाक्षतजलानि पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को पूर्वाभिमुख छोडना चाहिये। ६ कर्म साद्गुराय देवताओं का बलिदान पश्चिम दिशा में करना चाहिये। उत्तर से दिक्षरा की ओर बडना चाहिये। ३. पश्चिम दिश में क्षेत्रपाल को बलिदान करें। क्षेत्रस्य वामदेवः क्षेत्रपालोनुष्टुप् क्षेत्रपालप्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

ॐ क्षेत्रस्य पतिना वयं हितेनेवजयामसि। गामश्वं पोषयित्वा सनोमृळातीदृशे॥ *(ऋग्वेद ४.५७.१)*

क्षेत्रपालाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपमाषभक्तकूष्माराडबलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो क्षेत्रपाल बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजनानि पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को पूर्वाभिमुख छोडना चाहियो। ४. पश्चिम दिशा में वायु को बलिदान करें। क्राणा शिशुरित्यस्य त्रितोवायुरुष्णिाक् वायुप्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

ॐ क्राणा शिशुर्महीनां हिन्वनृतस्य दीधितिम्। विश्वा परिप्रिया भुवदधद्विता॥ *(ऋग्वेद ९.१०२.१)*

वायवे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपमाषभक्तकूष्माराडबलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो वायो बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को पूर्वाभिमुख छोडना चाहिये। ५. पश्चिम दिशा में आकाश को बलिदान करें। आदित्य प्रत्नस्यवत्स आकाशो गायत्री आकाश प्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

ॐ आदित् प्रत्नस्यरेतसोज्योतिष्पश्यंति वासरं। पुरोयदिध्यते दिवा॥ (ऋग्वेद ८.६.३०)

आकाशाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपमाषभक्तकूष्माण्डबलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो आकाश बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को पूर्वाभिमुख छोडना चाहिये। ६. पश्चिम दिशा में अश्विनी देवताओं को बलिदान करें। अश्विनावर्ति राहूगणो गोतमोश्विनावुष्णिक् अश्व्यावाहने विनियोगः।

ॐ अश्विनंनावर्तिरस्मदागोमंदस्रा हिरंण्यवत्। अर्वाग्रथं समंनसा नियंच्छतं॥ (ऋग्वेद १.९२.१६)

अश्विभ्यां साङ्गाभ्यां सपरिवाराभ्यां सायुधाभ्यां सशक्तिकायभ्यां इमं सदीपमाषभक्तकूष्माण्डबलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो अश्विनौ बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्तारौ क्षेमकर्तारौ शांतिकर्तारौ पुष्टिकर्तारौ वरदौ भवताम्। इति पुष्पाक्षतजलानि पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को पूर्वाभिमुख छोडना चाहिये।

सपरिवार प्रधान देवता विष्णु बलिदान—प्रधान देवता विष्णु एवं उनके परिवार की पाँच बलियाँ उत्तर में करें।

१. ॐ महाद्भुताधिपतये नमः। महाद्भुताधिपतिं इमं सदीप माष भक्त कूष्माण्डबलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो महाद्भुताधिपते बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर पुष्प अक्षत एवं जल को पूर्वाभिमुख छोडना चाहिये।

२. ॐ महाविष्णावे नमः। महाविष्णावे इमं सदीप माष भक्त कूष्माण्डबलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो महाविष्णाव बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर पुष्प अक्षत एवं जल को पूर्वाभिमुख छोडना चाहिये।

३. ॐ ईश्वराय नमः। ईश्वराय इमं सदीप माष भक्त कूष्माण्डबलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो ईश्वर बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर पुष्प अक्षत एवं जल को पूर्वाभिमुख छोडना चाहिये।

४. ॐ सर्वोत्पातशमनाय नमः। सर्वोत्पातशमनाय इमं सदीपमाषभक्तकूष्माण्ड बलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो सर्वेत्पातशमन बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य

सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर पुष्पा अक्षत एवं जल को पूर्वाभिमुख छोडना चाहिये। ५. इदं विष्णुर्मेधातिथिर्विष्णुर्गायत्री प्रधानदेवता विष्णुप्रीत्यर्थेबलिप्रदाने विनियोगः।

ॐ इदं विष्णुर्वि चंक्रमे त्रेधा नि दंधे पुदं। समूंह्ळमस्य पांसुरे। *(ऋग्वेद १.२२.१७) आ. गृ. सूत्रम्*

ॐ विष्णवे नमः। विष्णवे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीप माष भक्त कूष्माण्डबलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो विष्णु इमं बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर पुष्प अक्षत एवं जल को पूर्वाभिमुख छोडना चाहिये।

कूष्माण्ड बलिदान

यज्ञशालात् बहिः ऐशान्यदिग्भागे कूष्माण्डे विष्णु क्षेत्रपालं च आवाहयेत्। पञ्चोपचार पूजां च कुर्यात्। यज्ञ शाला के बाहर ईशान्य दिशा में कद्दू में विष्णु एवं क्षेत्रपाल का आवाहन कर पूजन करें। ॐ लं पृथिव्यात्मने गंधं कल्पयामि। ॐ हं आकाशात्मने पुष्पं कल्पयामि। ॐ यं वाय्वात्मने धूपं कल्पयामि। ॐ रं अग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि। ॐ बं अबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि। ॐ पं परमात्मने पञ्चोपचारपूजां समर्पयामि। ॐ विष्णवे नमः। ॐ क्षेत्रपालाय नमः। विष्णवे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीप कूष्माण्ड बलिं समर्पयामि। क्षेत्रपालाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीप कूष्माण्ड बलिं समर्पयामि।

भो विष्णु बलिं भुंक्ष्व ममयजमानस्य सकुटुम्बस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। भो क्षेत्रपाल बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिमर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। ॐ नमो नारायणाय हुं फट् कहकर कूष्माण्ड को प्रदक्षिणाकार में घुमाकर पटक देवें। उस बलि को इतरों के द्वारा स्वच्छ करने के बार **''शांता पृथिवी शिवमन्तरिक्षं द्यौर्नोदेव्यभयंनो अस्तु।**

शिवादिशः प्रदिशउद्दिशोन आपो विद्युतः परिपांतु सर्वतः शांति शांति शांति। *(ऋग्वेद १० मण्डलस्यान्ते)*

इस मंत्र से भूमि प्रोक्षण कर यजमान एवं आचार्य हाथ पैर धोकर आचमन कर लेवें।

पूर्णाहुति होम से पहले पूर्ण फल होम—याः फलिनीरित्यस्य आथर्वणो भिषगोषधयः अनुष्टुप् पूर्णफल होमे विनियोगः।

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पायाश्च पुष्पिणीः। बृहस्पतिं प्रसूतास्तानो मुंचन्त्वं हंसः स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १०.९७.१५)*

ओषधिभ्यः इदं न मम। कहकर पूर्णफल का होम करें। इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव। तेन मे सफलावाप्तिर्भवेद् जन्मनि जन्मनि। एतद् होम संपूर्ण फलावाप्त्यर्थ महाव्याहृति भिर्होष्ये।

ॐ भूरग्नये च पृथिव्यै च महते च स्वाहा। अग्नये पृथिव्यै महते च इदं न मम।
ॐ भुवो वायवे चान्तरिक्षाय च महते च स्वाहा। वायवेऽन्तरिक्षाय महते च इदं न मम।
ॐ सुवरादित्याय च दिवे च महते च स्वाहा। आदित्याय दिवे महते च इदं न मम।
ॐ भूर्भुवः स्वश्चन्द्रमसे च नक्षत्रेभ्योदिग्भ्यश्च महते च स्वाहा।
चन्द्रम से नक्षत्रेभ्यो दिग्भ्यो महते च इदं न मम। *(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषद्)*

इन चार मंत्रों से घी की आहुतियाँ देवें। ॐभूः स्वाहा। अग्नये इदं न मम। ॐभुवः स्वाहा। वायव इदं न मम। ॐस्वः स्वाहा। सूर्याय इदं न मम। ॐभूर्भुवः स्वः स्वाहा। प्रजापतये इदं न मम।

पूर्णाहुति होम संकल्प—हाथ में पुष्पाक्षत जल लेकर संकल्प करें। **सर्वकर्म प्रपूरणीं भद्र द्रव्यदां पूर्णाहुतिं होष्ये।** स्रुचि द्वादशगृहीतमाज्यं तस्यां गंधपुष्पाक्षतालंकृताग्रं स्रुवं अधो बिलं निधाय स्रुक् स्रुवं शंखमुद्राय गृहीत्वा ऊर्ध्वस्तिष्ठन्। स्रुवा से स्रुक् में १२ बार घी डालकर उस पर नीचे बिल वाला गंधपुष्प एवं अक्षता से लङ्कृत स्रुव को रखें। दोनों को शंखमुद्रा से पकडकर खडे होंवे। मंत्र पाठ करें। घी की धारा गिरते रहना चाहिये। मूर्धानं भरद्वाजो ग्निवैश्वानरस्त्रिष्टुप् पूर्णाहुतौ विनियोगः।

ॐ मूर्धानंदिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम्।
कविं सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः स्वाहा॥ *(ऋग्वेद ६.७.१)*

अग्नये वैश्वानराय इदंनमम। पुनस्त्वाग्निर्वसुरुद्रादित्यास्त्रिष्टुप् पूर्णाहुतौ विनियोगः।

ॐ पुनंस्त्वादित्यारुद्रावसंवः समिंधतां पुनंर्ब्रह्माणो वसुनीथ यज्ञैः।
घृतेन त्वंतन्वों वर्धयस्वसत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः स्वाहां॥ *(यजुर्वेद- ४ काण्ड-२ प्रश्न-३ अनुवाक)*

वसुरुद्रादित्येभ्यः इदं न मम। पूर्णादर्वि विश्वेदेवाः शतक्रतुरनुष्टुप् पूर्णाहुतौ विनियोगः।

ॐ पूर्णा दंर्वि परांपत सुपूंर्णा पुनरापंत। वस्त्रेवविक्रींणावहा इषमूर्जंशतक्रतो स्वाहां॥ *(यजुर्वेद- १ काण्ड-८ प्रश्न-४ अनुवाक-२ मन्त्र)*

शतक्रतव इदं न मम। सप्तते अग्नेसप्तवानग्निर्जगती पूर्णाहुतौ विनियोगः।

ॐ सप्ततें अग्नेसमिधंः सप्तजिह्वाः सप्तऋषंयः सप्तधामंप्रियाणिं।
सप्तहोत्राः सप्तधात्वां यजंति सप्तयोनीरापृंणस्वाघृतेन स्वाहां॥ *(यजुर्वेद- १ काण्ड-५ प्रश्न-२ अनुवाक)*

सप्तवतेग्नय इदं न मम। समुद्रा दूर्मिरिति एकादशर्चस्य गौतमो वामदेव आपस्त्रिष्टुप् अन्त्या जगती पूर्णाहुतौ विनियोगः।

ॐ समुद्रादूर्मि मर्धुमाँ उदांरदुपांशुना सममृतत्वमांनट्। घृतस्य नाम गुह्यं यदस्तिं जिह्वा देवानांममृतस्य नाभिंः॥
वयं नाम प्रब्रंवामाघृतस्याऽस्मिन् यज्ञे धांरयामानमोंभिः। उपंब्रह्मा शृंणवच्छस्यमांनं चतुंः शृङ्गोऽवमीद् गौर एतत्॥
चत्वारि शृङ्गा त्रयों अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तांसो अस्य। त्रिधां बद्धो वृषभो रोंरवीति महो देवो मर्त्यांआविवेश॥
त्रिधां हितं पणिभिर्गुह्यमांनं गविं देवासों घृतमन्वं विन्दन्। इन्द्र एकं सूर्य एकं जजान वेनादेकं स्वधया निष्टंतक्षुः॥
एता अंर्षन्ति हृद्यांत् समुद्राच्छतव्रंजा रिपुणा नावचक्षें।
घृतस्य धारां अभिचांकशीमि हिरण्ययों वेतसो मध्यं आसाम्॥
सम्यक् स्त्रंवन्ति सरितो न धेनां अन्तर्हृदा मनंसा पूयमांनाः। एते अंर्षन्त्यूर्मयों घृतस्यं मृगा इंव क्षिपणोरीषंमाणाः॥

सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः।
घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः॥
अभिप्रवन्त समनेव योषाः कल्याण्यः स्मयमानासो अग्निम्।
घृतस्य धाराः समिधो नसन्त ता जुषाणो हर्यति जातवेदाः॥
कन्या इव वहतुमेतवा उ अञ्ज्यञ्जाना अभिचाकशीमि। यत्र सोमः सूयते यत्र यज्ञो घृतस्य धारा अभितत् पवन्ते॥
अभ्यर्षत सुष्टुतिं गव्यमाजिमस्मासु भद्रा द्रविणानि धनत। इमं यज्ञं नयत देवता नो घृतस्य धारा मधुमत् पवन्ते॥
धामन् ते विश्वं भुवनमधि श्रितमन्तः समुद्रे हृद्यन्तरायुषि।
अपामनीके समिथे य आभृतस्तमश्याम मधुमन्तं त ऊर्मिम् स्वाहा। *(ऋग्वेद ४.५८ सम्पूर्ण सूक्त)* अद्भ्यः इदं न मम।

ॐ स्वाहाग्नये वरुणाय स्वाहेन्द्राय मरुद्भ्यः। स्वाहा देवेभ्यो हविः॥ *(ऋग्वेद ५.५.११)*
आयाह्यग्ने समिधानो अर्वाङिन्द्रेण देवैः सरथं तुरेभिः।
बर्हिर्न आस्तामदितिः सुपुत्रा स्वाहा देवा अमृता मादयन्ताम्। *(ऋग्वेद ३.४.११)*

इति पठन् यवपरिमितां धारां संततां स्रुगग्रेण सशेषं हुत्वा। उपरोक्त मंत्रों को कहते हुए धान के बराबर मोटे घी की धारा से निरन्तर स्रुक् के अग्रभाग से होम करें। थोडा सा स्रुक् में बचे रहे।

पूर्णाहुति शेष होम—विज्योतिषेत्यस्य जारोवृशोग्निस्त्रिष्टुप् पूर्णाहुति शेषाज्य होमे विनियोगः।

ॐ विज्योतिषा बृहता भात्यग्निराविर्विश्वानि कृणुते महित्वा।
प्रादेवीर्मायाः सहते दुरेवाः शिशीते शृङ्गे रक्षसे विनिक्षे स्वाहा॥ *(ऋग्वेद ५.२.९)*

अग्रय इदं न मम। कहकर त्याग करें। ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा। विश्वेभ्यो देवेभ्य इदं न मम। कहकर संस्राव (शेष बचे घी का) होम कर त्याग करें।

वसोर्धारा—बडे यज्ञों में वसोर्धारा करना चाहिये। परिशिष्ट प्रकरण में इसे विस्तार से लिखा जायेगा। निरन्तर घी की धारा गिरते रहना चाहिये। इसमें प्रयुक्त मंत्रों का क्रम निम्नलिखित है।

१. चमकानुवाक—११ अनुवाक (मंत्र), २. अग्निमीळे—९ ऋक् (मंत्र), ३. विष्णोर्नुकं—६ ऋक् (मंत्र), ४. आतेपितः—१५ ऋक् (मंत्र), ५. स्वाधिष्ठया—१० ऋक् (मंत्र), ६. वसोर्धारा अनुवाक—१ अनुवाक (आधा पेज का मंत्र)

यहाँ पर होम का पूर्णाहुति मार्जन विधान प्रकरण संपन्न हुआ। अथावभृथ स्थानीयं पूर्णपात्र जलेन मार्जनं कुर्यात। इसके बाद अवभृथ स्नान के स्थल पर पूर्ण पात्र जल से मार्जन करना चाहिये। पूर्वासादितं पूर्णपात्रं आस्तीर्णे दक्षिण पाणिना निधाय तत्रगङ्गादि पुण्यनीः स्मरन् दक्षिणपाणिना स्पृशन्। पहले स्थापित पूर्णपात्र को बिछाये गये बर्हिष् (कुशों) के ऊपर दाहिने हाथ से रखें दाहिने हाथ से छूकर वहाँ पर गङ्गादि पूण्यनदियों का स्मरण करें। पूर्णमसिपूर्णं मे भूयाः सुपूर्णमसि सुपूर्णं मे भूयाः। सदसिसन्मेभूयाः सर्वमसि सर्व में भूयाः॥ अक्षितिरसिमामेक्षेष्ठाः।

उपरोक्त मंत्रों को पूर्णपात्र छूकर पाठ करं। कुशाग्रैः प्रागादि पञ्चदिक्षुजलं मंत्रैः यथालिङ्गं सिञ्चेत्। कुशा के अग्र भाग से पूर्वादि पाञ्च दिशाओं में प्रोक्षण करें। (पूर्व में) प्राच्यां दिशि देवा ऋत्विजो मार्जयन्ताम्। दक्षिणस्यां दिशि मासाः पितरो मार्जयन्ताम्। अप उपस्पृश्य। हाथ धो लेवें। (पश्चिम में) प्रतीच्यां दिशि ग्रहाः पशवो मार्जयन्तां। (उत्तर में) उदीच्यां दिशि आप ओषधिवनस्पतयो मार्जयन्ताम। (ऊपर में) ऊर्ध्वायां दिशि ज्ञः संवत्सरः प्रजापतिर्मार्जयताम्।

ब्रह्मा चार्य या यजमान के द्वारा मार्जन—आपो अस्मानित्यस्य देवश्रवा आपस्त्रिष्प् मार्जने विनियोगः।

ॐ आपो अस्मान्मातरः शुंधयंतुंघृतेननोघृतप्वः पुनंतु।

विश्वं हिरिप्रंपवहंति देवीरुदिदाभ्यः शुचिरापूतएमि॥ *(ऋग्वेद १०.१७.१०)*

इदमापः सिंधुद्वीप आपोनुष्टुप् मार्जने विनियोगः।

ॐ इदमापः प्रवंहतयत्किंचदुरितं मयिं। चद्वाहमभिदुद्रोहयद्वाशेपउतानृतं। *(ऋग्वेद १०.९.८)*

सुमित्र्यान आप ओषधयः सन्तु। इतना कहकर मार्जन करें।

दुर्मित्र्यास्तस्मै संतु योंस्मान्द्वेष्टियञ्चवयंद्विष्मः। *(यजुर्वेद-आरण्यक)*

इतना कहकर नैर्ऋत्य देश में कुशाग्र से जल छोडें। ततो ब्रह्मा यजमान वामपार्श्वे स्थित जत्यंजलौ तदभावे यजमानस्य अंजलौ पूर्णपात्रस्थं जलं आदाय जलं प्रत्यङ्मुखं निषिच्य। इसके बाद ब्रह्मा यजमान के अंजली में स्थित पूर्णपात्र के जल से प्रोक्षण करें।

ॐ माहं प्रजां परांसिञ्चयानंः सयावंरीस्थनं। समुद्रेवों निनयानि स्वंपाथें अपीथ। *(श्रौत मन्त्र)*

उंत्र को कहते हुए पापनाश के लिए नीचे गिरे जल को समुद्र में गया मानकर हाथ में बचे शेष जल से अपना प्रोक्षण करें। ततः कर्ता अग्रेः वायव्ये स्थितः संस्थाजपेन उपतिष्ठते। इसके बाद यजमान अग्नि के वायव्य दिशा में खडे होकर संस्था जप जो कि आगे बताया जा रहा है उसके हाथ जोडकर अग्नि की प्रार्थना करें। अग्नेत्वं न इति चतसृणां गौपायना लौपायनावा बंधुः सुबुन्धः श्रुतबंधुर्विप्रबन्धुश्च एकैकर्चा ऋषयः अग्निर्देवता द्विपदाविराट् छन्दः। अग्न्युपस्थाने विनियोगः।

ॐ अग्नेत्वं नो अंतंमउतत्राता शिवोभंवावरूथ्यंः। वसुंरग्निर्वसुंश्रवा अच्छांनक्षिद्युमत्तंमंरयिंदाः॥
सनों बोधिश्रुधीहवं मरुष्याणों अघयतः समस्मात्।
तंत्वां शोचिष्ठदीदिवः सुम्नायंनूनमीं महेसखिंभ्यः॥ *(ऋग्वेद ५.२४.१-२-३-४)*

ॐ चंमे स्वरंश्च मे यज्ञोपचतेनमंश्च। यत्तेंन्यूनं तस्मैंत उपयुत्तेतिरिक्तं तस्मैं ते नमंः। अग्नये नमः। ॐ स्वस्ति। *(अग्निमुख)*

श्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां विद्यां बुद्धिं श्रियं बलं। आयुष्यं तेज आरोग्यं देहि मे हव्यवाहन॥ श्री यज्ञेश्वराय नमः।

कलश जल मार्जन विधान—कलश जलेन मार्जनं करिष्ये। तदङ्गत्वेन पुनः पूजां करिष्ये। आवाहित देवताभ्यो नमः। ध्यायामि। ध्यानं समर्पयामि। आवाहयामि। आसनं समर्पयामि। स्वागतम् समर्पयामि । पादारविन्दयोः पाद्यं पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोः अर्घ्य अर्घ्य समर्पयामि। मुखे आचमनीयं समर्पयामि। स्नानं समर्पयामि। वस्त्रं समर्पयामि। उपवीतं समर्पयामि। आभरणं समर्पयामि। गन्धं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि। पुष्पाणि समर्पयामि।

धूपमाघ्रापयामि। दीपं दर्शयामि। अमृतोपहारं निवेदयामि। क्रमुकताम्बुलं समर्पयामि। नीरजनं समर्पयामि। मंत्रपुष्पं समर्पयामि। प्रदक्षिरा नमस्कारान् समर्पयामि। प्रसन्नार्घ्यं समर्पयामि। सर्वोपचारपूजां समर्पयामि। कलशों का पूजन करें।

उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तंस्त्वेमहे। उपप्रयंन्तु मुरुतंः सुदानंव इन्द्रं प्राशूर्भंवा सचां॥ (ऋग्वेद १.४०.१)
अभ्यार मिदद्रंयो निषिंक्तं पुष्कंरे मधुं। अवतस्यं विसंर्जने। (ऋग्वेद ८.७२.११)

आवाहित देवताभ्यो नमः। यथा स्नानं उद्वासयामि। कहकर आवाहितदेवताओं का अक्षत डालकर विसर्जन करें।

अथ मराडप ईशाने ग्रहवेद्याः प्रागुदीच्यां शुचौ देशे संमृष्टे पञ्चरंगैः स्वस्तिकं कृत्वा चतुष्पदं दीर्घचतुरस्त्रं सोत्तरच्छदं पीठं निधाय तत्र उदगग्रान् आमूलान् हरितदर्भानास्वीर्य तत्र यजमानं परिहित नववस्त्रं पाडमुखमुपवेश्य आचार्यः ऋत्विग्भिः सह मङ्गलवाद्यैः अभिषेक कुम्भोदकं पात्रान्तरे आदाय प्रत्यडमुखः तिष्ठन् स पलाशया औदुंबर्यार्द्रशाख्या सहिरराय पवित्रया स कुश दूर्वा पल्लवया हस्तमन्तर्धाय उदक पृषद्भिरब्लिङ्गाभिः वारुणीभिः पावमानीभिः अन्यामिः च शान्ति पवित्र लिङ्गभिः ग्रहाभिषेकमन्त्रैः (सुरास्त्वा मिति) इमा आपः शिवतमा इति त्रि ऋचेन देवस्त्वेति च यजुषा भूर्भुवः स्वः इति व्याहृतिभिः। अभिषिञ्चेत्। (ब्रह्मकर्म समुच्चय)

मराडप के ईशान्य में ग्रहवेदी के ईशान्य में पवित्र देश में शुद्धीकृत भूमि पर पाँच रंगों से स्वस्तिक लिखें। चार पाँव वाला चौकार पीठ पर ऊपर वस्त्र बिछाकर उस पर हरे कुशाओं को उत्तर की ओर अग्र हो ऐसे बिछाना चाहिये। यजमान नवीन वस्त्रों को पहनकर उस पर पूर्वाभिमुख होकर बैठें। ऋत्विजों के साथ आचार्य मङ्गलवाद्यों को सुनते हुए कलशों के जल को एक अलग पात्र में निकाल लेवें। फिर पश्चिमाभिमुख खडे होकर पलाश, उदुम्बर, हिरणयपवित्र कुश दूर्वा पल्लव इन सब का एक गुच्छे को हाथ में पकडकर जल के बिन्दुओं को जो कि वरुरा देवता के प्रतीक है उन्हें वरुरा देवताक मन्त्रों से, पवमान मन्त्रों से, इतर शान्ति मत्रन्, पवित्र मन्त्र, ग्रह मंत्र इमा आपः आदि तीन मंत्र देवस्यत्वा इस यजुर्वेद मंत्र से एवं व्याहृति मंत्रों का पाठ करते हुए अभिषेक (प्रोक्षराा) करना चाहिये। आपोहिष्ठेति नवर्चस्य सूक्तस्य आम्बरीष सिन्धु द्वीप आपो गायत्री पञ्चमी वर्धमान सप्तमी प्रतिष्ठा अन्त्ये द्वे

अनुष्टुबौ मार्जने विनियोगः।

ॐ आपो हिष्ठा मयो भुवस्तान ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे॥
यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयते हनः उशतीरिव मातरः॥
तस्मा अरंगमामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः॥
शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं यो रभिस्त्रवन्तु नः॥
ईशाना वार्याणां क्षयन्तीश्चर्षणीनाम्। अपो याचामि भेषजम्॥
अप्सु मे सोमो अब्रवीदन्तर्विश्वानि भेषजा। अग्निं च विश्वशंभुवम्॥
आपः पृणीत भेषजं वरूथं तन्वे३मम। ज्योकच सूर्य दृशे॥
इदमापः प्रवहत यत् किं च दुरितं मयि। यद्वाहमभि दुद्रोह यद्वा शेप उतानृतम्॥
आपो अद्यान्वचारिषं रसेन समगस्महि। पयस्वानग्न आ गहि तं मा संसृज वर्चसा॥ *(ऋग्वेद १०.९.१ से ९ तक)*

तत्वायामीति तिसृणां आजीगर्तिः शुनः शेपः सकृत्रिको वैश्वामित्रो देवरातो वरुण स्त्रिष्टुप् मार्जने विनियोगः।

ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वंदमानस्त दाशास्तेयजमानो हविर्भिः। अहेळमानो वरुणेह बोध्युरुशंसमान आयुः प्रमोषीः॥
तदिन्नक्तं तद्दिवामह्यमाहु स्तदुयंकेतो हृद आविचष्टे। शुनःशेपो यमह्वद्गृ भीतस्त्रिष्वादित्यन्द्रुपदेषुबद्धः।
अवैनं राजावरुणः ससृज्याद्विद्वाँ अदब्धो विमु मोक्तु पाशान्। *(ऋग्वेद १.२४.११-१२-१३)*

स्वाधिष्ठ येतितिसृणां वैश्वामित्रोमधुच्छन्दाः पवमान सोमो गायत्री मार्जने विनियोगः।

ॐ स्वादिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोम धारया। इन्द्राय पातवे सुतः॥
रक्षोहा विश्वचर्षणिरभि योनिमयोहतम्। द्रुणा सधस्थ मासदत्॥

वरि वोधातमो भव मंहिंष्ठो वृत्रहन्तमः। पर्षि राधों मघोनाम्॥ (ऋग्वेद ८.१.१-२-३)

शं न इन्द्राग्नीति पञ्चदशर्चस्य सूक्तस्य मैत्रा वरुणिर्वसिष्ठः वामदेवः त्रिष्टुप् मार्जने विनियोगः।

ॐ शं नं इन्द्राग्नी भंवतामवोंभिः शं न इन्द्रा वरुंणा रातहंव्या।
शमिन्द्रासो मां सुविताय शं योः शं न इन्द्रां पूषणा वाजंसातौ॥
शं नो भगः शमु नः शंसों अस्तु शं नः पुरंधिः शमु सन्तु रायः।
शं नः सत्यस्यं सुयमंस्य शं सः शं नों अर्यमा पुरुजातो अस्तु॥
शं नों धाता शमुं धर्ता नों अस्तु शं नं उरूची भंवतु स्वधाभिः।
शं रोदंसी बृहती शं नो अद्रिः शं नों देवानां सुहवांनि सन्तु॥
शं नों अग्निर्ज्योतिंरनीको अस्तु शं नों मित्रावरुंणा वश्विना शम्।
शं नः सुकृतां सुकृतानिं सन्तु शं नं इषिरो अभि वांतु वातः॥
शं नो द्यावां पृथिवी पूर्वहूंतौ शमन्तरिक्षं दृशये नो अस्तु।
शं न ओषंधीर्वनिनों भवन्तु शं नो रजंसस्पतिंरस्तु जिष्णुः॥
शं न इन्द्रो वसुंभिर्देवो अस्तु शमांदित्येभिर्वरुणः सुशंसः।
शं नों रुद्रो रुद्रेभिर्जलाषः शं नस्त्वष्टा ग्नाभिंरिह शृंणोतु॥
शं नः सोमों भवतु ब्रह्म शं नः शं नो ग्रावांणः शमुंसन्तु यज्ञाः।
शं नः स्वरूंणां मितयों भवन्तु शं नः प्रस्व१ःशम्वंस्तु वेदिः॥
शं नःसूर्यं उरुचक्षाउदेंतु शं नश्चतंस्त्रः प्रदिशों भवन्तु।

शं नः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु शं नः सिन्धवः शमु सन्त्वापः ॥
शं नो अदिति र्भवतु व्रतेभिः शं नो भवन्तु मरुतः स्वर्काः ।
शं नो विष्णुः शमुपूषा नो अस्तु शं नो भवित्रं शम्वस्तु वायुः ॥
शं नो देवः सविता त्रायमाणः शं नो भवन्तूषसो विभातीः ।
शं नः पर्जन्यो भवतु प्रजायः शं नः क्षेत्रस्य पतिरस्तु शंभुः ॥
शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु शं सरस्वती सह धीभिरस्तु ।
शमभिषाचः शमु रातिषाचः शं नो दिव्याः पार्थिवाः शं नो अप्याः ॥
शं नः सत्यस्य पतयो भवन्तु शं नो अर्वन्तः शमु सन्तु गावः ।
शं न ऋभवः सुकृतः सुहस्ताः शं नो भवन्तु पितरो हवेषु ॥
शं नो अज एकपाद् देवो अस्तु शं नोऽहिर्बुध्न्यः१शं समुद्रः ।
शं नो अपां नपात् पेरुरस्तु शं नः पृश्निर्भवतु देवगोपा ॥
आदित्या रुद्रा वसवो जुषन्तेदं ब्रह्म क्रियमाणं नवीयः ।
शृखन्तु नो दिव्याः पार्थिवासो गोजाता उत ये यज्ञियासः ॥
ये देवानां यज्ञिया यज्ञियानां मनोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः ।
त नो रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ *(ऋग्वेद ७.३५.१ से १५)*

सर्वादभुत् शान्तियाग में इस शमग्नि सूक्त का अधिक महत्व है। अतः। १५ मंत्रों से मार्जन करना चाहिए। शेष योगों में ३ या १५ मंत्रों से समयानुसार करनाा चाहिए। पवित्रंत इति तिसृणामाङ्गीरसः पवित्रः पवमान सोमो जगती मार्जने विनियोगः।

ॐ पवित्रन्ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणिपर्येषि विश्वतः।
अतप्ततनूर्नतदामो अश्नुतेशृतासइद्वहन्तस्तत्समाशत ॥
तपोष्पवित्रंविततं दिवस्पदेशोचन्तो अस्यतंतवोव्यं स्थिरन्।
अवन्त्यस्य पवीतारमाशवोदिवस्पृष्ठ मधितिष्ठति चेतसा ॥
अरूरुचदुषसः पृश्निरग्रिय उक्षा बिभर्ति भुवनानि वाजयुः।
माया विनोममिरे अस्यमाययानृचक्षसः पितरोगर्भमादधुः ॥ (ऋग्वेद ९.८३.१-२-३)

अथ ग्रहमंत्राः—

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च।
हिरण्ययेन सविता रथेनाऽऽदेवोयाति भुवनानि पश्यन् ॥ (ऋग्वेद १.३५.२)
ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्ण्यम्। भवा वाजस्य सङ्गथे ॥ (ऋग्वेद १.९१.१६)
ॐ अग्निमूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपां रेतांसि जिन्वति ॥ (ऋग्वेद ८.४४.१६)
ॐ उद्बुध्यध्वं समनसः सखायः समग्निमिन्ध्वं बहवः सनीळाः।
दधिक्रामग्निमुषसं च देवीमिन्द्रावतोऽवसे निह्वये वः ॥ (ऋग्वेद १०.१०१.१)
ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।
यद्दीदयच्छवस ऋत प्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ॥ (ऋग्वेद २.२३.१५)
ॐ शुक्रं ते अन्यद्यजतं ते अन्यद्विषुरूपे अहनी द्यौरिवासि।
विश्वा हि माया अवसि स्वधावो भद्रा ते पूषन्निहरातिरस्तु ॥ (ऋग्वेद ६.५८.१)

ॐ शमग्निरग्निभिः करच्छंनस्तपतु सूर्यः। शं वातो वात्वरपा अपस्त्रिधः॥ (ऋग्वेद ८.१८.९)
ॐ कयानश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कयाशचिष्ठया वृता॥ (ऋग्वेद ४.३१.१)
ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशोमर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः॥ (ऋग्वेद १.६.३)
ॐ ग्रहाणामादिरादित्यो लोकरक्षणकारकः। विषमस्थान संभूतां पीडां हरतु ते रविः॥
रोहिणीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रः सुधाशनः। विषमस्थान संभूतां पीडां हरतु ते विधुः॥
भूमिपुत्रो महातेजा जगतां भयकृत्सदा। वृष्टिकृद्वृष्टिहर्ता च पीडां हरतु ते कुजः॥
उत्पातरूपो जगतां चन्द्रपुत्रो महाद्युतिः। सूर्यप्रियकरो विद्वान् पीडां हरतु ते बुधः॥
देवमंत्री विशालाक्षः सदालोकहितेरतः। अनेक शिष्यसंपूर्णः पीडां हरतु ते गुरुः॥
दैत्यमंत्री गुरुस्तेषां प्राणदश्चमहामतिः। प्रभुस्ताराग्रहाणां च पीडां हरतु ते भृगुः॥
सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः। मंदचारः प्रसन्नात्मना पीडां हरतु ते शनिः॥
महाशिरामहावक्त्रो दीर्घदंष्ट्रो महाबलः अतनुश्चोर्ध्व केशश्च पीडां हरतु ते तमः॥
अनेक रूप वर्णैश्च शताशोथ सहस्त्रक्षः। उत्पातरूपो जगतः पीडां हरतु ते शिखी॥ (स्मृति सङ्ग्रह)

यहाँ पर नवग्रह मार्जन मन्त्र पूर्ण हुए। अब देव मंत्रों से मार्जन करें।

सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्म विष्णु महेश्वराः। वासुदेवो जगन्नाथस्तथा संकर्षगणो विभुः॥
प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च भवंतु विजयायते। आखण्डलोग्नि र्भगवान् यमोवैनिर्ऋतिस्तथा॥
वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः। ब्रह्मणा सहिताः सर्वे दिक्पालाः पांतु ते सदा॥
कीर्तिलक्ष्मीर्धृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा क्रियामतिः। बुद्धिर्लज्जावपुःशान्तिः कान्तिस्तुष्टिश्च मातरः॥

एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु देवपत्न्यः समागताः। आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुधजीव सितार्कजाः ॥
ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुः केतुश्च तर्पिताः। देवदानवगंधर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः ॥
ऋषयो मनवो गावो देवमातर एव च। देवपत्न्यो द्रुमानागादैत्याश्चाप्सरसां गणाः ॥
अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च। औषधानि च रत्नानि कालस्यावयवाश्च ये ॥
सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदानदाः। एतेत्वामभिषिञ्चंतु सर्वकामार्थ सिद्धये ॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

श्री सूक्त से मार्जन करें। हिरण्यावर्णामिति पञ्चदशर्चस्य सूक्तस्य आनन्द कर्दम चिक्लीतेंदिरासुता ऋषयः श्रीरग्नि श्चेत्युभे देवते आद्यास्तिस्रो अनुष्टुभः चतुर्थी प्रस्तार पंक्तिः पञ्चमी षष्ठयौ त्रिष्टुभौ ततोष्टावनुष्टुभोंत्या प्रस्तार पंक्तिः मार्जने विनियोगः।

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ॥
तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥
अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम्। श्रियं देवीमुपह्वये श्री र्मा देवी जुषताम् ॥
कां सोस्मितां हिरण्य प्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्। पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥
चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देव जुष्टामुदाराम्।
तां पद्मनीमीं शरणंऽ प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे ॥
आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मा या अन्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥
उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ॥
क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ॥

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।
मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥
कर्दमेन प्रजा भूता मपि संभव कर्दम। श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥
आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे। नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥
आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह॥
आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्। सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह॥
तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्॥

(ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

इमा आप इति तिसृणां ऐतरेय आपो अनुष्टुप् जगत्यनुष्टुभः मार्जने विनियोगः।

इमा आपः शिवतमा इमाः सर्वस्य भेषजीः। इमा राष्ट्रस्य वर्धनीरिमाराष्ट्रभृतोमृताः॥
याभिरिन्द्रमभ्य षिञ्चत्प्रजापतिः सोमं राजानं वरुणं यमं मनुं।
ताभिरद्भिरभिषिञ्चामित्वामहं राज्ञां त्वमधि राजो भवेह।
महांतं त्वामहीनां सम्राजंचर्षणीनां देवी जनित्र्यजीजनद्भद्राजनित्र्यजीजनत्॥ (ब्रह्मकर्म समुच्चय)

अरिष्टनेमिः तार्क्ष्यः तार्क्ष्यः त्रिष्टुप् मार्जने विनियोगः।

ॐ त्यमूषु वाजिनं देवजूतं सहावानं तरुतारं रथानाम्। अरिष्टनेमिं पृतनाजमाशुं स्वस्तये तार्क्ष्यमिहा हुवे॥
इन्द्रस्येव रातिमाजोहुवानाः स्वस्तये नावमिवा रुहेम। उर्वी न पृथ्वी बहुले गभीरे मावामेतौ मा परेतौ रिषाम॥
सद्यश्चिद्यः शवसा पञ्च कृष्टीः सूर्य इव ज्योतिषापस्ततान। सहस्रसाः शतसा अस्य रंहिर्नस्मा वरन्ते युवतिं न शर्याम्॥

(ऋग्वेद १०.१७८.१-२-३)

देवस्यत्वेत्यस्यै तरेयः सविताश्विनो पूषाच यजुः मार्जने विनियोगः।

ॐ देवस्यंत्वा सवितुः प्रसवेंऽश्विनों बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यामग्रे स्तेजसा सूर्यस्य वर्चसेन्द्रस्यें द्रियेणाभि षिञ्चामि। बलाय श्रियै यशसे न्नाद्याय भूर्भुवः स्वः। अमृताभिषेकोस्तु शांतिः पुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु। *(यजुर्वेद-१ काराड-१ प्रश्न-४ अनुवाक)*

ॐ तच्छंयोरावृंणीमहे गातुं यज्ञायं गातुं यज्ञपतये। दैवीं स्वस्तिरस्तु नः स्वस्तिर्मा नुषेभ्यः। ऊर्ध्वं जिंगातु भेषजं शं नों अस्तु द्विपदेशं चतुंष्पदे॥ *(ऋग्वेद दशममराडलस्य परिशिष्टम्)* ॐ शान्तिः शान्तिः शन्तिः

मार्जन विधान संपूर्ण—ततो यमजानः अभिषेक वस्त्रं आचार्याय दत्वा श्वेताम्बरं श्वेतचन्दनं श्वेतपुष्पाणि च धृत्वा अभिषेक शालातो अग्नि समीपं आगत्य आचम्य तीर्थ प्राशनं कुर्यात्। इसके पश्चात् अभिषेक के वस्त्र को आचार्य को देकर नूतन सफेद वस्त्र, सफेद चन्दन एवं सफेद फूलमाला धारण कर अभिषेक स्थल से अग्नि के पास जाकर आचमन करें एवं तीर्थ प्राशन करें।

आप इद्वाउ भेषजीरापों अमीवचातंनीः। आपः सर्वस्य भेषजी स्तास्तें कृणवन्तु भेषजम्॥ *(ऋग्वेद १०.१३७.६)*

आपो वै भेंषजं भेषजमेवास्मैं करोति। सर्वमायुरेति॥ *(श्रुतिः)*

कहकर तीर्थ प्राशन करें। पुनः आचमन करें। **प्रधान कलश एवं उपकलश, नवग्रह धान्य एवं अन्य वस्तुओं का दान, गोदान**

प्रधान कलश दान—सवस्त्र प्रतिमं कुम्भं प्राप्तारिष्टनिवृत्तये। तुभ्यं दास्यामि विप्रेन्द्र यथोक्तफलदोभव॥ *(स्मृति सङ्ग्रह)*

सदक्षिणाकं सवस्त्र प्रधान कलश दानं विष्णु प्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं संप्रददे। दत्तं न मम न मम।

उप कलशदान—सवस्त्र प्रतिमं कुम्भं प्राप्तारिष्ट निवृत्तये। तुभ्यं दास्यामि विप्रेन्द्र यथोक्त फलदोभव॥ *(स्मृति सङ्ग्रह)*

सदक्षिणाकं सवस्त्र उपकलशदानं आवाहित देवता प्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं संप्रददे। दत्तं न मम न मम।

सूर्य प्रीत्यर्थे गोधूम धान्य दान—गोधूमाः सर्वजन्तूनां बलपुष्टिविवर्धकाः। यस्मादेषां प्रदानेन स मे सूर्यः प्रसीदतु॥ *(स्मृति सङ्गह)*
स दक्षिणाकं गोधूम दानं आदित्य प्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं संप्रददे। दत्तं न मम न मम।

चन्द्र प्रीतये तण्डुल दानम्—तण्डुलं वैश्वदेवत्यं पाकेनान्नं प्रयच्छति। यस्मादस्य प्रदानेन स मे चन्द्रः प्रसीदतु॥ *(स्मृति सङ्गह)* स दक्षिणाकं तण्डुलदानं चन्द्र प्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं संप्रददे। दत्तं न मम न मम।

अङ्गारक प्रीतये गुडाढक दानम्—आढकाः सर्वजन्तूनां बलपुष्टिविवर्धकाः। यस्मोदेशषां प्रदानेन स मे भौमः प्रसीदतु॥ *(स्मृति सङ्गह)* स दक्षिणाकं गुडाढक दानं अङ्गारक प्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं संप्रददे। दत्तं न मम न।

बुध प्रीतये मुद्गदानम्—मुद्गबीजानि वै यस्मात् प्रियाणि परमेष्ठिनः। यस्मादेषां प्रदानेन स मे सौम्यः प्रसीदतु॥ *(स्मृति सङ्गह)*
स दक्षिणाकं मुद्गदानं बुध प्रीतिं कागयमानः तुभ्यमहं संप्रददे दत्तं न मम न मम।

बृहस्पति प्रीतये चणकदानम्—गोवर्धनाचलोद्धार समये हरिभक्षिताः। यस्मादेषां प्रदानेन स मे जीवः प्रसीदतु॥ *(स्मृति सङ्गह)*स दक्षिणचणकदानं बृहस्पति प्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं संप्रददे। दत्तं न मम न मम।

शुक्र प्रीतये निष्पावदानम्—विष्पावाः सर्वजन्तूनां बल पुष्टिविवर्धकाः। यस्मादेषां प्रदानने स मे शुक्रः प्रसीदतु॥ *(स्मृति सङ्गह)*

स दक्षिणाकं निष्पावदानं शुक्र प्रीतिं कामयामानः तुभ्यमहंसंप्रददते। दत्तं न मम न मम।

शनैश्चर प्रीतये तिलदानम्—तिलाः कश्यपसंभूताः तिलाः पापहराः शुभाः। तिलदान प्रदानेन स मे मन्दः प्रसीदतु॥ *(स्मृति सङ्ग्रह)*

स दक्षिणाकं तिलदानं शनैश्चर प्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं संप्रददे। दत्तं न मम न मम।

राहु प्रीतये माषदानम्—यस्मान्मधुवधे काले विष्णोर्देहसमुद्भवाः। यस्मादेषां प्रदानेन स मे राहुः प्रसीदतु॥ *(स्मृति सङ्ग्रह)*

स दक्षिणाकं माषदानं राहु प्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं संप्रददे। दत्तं न मम न मम।

केतु प्रीतये कुलित्थ दानम्—अग्निगर्भोद्भवाः सौम्याः केतु प्रियकराः सदा। कुलित्थाः सर्व पापघ्नाः अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

(स्मृति सङ्ग्रह)

स दक्षिणाकं कुलित्थदानं केतु प्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं संप्रददे। दत्तं न मम न मम।

गोदान—गवामङ्गेषु तिष्ठन्ति भुवनानि चतुर्दश। यस्मादस्याः प्रदानेन स म देवः प्रसीदतु॥ *(स्मृति सङ्ग्रह)*

स दक्षिणाकं गोदानं प्रधान देवता रुद्रः प्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं संप्रददे। दत्तं न मम

हिरण्य दान—(आवाहित सभी देवताओं के प्रसन्नाता के लिए)

हिरण्य गर्भ गर्भस्थं हेम बीजं विभावसोः। अनन्त पुण्य फलदं अतः शान्तिं प्रयच्छमे॥ *(स्मृति सङ्ग्रह)*

स दक्षिणाकं हिरण्यदानं आवाहितानां देवानां प्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं संप्रददे दत्तं न मम न मम। आगे लिखने वाले दान ऐच्छिक है।

सूर्य के लिए—यज्ञस्य प्रतिष्ठासिद्ध्यर्थ श्रीसूर्य प्रीत्यर्थ इमां कपिलां अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे आचार्याय सदक्षिणां संप्रददे।

कपिले सर्वदेवानां पूजनीयासिरोहिणी। तीर्थ देवमयी यस्मादतः शान्तिं प्रयच्छमे॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)* दत्तं न मम न मम।

सोमाय शङ्खम्—पुण्यस्त्वं शंख पुण्यानां मंगलानां च मगलम्। विष्णुनाविधृतोनित्यमतः शान्तिं प्रयच्छमे॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

सदक्षिणाकं शंखदानं सोमप्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं संप्रददे। दत्तं न मम न मम।

भौमाय वृषम्—धर्मस्त्वं वृषरूपेण जगदानन्दकारकः। अष्टमूर्ते रधिष्ठान मतः पाहि सनातन॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

स दखिणाकं वृषदानं भौमप्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं संप्रददे। दत्तं न मम न मम।

बुधाय हिरण्यम्—हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेमबीजंविभावसोः। अनन्तपुण्यफलदं अतः शान्तिं प्रयच्छमे॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

स दक्षिणाकं हिरण्यदानं बुध प्रीतिं कामयमानः तुश्यमहं संप्रददे। दततं न मम न मम।

गुरवे पीतवस्त्रम्—पीतवस्त्रयुगं यस्मा द्वासुदेवस्यवल्लभं। प्रदानस्तस्य वै विष्णोस्ततः शान्तिं प्रयच्छमे॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

स दक्षिणाकं पीतवस्त्रदानं बृहस्पति प्रीतिं कामयमानः तूभ्यमहं संप्रददे। दत्तं न मम न मम।

शुक्राय अश्वम्—विष्णुस्त्वमश्वरूपेण यस्मादमृतसंभवः। चन्द्रार्क वाहनं नित्यमतः शान्तिं प्रयच्छमे॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

स दक्षिणाकं अश्वदानं शुक्र प्रीतिं कामयमानंः तुभ्यमहं स्त्रप्रददे। दन्तं न मम न मम।

शनये कृष्णां गाम्—यस्मात्वं पृथिवी कृष्णा धेनुः केशव संनिभा। सर्वपापहरानित्यं अतः शान्तिं प्रयच्छमे॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

स दक्षिणाकं कृष्णां गां शनैश्चर प्रीतिं कामय मानः तुभ्यमहं संप्रददे। दत्तं न मम न मम।

राहवे लोहम्—यस्मादायसकर्माणि त्वदधीनानि सर्वदा। लाङ्गलान्यायुधादीनि तस्माच्छन्तिं प्रयच्छमे॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

स दक्षिणाकं लोह दानं राहु प्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं संप्रददे। दत्तं न मम न मम।

केतवे छाङ्गम्—यस्मात्वं छागयज्ञानां अङ्गत्वेन व्यवस्थितः। यानं विभवसोर्नित्यमतः शान्तिं प्रयच्छमे॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

स दक्षिणाकं छाग दानं केतु प्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं संप्रददे। दत्तं न मम न मम। ततः कर्ता अग्रेः वायव्ये स्थितः। संस्थाजपेन उपतिष्ठेत। इसके बाद

यजमान अग्नि के वायव्य दिशा में खड़ें होकर संस्था जप जो बताया जा रहा है उससे हाथ जोडकर अग्नि की प्रार्थना करें। अग्नेत्वं न इति चतसृणां गौपायना लौपायना वा बन्धुः सुबन्धुः श्रुतबंधु विप्रबन्धुश्च एकैकर्चा ऋषयः। अग्निर्देवता द्विपदाविराट् छन्दः। अग्न्युपस्थाने विनियोगः।

ॐ अग्नेत्वंनो अंतंमउतत्राता शिवोभंवावरूथ्यंः। वसुंरग्निर्वसुंश्रवा अच्छांनक्षिद्युमत्तंमंरयिंदाः॥
सनों बोधिश्रुधीहवंमुरुष्याणों अघायतः संमस्मात्। तंत्वांशोचिष्ठदीतिदवः सुम्नायनूनमीं महेसखिंभ्यः॥
ॐ चंमे स्वरश्चमे यज्ञोपंचतेनमंश्च। यन्तेंन्यूनं तस्मैंत उपंयत्तेतिरिक्तं तस्मैं ते नमंः॥ *(ऋग्वेद ५.२४.१-२-३-४)*

अग्नये नमः। ॐ स्वसित। श्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां विद्यां बुद्धिं श्रियं बलं। आयुष्यं तेज आरोग्यं देहि मे हव्यवाहन॥ मानस्तोक इत्यस्य कुत्सोरुद्रोजगती। विभूति ग्रहणे विनियोगः।

ॐ मानंस्तोके तनये मानं आयौ मानो गोषुमानो अश्वेंषुरीरिषः।
वीरान्मानोंरुद्रभामितो वंधीर्ह विष्मंन्तः सदमित्वां हवामहे॥ *(ऋग्वेद १.११४.८)*

इति स्रुव बिलपृष्ठैनैशानीगतां विभूतिं गृहीत्वा। उपरोक्त मंत्र का पाठ करेत हुए स्रुवा के बिल के पिछले हिस्से के ईशान भाग से भस्म (होम का) को निकालें। **ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेरिति ललाटे** (ललाट में भस्म लगायें) **ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषं इति कण्ठे** में भस्म लगायें) **ॐ अगस्त्यस्य त्र्यायुषं इति नाभौ** (नाभि में भस्म लगायें) **ॐ यद्देवानां त्र्यायुषमिति दक्षिणस्कन्धे** (दाहिने भुजा में भस्म लगायें) **ॐ तन्मे अस्तु त्र्यायुषं इति वामस्कन्धे** (बायें भुजा पर भस्म लगायें) *(यजुर्वेद ब्राह्मण)* ततः अग्निं परिसमुह्य पर्युक्ष्य परिस्तरणानि विसृज्य।

अग्नि का परिसमूहन एवं पर्युक्षण करें। इसके बाद जिस प्रकार से डाले थे उसी प्रकार पूर्व से उन परिस्तरणी को अग्नि में डाल दें (विर्जन)। हाथों में जल लेकर पूर्वदिश से प्रारम्भ करके प्रदक्षिणाकार में चारों ओर मार्जन करने की क्रिया परिसमूहन कहलाता है। पहले हाथ धो लें फिर जलयुक्त हाथ से पूर्वादि

दिशाओं को स्पर्श करना चाहिये। पुनः हाथ धोकर इसी क्रिया को दो बार और करना चाहिये यह क्रिया परिसमूहन कहलाता है। अग्रैरैशानतस्त्रिरंभसा परिषेचनं। हाथ में जल लेकर ईशान्य से ईशान्य तक तीन बार जल से परिषिञ्चन करें।

अग्नि पूजन—विश्वामित्र इति तिसृणामात्रेयो वसुश्रुतोग्निस्त्रिष्टुप् द्वयोरर्चने अन्त्याया उपस्थाने विनियोगः।

ॐ विश्वांनिो दुर्गहा जातवेदः। (पूर्व में पुष्पाक्षत से अग्निदेव का पूजन करें) **ॐ सिन्धुंननावादुंरितातिंपर्षि।** (आग्नेय में पूजन करें) **ॐ अग्ने अत्रिवन्नमंसागृणानः।** (दक्षिण में पूजन करें) **ॐ अस्माकं बोध्यविताततनूनां।** (नैर्ऋत्य पूजन करें) **ॐ यस्त्वांहृदाकीरिणामन्यमानः।** (पश्चिम में पूजन करें) **ॐ अमर्त्यं मर्त्योजोहंवीमि।** (वायव्य में पूजन करें) **ॐ जातंवेदोयशों अस्मासुंधेहि** (उत्तर में पूजन करें) **ॐ प्रजाभिंरग्ने अमृतत्वमंश्यां।** (ईशान्य में पूजन करें) **ॐ यस्मैत्वं सुकृंतें जातवेद उलोकमंग्नेकृणवंस्योनं। अश्विनं सपुत्रिणं वीरवन्तं गोमंतं रयिंनंशते स्वस्ति॥** *(ऋग्वेद ५.४.९.१०.११)*

इन मंत्रों को कहकर पूजन एवं नमस्कार करें। (घी में छाया देखकर दान देने का मंत्र)

रूपं रूंपं प्रतिंरूपो बभूव तदंस्य रूपं प्रतिचक्षंणाय। इन्द्रो मायाभिंः पुरुरूपं ईयते युक्ता ह्यस्य हरंयः शतादशं।

(ऋग्वेद ६.४७.१८)

कामधेनु समुद्भूतं सर्वक्रतुषुसं स्थितं। देवानामाज्यमाहारः अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥ सदक्षिणाकं आज्यदानं विष्णुः प्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं संप्रददे। दत्तं न मम न मम। अनेन अवेक्ष्याज्य दानेन विष्णुः सुप्रीतो अस्तु इति अनु गृह्णन्तु। तथास्तु। आचरित याग संपूर्ण फलावाप्तिरस्तु इति भवन्तो ब्रुवन्तु। तथास्तु। पुनः पूजां करिष्ये। ध्यायामि। ध्यानं समर्पयामि। आवाहयामि। आसनं समर्पयामि। स्वागतम् समर्पयामि। पादयोः पाद्यं पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोः अर्घ्यं अर्घ्यं समर्पयामि। मुखे आचमनं समर्पयामि। स्नानं समर्पयामि। वस्त्रं समर्पयामि।

उपवीतं समर्पयामि। आभ्रणं समर्पयामि। गंधं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि। पुष्पाणि समर्पयामि। धूपमाघ्रा पयामि। दीपं दर्शयामि। हुतशिष्ट आज्योपहारं निवेदयामि। क्रमुकताम्बूलं समर्पयामि। मङ्गल नीराजनं समर्पयामि। मंत्रपुष्पं समर्पयामि। प्रदक्षिण नमस्कारान् समर्पयामि। प्रन्नार्घ्यं समर्पयामि। सवोपचारपूजां समर्पयामि। ब्रह्मा आचार्य एवं ऋत्विजों को दक्षिणा देवें।

हिरण्य गर्भ गर्भस्थं हेम बीजं विभावसोः। अनन्त पुण्य फलदं अतः शान्तिं प्रयच्छमे।। *(स्मृति सङ्ग्रह)*।। आचरित याग संपूर्ण फलावाप्त्यर्थं यथांशं दक्षिणां प्रतिपादयामि। संपूर्ण फलावाप्तिरस्तु।

अग्नि विसर्जन—**गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थानं परमेश्वर। यत्र ब्रह्मदयो देवाः तत्र गच्छ हुताशन।।** *(उद्वासनं सङ्ग्रह)*

कहकर पुष्पाक्षत डालकर अग्नि का विर्सजन करें। ग्रहपीठ सहित शेष सामग्रियों को आचार्य को दान दे देवें।

ब्रह्मार्पण विधान—**यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपो होम क्रियादिषु। न्यूनं संपूर्णतां यातु सद्यो वन्दे तमच्युतम्।।** *(सङ्ग्रह)*

ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविः ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्। ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना।। *(भगवद्गीता)*

अनेन सग्रहमख विष्णु सर्वाद्भुत शान्ति होम कर्मणा सपरिवारः श्री विष्णुः प्रीयताम्। यागमध्ये मंत्रतन्त्रविपर्यासादि सर्वदोष परिहारार्थं नामत्रय जपं करिष्ये। ॐअच्युताय नमः। ॐअनन्ताय नमः। ॐगोविन्दाय नमः। ॐहराय नमः। ॐमृडाय नमः। ॐशंभवे नमः। इति जपेत्। कर्म के अन्तें पवित्र का विर्जन करके दो बार आचमन करें। ॐतत् सत्। यथाशक्ति ब्राह्मण सुवासिनी भोजन करवायें।

सूर्य सर्वादभुत शान्तियाग संपन्न हुआ।

षष्ठ दिन द्वितीय प्रहर सम्पन्न

परिशिष्ट

सूर्य सर्वाद्भुत शान्ति याग के भेद—शास्त्रों में अनेक प्रकार के सर्वाद्भुत वर्णित है। कुछ आचार्यो ने उन्हें ८ वर्गो में विभक्त किया है। प्रत्येक वर्ग में उत्पात या अद्भुतों का वर्णन हैं। उनके देवताओं का वर्णन भी है। वर्तमान में ५२८ पृष्ठों का जो सर्वाद्भुत शान्ति याग का प्रयोग प्रेषित है, वह इन ८ में एक है। सभी में प्रयोग विधन यही रहेगा। प्रधान देवता एवं उनके नाम बदलते हैं।

१-प्रथम प्रकार (राजकीय उत्पात शमन)—

पुरुषः पुत्रदारं वा धनधान्यमथापि वा। निमित्तैर्यैर्विनश्येत शांन्तिं तत्र निबोधत॥ १॥
इन्द्रायुधं भवेद्रात्रौ दृश्यते यस्य कस्यचित्। दर्वी करे वा भिद्येत मणिः कुम्भस्तथैव च॥ २॥
छत्रं शय्यासनं चैव अन्यद्वापि स्वयं क्वचित्। स्त्री हन्याच्च स्त्रियं वापि गौरवघ्रेदुलूखलम्॥ ३॥
श्वा बिड्डामनड्वाहं कलिः संपद्यते कुले। गजवाजिनो म्रियन्ते विवादो राजकीयकः॥ ४॥
कुटुम्बमशुभं सर्वमैन्द्रण्येतानि निर्दिशेत्। शाम्यन्ति येन सर्वाणि निर्वपेत् पयया चरुम्॥ ५॥
समावाय घृतं तत्र आहुतिं पुहुयादिम्। इन्द्रभिद्देवतातये स्थालीपाकस्य होमयेत्॥ ६॥
इन्द्रः शचीपतिः शक्रो वज्रपाणिः सुरेश्वरः। सर्वाद्भुतानां शमनो महाव्याहृतयस्तथा॥ ७॥
हुत स्विष्टकृतं चैव चरुतन्त्रं समापयेत्। विमुक्तोत्पातदोषस्तु जीवेत्तु शरदः शतम्॥ ८॥

नोटः-परिशिष्ट पूरा सर्वाद्भुत सार सङ्ग्रह से लिया गया है।

विभिन्न कारणों से जब कोई व्यक्ति पुत्र, पत्नी, धन, धान्य आदि वस्तुओं को खो देता है॥ १॥ जब रात्रि में इन्द्रधनुष दिखाई दें, होम करने वाले स्रुक् एवं स्रुव भिन्न हो तो, रत्न एवं पूजा के कलश भग्न हो तब॥ २॥ राजछत्र, सोने वाला पलङ्ग, बैछने वाला आसन आदि अकारण यदि टूट जाय, स्त्री द्वारा स्त्री

की हत्या होने पर, गाय घर के अन्दर आकर उलूखल को सूंघे तो॥ ३॥ कुत्तो के द्वारा सारड के भत होने पर, वंश में झगड़ा होने पर, विना कारण हाथी एवं घोडें मृत हो, राजकीय विवाद हो॥ ४॥ कुटुम्ब में अशुभ हो उपरोक्त सभी उपद्रवों के शमनकर्ता इन्द्र हैं। उसके लिए दूध से बनाया गया चरु से होम करना चाहिये। उससे उपरोक्त उपद्रवों की शान्ति होती है। ५५॥ दूध में बने चरु में घी डालें। ''इन्द्र भिद्देवतातये'' इस मंत्र से होम करं॥ ६॥ यह याग विशेषतः राजकीय घर्षरा, एवं विवाद से जब देश को कष्ट हो तब करना चाहिये। विधान सभी पूर्वोक्त ही हैं। वहाँ पर प्रधान देवता रुद्रः है यहाँ पर प्रधान देवता इन्द्र है। अत्यल्प परिवर्तनों के साथ इस याग को संपन्न कर सकते हैं। जिस प्रकार रुद्रः के पाँच नाम मंत्र थे। उसी प्रकार इस विधान में, शचीपति, शक्र, वज्रपारिा एवं सुरेश्वेर नाम मंत्र है। इसके साथ सर्वाद्भुत शमन नाम मंत्र भी लेवें। महाव्याहृतियों से आज्य होम करें॥ ७॥
स्विष्टकृत् होम करके याग को पूर्ण करना चाहिये। इससे उत्पात दोष निवारण होकर प्रजा १०० साल तक जीवित रहते हैं।

२-द्वितीय प्रकार (जल सम्बन्धी उत्पात शमन)—

उद्दीपिका गृहे यस्य वल्मीका मधु जालकम्। अब्जानां मरिाके शब्दे तैलं स्थीयत एव वा॥ १॥
अशुभा विकृतिर्दध्नां दुग्धानां वा यदा भवेत्। अकस्माच्च प्ररोहेयुर्बीजानि कृमयस्तथा॥ २॥
कार्यो वरुरायागस्तु वारुणीविधिपूर्वकः। उदुत्तमं प्रधानं स्यात्पञ्चाज्याहुतयस्तथा॥ ३॥
वरुराः पाशपारिाश्च यादसां पतिरेव च। शेषं तु पूर्ववच्चैव चरुतन्त्रं समापयेत्॥ ४॥
हुत्वा स्विष्टकृतं चैव चरुतन्त्रं समापयेत्। विमुक्तोत्पातदोषस्तु जीवेत्तु शरदः शतम्॥ ५॥

घरों में अनावश्यक उद्दीपन हो, घर में वल्मीक बनें तो, घर में शहद की मक्खी छत्ता बनाये तो, शंख अपने आप शब्द करें तो, तेल न बहे तो॥ १॥ अकारण दूध एवं दहि में विकार उत्त्पन्न हो तो, अकाल में अपने आप बीजों से अंकुर निकले तो, घर मे कृमियों का उत्पत्ति हो तो॥ २॥ ये सब वरुरा सम्बन्धी उत्पातों के पूर्व सूचनायें हैं। ऐसे स्थिति में वरुरा याग को विधिपूर्वक संपन्न करें। ''उदुत्तमं'' मंत्र से चरु होम करें। पाँचच आज्याहुतियाँ नाम मंत्र से देवें॥ ३॥ पाँच नाम मंत्र वरुरा, पाशपारिा, यादसांपति, प्रचेता, सर्वाद्भुतशमन है। प्रयोग विधान पूर्ववत् है। चरु होम करें॥ ४॥ इस याग से उत्पातों का शमन होकर सौ साल तक जीवित रहते हैं॥ ५॥

३-तृतीय विधान (मृत्यु सम्बन्धी उत्पात निवारण)—

गृहे यस्य पतेद्गृध्र उलेको वा कथञ्चन। कपोतः प्रविशेच्चैव जीवा वारण्यसंभवाः ॥ १ ॥
धुर्यौ च पततो युक्तौ गोस्त्रीजन्म च वैकृतम्। जायन्ते यमलान्येव घोरः स्वप्नश्च दृश्यते ॥ २ ॥
अभिद्रवन्ति रक्षांसि यत्र चैव कुमारकान्। उन्निद्रकोतिनिद्रो वा अत्यल्पमतिभोजनम् ॥ ३ ॥
आलस्यं चैव मेतेषां देवता यम उच्यते। नाके सुपर्ण इत्येतत्स्थालीपाकस्य होमयेत् ॥ ४ ॥
यमः प्रतपतिश्चैव दण्डपाणिस्तथेश्वरः। शमनः सर्वाद्भुतानां महाव्याहृतयस्तथा ॥ ५ ॥
हुत्वा स्विष्टकृतं चैव चरुतन्त्रं समापयेत्। विमुक्तेत्पात दोषस्तु जीवेत्तु शरदः शतम् ॥ ६ ॥

घर में गीध, उल्लू, कबूतर, एवं जङ्गली जानवर आयें तो ॥ १ ॥ गाडी में बंधे दोनों बैल एक साथ गिरें तो, विकार गाय एवं स्त्री पैदा हो तो, बार-बार जुडवें पैदा हो तो, बुरे स्पप्न आयें तो ॥ २ ॥ बच्चे भयभीत हो तो (बालग्रहादि से),वेग विना नींद के या अत्यधिक नींद से युक्त हो, अत्यल्प भोजन या अत्यधिक भोजन करें तो ॥ ३ ॥ अधकता हो तो, उपरोक्त सभी उत्पात मृत्यु संबन्धी हैं, अतः इनके प्रधान देवता यम है। नाके सुपर्ण इस मंत्र से चरु होम करें। विधान पूर्ववत् है ॥ ४ ॥ पाँच नाम मंत्र यम, प्रतपति, दण्डपाणि ईश्वर एवं सर्वाद्भुत शमन है। महा व्याहृतियों से आज्य होम करें ॥ ५ ॥ स्विष्टकृत् होम करके याग को पूर्ण करना चाहिये। इससे उत्पात शमन होकर सौ साल तक जीवित रहते हैं।

४-चतुर्थ प्रकार (अग्नि संबंधी उत्पात निवारण)—

अनग्निरुत्थितो यस्य धूमो वापि गृहे क्वचित्। आमं वा ज्वलते मांसं भवेयुर्विस्फुलिङ्गकाः ॥ १ ॥
छत्रध्वजपताकाश्च ज्वलन्ते तोरणानि च। आसनं चैव शय्या च वस्त्राणि कुसुमानि च ॥ २ ॥
हस्त्यश्वानां च पुच्छानि वर्षत्यङ्गारवर्षणम्। अकाले च दिशं दाहमोषधीनां च पाचनम् ॥ ३ ॥
हस्तिन्यश्चैव माद्यन्ते अग्निरूपं तदद्भुतम्। अग्निं दूतं वृणीमहे स्थालीपाकस्य होमयेत् ॥ ४ ॥

अग्निर्हिरण्यपतिश्च अर्चिष्पाणिस्तथेश्वरः। शमनः सर्वाद्भुतानाम् महाव्याहृतयस्तथा॥ ५॥
हुत्वा स्विष्टकृतं चैव चरुतन्त्रं समापयेत्। विमुक्तोत्पातदोषस्तु जीवेत्तु शरदः शतम्॥ ६॥

अग्नि के विना हि जब घर में धुआँ उठें, बिना पकाये ही कच्चा मांस पक जाय, अग्नि में अधिक चिङ्गारियाँ निकालें॥ १॥ छत्र, ध्वज, पताका, तोरण, बैठने वाला आसन, बिस्तर, वस्त्र एवं फूल अपने आप जल जायें तो॥ २॥ हाथी एवं घाडां के पूँछ जल उटें, आकाश सं अङ्गारों की वर्षा हो, अकाल में दिशाओं में ज्वालायें उत्पन्न हो, औषधि सस्य समय से पहले पक जायें तो॥ ३॥ हथिनियों को मदजल स्राव हो, ये सब अग्नि के अद्भुत रूप हैं। अग्निं दूतं वृणीमहे इस मंत्र से चरु होम करें। विधान पूर्ववत् है॥ ४॥ पाँच नाम मंत्र अग्नि, हिरण्यपति, अर्चिष्पाणि, ईश्वर एवं सर्वाद्भुतशमन हैं। महाव्या से आज्य होम करें॥ ५॥ स्विष्ट होम करके या को पूर्ण करना च इससे अग्नि सम्बन्धी उत्पाश्त शमन होकर प्रजा सौ साल तक जीवित रहते हैं।

५-पञ्चम प्रकार (आर्थि उत्पात शम)—(इस संपूर्ण ग्रन्थ में इसी प्रकार का प्रयोग है)

सुवर्णं रजतं वज्रं वैडूर्यं मौक्तिकानि च। प्रवालवस्त्रनाशश्च भिक्षाणां च विपर्ययः॥ १॥
आरम्भाश्च विपद्यन्ते न सिद्धिः कर्मणामपि। चरुर्वैश्रवणस्तत्र अभित्यं देवमृक्स्मृता॥ २॥
वैश्रवणो यक्षपतिरर्थपाणिस्तथेश्वरः। शमनः सर्वाद्भुतानां महाव्याहृतयस्तथा॥ ३॥
हुत्वा स्विष्टकृतं चैव चरुतन्त्रं समापयेत्। विमुक्तोत्पातदोषस्तु जीवेत्तु शरदः शतम्॥ ४॥

जब आर्थिक समृद्धि के संकेत सोना, चाँदी, वज्र, वैडूर्य, मोती, प्रवाल एवं वस्त्रों का नाश होता है। दुर्भिक्ष (अकाल) हो जाता है॥ १॥ प्रारम्भ किये गये कर्म विपत्ति में फंस जाते हैं, किये गये कर्मो का फल नहीं मिलता है ऐसी स्थिति में अभित्यं देव इस मंत्र से वैश्रवण प्रीति के लिए चरु होम करना चाहिये॥ २॥ पाँच नाम मंत्र वैश्रवण, सक्षपति (यक्षाधिपति), अर्थपाणि (हिरण्यपाणि) ईश्वर एवं सर्वाद्भुत शमन हैं। महाव्याहृतियों से आज्य होम करें॥ ३॥ स्विष्ट होम करके याग को पूर्ण करना चाहिये। इससे कुबेर देवता प्रसन्न होकर अर्थविषयक उत्पातों का निवारण कर प्रजा सौ साल तक जीवित रहते हैं।

६-छटा प्रकार (युद्ध विषयक उत्पात निवारण)—

अथ यस्य स्वनक्षत्रे उल्का निर्घात एव वा। राहुर्ग्रसति चन्द्राकौं कबन्धं दर्पणे भवेत्॥ १॥
पतेत्स्वयं वा मुसलं देवता वा कथञ्चन। उन्मीलते चैव यदा तथा चापि निमीलते॥ २॥
प्रछिद्यते च यदि वा तथा वापि प्रकम्पते। प्रयातो वापि दृश्येत प्रतिस्त्रोतो नदी वहेत्॥ ३॥
विमले नैवार्कछाया प्रतीपा वापि दृश्यते। परिवेषस्त्वनभ्रेषु दृश्यते चन्द्र सूर्ययोः॥ ४॥
कोशात्खङ्गा निर्गिरन्ते तूणाच्चैव तु सायकाः। अनाहतानि वाद्यन्ते नदन्ते शब्दमातुरम्॥ ५॥
चरुणा वैष्णवेनैषां यागः कर्तव्य एव तु। इदं विष्णुः प्रधान स्यात्पञ्चाज्याहुतयस्तथा॥ ६॥
सर्वभूतपतिर्विष्णुश्चक्रपाणिस्तथेश्वरः। शमनः सर्वाद्भुतानां महाव्याहृतयस्तथा॥ ७॥
हुत्वा स्विष्टकृतं चैव चरुतन्त्रं समापयेत्। विमुक्तोत्पातदोषस्तु जीवेत्तु शरदः शतम्॥ ८॥

जिनके जन्म नक्षत्र में उल्कापात हो, राहुग्रस्त सूर्य ग्रहण या चन्द्रग्रहण हो, दर्पण में देखने पर सि न दिखें॥ १॥ दिवार आदि के सहारे खड़े किये मूसल स्वयं गिरे, देवता प्रतिमा स्वयं गिरे, देखने पर आँख खोलते हुए या बंद करते जैसे भास हो॥ २॥ देवता प्रतिमा का कोई भाग अपने आप खण्डित हो जाय या काँपने लगे, प्रतिमा चलायमान दिखे, नदी ऊपर की ओर (उल्टी) बहने लगे॥ ३॥ आकाश निर्मल रहने पर भी सूर्य की छाया न दिखें, या विपरीत दिखाई दें, बादल के बिना भी सूर्य एवं चन्द्र की मण्डल दिखाई पडें॥ ४॥ म्यान से तलवार अपने आप बाहर निकले, तुणीर से बाण अपने आप बाहर , वाद्य बिना बजायें ही शब्द करने लगे, मन को आतंकित करने वाले शब्द सुनाई पडें॥ ५॥ ऐसी स्थितियाँ शुद्ध निमित्तका कहलाते हैं। ऐसी स्थिति में चरु होम से विष्णुयाग संपन्न करना चाहिये। इदं विष्णु इस मंत्र से प्रधान चरु होम करें। पाँच आज्याहुतियाँ देवें॥ ६॥ पाँच नाम मंत्र सर्वभूतपति, विष्णु, चक्रपाणि, ईश्वर, सर्वाद्भुत शमन है। महाव्याहृतियों से आज्य होम करें॥ ७॥ स्विष्टकृत् होम करके याग को पूर्ण करना चाहिये। इससे भगवान् विष्णु प्रसन्न होकर उत्पातों का निवारण कर प्रजा सौ साल तक जीवित रहते हैं।

७–सप्तम प्रकार (वायु सम्बन्धी उत्पात निवारण)—

अतिवातो यत्र भवेद्रूपं वा यत्र वैकृतम्। खरकरभमहिषा वराहा व्याघ्रसिंहकाः ॥
गृध्राश्च तथा योमायुः कृकलासा वदन्ति च। मांसं पेशं च रुधिरं पांसुवृष्टिस्तथैव च ॥
वायुरूपमिदं सर्वमद्भुतंपरिकीर्तितम्। वात आ वातु भेषजं वायवा यहि दर्शतेति स्थाली पाकस्य होमयेत् ॥
वायुर्महान्नभपतिर्वज्रपाणिस्तथेश्वरः। शमनः सर्वाद्भुतानां महाव्याहृतयस्तथा ॥
हुत्वा स्विष्टकृतं चैव चरुतन्त्रं समापयेत्। विमुक्तोत्पातदोषस्तु जीवेत्तु शरदः शतम् ॥

जब आँधी आये, प्रजा जनों का मुख विकृत हो जाय, गधा, हाथी, बैंस, सुअर, बाघ, शेर, गीध, सियार जङ्गली चिपकली आदि चिल्लाने लगे तो, आकाश से मांस रक्त एवं धूली की वर्षा हो ॥ १-२ ॥ यह सब वायु सम्बन्धी उत्पात कहताले हैं, युद्ध के पूर्व में भी यह उत्पात दिखाईं पडते हैं। इनके निवारण के लिए वात आ वातु भेषजं एवं वायवा याहि दर्शत इन मंत्रों से चरु होम करें। पाँच आजयाहुतियाँ देवें ॥ ३ ॥ पाँच नाम मंत्र वायु महान्, नभपति, वज्रपाणि ईश्वर एवं सर्वाद्भुत शमन है। महाव्याहृतियों से आज्य होम करें ॥ ४ ॥ स्विष्टकृत होम करके याग को पूर्ण करना चाहिये। इससे भगवान् वायु प्रसन्न हाकर उत्पातों का निवारण कर तक जीवित रहते हैं।

८-अष्टम प्रकार—

अथ चेदन्यशाखासु कर्ताभवति वेदवित्। पज्त्वा स ऋग्यजुः साम्नां शतमात्रं समाहितः ॥
गायत्र्यष्टशतं जप्त्वा यजमानः समाहितः। वाचयेत्तमुपाध्यायं वस्त्रेण कनकेन वा ॥
दृष्टं चैवाद्भुतं यस्मिन् तच्चापि प्रतिपादयेत्। एतास्तु दक्षिणाः सर्वाः शक्तियुक्तो न हापयेत् ॥

यजमानस्तत् सुतो वा यः स्वयं कर्तुमर्हति। ब्राह्मणाय विशेषेण दद्यात्तां दक्षिणां शुभाम्॥
जप्त्वाथर्वशिरश्चैव ब्राह्मणान् स्वस्ति् वाचयेत्। शक्त्याथ भोजनं चैव कुर्याद्विप्रेषु पूजनम्॥
एतदेवं समाख्यातं अद्भुतानां विशोधनम्। चतुर्णामपि वर्णानां यः कुर्याच्छ्रद्धयान्वितः॥
मरणं न भवेत्तस्य न दुःखं न दरिद्रता। सिद्धयन्ति सर्वकार्याणि धर्मे चास्य मतिर्भवेत्॥
एतत्पुण्यं पवित्रं च देवतायागपूजनम्। सर्वशान्तिकरं चैव प्रतिपुरुषं निबोधत॥

यह सामान्य व्यक्तियों के द्वारा करने वाला उत्पात निवारण विधान एवं फलश्रुति है। उपरोक्त यागों को व्यक्ति के लिए, परिवार के लिए, राज्य के लिए, राष्ट्र के लिए एवं समस्त विश्व के लिए भी कर सकते हैं।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः